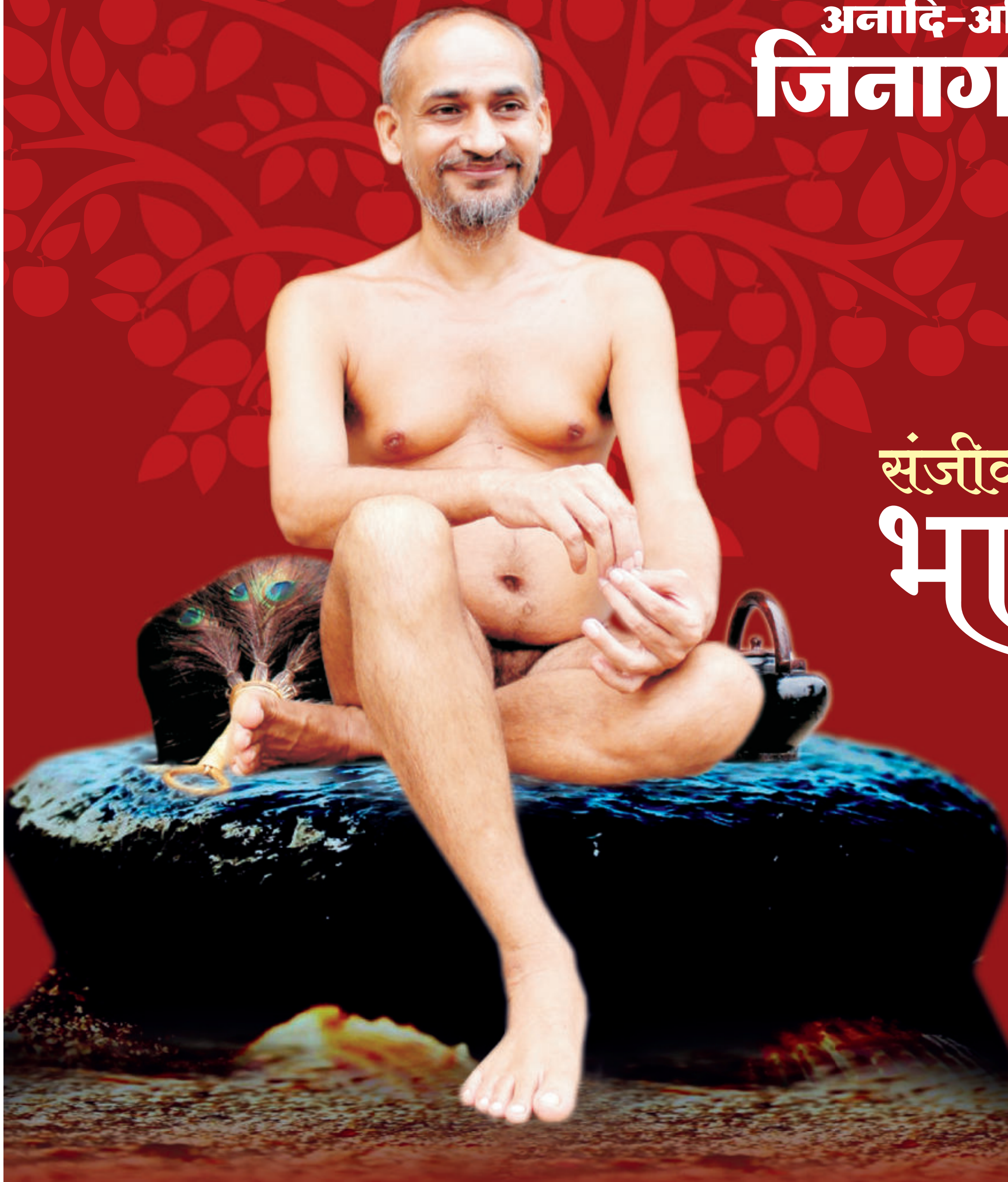
अनादि-अनिधन

जिनागम पंथ जयवंत हो



संजीवनी

भावलिंगी संत

(महाकाव्य)

• श्रमण विचिन्त्यसागर

bhavlingi sant

shramnacharya shri 108 vimarsh sagar ji gurudev

संजीवनी
भावलिंगी संत (महाकाव्य)

शब्द शिल्प

श्रमण विचिन्त्यसागर मुनि

अचौर्य ॐ सत्य ब्रह्मचर्य अहिंसा अपरिग्रह
अहिंसा परमो धर्मः
राष्ट्रीय विमर्श जागृति मंच (रजि.)

राष्ट्रीय विमर्श जागृति मंच प्रकाशन

शुभाशीष : प.पू. भावलिंगी संत राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महाराज
कृति : भावलिंगी संत (महाकाव्य)
शब्द शिल्प : श्रमण विचिन्त्य सागर मुनि
सम्पादन : बा.ब्र. अंकित भैया
प्रकाशन : राष्ट्रीय विमर्श जागृति मंच (रजि.)
मुद्रक : ज्योति ग्राफिक्स, जयपुर मो. 8290526049
प्राप्ति स्थान

- राष्ट्रीय विमर्श जागृति मंच
  कार्यालय :
  कोठिया भवन, छीपीटोला, आगरा (उ.प्र.)
  मो.: 9412163166
- विमर्श जागृति मंच भिण्ड
  श्री विकाश जैन,
  सुखानंद साड़ी सेन्टर
  बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.)
  मो.: 9826244355, 9826217291

अनुक्रमणिका

परिचय की वीथियों में

श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

लौकिक यात्रा

पूर्व नाम	:	**श्री राकेश कुमार जैन**
पिता	:	श्री सनत कुमार जैन
माता	:	श्रीमती भगवती जैन
जन्म स्थान	:	जतारा, जिला टीकमगढ़ (म.प्र.)
जन्म तिथि	:	मार्गशीर्ष कृष्णा पंचमी सं. 2030
जन्म दिनांक	:	15 नवम्बर, 1973 दिन : गुरुवार
शिक्षा	:	बी.एस.सी. (बायलॉजी)
भ्राता	:	दो (अग्रज राजेश जैन, अनुज चक्रेश जैन)
भगिनि	:	दो – कमला, प्रियंका
विवाह	:	बाल ब्रह्मचारी
खेल	:	बैडमिंटन, शतरंज (विशेषता–दोनों खेल जिनसे सीखे उन्हीं के साथ फाईनल खेलते हुए चैंपियन कप विजेता)
सामाजिक सेवा	:	मंत्री–श्री दिगम्बर जैन नवयुवक संघ, जतारा
रुचि	:	अध्ययन, संगीत, पेंटिंग
सांस्कृतिक रुचि	:	अनेक धार्मिक, सामाजिक नाट्य मंचन
करुणाभाव	:	बचपन में एक गरीब अंधे भिखारी को अक्सर पैसे दान देना।

परमार्थ यात्रा

आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के प्रथम बार जतारा नगर में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं त्रयगजरथ महोत्सव में समाज की ओर से निवेदन (सन्–1995, स्थान–मोराजी सागर, म.प्र.)

त्याग के संस्कार :

आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज की जतारा नगर में वैयावृत्ति के समय आजीवन आलू प्याज एवं रात्रि भोजन के त्याग से गृह त्याग की भावना।

ब्रह्मचर्य व्रत :

आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज ससंघ का विहार कराते हुए सिद्धक्षेत्र श्री अहार जी में भगवान शान्तिनाथ की चरणछाया में फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी, सोमवार संवत् 2051, 27 फरवरी 1995 को आचार्यश्री से दो वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया।

सामायिक प्रतिमा :

आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज से पार्श्वनाथ मोक्ष सप्तमी के अवसर पर सामायिक प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये। स्थान–ललितपुर क्षेत्रपाल जी, 3 अगस्त सन्–1995, गुरुवार।

ऐलक दीक्षा :

फाल्गुन शुक्ला पंचमी, शुक्रवार, संवत् 2052, 23 फरवरी, 1996 को देवेन्द्रनगर (पन्ना) में तपकल्याणक के दिन आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज से

ऐलक दीक्षा ग्रहण की और नाम पाया ऐलक विमर्शसागर जी।

मुनि दीक्षा :

पौष कृष्णा 11, संवत् 2055, सोमवार दिनांक 14 दिसम्बर, 1998 को अतिशय क्षेत्र बरासो (भिण्ड) में आचार्यश्री विरागसागरजी से मुनि दीक्षा ग्रहण की और मुनि विमर्शसागर नाम पाया।

आचार्य पद घोषित :

आचार्यश्री विरागसागरजी ने 2005 को कुन्थुगिरी पर गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी सहित 14 आचार्य एवं 200 पिच्छि के मध्य आचार्य पद घोषित किया।

आचार्य पद संस्कार :

मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी सं. 2067 रविवार दिनांक 12 दिसम्बर, 2010 को बांसवाड़ा, राजस्थान में आचार्यश्री विरागसागरजी ने आचार्य पद के संस्कार किये और नाम दिया आचार्य विमर्शसागर जी।

शब्दालंकार

रत्नत्रय के ऊर्जस्वी और तेजस्वी अलंकारों से जिनकी आत्मा का एक-एक प्रदेश अलंकृत है। सत्यम्-शिवम्-सुंदरम् की दिव्य रश्मियों से आलोकित पूज्य गुरुवर विमर्शसागर जी महाराज का विराट व्यक्तित्व किन्हीं शब्दालंकारों का मोहताज नहीं है। फिर भी जगह-जगह की धर्मप्राण-समाजों, ऊर्जस्वी संगठनों एवं यशस्वी व्यक्तियों ने नाना अवसरों पर अपने मनोभावों को शब्दों में समेट कर गुरुचरणों में कई शब्दालंकार प्रस्तुत किये हैं और अपना सौभाग्य माना है।

वात्सल्य शिरोमणि—संत के जीवन का सबसे प्रभावी गुण होता है उसका अकृत्रिम वात्सल्य भाव, पूज्य गुरुवर को यह वात्सल्य की अमूल्य सम्पदा, गुरु परम्परा से विरासत में ही प्राप्त हुई है, वर्षायोग 2008 के उपरान्त उ.प्र. के आगरा नगर में पंचकल्याणक के अवसर पर आगरा समाज ने आपके वात्सल्य से प्रभावित होकर आपको **"वात्सल्य शिरोमणि"** के अलंकार से विभूषित किया।

श्रमण गौरव—पूज्य गुरुवर विमर्शसागर जी महाराज की अनुशासन के सुडौल साँचे में ढली निर्दोष श्रमण चर्या वर्तमान में श्रमण जगत को गौरवान्वित करती है, पूज्य श्री की आगमानुसारी चर्या से प्रभावित होकर एटा-2009 वर्षायोग में शाकाहार परिषद द्वारा आपको **"श्रमण गौरव"** की उपाधि से अलंकृत किया और अपना सौभाग्य बढ़ाया।

वात्सल्य सिन्धु—वात्सल्य और करुणा के दो पावन तटों के बीच प्रवाहित गुरुवर की जीवन मंदाकिनी जनमानस की सतह पर बिखरी घृणा, बैर, कटुता की कलुषता को सहज ही धो डालती है। पूज्य श्री के इसी गुण आकर्षण से अनुग्रहीत हो, एटा में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के अवसर पर राजेश जैन गीतकार आदि कवि समूह ने गुरुवर को **"वात्सल्य सिन्धु"** का भाव वंदन अर्पित कर सौभाग्य माना।

आचार्य पुंगव—संतवाद, पंथवाद और ग्रंथवाद की वैचारिक संकीर्णताओं से 'असम्पृक्त' पूज्य श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज की सिर्फ चर्या ही अनुकरणीय नहीं, अपितु उनका 'चतुरानुरोग' का निर्मल ज्ञान भी ज्येष्ठ है। ऐसे ज्ञान और चर्या में श्रेष्ठ संत के महिमावंत व्यक्तित्व से प्रभावित होकर जतारा जैन समाज ने पंचकल्याणक 2012 के अवसर पर आपको **"आचार्य पुंगव"** की उपाधि से भूषित कर अपना मान बढ़ाया।

राष्ट्रयोगी—पूज्य गुरुवर का **"वैचारिक वैभव"** सिर्फ जैनों तक सीमित नहीं अपितु हर जाति का व्यक्ति उसे अपनी विरासत मानता है। अत: विजयनगर वर्षायोग में राष्ट्रवादी संस्था भारत विकास परिषद् द्वारा आयोजित दिव्य संस्कार प्रवचन माला में आपके राष्ट्रोन्नति से समृद्ध उपदेशों को सुनकर आपको **"राष्ट्रयोगी"** का अलंकार समर्पित किया।

सर्वोदयी संत—पूज्य आचार्यश्री की निर्भीक शैली जन मानस को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है तभी तो पूज्यवर के प्रवचनों में जैनों के साथ-साथ अजैन भी देशना को सुनकर आनंदित होते हैं, आपके उपदेशों में प्राणीमात्र के उदय की दिव्य चमक नजर आती है। तभी तो विजयनगर दिगम्बर जैन समाज ने 2012 वर्षायोग में आपको **"सर्वोदयी संत"** की उपाधि से नवाजा।

प्रज्ञामनीषी—श्रुताराधना के अनुपम आराधक-जिनेन्द्रवाणी के गहन प्रचारक, वाणी और कलम के अनूठे जादूगर पूज्य श्री को तीक्ष्ण प्रज्ञा और निर्मल ज्ञान से प्रभावित होकर, अखिल भारतीय आध्यात्मिक कवि सम्मेलन विजयनगर-2012 में कविगण एवं भारत विकास परिषद द्वारा **"प्रज्ञामनीषी"** की उपाधि से भूषित कर मान बढ़ाया।

राष्ट्रहितैषी—उत्तरप्रदेश के एटा नगर में स्वामी विवेकानन्द की 150वीं जन्म जयन्ति के अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद के तत्त्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय युवा सम्मेलन में पूज्य गुरुदेव के राष्ट्रहित में समर्पित देशोन्नति परक अमूल्य चिंतन से प्रभावित हो विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आपको **''राष्ट्रहितैषी''** अलंकरण से अलंकृत किया गया।

आदर्श महाकवि—सम्प्रतिकाल में कुरल शैली का सैकड़ों विषयों को हृदयंगम करनेवाला अमर महाकाव्य ''जीवन है पानी की बूँद'' के शब्द शिल्पी, भजन, गजल, मुक्तक, कविता, नई कविता, पद्यानुवाद, सवैया आदि अनेक जटिल विधाओं पर साधिकार कलम चलानेवाले परम पूज्य भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज के अपूर्व काव्यात्मक अवदान से प्रेरित हो, 14 नवम्बर 2016 को अखिल भारतीय आध्यात्मिक कवि सम्मेलन में, देश के ख्यातिलब्ध मूर्धन्य कवियों ने सुरेश 'पराग' के नेतृत्व में एवं पं. संकेत जी के मार्गदर्शन में सकल जैन समाज देवेन्द्र नगर की गरिमामयी अनुमोदना के संग पूज्य श्री को **''आदर्श महाकवि''** का अलंकरण भेंट कर निज सौभाग्य वर्धन किया।

साहित्य यात्रा

आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज यूँ तो शरीर से दुबले-पतले लेकिन गौरवर्ण, शुभ संस्थान, चौड़ा ललाट, दमकता मुखमण्डल, प्रशस्त मुद्रा, मधुर मुस्कान के धारी हैं, ऐसे ही आचार्यश्री की लेखनी भी जनमानस के हृदय को छूने वाली है। आचार्यश्री ने अनेक विषयों पर कलम चलाते हुए साहित्य सृजन किया है।

काव्य, प्रवचन, पाठ संग्रह—

1. हे वन्दनीय गुरुवर (काव्य)
2. गूँगी चीख (प्रवचन)
3. शंका की एक रात (प्रवचन)
4. मानतुंग के मोती
5. विमर्शाञ्जलि (पूजा पाठ संग्रह)
6. गीताञ्जलि (भजन)
7. विरागाञ्जलि (श्रमण पाठ संग्रह)
8. जीवन है पानी की बूँद (भाग-1)
9. जीवन है पानी की बूँद (भाग-2)
10. जीवन है पानी की बूँद (समग्र)
11. जीवन चलती हुई घड़ी (काव्य)
12. खूबसूरत लाइनें (काव्य)
13. समर्पण के स्वर (काव्य)
14. आईना (काव्य)
15. सोचता हूँ कभी-कभी (काव्य)
16. मेरा प्रेम स्वीकार करो (काव्य)
17. वाह क्या खूब कही (काव्य)
18. कर लो गुरु गुणगान (काव्य)
19. आओ सीखें जिनस्तोत्र
20. जनवरी विमर्श
21. चटपटे प्रश्न-स्वादिष्ट उत्तर (पहेली)
22. जैन श्रावक और दीपावली पर्व
23. भरत जी घर में वैरागी
24. शब्द शब्द अमृत

गज़ल संग्रह :

ज़ाहिद की ग़ज़लें

विधान :

- आचार्य विरागसागर विधान
- एकीभाव विधान
- श्री भक्तामर विधान (3)
- विषापहार विधान

- श्री कल्याण मंदिर विधान
- श्री श्रमण उपसर्ग निवारण विधान

चालीसा : गणधर चालीसा

टीका : योगसार प्राभृत (प्राकृत/हिन्दी) : विमर्शोदया / अप्पोदया

लिपि : विमर्श लिपि, विमर्श अंक लिपि

भाषा : विमर्श एम्बिसा

पद्यानुवाद :

1. सुप्रभात स्तोत्र
2. महावीराष्टक स्तोत्र
3. लघु स्वयंभु स्तोत्र
4. भक्तामर स्तोत्र (त्रय पद्यानुवाद)
5. गोम्मटेस स्तुति
6. द्वात्रिंशतिका (सामायिक पाठ)
7. विषापहार स्तोत्र
8. एकीभाव स्तोत्र
9. पञ्चमहागुरुभक्ति
10. तीर्थंकर जिनस्तुति
11. गणधरवलय स्तोत्र
12. कल्याणमंदिर स्तोत्र
13. परमानंद स्तोत्र

बहुचर्चित भजन :

1. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य)
2. कर तू प्रभु का ध्यान
3. ऋण मुक्ति का वर दीजिये
4. शान्तिनाथ कीर्तन
5. देश और धर्म के लिये जिओ
6. माँ

प्रेरणा से प्रकाशन :

1. सिर्फ दो प्रवचन (आचार्य विरागसागरजी, सम्पादक-मुनि विमर्शसागर जी)
2. हिन्दी साहित्य की सन्त परम्परा में आचार्य विरागसागर के कृतित्व का अनुशीलन (डॉ. लोकेश खरे)
3. समसामयिक – आचार विद्वत् संगोष्ठी (कोटा)
4. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय – राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (शिवपुरी)
5. प्रज्ञाशील महामनीषी

प्रेरणा से स्थापित :

आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला

उद्देश्य : मूल जिनागम का संरक्षण प्रकाशन

प्रचार-प्रसार एवं लोकोपयोगी धार्मिक, नैतिक साहित्य का निर्माण, प्रकाशन

विद्वत् संगोष्ठी :

1. समसामयिक –आचार विद्वत् संगोष्ठी (कोटा-2006)
2. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय अनुशीलन राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (शिवपुरी-2007)
3. जैन दर्शन में कर्म सिद्धान्त राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी (बड़ौत-2014)
4. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य) राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी (बडा मलहरा-2016)
5. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य) राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी (देवेन्द्रनगर-2016)
6. सम सामयिक राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी एवं जैन पत्रकार, संपादक सम्मेलन (जबलपुर-2017)
7. आचार्य श्री विमर्शसागर कृत 'रयणोदय' पर राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी एवं जैन पत्रकार, संपादक सम्मेलन (छिंदवाड़ा (म.प्र.)-2018)।

संस्कार यात्रा

ऐतिहासिक पूजन प्रशिक्षण शिविर—आचार्यश्री के सानिध्य एवं निर्देशन में आयोजित पूजन प्रशिक्षण शिविर एक ऐसी प्रयोगशाला है जिसमें जैनधर्म के संस्कार एवं शिक्षा का प्रयोग करना सिखाया जाता है। यदि चेतनतीर्थ स्वरूप उपासक संस्कारित नहीं, तो अचेतनतीर्थ स्वरूप जिनमंदिरों का महत्व नहीं जाना जा सकता। आचार्यश्री जब अपने मधुर कंठ से शिविर का यथायोग्य संचालन करते हैं तब हर श्रावक भक्ति में ऐसा लीन हो जाता है कि 4-5 घंटे का भी पता नहीं चलता। आचार्यश्री के निर्देशन में आयोजित इस शिविर के माध्यम से आज हजारों लोग जैनत्व के संस्कारों से जुडे हैं। अभी तक 20 पूजन शिविर आयोजित हो चुके हैं—

1. महरौनी (उ.प्र.)
2. वरायठा (म.प्र.)
3. अंकुर कॉलोनी, सागर (म.प्र.)
4. सतना (म.प्र.)

5. अशोक नगर (म.प्र.)
6. रामगंजमण्डी (राज.)
7. भानपुरा (म.प्र.)
8. सिंगोली (म.प्र.)
9. कोटा (राज.)
10. शिवपुरी (म.प्र.)
11. आगरा (उ.प्र.)
12. एटा (उ.प्र.)
13. डूंगरपुर (राज.)
14. अशोकनगर (म.प्र.)
15. विजयनगर (राज.)
16. भिण्ड (म.प्र.)
17. बड़ौत (उ.प्र.)
18. टीकमगढ़ (म.प्र.)
19. देवेन्द्रनगर (म.प्र.)
20. जबलपुर (म.प्र.)
21. छिंदवाड़ा (म.प्र.)

पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव :

1. नेमिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव-2002 (रजवांस-सागर, म.प्र.)
2. आदिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव-2003 (महरौनी, ललितपुर, उ.प्र.)
3. आदिनाथ पंचकल्याणक रथ महोत्सव-2004 (बूँदी-राज.)
4. आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव-2007 (रामगंजमण्डी, राज.)
5. पार्श्वनाथ पंचकल्याणक रथोत्सव-2007 (कोटा, राज.)
6. आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव-2008 (शिवपुरी, म.प्र.)
7. आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव-2009 (आगरा, उ.प्र.)
8. आदिनाथ पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव-2010 (एटा, उ.प्र.)
9. आदिनाथ पंचकल्याणक त्रय गजरथ महोत्सव-2012 (जतारा, म.प्र.)
10. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव-2013 (तीर्थधाम आदीश्वरम् चंदेरी, म.प्र.)
11. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, त्रय गजरथ महोत्सव-2015 (पृथ्वीपुर, म.प्र.)
12. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, गजरथ महोत्सव-2015 (टीकमगढ़, म.प्र.)
13. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, त्रय गजरथ महोत्सव-2015 (बैरवार, जतारा, म.प्र.)
14. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, गजरथ महोत्सव-2018 (धनौरा, म.प्र.)

चातुर्मास :

1. मढ़ियाजी जबलपुर (म.प्र.)	—	1996
2. भिण्ड (म.प्र.)	—	1997
3. भिण्ड (म.प्र.)	—	1998
4. भिण्ड (म.प्र.)	—	1999
5. महरौनी (उ.प्र.)	—	2000
6. अंकुर कॉलौनी (सागर, म.प्र.)	—	2001
7. सतना (म.प्र.)	—	2002
8. अशोकनगर (म.प्र.)	—	2003
9. रामगंजमण्डी (राज.)	—	2004
10. सिंगोली (नीमच)	—	2005
11. कोटा (राज.)	—	2006
12. शिवपुरी (म.प्र.)	—	2007
13. आगरा (उ.प्र.)	—	2008
14. एटा (उ.प्र.)	—	2009
15. डूंगरपुर (राज.)	—	2010
16. अशोकनगर (म.प्र.)	—	2011
17. विजयनगर (राज.)	—	2012
18. भिण्ड (म.प्र.)	—	2013
19. बड़ौत (उ.प्र.)	—	2014
20. टीकमगढ़ (म.प्र.)	—	2015
21. देवेन्द्रनगर (म.प्र.)	—	2016
22. जबलपुर (म.प्र.)	—	2017
23. छिंदवाड़ा (म.प्र.)	—	2018

वर्तमान संत संस्था में आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज एक ऐसे श्रेष्ठ संत हैं जिनके पास ज्ञान संस्कार की चर्या एवं चर्या देखने-सुनने को मिलती है। कम-बोलना लेकिन काम का बोलना आचार्यश्री की अपनी विशिष्ट शैली है। प्रवचनों में सकारात्मक चिंतन को परोसने वाले हित-मित प्रियभाषी, ''जिनागम पंथ प्रवर्तक'' आचार्यश्री पंथवाद-संतवाद-जातिवाद की भी खूब खबर लेते हैं। सच्चे संतत्व को प्रकाशित करने वाले **आचार्यश्री कहते हैं, पंथ-संत-जातिवाद को बढ़ावा देने वाले श्रमण एवं श्रावक जिनधर्म के विनाशक होंगे। आचार्यों की अपनी-अपनी आचार परम्परा से श्रावक साधुओं के प्रति अश्रद्धानी होंगे, साथ ही सामाजिक समरसता, एकता नष्ट होगी। सचमुच आचार्यश्री का चिन्तन भविष्य की व्याख्या कर रहा है।** आचार्यश्री का सरल-सौम्य व्यक्तित्व एवं पूर्वापर चिंतन ही आचार्यश्री ही अलग पहिचान है। ऐसे युगचेता संत के चरणो में हम बारम्बार नमन करते हैं।

—श्रमण विचिन्त्यसागर
(संघस्थ)

पूज्य गुरुदेव से संबंधित अन्य साहित्य

जीवन साहित्य :

1. **राष्ट्रयोगी :** लेखक–श्री सुरेश 'सरल' जबलपुर (म.प्र.)
2. **आँगन की तुलसी :** लेखक–प्राचार्य श्री निहाल चन्द जैन, बीना (म.प्र.)
3. **जतारा का ध्रुवतारा :** लेखक–श्री कपूर चंद जैन 'बंसल', जतारा (म.प्र.)
4. **भावलिंगी संत (महाकाव्य) :** लेखक–श्रमण विचिन्त्यसागर मुनि (संघस्थ)
5. **विमर्श धाम (महाकाव्य) :** लेखक–पं. संकेत जैन 'विवेक', देवेन्द्रनगर (म.प्र)
6. **सर्वोदयी संत (महाकाव्य) :** लेखक–श्री ज्ञानचन्द जैन 'दाऊ', सागर (म.प्र.)
7. **विमर्श महाभाष्य :** लेखक–पं. संकेत जैन 'विवेक', देवेन्द्रनगर (म.प्र.)
8. **विमर्श वाटिका :** लेखक–श्री कपूर चंद जैन 'बंसल', जतारा (म.प्र.)
9. **विमर्श भक्ति शतक :** लेखिका–श्रीमती स्मृति जैन 'भारत',अशोकनगर (म.प्र.)
10. **विमर्श शतक 1, 2 :** लेखक–पं. ब्रजेन्द्र जैन, देवेन्द्र नगर (म.प्र.)
11. **विमर्श वंदना :** लेखक–कवि शशिकर 'खटका', राजस्थानी, विजयनगर (राज.)

विधान :

1. **आचार्य विमर्शसागर विधान :** लेखक–श्रमण विचिन्त्यसागर मुनि (संघस्थ)
2. संकट मोचन तारणहारे-गुरु विमर्श विधान **:** लेखक–पं. संकेत जैन 'विवेक' देवेन्द्रनगर (म.प्र.)

स्मारिकायें :

1. विमर्श वारिधि (विजयनगर चातुर्मास 2012, स्मारिका)
2. विमर्श प्रवाह (बड़ौत चातुर्मास 2014, स्मारिका)
3. विमर्श गीतिका (टीकमगढ़ चातुर्मास 2015, स्मारिका)
4. विमर्शानुभूति (देवेन्द्रनगर चातुर्मास 2016, स्मारिका)

मासिक पत्रिका :

विमर्श प्रवाह (मासिक)

प्रधान संपादक–डॉ. श्रेयांसकुमार जैन (बड़ौत)
संपादिका–डॉ. अल्पना जैन (ग्वालियर)
प्रबंध संपादक–डॉ. विश्वजीत जैन (आगरा)
संपादक–पं. सर्वेश शास्त्री

आकिंचन योगी का अक्षर अर्घ्य

जो हैं निस्पृहता के ज्योतिर्मान क्षितिज,
हैं जो श्रमण अस्मिता के प्राण,
श्रद्धा लोक के मनोज्ञ देवता,
आत्मान्वेषी साधक
स्वर शिल्पी
अध्यात्म के जादूगर
दुर्लभतम सिद्धियों के सहजागार
धैर्य की धुरी पर सतत साधनाशील साधक,
वीतरागता के मसीहा, श्रमण सूर्य, प्रज्ञा मनीषी,
देव वंद्य, मम् गुरुदेव परम–पूज्य भाव श्रमण

"भावलिंगी संत"

श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज
के पावन करारविंदों में सविनय समर्पित
आकिंचन योगी का

"अक्षर पुञ्ज"



शुभाशीष

श्रमणाचार्य विशुद्धसागर
ग्रीष्म वाचना, बापूनगर,
जयपुर (राज.)

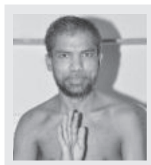
भारतीय तत्त्व मनीषा विश्व गुरुता को प्राप्त है। जिसके संवर्धन में श्रमण संस्कृति सनातन-काल से अग्रसर है, श्रमणों ने अपनी कठोर साधना एवं तत्त्व-ज्ञान से सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया है।

श्रुताभ्यास, श्रुतलेखन किसी भी दर्शन व संस्कृति की रक्षा के मूल अंग हैं। पूर्वाचार्यों ने महापुरुषों के ऊपर पुराण-चारित्र न लिखे होते तो सम्प्रति में ज्ञात ही नहीं होता कि कौन-कौन से महापुरुष हुए हैं? उनके पवित्र जीवन में क्या विशेषताएँ रही हैं? यह सब ग्रन्थ-कर्ताओं का श्रम ही बता पाता है।

आचार्य गुरुवर श्री विरागसागर जी महाराज का पुरुषार्थ इतना उत्तीर्ण हुआ कि आज भारत की भूमि पर श्रेष्ठ-श्रमण, श्रमणी ज्ञान-ध्यान में लीन होकर "श्रीजिन नमोऽस्तु शासन" को जयवन्त कर रहे हैं।

उन्हीं विनेयों में श्रेष्ठ-विनयशील श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी हैं जो सतत् साधना में लीन होकर स्व-पर कल्याण कर रहे हैं। इन्हीं के गुरु-गुणानुरागी शिष्य मुनि विचिन्त्यसागर जी हैं, जिन्होंने गुरु-गुणानुराग से युक्त होकर "भावलिंगी संत (महाकाव्य)" कृति का सृजन कर साहित्य के कोष को वृद्धिंगत तो किया ही है, साथ ही स्व-गुरु के प्रति आस्था समर्पण का परिचय भी दिया है।

वस्तुतः श्रेष्ठ शिष्य की पहिचान वही है। गुरु की उन्नति में ही स्वयं की उन्नति स्वीकारता है। कृति एवं कृतिकार को शुभाशीष।



प्रस्तावना

श्रमणाचार्य शास्त्रकवि
विभवसागर

"कवेर्भावो काव्यं" कवि के भाव को काव्य कहते हैं। अथवा **"कवेर्कर्म काव्यं"** कवि के कार्य को काव्य कहते हैं। कवि का वह काव्य सर्व संमत अर्थ सहित, अलंकार युक्त, प्रसाद आदि गुण से शोभित होता है। कितने ही कवि अर्थ की सुन्दरता को वाणी का अलंकार कहते हैं और कोई पदों की सुन्दरता को अलंकार कहते हैं किन्तु आचार्य जिनसेन स्वामी अर्थ और पद दोनों की सुन्दरता को वाणी का अलंकार मानते हैं। प्रस्तुत काव्य भी अलंकार सहित, शान्तरस प्रधान सर्व रस युक्त, सौन्दर्य से ओतप्रोत, मौलिक रचना है। इसमें रीति की रमणीयता, पदों में लालित्य, रस का प्रवाह, अनेकार्थ सूचक पद विन्यास भी हैं। जो श्रेष्ठ काव्य रचना के मानक हैं।

महाकवि—

सुश्लिष्ट पद विन्यासं, प्रबन्धं रचयन्ति ये।
श्राव्यबन्धं प्रसन्नार्थं, ते महाकवयो मताः।। 98।।

जो अनेक अर्थों को सूचित करने वाले पद विन्यास सहित, मनोहर रीतियों से रमणीय, स्पष्ट अर्थ से उद्भाषित प्रबन्धों, काव्यों की रचना करते हैं वे महाकवि कहलाते हैं—

महाकाव्य—

महापुराण संबन्धि, महानायक गोचरम्।
त्रिवर्ग फल संदर्भं, महाकाव्यं तदिष्यते।। 99।।

जो महापुरुष से संबंध रखता हो, जिसमें महानायक का वर्णन हो, धर्म, अर्थ, काम के फल दर्शी हो उसे जैन शासन में महाकाव्य कहा है। किसी एक विषय को लेकर कुछ पद्यों की रचना तो सभी कवि कर सकते हैं, परन्तु पूर्वापर का सम्बन्ध मिलाते हुए किसी जीवन चरित्र रूप प्रबन्ध की रचना कठिन कार्य है। जिसे असाधारण प्रतिभावान काव्य पुरुष ही कर सकता है, उनमें एक नाम प्रस्तुत काव्य प्रणेता का संयोजन कर लेना हमारा काव्य धर्म होगा।

इस संसार में शब्दों का समूह अनन्त है, वर्णनीय विषय स्वेच्छाधीन है, रस स्पष्ट हैं, उत्तमोत्तम छन्द भी सुलभ हैं तब कविता करने में क्या दरिद्रता दिखाना यही सोचकर कवि रत्न ने कविता रचना में कोई भी कंजूसी नहीं दिखाई।

प्रतिभा जिसकी जड़ है, माधुर्य, ओज, प्रसाद आदि गुण जिसकी शाखाएँ हैं, और उत्तम शब्द ही, जिसके उज्ज्वल पत्ते हैं ऐसा यह महाकवि रूपी वृक्ष यशरूपी पुष्पमंजरी को धारण करता है। अथवा बुद्धि ही जिसके किनारे हैं, प्रसाद आदि गुण ही जिसमें लहरें हैं, जो गुण रूपी रत्नों से भरा हुआ है, उच्च और मनोहर शब्दों से युक्त है तथा जिसमें गुरु शिष्य परम्परा रूप विशाल प्रवाह चला आ रहा है ऐसा यह महाकवि समुद्र के समान आचरण करता है।

यह महाकाव्य सचमुच में धर्मकथा रूप होने से बोधि समाधि का खजाना है। इसमें स्वर्ग मोक्ष के साधक सूत्रों, वाक्यों का समावेश है, यह सज्जनों को हर्ष और वैराग्य बढ़ाने वाला श्रेष्ठ धर्मशास्त्र है। जो आश्चर्यकारी अर्थों से भरा हुआ, अत्यन्त मनोहर, परम प्रयोजन मोक्ष पुरुषार्थ को सिद्ध करनेवाला, कथा-उपकथाओं से युक्त श्रेष्ठ संयतचर्या के संस्मरण, पावन प्रसंगों से सहित, विषय कषाय शोषक, बन्ध विमोचक महाग्रन्थ है, जो आपके स्वाध्यायी करकमलों में सविनय शोभा पा रहा है। यह ग्रन्थ अजीव होते हुए भी जीवन के लिए शरण स्वरूप है।

यद् वचो दर्पणे कृत्स्नं, वाङमयं प्रति बिम्बितम्।
तान् कवीन् बहुमन्येऽहं, किमन्यैः कवि मानिभिः।।
नमः पुराण कारेभ्यो, यद्वक्त्रोब्जे सरस्वती।
येषामद्वा कवित्वस्य, सूत्रपातायितं वचः।। 1/आ.पु. 40,41।।

जिनके वचन रूपी दर्पण में समस्त शास्त्र प्रतिबिम्बित होते हैं मैं उन कवियों को बहुत मानता हूँ उनका आदर करता हूँ, मुझे अन्य से क्या ? मैं उन पुराण रचयिता कवियों को नमस्कार करता हूँ, जिनके मुखकमल में सरस्वती साक्षात् निवास करती है तथा जिनके वचन अन्य कवियों की कविता में सूत्रपात का कार्य करने में मूल रूप होते हैं। उनमें काव्य तीर्थंकर समन्त भद्राचार्य परमादर्श काव्य गुरु हैं—

महापुरुष सम्बन्धि, महाभ्युदय शासनम्।
महापुरुषामाम्नात, मत एतन् महर्षिभिः।।1/23 आ.पु.।।

यह महापुराण महापुरुषों से सम्बन्ध रखने वाला है तथा महान अभ्युदय स्वर्ग मोक्षादि कल्याण कारणों का कारण है इसलिए महर्षि लोग इसे महापुराण कहते है काव्यगत होने से इसे महाकाव्य भी कहते हैं।

महाकाव्य संज्ञा—"श्रेयानु बंधिनी कविता सैव प्रशस्यते" पद्म पुराण रचयिता महाकवि रविषेणाचार्य जी सत्य तथ्यपूर्ण कथन पर आधारित अर्थात् जो कल्याणमार्ग से जोड़े वही कविता, काव्य प्रशंसनीय माना गया हैं वह काव्य जब महापुरुष के विषय में कहा जाता है तब महाकाव्य संज्ञा पाता है।

महाकाव्य नायक—महाकाव्य नायक वे ही महापुरुष हो सकते है जिनका जीवन, आदर्श, उपदेश, आचरण लोक मंगल हो। ऐसे महापुरुषों के कीर्तन से अनेकलाभ होते हैं—विशिष्ट ज्ञान वृद्धि को प्राप्त होता है, यश निर्मल होकर सर्वदिशा में फैलता है, पाप दूर होता है सर्वकार्य मंगल होता है। इस सन्दर्भ में रविषेणाचार्य का उक्त श्लोक दृष्टव्य है—

वृद्धिं वृजति विज्ञानं, यशस्चरति निर्मलाम्।
प्रयाति दुरितं दूरं, महापुरुष कीर्तनात्।।

द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की गति विधि ज्ञाता सत्कवियों को धर्म और मोक्ष पुरुषार्थ साधक को महाकाव्य का नायक बनाना चाहिए। ऐसे महापुरुषों का संस्मरण जैनधर्म में मूलतः ही प्रचलित रहा है। तीर्थंकर महावीर के उपदेशों का सार द्वादशांग में अंग के अवान्तर भेद प्रथमानुयोग का विषय महापुरुषों के चरित्र का आख्यान है, जो यहाँ पर द्रष्टव्य है।

जैन धर्म के मूलमंत्र, महामंत्र णमोकार के पंच पदों में जिनका स्मरण तृतीय पद में हो, पंच परमेष्ठी रूप पंच महापुरुषों की पूज्य पंक्ति में जिनका क्रम तृतीय स्थान पर हो, अनादिनिधन विश्वशांति मंत्र में जिनके आचरण ने मध्य स्थल प्राप्त कर लिया हो, इतना ही नहीं जैनमंत्र के चतुर्थ एवं पंचम मंत्र जब आप ही हो चुके हों तथा जो स्वयं एक पुरुष होते हुए भी पंच महापुरुषों की पूज्य परम्परा में सम्पूजित हो रहे हों एवं जो इस जगत के लिए महाकल्याणकारी हों, उनके विषय में जो भी काव्य रचा जायेगा वह महाकाव्य ही होगा। महानता से ओत-प्रोत वह महाकाव्य महामंगलकारी मोक्षमार्ग से जोड़ने वाला होगा। निः संदेह ऐसा ही महाकाव्य हमारे कर कमलों में है जो श्रेष्ठ महाव्रती महासंत के महान रत्नत्रयी जीवन के श्रेष्ठ संस्मरणों से अर्थ पूर्ण प्रमाण शास्त्र है।

महाकवि जिनसेनाचार्य का निम्नांकित श्लोक देखें—

महतां सं श्रयान्नूनं, यान्तीज्यां मलिना अपि।
मलिनै रपि यत्केशैः पूजावाप्ता श्रितैगुरुम्।।

महापुरुषों का आश्रय करने से मलिन (नीच) पुरुष भी पूज्यता को प्राप्त हो जाते हैं, बिल्कुल ठीक है क्योंकि भगवान का आश्रय लेने से काले केश भी पूज्यता को प्राप्त हो रहे।

महाकाव्य का भाव पक्ष एवं कलापक्ष दोनों समीचीन हैं। यह एक ऐसा महाकाव्य है जिसमें नायक मात्र है नायिका का स्पष्ट रूपेण अभाव है, हाँ नायक की आत्मा ही परम प्रेयसी है जिसे नायक प्राणपन से चाहता है तथा जिसके लिए वह अपने माता-पिता परिवारजन का परित्याग कर एक मात्र उसी की प्राप्ति की धुन में

गृह त्याग कर संन्यास आश्रम में प्रवेश कर उस अंतरात्मा रूपी नायिका को प्राप्त कर लेता, भावदीक्षा रूपी अंतरात्मा नायिका अपने नायक को सदैव प्रसन्नचित् रखती हुई परमानंद प्रदान करती। नायक दीक्षारूपी निर्वेद कान्ता की संगति में इतने खो जाते हैं कि जन्मदातृ माता-पिता को भी बरषों तक याद ही नहीं करते इतना ही नहीं दीक्षा कन्या की सलाह अनुसार दीक्षादाता गुरु को ही अपना माता-पिता स्वीकार कर परम विरति का परिचय प्रस्तुत करते हैं–"भौतिकता के प्रलोभन उन्हें किंचित भी बाधक नहीं बन पाते, भव भोगों के बन्धन उन्हें रोकने में असमर्थ हो कर्म शृंखलाएँ टूटकर गिर जाती। नायक का नायिका के प्रति इतना अगाध प्रेम है कि एक पल क्या निमेष मात्र काल के लिए नायक अपनी दीक्षानायिका से जुदा नहीं रह सकता, यह प्रेमधारा वासना विहीन उपासना में लीन महायोग है। व्यसन और वसन हीन है।

प्रस्तुत काव्य ऋषि प्रणीत होने के कारण आर्ष, सत्यार्थ निरूपक होने से सूक्त तथा धर्म का प्ररूपक होने से धर्मशास्त्र माना जाता है। यहाँ ऐसा हुआ-ऐसी अनेक कथाओं का इसमें निरूपण होने से इसे 'इतिहास', 'इतिवृत्त' भी कहते हैं। पुण्य वर्द्धक होने से पुराण भी माना गया है।

स्वतंत्र कविता करने वाले कवि कहलाते हैं। महापुरुषों के विषयों में जब कविता करते हैं तो महाकवि कहलाते हैं। जो कवियों में तीर्थंकर के समान है वे आचार्य पूज्यपाद हमारे परोक्ष प्रदर्शक हैं। भट्टाकलंक, पात्रकेसरी, जिनसेन, मानतुंग, वादीभसिंह, कुमुदचन्द्र, समन्तभद्र, वीरसेन आदि जगत्पूज्य महाकवियों का सत्कार करके मैं प्रस्तुत ग्रन्थ के सन्दर्भ में सिंहावलोकन दृष्टि विमर्श रेखांकित करता हूँ।

कितने ही कवि ऐसी कविता करते हैं जो शब्दों से सुन्दर होती है परन्तु अर्थ से शून्य होती है। कितने ही कवि सुन्दर अर्थ को पाकर भी पद्योजना के बिना आनंददायी कविता नहीं रच पाते। किन्तु प्रस्तुत काव्य में कवि अपने लक्ष्य में पूर्ण रूपेण सफल सिद्ध हुए। क्योंकि कवि ने सत्पुरुषों के आश्रय से ही अलंकार, गुण, रीति, रस, छन्दादि से युक्त यह महानतम काव्य रचा है।

महाकाव्य धर्मकथा–धर्मकथा के सात अंग होते हैं-द्रव्य, क्षेत्र, तीर्थ, काल, भाव, महाफल और प्रकृत। कथा नायक जीव द्रव्य है। कथा नायक का देश, प्रदेश, जन्मग्राम आदि क्षेत्र है। कथानायक दिगम्बर श्रमण का चरित्र ही तीर्थ है। भूत भविष्यत, वर्तमान की व्यवस्था काल है। क्षयोपशम भाव इसमें निबद्ध है तथा इसके पढ़ने, सुनने, सुनाने से होने वाला तत्त्वज्ञान इसका फल है, वर्णनीय कथा वस्तु ही प्रकृत है, इस तरह सप्तांग परिपूर्ण सत्कथा महाकाव्य में निबद्ध है।

प्रस्तुत महाकाव्य राष्ट्र भाषा अनुदित मौलिक रचनाओं का भक्तिमयी प्रस्तुतिकरण है। प्रत्येक जीव शान्ति चाहता है। वह शान्ति जिन माध्यमों से प्रकट होती है, उनमें सत्साहित्य का अनिर्वचनीय महत्वपूर्ण स्थान है।

संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन में संत, साहित्य, तत्व और पुरातत्व का होना आवश्यक है। विशुद्ध मनस्वी, निष्काम साहित्य साधकों के द्वारा जो भी रचा जाता है वह स्वच्छ दीवार पर अंकित सुचित्र की तरह सदैव जयवंत होता रहता है।

जिन शासन के यशप्राण महाकवि जिनसेन आचार्य कृत महापुराण, आचार्य रविषेण कृत पद्म पुराण एवं जिनसेन द्वितीय का हरिवंश पुराण महाकवि पुष्पपदन्त का महापुराण, तथा गुण भद्राचार्य कृत उत्तर पुराण श्रेष्ठ महाकाव्य है, जिनमें विविध छन्द, रस, अलंकारों का विशिष्ट रीति से समायोजन है। महाकाव्य के नायक तो नवरस में सर्वोत्तम रस शान्त रस की चैतन्य मूर्ति हैं,मैं तो उस काव्य मूर्ति, शान्त रस मूर्ति का उपासक मात्र हूँ। शान्त रस कवि का स्वभाव रस है।

वह शान्त रस जब परमेष्ठी के गुण स्तवन में ओत प्रोत निमग्न हो तो पाठकों को कवि की निर्मल आत्मा का दर्शन तो परोक्ष होता ही है, तथा काव्य नायक की प्रत्यक्ष अनुभूति भी अवश्य होने लगती है। तव परम सन्तोष और आत्मीय आनन्द अपने चरमोत्कर्ष पर होता है।

महाकाव्य का यह दुर्लभतम खजाना किसी स्वर्ण भण्डार से कम नही, यह तो सचमुच ही अमूल्य उपहार है जिन स्रोतो से महाकाव्य का प्रणयन संभव हो सका कवि उनके प्रति कृतज्ञ है तथा मैं भी उन चैतन्य शक्ति स्रोतो के प्रति आदर व्यक्त करता हूँ।

कलाकार कला से तथा रचनाकार रचना से श्रेष्ठ होता है, उसके मानसगर्भ में ऐसी और कितनी अनमोल गूढ़तम रचनायें अंकित, जो समयानुसार ज्ञानगर्भ से प्रकट होकर लोक कल्याण के लिए अवतरित होंगी—

मैं तो महाकाव्य समागत कुछ प्रकीर्णक रचनाओं काव्यांशों से आपको अवगत कराके काव्य का मर्म प्रस्तुत करने का प्रयास करता हूँ।

त एव कवयो लोके, न एव च विचक्षणाः।
शेषां धर्म कथांगत्वं, भारती प्रतिपद्यते।।

संसार में वे ही पुरुष कवि हैं और वे ही चतुर हैं जिनकी वाणी धर्मकथा के अंगपने को प्राप्त होती है अर्थात् जो अपनी वाणी द्वारा धर्मकथा की रचना करते हैं।।62।।

कवि सुत श्रमण विचिन्त्यसागर जी ने अपने दीक्षा गुरू महाकवि दिगम्बराचार्य श्री विमर्श सागर जी के जीवन वृत्त पर जो काव्य रचना की, वह काव्य उन्हें कवि रत्न अलंकरण से अलंकृत करने में समर्थ सिद्ध है। आपने '**भावलिंगी संत**' की रचना में जिस प्रतिभा का परिचय दिया वह नैसर्गिक प्रतिभा विरले सारस्वत कवियों में ही पायी जाती है, जो आपने दर्शायी ।

प्रस्तुत महाकाव्य में चौबीस पर्व हैं जिनमें लगभग 2500 पद्य हैं, जो 3 लाख स्वर मात्राओं से परिपूर्ण हैं।

महाकाव्य में विषय वस्तु—प्रथम पर्व में वृषभादि वीरान्त चौबीस तीर्थंकरों का स्तवन कर मंगलमय मंगलाचरण कर महाकाव्य का श्री गुरू किया। इस अध्याय में ही देश काल वर्णन के पश्चात् गौरवशाली गुरू परम्परा का भक्ति भाव पूर्ण सविनय नामोल्लेख कर निबद्ध मंगल किया। अनंतर महाकाव्य के महानायक की पुण्य प्रसूता जन्म नगरी जतारा की भूगौलिक स्थिति का सुन्दर वर्णन है। जन्मोत्सव का सरस मनोहारी चित्रण भी आपने काव्यांकित किया जो जग पावनकारी प्रथम पर्व में समाहित है। इसमें पद्य संख्या 116 है।

द्वितीय पर्व—पर्वारम्भ सिद्ध वंदना के साथ करके प्रसूत पुत्र रत्न के सन्दर्भ में भविष्य वक्ता द्वारा की गई उस भविष्यवाणी का काव्यांकन भी कवि ने किया। जो आज पूर्ण रूपेण चरितार्थ और जातक पर सत्यार्थ घटित हो रही है।

माँ जीवन की प्रथम पाठशाला होती है जो जनित सन्तान में संस्कार और सद्गुणों को जनती है। जिसका प्रारंभ प्रथम जिन दर्शन एवं जिन मंदिर से होता है। इसका सुसंस्कृत स्वरूप कवि ने अपने काव्य पुरूष में प्रतिपादित किया। अनंतर शैशव कालीन सुलभ सहज चेष्टाओं का दर्शन भी कवि ने कराया। पश्चात् बाल्यकाल की बालकोचित क्रियाओं और आनन्द युक्त जीवन का शुभ दर्शन कलम से कराया।

गिटार का स्वर भी फीका लगने लगता जब तुतलाता हुआ बल्लू सामने आ जाता। मिश्री की मिठास और अमृत की मधुरता को बल्लू ने बचपन में ही कण्ठगत कर लिया इसलिए अबतक वह काव्य नायक को छोड़कर अन्यत्र कहीं न पायी जाती है। भगवती माँ और सरस्वती माँ दोनों ने आपको जन्म देकर धन्यता प्राप्त की। सरस्वती आपके कण्ठ में नहीं सर्वांग में है क्योंकि जब आप मौन रखते हैं। तब वह अन्य अंगों से प्रकट होती है।

इस पर्व में 108 पद्य हैं। बचपन का नौका बिहार अवश्य ही पठनीय है। जननी सेवा का सार तत्त्व हृदयग्राही है। संसार का सुख तो वही जानता है जिसके आँगन में बल्लू जैसा शिशु किलकारियाँ करके सरगम की तान और अमृत को फीका कर देता हो।

तृतीय पर्व—अरिहंत स्तुति से आरंभ होकर काव्य नायक की विद्या प्राप्ति, शिक्षा धर्म के विविध आख्यानों से परिपुष्ट है, इस पर्व में 114 पद्य हैं। जिनमें पद्य क्रमांक 10,11,16, 28, 81, तो अद्भुत अर्थ पूर्ण पदावली से युक्त हैं। गुरू शिष्य का मधुर संवाद और मधुर सबंध निश्छल भाव से कवि ने ऐसा रख दिया कि पाठक वर्ग को काव्य नायक एक बालक के रूप में ही दिखता है। आनंद देता हुआ । कुछ पद्यांश यहाँ प्रदर्शित हैं—

"गुरु और शिष्य का यह रिस्ता जग में पावन कहलाता है।
गुरु थोड़ा श्रम ही देते है, पर शिष्य बहुत पा जाता है।।10।। "

इसमें गुरू और शिष्य के मध्य पवित्र संबंध दर्शाया जो रिस्ता आस्था से युक्त हो मोक्ष का रास्ता बनकर शास्ता बनाने में समर्थ है। पद्य क्रमांक 11 की मात्र दो पंक्तियाँ जो आचार्य कुन्द कुन्द की गाथा **आइरिय पसायेण विज्जा मंताय सिज्झंति** का भाव रूपान्तरण हैं देखिए–

गुरू भक्ति की अद्‌भुत महिमा, शिष्यों में जब लहराती है।
कहते हैं गुरु प्रसाद से खुद, विद्या सु सिद्धी हो जाती है।।11।।

यहाँ आचार्य की प्रसन्नता से विद्या सिद्धि होना बतलाया है इससे श्रोताओं को प्रेरणा मिलती है कि हम अपनी श्वास गति की ध्वनि से भी गुरू को कष्ट न पहुँचायें चलने की आबाज तो बहुत दूर की बात है। विनय और आज्ञापालन प्रसन्नता के मंत्र है।

पद्य सौलहवें में मित्रता का मधुर चित्रण है–

है मित्र वही जो सुख दुख की, घड़ियों में साथ निभाता है।
गर इक को पीड़ा हो थोड़ी, दिल दूजे का भर जाता है।।
इक दूजे के हित में अपना जो सब कुछ अर्पण कर देते।
इक दूजे की विपदाओं को, हँसकर सिर पर जो लेते ।।

अर्थ भाव सरस और अत्यंत सरल वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अनुकरणीय है। असफलता हाथ लगने पर जो लोग तनाव और विषाद से घिरकर आत्म हत्या की ओर बढ़ते हैं उन्हें रोकने के लिए- दो महत्वपूर्ण पंक्तियाँ पद्य 31 में है–

असफलताओं से जो शिक्षा लेकर आगे बढ़ जाता है।
वो ही मानव इस धरती पर इक महापुरूष कहलाता है।।

इस काव्यांश के माध्यम से संकट में धैर्य धारण रखो दुख के बादल छट जायेंगे की प्रेरणा दी है। कृपा भाव और करुणा दृष्टि से दीन दुखी जीवों के दर्द को समझकर अनुकम्पा भाव से समस्या का हल खोजने में आप कुशल रहे–पद्यांश 73 दृस्टव्य है–

दुखियों को देख अरे जिनका, मन करुणा से भर जाता है।
वो ही धरती पर महापुरूष या तीर्थंकर बन पाता है।।

काव्यांश सरल है यदि आचरण में आये तो जीवन महान बन जाये। इसी तरह तृतीय पर्व में एक रहस्य छुपा हुआ है जिसे मैं पाठकों के समक्ष रखकर वंशानुगत प्रभाव दर्शाता हूँ।

आप जिस महानायक के विषय में महाकाव्य पढ़ रहे हैं उस महानायक के कुल में कुल गौरव महाकवि शर्मन लाल 'सरस' हुए जिनके जैन कहानियों तथा तीर्थ परिचयों पर रचे काव्य सरस ही हैं। हमारे काव्य नायक आचार्य विमर्शसागर जी को काव्य शक्ति विरासत में मिली। इसी कारण आप अद्‌भुत काव्य प्रतिभा के धनी महाकवि है। जीवन है पानी की बूँद" आपका प्रथम महाकाव्य है।

चतुर्थ पर्व–पर्वारंभ पंचमेरू तीर्थ वंदना से मंगलाचरण हुआ। इसमें 100 पद्य हैं। विद्यार्थी जीवन के खेल, मनोरंजन, प्रतिभा प्रदर्शन निर्णायक क्षमताओं का वर्णन है।

पंचम पर्व–इस पर्व में 108 पद्य हैं। प्रारंभ में पंच परमेष्ठी स्मरणार्थ परमेष्ठी स्तुति है। अनंतर जिन धर्म, जिनागम जिनचैत्य, जिनचैत्यालय सहित नौ देवता वंदना है। तथा वैराग्य बीज बपन एवं दिगम्बर मुनि विशुद्ध सागर के दर्शन एवं सत्संग है।

इसी पंचम पर्व में गुरू विरागसागर के प्रथम सान्निध्य की घटना का यथाविधि वर्णन है।

षष्ठम पर्व–इस पर्व में 105 पद्य हैं। समयसार स्वरूप परम शुद्ध दशा को प्राप्त सिद्ध भगवंतो की वंदना उनके आठ गुणों की प्राप्ति हेतु कर मंगलाचरण प्रारंम्भ है। गुरू गुणानुरागी राकेश भैया की वैराग्य संबंधी प्रथम विशुद्धि तथा उस योग्य जागृत पुण्य बुद्धि का प्रशस्त चित्रण तथा गुरूदेव विरागसागर जी द्वारा मार्गदर्शन एवं

सफल आशीर्वाद का कुशल काव्यांकन के साथ चित्रण है। सिद्ध क्षेत्र अहार जी का दर्शनात्मक विवेचन है।

सप्तम पर्व—इस पर्व में 113 पद्य हैं। प्रारंभ में तीर्थंकर केवली, सामान्य केवली, समुद्घात केवली, उपसर्ग केवली, मूक केवली, अंत: कृत केवली, की आराधना में मंगलाचरण कर प्रामाणिकता आगमिक दर्शन दिया। श्री अतिशय क्षेत्र पपौरा दर्शन, ग्रीष्मकाल वाचना टीकमगढ़ तथा ललितपुर चातुर्मास में गुरू सेवा के दुर्लभ क्षणों का वर्णन है।

अष्टम पर्व—इस पावन पर्व में 112 पद्य हैं। जिनमें सिद्ध वंदना से मंगलाचरण हुआ। देवेन्द्रनगर में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में हुईं दीक्षाओं के साथ काव्य नायक की ऐलक दीक्षा का बैराग्य वर्द्धक काव्यांकन, तथा कटनी (म.प्र.) में हुई ग्रीष्मवाचना में प्रारंभिक तपो साधना की कठिनाइयों में गुरू अवलम्वन का महत्व दर्शाकर संस्कार धानी जबलपुर के पावन वर्षावास का अनुभूति परक उल्लेखन है।

नवम पर्व—इस पवित्र पर्व का मंगलगान आचार्य भक्ति से आरंभ हुआ। कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्र की गुरू संघ साथ वंदना का भक्ति भाव भीना चित्रण है। टीकमगढ़ वाचना, पंचकल्याणक तथा करगुँवा क्षेत्र पर दादा गुरू तपस्वी सम्राट आचार्य सन्मतिसागर जी मंगल गुरू मिलन महोत्सव तथा तीन पीढ़ी के साधुओं का एक साथ मनोहारी दुर्लभ तत्व वाचन दर्शाया है। पुन: टीकमगढ़ वाचना, पश्चात भिण्ड नगर में चातुर्मास का पुनीत उल्लेखन है। इस में 104 पद्य हैं।

दसम पर्व—इस पर्व में 110 पद्य हैं। प्रारम्भिक मंगलाचरण में पंच निर्ग्रन्थों की आराधना कर कवि ने साधु भक्ति कर आर्शीवाद लिया। भिण्ड वर्षायोग के बाद समीपस्थ तीर्थ क्षेत्र बरासौ में हुईं 14 दिसम्बर 1998 को 13 निर्ग्रन्थ मुनि दीक्षाओं का तपोमय दृश्य दर्शन तथा तात्कालिक परिस्थितियों का आंकलन कर विषय वर्णन साधुता का प्रभाव दर्शाया गया। इस प्रकार दस पर्वों में 1108 पद्यों के माध्यम से श्रमण दीक्षा तक का चित्रांकन हुआ।

एकादश पर्व—पर्वारम्भ ऋद्धिधारी ऋषि वंदना से हुआ। इस पर्व काव्य की अतिशय क्षेत्र वानपुर यात्रा, अतिशय क्षेत्र गिरार यात्रा, महरौनी (उ.प्र.) चातुर्मास का युवा प्रेरणास्पद युक्ति युक्त वर्णन, घुबारा (म.प्र.) में आयोजित सिद्धचक्र महामण्डल विधान सान्निध्य का काव्यांकन, तथा रामटोरिया (उ.प्र.) में आयोजित नवदिवसीय णमोकार मंत्र अनुष्ठान का पठनीय विवेचन है। एक सौ दो पद्यों में पर्व समाहित है।

द्वादश पर्व—सर्वप्रथम मंगलाचरण में चतुर्विध श्रमण संघ की वंदना करते हुए ऋषि, मुनि, यति, अनगार भावों की भावमयी प्रस्तुति। वात्सल्य-प्रभावना अंग के सजीव चित्रण में दो श्रमण संघो का मिलन समारोह दर्शाया, जो (म.प्र.) के नगर शाहगढ़ में हुआ। जिसमें आदर्श श्रमण विशुद्धसागर जी एवं हमारे काव्यपति विमर्शगुरू की श्रेष्ठता का महामिलन हुआ। बरायठा प्रवास बण्डा प्रवास, कर अंकुर कॉलोनी मकरौनिया सागर चातुर्मास स्थापना तक का मनोहारी अंकन है। पद्य संख्या 109 है।

त्रयोदश पर्व—पावन पर्व का प्रारंभ ज्ञायक भाव मयी शुद्धात्म वंदना रूप मंगलाचरण से हुआ। श्री जिनेन्द्र अर्चना महोत्सव तथा "हे वन्दनीय गुरूवर" काव्य कृति का सृजन तथा 'शंका की एक रात' प्रवचन कृति का विमोचन तथा मंगलमय वर्षायोग समापन अनंतर बाहुबली सागर एवं विमर्शसागर संघ के वर्षाकालीन संयोग के बाद पृथक-पृथक बिहार की क्षणिका प्रस्तुत है। पद्य संख्या 111 है।

चतुर्दश पर्व—विद्वत नगरी सतना में हुए वर्षावास का सरस चित्रण, भक्ताभर प्रशिक्षण शिविर तथा तात्कालिक दीक्षित आर्यिका विलक्ष्य श्री माता जी के समाधिमरण का उल्लेख है इसमें लगभग 111 पद्य हैं।

पञ्चदश पर्व—तीर्थंकर आदिनाथ वंदना, प्रशिक्षण पूजन शिविर, अमर पाटन प्रवास, शीतकालीन वाचना, महरौनी पंचकल्याणक ललितपुर इन्द्र ध्वज विधान, खुरई प्रवास अशोकनगर चातुर्मास कर राजस्थान प्रान्त की ओर मंगलबिहार। पर्व में109 पद्य हैं।

षोडश पर्व—इस सोलहवें पुनीत पर्व में जिनवाणी भक्तिमयी मंगलाचरण है। भक्तामर शिविर उल्लेख, कवि विचिन्त्य सागर अर्थात्, पूर्वनाम राजीव भैया का मंगल प्रवेश। मुनि विश्वतीर्थ सागर का मिलन। अतिशय क्षेत्र चाँदखेड़ी बारह दिवसीय पवित्र प्रवास। बूँदी पंचकल्याणक, रामगंजमण्डी चौमासा। सम्पूर्ण काव्यांकन में 108 पद्य रचित हैं।

सप्तदश पर्व—इस आचरण पर्व में आचार्य भक्ति से पर्वारम्भ का मंगलाचरण है। सिंगोली (म.प्र.) का वर्णन तथा गुरू भक्ति कृति का प्रणयन, आगमहीन रौड़िक मान्यताओं का निरसन कर जिन शासन की आगमिक प्रतिष्ठा का वर्णन है। कुल 100 पद्य हैं।

अष्टादश पर्व—इस शील पर्व में 140 पद्य हैं। विजय नगर वेदि प्रतिष्ठा, शाहपुर प्रवास, सिंगोली वर्षायोग कुंथुगिरि तीर्थ पर गुरूवर विरागसागर जी द्वारा आचार्य पद की मांगलिक घोषणा। काव्य नायक के सान्निध्य में रावतभाटा नगर प्रवेश, कल्पद्रुम मण्डल विधान, हिण्डोली में विनम्रसागर जी एवं गुरू भ्राता विमर्श सागर का महामंगल संतमिलन।

एकोनविंशति पर्व—इस पर्व में कोटा नगर में आयोजित वर्षायोग तथा विद्वत संगोष्ठी, रत्नत्रय विधान की चर्चा है। तथा विमर्श साहित्य सदन का उद्घाटन दीर्घ कालीन प्रवास में एक महाशंखनाद किया'' कत्लखाना खुलने के विरोध में सफल अभियान अविस्मरणीय एवं अनुकरणीय है। अनंतर शिवपुरी, चातुर्मास सेसई नगर में कल्पद्रुम मण्डल विधान, तथा पंचकल्याणक का श्रवणीय काव्यांकन है।

विंशति पर्व—इस पर्व में सिद्ध क्षेत्र सोनागिर तीर्थ वंदना का भक्तिमयी मंगलगान है। आगरा चातुर्मास अन्तर्गत हुए कार्यक्रम का काव्यमयी प्रस्तुति करण। तथा पंचकल्याणक की चर्चा। एटा नगर में आ. गुप्तिनंदी से मिलन, एटा चातुर्मास पंचकल्याणक के पश्चात् जयपुर में आ. भरतसागर से मिलन उदयपुर में गुरू शिष्य मिलन जो सात वर्ष के बाद हुआ उसका श्रृंगार रस में चित्रण। तथा गणाचार्य विरागसागरजी द्वारा प्रदत्त छब्बीस दीक्षाओं की अद्भुत एवं वैराग्य रस में काव्यांकन है। पर्व में 109 पद्य हैं। इसी पावन पर्व में आचार्य विमर्श सागर जी अपने गुरूदेव केकर कमलों से हुए आचार्य पद प्रतिष्ठान का महत्वपूर्ण वर्णन भी है।

एकविंशति पर्व—इस पूज्य पर्व में सिद्ध वंदना कर मंगलाचरण हुआ। तथा कोटा में हुई प्रथम दीक्षा का हर्षवर्द्धक जनमन सुखदायी चित्रण है। अशोकनगर चातुर्मास तथा **"विमर्श लिपि"** स्व रचित नूतन लिपि का अविष्कार हुआ। अनेक गीत निबद्ध हुए! जीवन है पानी की बूँद तथा भक्तामर अनुवाद का संगीतमयी प्रस्तुति के साथ अभिनव यंत्र बद्धन। रिकार्ड एवं प्रसारण शिवपुरी में कल्पद्रुम विधान के पश्चात् जतारा जन्मभूमि पर प्रथम आगमन। आँचल दीदी का संघ प्रवेश। जतारा पंचकल्याक, पृथ्वीपुर में विधानोत्सव समारोह आर्यिका विशाश्री का दर्शनार्थ आगमन आचार्य विभवसागर की मांगलिक अगवानी एवं मिलन कर संघ साथ नगर रथ यात्रा पृथ्वीपुर से दोनों संघों का बिहार एक साथ। बरूआ सागर में मुनि विनिश्चलसागर से मिलन। सोनागिर सिद्ध क्षेत्र पर पंचकल्याणक समारोह में पधारे गुरूदेव से मिलन, ग्वालियर में मुनि विहर्षसागर से मिलन, मुरैना में विनिश्चयसागर से मिलन, आगरा में आयार्य सुंदरसागर से मिलन आगरा में महावीर जयंती कर जयपुर यति सम्मेलन हेतु प्रस्थान। खानियाजी जयपुर विशुद्धसागर, विभवसागर, विमदसागर, से मिलन तथा विरागसागर जी गुरूवर की भव्य आगवानी एवं रजत जयन्ति यति सम्मेलन का महत्वपूर्ण वर्णन, युग प्रतिक्रमण का सविस्तार वर्णन । पश्चात् विजयनगर चातुर्मास, दीक्षा समारोह यह सम्पूर्ण पर्व संघ मिलन से भरा हुआ है। काव्यनायक के जीवन का यह वर्ष संत मिलन वर्ष वयोवृद्ध आचार्य रहा। यह पर्व संत मिलन है, इस पर्व में 105 पद्य हैं।

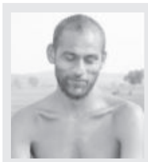
द्वाविंशंति पर्व—इस पवित्र पर्व में चाँदखेड़ी दर्शन, चिन्मयसागर '**जंगल वाले बाबा**' का मिलन, प्राप्तिसागर से मिलन, तीर्थधाम आदिश्वरम् चंदेरी का पंचकल्याणक भिण्ड चौमासा, तीन दीक्षायें, एटानगर में आचार्य सुंदरसागर, वयोवृद्ध आचार्य नमिसागर का वात्सलमयी मिलन दृश्य, राष्ट्र हितैषी विमर्शसागर

जी एवं क्रांतिकारी संत तरुणसागर मुनि का महामंगल मिलन इस प्रकार समग्र विवरण 101 पद्य में समाविष्ट है।

त्रयोविंशति पर्व—मंगल आराधना से पर्वारम्भ हुआ। छीपीटोला, आगरा में शिखर शिलान्यास, अलीगढ़ प्रवास। हस्तिनापुर तीर्थ में गणिनी आर्यिका ज्ञानमति माताजी से मिलन तथा नि:शंक भूषण से मिलन। उत्तर प्रदेश की जैन नगरी बड़ौत में चातुर्मास। कल्पद्रुमविधान आ. विन्ध्यश्री की आगवानी। आ.ज्ञान सागर से मिलन। 11 जिनदीक्षा प्रदान कर पृथ्वीपुर पंचकल्याणक हेतु प्रस्थान, पृथ्वीपुर (म.प्र.) में पंचकल्याणक समारोह, जन्मभूमि जतारा में भव्य प्रवेश का सुखद वर्णन है। खरगापुर ग्रीष्म वाचना, आहार महोत्सव, टीकमगढ़ ग्रीष्म कालीन वाचना, गणिनी आर्यिका विभाश्री माताजी से मिलन, मुनिश्री विश्वभूसागर जी की समाधि, वानपुर क्षेत्र वंदना कर पुन: टीकमगढ़ चातुर्मास 2015 का ऐतिहासिक चित्रण, आचार्य विमर्शसागर जी द्वारा '**विमर्शोदया**' प्राकृत टीका पूर्ण, पपौरा जी में चौषंठ ऋद्धि विधान, मैनेजमेंट सेमिनार, जैन यूथ क्रॉंन्फ्रेंस एवं विमर्श जागृति मंच का चतुर्थ राष्ट्रीय अधिवेशन, टीकमगढ़ राजमहल में ऐतिहासिक प्रवचन, समोशरण पंच कल्याणक प्रतिष्ठा, भगवती जिनदीक्षा के साथ टीकमगढ़ चातुर्मास समापन, अंत में बैरवार पंचकल्याणक के साथ इस पर्व का सुखद समापन हुआ। इस पर्व में 100 पद्य है।

चतुर्विंशति पर्व—चतुर्विंशति पर्व में निजात्म ज्योति एवं भावी केवली भगवंत पद्मप्रभ देव की वंदना के साथ मंगलाचरण किया गया है साथ ही इस समग्र पर्व में काव्य नायक, निस्पृह तपस्वी, श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी की निर्मल साधना से सिद्धक्षेत्र आहार जी में घटित महान अतिशय का मार्मिक और हृदयस्पर्शी वर्णन कवि द्वारा किया गया है, इस पर्व का एक-एक पद्य आह्लादकारी, रोमांचकारी एवं अतिशयकारी है। इस पर्व में 44 पद्य हैं। समग्र महाकाव्य एक महाकथा अथवा महापुराण के रूप में प्रस्तुत है। कवि का कौशल एवं काव्य नायक आचार्यश्री विमर्शसागर जी की यह जीवनी यथार्थ में संजीवनी है। जो मोह शक्ति से सुप्त चैतन्य लक्ष्मण आत्मा को जागृत करने में समर्थ शाली है। यही जीवनी क्या जीवनदायिनी। कवि का श्रम श्लाघनीय तथा कवि के काव्यनायक वंदनीय हैं। पाठक वर्ग इस महाकाव्य को पढ़कर आचरण करें तो महापुरुष स्वत: प्रकट हो जायेगा।

"जैनम् वचनम् सदावन्दे"



आद्य कथन

श्रमण सुव्रतसागर मुनि
(संघस्थ–अध्यात्मयोगी आचार्यश्री विशुद्ध सागर जी)

भारत देश सदा से ही संस्कार एवं सु–संस्कृति प्रधान देश रहा है। जिसने सकल विश्व को आध्यात्म का निर्यात किया है। इसमें आद्य काल से ही श्री जिन वीतराग श्रमण संस्कृति सतत् गतिशील रही है। वीतराग श्रमण संस्कृति का गौरव पूर्ण एवं विशिष्ट स्थान ही नहीं, अपितु भारत की महिमा गरिमा में यह प्राण–शक्ति के समान है। यह आध्यात्म प्रधान संस्कृति, यम, नियम, व्रत, संयम, स्वाध्याय, तप और त्याग की सु–संस्कृति है। प्रस्तुत संस्कृति का यह शाश्वत और पवित्र ध्येय रहा है कि जीवन का लक्ष्य **"भोग नहीं योग है"**। संग्रह नहीं त्याग है। राग नहीं वैराग्य है। अंधकार नहीं प्रकाश है। मृत्यु नहीं अमरता है। मात्र विचार ही नहीं वरण् सु–विमर्श के साथ विराग पथ भी है।"

जैन संस्कृति ने आध्यात्मिक जागरण और सामाजिक उत्थान में अपना सहयोगात्मक स्तुत्य योगदान पुराकाल से ही प्रदान किया है।

इस श्रमण संस्कृति ने विश्व इतिहास को जहाँ पुरातत्त्व प्रदान किया है, तो वहीं विपुल मात्रा में सु–साहित्य भी प्रदान किया है। जिसमें प्रतिभा सम्पन्न मूर्धन्य मनीषियों, मुनियों, आचार्यों, निर्ग्रंथ लघुनंदन ऐलक, क्षुल्लकों ने अपने चिन्तन और मनन की अन्तत: सलिलाओं द्वारा भारतीय मानस को सदैव उर्जर एवं प्रकाश पूर्ण बनाकर चिरन्तन तथा सनातन सत्यों को उद्घाटित किया है।

इसी सुपावन परम्परा में श्री जिन नमोस्तु शासन के सजग–समर्थक, प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व से विभूषित, मुखरित प्रज्ञा के धनी, साहित्य सम्पदा को वर्द्धमान करने में प्रवीण, कवि हृदय, निर्ग्रंथ दशा के अनुरागी–मुनि श्री विचिन्त्य सागर जी हैं। जिन्होंने अपने दीक्षा गुरु, कवि हृदय, श्रमण शिरोमणि, श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महाराज के जीवन पर **"भावलिंगी संत"** (महाकाव्य) कृति का प्रणयन किया है, जो स्तुत्य है, श्लाघनीय है।

यह श्रमण संस्कृति है जिसमें पुरुषार्थ के पावन धरातल पर तप, साधना, संयम के संयोजन से निर्ग्रंथ से अरिहंत पद भी प्राप्त किया जा सकता है। यहाँ गुणों के आधार पर ही पूज्यपना स्वीकार्य है। यह वीतराग सर्वज्ञशासन है, यहाँ तो सर्वत्र गुणों की ही अर्चना–वंदना होती है। कहा भी है कि **"वंदे तद्गुणलब्धये"**। आपके गुणों की प्राप्ति हेतु मैं आपकी वंदना करता हूँ। इस श्रमण परम्परा में जो अपनी आत्मा का क्रमिक विकाश करके सम्प्रति में भगवत् सत्ता प्रगट करने के रत्नत्रय मार्ग में प्रवृत्त हो जाता है अथवा प्रगट कर लेता है वह पूज्यता प्राप्त कर लेता है।

इस सनातन श्रमण परम्परा में आद्य तीर्थंकर महाश्रमण 1008 श्री वृषभदेव अपरनाम श्री आदिनाथ स्वामी हुये, तदुपरान्त क्रमश: तेबीस तीर्थंकर और हुये। जिसमें अतिम तीर्थंकर भगवान वर्द्धमान स्वामी के सु–पावन, निर्मल शासन में हम सभी साधक साधनारत हैं। इसी सुदीर्घ परम्परा में श्रीमदादिसागर जी अंकलीकर महान तपस्वी आचार्य हुये हैं, जिनके शिष्य, प्रतिशिष्य, प्रत्यप्रतिशिष्य वर्तमान में इस बसुन्धरा पर धर्म की महती प्रभावना कर रहे हैं। आचार्य भगवन् 108 श्री आदिसागर जी अंकलीकर महाराज ने अपना आचार्य पद अठारह भाषी श्रमण–श्रेष्ठ 108 श्री महावीर कीर्ति जी महाराज को विधिपूर्वक समर्पित किया। आचार्य भगवन् श्री महावीर कीर्ति जी महाराज के प्रभावक प्रधान शिष्य, वात्सल्य रत्नाकर आचार्य भगवन् 108 श्री विमलसागर जी महाराज एवं मासोपवासी, तपस्वी सम्राट आचार्य भगवन् 108 श्री सन्मति सागर जी महाराज हुये हैं, उक्त द्वय आचार्य भगवतों के

सुपावन संस्कारों से शोभित सम्प्रति में श्रमण शिरोमणि, श्रमण शिल्पी, श्रमण रत्न, गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महाराज हैं। जिन्होंने जहाँ स्वयं तो साधना एवं प्रभावना के शिखर पर आरोहण किया ही है, वरण अनेकानेक शिष्यों को साधना संयम का पथ तथा पाथेय प्रदान किया है।

सूरिगच्छाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महाराज उभय शतक श्रमण श्रमणियों के श्रेष्ठ शिल्पी, सु-साधक, मुक्ति पथ के मुख्यालय, निर्ग्रंथाचार्य विशुद्धि प्रदाता, वैराग्य वर्धक, सफल श्रमण-श्रेष्ठी हैं। आपने श्रेष्ठ-शिष्य श्रमण संस्कृति को सहज ही प्रदान किये हैं, जो श्रमण संस्कृति की ध्वजा को दिग्दिगंत में सुशोभित कर रहे हैं।

जिनमें ज्येष्ठ शिष्य समयसार के प्रस्तोता, अध्यात्म योगी परमपूज्य श्रमणाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी महाराज जो वर्तमान में अध्यात्म जगत के पुरोधा बनकर श्रमण-संघ के सु-स्तम्भ स्थापित हुये हैं। अध्यात्म भक्ति पाठों के सृजेता श्रमणाचार्य 108 श्री विशदसागर जी, सारस्वत श्रमणाचार्य 108 श्री विभवसागर जी, आध्यात्मि भजनों के प्रणेता, **"जीवन है पानी की बूँद"** महाकाव्य के मूल रचयिता, **"विमर्श लिपि"** के सृजेता, योगसार प्राभृत ग्रंथ पर "विमर्शोदया" नामक प्रथम प्राकृत टीकाचार्य, कवि हृदय, सौम्य मुद्राधारी, गुरु आज्ञानुवर्ती श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज, श्रमणाचार्य श्री विनिश्चयसागर जी श्रमणाचार्य श्री 108 विमदसागर जी महाराज, सिद्धान्त रत्न श्रमणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी आदि प्रमुख हैं।

इन्हीं सु-रत्नों में एक श्रेष्ठ रत्न हैं, अध्यात्म के रसिक, कवि हृदय, परमपूज्य श्रमण शिरोमणि, चतुर्विध संघ के पक्षधर, सु-विमर्श भावों के आलय, सु-चिन्त्य विचारों के विद्यालय, श्वेत धवल जिनशासन के धवल साधक, नमिता से नमित, माँ सरस्वती के आँचल की वाणी के प्रयोक्ता, नेह-स्नेह वात्सल्य के दाता, शिष्यों के सु-पथ प्रदर्शक, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, धरती के दिगम्बर देवता, पुलकित मनः तरुणाचार्य, शिवेक्षु परमपूज्य श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज।

प्रस्तुत है—कवि हृदय, वैराग्य मूर्ती, आचार्य रत्न, 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज के सु-शिष्य श्रमण विचिन्त्यसागर मुनि द्वारा लिखित संयमी सृजक, संगीत-मर्मज्ञ के जीवन वृतान्त को समाहित किये हुये एक "लघु संस्तुति" प्रस्तुत है अलौकिक व्यक्तित्व पर आलौकिक-अनुपम आलेखन-सुलेखन। श्रोताओं, साहित्यकारों, श्रावकों, श्रमण-श्रमणियों एवं समाज के श्रेष्ठ सज्जन पुरुषों, सु-पात्रों को, जो पुण्य वर्धनी है, पाप हरणी है, अरु है पारायण करने वालों को भव तारणी प्रस्तुत स्तुति-स्तुतिकार को भी निःसंदेह स्तुत्यता प्रदान करेगी।

पद्मपुराण में आचार्य भगवन् रविषेण स्वामी ने कहा भी है कि—

वृद्धिं व्रजति विज्ञानं, यशश्चरति निर्मलम्।
प्रयाति दुरितं दूरं, महापुरुष कीर्तनात्।।1-24।।

महापुरुषों का कीर्तन करने से भेद विज्ञान वृद्धि को प्राप्त होता है। निर्मल यश फैलता है तथा पाप दूर चला जाता है।

अल्पकाल मिदं जन्तोः शरीरं रोग निर्भरम्।
यशस्तु सत्कथा जन्म यावच्चन्द्रार्क तारकम्।। 1-25।।

जीवों का यह शरीर रोगों से भरा हुआ है तथा अल्पकाल तक ही ठहरने वाला है, परन्तु सत्पुरुषों की कथा से जो यश उत्पन्न होता है, वह जब तक सूर्य, चन्द्र और तारे रहेंगे तब तक रहता है।

वर्तमान में कुछ अप्रतिबुद्ध विघ्न-संतोषी, लोगों ने यह कहना प्रारंभ कर दिया है कि वर्तमान में सच्चे वीतरागी दिगम्बर मुनि नहीं हैं या नहीं होते, लेकिन उन्हें कौन समझाये, **"प्रत्यक्षं किं प्रमाणं"**।

दिगम्बर आचार्य एवं मुनियों के प्रत्यक्ष में दृष्टव्य होने पर भी जो विवेक विहीन बुद्ध यह कह रहे हैं कि मुनि नहीं हैं तथा अपने साहित्य में भी कुभावना को स्थायित्व दे रहे हैं। हो सकता है इनके ऐसे कथन एवं साहित्य से भविष्य में भ्रान्ति के कारण उपस्थित हों। परिणामतः इतिहासज्ञों, अन्वेषकों को भ्रम की स्थिति अवश्य ही उत्पन्न होगी। इनके इन कुभावों को ध्वस्त करने के लिये एक सु-प्रयास की आवश्यकता

है। जिसका निर्वाह श्रमण श्री विचिन्त्य सागर मुनि ने स्वशक्ति अनुसार किया है। जो उन्होंने स्वप्रज्ञा एवं परिश्रमपूर्वक एक महान दिगम्बर आचार्य पर अपनी लेखनी चलाकर वीतराग श्रुत साहित्य को वर्द्धमान किया है।

प्रशन्नता की बात है कि श्रमण श्री विचिन्त्य सागर मुनिराज अपने गुरु की भाँति कवित्व विद्या में प्रवीण हैं। प्रस्तुत कृति **"भावलिंगी संत"** (महाकाव्य) का लेखन कर उन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा को उद्घाटित किया है। इनका गुरु-स्तुति का यह कार्य अनुकरणीय एवं स्तुत्य है। वैसे भी क्या मृगी अपने शिशु-मृग की रक्षार्थ मृगेन्द्र (सिंह) का सामना नहीं करती है? अवश्य ही करती है। ऐसे ही अल्प श्रुतवान भक्ति से प्रेरित होकर क्या प्रभु का गुण स्तवन नहीं करता है? अवश्य ही करता है। वैसे ही सुधी-सज्जनों को भी गुरु भक्ति से प्रेरित होकर गुरुओं की भक्ति-स्तुति अवश्य ही करना चाहिये।

प्रस्तुत कृति **"भावलिंगी संत"** (महाकाव्य) में श्रमण विचिन्त्यसागर जी ने परमपूज्य श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज के गर्भ, जन्म, शिशुत्व, शैशव, यौवन तथा उगते यौवन में वैराग्य की ओर बढ़ते हुये कदम, गृह त्याग, ऐलक दीक्षा, मुनि दीक्षा एवं आचार्य पद तथा उनकी प्रभावना यात्रा का सम्यक् लेखन काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। जो निश्चित ही सुधी सज्जनों को पारायण करने योग्य है। जिस पुरुष की वाणी में वर्ण तो व्यक्त हैं लेकिन वह वर्ण पंचपरमेष्ठियों की आराधना में प्रयुक्त न किये गये हों, तो वह वर्ण और उस पुरुष की वाणी निष्फल ही है, वह मात्र पाप संचय करने में ही निमित्त है। जो सु-गुरुओं का गुणगान करता है वह निर्मल-विशुद्धि को प्राप्त करता है। तथा उसका निर्मल यश लोक में निश्चित ही फैलता है।

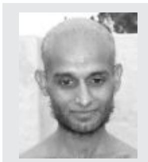
परमपूज्य श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज के जीवन-दर्शन को दर्शाने वाली कृति **"भावलिंगी संत"** (महाकाव्य) इनके सु-शिष्य श्रमण श्री विचिन्त्यसागर मुनि द्वारा सृजित की गई है। मुनिश्री गुणग्राही व्यक्तित्व हैं जो उन्होंने गुणों के आगर पूज्य आचार्यवर्य की स्तुति का यह मंगलायोजन कर परम विशुद्धि को तो प्राप्त किया ही है, वरण् श्रोताओं को भी विशुद्धि-वर्धन का एक उपहार प्रस्तुत किया है।

मुनि श्री का यह लेखन कार्य निरन्तर वृद्धि को प्राप्त हो तथा यह लेखन परम आत्मिक विशुद्धि का कलश बनकर आपके शीर्ष पर शोभित हो तथा वीतराग निर्ग्रंथ अवस्था से परम वीतराग अर्हन्त पद को प्राप्त कराये।

पुनश्च आपको बहुत-बहुत साधुवाद। मुझे प्रशन्नता है कि—प्रस्तुत कृति **"भावलिंगी संत"** (महाकाव्य) का प्रकाशन हो रहा है। आप इसी तरह निरंतर लेखन में अग्रसर रहें, आपको बहुत-बहुत बधाई, सुमंगल भावना के साथ।

इत्यलम्! शुभम् भूयात!

❑❑❑❑



समर्पण

श्रमण विचिन्त्यसागर

लोकोद्योतक संत—श्रमण संस्कृति का अविरल प्रवाह अनादिकाल से भगवान महावीर स्वामी तक और भगवान वर्द्धमान स्वामी से वर्तमान तक निरंतर प्रवाहमान है। आरातीय आचार्यों के पावन तटों से होती हुई यह **'श्रमण गंगा'** जिनश्रुत को पल्लवित और पुष्पित करती आई है। इस **'श्रमणगंगा'** में स्नान कर अनेकानेक भव्य मुमुक्षु स्वयं तीर्थ बन गये, और अनेकानेक **'श्रमण सपूत'** वर्तमान में स्वयं की और दूसरों की आत्मा को तीर्थ बनाने का पुरुषार्थ कर रहे हैं। पंचमकाल के **'अध्यात्म पुत्र'** आचार्य भगवन् कुंदकुंद स्वामी का **'अध्यात्म अमृत'** हो या फिर आचार्य भगवन् पुष्पदंत और भूतबली स्वामी द्वारा लिपिबद्ध सिद्धान्त ग्रंथों की गौरवमयी विरासत हो जितना भी जिनश्रुत का अंश वर्तमान में सुरक्षित है, उसका सारा श्रेय हमारे पूर्ववर्ती आचार्यों की करुणाशीलता को ही जाता है। इन्हीं पूर्ववर्ती आचार्यों की महान परम्परा में वीसवी सदी के महान आचार्य श्री आदिसागर जी अंकलीकर की विशाल आचार्य परम्परा में एक ज्येष्ठ और श्रेष्ठ आचार्य हैं। सूरिगच्छाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज, उनके श्रेष्ठ शिष्यों की अनुपम श्रृंखला में श्रेष्ठ साधक, अध्यात्म के संवाहक, निस्पृहयोगी, परमपूज्य श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज शिष्यों की सुंदर परिभाषा और सद्‌गुरु का वृहद स्वरूप हैं। पूज्य श्री ने अल्पवय में ही कलिकाल का सबसे बड़ा चमत्कार कर दिखाया, जिसका नाम है **'दिगम्बरत्व'**। हमारे आचार्य भगवंत कहते हैं—

कलौ काले चले चित्ते देह चान्नादि कीटके।
एतच्चित्त्वमत्कारः जिनरूप धरा नराः।।

अर्थात् इस कलिकाल में चित्त चलायामान है और देह अन्न का कीड़ा बना हुआ है, ऐसे में गर कोई जिनरूप को, नर धारण करे तो यह चैतन्य का चमत्कार ही जानना चाहिये।

ऐसे चैतन्य के चमत्कार से, भोग विलासता में डूबे जगत को विस्मय पैदा करने वाले, निर्ग्रंथ साधना को नये आयाम देने वाले, बुंदेली धरा के सपूत, परम पूज्यनीय श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज की जीवन यात्रा का शुभारंभ बुंदेलखंड के एक छोटे से कस्वे **'जतारा'** से ठीक उसी प्रकार हुआ जिस प्रकार गंगा का जन्म हिमालय से होता है। गंगा का आविर्भाव जब हिमालय से होता है तो अति लघु रूप में होता है, किन्तु में वह गोमुख से प्रगटी छोटी सी जलधारा एक विराट नदी का आकार धारण कर लिया करती है। ठीक उसी प्रकार पूज्य गुरुदेव श्री की जीवनयात्रा एक साधारण से सुसंस्कृत परिवार से शुरू हुई, किसी को पता नहीं था कि सनतकुमार जी और माँ भगवती की कुक्षी से जन्मा यह बालक एक दिन जैन दर्शन का मर्मज्ञ विद्वान और श्रेष्ठ साधुवर्ग से समादृत, भावलिंग की साधना का श्रेष्ठ साधक बनेगा। श्रमण जगत के निर्मल आकाश में ध्रुव नक्षत्र, की भाँति दैदीप्यमान पूज्यवर का अपराजेय व्यक्तित्व शब्दों के माध्यम से बाँधने योग्य नहीं है। अध्यात्म के अपरिमित योगी का बी.एस.सी. तक उच्च शिक्षा के बाद चेतना को अध्यात्म की तरफ मोड़ना निश्चित रूप से सबको चकित करने वाला था। चैतन्य के इस अनुपमेय चमत्कार की मंगलमयी अभिव्यक्ति को साकार रूप देनेवाले अध्यात्म चेतना के तत्त्वदर्शी सूत्रधार परम पूज्य श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज ने ऊर्ध्वगामी शक्तियों को ओजस्विता प्रदान करनेवाले संयम पथ को चुनकर श्रमण अस्मिता को नूतन आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान की है।

इस अनासक्त योगी का 15 नवम्बर को अवनि पर आविर्भाव जगति के लिये नूतन उपहार से कम नहीं था। 1995 में ब्रह्मचर्य की तेजस्विता के साथ जिनशासन की अप्रतिम साधना का ध्वजारोहण कर, 1996 में ऐलक दीक्षा तथा 1998 में श्रमण प्रवज्या के स्वरूप का अभ्यर्चन निश्चित रूप से अद्वितीय और यशस्वी कदम था। आत्मान्वेषी साधक का मात्र चार वर्ष में ब्रह्मचर्य से श्रमणत्व तक का सफर यह स्पष्ट करता है कि इस सत्यान्वेषी साधक का, साधना के प्रति अप्रतिम अनुराग कितना गहन था और परमपूज्य युगप्रमुख श्रमणाचार्य, सूरिगच्छाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महाराज द्वारा मात्र सात वर्ष बाद ही सद्गुणों से ऊर्जस्वित श्रमण श्री विमर्शसागर जी को आचार्य पद की उद्घोषणा निश्चित रूप से उनकी अप्रतिम योग्यता का गुरु के अपराजेय आशीष द्वारा मंगल अभिषेक ही था।

तेजस्वी बचपन—बाल्यावस्था से ही अपने व्यक्तित्व की अपूर्व तेजस्विता से हर व्यक्ति को प्रभावित करने का 'तिलिस्म' उनके पास था। आत्मा की स्वच्छ और पवित्र अवनि पर माता-पिता के सुसंस्कारों से अभिप्रेरित होकर धर्म का सुखद अंकुरण अल्पवय में ही होने लगा था। जो वर्तमान में जिनशासन की आध्यात्मिक साधना का वटवृक्ष बनकर अनेक भव्य जीवों को अहर्निश धर्म की शाश्वत शीतल छाँव प्रदान कर रहा है। नन्हीं देह में भी विराट और असीम व्यक्तित्व की झलक तब दिखाई देती थी, जब दीन-दुखी असहाय जीवों के प्रति करुणाशील भाव प्रवणता से उनके आत्मा का एक-एक प्रदेश द्रवित हो उठता था।

कला और विज्ञान की जैसी अनूठी प्रखरता का समन्वय इस काव्यनायक के जीवन में दृष्टिगोचर होता है, वैसा हर किसी सामान्य व्यक्ति में देखने को नहीं मिलता। अपने से बड़ों के प्रति 'विनीत बचपन' उनका अनुकरणीय है, स्तुत्य है, प्रशंसनीय है। श्रेष्ठ कुलीन महान पुरुषों में विनम्रता स्वाभाविक रूप से ही प्राप्त होती है। कहा भी है—

नमन्ति सफला वृक्षा, नमन्ति कुलजा नराः।
शुष्क काष्ठाश्च, मूर्खाश्च न नमन्ति कदाचनः।।

अर्थात् फल युक्त वृक्ष और कुलीन मनुष्य नम्र होते है, परन्तु सूखे काष्ठ और मूर्ख कभी नम्र नहीं होते। अपनी विनयशीलता के कारण ही राकेश सभी गुरुओं की नजरों में प्रिय शिष्य के रूप में सम्मान पाते थे।

यशस्वी श्रमण—अपराजेय व्यक्तित्व के धनी परम पूज्य 108 श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज श्रमण जगत में अपनी संप्रदायातीत अप्रतिम साधना के कारण सबसे जुदा और श्रेष्ठ संत हैं। पूज्य श्री के बहुआयामी यशस्वी व्यक्तित्व को जब हम कलम से कागज पर समाकलन करने के लिये उद्धत होते हैं, तब हमें अपनी प्रज्ञा का बौनापन ही परिलक्षित होता नजर आता है।

पूज्य आचार्यश्री का '**करिश्माई सामीप्य**' आत्मा की बंजर भूँ पर वैराग्य के सुखद अंकुर उत्पन्न करने वाला होता है। इन पूज्यपाद के दमकते हुये ऊर्जस्वी मुखमण्डल पर फैली समता भरी मुस्कान के भावनात्मक संप्रेषण से जनमानस अपने दुखदर्द को भूलकर अपने अंदर सुख शान्ति और समृद्धि की अजस्र ऊर्जा की सुखद अनुभूति करने लगता है। '**वात्सल्योन्मुखी**' ये संत किसी एक को नहीं, प्रत्येक को अपूर्व समभाव के धरातल पर तीर्थेश महावीर जैसा '**अकृतिम वात्सल्य**' लुटाने वाले दिगम्बर आम्नाय के लोकमान्य '**आदर्शसंत**' हैं। वंदनीय पूज्यवर के विविधतापूर्ण व्यक्तित्व की '**अनुद्विघन साधना**' वर्तमान समाज में फैले सामाजिक प्रदूषणों को दूर कर एकता और अखण्डता का दिव्य उद्घोष करती है। तभी तो इस '**यशस्वी श्रमण**' का यश फूलों की सुगंध की तरह चारों ओर सुविख्यात है।

ओजस्वी वाग्पति—इस '**सन्मार्ग दर्शी**' मुक्त साधक, के मुक्त कंठ से जब ऊर्जस्वी और '**ओजस्वी वाग्मिता**' प्रस्फुटित होती है तो जिनवाणी के उन ललित स्वरों में तीर्थेश महावीर जैसा अविरल सम्मोहन प्राणी मात्र को अपनी ओर सहसा ही आकृष्ट करता है। '**पारदर्शी व्यक्तित्व के धनी**', '**ज्ञानशील**' और '**सृजन शील**' इस अनोखे संत द्वारा जब जैन वांग्मय के गूढ़ विषयों की अपनी चिर-परिचित '**ओजस्वी शैली**' में सरल और '**सार्वजनीन व्याख्या**' होती है तो

श्रोता चित्राम से स्थिरता को प्राप्त हो जाते हैं। '**सर्ववंद्य प्रदीप्त साधना**' से आलोकित आप श्री की निर्दोष वक्तृत्व शैली अन्य प्रवचनकारों को भी अनुगमन करने जैसी है। आपका—'**आगमानुगामी शब्दाकर्षण**' आपको श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रतिस्थापित करता है। आचार्य भगवन् आत्मानुशासन ग्रंथ में श्रेष्ठ वक्ता का लक्षण बताते हुये लिखते हैं—

प्राज्ञः प्राप्त समस्त शस्त्र हृदयः प्रव्यक्त लोकस्थितिः।
प्रास्ताशः प्रतिभापरः प्रशमवान् प्रागेव दृष्टोत्तरः।
प्रायः प्रश्न सहः प्रभुः परमनोहारी परा निन्दया।
ब्रूयाद् धर्मकथां गणी गुणनिधिः प्रस्पष्ट मिष्टाक्षरः।।27।।

अर्थात् जो बुद्धिमान हो, समस्त शास्त्रों का ज्ञाता हो, लोक रीति का जानकार हो, आशा से रहित हो, प्रतिभा सम्पन्न हो, प्रशम भाव से सहित हो, उठने वाले प्रश्नों के उत्तर जिसने पहले ही देख लिये हों, प्राय: प्रश्नों को सहन करने वाला हो, प्रभावी हो, दूसरों की निंदा के बिना, दूसरों के मन को हरण करने वाला हो, गुणों का भण्डार हो, स्पष्ट और मिष्ठ अक्षर वाला हो ऐसा गणी या आचार्य ही धर्म कथा को कहने योग्य होता है। '**विराज वाग्पति**' राष्ट्रयोगी आचार्य प्रवर श्री विमर्शसागर जी महाराज के श्री मुख से जब हम '**सत्वधर्मी**' वाग्मिता का रसपान करते हैं, तो उक्त कारिका प्राणवंत और जीवंत हो उठती है।

इस उदीयमान संत द्वारा जब **"जीवन है पानी की बूँद"** की '**अक्षराज्जलि**' से प्रवचन के आगाज में भक्तों का अभिषेक किया जाता है तो '**कर ध्वनी**' और '**जयनादों**' से देशना स्थल गुंजायमान हो उठता है। चकोर ज्यों चाँद को एक टक निहारता है उसी भाँति प्रवचन स्थल पर सैकड़ों आस्थाओं का केन्द्र गुरुवर का प्रशस्त मुखमण्डल होता है, और वो धर्म पिपासु श्रीमुख से धर्मामृत का पानकर सुखद अहसासों की पावन पुण्य संपदा का सहज ही संचय कर लेते हैं।

आचार्य और भी कहते हैं—

श्रोतृन् मूकयति ब्रुवन् स्थिरतमम् कुर्वन्नमीषां मनो।
विर्वाष्पः परवाष्पकृत पर दृशा मेकाश्रयः संभवन्।
यस्त्यक्ताङ्ग विकम्पनः प्रचलयन्नित्यं सतां मस्तकं।
क्षीरं श्रोतृषु मुख्यमात्मनि गुणं धत्ते स वक्तोत्तमः।।51।।

अर्थात् जो प्रवचन करता हुआ अपने प्रभाव से श्रोताओं को चुपकर देता है। जो उनके मन को अत्यंत स्थिर कर देता है। जो स्वयं आँसुओं से रहित होकर भी दूसरों के आँसु उत्पन्न कर देता है, जो दूसरों की दृष्टि का एक मात्र आश्रय हो रहा है। जिसने जंघा आदि अंगों का हिलाना छोड़ दिया है। जो अपने बचनों से सत्पुरुषों के मस्तष्क को नित्य चंचल कर देता है, जिसके वचन सुनकर श्रोता अमृतपान जैसा आनद मानते हैं, वह उत्तम वक्ता है।

धन्य है ऐसे गुरुवर की अनुपमेय असाधारण और '**शुभद् मंगल वाणी**' जो उनकी '**अंतरमुखी साधना**' की असीम गहराईयों से निस्सृत होती है। तभी तो इस '**सम्प्रदायातीत संत**' की सभा में हर जाति वर्ग के लोग, जाति और धर्म के विकल्पों से दूर भगवान जिनेन्द्र की वाणी का रसपान करते हैं। जब यह '**तेजस्वी संत**' अपनी निर्भीक और मार्मिक शैली में जिनसूत्रों की गर्जना करता है तो शैथिल्य की ओर बढ़ते श्रावक और संतों के कदम सिर्फ थमते ही नहीं, अपितु समीचीन मार्ग की ओर मुड़ जाते हैं। आपकी नि:शंक शैली को सुनकर विद्वत समूह अक्सर कहता पाया जाता है कि महाराज श्री जब आपके प्रवचन सुनते हैं तो हम विद्वानों का सीना चौंड़ा हो जाता है, हमें गर्भ होता है कि वर्तमान में भी आचार्य समंतभद्र स्वामी और अकलंक देव जैसे निर्भीक साधक मौजूद हैं जो बिना किसी लाग लपेट के जिनेन्द्र वाणी का मुक्तकंठ से उद्‌घोष करते हैं।

अनुशासन का महारुप—आत्मानुशासित शुद्ध चिद्‌रूप चिन्तन के प्रस्तोता '**यतीश्वर**' परम अर्चनीय पूज्य श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी

महाराज के जीव वृत्त पर जब हम अनुशासन की रेखाओं को निहारते हैं तो एक ओर हमें '**वीरशासन**' की असीम समृद्धि दिखाई देती है तो दूजी ओर '**विराग शासन**' का विराट रूप नजरों में लहराता है। वो खुद अनुशासन के दायरे में रहते हैं और अपने संघस्थ साधकों को सतत अनुशासन की पाठी पढ़ाते रहते हैं। पूज्य गुरुदेव के संघ संचालन के अनुपम तरीके में उनकी '**आत्मानुशासन प्रिय परिणति**' का महान रूप स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। पूज्यवर का प्रभावी नायकत्त्व उन्हें अन्य संतों से अलग श्रेणी में लाकर खड़ा करता है। शिष्य उनके श्रीमुख से कर्त्तव्य पालन की शिक्षा रूप '**चैतन्य रसायन**' को पाकर अपने अंदर कर्त्तव्य पालन की असीम ऊर्जा का संचार पाते हैं। शैथिल्य को दूर करनेवाले गुरु के उपदेश का एक-एक शब्द कर्त्तव्यों के पालन में जागरण का नव संदेश देता है, पूज्यात्मा, शिष्यों से कहते हैं—

श्री सर्वज्ञ पदार्चनं गुणिजने प्रीतिगुरौ नम्रता।
मैत्री बन्धुषु दुःखितेषु च दया सिद्धान्त तत्त्वश्रुति।
पात्रे दान विधि कषाय विजयः साधर्म्य केष्वद्भुतं।
वात्सल्यं सततं परोपकरणं कार्यं भवद्भिः सदा।

अर्थात् श्री भगवान के चरणों की सेवा, गुणी जनों से प्रीति, गुरु में नम्रता बन्धुजनों में मित्रता, दुखी जनों में दया, सिद्धान्त के रहस्य को सुनना, पात्र में दान देना, कषायों को जीतना, साधर्मीजनों में आश्चर्य जनक एवं अकृत्रिम वात्सल्य धारण करना। निरंतर परोपकार करना ये सब आपको सदा करना चाहिये। पूज्य गुरुदेव का '**गुरुगुणोपासित व्यक्तित्व**' सतत् हमें गुरु के अनुशासन में संबद्ध होकर चलने को अभिप्रेरित करता है। तभी इन सत्य प्रतिज्ञ श्रेष्ठाचार्य की '**गुणकीर्ति**' श्रमण जगत में चतुर्दिक वर्द्धमान है। उनकी हर चर्या में '**विरागानुशासन**' की यशोगाथा गुंजायमान होती है। तब मैं कहता हूँ कि मेरे गुरुवर एक प्रभावी और महत् "**अनुशासित गणी**" हैं।

कृतित्व में झलकता व्यक्तित्व का ऐश्वर्य—सर्वोपास्य महाव्रतिन का जैसा अतुलनीय ऐवर्श्यशाली व्यक्तित्व है, वैसा ही इस '**कलम के जादूगर**' का प्रभावी और ऐवर्श्यद् कृतित्व भी है। जैसा पूज्यवर का व्यक्तित्व उपास्य है वैसा उनका कृतित्व भी स्तुत्य है।

"विमर्शोदया" प्राकृत टीका, लिख बने प्रथमाचार्य—जिन श्रुत की आम्नाय असीम और अनादि है। अगर हम वर्तमान अवसर्पिणी काल को अपने चिंतन का आधार बनायें तो पाते हैं कि प्रथम तीर्थे श ऋषभदेव द्वारा यह '**श्रुततीर्थ**' प्रवर्तित किया गया, जो लगातार 22 तीर्थंकर देवों द्वारा संवर्धन को प्राप्त होता हुआ, 24वें तीर्थाधिपति भगवान वर्धमान स्वामी द्वारा संबंर्धित किया गया। यह '**श्रुतामृत**' लगातार सुदीर्घ गुरु परम्परा से शिष्यों को प्राप्त होता रहा, लेकिन कालकृत क्षयोपशम की क्षीणता से इस '**श्रुतज्योति**' की आभा में भी ह्रास होने लगा, तब आचार्य भगवन धरसेन स्वामी ने चिंतित हो अपने दो प्रज्ञ शिष्य आचार्यद्वय श्री पुष्पदंत एवं श्री भूतवली स्वामी द्वारा इस '**श्रुत अक्षर संपदा**' का लिपिकरण करवाया, यह श्रुत लिपिकरण का कार्य पू. आचार्य द्वय के द्वारा षट्खण्डागम के रूप में पूर्ण हुआ और श्रुत पंचमी पर्व इस भूतल पर मनाया जाने लगा। जहाँ एक ओर आचार्य पुष्पदंत एवं भूतवली द्वारा प्रथम श्रुतस्कन्ध रूप आगम का लिपिकरण हो रहा था तभी द्वितीय श्रुत स्कन्ध रूप परमागम अर्थात् (अध्यात्म शास्त्र) को लिपिबद्ध किया अध्यात्म के महान वेत्ता आचार्य कुंदकुंद देव की विज्ञ लेखनी ने। और फिर प्रारंभ हुआ आगम के लिपीकरण का '**सुनहरा युग**' जिसमें अनेक आचार्यों ने अपनी '**अनेकान्तिनी प्रज्ञा**' से मौलिक शास्त्रों का अनुकरणीय सृजन किया, तथा अनेक 'श्रुताराधक योगियों' ने अपने पूर्ववर्ती महान आचार्यों द्वारा प्रदत्त '**श्रुत संपदा**' पर टीकायें, भाष्य, वार्तिक और विस्तार लिखकर इस '**श्रुतरथ**' की विकाशयात्रा में अपनी वैराग्यमयी दिव्य साधना द्वारा अर्चनीय योगदान प्रदान किया। इस '**श्रुत संबर्धिनी महायात्रा**' में अनेक आचार्यों के नाम की '**विमलकीर्ति**' आज भी क्षितितल को गौरवान्वित कर रही है।

इस विशद् श्रमण परम्परा में वीसवीं सदी के महायोगी आचार्य श्री आदिसागर जी (अंकलीकर) परम्परा में अनेक **'श्रमण सपूतों'** का प्रादुर्भाव हुआ, जिनसे आज समूचि **'श्रमण संस्था'** गौरवान्वित हो रही है इसी गौरवशाली श्रमण श्रृंखला में एक **'श्रुत कीर्ति'** को उज्ज्वल करने वाले दिव्य व्यक्तित्व का नाम है परमपूज्य सूरिगच्छाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज, इन श्रेष्ठ गुरु की सुयोग्य शिष्य श्रृंखला में एक गुरु पथानुगामी, **'प्रखर प्रज्ञाधिपति'** सूरि प्रवर का नाम है परमपूज्य **'भावलिंगी संत'** राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महाराज जिनके व्यक्तित्व की गुण सौरभ आज समूचे **'श्रमण जगत'** में व्याप्त है।

श्रमण जगत का स्वर्णिम इतिहास— श्रुत संबर्धन के लिये समर्पित पूज्य गुरुदेव द्वारा आचार्य भगवन अमितगति स्वामी कृत सहस्र वर्ष प्राचीन **'श्रीयोगसार प्राभृत'** संस्कृत ग्रंथ पर प्राकृत भाषा में **"विमर्शोदया"** अपर नाम **'अप्पोदया'** नामक वृहद् टीका का सृजन किया गया है। हमारे पूर्ववर्ती आचार्यों की सुदीर्घ श्रृंखला में टीका लेखन की आम्नाय अति प्राचीन है लेकिन प्राय: सभी संस्कृत एवं प्राकृत ग्रंथों पर लगभग सभी टीकायें संस्कृत में लिखी गईं। अल्प टीकायें, प्राकृत ग्रंथों पर प्राकृत भाषा में भी प्राप्त होती हैं लेकिन यह प्रथम अवसर है जब दिगम्बर जैनाचार्य श्री विमर्शसागर जी मुनिराज द्वारा किसी संस्कृत भाषा के ग्रंथ पर प्राकृत टीका **'विमर्शोदया'** का लेखन हुआ है, जो श्रुत संस्कृति के क्षेत्र में एक अपूर्व स्वर्णिम इतिहास बनेगा। पूज्य गुरुदेव ने वर्षायोग 2010 में पर्वराज पर्यूषण की पावन बेला में **'योगसार प्राभृत'** ग्रंथ पर प्राकृत भाषा में **'अप्पोदया'** नामक टीका का शुभारम्भ किया। इस वृहद् काय ग्रंथ में 540 गाथायें हैं, इस ग्रंथ पर लगातार 5 वर्ष तक पूज्य गुरुदेव की प्रज्ञ लेखनी चली और टीकमगढ़ चातुर्मास 2015 में आश्विनी **'कृष्णा सप्तमी'** के दिन बाजार जैन मंदिर में मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ के पादमूल में बैठकर पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज ने लगभग 1000 पृष्ठीय इस वृहद प्राकृत टीका को पूर्ण किया और लिख दिया आम्नाय के भाल पर एक अमिट स्वर्णिम इतिहास।

जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य) —'अंतर्मुखी शुभांग' निर्ग्रंथराज के अपरिमित व्यक्तित्व का एक अहम् पक्ष है उनकी **'अप्रतिम काव्य'** साधना पूज्य श्री के कविहृदय से नि:सृत एक-एक शब्द जीवन्त कविता का प्रणयन करता है। मध्यप्रदेश के भिण्ड नगर में गुरु चरणों में वर्षावास 1997 के पावन पलों में कविमन: पूज्य ऐलक श्री विमर्शसागर जी के हृदय पटल कर एक ऐसे महाकाव्य ने जन्म लिया, जिसे अगर जैन जगत का सर्वाधिक लोकप्रिय काव्य कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वर्तमान में चाहे कोई पंचकल्याणक महोत्सव हो, दीक्षा महोत्सव हो, या फिर विधान आदि आयोजन, ऐसा कोई भी आयोजन नहीं जहाँ इस, दिगम्बर देव की यह अमर कृति—

नमन्ति सफला वृक्षा, नमन्ति कुलजा नरा:।
शुष्क काष्ठाश्च, मूर्खाश्च न नमन्ति कदाचन:।।

न गूँजती हो। चाहे संगीतकार हों या साधु साध्वियाँ हर कंठ में रमण करने वाली इस **'आदर्श संत'** की यह कालजयी रचना सिर्फ जैनों तक ही सीमित नहीं है, अपितु संप्रदायों की सारी दीवारों को लाँघकर आज पूरे भारत वर्ष और विदेशों में भी धर्म निरपेक्ष रूप से गुनगुनाई जाती है। **'लाखों आस्थाओं के केन्द्र'** इस यशोमयी संत के सुमुख से जब यह गीत **'शब्दों का लिबास'** पहिनकर बाहर नि:सृत होता है, तो यह **'मणि-काँचन योग'** सा सुखद संयोग श्रोताओं को संगीत की उस चरम अनुभूति तक ले जाता है, जो वर्ण समूह से अवक्ष, केवल अनुभव गम्य है। तभी तो भक्तों की श्रद्धा उन्हें **'जीवन है पानी की बूँद'** वाले बाबा कहकर अपने आप को गौरवान्वित महसूस करती है। अभी तक पूज्य गुरुदेव की लेखनी से इस महाकाव्य में साधिक 2500 छंद शब्दों का लिवास ओढ़ चुके हैं।

'सत्व हितंकर' आप्त की वाणी का अनुशरण करने में सुदक्ष, गुरुवर की अवक्ष चिंतनधारा से उद्भूत लगभग 500 कवितायें, सैकड़ों भजन, सैकड़ों गजलें और कई स्तोत्र एवं महान ग्रंथों के पद्यानुवाद, हजारों श्री मुख से नि:सृत सूक्तियाँ और

अतुकान्त क्षणिकायें मन को '**सच्चिदानंद स्वरूप महादेवता**' की अनुपम भक्ति की अजस्र धारा से जोड़ने में समर्थ हैं। वो एक श्रेष्ठ कवि नहीं, आदर्श महाकवि हैं।

उनके प्रखर चिन्तन से आविर्भूत प्रवचन साहित्य में रयणसार, ज्ञानांकुश, समाधितंत्र, भक्तामर रत्नकरण्ड श्रावकाचार, इष्टोपदेश, योगसार आदि-आदि महान ग्रंथों पर प्रवचनात्मक टीकायें एवं गूँगी चीख, शंका की एक रात, भरतजी घर में वैरागी, शब्द-शब्द अमृत आदि अनेक लघु कृतियाँ अंतस को झकझोरने में समर्थ हैं, इनके अलावा भी उनकी हर एक छोटी एवं बड़ी कृति अध्येता का *"mind wash"* करती है। पूज्यवर का हर एक चिंतन और हर एक शब्द चिर स्मरणीय होता है।

"विमर्श लिपि" दिव्य अनुदान—पूज्य गुरुदेव का वहुआयामी व्यक्तित्व आज देश, धर्म, समाज, श्रमण एवं श्रावक सभी के लिये कुछ अवदान का हेतु बन पड़ा है। तभी तो उनका जीवन सभी के लिये आदर्श है। जनमानस को कुछ नया और लोकोपयोगी कृतित्व भेंट करने का गुरुदेव का सक्रिय चिंतन ही, उनके द्वारा प्रदत्त अनेक अमूल्य अवदानों के सृजन का हेतु बनता है। इसी सृजनशील चिंतन से उपजी एक अनूठी और अपूर्व देन है–'**विमर्शलिपि**' एवं '**विमर्श अंक लिपि**'।

लिपी उसे कहते हैं जिसके द्वारा किसी भी भाषा को कलम से कागज पर लिपिबद्ध किया जाता है। लिपियों की आम्नाय कोई आजकल की नहीं अपितु यह '**अक्षरविद्या**' अनादि से है और अक्षय है। लेकिन समय-समय पर उत्थान और पतन की पगडंडियों पर गतीशील होने के कारण अल्पज्ञों द्वारा इस अक्षय '**अक्षर संपदा**' का आदि बिन्दु और अंत बिन्दु का निर्धारण कर दिया जाता है। लेकिन अल्पज्ञों के निर्णय शाश्वत सत्य को नहीं बदल सकते। भारतीय इतिहास में प्राचीनतम समय से उभय लिपियों का प्रचलन स्वीकार्य है। जिनके नाम है ब्राह्मी और खरोष्ठी। इस अवसर्पिणी काल में कर्मयुग का जब प्रारंभ हुआ, तब भगवान ऋषभदेव जो जैन शासन के प्रथम तीर्थंकर थे, उनके द्वारा अपनी ज्येष्ठ पुत्री '**ब्राह्मी को लिपि**' का अध्ययन कराया था, इसी कारण उनके नाम पर संभवत: इस लिपि को '**ब्राह्मी लिपि संज्ञा**' प्राप्त हुई। इसी प्रकार कालान्तर में कभी '**खरोष्ठी लिपि**' भी प्रचलन में आई और भी अनेक लिपियों का उद्‌भव हुआ। इन्हीं लिपियों की श्रृंखला में एक नूतन और अपूर्व इतिहास जोड़ा है, '**श्रुतोपासक**' श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी गुरुदेव ने। लिपियों के मौलिक सृजन में आज तक किसी भी दिगम्बर जैनाचार्य का नाम आम्नाय के पृष्ठों पर अंकित नहीं है। पूज्य गुरुदेव श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज ऐसे प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य हैं, जिनकी प्रज्ञ लेखनी से मौलिक रूप से उभय लिपियों का सृजन हुआ, जिनको गुरुभक्तों ने मिलकर '**विमर्श लिपि**' एवं '**विमर्श अंक लिपि**' की संज्ञा प्रदान की।

इस लिपियों के सृजन में पूज्य गुरुदेव की रचनात्मक सोच **'Creative Think'** एवं ज्ञान का अपूर्व क्षयोपशम ये उभय कारण ही मुझे प्रतीत होते हैं। वर्षायोग 2011 अशोकनगर (म.प्र.) में पूज्य गुरुदेव द्वारा स्वप्रेरणा से इन महान लिपियों का सृजन किया गया। ये दोनों ही लिपियाँ लिपिकरण में अत्यंत सरल, सुबोध और सुग्राह्य है। संघस्थ सभी आबाल वृद्ध साधक गण पूज्य गुरुदेव द्वारा सिखाई गई इस लिपि में सिद्धहस्त हैं और जगह-जगह इस लिपि को प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से विद्वान एवं जन सामान्य उत्साह पूर्वक सीख रहे हैं। विद्वानों का ऐसा मत है, कि यह लिपियों का सृजन भारतीय साहित्य में एक दिव्य अनुदान सिद्ध होगा। विद्वानों का मत है कि यह श्रमण संस्कृति द्वारा लोक के लिये सौंपा गया एक अनूठा उपहार है। भविष्य में पूज्य गुरुदेव की इन अमूल्य कृतियों पर (लिपियों पर) P.H.D. (लघु शोध प्रबंध) के माध्यम से शोध होना चाहिये, ताकि ये इतिहास के पृष्ठों पर '**अमरता का लेख**' बनकर लिखी जा सकें।

प्रथम दिगम्बराचार्य जिनकी रचना को शासन ने किया पाठ्यक्रम में सामिल—'अनेकान्तिनी प्रतिभा' को अपने व्यक्तित्व में समेटे महान जैनाचार्य प. पू. गुरुदेव श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज के दिव्य अवदानात्मक मौलिक कृतित्व में एक बहुमूल्य कृति है **"देश और धर्म के लिये जियो।"** इस रचना में जहाँ एक ओर धार्मिक एहसास है तो वहीं दूजी ओर इस रचना में देश भक्ति और नैतिकता की मिठास भी घुली हुई है।

पूज्य गुरुदेव की इस मौलिक रचना को मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल द्वारा कक्षा 11 की हिन्दी सामान्य की पुस्तक "मकरंद" के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। पूज्य गुरुदेव ऐसे प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य हैं जिनकी रचना को कक्षा 11 के पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है। इससे पूर्व कभी भी किसी भी जैन संत की कोई भी रचना स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल नहीं की गई। वैचारिक ताजगी से पूर्ण गुरुदेव की यह प्रासंगिक रचना पाठकों के जहन में कभी देश के प्रति कर्त्तव्य निष्ठ चिन्तन शैली का सूत्रपात करती है, तो कभी धर्ममय जीवन के आँगन में मंगल चौक पूरती-सी प्रतीक होती है रचना की कोई पन्ति '**श्रममूलक धर्म**' की पैरवी करती है, तो कोई पन्ति नैतिकता, करुणा, दया और मानवता का जयघोष करती है। अतः समझा जा सकता है कि पूज्य गुरुदेव ने इस लघुकाय रचना में देश और धर्म को सहेजने का अनुपम उपहार मानव समाज को हस्तांतरित किया है।

अनुकरणीय गुरुभक्ति—इन '**चर्या के जादूगर**' आचार्य देव की हर साँस में '**विराग भक्ति**' की अनुपम सौरभ महकती है। तभी तो वो परम पूज्य श्रमण रत्नाकर सूरिगच्छाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महाराज के सबसे करीब और अजीज शिष्य है। '**श्रमण अस्मिता के प्राणभूत**' इस महासंत की हर चर्या अपने शिष्यों को 'गुरुभक्ति की अनमोल विरासत' सौंपती है। उनके निर्मल हृदय में गुरुभक्ति की अजस्र सरिता अहर्निश प्रवाहित रहती है। तभी तो प्रायः रोज गुरुदेव को स्वपनों के धरातल पर अपने गुरुदेव विरागसागर जी महाराज के दर्शन का सुयोग प्राप्त होता रहता है। पूज्य गुरुदेव कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी दृढ़ता से अपनी गुरुभक्ति का सशक्त परिचय देते हैं, जो हर शिष्य को अनुकरणीय, माननीय एवं आचरणीय है। वो एक महानगुरु हैं तो एक सर्वश्रेष्ठ शिष्य भी हैं। गुरु की हर आज्ञा को वो अग्रणीय रूप से स्वीकारते हैं, यही श्रेष्ठ शिष्यत्व है।

श्रेष्ठ शिष्य का लक्षण बताते हुये आराधना कथा कोष में कहा है कि—

शिष्यास्तेत्र प्रशस्यन्ते, ये कुर्वन्ति गुरोर्वचः।
प्रतीतो विनयोपेता, भवन्त्यन्ते कुपुत्रवत्।।

अर्थात् शिष्य वो ही प्रशंसनीय हैं जो विनय और प्रेम के साथ अपने गुरु की हर आज्ञा का पालन करते हैं। इसके विपरीत चलने वाले कुपुत्र के समान निंदनीय हैं। गुरु और शिष्य की पावन सनातन परम्परा, निरंतर जिनवाणी को जीने वाले '**सर्वोदयी संत**' प. पू. राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी गुरुदेव जैसे श्रेष्ठ शिष्यों से ही जीवन्त है। मैं प्रणतिभाव अर्पित करता हूँ गुरु चरणों में उनसी श्रेष्ठ गुरुभक्ति को पाने के लिये।

संस्कारों का मुखरित स्वरूप—'सत्यान्वेषी वाग्पति' युवाचार्य श्री विमर्शसागर जी गुरुदेव द्वारा जब संस्कारों की मंदाकिनी प्रवाहित की जाती है तब उनकी '**वाणी का गुरुत्वाकर्षण**' भोग विलास में डूबे युवाओं के हृदय में, हमारी विशद सांस्कृतिक विरासत के प्रति नवजागरण का अभिनव संदेश प्रेषित करता है।

चाहे आनंद महोत्सव (श्री मज्जिनेन्द्र पूजन प्रशिक्षण शिविर) के सुविमल क्षण हो, चाहे 'भक्तामर महिमा' (श्री भक्तामर प्रशिक्षण शिविर) की—मंगल घड़ियाँ या फिर '**भ्रूण हत्या**', '**नशामुक्ति**', '**संस्कार**', '**सत्संग**', '**अहिंसक जीवन**', '**वृद्धों की सेवा**', '**आपसी संवाद**', '**शाकाहार**', '**आदर्श परिवार**' और जैनाचार आदि सार्वजनीन विषयों पर, ओजस्वी व्याख्या पूज्य श्री के हर आयोजन में संस्कारों की दिव्य चमक दिखाई देती है। राष्ट्रयोगी का राष्ट्र के लिये एक सपना है। वो कहते हैं कि—हमारे देश के युवाओं का व्यक्तित्व, धर्म के संस्कारों से संस्कारित सामाजिक प्रेम से ओत-प्रोत तथा राष्ट्रभक्ति से समृद्ध होना चाहिये। पूज्य गुरुदेव कहते हैं—भारत देश की युवा शक्ति, नशीली चीजें, गुटखा, शराब, सिगरेट, ड्रग तथा व्यसनों से दूर रहे, शाकाहार, योग तथा माता-पिता की सेवा को अपना कर्तव्य समझे। भारत देश का प्रत्येक वर्ग साधु, शिक्षक, राजनेता, सैनिक, पुलिस, छात्र-छात्रायें, आम नागरिक एवं सामाजिक संगठन, सभी कर्त्तव्य निष्ठ बने, और अपनी मर्यादा में रहते हुये, कर्तव्य पालन करें। पूज्य श्री कहते हैं कि मैं चाहता हूँ—प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र चक्रवर्ती भरत का यह भारत देश सदा खुशहाल, सम्पन्न और समृद्ध रहे। भारत देश में भौतिक समृद्धि के साथ आध्यात्मिक समृद्धि का भी सदा स्वागत हो। भारत देश का हर नौजवान हिंसा को छोड़ अहिंसा में विश्वास

रखे और विश्वभर में अहिंसा की अलग जगाये। भारत की नारी शक्ति सीता, अंजना, चंदनबाला को आदर्श मानकर आगे बढ़े, जिससे नारी स्वाभिमान से सम्मानपूर्वक जीना सीख सके। भारत देश में कभी भ्रूणहत्या न हो, कन्या भ्रूणहत्या विकलांग चिंतन की उपज है, जो सर्वथा अनैतिक है साथ ही ब्रह्म हत्या की दोषी। भारत देश का नागरिक समृद्ध बने, शादी में धन का अपव्यय न करें, शादी में करोड़ों का खर्च किसी चिकित्सा, शिक्षा, सामाजिक, धार्मिक क्षेत्र में लगाकर खुशियाँ चिर स्थाई करें।

राष्ट्रयोगी—पूज्य गुरुदेव का यह चिंतन संस्कारों के दीपों में ज्योति का काम करता है। तभी तो विजयनगर वर्षायोग 2012 में राष्ट्रवादी संस्था भारत विकास परिषद के तत्त्वावधान में आयोजित पंच दिवसीय **'दिव्य संस्कार प्रवचन माला'** के दौरान इस सर्वोदयी संत के राष्ट्र हितकारी विचारों से प्रभावित होकर **'भारत विकास परिषद'** ने पूज्य गुरुदेव को **'राष्ट्रयोगी'** की उपाधी से अलंकृत कर अपने सौभाग्य को वृद्धिंगत किया।

मनोज्ञ आचार्य—**'परम शील के धारक'**, **'प्रशम मूर्ती'**, **'सुतत्व प्रकाशक'**, **'गुरु शिरोमणि'** आचार्यप्रवर 108 श्री विमर्शसागर जी गुरुदेव एक ऐसे अनूठे संत हैं कि उनके सामीप्य को पाकर, जातिवाद, धर्मवाद, पंथवाद, संतवाद और ग्रंथवाद के विवाद स्वत: ही प्रशमन को प्राप्त हो जाते हैं। यही कारण है कि ये **'अनुपम गुणेश'** जिस राह से गुजरते हैं, उनकी **'गुणकीर्ति'** सर्वत्र सुव्याप्त हो जाती है।

किसी ने कहा है—*"Beauty of life is because of virtues"* अर्थात्—जीवन की सुंदरता गुणों से ही होती है। पूज्य श्री के गुणानुरागी व्यक्तितव के कारण सिर्फ जैन ही नहीं हर कौम का व्यक्ति उनमें अपने गुरु को निहारता है। पूज्य गुरुदेव एक **'लोक सम्मत'**, **'निर्विवाद संत है'**।

आचार्य भगवन् पूज्यवाद स्वामी सर्वार्थ सिद्धि ग्रंथ में लिखते हैं—

"मनोज्ञो लोकसम्मत:"

अर्थात् लोक सम्मत साधु को मनोज्ञ कहते हैं। अत: सद्गुणों से सुलिप्त पूज्य गुरुदेव एक **'मनोज्ञ आचार्य'** हैं। वो चर्या की सिर्फ चर्चा नहीं करते अपितु चर्चा को चर्या बनाकर जीते हैं। वो कथनी और करनी के भेद से दूर अभेद रत्नत्रय की साधना के अमिट हस्ताक्षर हैं। ये वंदनीय कदम जब चलते हैं तो साक्षात मोक्षमार्ग चलता है।

सकारात्मक चिन्तन के पुरोधा—**'सुपंथ उपदेष्टा'** परम पूज्य सूरिप्रवर के मुखकमल से जब सौन्दर्यशील **'शब्द मञ्जरी'** नि:सृत होती है तो सकारात्मक चिंतन मूर्तीमान हो उठता है। कमजोर मनोबल वाले श्रद्धाभिसिक्त शिष्यों के लिये पूज्य गुरुदेव का सकारात्मक चिंतन सद्गुणों से ऊर्जस्वित करता है तथा मोक्षमार्ग में सदैव पाथेय बनकर साथ रहता है। **'गुण शिरोमणि'** चितहर, रसपूरित, मधुर वचनों के अचिन्त्य आगार पूज्य गुरुदेव के मुख से अध्यात्म के स्वरों में जब सकारात्मक चिंतन की बाँसुरी बजती है तो ऐसा अनूठा कर्ण प्रिय संगीत प्रादुर्भूत होता है जो अंतस के पटलों में व्याप्त होकर आत्मा के एक-एक प्रदेश को अक्षय ऊर्जा से आपूरित कर देता है।

निस्पृहता का यशस्वी चेहरा—करपात्री लक्षण से लक्षित निस्पृह साधना के **'सतर्क साधक'** **'अनासक्त योगी'** परम स्तुत्य संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी गुरुदेव वर्तमान श्रमण संघ में ऐसी अनूठी निस्पृह वृत्ति के सूत्रधार आचार्य हैं कि उनकी श्रमण अस्मिता की प्राणभूत शालीन चर्या, हर दिगम्बर संत को दर्पण दिखाती है। और हर साधक को आगाह करती है कि आप भौतिक साधनों की फिसलन में अपने गौरवशाली कदम अपनी अयाचक और निस्पृह वृत्ति से परिमार्जित करके रखें। पूज्य गुरुदेव को आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज द्वारा आचार्य पद की सुयोग्य घोषणा होने के बाद, कई बार कई स्थानों की स्वाध्याय शील समाजों द्वारा, संतों द्वारा, विद्वानों द्वारा ऊर्जावान यशस्वी संगठनों द्वारा पूज्य श्री को आचार्य पद पर स्थापित करने के सुनिवेदनों की सुदीर्घ श्रृंखला कई वर्षों तक अनवरत चलती रही लेकिन इस संकल्पशील वैरागी के सुमुख से हर बार ऐसे निस्पृहता के सूत्रों की मंदाकिनी वही कि सभी के निवेदन उसके बहाव के सन्मुख नतमस्तक हो गये। किन्तु यशस्वी गुरु प. पू. राष्ट्रसंत श्री विरागसागर जी महाराज की आज्ञा को यह समर्पित अन्तेवासिन, सुशिष्य अस्वीकार न कर सके। और पूज्य गुरुवर द्वारा अनेक

भव्यों के सुकल्याणार्थ परम पूज्य निर्द्वन्द योगी मुनि श्री विमर्शसागर जी को 12.12.2010, बाँसवाड़ा (राज.) में गणीपद पर आसीन कर दिया गया, और हमें मिल सका एक श्रमण संघ से वरीयता प्राप्त कुशल आचार्य का पादमूल।

"भावलिंगी संत" महाकाव्य—वर्द्धमान चारित्री, परमोपास्य पूज्य गुरुदेव का आदर्श जीवन दिगम्बरत्व की प्रदीप्त साधना का अमर यशोगान है। पूज्य गुरुदेव के असीम व्यक्तित्व को हम कितना भी शब्दों के द्वारा लिखने और कहने का प्रयत्न करें, लेकिन वास्तविकता यही है कि शब्दों के द्वारा कभी असीम की अभिव्यञ्जना संभव नहीं हैं। लोकमत है कि सूरज के सन्मुख दीप की टिमटिमाती शिखा का कोई महत्व नहीं है। हाँ, ये बात बिल्कुल सोलह आने सत्य है, अगर वह दीप की शिखा सूर्य की सहस्त्र रश्मियों से प्रतिस्पर्धा करने की भावना से जन्मी हो तो। वह दीप तिरस्कार का पात्र बन जाता है और अगर वही दीप की शिखा, दिनकर की नीराञ्जना उतारने की सुविमल भावना से जन्मी हो, तो वह दीप पूजन की थाली में सजा के रखा जाता है। इस महाकाव्य रूपी दीपक की शिखा से जो भी भक्ति की रोशनी विखरेगी, वह सब आरती के मायने होगी।

इस दीप की शिखा में जो भी रोशनी है उसको जन्म देने का श्रेय मम् गुरुदेव श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज को जाता है और पूज्य गुरुदेव ने इस दीप को सिर्फ आरती के थाल में जलना ही सिखाया है, अहंकार में जलना नहीं। इस महाकाव्य के लेखन में मेरा अपना कुछ भी नहीं है, इस लेखन में मूलभूत शक्ति बनकर जिसने काम किया, वो है, पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख पर विखरी स्मित सी मुस्कान और अल्प ऊर्ध्वारोहित वरदायी कर पल्लव, जो मुझे शुभाशीष के रूप में अहर्निश उपलब्ध होता रहा। मैं जब भी लेखन करने बैठा, उससे पहले अपने श्रद्धा के आसन पर पूज्य गुरुदेव को बिठा लेता था। फिर पता नहीं कब अक्षर शब्दों का रूप धारण कर लेते, कब शब्द वाक्यों में बदलते चले गये, कब वाक्यों से मिलकर पन्तियाँ बनी, कब पन्तियों से मिलकर छंद बने, कब छंदों ने पर्वों का रूप धरा और कब ये महाकाव्य बनके तैयार हो गया। इस महाकाव्य में कुल 24 सोपान हैं जो चौबीस तीर्थंकरों के प्रतीक हैं। प्रत्येक सोपान में क्रमशः 116, 108, 114, 100, 108, 105, 113, 112, 103, 110, 102, 93, 109, 111, 109, 108, 111, 137, 114, 109, 105, 101, 100 एवं 44 कुल मिलाकर महाकाव्य में 2600 छंद हैं। प्रत्येक इस महाकाव्य में गुरुभक्ति के छंद, भावनाओं के अलंकार और समर्पण के अनेक रस, समाहित हैं।

आभार के स्वर—सर्वप्रथम वंदना के स्वरों में आभार ज्ञापित है, माँ बाग्वादनी के उस वंदनीय सपूत का, जो इस महाकाव्य के नायक हैं, उनके शुभाशीष की वरदायी शक्ति से ही यह लेखन रथ, रचना पथ पर सतत निर्वाध रूप से गतिशील रहा।

आभारी हूँ पञ्च महागुरुओं का जिनका नाना रूपों में प्रत्येक सोपान के पूर्व स्मरण कर मैं ऊर्जा प्राप्त करता रहा। आभारी हूँ संघस्थ सभी साधुवृन्दों एवं त्यागी वृन्दों का जिनका स्नेह समय-समय पर मुझे संबल देता रहा। आभारी हूँ प. पू. सूरिगच्छाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज का जिनका प्रत्यक्ष-परोक्ष शुभाशीष सदैव प्राप्त होता रहता है। आभार ज्ञापित है, पूज्य सूरि प्रवर श्रमणाचार्य श्री विशुद्ध सागर जी का जिनकी प्रज्ञ लेखनी से कृति के लिये शुभाशीष के शब्द प्रसूत हुये। उपरान्त आभारी हूँ, परम वंदनीय आत्म विज्ञानी, अप्रमत्त श्रमण-आचार्य श्री विभवसागर जी मुनिराज का जिनकी सुविज्ञ लेखनी ने कृति के लिये प्रस्तावना के शब्दों में अपने शुभाशीष की सौगात प्रदान की।

आभारी हूँ, वयोवृद्ध मुनि श्री विश्वलोचन सागरजी एवं मुनि श्री सुव्रत सागर जी का जिनने कृति के लिये प्राक्कथन, आमुख लिखा, आभारी हूँ वरिष्ट साहित्यकार श्री सुरेश जी 'सरल' का जिन्होंने 'दो शब्द' लिखकर कृति को सराहा एवं युवा विद्वान पं. संकेत जी ने भी अपने आलेख में 'कृति को निहारा' साथ ही राष्ट्रकवि डॉ. कमलेश बसंत एवं भाई अनिल तेजस ने भी कृति को अपने विचार प्रेषित किये वे साधुवाद के पात्र हैं।

भूतार्थ गुरु का अवक्ष उपकार—गुरु का मिलना अलग बात है और भूतार्थ गुरु का सुयोग बन जाना अलग बात है। '**सुपंथ उपदेष्टा**', शांतागार, प्रशन्न मुद्रा, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, संयमानुरागी, निस्पृह वृत्ति, भक्त वत्सल, विशुद्ध योगी,

दूर दृष्टा, अद्वितीय शब्द शिल्पी, अलौकिक तपस्वी, वर्धमान चारित्री, दयामूर्ती, समदर्शी, आकिंचन योगी, आदि अनेक दुर्लभ सुगुणों का समाहित स्वरूप परम आराध्य गुरुवर श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज का सद्गुरु के रूप में सुलाभ प्राप्त कर मैं आकिंचन अपने आपको उन सौभाग्यशाली शिष्यों की श्रेणी में खड़ा पाता हूँ, जिनको जीवन में सद्गुरु का शुभद् संयोग मिल पाता है। क्योंकि सद्गुरु बहुत दुर्लभ हैं।

कुंदकुंद श्रावकाचार में कहा है–

दृश्यन्ते भुवि भूरि निम्बतरवः कुत्राप्यते चन्दनः।
पाषाणैः परिपूरिता वसुमति चिन्तामणिर्दुर्लभः।
श्रूयन्ते करतारवाश्च सततं चैत्रे कूहूकूजितं।
तन्मन्ये खलसंकुलं जगदिदं द्वित्राः क्षितौ सज्जनाः।

अर्थात्–पृथ्वी पर नीम के वृक्ष बहुत दिखाई देते हैं, परन्तु चंदन कहीं-कहीं प्राप्त होता है। पत्थरों से पृथ्वी भरी पड़ी है, परन्तु चिन्तामणि दुर्लभ है। कौओं की काँव-काँव सदैव सुनाई पड़ती है परन्तु कोयल की कूक केवल चैत्र में सुनाई देती है अतः स्पष्ट है कि लोक में साधु पुरुष, सज्जन दुर्लभ हैं। मुझ मृद पिण्ड को पावन कलशाकार देकर गुरुवर ने जो मुझ पर उपकार किया है, वह उपकार मुक्ति के पूर्व विस्मृति योग्य नहीं है। हम जैसे अज्ञानी शिष्यों की बड़ी से बड़ी गल्तियों के बावजूद भी आपके हृदय पटल से उनके प्रति सदैव मैने क्षमा, करुणा और उपकार का नीर प्रवाहित होते देखा है। महान पुरुषों की यही महानता है, कि उनकी साधना का हर क्षण परोपकार की सुगंध लुटाता है। पूज्य गुरुदेव की हर 'आत्मोदयी चर्या' हम अल्पज्ञ शिष्यों का महोपकार करने वाली होती है।

'प्रखर मनस्वी' आत्मानुशासन के पक्षधर ऐसे श्रेष्ठ गुरुवर्य को पाकर मेरा शिष्यत्व अभीभूत है। हे **'अमृत पुरुष'** भव-भव में मेरे हर जीवन में संयम की आविष्कृति सिर्फ आपके कर कमलों से ही हो ऐसी मेरी अशेष भावना है। **'विश्व बंधुत्व'** की सुविमल भावना के साथ जन-जन में आत्मा की अलख जगाने वाले **'आत्मयोगी'**, **'वचन वीर'**, **'परम श्रद्धेय'** पूज्य गुरुदेव के श्री पूज्य पाद युगल में, शिष्यत्व की परिभाषा से अनविज्ञ इस आकिंचन अंतेवासिन की यही मंगल भावना है– कि आपका निष्कलंक वर्धमान चारित्र इतना वृद्धिंगत हो कि शीघ्र ही आप यथाख्यात् चारित्र को प्राप्त कर आत्मा के उस अनुपम, अचिन्त्य, **'लोकाग्रवासी स्वरूप'** को उपलब्ध हो सकें, जिसके लिये आप साधना के सुपथ पर अविराम अग्रसर हैं।

आपकी आज्ञा सुपालन, आपके अनुशासन की स्वीकार्यता और आपके विश्व वंदनीय चरण युगल की सतत सेवा, इन तीन का **'त्रिवेणी संगम'** मेरी आत्मा में सतत बना रहे और इस **'त्रिवेणी संगम में स्नपित हो मेरी आत्मा भी तीर्थ बन सके'**। यह **'भावलिंगी संत'** (महाकाव्य) श्री संज्ञा की प्रेरणा मुझे सिद्धक्षेत्र अहार जी में उस समय प्राप्त हुई जब पूज्य गुरुदेव की निर्लेप साधना से उन्हें **'शान्ति भक्ति'** की सिद्धि प्राप्त हुई और आहार जी सहित कई जगह के यक्षों में आकर पूज्य श्री की महापूजा की और, आहार **"जी के छोटे बाबा"**, भावलिंगी संत, शान्ति बाबा के लघुनंदन, यक्षों के महाराज, आदि अनेक नामों से गुरुदेव को पुकारा और जब मैंने आगम में **'भावलिंगी संत'** को खोजा तो आचार्य श्री कुंदकुंद स्वामी के भाव पाहुड़ में एक गाथा प्राप्त हुई–

देहादिसंग रहिओ माणकसाएहिं सयल परिचत्तो।
अप्पा अप्पम्मि रओ, स भावलिंगी हवे साहू।।56

अर्थात् जो शरीरादि परिग्रह से रहित, मान कषाय से सब प्रकार से मुक्त है और जिसका आत्मा, आत्मा में रत रहता है, वह साधु भावलिंगी है। जब मैंने इस गाथा के एक-एक शब्द को पूज्य गुरुदेव में घटाने का प्रयत्न किया तो पूरी की पूरी गाथा जीवंत हो उठी और अंतस की गहराइयों से शब्द मुखर हो उठे, कि यही तो हैं सच्चे **'भावलिंगी संत'** यह महाकाव्य पूज्य गुरुदेव के कर कमलों में समर्पित करके हृदय आह्लादित है। इसमें मेरा कुछ नहीं, सब आपके श्री चरणों से प्राप्त है और उन्हीं पर समर्पित है।

आपका कृपाकांक्षी, गुरुणामनुचर
लघु अंतेवासिन
–श्रमण विचिन्त्य सागर (संघस्थ)



(दो शब्द)

मुनि विचिन्त्य सागर जी और उनका महाकाव्य

काव्य लेखन सहज विधा नहीं है, उसमें वैचारिकता के साथ-साथ भाषा शृंगार, शब्दशौष्ठव, अक्षर और मात्राओं का अंकगणित सम्हालना आवश्यक हो जाता है। प.पू. मुनिरत्न 108 श्री विमर्शसागर जी ने प्रस्तुत प्रबंधकाव्य की सर्जना करते हुए भारी सूझबूझ का परिचय दिया है। उन्होंने आदि से अंत तक 2600 पद्यों की हर पंक्ति को 32 मात्राओं से सजाया है और खण्डकाव्य ही नहीं, ग्रंथ को महाकाव्य की ऊँचाई तक ले गये हैं। सराहना की बात यह है कि उनका लेखन पावन सरिता नर्मदा की तरह है जो किसी विद्वान या पंडित से अभिमतों की वैशाखी नहीं चाहता। स्याही निर्मल जल की तरह बहती रही है पृष्ठ दर पृष्ठ और विचार आकाश की विशालता को स्पर्श करते गये। कलम जलपोत के पतवार सा चलता रहा तथा मन धरती की तरह स्थिर रहकर काव्य के मूलनायक के चरणों पर विश्व का हर पुष्प अर्पित करने की साध साधे रहा।

काव्य का लालित्य प्रशस्त शब्दों से बढ़ाया जाता है परन्तु मुनिवर ने अपने हृदय में उपजे उच्च चिंतन से उसे सजाया है। कोई साहित्यकार, कुलपति, प्रोफेसर इसे क्षण भर के लिए अच्छा या बुरा कह सकता है मगर समूचे लोक से जो भावना ध्वनित होगी, वह सत्य के समीप मानी जावेगी। मैं लोकाधार पर कह रहा हूँ कि यह ग्रन्थ **"भावलिंगी संत-महाकाव्य"** की संज्ञा से विख्यात होगा और श्रावक-समाज का गुणवर्धन करेगा।

पू. विचिन्त्यसागर जी अपने गुरुदेव पू. श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी के साँचे में ढले हुए प्रतीत होते हैं। गुरु ने "महाकाव्य जीवन है पानी की बूँद" लिखकर सरस्वती का भण्डार भरा था, तो शिष्य ने प्रस्तुत महाकाव्य से वाग्देवी का शृंगार किया है। जिस राह गुरु चले, उसी राह शिष्य और अपना-अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल हुए। अब कहा जा सकता है कि भावलिंगी संत, राष्ट्रयोगी, शांतिनाथ के लघु नंदन, आहार जी के छोटेबाबा, विमर्श लिपि के अन्वेशक प. पू. आचार्यरत्न, पंचाचार प्रवीण, गुरुदेव विमर्शसागर जी ने अपने सुयोग्य और मेधावी शिष्य प. पू. मुनि श्री विचिन्त्यसागर जी को आशीर्वाद के रूप में वह सब कुछ दे दिया है जो शिष्य को, गुरु-सम धरातल प्रदान करता है।

ग्रन्थ महाकाव्य है—इसे वे सज्जन ही पढ़ पायेंगे, जो नित्य 4-6 पन्ने पढ़ने में आत्मिक रुचि रखते हैं। शेष तो सराहते-सराहते अलमारी में रख देंगे, कभी समय निकालकर पढ़ने की भावना से। ध्यान रहे, ग्रंथ के पन्ने किस्तों में पढ़ने वाले जन ही उससे आनंद प्राप्त कर पाते हैं जब पंक्तियाँ मस्तिष्क में कौंधती हैं और शब्द व्यवस्था याद दिलाती हैं— (द्वादश पर्व, पद्य क्र. 2)

निज-स्वभाव से द्रव्य कभी भी पर स्वरूप न होते हैं,
उस, निज स्वभाव के आश्रय से ही राग-द्वेष सब खोते हैं।
स्वाश्रय से जिनने चेतनकों चित स्वरूप ही पाया है,
स्वाश्रय में स्थिरता पाने नित उनको शीष झुकाया है।

अपने प्यारे, दुलारे और परमपूज्य गुरु की कीर्ति में इससे अधिक श्रेष्ठ पंक्तियाँ कहाँ प्राप्त होंगी ? कहीं नहीं। अत: जो पाठक पू. गुरुदेव विमर्शसागर जी के भक्त हैं, वे तो इसे हृदय से लगाकर रखेंगे। जो पाठक पू. विचिन्त्यसागर जी की लेखनी और छवि के प्रति समर्पित हैं, वे इसे हृदयासन प्रदान करेंगे।

अब तनिक पू. मुनिरत्न विचिन्त्यसागर जी, जो महान ग्रंथकर्ता हैं, के

व्यक्तित्व की चर्चा भी आवश्यक है। 14 जून, 1983 को अशोकनगर के समीपस्थ ग्राम सिंघाड़ा में मान्यश्रावक श्री पदमकुमार जी की अर्धांगिनी, श्रेष्ठगृहणीरत्न, श्रीमती सरोज जैन की पावन कुक्षि से जन्म लेने वाले शिशु का नाम राजीव रखा गया था। राजीव माने कमल, जिसने एक उत्तम परिवार रूपी सरोवर को धन्यकर दिया था। तब कोई सदस्य यह नहीं जानता था कि शिशु का विकास किस दिशा में किस पथ पर होगा। माता-पिता ने संस्कार और शिक्षा देने में कसर नहीं रखी अत: शिशु बढ़कर, किशोर और फिर युवक बना तो उसने बी.एम.सी. की डिग्री प्राप्त कर ली। (संयोग देखिए कि गुरु भी बी.एस.सी. और शिष्य भी) युवा क्या हुआ, शोर मच गया समाज में, विवाह की वार्ताएँ करने आने लगे कन्यापक्ष वाले। तभी 14 दिसम्बर, 2003 को अशोकनगर में संतों का पिच्छिका-परिवर्तन-समारोह आयोजित किया गया। धर्म पथ पर चलने वाले सिंघाड़ा के परिवार ने उचित त्याग आदि स्वीकार कर गुरुदेव की पीछी प्राप्त करने का मंगलकारी अवसर पा लिया। पीछी गई राजीव के हाथों में। बस, उसी दिन प्रार्थना की गुरुवर से और 5 वर्ष का ब्र. व्रत पा लिया। कुछ ही माह बाद, 12 अप्रैल, 2004 को संघस्थ हो गये। फिर कालांतर में ऐलक बाना प्राप्त करते हुए, 15 अगस्त, 2013 को भिण्ड नगर (म.प्र.) की धरती पर करुणामूर्ति प. पू. आचार्य श्री विमर्शसागर जी से मुनिदीक्षा प्राप्त कर एक सच्चे अचेलक का स्वरूप धारण कर लिया। मैं राजीव को कुछ वर्ष पहले से जानता था, जब वे ब्र. भैया थे। उनमें लेखन का उत्साह और गुरु के प्रति समर्पण प्रारंभ से ही रहा है। अनेक काव्य और आलेख लिखे-ब्रह्मचारी, ऐलक और मुनि अवस्था में। परन्तु जब उनकी पावन लेखनी से प्रस्तुत ग्रंथ की रचना हुई, तो सभी का विश्वास उनके उच्च लेखन पर दृढ़ हो गया। संघ का हर सदस्य उन्हें सम्मान देता है और गुरुदेव के बाद के क्रम में, उन्हीं को वरीयता देता है।

हम और आप तो उनसे प्रभावित हैं ही, उनके गुरु और गुरुणामगुरु भी प्रभावित हैं। इतना ही नहीं, अन्य महान संतों ने भी उनके ग्रंथ और व्यक्तित्व के विषय में बहुत सटीक लिखा है। आदर्शश्रमण प. पू. आचार्य विशुद्धसागर जी अंकित करते हैं—श्रेष्ठ शिष्य गुरु की उन्नति में ही अपनी उन्नति देखता है। तो श्रमणाचार्य प. पू. विभवसागर जी लिखते हैं—यह महाकाव्य धर्मकथा रूप होने से बोधि समाधि का खजाना तुल्य है। मुनिरत्न, गुरुभक्त, क्षमामूर्ति श्रमण श्री सुब्रतसागर जी काव्य से पूर्व काव्यकर्ता के लिए कहते हैं—मुखरित प्रज्ञा के धनी, साहित्य सम्पदा को वर्द्धमान करने में प्रवीण, कवि हृदय, निर्ग्रन्थ दशा के अनुरागी मुनिश्री विचिन्त्यसागर जी का यह कार्य उनका और मुनियों का गौरववर्धन करता है।

प. पू. विचिन्त्यसागर जी को मैं स-लेखनी, नमन करता हूँ कि उन्होंने अपने महाकाव्य का आधार मेरे द्वारा लिखित जीवनी 'राष्ट्रयोगी' को बनाया और अकिंचन लेखनी का मूल्यांकन किया। मुझे विश्वास है कि भविष्य में कोई शोधप्रेमी विद्वान उक्त दोनों ग्रंथों को विषय बनाकर शोध करेगा और पी.एच.डी. के मूल्यवान अलंकरण से विभूषित होगा। गुरु-शिष्य को और उनके महाकाव्यों को हृदय में विराजमान करता हुआ, विराम लेता हूँ।

श्री सुरेश जैन, (सरल)

❑❑❑❑



भावलिंगी संत महाकाव्य और भावलिंगी संत

काव्य कला एक ईश्वरीय उपहार है यह एक ऐसा माध्यम है जिसमें डूबकर व्यक्ति मनोमस्तिष्क में झंकृत होते अंतर्नाद को शब्दों एवं तुकों तथा छंदों में बाँधकर उसे चिरकाल तक के लिये स्मृति श्रोत बनाकर लोगों के अंतस् तल पर अपना स्थान सुनिश्चित करता है। भारतीय संतकाव्य परम्परा में कालजयी रचनाओं का सृजन करनेवाले उत्तरोत्तर कीर्ति के प्रभापुञ्ज परमपूज्य गुरुदेव श्री विमर्शसागर जी महाराज न स्वयं रचना ही करते हैं अपितु रचनाकारों में रचनाशक्ति भी भरते हैं, प्राय:कर देखा जाता है कि संत लोग भगवान पर अपनी रचनायें लिखते हैं किन्तु जो संत कवि भगवान को लखते हैं वे गुरु में ही भगवान को निहारने के महानतम पुरुषार्थ की विशद साफल्यता को प्राप्त कर लेते हैं। इसी स्तर पर कुशल काव्य उद्यमी संत कवि श्रमण श्री विचिन्त्यसागर जी महाराज का कृतित्व निश्चित ही समूचे राष्ट्र के लिये गुरु व शिष्य के मध्य आदर्श का बेजोड़ कीर्तिमान उदाहरण है। प्रस्तुत काव्य शृंखला में आदर्श व्यक्तित्व को निबद्ध करने का महान पुरुषार्थ किया गया है पाठकों में श्रमणास्था का वीजारोपण करने वाला यह महाकाव्य समर्पण की अतर्गूंज को हृदयवीणा के तारों पर गूँजने वाली वह सरगम है जो कि किसी उद्योत पारखी की वारीकता से की गई परख तथा किसी महान सफलतायुक्त महोपलब्धिता का दर्पण है। वर्तमान काल के यशस्वी काव्यपुरोधा, शब्द सौष्ठवाधिपति, अक्षरधाम अलंकार जिन्होंने मात्र तन से ही नहीं अपितु चेतन से भी श्रामण्य सजगता के साथ दिगम्बरत्व की त्रिकाल पूज्य तीर्थेश प्रबृज्या को धारण किया है ऐसे निजांभिनंदी स्वगत तत्वध्याता जीवन रहस्यों को यथार्थता की कसौटी पर खरा उतरने वाला **"जीवन है पानी की बूँद"** महाकाव्य के शृजेता अनेकानेक महानग्रंथों के प्रणेता, जिनकी वाणी में मिथ्यात्व का खण्डन एवं सुतत्व स्वरूप का सृजन होता है ऐसे भावाभिराम भावीसिद्ध श्री मद्आचार्यदेव भावलिंगी संत श्री विमर्शसागर जी महाराज की जीवनगाथा को तथा संत जीवन की गूढ़ता युत पारदर्शिता का काव्यमय प्रस्तुती करण है। अहो जिसके जीवन की विषमताओं के प्रति प्रतिकूलता तथा सुखोपलीनता पर आकुलता का नाद ना होता हो, जिसे परत्व से परे दृष्टि प्राप्त हुयी हो जिसने न सिर्फ तन पर अपितु भावों पर भी दिगम्बरत्व का प्रस्फुटन कर लिया हो ऐसे श्रमणाचार्य जिन्हें देहानुराग की जगह आत्मानुराग से अनुराग हो जिनके निश्छलभावों की निर्दोष झलक तन पर भी उतर कर अठखेलियाँ करती हो, ऐसे महामुमुक्षुत्व को आत्मपरिणति पर झंकृत करने वाले समीचीन तीर्थंकर लिङ्ग को धारण करने वाले अर्हदयोगी को भावलिङ्गी ना कहा जाये तो और क्या कहा जाये? विद्वतजनों से आशा है कि भावलिङ्गी अलंकरण से श्रेष्ठ अलंकरण जो सम्प्रतिकाल में हम उपयोग कर सकें तो कृपया हमें अवगत करायें। कई-कई लोग बोलते हैं कि गुरुदेव स्वयं को भावलिङ्गी क्यों नहीं कहते?

मित्र ये तो बताओ कि भगवान तीर्थेशों की अनादिकालीन परम्परा में किस तीर्थंकर की देशना में किस तीर्थंकर ने स्वयं को तीर्थंकर कहा है। हमारी मान्यताश्रुत सिद्धांतता ने उन्हें तीर्थंकर घोषित किया है, और फिर अनंत भावलिंगियों में ऐसे कौन से मुनिराज थे जो अपने भावलिंगी होने का प्रमाणपत्र लेकर चलते थे? क्या किसी के पास में सम्प्रति काल में भावलिंगी संतों की परम्परा में अवरोध दर्शाने वाला कोई प्रमाण है? अगर है तो महानुभाव हमें अवश्य इंगित करायें। मात्र शंका करना ही किसी की विद्वता का प्रमाणीकरण नहीं हो सकता। असंतुष्टि हेतु विशद कारण भी तो होना चाहिये। क्योंकि शंका तो सम्यक्त्व का दोष है और मिथ्यादृष्टि को विद्वान कहा तो जा सकता है किन्तु मिथ्यादृष्टि विद्वान हो नहीं सकता, कारण हीन शंका एक कोरा दंभ मात्र है।

श्री मद् आचार्य देव कुन्दकुन्द स्वामी भावलिंगी का निरुपण करते हुये कहते हैं—

देहादिसंग रहिओ माणकसाएहिं सयल परिचत्तो।
अप्पा अप्पम्मि रओ स भावलिंगी हवे साहू।। *(अ.पा./5-56/भा.प्रा.)*
देहादि संग रहित मानकषायैः सकल परित्यक्तः।
आत्मा आत्मनि रतः स भावलिंङ्गी भवेत साधुः।। *(अ.पा.संस्कृत टीका-श्रुतसागरसूरि)*

अर्थात् जो शरीर आदि परिग्रह से रहित है मान कषाय से पूर्णतया निर्मुक्त है तथा जिसकी आत्मा आत्मस्वरूप में लीन है वह साधू भावलिङ्गी होता है। खेत, मकान, धन-धान्य, द्विपद दासी दास चतुष्पद पशु, चाँदी, स्वर्ण, वस्त्र तथा बर्तन ये 10 बाह्य परिग्रह हैं तथा मिथ्यात्व वेद हास्यादि नोकषाय चार कषाय राग, द्वेष ये 14 अंतरंग परिग्रह हैं। प्रस्तुत गाथा में शरीर से ममता भाव का छोड़ना ही शरीर रूप परिग्रह को त्यागना है, इस तरह आचार्य भगवन कुंदकुंद देव के कथनानुसार एवं अष्टपाहुड़ की संस्कृत टीका करने वाले महान आचार्यश्री श्रुतसागर जी महामुनिराज भावलिङ्ग की व्याख्या कर रहे हैं। और आजकल के कतिपय विद्वान भावलिङ्ग को आगम सम्मत नहीं मानते तो भला ये बताइये कि वो विद्वान प्रमाणिक है या हमारे पूर्वाचार्यों द्वारा सृजित आर्ष आगम प्रमाण माना जाना चाहिये ? जैनदर्शन में कहा गया है कि जब वक्ता प्रमाणित हो तभी वाक्य प्रमाणित होते हैं वाक्य की प्रमाणिकता के साथ वक्ता की प्रमाणिकता भी यथायोग्य अनिवार्य है। अतः बड़ी-बड़ी गोष्ठी में लच्छेदार वक्तव्य बोलने वाले विद्वतजनों से हमारा निवेदन है कि पूर्वोक्त आगम में संदेहास्पद कथन कर अपनी विद्वत्ता पर संदिग्धता ना जताये क्योंकि एक विद्वान अनेक विद्वानों का जनक होता है, विद्वान समाज का दर्पण होता है और विकृत दर्पण स्पष्टता को प्रतिबिम्बित करे यह कोई आवश्यक नहीं। इतिहास प्रमाण है कि अप्रतिष्ठित लोगों से संस्कृति का इतना विनाश नहीं हुआ जितना किसी प्रतिष्ठित विद्वान ने समाज तथा संस्कृति को आघात पहुँचाया है आहत होती संस्कृति तथा समाज इन मूर्धन्य धूर्तों को आजीवन माफ नहीं कर पायेंगी। अतएव किसी भी पंथवाद-संतवाद में ना पड़कर थोड़ा-सा समाज धर्म तथा आगम पर निष्ठाभाव से समर्पण रखकर यथार्थता को स्वीकारें, सत्य को जानना और सत्य को मानना अनिवार्य है अन्यथा ये सिद्धांत मात्र कागजों में छपे कोरे शब्दों से अंकित पुलिंदे मात्र रह जायेंगे। एक ओर तो हम और आप इन मुनिराजों को धरती के देवता, जैनत्व का सौंदर्य तथा चलते-फिरते सिद्ध मानते हैं, कहते हैं, और पंथ परंपरा तथा संतवाद के राग द्वेष में पड़कर इन्हें असिद्ध घोषित करने में समूचा सिद्धांत झुटला देते हैं अब इसे अन्याय ना कहा जाये तो और क्या कहा जा सकता है। मान्यवर सुधारें अपनी दृष्टि को, सुधारें आगम को यही श्रेयसकारी है। अगर अब भी शंका है, संदेह है तो निश्चित ही हम कहीं न कहीं गलत हैं और अपनी गलती पर हठधर्मिता करने की भूल कर रहे हैं। नहीं मानना हमारा अपना विषय है इसे किसी पर थोपना अनुचित है और अमानवीय भी। एक वो जीव है जिन्हें साधू के निर्दोष मुद्रा पर कहे गये प्रभावी विद्वान आचार्य भगवन्त श्री कुन्दकुन्द देव के कथन पर शंका हो रही है, वहीं एक महान पूर्वाचार्य हैं जिन्हें इस वीतराग मुद्रा में भगवान के दर्शन होते हैं जो इन्हें भगवान मानते हैं। दृष्टि व श्रद्धान की ही भिन्नता है, नहीं तो सिद्धान्त तो शाश्वत ही होता है। जो शाश्वत मानता है वही ज्ञानी है, विरोध की विसंगति पर श्रद्धान प्रदर्शित करने वालों को देखकर याद आती है किसी विद्वान की ये पंक्तियाँ—

माली ने तो साजिस कर ली है सूनी हो चमन की हर डाली।
फूलों की हिफाजत करने को, काँटों ने बढ़कर काम किया।

कोई भी जीव भावलिङ्गीत्व पर शंका तो कर सकता है किन्तु आचार्य बट्टेकर स्वामी की लेखनी से प्रसूत महान सिद्धान्त को दवा नहीं सकता। वह मूलाचार का स्वर हजारों-हजार मिथ्या उपत्यकाओं को ध्वस्त करता हुआ कहेगा—

भिक्खं वक्कं हिययं साधिय जो चरदि णिच्च सो साहू।
एसो सुद्विद् साहू भणिओ जिणसासणे भयवं।।

अर्थात् जो साधू मन वचन काय का शोधन करके नित्य ही आचरण करता है तथा आहार की गृद्धि नहीं करता, वह साधू जिन शासन का भगवान है।

महानुभाव मैं कहता हूँ आप मत मानिये भगवान। आपके ना मानने से भगवान की भगवत्ता समाप्त नहीं हो सकती। एक साधारण से पदाधिकारी के पद को ना मानें तो भी ना मानने से किसी की पदोचित शक्तियों से उसे प्रथक नहीं किया जा सकता। हम और आप किसी के गुणों तथा योग्यता को समाप्त नहीं कर सकते। इसलिये जिन्हें अपनी भवाभिनंदिता को न्यूनता देनी हैं तो भावाभिनदी भावलिंगी श्रमणों की शरण में आइये। यही शरण कल्याणकारी होगी। जब संतत्व की साधना उछालमारती है तब तब कोई महान साहित्यकार उस संत के प्रेरणादायी जीवन को अपने शब्दों में बाँधने का गहन उद्यम करता है। आपके समक्ष जो यह ग्रंथ है वह सामान्य नहीं है किसी साधारण से परिवार की असाधारण विभूति की प्रतिभायुक्त पुरुषार्थ शीलता की अमिट कहानी है, जिसे विचिन्त्य साधक ने सम्यक् मनोविमर्श से शब्द श्रृंखला में निबद्ध किया है। जन्म से लेकर वर्तमान तक की घटना संघटना का आंकलन करना कोई सामान्य कार्य नहीं हो सकता, इतने विशाल जीवन चरित्र को मात्र 52 वर्णों में साधकर वर्णन करना गहन लगनशीलता युक्त जटिल पुरुषार्थ का प्रतिफल यह आस्था की सम्यक्ता तथा चरित्र नायक के सुविस्तृत चारित्र का पवित्र दास्तावेज है। प्रस्तुत महाकाव्य का शीर्षक ही अत्यंत रोमांचक तथा किसी अनवरत साधक की अनाशक्त रूप विजेय साधना के विश्वार्य वंद्य का समयोचित समीकरण है, विश्वार्थ मय विध्रुवदृष्टि पर विव्रत सफलता को प्रतिपादित करने वाली विशुभ्र काव्यश्रृंखला सर्वजगत काव्यों से विशम तथा विश्वाक्ष है यह जीवनी विश्वज्ञ हस्ताक्षर है जो विश्वाभ चैतन्यता के सरोज से निःसृत विश्वार्क रूपक है तथा समयोचित रूप से वर्तमान शताब्दी का माननीय विश्वांक है प्रस्तुत महाकाव्य में अंकित वर्ण मुकुल दिव्यता तथा अनादि सिद्ध वर्णमाला का संकेत है और यही संकेत सत्यम–शिवम्–सुदरम् की आभा से संयुक्त सुंदर विवेक अवश्य निरूपित होगा। काव्य विमर्श से लोग विद्यांत की विमलांत स्थिति तक पहुँचने का कल्पनातीत प्रयास करते हुये निज को धन्य अवश्य ही करेंगे। सांसारिक कष्टों से आक्रांत लोग स्व सापेक्ष विक्रांत होकर जब भी इस महाकाव्य का पठन करेंगे, तो वो निश्चित ही विक्रांत से विश्वांत की शून्यता के बोध को प्राप्त होकर समस्त लौकिक विद्याओं से परे होकर अध्यात्म की विध्वांतमयी विजयांतश्री को प्राप्त कर करेंगे। उस समय पाठक मात्र पाठक ही ना होकर एक गंभीर चिंतक के रूप में विभ्रांत हो ही जायेगा। तब लखने योग्य होगी उस जीव की सहजता व सरलता वह स्थिति पूर्णतया विनययुक्त होगी यानि की जिसका विनय ही अंत हो वह विनयांत दशा उपजे बिना नहीं रहेगी। काव्य–कला व चिन्तनशीलता ध्यान की उस विशेषता को अनूभूत करायेगी कि जीवन जगत से विरक्त विदेहांत की अनुभूति भी क्षणभर ही सही किन्तु होगी अवश्य। यही वह स्थिति होती है जब भक्त तडपती मीरा की तरह भगवती आत्मा के आँचल में पहुँचने तथा ध्यानगंगा में जमुना की भाँति संगम का भाव जगाये हुये स्वयं में स्वयं नेहाशक्त हो आत्मदीपा की दीप्ति में स्वयं को आलोकित करती है। भावों के अगाध जलाशय पर स्वात्म सिद्धी के सुमनों की रिया संपूर्ण वाह्य आंतरिक श्रृष्टि को सुगंधित करती है तब ही सोभाग्यशाली आत्म सोनाली रूपी वीणा में पूर्ण विरक्तता की गुंजन गूँजकर एक शाश्वत सिद्धान्त का विमर्शनाद करती हुयी करती हुई कहती है कि–**"जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाये रे"**। पूज्य गुरुदेव की महिमा को जन–जन तक पहुँचाने वाला यह सद्ग्रंथ धन्य है। जब तक नभ में राकेश अपनी शीतलता बिखेरे, जब तक रश्मिरथी भास्कर संसार को आलोकित करे। तब तक यह भव्य पठनीय महाकाव्य इस विशुमय बसुंधरा पर जयवन्त होता रहे, इसी मंगल कामना के साथ ब्रह्म ब्रह्मणी सरिता में अवगाहन करने पूज्य भावलिङ्गी संत को

–गुरु चरणास्थानुवर्ती
पं. संकेत जैन (विवेक)
देवेन्द्र नगर, पन्ना (म.प्र.)



अपराजेय साधक की काव्यमयी जीवन-यात्रा

भारतीय संस्कृति की प्राचीनता को उठाकर देखें, तो तब से लेकर अब तक समूचे साहित्य सृजन में संतों का योगदान ही सर्वाधिक रहा है। संत काव्य परम्परा में आचार्य जिनसेन स्वामी, आचार्य रविषेण महाराज भक्तामर जैसे अनूठे काव्य के सृजेता महाकवि आचार्य मानतुंग मुनिराज और आचार्य समन्तभद्र जैसे कालजयी संतों ने साहित्य संसार को विराटता प्रदान की है।

उसी अनवरत् परम्परा में महाकवि तुलसीदास, सूरदास मलिक मोहम्मद जायसी, कुंभनदास, रैदास, कबीरदास और मीराबाई के कारण संपूर्ण भक्तिकालीन युग को साहित्य का स्वर्णयुग कहा गया, उसी स्वर्णयुगीन सत्ता को स्वीकारते हुए, जैनाचार्यों में महाकवि आचार्य श्रीज्ञानसागर जी महाराज, मूकमाटी महाकाव्य के भागीरथ आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, अन्यान्य कृतियों के सर्जक और सृजक आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज और उनके ही लघुनंदन आज्ञानुवर्ती शिष्य "जीवन है पानी की बूँद" जैसे युगबोध और अमरगीत के शिल्पी, वाणी के जादूगर, श्रमणधरा के प्रखर एवं प्रबन्धक नक्षत्र, बुन्देलखण्ड के गौरव कविहृदय श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज के साहित्यिक अवदान को भारतीय साहित्य स्पर्श कर रहा है। प्रारब्ध के प्रारंभ में इनके अमरगीत "देश और धर्म के लिए जिओ" को मध्यप्रदेश की पाठ्य पुस्तक "मकरंद" (कक्षा 11वीं) में प्रकाशित कर पूरी पुस्तक को विराट बना दिया है। वहीं जाहिद की ग़जलें उर्दू अलफ़ाज़ के साथ ग़ज़ल साहित्य में स्थान बना लेती है, लगभग शताधिक कृतियाँ जिस लेखनी के शिल्प से निःसृत होकर साहित्य धारा की धरा पर स्वर्णांकित होकर अमर हो जाती हैं, ऐसे गीतों के महारथी, कविताओं के जनक आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज के अवदान को उनके ही सुशिष्य सहजमना मुनिश्री 108 विचिंत्यसागर जी महाराज इस काव्य कृति को पूर्ण कर 'अपने गुरु का जीवनवृत्त' समाज और साहित्य को देने के लिए लालायित हैं, धन्य हैं मुनि विचिंत्यसागर जी जिन्होंने परिपक्वता के साथ इस वृहद् काव्यांजलि की रचना की।

सर्गों के दृष्टिकोण से इस काव्य कृति को महाकाव्य की श्रेणी में रखा जा सकता है। 24 सोपानों का काव्य प्रबंध काव्य भी माना जा सकता है, धीरोदात्त पुरुष के रूप में आचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज इस महाकाव्य के नायक हैं। एक ही छंद का प्रयोग संपूर्ण काव्य में सुशोभित है अपने आप में यह एक मूलभूत श्रेष्ठता का परिचय है। वस्तुतः आचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज केवल कवि ही नहीं बल्कि श्रेष्ठ कहानीकार, यथार्थवादी उपन्यासकार और लोक जीवन की नश्वरता को बताने वाले नाटककार भी हैं।

जब गुरुवर कविता रचते हैं, आतीं उद्यानों में कलियाँ।
चले लेखनी जब ग़ज़लों पर, खिल जाती गेहूँ में बलियाँ।।
उपन्यास पर जब चिंतन हो, शब्द-शक्ति का ना कोई सानी।
करे कुमुदिनी प्रेम चाँद से, गुरु विमर्श जब लिखें कहानी।।

मुझे भूमिका लिखने का सुयोग मिला अस्तु मैं अल्पज्ञ, मुनिश्री विचिंत्य सागरजी का यावज्जीवन आभारी रहूँगा, मैं सौभाग्यशाली इसलिए भी हूँ कि गृहस्थ जीवन के समय गुरुवर के मित्र होने का गौरव भी मुझे प्राप्त है साथ ही एक कक्ष में रहने का और एक कक्षा में साथ पढ़ने के सुखद पल भी मैंने संजोएं हैं। आज एक विराट व्यक्तित्व के धारी, अनुपम कृतित्व के सृजेता ज्ञान और साधना के महामेरु आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज युगदृष्टा की भाँति सत्वेषुमैत्री की भावना को अपनी कविता में पिरोकर एक नई मिशाल कायम कर रहे हैं।

गुरुदेव आचार्य श्री आदिसागर जी महाराज (अंकलीकर) की अक्षुण्ण परम्परा को अनवरत् रखकर समाज को नई दिशा और दशा प्रदान कर रहे हैं।

मैं त्रियोगपूर्वक गुरुवर के चरणों में नतमस्तक हूँ। गुरुदेव दीर्घायु हों, शतायु हों और सतत् मानव समाज को सन्मार्ग प्रशस्त करते रहें। इस महाकाव्य के रचयिता मुनि प्रवर विचिंत्यसागर जी महाराज एक अनुपम कृति के रूप में निर्ग्रंथ साधक की जीवन यात्रा समाज को काव्यरूप में उपहार स्वरूप प्रदान कर रहे हैं, अस्तु समाज / साहित्य उनके प्रति कृतज्ञ रहेगा। गद्य की अपेक्षा पद्य पाठक को अधिक रुचिकर होता है, इस हेतु का ध्यान रखकर मुनिश्री ने एक अद्भुत और अनूठा कार्य किया है, इसी तरह इनकी लेखनी उत्तरोत्तर संवरती और निखरती रहे, वे भी अपने गुरु की तरह आशुकवि, महाकवि और देवशास्त्र गुरु के सिद्धहस्त उपासक बनें, इसी मंगल भावना के साथ।

त्रिकाल नमोस्तु...........

गुरुचरणारविंद चंचरीक :
डॉ. कमलेश जैन (बंसत)
कवि-मंच संचालक
वाइस प्रिंसिपल
जैन गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, तिजारा (राज.)

❑❑❑❑

बहुत ही खुशी की बात है

बहुत ही खुशी की बात है कि पूज्य मुनिवर द्वारा विमर्श सागर जी महाराज के जन्मोत्सव से लेकर अब प्रभावना पर खण्ड काव्य के माध्यम से प्रकाश डाला, जो पूर्णतया सत्य परख है।

मेरा सौभाग्य कहे या कर्मों का फल कि मुनिवर ने इस काव्य की एक प्रति मुझे अवलोकनार्थ दी में धन्य हुआ, हाँलाकि मेरी सामर्थ्य नहीं कि मुनिवर द्वारा लिखित इस खण्ड काव्य का परीक्षण करु, फिर भी मुनि आज्ञा का पालन करते हुये, मैंने इस खण्ड काव्य के सभी तेबीस सोपानों का अध्ययन किया तथा पाया कि मुनिवर का सम्पूर्ण लेखन, रस, छंद, अलंकार से परिपूर्ण अद्वितीय है तथा इस खण्ड काव्य की प्रभावना पूरे देश सहित विदेशों में भी हो, ऐसी मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

चरण सेवक :
राष्ट्रीय कवि
पं. अनिल मिश्रा तेजस्व
जतारा–टीकमगढ़ (म.प्र.)

कुंदकुंद आम्नाय के पृष्ठों पर

एक महासाधु की जीवन यात्रा

॥ भावलिंगी संत ॥

आद्य—"मंगलाचरण"
(शंभू छंद)

पर के उपदेश बिना प्रभु को, शिवपथ का सम्यग्ज्ञान हुआ।
उस रूप स्वयं आचरण किया, तो प्रगट पूर्ण भगवान हुआ।
भूतों के हित का मार्ग दिया, तब भूतनाथ तुम कहलाये।
प्रभु आदि प्रथम तीर्थेश नमन, जिनका यश तीनों जग गायें। (1)

जो तीनों लोक विजेता है, उस विधि से आप अजेय रहे।
जिनशासन का ध्वज फहराया, मिथ्यामत से अविजेय रहे।
वो भवसागर तिर जाते हैं, जो शरण आपकी लेते हैं।
प्रभु अजितनाथ को है वंदन, जो कर्म विजय पथ देते हैं। (2)

इन्द्रिय सुख तो सब जाली है, सब विनाशीक है नश्वर है।
संभव जिन शिवसुख दर्शाया, जो शाश्वत है अविनश्वर है।
समभावों का सम्यक् पथ, जो संभव जिन ने बतलाया है।
संभव जिन को जिनने वंदन, कीना मुक्ति पद पाया है। (3)

पर्यायों के अभिनंदन में, हमने आनंद मनाया था।
निज स्वात्माभिनंदन का सम्यक्, पथ न हमने पाया था।
अभिनंदन जिन अभिनंदन है, अभिनंदन सा पद पाने को।
भावों का वंदन अर्पित है, भव का आताप मिटाने को। (4)

हे देव सुमत के कर्ता तुम, जग को सुपथ दर्शाया है।
सु-वाणी से सु-तत्त्वों का सु-ज्ञान सहज प्रगटाया है।
करता वंदन प्रभु सुमतिनाथ, मिथ्यामत आकर्षण हरलो।
चल सकूँ सु-पथ पर नाथ अतः, पाथेय सुपथ हमको वर दो। (5)

न पद्म, राग छू सका तुम्हें, चऊ अंगुल ऊपर राजे थे।
थी पद्मराग मय देह प्रभा, वालार्क रश्मिवत साजे थे।
प्रभु पद्म, राग में देवों ने पद्तल पद्मों की रचना की।
वंदन पद्मों में पद्म प्रभु, जिनने शिवपथ संरचना की। (6)

शुद्धात्म पार्श्व उपयोग लगा, सु-पार्श्व हुये निज आतम के।
शुद्धात्म परस पुरुषार्थ किया, प्रगटे अनंत गुण आतम के।
शुभपादमूल का पार्श्वयोग, प्रगटे क्षायिक सम्यग्दर्शन।
हे धर्म तीर्थ के अधिनायक, भगवन् सुपार्श्व चरणों वंदन। (7)

सुन सिंह गर्जना मदशाली, हाथी निमद हो जाते ज्यों।
प्रभु दिव्य वाग्मिता में मिथ्यामत के मद भी खो जाते त्यों।
प्रभु की तन आभा के सन्मुख हर एक धवलता फीकी है।
हे चन्द्रवंदन-वंदन तुमको, चन्द्रप्रभु महिमा नीकी है। (8)

जो स्याद्वाद से चिन्हित है, वो वाणी जग हितकारी है।
प्रभु पुष्पदंत की दिव्य ध्वनी, शुभ अनेकांत उपकारी है।
प्रभु पुष्पदंत को नमन-नमन, भव की पीड़ा हरने वाले।
जिनकी शुभ संज्ञा के अक्षर, जग में मंगल करने वाले। (9)

शीतल प्रभु की शीतल वाणी, ही जग में सम्यक् शीतल है।
चंदन मोती की मालायें शशि, की शीतलता निष्फल है।
है शीतल वंदन चरणों में, प्रभु शीतलनाथ कृपा कर दो।
निज ज्ञान सुधा का पान करें, हमको भी वही योग्यता दो। (10)

हे वीतराग स्वामिन! तुमको, न पूजा कभी लुभाती है।
निंदावाणी भी हे जिनवर! न तुम्हें कभी छू पाती है।
हे श्रेय-सु-पथ के प्रस्तोता, प्रभु श्रेयनाथ तुमको वंदन।
यह वंदन चंदन बन जाये, मिट जाये मेरा भव कृंदन। (11)

हे गणधर मुनियों के स्वामी, तीर्थंकर बनकर आये थे।
शत इन्द्र झुके श्री चरणों में, कल्याणक पाँच मनाये थे।
पूजा करने को आया हूँ, यद्यपि मुझमें सामर्थ्य नहीं।
क्या टिमटिम दीपशिखा द्वारा, जग में वो दिनकर पूज्य नहीं।। (12)

वसु कर्मों का मल धो प्रभुजी, शुद्धात्म विमलता प्रगटाई।
हो गये पूर्ण निर्मल ज्ञानी, न कोई समलता रह पाई।
ले भाव विमल हे विमल प्रभु! ये विमल वंदना स्वीकारो।
हे भव तारक, दुख संहारक प्रभु विमलनाथ हमको तारो। (13)

करके अनंत का अंत आप, हो गये अनंत सुख के स्वामी।
अधिगम अनंत, दर्शन अनंत, बल भी अनंत अंतरयामी।
करता अनंत वंदन अनंतजिन अंत आत्मा का पाऊँ।
आतम में अंत, अनंत भरे बनकर अनंत सम प्रगटाऊँ। (14)

है धर्म, शर्म का दाता जो, वो धर्म आपने बतलाया।
तीनों लोकों में धर्म तीर्थ, हे धर्मनाथ प्रभु! विकसाया।
जब दिव्य देशना मुखर हुई, तब भव्यों ने शिवपथ पाया।
मैं भी शिवपथ पाने प्रभु जी, श्रद्धा से भाव सजा लाया। (15)

सोलहवे तीर्थ प्रवर्तक थे, पञ्चम चक्रेश कहाते थे।
द्वादशवी कामदेव पदवी, त्रयलोक अहा! यश गाते थे।
प्रभु शान्तिनाथ का आराधन, वंदन दुख हरने वाला है।
संकट हर्ता स्मरण सदा, शाश्वत सुख करने वाला है। (16)

तीर्थेश हुये, चक्रेश हुये, मदनेश आप कहलाये थे।
त्रय पद धारी, जग हितकारी सुर नर गणधर गुण गाये थे।
पुरुषार्थ किया पावन-पावन, निश्चय व्यवहार मोक्ष मग का।
प्रभु कुंथुनाथ को है वंदन, उद्धार करो सारे जग का। (17)

जो मोह महा रिपु जेता हैं, शिवपथ के सच्चे नेता हैं।
चौदहवे कामदेव बनकर अठदश जिनतीर्थ प्रणेता हैं।
करता वंदन प्रभु अरहनाथ जो सप्तम चक्रीपद पाये।
संसारी पद को विपद जान स्वातम अनर्घ्य पद प्रगटाये। (18)

शत इन्द्र झुके कर बद्ध हुये, त्रय लोकों में महिमा छाई।
परमौदारिक तन हुआ नाथ, कैवल्य विभूति प्रगटाई।
करते बिहार प्रभु डग-डग पर, सुर स्वर्ण कमल रचते जाते।
जो शरण आपकी रहते हैं, प्रभु मल्लिनाथ! दुख खो जाते। (19)

बन गये महामुनि नाथ आप, अठवीस मूलगुण धारे थे।
चौरासी लख उत्तर गुण भी, चर्या में सहज उतारे थे।
प्रभु मुनिसुव्रत, मुनि-सुव्रत दो हम भाव वंदना करते हैं।
प्रभु जो तुमने बतलाया था, उस पथ को ही आचरते हैं। (20)

निज ब्रह्मरमण की अविरलता जो परम ब्रह्म में बदल गई।
उपयोग हुआ निज आतममय पर परिणतियाँ सब निकल गईं।
हे नमि जिन! नमिता के भावों से झुकता हूँ मैं बार-बार।
मुझको भी नाथ प्रदान करो, निज आत्मानुभव निराकार। (21)

निज आत्म ऊर्जा का निधान, ऊर्जयंत गिरि पर पाया था।
आतम हित का लिख संविधान, प्रभु दिग्दिगंत फैलाया था।
संसार पार करने वाले पथ, दर्शक आप कहाये थे।
तीनों लोकों में 'नमो नमो नेमि जिन' स्वर गुंजाये थे। (22)

उपसर्गों में समता का पथ, सचमुच तुमने दिखलाया था।
निज आत्म ध्यान में लीन हुये, कैवल्य सु-वैभव पाया था।
चिन्तामणि पार्श्व प्रभु तुमको हृदयासन पर पधराता हूँ।
श्रद्धा भक्ति से बार-बार मैं सादर शीष झुकाता हूँ। (23)

जग में अनंत गुण वैभव की समृद्धि आतम ने पाई।
परमौदारिक तन की महिमा, तब तीनों लोकों ने गाई।
कर रहे साधना हम जिसमें, जयवंत आपका जिन-शासन।
हे वर्धमान, अतिवीर, वीर, सन्मति, महावीर तुम्हें वंदन। (24)



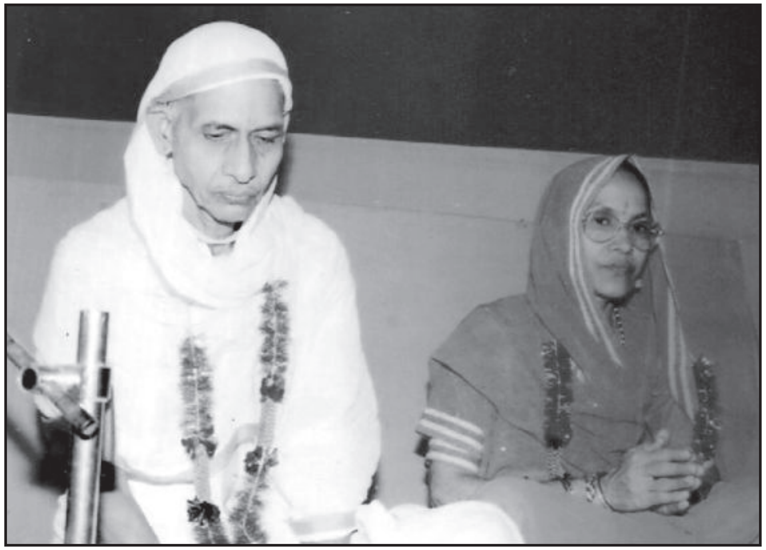
bhavlingi sant

"प्रथम पर्व"

श्री गुरु पर्व

संजीवनी
भावलिंगी
संत (महाकाव्य)

चित्र समूह - 1
गृहस्थ जीवन दर्शन



राकेश कुमार के यशस्वी पिता श्री सनतकुमार जी (2 प्रतिमाधारी)
एवं माता श्रीमती भगवती देवी।



जतारा स्थित वह निवास, जिसे राकेश की जन्मस्थली का गौरव मिला



सौम्य, सरल, सुसंस्कारित : बाल राकेश



गंभीर, चिंतनशील युवक : राकेश



राकेश बाबू : साथ हैं अभिन्न मित्रगण–लोकेश खरे, शैलेन्द्र त्रिपाठी और पंकज सैनी।
(वर्तमान में, सभी किशोर सुयोग्य विद्वान सिद्ध हुए)।



विमर्शोदय छंद

।। यह कथा नहीं है, महाकथा ।।

यह कथा नहीं है महाकथा, जग के दुख हरने वाली है।
शुभ आस्रव से यह भव्यों की, हर झोली भरने वाली है।।
यह नायक नहीं महानायक, विधि का नायक बनने वाला।
संकल्पित हो संयम द्वारा, भावी भगवन बनने वाला।। (25)

यह पुण्य प्रशवनी कथा हमें, जीवन का पथ दर्शायेगी।
बस पुण्य हमारा लक्ष्य नहीं, शुद्धी का मग दिखलायेगी।।
जीवन मंगल बनता कैसे, यह पथ दर्शाने वाली है।
आतम के शुष्क मरुस्थल में, अमृत बरसाने वाली है।। (26)

जम्बूद्वीप / सुमेरुपर्वत

द्वीपों में एक द्वीप पावन, जो जम्बूद्वीप कहाता है।
शुभ संज्ञा वाले जम्बू वृक्ष, से जम्बु नाम ये पाता है।।
इस जम्बुद्वीप के मध्य खड़ा, इक स्वर्णगिरी प्यारा प्यारा।
है नाम सुमेरू पर्वत का, सोने सा दमके है न्यारा।। (27)

भरत क्षेत्र

इस जम्बु द्वीप में एक क्षेत्र, जो भरत क्षेत्र कहलाता है।
गंगा सिन्धु दो नदियों से, छह भागों में बट जाता है।।
छह में से पाँच म्लेच्छखण्ड, इक आर्यखण्ड कहलाता है।
है आर्यखण्ड पावन धरती, नित धर्मभाव लहराता है।। (28)

तीर्थेशों की शाश्वत जननी

इस आर्यखण्ड के बीच बसा, इक भारत देश सुप्यारा है।
पहले चक्री का नाम भरत, से भारत नाम सुप्यारा है।
संतत्व नजर आता हमको, इस भारत भूँ के कण कण में।।
जो इस वसुधा को छूभर ले, तकदीर बदल जाती क्षण में।। (29)

इस धरती की पावन महिमा, स्वर्गों में गाई जाती है।
देवों की सुन्दर अमरपुरी, इसके आगे शरमाती है।।
बहती हैं दुग्ध की सरितायें, सोने की चिड़िया कहलाती।
इस धरती का वंदन करने, सारी दुनिया भारत आती।। (30)

माथे का मुकुट हिमालय है, सागर नित चरण धुलाता है।
सबसे पहले आकर सूरज, इस श्रृष्टी को नहलाता है।।
बादल भी आतुर रहते हैं, इस भूँ पर वृष्टि करने को।
इसकी सुन्दरता देख चाँद, आतुर है यहाँ उतरने को।। (31)

सिद्ध क्षेत्र

तीर्थेशों की शास्वत जननी, वह धरा अयोध्या पावन है।
शाश्वत निर्वाण जहाँ पाते, वह गिरि सम्मेद सुपावन है।।
जिन जिन पर्वत भूखण्डों से, भव्यों ने शिवसुख को पाया।
भक्तों की पावन श्रद्धा ने, तब सिद्धभूमि कह सुख पाया।। (32)

अतिशय क्षेत्र

जिस पावन क्षेत्र जिनालय में, देवों ने अतिशय दिखलाया।
जिनशासन के पावन ध्वज को, उन्नत कर चहुँ दिश फैराया।।
उन अतिशय और सिद्ध भूमी, के दर्शन जो कर पाता है।
निश्चय ही अपने कर्म काट, भवसागर से तिर जाता है।। (33)



तीर्थभूमि

ये ही वो पावन वसुधा है, तीर्थेश विचरते थे जिस पर।
श्री कुंदकुंद से श्रेष्ठ श्रमण, सम्यक् तप करते थे जिस पर।।
तीर्थेशों के विचरण से ही, ये तीर्थभूमि कहलाती है।
जो इसमें तिरने आता है, उसको भवपार लगाती है।। (34)

वीर शासन

है महावीर का शासन ये, जिसमें हम आप विचरते हैं।
उन शासन नायक वीर प्रभु, को शत शत वंदन करते हैं।।
उस श्री जिनवाणी को वंदन, जो मोह तिमिर हर लेती है।
उपकार अनंतो हैं उसके, जो शिवसुख का वर देती है।। (35)

इस पावन शासन में ही तो, श्री कुंदकुंद से संत हुये।
अध्यात्म जिया अध्यात्म दिया, अध्यातम मय निर्ग्रंथ हुये।।
अकलंक देव से 'न्याय पुरुष' ने न्याय सुभाषा सिखलाई।
श्री समन्तभद्र स्वामी ने आकर तर्क की महिमा दिखलाई।। (36)

जिनसेन हुये धरसेन कहीं, कहीं पुष्पदंत व भूतबली।
इनके उपकारों से ही तो, श्रुतधारा हम तक वह निकली।।
इस श्रमण संघ से ही अब तक, जिनधर्म लाज बच पाई है।
तब ही तो जैन कहाने की, सौगात हमें मिल पाई है।। (37)

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य

इस सदी बीसवी के पहले, निर्ग्रंथ सूरि जो कहलाये।
अंकलीकर आदिसागर जी, की सारा जग महिमा गाये।।
उन महा तपस्वी के आगे, तप का कद छोटा दिखता था।
उनकी चर्या में महाव्रतों, का नित ही बाग महकता था।। (38)

करते थे उग्र तपश्चर्या, तन से निस्पृहता भारी थी।
कर्मों को मार भगाने की, जैसे उनकी तैयारी थी।।
तन जर्जर होता जाता था, आतम का उपवन खिलता था।
तन को हफ्ते में एक बार, इक चीज का भोजन मिलता था।। (39)

अठदश भाषा ज्ञाता आचार्य महावीर कीर्ति जी

इन ही गुरु के इक शिष्य हुये, 'महावीर कीर्ति' नाम दिया।
अठदश भाषा के ज्ञाता वो, ऊँचा निज गुरु का नाम किया।।
प्रभु वीर की उज्ज्वल कीरति को, नित उज्ज्वल करने वाले थे।
श्रुत का अथाह सागर गुरुवर, शब्दों में भरने वाले थे।। (40)

कितनों की बदली तकदीरें

उस शिल्पकार की श्रेष्ठ नजर, इक अनगढ़ हीरे को देखा।
गढ़कर उस हीरे को गुरु ने, बदली किश्मत की हर रेखा।।
उस हीरे ने ना जाने फिर, कितनों की बदली तकदीरें।
उन 'विमल' गुरू के चरणों में, मिलती थी सारी तदवीरें।। (41)

जो श्री मुख से कह देते थे, पूरा ही होकर रहता था।
अष्टांग निमित्तों के ज्ञाता, करुणा का निर्झर बहता था।।
निकला था ग्राम कोसमां से, ये सूरज उजियाला करने।
सम्मेद शिखर पर अस्त हुआ, मानो शिवपदवी को वरने।। (42)

विराग सागर का उपवन

इन विमल गुरू के विमल शिष्य, श्री विरागसागर जी गुरुवर।
शिवपथ के पथिकों को हैं ये, शीतल छाया वाले तरुवर।।
है विमल कीरती गुरुवर की, धरती से अम्बर तलक अहा।
है महान गुरु के शिष्य महां, व शिष्यों के गुरूदेव महां।। (43)



वो गांव पथरिया धन्य हुआ, जब माँ श्यामा ने जन्म दिया।
अरविन्द नाम को धारण कर, पितु श्री कपूर को धन्य किया।।
सन्मति गुरु का सानिध्य मिला, संसार असार नजर आया।
क्षुल्लक का बाना धार लिया, तब नाम पूर्ण सागर पाया।। (44)

निर्ग्रंथ दशा प्रगटाने को, जब भाव विमलता अकुलाई।
तब विमल गुरु के चरणों में, उनकी तकदीर खींच लाई।।
श्रीविमल गुरु के चरणों में, अब 'पूर्ण' सहज निर्ग्रंथ हुये।
गुरूवर ने नाम 'विराग' दिया, अवनी-अम्बर भी धन्य हुये। (45)

जब विरागसागर के उपवन, से त्याग तपस्या महक उठी।
तब विमल गुरू का शुभाशीष, पा सूरीपद की चहक उठी।।
अब शिष्यों के शाश्वत स्वर भी, दीक्षा पाने को मचल उठे।
हाथों में श्रीफल ले-लेकर, गुरु चरणों में सब शिष्य चले।। (46)

ध्रुवतारा, जो सर्वाधिक चमकीला

उन विरागगुरु ने शिष्यों को, दे खूबी खूब सम्हारा है।
है चन्दा से लगते गुरुवर हर, शिष्य लगे ध्रुवतारा है।।
ध्रुवतारों में ध्रुवतारा ये, सबसे ज्यादा चमकीला है।
मैं जिसकी गाथा कहता हूँ, वह श्रेष्ठ श्रमण रंगीला है।। (47)

शुभ नाम सुमरना ही जिनका, भव भव के पातक हरता है।
शब्दों का खुद आकर समूह, जिनकी संस्तुतियाँ करता है।।
उन महामना की महाकथा, मैं तुमको आज सुनाता हूँ।
बन गये समय के जो ज्ञाता, मैं उनकी गीता गाता हूँ।। (48)

तीर्थ भूमि

भारत का दिल कहलाता है, यह मध्यप्रान्त प्यारा प्यारा।
जहाँ कदम कदम पे तीरथ व, जिनबिम्बों का अतिशय न्यारा।!
छूते आकाश जिनालय के, ऊपर लहराते ध्वज प्यारे।
जिनबिम्बों की विशाल काया, जिनके अतिशय पे सब बारे।। (49)

जिस माटी की गौरव गाथा, सदियों से गाई जाती है।
जिस पावन-पूत धरातल पर, संस्कृति उगाई जाती है।।
जो मध्यप्रान्त के गौरव में, नित चार चाँद लगवाता है।
कण कण पावन उस धरती का, बुन्देलखण्ड कहलाता है।। (50)

बुन्देलखण्ड की पुण्य प्रसवनी, धरा का भैया क्या कहना।
माँ जिनवाणी कहदूँ इसको, या कहदूँ धरती का गहना।।
श्रमणों की खान कहूँ इसको, या तीर्थभूमि का नाम धरूँ।
है शब्द कोष बौना लगता, कैसे इसका गुणगान करूँ।। (51)

मौषम ही जैसे साधु है

इस भूमी की जलवायु में, ना जाने कैसा जादू है।
है वैरागी परिवेष यहाँ, मौसम ही जैसे साधू है।।
चौराहे हर इक गली गली, हर शहर गाँव वैरागी हैं।
इस पावन भूँ पर जो रहते, सच कहूँ बड़े बड़भागी हैं।। (52)

कहीं ऊँचे ऊँचे पर्वत व, कहीं सरिताओं का मीठा जल।
कहीं स्वच्छ सरोवर कमल खिले, कहीं झरनों की प्यारी कल कल।।
जिनशासन की जयकार सदा, घर-घर में गूँजा करती है।
लगता जैसे श्रृष्टि सारी, जिनवर की पूजा करती है।। (53)



जिनशासन के पचरंगे ध्वज, हर घर के ऊपर लहराते।
पावन गाथा जिनशासन की, गा-गाकर सबको बतलाते।।
जिनवर के भव्य जिनालय से, शुभ गूँज रहीं भजनावलियाँ।
कहीं पूजा के उन्नत स्वर हैं, कहीं जगमग हैं दीपावलियाँ ।। (54)

विद्वानों की नगरी

बुन्देलखण्ड के गौरव का, जो नित सम्मान बड़ाता है।
इतिहास में वो गौरवशाली, टीकमगढ़ जिला कहाता है।।
माँ जिनवाणी के पूत यहाँ, जिनशासन की महिमा गाते।
है विद्वानों की नगरी ये, विद्वान सभी जन बतलाते।। (55)

जतारा का इतिहास

इतिहासों से है भरा हुआ, जनपद का एक नगर प्यारा।
है नाम जतारा उस पुर का, नहरों में बहती जलधारा।।
जब तंत्र और मंत्रों की विद्या, सिद्ध यहाँ की जाती थी।
तब ही तो पहले यह नगरी, जंतर घाटी कहलाती थी।। (56)

राजा 'जय' वा रानी 'तारा', का राज्य यहाँ पर आया था।
तब ही से नाम नगर का ये, 'जयतारा' भी कहलाया था।।
ये 'जयतारा' बन गया 'जतारा', समय चक्र बलिहारी है।
है समय बड़ा बलवान ये, भैया समय से श्रृष्टि हारी है।। (57)

समयसार

वो समय रहा वेखबर यहाँ, इक समय यहाँ पर आयेगा।
कुछ समय बाद इक समयसार, का जन्म यहाँ हो जायेगा।।
ये समय गुजरता गया सतत, वा ऐसा एक समय आया।
जब समयसार को जनने का, शुभ गौरव नगरी के पाया।। (58)

जतारा का अर्थ

अब चलो जतारा के अर्थों में, गुरू तस्वीर निहारें हम।
हर इक शब्दों के अर्थों को, गुरु वंदन से श्रृंगारे हम।।
त्रय शुभ अक्षर से बना हुआ ये, नाम जतारा गहरा है।
हर इक अक्षर के अर्थों में, गुरु वंदन का शुभ पहरा है।। (59)

त्रय अक्षर में सबसे पहले, जो 'ज' अक्षर ये आता है।
वो मृत्युंजय का सूचक है, ये शब्द शास्त्र बतलाता है।।
इस कथा का नायक मृत्युंजय, बनने का पथ दर्शायेगा।
मृत्यु पर जय पाकर इक दिन, वो मृत्युंजय बन जायेगा।। (60)

दूजा अक्षर 'ता' कहता है, ताउम्र ब्रह्मचारी होगा।
तीजा अक्षर 'रा' कहता है, राजा से पद भारी होगा।।
इस तरह जतारा के तीनों, अक्षर का अर्थ निकाला है।
इक इक अक्षर गुरू चरणों में, नित वंदन करने वाला है।। (61)

जतारा की भौगोलिक स्थिति

इस नगर जतारा मध्य बड़ा, इक स्वच्छ सरोवर लहराता।
है मदन सरोवर संज्ञा शुभ, हर मन शीतलता को पाता।।
सदियों से स्वच्छ सरोवर ये, सबकी ही प्यास बुझाता है।
इसके जल का सिंचन पाकर, हर ओर धान्य लहराता है।। (62)

हाँ इसी विशाल सरोवर से, दो नहरों ने भी जन्म लिया।
इक छोटी और बड़ी दूजी, ऐसा लोगों ने नाम दिया।।
बहती है बड़ी नहर दक्षिण, छोटी पूरब में बहती है।
वरदान बन गईं हैं नहरें, खेतों की छाती कहती है।। (63)



अर्हंत जिनालय

नगरी की पूरब दिशा मध्य, अर्हंत जिनालय आता है।
जो पूर्व दिशा में सिद्धक्षेत्र, मधुवन की याद दिलाता है।।
मंदिर के सन्मुख सदाचार, की बहती अविरल धारा है।
वर्णी जी मोतीलाल पाठशाला, का आँगन प्यारा है।। (64)

जिनमंदिर का मुख पश्चिम है, प्रभु पारस पूर्व विराजे है।
प्राचीन अति इक भौंयरा है, जो जिनमंदिर में साजे है।।
चौबीसी, बीस विदेह यहाँ, प्रभु पारस भारी साजे है।
प्रभु नेमीनाथ बड़े बाबा, हर मन के बीच विराजे है।। (65)

कुण्डपहाड़ी

दक्षिण में है छोटा पहाड़, जो कुण्ड पहाड़ी कहलाता ।
इसके ऊपर हैं सात कुण्ड, ये नाम सार्थक हो जाता।।
छह कुण्ड लघु और एक बड़ा, जिनपे है चरण चिन्ह प्यारे।
श्री राम प्रभु के चरण हैं ये, कहते हैं नगरी जन सारे।। (66)

दक्षिण में ही तहसील बनी, वा वहीं पुलिस का थाना है।
थाने के पास कुआ मीठा, कुछ दूर दबाघर पाना है।।
आपस में हिल मिलकर सारे, रहते नगरी के नर नारी।
नाना धर्मों के धर्मीजन, से शोभित है नगरी सारी।। (67)

अमर कथा का अक्षराभिषेक

आओ मेरे संग मैं तुमको, अब मूल कथा से जोड़ रहा।
अपने लेखन की गति को मैं, अब किंचित थोड़ा मोड़ रहा।।
उनके जीवन पर कलम चले, उससे पहले उनको वंदन।
श्री विमर्शसागर गुरुवर की, इस कथा का पावन अभिनंदन। (68)

यह पाप नाश करने वाली, वा पुण्य कोष भरने वाली।
यह कथा सु-पावन गुरुवर की, संसार पार करने वाली।।
गुरुवर की अमर कहानी का, अक्षर से मैं अभिषेक करूँ।
मैं श्रद्धा भक्ति समर्पण का, शुभ अर्घ्य चरण में आज धरूँ।। (69)

इस श्रेष्ठ नगर में इक श्रावक, रहते थे महापुण्य शाली।
है सनतकुमार नाम उनका, रहती थी घर में खुशहाली।।
हर एक कार्य में सहयोगी, बन जो कर्तव्य निभाती हैं;
भगवती देवी के नाम से, उनकी पत्नि जानी जाती हैं।। (70)

मंदिर से पश्चिम दिश में ही, पितु सनतकुमार सु-आलय है।
लगता था जैसे घर न हो, वो सच्चा कोई गुणालय है।।
इस घर में लगे ईंट पत्थर, सब पुण्यशाली कहलायेंगे।
जग उद्धारक गुरु आकर के, अवतरण यहाँ पर पायेंगे।। (71)

ग्लूकोज का पानी

जब मौषम माह सितम्बर था, मेघों से पूरित अम्बर था।
मेघों से नित जलधार बहे, बारिस का भीगा अवसर था।।
शुभ गर्भ-समय से ही माता, समुचित फल सेवन करती थीं।
आने वाला अस्वस्थ न हो, इस आशंका से डरती थीं।। (72)

जब जब वर्षाधिक के कारण, बाजार में फल न मिल पाते।
तब एक तरीका आकर के, पितु सनत वहाँ पर बतलाते।।
जब जब भी फल ना मिल पाये, ग्लुकोज का पानी पिया करो।
दिन में दो तीन दफा पीकर, फल की भरपाई किया करो।। (73)



बारिष से यूँ हालात बने, कुछ दिन तक फल ना मिल पाये।
ग्लुकोज के भर भरके गिलास, माता को सबने पिलवाये।।
नगरी की एक वृद्ध महिला, माता से मिलने घर आई।
ग्लुकोज का पानी पीने की, सब बातें उसको बतलाईं।। (74)

अफसोस जता महिला बोली, बैनीवाई क्या कर डाला।
सत-आठ माह में ग्लुकोज का, पानी बहु को दे डाला।।
आने वाला शिशु सर्दी को, अब सहन नहीं कर पायेगा।
थोड़ा सा मौषम बदलेगा, सर्दी जुकाम हो जायेगा।। (75)

स्वपनों में दिखे भावी अर्हंत

जैसे जैसे ही गर्भकाल, का समय पूर्ण होता जाता।
वैसे वैसे प्रतिदिन नूतन, शुभ सपना आंखों में आता।।
माँ ने सपने में एक रात, इक वृक्ष बड़ा सा देखा था।
जिस वृक्ष की हर इक डाली पर, शुभ फल समूह को देखा था।(76)

चित्रों से चित्रित मनहारी, दो रजत कलश नजराये थे।
केशर मय दूध व दही भरे, कलशे शुभ वहाँ दिखाये थे।।
सुंदर कतार माँ ने देखी, थी रजत परातें धरी हुईं।
वो सभी परातें चांदी के, सिक्कों से पूरी भरी हुईं।। (77)

फिर एक रात को माता के, दो सुन्दर गज सन्मुख आये।
अपनी सूंडों में फूलों की, दो सुन्दर माल दबा लाये।।
जब माह नवम्बर का आया, तो बदली भागों की रेखा।
इक रात ब्रह्मबेला में जा, फिर माँ ने शुभ सपना देखा।। (78)

देखा माँ ने इक बाल मुनी, मुद्रा ले चर्या को आते।
आगे देखा श्रीफल लेकर, मुनिवर को दोनों पड़गाते।।
मुनिवर जब आकर पड़ग गये, खुशियों का पारावार न था।
मुनिवर को भोजन दिये बिना, हाथों का भी श्रृंगार न था।। (79)

सपने के अगले पल में ही, मुनिवर को अंदर पधराया।
पधरा करके घर के अन्दर, उच्चासन पर जा बैठाया।।
चरणों का शुभ प्रक्षालन कर, माथे पर उसे लगाया था।
अपने प्रियतम वा सासु संग, गुरु पूजन को रचवाया था।। (80)

व्यञ्जन से सजी हुई थाली, फिर मुनिवर को दिखलाई थी।
मुद्रा छोड़ो अंजुलि जोड़ो, स्वामिन यह अर्ज लगाई थी।।
दोनों पग बीच चार अंगुल, का अंतर दे मुनि खड़े हुये।
ये ही वो बेला है श्रावक, जब मुनिवर से भी बड़े हुये।। (81)

जब जोड़ अंजुलि मुनिवर ने, भोजन लेना आरंभ किया।
मुनिवर को कर में दे अहार, माता ने खुद को धन्य किया।।
उन नग्न दिगम्बर मुनिवर का, जब पूरा शुभ आहार हुआ।
हर तरफ खुशी का आलम था, घर में शुभ मंगलचार हुआ।। (82)

मुनिवर को मंदिर पहुँचाने, भगवति माँ उनके साथ चलीं।
माता को आज जतारा के, मंदिर में शुभ सौगात मिली।।
मंदिर के आँगन में बैठी, माता ख्यालों में डूब गई।
मुनिराज पुत्र मैं भी पाऊँ, मन में शुभ एक उमंग भई।। (83)



चिन्तन की अविरल धारा में, इक चमत्कार घट जाता है।
अगले क्षण माँ की गोदी में, मुनिराज शिशु नजराता है।।
मन चाहा बेटा पाकर के, सारी इच्छायें छूट गईं।
कुछ चहल पहल के शब्दों से, मैया की निंदिया टूट गई।। (84)

धन धान्य भरे शुभ खेत दिखे, शुभ फसलों के भण्डार दिखे।
कभी अक्षय जल राशी देखी, कभी श्रृष्टि के श्रृंगार दिखे।।
इस तरह प्रतीदिन शुभ मंगल, स्वपनों की लड़ियाँ आती थीं।
माता की खुशियों में प्रतिदिन, नूतन कड़ियाँ जुड़ जाती थीं। ।(85)

माता को स्वपनों की खुशियों, का मन में पारावार नहीं।
उन स्वपन के सुअहसासों से, लगती हर ओर बहार नई।।
तब पिता सनत जी कहते हैं, प्रिय बड़ी भाग्यशाली हो तुम।
मुनिराज पुत्र के मात पिता, लगता बनने वाले हैं हम।। (86)

हो आपके मुख में घी मिश्री, ये वचन आपके फल जायें।
मुनिराज पुत्र के मात पिता, बनने का शुभ गौरव पायें।।
अविराम भाव से काल चक्र, नित आगे बढ़ता जाता है।
हर एक कदम पर नई नई, तस्वीरें गढ़ता जाता है। (87)

भावी केवली का जन्म

नों माह काल कब बीत गया, ये नहीं किसी को पता चला।
सब बाट जोहते थे जिसकी, आ गई वो पावन शुभ बेला।।
हर गली और चौराहे पर, खुशियों के पल नजराते थे।
क्या होने वाला है, भैया ये कोई समझ न पाते थे।। (88)

दस-पाँच नवम्बर की घड़ियाँ, दिन गुरूवार का प्यारा था।
सन उन्निस सौ तेहत्तर के, इस दिन का आलम न्यारा था।।
इस दिन सूरज विशेष आभा, लेकर धरती पर उदित हुआ।
इक और सूर्य के शुभागमन, से जैसे वह भी मुदित हुआ।। (89)

इक रोज सुबह माँ भगवति ने, सासू को पास बुलाया था।
है दर्द पेट में कुछ हमको, ऐसा उनने बतलाया था।।
दादी बैनी बाई बोली, बहुरानी फिकर करो न तुम।
संग-चलो चिकित्सालय चलते हैं, पैदल मिलकर हम और तुम।।(90)

फिर थाम लिया कर पल्लव को, व दादी बैनी बाई चली।
वा तभी सामने से आते, श्री रतन ब्या पर नजर पड़ी।।
गाड़ी बैलों की लेकर के, वो तुरत पास आ जाते हैं।
बैठा दोनों को गाड़ी में, वो अस्पताल पहुँचाते हैं।। (91)

आई खुशियों की घड़ी

नौ बजकरके बत्तीस मिनिट, थी सुप्रभात पावन बेला।
दिन गुरूवार का पावन था, लगता ज्यों नगरी में मेला।।
कुछ अंदर थे कुछ बाहर थे, कुछ यहाँ वहाँ आते जाते।
हर दिल खुशियों से भरा हुआ, सबके ही दिल थे उमगाते।। (92)

आगन्तुक का स्वागत करने, सब थे एकत्रित नर नारी।
जब फूल खिला बगिया में तो, बस महक उठी बगिया सारी।।
सुन करके किलकारी उसकी, इक लहर हर्ष की दौड़ गई।
लल्ला का मुख पहले देखूँ, सबके ही मन में होड़ भई।। (93)



थी नर्स वहाँ मुन्नी बाई, ले बाल शिशु बाहर आई।
वो कहन लगी 'भैया भओ है', फिर मंद मंद वो मुस्काई।।
दादी बैनी बाई भैया, मन ही मन में हर्षाती थी।
वो बार बार लल्ला का मुख, लखकर सौभाग्य मनाती थी।। (94)

तब पास खड़े थे पिता सनत, जो मंद मंद मुस्काते थे।
सुन्दर लक्षण वाला सुत पा, वो फूले नहीं समाते थे।।
अग्रज भैया राजेश और, बहिना कमला भी पास खड़े।
छोटे भाई को पाकर के, थे सपने मन में बड़े बड़े।। (95)

दुखहर्ता का जन्म

तीर्थंकर प्रभु का जन्म अरे, जब इस धरती पर होता है।
जननी माँ को तब जन्म समय, में जरा कष्ट ना होता है।।
इस तरह बड़ा अचरज कारी, इस शिशु का जन्म यहाँ जानो।
माता को पीड़ा किंचित भी, ना हुई यहाँ पर तुम मानो।। (96)

तीर्थंकर प्रभु के जन्म समय, नरकों में भी सुख हो जाता।
सब दीन दरिद्री जीवों का, सारा दुख संकट खो जाता।।
जो सारे जग के दुखहर्ता, वो माँ को क्या पीड़ा देंगे।
न कोई जानता था इक दिन, वो जग की पीड़ा हर लेंगे।। (97)

गोरा तन था कोमल काया, उस शिशु की छवि अति प्यारी थी।
उस बालक की सुन्दर काया, लख सुंदरता भी हारी थी।।
उन्नत ललाट नैंना कारे, शुभ लक्षण सबको भाते थे।
अपनी मन मोहकता से वो, सबको ही पास बुलाते थे।। (98)

पितु सनतचंद जी धन्य हुये, जिनने ये अवसर पाया था।
तीनों लोकों को नत करने, वाला द्वारे पर आया था।।
माता भगवति को धन्य धन्य, जिनने ऐसा सुत जाया था।
जो मोह में जीते भव्यों को, अवनि पे जगाने आया था।। (99)

वो चार दिवारी धन्य हुई, जिसमें नायक ने जन्म लिया।
वो घड़ी धन्य वो दिवस धन्य, उस नगरी को भी धन्य किया।।
इस महागुरू ने गुरूवार, का दिन भी मंगल कर डाला।
हर इक दामन को गुरुवर ने, मानों खुशियों से भर डाला।। (100)

आतुर थे उसके दर्शन को।।

दो तीन दिवस के बाद बहू, बेटे को घर ले आते हैं।
फिर गरम नीम के पानी से, माँ बेटे को नहलाते हैं।।
अब स्वच्छ पुराने रखे हुये ही, वस्त्र वहाँ पहिनाये गये।
तब एक पुरानी साड़ी से, पुन्तरियां वहाँ बनाये गये।। (101)

घर का आँगन दीवारें भी, आतुर थीं उसके दर्शन को।
सब पुरा पड़ौसी आतुर थे, उसके कोमल संस्पर्शन को।।
अग्रज भाई राजेश कभी, गोदी में उसको लेता था।
कोमल गालों को छूना भी, गुड्डी को तब सुख देता था।। (102)

दुख पीड़ाओं से भरे हुये, दिन धीरे धीरे जाते हैं।
खुशियों के दिन कब बीत गये, ये कोई समझ न पाते हैं।।
हँसते गाते दस दिवस गये, डस्टोन महोत्सव आया था।
पूरे ही नगर जतारा में, इक अद्भुत उत्सव छाया था।। (103)



डस्टोन की रश्म

*दिन शनिवार का पावन था, डस्टोन रश्म करवाई थी।
नूतन कपड़े पहिने सबने, सारी ही गली सजाई थी।।
इक लाल रंग की जड़ी हुई, साड़ी माँ को पहिनाई थी।
नन्हें से झवला टोपी से, नन्हीं सी देह सजाई थी।। (104)*

*रंगोली के शुभ रंगों से, इक सुन्दर चौक पुराया था।
माता भगवति को सजा धजा, उसके ऊपर बैठाया था।।
माता भगवति को दुल्हन के, जैसा उस रोज सजाया था।
लगता तीर्थंकर जननी सम, शुभ गौरव उसने पाया था।। (105)*

*नन्हें हाथों में कंगन वा पैरों में पायल बजती थी।
उस गोरे गोरे गले में कठला, की शोभा अति सजती थी।।
नन्हें सु सजीले नयनों में, काजल की शोभा प्यारी थी।
काला धागा गोरी कम्मर, के ऊपर आभा न्यारी थी।। (106)*

*छोटी सी बिन्दी काजल की, माथे के ऊपर जचती थी।
मौसी नन्हें से पावों में, उंगली से माहुर रचती थी।।
दीदी कमला नन्हें हाथों, में मेंहदी आज लगाती थी।
उस मंगल बेला में दादी, शुभ मंगल गीत सुनाती थी।। (107)*

*मामा के घर से सजी हुई, इक छोटी गदुलिया आई थी।
मामा मामी ने मिलकर के, पलने की रीत निभाई थी।।
सब रीती और रिवाज हुये, सब नियम और दस्तूर हुये।
हर दिल में आज महोत्सव था, सब खुशियों से भरपूर हुये।। (108)*

*दादी ने लेकर नाती को, बहु की गोदी में डाल दिया।
लेकर के जन्म अहा इसने, हम सबको यहाँ निहाल किया।।
महिलायें सोहरे गाती थीं, सुत-माँ की बलायें लेती थी।
सब की झोली में दादी तब, भर खूब बतासे देती थी।। (109)*

नामकरण

*अब नामकरण का अवसर था, सब नाना नाम विचार रहे।
सब अपनी चिन्तन धारा से, अक्षर समूह श्रृंगार रहे।।
हर कोई नया चिन्तन लेकर, इक नाम सुझाता जाता था।
कोई कहता ये अच्छा है, पर किसी को वो न भाता था।। (110)*

*दादी बैनीबाई मुख से, एक 'बल्लु' नाम निकल आया।
सब कहन लगे 'जो अच्छो है', पर पिता का मन न भर पाया।।
पर पिता सनत जी कहन लगे, ये लगता नाम पुराना है।
ये चाँद सा बेटा है हमरा, इस जैसा नाम सजाना है।। (111)*

*है दूजा नाम चाँद का जो, 'राकेश' सभी के मन भाया।
चंदा को चंदा कहना तब, सब को ही रास यहाँ आया।।
ज्यों शुक्ल पक्ष में चांद बिम्ब, नित वृद्धि करता जाता है।
माँ भगवति का चंदा भी नित, तब उमर में वृद्धि पाता है।। (112)*

राकेश नाम की अनुभूति

*त्रय अक्षर से मिलकर के ये, 'राकेश' नाम बनता प्यारा।
त्रय अक्षर में तिहुँ लोकों का, शुभ सार छुपा न्यारा न्यारा।।
इक इक अक्षर में छुपा हुआ, आओ कुछ सार निकालें हम।
इस शुभ संज्ञा के आस्रय से, निज सारभूत को पालें हम।। (113)*

राकेश का 'रा' ये कहता है, कि राग से मुक्ती पाना तुम।
राकेश के 'के' में छिपा हुआ, केवल ज्ञानी बन जाना तुम।।
राकेश का 'श' ये कहता है, कि शुभ तज शुद्ध जो ध्यायेगा।
वो कर्म कालिमा नश करके, सिद्धालय में बस जायेगा।। (114)

जो राग से लेकर वीतराग, परिणति तक पथ दर्शाता है।
संसार से मुक्ति पाने का, भव्यों को मार्ग दिखाता है।।
त्रय अक्षर की इस संज्ञा में, सारा ही सार समाया है।
राकेश नाम की अनुभूती, कोई विरला ही कर पाया है।। (115)

प्रथम सोपान पूर्ण

इस नामकरण के साथ साथ, में पहला पर्व समाप्त करूँ।
गुरूवर के चरणों में अपना, श्रद्धा भक्ती से शीष धरूँ।।
अब अगले सोपानों में मैं, आगे की कथा सुनाऊँगा।
शब्दों के श्रृंगारों से मैं, अग्रिम अध्याय सजाऊँगा।। (116)

❑❑❑❑





“द्वितीय पर्व”

संस्कार पर्व

चित्र समूह - 1
गृहस्थ जीवन दर्शन



राकेश बाबू के साथ : मित्र द्वय लोकेश खरे और अनूप खरे। दोनों सहपाठी ।



गुरु के प्रति विनय भाव बचपन से धारण करने वाले राकेश जी अपने अध्यापक श्री एच.एस. चौहान और श्री आर.के तिवारी के साथ। अन्य सहपाठी हैं–लोकेश, अनूप, के.के. शर्मा और राकेश यादव।



राकेश के योग्य मित्रों में सभी जातियाँ शोभा पाती थीं– के.के. शर्मा, लोकेश खरे, अनूप खरे, राकेश यादव, शहादत हुसैन, अतुल नगाइच, मनोज त्रिपाठी, विनोद प्रजापति



बैण्ड दल का गठन करने के बाद, श्री दिगम्बर जैन नवयुवक संघ जतारा के सक्रिय सदस्य राकेश कुमार वाद्य-यंत्रों का वादन करते हुए।



"द्वितीय पर्व"

"संस्कार पर्व"

मंगलाचरण

सिद्धाराधना

इस ज्ञान यज्ञ में मैं अगली, आहूती यहाँ चढ़ाता हूँ।
उससे पहले मैं अशरीरी, सिद्धों को शीष झुकाता हूँ।।
रहते हो अष्टम वसुधा पर, हे नाथ! निरञ्जन अविकारी।
जो भी ध्या लेता भावों से, मिट जाती है भव बीमारी।। (1)

हे नाथ ! अनादी से अब तक, मैं अष्ट कर्म का दास रहा।
निज शक्ति को ना जान सका, पर भावों में ही वास रहा।।
हो वसु कर्मों से रहित आप, हमको भी आतम सिद्धी दो।
श्री चरणों में वंदन प्रभुवर!, हमको निज सी समृद्धी दो।। (2)

निज आत्म भाव के प्रस्तोता!, सर्वज्ञ सिद्धि दायक प्रभुवर।
आनंद कंद! हे सुख निकंद!, शिव शर्म प्रदायक हे जिनवर।।
आतम से आतम को आतम, में लखकर सुख पाने वाले।
मेरा वंदन स्वीकार करो, शिव अमृत बरसाने वाले।। (3)

अब नमन करूँ उन चरणों में, जिनकी यह जीवन गाथा है।
जिनकी पावन चर्या को लख, खुद ही मस्तक झुक जाता है।।
जिनकी सुनकर वाणी पावन, मन के सरसिज खिल जाते हैं।
जिनके दर्शन भर करने से, शिव के साधन मिल जाते हैं।। (4)

उन गुरू 'विमर्श' के चरणों में शत शत अभिनंदन करता हूँ।
निर्बाधित होवे आलेखन, चरणों में वंदन करता हूँ।।
पग चूम रहीं हैं पग पग पर, आकर के नई सफलतायें।
सब विघ्न स्वयं टल जाते हैं, गुरु छाया जिसको मिल जाये।। (5)

जन्मकुण्डली

किस तिथी मिती दिन रात लगन, नक्षत्र और ग्रह कैसे हैं।
घर में जन्मा है जो बालक, उसके शुभ लक्षण कैसे हैं।।
इन सबका ज्ञान कराने को, इक रीत निभाई जाती है।
सन्तान कोई जब जन्में तो, कुण्डली बनाई जाती है।। (6)

तब पिता सनत जी जाते हैं, जाने माने ज्योतिषि के घर।
फिर किया निवेदन कुंडलि का, ज्योतिषि को कुछ पैसे देकर।।
ज्योतिषि बोला आओ बैठो, पत्रा में अभी उठाता हूँ।
शुभ बालक के ग्रह आदिक की, मैं दशा अभी बतलाता हूँ।। (7)

तब पिता सनत जी उत्सुक थे, अपने सुत के लक्षण सुनने।
उसके आगामी जीवन का, अग्रिम ताना बाना बुनने।।
वो कहन लगे तुम शीघ्र करो, अब देर जरा भी मत करना।
बतलाकर फलादेश जल्दी, भावों में जरा चैन भरना।। (8)

प्रज्ञ पुरुष का फलादेश

अपने पोती पत्रा खोले, गृह नक्षत्रों का ज्ञान किया।
शिशु की लक्षण आवलियों ने, पंडित जी को हैरान किया।।
बन गई कुण्डली पंडित जी, अब फलादेश बतलाते हैं।
होगा ये प्रज्ञापुरुष बड़ा, सुनकर पितु हर्ष मनाते हैं।। (9)



नक्षत्र बड़ा वो पावन है, जो पुनर्वसु कहलाता है।
इसमें जन्मा सुत तो भैया, इक महापुरुष बन जाता है।।
शुभ धनू लगन में जन्म हुआ, जो सुंदर तन का द्योतक है।
होगा व्यक्तित्व अनूठा ये, निज पर का जो उद्योतक है।। (10)

इस लग्न का स्वामी उच्च, मनोबल व शिक्षा का धारी है।
है न्याय प्रिय और धर्म निष्ठ, शुभ निर्णय का आधारी है।।
जो जन्म समय शुभ योग रहा, वो वाणी कौशल दर्शाता।
मन मंत्र मुग्ध कर दे वाणी, शुभ सदाचारिता मन लाता।। (11)

गृहत्याग योग

आदित्य मृगेन्द्र बुद्ध काहल, योगों की हालत बता रही।
होगा प्रसिद्ध वा वंदनीय, इसकी शुभ काया जता रही।।
है कुटुम त्याग का योग सेठ!, इसको सहेज के रखना जी।
शादी का दुर्बल योग बड़ा, सो व्याह शीघ्र ही करना जी।। (12)

राजयोग

है दीर्घ आयु वा राजयोग, सबपे इसका शासन होगा।
है दीक्षा योग प्रबल भैया!, इसका चिन्तन करना होगा।।
यह महातपस्वी होगा वा, होगा चारित्र हिमालय सा।
ये सन्यासी त्यागी होगा, स्वामी होगा सिद्धालय का।। (13)

उन्नत ललाट यह दर्शाता, उज्ज्वल कीर्तिवाला होगा।
अध्यातम न्याय वा नीति का, पालन करनेवाला होगा।।
ऐसे ये सारे योग प्रबल, बिरले ही देखे जाते हैं।
बिरले कोई महापुरुष में ही, लक्षण ऐसे मिल पाते हैं।। (14)

बन चुकी कुण्डली हाथों में, लेकर निज गृह की ओर चले।
तब पिता सनत जी मन ही मन, में होकर हर्ष विभोर चले।।
माता का सपना आँखों के, आगे झिलमिल सा बोल रहा।
बेटे का शुभ उज्ज्वल भविष्य, आँखो के आगे डोल रहा।। (15)

घर में एकत्रित थे सारे, इक उत्सुकता लेकर मन में।
सब सोच रहे थे होगा क्या, बल्लू भैया के जीवन में।।
जब पिता सनत के हाथों में, कागज का इक टुकड़ा देखा।
सब झूम उठे आ गई बल्लू, भैया के जीवन की रेखा।। (16)

पितु से सुनकर के फलादेश, कुछ हर्षित थे कुछ चिंतित थे।
भव्यों को सुन उल्लास हुआ, कुछ मोह भाव से रञ्जित थे।।
जो हर्षित थे वो इसीलिये, ये महापुरुष बन सकता है।
जो मोही थे वो गम में थे, बल्लू हमसे छिन सकता है।। (17)

बोले पितु सब अच्छा होगा, क्यों अभी से चिंता करते हो।
बिन जन्मी आशंकाओं से, क्यों अपने मन को भरते हो।।
जो होगा समय के हाथों में और समय हमारा अच्छा है।
ये महापुरुष जब होगा तब, पर अभी हमारा बच्चा है।। (18)

कच्ची नींद

सब छोड़ समय के हाथों में, बस लगे लाल के पालन में।
सुन्दर रीति से बल्लु भैया, के जीवन संचालन में।।
है समयगती अविराम अहो, नित आगे बढ़ता जाता है।
भगवति माँ का नन्हा चन्दा, नूतन नूतन नजराता है।। (19)



जो महापुरुष होते भैया, वो जग से आले होते हैं।
जो जगत जगाने आते हैं, वो अक्सर ही कम सोते हैं।।
बचपन से ही प्यारे गुरुवर, हर मन को लगते अच्छे थे।
पर माता भगवति के लल्ला, ये नींद में थोड़े कच्चे थे।। (20)

थोड़ी सी आहट भी उनकी, निद्रा खराब कर जाती थी।
माता गर करवट भी लेती, तो भी निंदिया खुल जाती थी।।
दादी बैनी बाई कहती, 'जो श्वान नींद में सोउत है'।
ना परेशान माँ को करता, ना ही ज्यादा जो रोउत है।। (21)

रुई का गुड्डा

सुन्दर कोमल नन्हा सा तन, अत्यंत धवल नजराता था।
जो मन की शुक्ल लेश्या का, शुभ भाव सहज दर्शाता था।।
जब दूध पिला माता द्वारा, पलने में डाला जाता था।
तब हर दर्शक को वो 'रूई, का गुड्डा' सा नजराता था।। (22)

शब्द तराजु

दस महिने के हो गये लला, कुछ शब्द बोलना सीख गये।
वो अपनी शब्द तराजू में, रिस्तों को तोलना सीख गये।।
दस महिने में दो दाँत धवल, मुख के अन्दर नजराये थे।
दादा अम्मा बाई के स्वर, सब ही के मन को भाये थे।। (23)

दूध से विरक्त

बल्लू को दूध कटोरी में, लेकर मैया पिलवाती थी।
वह दूध कटोरी किंचित भी, बल्लू के मन ना भाती थी।।
नाना श्री राम प्रसाद अहा, जो ग्राम पहाड़ी के वासी।
बल्लू के दुग्धपान कारज, इक बकरी घर पर पहुँचा दी।। (24)

पद बिहार की शुरुवात

जब एक वर्ष की आयू थी, तब पैरों के बल चलन लगे।
मुनिराजों के सम पद बिहार, के सपने मानों पलन लगे।।
जब बार-बार गिरते देखा, तो पितु ने हाट में जाकर के।
इक सुंदर लकड़ी का गड़ला, दे दिया बल्लु को लाकर के।। (25)

बचपन के खेल

कभी बल्लु नन्हें हाथों से, झुनझुना बजाया करते थे।
कभी एक सिपाही के गुड्डे, से खेल रचाया करते थे।।
बड्डे भईया संग होकर के, तैयार लला जब जाते थे।
है राम लखन जैसी जोड़ी, कहके सब लोग बुलाते थे।। (26)

मंदिल दी हमको जाना है

जिनवर के इस लघुनंदन का, प्रभु संग पुराना नाता था।
तब ही तो नन्हीं उम्र भले, मंदिर जाने ललचाता था।।
दो साल थी छोटी वय किन्तु, मन में उत्साह पुराना है।
तुतली भाषा में कहते थे, मंदिल दी हमतो दाना है।। (27)

लेकर के अष्ट द्रव्य हाथों, जब पिता जिनालय जाते थे।
सब अपने खेल छोड़ करके, बल्लु भी संग हो जाते थे।।
दर्शन करके प्रभु के जैसी, प्रभुता निज में भी प्रगटाने।
नन्हा राकेश चला देखो, लघुता से प्रभुता को पाने।। (28)

वो मात पिता हैं धन्य धन्य, जो ऐसे गुण सिखलाते हैं।
नन्हें बच्चों के थाम हाथ, जो जिन मंदिर ले जाते हैं।।
वो व्यसन मुक्त रहते बच्चे, जीवन सुन्दर बन जाता है।
संयम राहों को ऐसा ही, कोई बालक चुन पाता है।। (29)



क्रम जारी था अब रोज सुबह, पितु साथ जिनालय जाने का।
नन्हें हाथों से चावल के, वो उज्ज्वल पुञ्ज चढ़ाने का।।
तुतली भाषा में प्रभु सन्मुख, प्रभु की संस्तुतियाँ पढ़ने का।
ये पहला पग था जीवन में, प्रभुता की मूरत गढ़ने का।। (30)

इक रोज सनत जी कारज वस, कुछ शीघ्र जिनालय जाते हैं।
बल्लू को संग ले जाने का, वो ध्यान नहीं रख पाते हैं।।
बल्लू को जब ये पता चला, कि पिता जिनालय चले गये।
मंदिर जाने को मैया के, आगे जाके वो मचल गये।। (31)

तुतली भाषा में स्वर फूटे, 'दादादी मंदिल तले दये'।
भर नैनों में आँसू बोले, 'अम्मा हमतो ना लिवा दये'।।
अविरल धारा दो नैनों में, माता को वहाँ दिखाई दी।
माता के सीने में ममता, सु भावों ने अंगड़ाई ली।। (32)

हाथों से आँसू पोंछ दिये, फिर थोड़ा लाड़ दुलार किया।
आँसू के बदले मैया ने, ममता का नव उपहार दिया।।
बोली बेटा तू गम ना कर, हम संग अपने ले जायेंगे।
अपने बेटे को मंदिर जी, जाकर दर्शन करवायेंगे।। (33)

कभी दादी संग कभी मैया, संग जारी क्रम मंदिर जाने का।
रोजाना भावों की सविदा, जाकर प्रभु चरण चढ़ाने का।।
भाषा तुतली पर कंठ मधुर, संस्तुतियाँ मन को भाती थीं।
सुनने वालों को सहसा ही, वो अपनी ओर बुलाती थीं।। (34)

नज़कीन मिजाजी

राकेश लला को बचपन से, मीठा ना ज्यादा भाता था।
पर कभी-कभी तिल और मगद, के लड्डू में मन जाता था।।
घर में व्यञ्जन पकवान बनें, जब कभी पर्व के दिन आते।
नमकीन मिजाजी लल्ला को, केवल नमकीन ही मन भाते।। (35)

नजर

मैया ने इक काला धागा, बल्लू के गले में डाला था।
उस काले धागे में छोटा, ताबीज बड़ा मतवाला था।।
धागे में गांठ लगाकर के, दादी ने खुद तैयार किया।
जब गले में डाला तो मुख से, शुभ महामंत्र उच्चार किया।। (36)

इक बात बताता हूँ तुमको, सावन का महिना आया था।
तब पिता सनत जी के घर पे, ननिहाल बुलावा आया था।।
आयोजन में शामिल होने, माँ ले बच्चों को संग चली।
राकेश संग राजेश अहा, कमला दीदी भी साथ चली।। (37)

राकेश लला बचपन से ही, सुन्दरता की प्रतिमूरत थे।
सबकी ही आँखों की मानो, बस वो ही एक जरूरत थे।।
माता ने कपड़े पहिनाकर, कंघी करके तैयार किया।
अरु खेल रचाने को घर के, बाहर मैया ने भेज दिया।। (38)

बल्लू की सुंदरता भारी ना, जाने किसको खटक गई।
तब बुरी नजर ना जाने कब, किसकी बल्लू पे अटक गई।।
लग गई नजर यूँ हुआ असर, बल्लू को फीवर चढ़ आया।
मामी ने नजर उतारी तब, जाके बल्लू कुछ मुस्काया।। (39)



गोरा पेट बताओ सेठ

दो वर्ष पार कर गये कुंवर, गोरी काया मन भाती थी।
घर पुरा पड़ौसी सबका ही, मनोरञ्जन खूब कराती थी।।
अपने मन रञ्जन के खातिर, बल्लू को पास बुलाते थे।
ब 'गोरा पेट बता दे सेठ' कहके सभी चिढ़ाते थे।। (40)

भगवत्ता खुद चलकर आई

इक रोज पितु किसी आवश्यक, कारज से बाहर जाते हैं।
क्योंकि गृहस्थी में रह करके, कर्तव्य निभाये जाते हैं।।
उस रोज मिला संयोग अजब, ना माता मंदिर जा पाई।
क्योंकि कर्मों के आगे तो, ना रजा किसी की चल पाई।। (41)

मंदिर जाने का समय हुआ, मन में भक्ति तब उमड़ाई।
नन्ही सी पैंया बाहर से, घर के भीतर दौड़ी आई।।
अम्मा अब मंदिल तलो न तुम, मंदिल का धन्ता बोल रहा।
अंतरमन की गहराई में, भक्ति का अमृत घोल रहा।। (42)

बेटे के भावों को पढ़कर, माता ने हृदय विचार किया।
हो गई धन्य मैंने ऐसे, वैरागी सुत को जन्म दिया।।
अंतर में इतनी खुशी जगी, नैनों की गलियाँ भर आईं।
यूँ लगा कि जैसे भगवत्ता, खुद चलकर मेरे दर आई।। (43)

बिच्छु बना खिलौना

भगनी कमला संग माता ने, बल्लू को मंदिर भेज दिया।
बल्लू ने बहिना संग मंदिर, जाकर प्रभु का शुभ दर्श किया।।
प्रभु वेदी के सन्मुख बहिना, माला जपने को बैठ गई।
दोनों पलकों को बंद किया, प्रभु के सुमिरन में लीन भई।। (44)

मंदिर के बाहर अंगना में, बल्लू ने खेल रचाया था।
बल्लू थे खेल में मस्त तभी, इक बिच्छु वहाँ पर आया था।।
तब जान खिलौना बिच्छू को, अपने हाथों में उठा लिया।
हाथों की नन्ही मुट्ठी में, लेकर के उसको बंद किया।। (45)

सज्जन का लक्षण होता है, वो नित ही पर उपकार करें।
तब ही तो पत्थर देने पर, भी वृक्षों से नित फूल झरें।।
कितना भी तुम उपकार करो, दुर्जन उल्टा ही चलता है।
कितना भी दूध पिये विषधर, पर विष ही मात्र उगलता है।। (46)

मुट्ठी से बाहर आते ही, वो बिच्छु डंक घुमाता है।
बल्लू भैया के, नन्हे से कोमल, पग में घुस जाता है।।
जैसे ही डंक लगा तन में, मुख से इक चीख निकल आई।
अपने भैया की चीख सुनी, बहिना बाहर दौड़ी आई।। (47)

बिच्छू को अलग किया पहले, बहिना भी थोड़ी घबराई।
अपने बल्लू को उठा गोद, दौड़ी-दौड़ी घर को आई।।
आकर जब घर पर बतलाया, बल्लू को बिच्छू ने काटा।
माता की ममता चीख उठी, फिर बहिना को थोड़ा डाँटा।। (48)

तब पिता सनत जी यूँ बोले, घबराओ मत मैं जाता हूँ।
जो बिच्छू का विष दूर करे, गुनिया को अभी बुलाता हूँ।।
फिर गुनिया ने आकर बल्लू, भैया का तब उपचार किया।
मुख से अपने कुछ मंत्र फिर पढ़े, फिर हाथों का संचार किया।(49)



आधे गिलास पानी में फिर, कुछ औषधि को घुलवाया था।
वह औषधि मिश्रित जल बल्लू, भैया को फिर पिलवाया था।।
विष उतर गया बल्लू भैया, के मुख पे हास्य विखर आया।
माँ की ममता ने बेटे को, अपनी गोदी में सिमटाया।। (50)

अपनी छोटी सी जिब्भा से, कुछ शब्दों का संचार किया।
टूटे फूटे शब्दों द्वारा, कुछ मैया से इजहार किया।।
अम्मा अब लोज लात को हम, मंदिल दी में ना दायेंगे।
लहता है उते लात विज्जू, हम दिन में मंदिल दायेंगे।। (51)

वो प्यार भरे वैना सुनकर, सुत को सीने से लगा लिया।
अपने ममता के आंचल में, अपने लल्ला को छुपा लिया।।
ठीक है बेटा रोज सुबह, भैया संग मंदिर जाना तुम।
अपने दादा के साथ साथ, पूजा अभिषेक रचाना तुम।। (52)

जगत पूज्य

था किसे पता नन्हा बल्लू, इतना महान बन जायेगा।
जो पूजा करने जाता है, वो जग से पूजा जायेगा।।
पूजक पूजा करते करते, वो स्वयं पूज्य बन जाता है।
ऐसी महानता का दर्शन, बस जिनदर्शन दिखलाता है।। (53)

राम-लखन की जोड़ी

अगले दिन जैसे भोर भई, दोनों भैया तैयार हुये।
बस पहिन लिये धोती पञ्चा, मानों सोलह श्रृंगार हुये।।
है राम-लखन जैसी जोड़ी, बलदाऊ-किशन कोइ कहते थे।
जब दोनों गलियों से गुजरें, सब लोग देखते रहते थे।। (54)

पितु की उंगली इक बल्लू व, दूजी राजेश सु थाम चले।
ले अष्टद्रव्य को हाथों में, जिनपूजा को अविराम चले।।
दोनों की जोड़ी गाँव की, गलियों से जब जब भी जाती थी।
ऐसे सुन्दर बेटे पाने, हर माँ मन में ललचाती थी।। (55)

हर नजर लुभाती थी उन पर, जाकर टिक जाती थी उन पर ।
दोनों की चर्चा रहती थी, सब देखन आते थे सुनकर।।
फूलों से मुखड़ों को लखकर, सब फूले नहीं समाते थे।
सब उनकी सुन्दरता लखके, बस उनके गीत सु-गाते थे।। (56)

लग गई नजर फिर से कोई, उन प्यारे बल्लू भैया को।
ज्वर से तप गया बदन सारा, न चैन था प्यारी मैया को।।
जब लौट सनत जी घर आये, देखा उदास बेटे माँ को।
झट पूछ लिया क्या हुआ अरे, हमरे इस राजा बेटा को।। (57)

बोली मैया देखो बल्लू को, नजर किसी की लगी हुई।
तपता है ऐसे तन सारा, ज्यों तबे पे रोटी रखी हुई।।
सुनकर के सारी बात वहाँ, दादी बैनीबाई आई।
सब नजर उतार दइ पल में, तब माता को साता आई।। (58)

अब समय चक्र अपनी गति से, इक आगे कदम बढ़ाता है।
तब तीन वर्ष की आयू का, नव मोड़ वहाँ पर आता है।।
जब तीन वर्ष की आयू थी, तब की मैं बात बताता हूँ।
छिद्रान्वेषी था कैसा ये, आओ मैं तुम्हें सुनाता हूँ।। (59)



छिन्द्रान्वेषी

अपने नाना के घर बल्लू, मैया के संग-संग जाते हैं।
नाना श्री राम प्रसाद अरे, तब फूले नहीं समाते हैं।।
थी एक दुकान किराने की, वा वैद्यगिरी भी करते थे।
छोटा मोटा मेडीकल का, सामान साथ में धरते थे।। (60)

नाना, मामा को बस बल्लू, नित गौर से देखा करते थे।
बल्लु के मन में डॉक्टर बन, जाने के स्वपन उभरते थे।।
डॉक्टर के स्वपन सजाता है, इक दिन डॉक्टर बन जायेगा।
था किसे पता ये जन्म जरा, मृत्यू के रोग मिटायेगा।। (61)

थी एक दुकान किराने की, उसकी छत में इक छिद्र रहा।
वा उस दुकान के ऊपर ही, भोजन शाला का कक्ष रहा।।
उस छेद से देख देख नानी, सारा व्यापार चलाती थी।
जब जब आता ग्राहक कोई, नानी नीचे आ जाती थी।। (62)

सूनी दुकान लखकर इक दिन, इक चोर वहाँ पर घुस आया।
पर बल्लू भैया की पैनी दृष्टी से वो न बच पाया।।
देखा उसने गोलक खोली, कुछ पैसे वहाँ निकाल लिये।
यह देख दौड़ बल्लू आये, बोले क्यों पैसे काढ़ लिये। (63)

निज सूझ बूझ और धीरज से उस चोर का भण्डा फोड दिया।
उस चोर का चोरी करने का, सारा मन्सूबा तोड़ दिया।।
उस नन्ही उम्र में साहस ऐसा देख चोर घबराया था।
उसने फौरन सारा पैसा, बल्लु को तब लौटाया था।।64।।

तब तक आकर के नाना ने, उसको फटकार भगाया था।
फिर प्रेम और स्नेह से भर, बल्लू को गोद उठाया था।।
बोले हमको लुट जाने से, बल्लू भैया ने बचा लिया।
फिर खुश होकर बल्लू जी को, लेकर मिठाई उपहार दिया। (65)

अभिन्न मित्र

बल्लू का एक अभिन्न मित्र, लोकेश खरे नित साथ रहा।
बचपन से लेकर यौवन तक, सहपाठी बन सौगात रहा।।
दोनों को ही कुछ पता न था, कब मित्र बने संबंध हुये।
श्री कृष्ण सुदामा के जैसे, कब दोनों में अनुबंध हुये। (66)

महामना का प्रभाव

रिमझिम सी बरसातें लेकर, जब महीना आता सावन का।
लगता था दृश्य बगीचे सा, तब सनतकुमार के आँगन का।।
कहिं मक्के के भुट्टे दिखते, कहिं गिल्की तोरइ लोकी थी।
कई सब्जी के संग फूलों की, शोभा भी बड़ी अनोखी थी। (67)

गिल्की तोरई व कद्दू के, जब फूल अनोखे खिलते थे।
तितली व भंवरों के समूह, आ आकर वहाँ मचलते थे।।
अहि और नेवला आँगन में, कभी खेल रचाने आते थे।
घर में आये उस महामना, का शुभ प्रभाव दर्शाते थे। (68)

लड़की का भ्रम

जब तीन वर्ष के हुये लला, तो बाल बड़े मन भाते थे।
जब चोटी कर देती मैया, तो लड़की से नजराते थे।।
लड़की सा गोरा कोमल तन, मन में अचरज भर जाता है।
ये लड़की है अथवा लड़का, ये भ्रम पैदा कर जाता है। (69)



सब कहते लड़की होना थी, पर लड़का बनकर आया है।
तब ही तो इतना गोरा वा, कोमल तन इसने पाया है।।
मैया, दादी, भैया, दादा, बहिना सबको ही प्यारा है।
बल्लू हर एक पड़ौसी की, आँखों का लगता तारा है। (70)

दो वर्ष हुये बल्लू भैया, अपने दादा संग सोते थे।
अपने पितु की गोदी को पा, राकेश बहुत खुश होते थे।।
राजेश को दादी प्यारी थी, चक्रेश को मैया भाती थी।
तब पिता सनत जी को सबमें, बल्लू की सूरत भाती थी। (71)

चक्रेश का जन्म

जब सन उन्निस सौ छियत्तर में, दिन तीन नवम्बर का आया।
तब माता भगवति ने गोदी, में चौथा फूल खिला पाया।।
बल्लू का मन अति हर्षित था, छोटे भाई को पाकर के।
चक्रेश नाम रख दिया अहा, सबने ही मन हरषाकर के। (72)

बल्लु की टिड

जब पिता सनत कहिं जाने को, कपड़े का बैग लगाते थे।
कहिं जाने वाले हैं दादा, बल्लू अनुमान लगाते थे।।
ना साथ हमें ले जायेंगे, ये बात समझ वो जाते थे।
घर के बाहर आकर कुन्दी, बाहर से वहाँ लगाते थे। (73)

तब पिता सनत के मुखड़े पर, कुछ क्रोध के भाव उभरते थे।
फिर भी दरवाजा ना खुलता, तो नम्र निवेदन करते थे।।
पर बल्लू तो अपनी 'टिड़' में न, बात किसी की मन धरते।
तब पुरा पड़ौसी आकर के, दरवाजे को खोला करते। (74)

जय जय नाथ पलम गुलु होय

जब चार वर्ष के हुये लला, तो दौड़ दौड़ मंदिर जाते।
दादी के साथ कभी जाते, दादा के साथ कभी जाते।।
इक दिवस अकेले ही बल्लू, श्री जिनमंदिर जी जाते हैं।
जब लौट के घर आये बल्लू, सब फूले नहीं समाते हैं। (75)

अपने नन्हें से बल्लू से, मैया ने एक सवाल किया।
बोलो भैया मंदिर जी जा, करके तुमने क्या काम किया।।
तुतली सी मीठी भाषा में, बल्लू ने शब्द सुनाये थे।
अम्मा मंदिल में दाकर हम, इक पूदा तलते आये थे। (76)

बल्लू के कोमल गालों पर, माँ ने कर का संचार किया।
अपने सीने से लगा उसे, मैया ने थोड़ा प्यार किया।।
बेटा किन भगवन की पूजा, किनको तुम अर्घ्य चढ़ाये थे।
'माँ जय जय नाथ पलम गुलु हो', बल्लू ने शब्द सुनाये थे। (77)

सुनकर के वाणी बेटा की, माता मन में यूँ सोच रही।
ख्यालों में बेटा के अंदर, निर्ग्रंथ मुनी को खोज रही।।
बल्लू ने नन्हें हाथों से, मैया का दामन थाम लिया।
फिर पानी देने का आग्रह, मैया के सन्मुख व्यक्त किया। (78)

बल्लु के प्रश्न माता के उत्तर

पानी पीकर बोले बल्लू, अम्मा तुमसे कुछ पूछें हम।
ये लोज-लोज मंदिल जाने, से होता है क्या बोलो तुम।।
बोली मैया उन वीतराग, अर्हंत देव के दर्शन से।
मन परम शान्त हो जाता है, मिट जाते भव के कृन्दन ये। (79)



उस नन्हें से कोमल मन में, फिर प्रश्न पुनः उठ जाता है।
भगवन तो रहते मौन सदा, सब किसे सुनाया जाता है।।
कहते ना कुछ सुनते भगवन, फिर भी उनके दर्शन भर से।
बेटा! भव भव के पाप कटें, प्रभु वीतराग दर्शन करके। (80)

ये प्रश्न और उत्तर का क्रम, माँ बेटा का चलता जाता।
इक ओर से प्रश्न करे बेटा, माँ से उत्तर मिलता जाता।।
इक और प्रश्न कर दिया खड़ा, बेटा ने माता के आगे।
भगवान कहाँ पर रहते हैं, हम ढूढें कहाँ उने जाके। (81)

बोली मैया भगवति बेटा!, भगवान हृदय में रहते हैं।
तेरे दादा दादी बेटा, बचपन से हमसे कहते हैं।।
माँ जब दिल में भगवान बसें, मंदिर जी फिर क्यों जाते हैं।
माँ अपने मन के अंदर ही, भगवान को क्यों न पाते हैं। (82)

ये बात यहीं पर छोड़ तभी, बल्लू बाहर को जाते हैं।
अपने नन्हें मित्रों के संग, जाकर के खेल रचाते हैं।।
जब खेल खतम करके आये, दरवाजे पर ही रोक लिया।
मंदिर दर्शन करके आये, क्या? माँ भगवति ने पूछ लिया। (83)

माता का ही वह पुरोवाक, बेटा बल्लू वहाँ दोहराता।
भगवान हृदय में जब बसते, मैं काहे को मंदिर जाता।।
सुनकर अवाक् रह गई माता, अपने लल्ला की चतुराई।
अब मैं क्या इसको उत्तर दूँ, ये सोच रही भगवति माई। (84)

माता भगवति देवी अपने, ही वाक् जाल में उलझ गई।
ये महाप्रज्ञ होगा इक दिन, माता ये पल में समझ गई।।
बेटा के शब्दों के आगे, माँ की तब हार निराली थी।
माता भगवति के दामन में, नव खुशियाँ भरने वाली थी। (85)

बैडमिंटन का खेल

खेल बैडमिंटन में बल्लू, का मन लगता था भारी।
तब ही तो खेल रचाने की, करते थे सुंदर तैयारी।।
दो कागज के गत्ते लेकर, कुछ गेंदा फूल लियाते थे।
भैया दीदी के साथ-साथ, तब जमकर खेल रचाते थे। (86)

प्रथम बार गये स्कूल

अब उम्र नये सोपान गढ़े, थे पाँच साल के स्वपन हरे।
अध्ययन हेतु नन्हें नन्हें, पग बढ़े हृदय उल्लास भरे।।
इक दिन राजेश बड़े भैया, विद्या अध्ययन को जाते हैं।
बल्लू भी अपने अग्रज के, पीछे-पीछे लग जाते हैं। (87)

तब सेन साहब लेते कक्षा, सबसे कुछ ना कुछ पूछ रहे।
बल्लू से भी जब पूछा तो, करके सिर नीचे मौन रहे।।
ये हमरे छोटे भैया है, ये पहली बार ही आये हैं।
ये कहकर के राजेश बड़े, भैया थोड़े मुस्काये हैं। (88)

तब बड़े प्यार से शिक्षक जी, बल्लू को पास बुलाते हैं।
फिर रखा हाथ सिर पे उसके, इक प्रश्न पूछते जाते है।।
क्या रोज आओगे तुम बेटा! विद्यालय में अध्यन करने।
बल्लू ने तब संकेत दिया, अब रोज आयेंगे हम पढ़ने। (89)



घर पर मैया थी परेशान, बिन बोले बल्लू कहाँ गया।
जब संग लौटे दोनों भाई, मैया का मन तब समझ गया।।
काए राजू तुम बल्लू को, अपने संग काय लुवा गये थे।
बोले राजू हम नइ ले गय, जे पीछे पीछे आ गये थे। (90)

सीखा छोटा 'अ' लिखना

भोजन देकर बोली मैया, बेटा स्कूल यूँ ना जईयो।
जब दादा संग लुवा जेहें, तब ही तुम विद्यालय जइयो।।
फिर पिता सनत ने अगले दिन, से ही बल्लू को समझाया।
बत्ती से पट्टी के ऊपर, छोटा 'अ' लिखना सिखलाया। (91)

बचपन के खेल

जब घर के बाहर से बैलों, की गाड़ी गुजरा करती थी।
चुपके से पीछे चढ़ने की, क्रिया सबका मन हरती थी।।
तब गाड़ी का मालिक क्रोधित, होकर झल्लाया करता था।
फिर उस मासूम से मुखड़े को, लख प्यार जताया करता था। (92)

कल की करुणा

तब घर के बाहर पड़ी हुई, गीली बालू में जाकर के।
हर्षित होते सुन्दर सुन्दर, नूतन गृह वहाँ बनाकर के।।
कभी करुणा से प्रेरित होकर, रच टाट और पट्टी के घर।
सर्दी से पीड़ित पिल्लों को, रख आते थे उसके अंदर (93)

कागज की नौका

रिमझिम रिमझिम बारिस का जल, गढ्ढों में जब भर जाता था।
कागज की नौका ले बल्लू, उसमें तैराने जाता था।।
कभी वायुयान बनाकर के, कागज के खूब उड़ाते थे।
कभी हाथों में भौंरा लेकर, सावन में खेल रचाते थे। (94)

घर के आँगन में फूल रहीं, सब्जी की सुन्दर सी बेलें।
जिनके आकर्षण में बंधकर, तितली भौंरें आकर खेलें।।
तब रंग बिरंगी तितली के, रंग बल्लू के मन भाते थे।
तितली को पकड़ने की खातिर, बल्लू मन में ललचाते थे। (95)

माता के काम में सहयोगी

माता के सारे कामों में, बल्लू जी हाथ बटाते थे।
जब गेंहुँ साफ करती माता, बल्लू भी संग हो जाते थे।।
दादी जब घर के आंगन में, पापड़ को बेला करती थीं।
बल्लु के लिये इक छोटा सा, बेलन संग अपने रखती थीं। (96)

माथे का तिलक

दादी की उंगली थामें जब, बल्लु जी मंदिर जाते थे।
घिस घिस करके चंदन मूठा, माथे पे तिलक लगाते थे।।
हाथों में माला लेकर के, जब दादी जाप लगाती थी।
तब बल्लू के नन्हें हाथों, में भी माला आ जाती थी। (97)

दादी के किस्से

गुर्सी में आग जलाने का, जब मौसम ठण्डा आता था।
तब दादी से किस्से सुनना, बल्लू के मन को भाता था।।
हर रोज नया किस्सा सुनने, दादी से फरमाइश करते।
घण्टों तक बैठ बरोसी पर, दादी के संग तापा करते। (98)

पिता की पाठशाला

चारों भाई बहिनों को वो, इक साथ बिठाया करते थे।
तब पिता सनत जी बच्चों को, नित पाठ पढ़ाया करते थे।।
इक हाथ में सबके श्याम पट्ट, दूजे में श्वेत वर्तिका थी।
तब पिता पुत्र में गुरू शिष्य, की दिखती शुभ्र भूमिका थी। (99)



करुणा के सागर

उस भोले बचपन में इतनी, करुणा लहराती थी मन में।
दुखियों को देख-देख उनके, अस्रु भर आते नैनन में।।
वो महापुरुष कहलाते जो, दुखियों के दुखडे हरते हैं।
प्रभु महावीर सम बन करुणा, का शंखनाद वो करते हैं। (100)

इक अंधा भिक्षू रोज सुबह, की बेला में दिख जाता था।
वो रोज दुआऐं दे देकर, गलियों में चलता जाता था।।
बल्लू भैया का ना कोई, भिक्षु से खून का रिस्ता था।
जिससे सबका रिस्ता होता, वो बल्लू एक फरिस्ता था। (101)

उस नेत्र हीन भिक्षु को लख, के नेत्र सजल हो जाते थे।
उस दीन-हीन को कुछ दे दूँ, ये भाव प्रबल हो जाते थे।।
घर के अंदर इक बक्से में, कुछ खुल्ले पैसे रहते थे।
घर के खर्चे के लिये वहाँ, कुछ पैसे रक्खे रहते थे। (102)

तब नजर बचाकर के सबसे, कुछ पैसे वहाँ निकाल लिये।
भिक्षू की झोली में पैसे, बल्लू ने लाकर डाल दिये।।
इक दो दिन की ना बात रही, अब रोजाना क्रम बना लिया।
उस नन्हें दाता के घर को, भिक्षु ने भी पहिचान लिया। (103)

इक कुआ निकट प्यासा आया, ये तो हम सुनते आये हैं।
पर कुआ चला प्यासे के घर, ये बात समझ ना पाये हैं।।
इक रोज किसी कारण के बस, वह भिक्षू गली नहीं आया।
व्याकुल नन्हा मन सोच रहा, क्यों बाबा आज नहीं आया। (104)

नन्हें कदमों को बढ़ा दिया, नन्हें हाथों पैसे लेकर।
बाबा के घर पर जाकर मैं, आऊँगा कुछ पैसे देकर।।
फिर ढूँढ झोपड़ी बाबा की, जाके कुछ पैसे थमा दिये।
यूँ लगा कि भगवन खुद आये, भक्तों के दुख हरने के लिये। (105)

नन्हें कोमल हाथों ने जब भिक्षु का कर स्पर्श किया।
भिक्षु ने कर पर्शन में ही, नन्हें ईश्वर का दर्श किया।।
उन भावी भगवन के बचपन, में छिपी एक अद्‌भुतता थी।
लगता था शीघ्र प्रगट होने, वाली ईश्वर की सत्ता थी। (106)

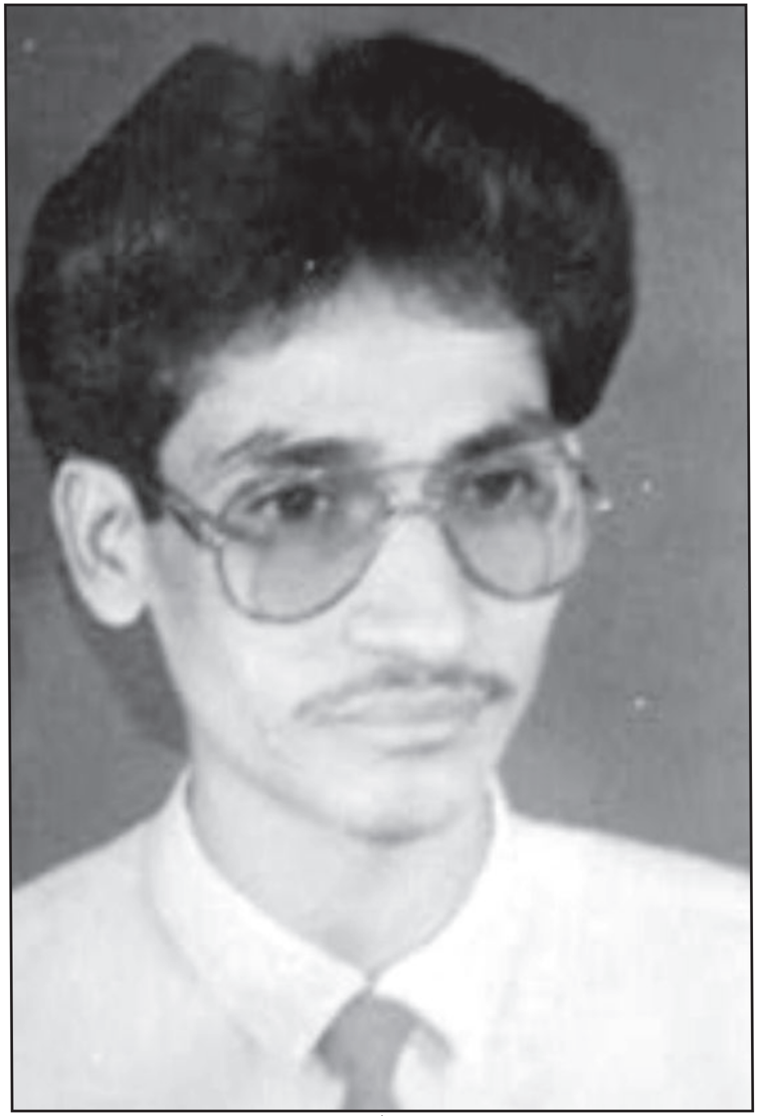
बचपन के शुभ्र झरोंखो से, हमने व्यक्तित्व निहारा है।
गुरु जीवन के कुछ दृश्यों को, कागज पे यहाँ उतारा है।।
नाना दृश्यों से सजी हुई, यह गुरु के बचपन की झाँकी।
बचपन का थोड़ा कथन किया, थोड़ा सा कहना है बाकी। (107)

द्वितीय पर्व पूर्ण

इन खट्टी मीठी यादों संग, यह बाल्यकाल का वर्णन है।
दूजा अध्याय हुआ पूरा, गुरु चरणों का स्पर्शन है।।
यह गुरु जीवन माला प्यारी, शब्दों के मोती डाले है।
भावों के धागों में डाले, ये मोती श्रद्धा वाले है। (108)

❑❑❑❑

चित्र समूह - 1
गृहस्थ जीवन दर्शन



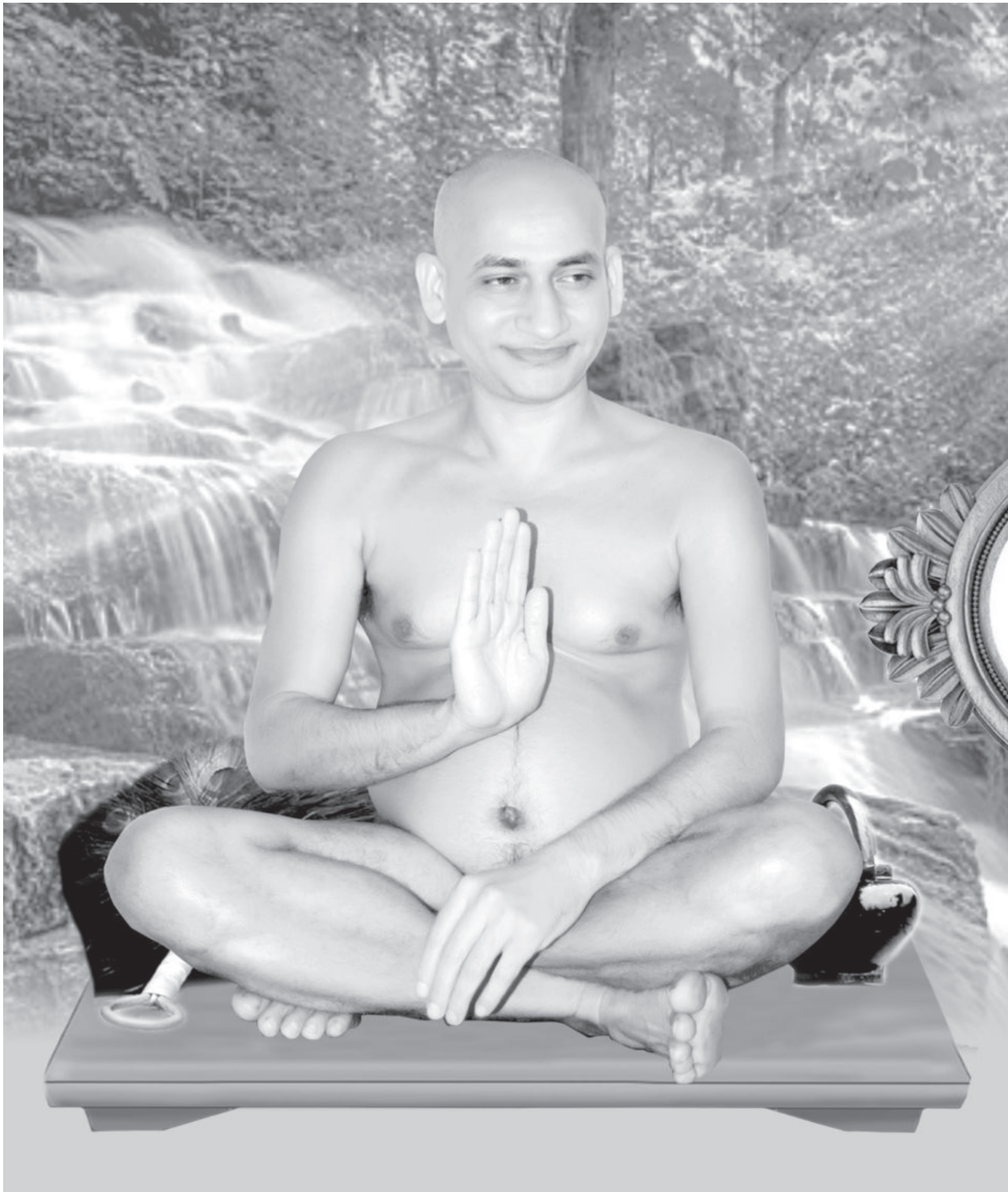
एक सुशिक्षित, सुंदर, शिष्ट और विनयशील युवक : राकेश।



मैना सुंदरी का अभिनय करते हुए राकेश कुमार। श्रीपाल के रूप में बैठे हुए अरविन्द माते, उन्हीं के समक्ष हैं मंत्री-प्रमोद। मंच की दायीं ओर बैठा किशोर है राजेश जैन (राकेश के बड़े भाई) और बायीं तरफ निर्देशक-कपूर चंद बंसल।



कुंडलपुर-वंदना को जाते हुए बादलों ने घेर लिया, वर्षा होने लगी तब राकेश शांत भाव से जाप देने बैठ गए। साथ हैं-स्वतंत्र सिंघई एवं अरविन्द माते। उघारे तन देख कौन कहेगा कि ये नाटक के पात्र हैं–
मैना सुंदरी, राजा श्रीपाल और राजा पहुपाल।



bhavlingi sant

"तृतीय पर्व"

शिक्षा पर्व

संजीवनी भावलिंगी संत (महाकाव्य)

bhavlingi sant
shramanacharya shri 108 vimarsh sagar ji gurudev

चित्र समूह - 1

गृहस्थ जीवन दर्शन



अवधेश प्रतापसिंह महाविद्यालय टीकमगढ़ में जब राकेश बी.एस.सी कर रहे थे तब अपने प्रोफेसर श्री चौरसिया जी (मध्य) के साथ। अन्य हैं सहपाठी लोकेश, कमलेश बसंत और अन्य।





बरीघाट (टीकमगढ़) पर अपने सहपाठियों के साथ पिकनिक मनाते राकेश बाबू



"तृतीय पर्व"

"शिक्षा पर्व"

मंगलाचरण
अरिहंत वंदना

अरिहंत प्रभू के चरणों में, 'अरि' हनन सु-भाव लिये मन में।
शुभ भाव वंदना के प्रेषित, उल्लास भरा अंतरमन में।।
उल्लास प्रभू की भक्ति का, कर्मों को शीघ्र नशायेगा।
प्रभू की भक्ति से जीवन का, हर काज सफल हो जायेगा।। (1)

चउ कर्म घातिया नशा दिये, अक्षय केवल धन प्रगटाया।
संयम की शुभ्र साधना से, आतम उपवन को महकाया।।
इस भूतल पे करके विहार, उपदेश दिया शुभ भव्यों को।
प्रभु सात तत्व बतलाये थे, पंचास्ति काय छैः द्रव्यों को।। (2)

परमौदारिक तन के धारी, उद्धार किया सारे जग का।
भव भ्रमित हुये भवि जीवों को, उपदेश दिया था शिव मग का।।
निश्चय से आत्म बिहारी प्रभु, व्यवहार से भूँ पर गमन किया।
भवि जीवों की भवज्वाला को, उपदेशामृत से शमन किया।। (3)

प्रभु गर्भ आगमन से पहले, देवों ने रत्न लुटाये थे।
प्रभु जन्म समय तीनों लोकों, में आनंद उत्सव छाये थे।।
जब यौवन का मौषम आया, मन में वैराग्य समाया था।
वन जाकर दीक्षा को धारा, देवों ने मंगल गाया था।। (4)

वीरों के पथ का वरण किया, इसलिये वीर तुम कहलाये।
शिवपथ का वर्धन किया अहा, प्रभु वर्धमान जग गुण गाये।।
प्रभु सन्मति, सन्मति दो हमको, महावीर सु-पथ हम वरण करें।
अतिवीर बनें हम जीवन में, अतिवीर का हम अनुशरण करे।। (5)

खट्टी मीठी यादें

आओ हम जोड़े गुरुवर के, बचपन की कुछ पावन कणियाँ।
कुछ हँसते गाते मीठे पल, कुछ बचकानी सी फुलझड़ियाँ।।
उससे पहले सौ बार नमन, गुरुवर जी मुझको संबल दें।
लिख सकूँ सुगाथा गुरुवर की, इस कलम को गुरुवर वो बल दें।।

नन्हीं कोमल सी उम्र अहा, नन्हें से बल्लू भैया की।
सबको चिन्ता अध्यन की थी, उस जग के पार लगैया की।।
बोली मैया बल्लू बेटा, तुमको विद्यालय जाना है।
अपने भैया के संग जाकर, अपना भी ज्ञान बढाना है।। (6)

स्कूल में दाखिला

जब साढ़े पाँच की हुई उमर, बल्लू भैया के जीवन की।
तब पिता सनत को हुई फिकर, बल्लू भैया के अध्यन की।।
स्कूल मदनसागर में जा, दाखिला पुत्र का करवाया।
प्राचार्यश्री तब हरप्रसाद जी, खरे को नाम था लिखवाया।। (7)

कागज के कुछ टुकड़े रखकर, नन्हीं सी हाथों कलम लिये।
बस्ते में रख छोटी स्लेट, पग चले अहा! अध्यन के लिये।।
जिस उम्र में बच्चे विद्यालय, जाने में डर भय खाते हैं।
उस उम्र में विद्यालय जाने, भैया जी दौड़ लगाते हैं।। (8)



इस छोटी सी आयू में ही, विद्यालय जाना शुरू किया।
इक महागुरु ने जाकर के, शिक्षा गुरू का आस्रय लिया।।
कोई उन्हें पढ़ायेगा कैसे, जो निज को पढ़ने वाला है।
पर उनके विद्या अध्यन से, गुरु गौरव बढ़ने वाला है।। (9)

गुरु और शिष्य का यह रिस्ता, जग में पावन कहलाता है।
गुरु थोड़ा भी ना देते हैं, पर शिष्य बहुत पा जाता है।।
था एकलव्य इक श्रेष्ठ शिष्य, जिसने गुरू को स्वीकारा था।
ना मिला गुरु आशीष मगर, निज उर में गुरु उतारा था।। (10)

कहते हैं गुरु प्रसाद से खुद, विद्या सुसिद्धि हो जाती है।
गुरू भक्ति की अद्‌भुत महिमा, शिष्यों में जब लहराती है।।
इकलव्य की भक्ति मिट्‌टी की, मूरत को गुरू बनाती है।
विद्या सिद्धि में वह मूरत, कारण उसको बन जाती है।। (11)

युग अध्येता

युग अध्येता के जीवन में, अध्यन का क्रम अब शुरू हुआ।
था विश्वगुरू इक पढ़ने को, शिक्षा गुरु सन्मुख खड़ा हुआ।।
थे अध्यन के सोपान क्रमिक, क्रम से वो बढ़ते जाते हैं।
नव कीर्तिमान उन सोपानों, में खुद ही गढ़ते जाते हैं।। (12)

अविराम सुगति से समय सतत, आगे नित बढ़ता जाता है।
उन्नत भविष्य की वह बल्लू, तस्वीरें गढ़ता जाता है।।
माता भगवति ने जन्मा था, सबकी आँखों का तारा था।
बचपन से ही राकेश लला, लगता इस जग से न्यारा था।। (13)

राकेश का था व्यक्तित्व महां, जो गुरूजनों को भाता था।
गुरू जान सके न, महागुरु, लघु बनके पढ़ने आता था।।
कर्तव्य निष्ठ इक शिष्य की जीवन, झांकी के प्रस्तोता थे।
जो कुछ पढ़ने वो आते थे, उसके वो पूर्व पुरोधा थे।। (14)

बल्लु-लिली की मित्रता

विद्या अध्यन आते जाते, स्कूल की चार दीवारी में।
पहले थोड़ी पहिचान बनी, फिर बदल गई वो यारी में।।
राकेश और लोकेश कहो, या बल्लू और लिली जानो।
दौनों में ऐसी यारी थी, ज्यों कृष्ण सुदामा हों मानों।। (15)

है मित्र वही जो सुख दुख की, घड़ियों में साथ निभाता है।
गर इक को पीढ़ा हो थोड़ी, दिल दूजे का भर आता है।।
इक दूजे के हित में अपना, जो सबकुछ अर्पण कर देते।
इक दूजे की विपदाओं को, हँसकर सिरपर जो ले लेते।। (16)

बने मोनीटर

अब सात बरस हो गई उमर, कक्षा दो में वे पढ़न लगे।
इक प्रखर शिष्य के रूप में वो, अपनी तस्वीरें गढ़न लगे।।
अब शुद्ध इबारत हिन्दी की, लिखना वा पढ़ना सीख लिया।
थे बीस पहाड़े याद अहा!, मोनीटर बनके ज्ञान दिया।। (17)

जब लिली और बल्लू मिलकर, स्कूल से घर को आते थे।
तो सुट्‌टर कक्कू के मकान, की चिकनी पट्‌टी पाते थे।।
उस चिकनी पट्‌टी पर दोनों, मिल करके खेल रचाते थे।
जब खेल से मन भर जाता था, तो अपने घर को आते थे।। (18)



सरोवर का स्नान

घर से कुछ दूर सरोवर है, जो मन को हरने वाला है।
अपनी शीतलता से हर शय, को शीतल करने वाला है।।
उस स्वच्छ सरोवर के तट से, निकली दो नहर बड़ी छोटी।
दोनों में शीतल जल धारा, खूबड़ बहतीं मोटी मोटी।। (19)

उन नहरों का शीतल जल पी, कोई अपनी प्यास बुझाते हैं।
उन नहरों का जल पी पीकर, कई खेत हरे लहराते हैं।।
इक रोज तलाब नहाने के, मन में विचार जब उमड़ पड़े।
अम्मा दादा को बिना कहे, दोऊ भैया घर से निकल पड़े।। (20)

उस स्वच्छ सरोवर की लहरें, तट पर आकर टकरातीं थीं।
आओ मुझमें स्नान करो, वो कहके पास बुलाती थीं।।
दोनों भैया जब पहुँच गये, उस स्वच्छ सरोवर के तट पर।
राजेश तुरत ही कूंद गये, बल्लू को तट पर बैठाकर।। (21)

अपने अग्रज को देख-देख, तब बल्लू भी मुस्काते थे।
राजेश वहाँ नानाविधि से, पानी में गोता खाते थे।।
हो गई देर जब आने में, डरते-डरते घर पे आये।
जाकर क्या बोलेंगे घर पर, ये बात समझ में न आये।। (22)

चुपके से आकर के दोनों, घर के अंदर छिप जाते हैं।
सब ढूंढ रहे चउँ ओर मगर, वो कहीं नजर ना आते हैं।।
शिष्यों की कोई बात अरे, ना गुरुवर से अन्जानी हो।
बच्चों की कोई बात नही, माँ बाप ने जो न जानी हो।। (23)

जब बाहर कहीं नहीं पाये, तो खोजा फिर घर में आकर।
दोनों ही छुपकर बैठे थे, घर के इक कोने में जाकर।।
तब पिता सनत ने दोनों को जम करके डाँट लगाई थी।
ना देख सकी माँ की ममता, क्षणभर में अति अकुलाई थी।। (24)

माँ कहन लगी अब रहने दो, मेरे ये पुत्र जरा से हैं।
हो गई दोपहरी पर अब तक, ये दोनों भूखे प्यासे हैं।।
मैया ने हाथ रखा सिर पर, ममता से लाड़ दुलार किया।
अपने हाथों से बना हुआ, फिर भोजन थाल परोस दिया।। (25)

दोनों पुत्रों के बीच बैठ, पंखा तब मात हिलाती थी।
वात्सल्य मयी मनुहारों से, भोजन माँ खूब खिलाती थी।।
कभी सर पर हाथ फिराती माँ, वा पीठ को वो सहलाती थी।
भोजन करते बेटों को लख, माता भगवति हर्षाती थी।। (26)

अब आठ वर्ष हो गई उमर, बचपन पूरे यौवन पर था।
नाना खेलों में रम रहना, बल्लू के दिन भर का क्रम था।।
छुपने का खेल कभी खेले, तो चोर सिपाही खेल कभी।
इमली के बीज फोड़कर के, चंगला आदि का खेल कभी।। (27)

माता-पिता के संस्कार

तब ब्रह्म मुहुर्त में मात पिता, दोनों जल्दी उठ जाते थे।
फिर पिता सनत जी भक्तामर, को मीठे स्वर से गाते थे।।
उन मात पिता के संस्कार, की सौरभ ने महकाया है।
तब ही तो बल्लू आज यहाँ, ये महासंत बन पाया है।। (28)



तैरने की कला

दादी भैया के संग इक दिन, बल्लू तालाब पे जाते हैं।
इक ओर खड़े हो देख रहे, कैसे सब लोग नहाते हैं।।
स्नान मग्न देखा सबको, बल्लू के मन में भाव भये।
ना कुछ सोचा ना कुछ देखा, सीधे पानी में उतर गये।। (29)

उथले पानी से जैसे ही, गहरे पानी में खूब गये।
गहरे पानी में जाते ही, बल्लू पानी में डूब गये।।
तब आस पास के लोगों ने, पानी से शीघ्र निकाला था।
भर गया पेट में पानी तब, उल्टा कर उसे निकाला था।। (30)

असफलताओं से जो शिक्षा, लेकर आगे बड़ जाता है।
वो ही इस धरती पर कोई, तब महापुरुष कहलाता है।।
पानी में कला तैरने की, सीखूँगा मन में ठान लिया।
बल्लू भैया ने तब अपनी, आतम शक्ति को जान लिया।। (31)

जमींदार का नाती

बल्लू भैया के परदादा, श्री पंचम लाल कहाते थे।
तब जमींदार के पद पर वो, सब गाँव में शोभा पाते थे।।
श्री पंचमलाल जी जमींदार, के पुत्र थे नाथूराम अहा।
इन नाथूराम के एक पुत्र थे, जिनका सनत जी नाम रहा।। (32)

सनत जी ने छोड़ी पटवारी की सर्विस

लगन शील विद्या अध्यन में, बचपन से ही सनत रहे।
कर्तव्य निष्ठ बा मेहनत की, मानों दूजी पर्याय रहे।।
पटवारी सरकारी सर्विस, सन साठ में उनने पाई थी।
माँ बैनीबाई के आग्रह, पर ये सर्विस भी ठुकराई थी।। (33)

तजके पटवारी के पद, को बन शिक्षक सनत पढ़ाते थे।
पर ऊँचे पद वालों से वो, नित वहाँ सताये जाते थे।।
फिर से बैनीबाई बोलीं, जा हमें नौकरी नईं करने।
तुम छोड़ सभी को दूर रहो, न एसो पेट हमें भरने।। (34)

प्रिय माँ के ऐसे आग्रह से, शिक्षक का पद भी त्याग दिया।
फिर वस्त्र सिलाई के धन्धे, से अपने मन को जोड़ लिया।।
तब पास में ही बैनीबाई, माँ लघु दुकान चलाती थी।
माँ बेटे के पुरुषारथ से, गृहस्थी सुख से चल जाती थी।। (35)

मधुर कंठ के धनी

घर के समीप में तब कोई, हरदौल चरित्र बजाता था।
तब सात वर्ष के बल्लु भैया, के मन को वो भाता था।।
तब कैसेट के संग मधुर कंठ, से बल्लू भी दुहराते थे।
बस दुहराते दुहराते ही, सब छंद याद हो जाते थे।। (36)

भगवान मुझे घरवाली दो

नों वर्ष के अब हो गये कुंवर, जीवन में सुख दुख आते हैं।
हैं स्वस्थ भाव के साधक जो, अस्वस्थ वहाँ हो जाते हैं।।
तब डी. के. जैन डॉक्टर ने, बल्लू का उचित इलाज किया।
कुछ दिन बस फल ही खाना है, रोटी का पूर्ण परेज दिया।। (37)

बल्लू भैया का मन अब तो, रोटी खाने ललचाता था।
तब मैया द्वारा धीरे से, उनको समझाया जाता था।।
तब पिता सनत सकरार गये, 'घरवाली' पुस्तक लाये थे।
कवि शर्मन लाल 'सरस' द्वारा, जिसमें कुछ पद्य बनाये थे।। (38)



उस समय के थे ये बड़े कवि, जो सबके मन को भाते थे।
रिस्ते में श्री सनत जी के, वो भाई चचेरे आते थे।।
राकेश का मन बहलाने को, वो पुस्तक लेकर आये थे।
हर समय उसी को दुहराते, वो पद बल्लु को भाये थे।। (39)

आवाज तेज मीठे स्वर में, बल्लू अब रोज ही पढ़ते थे।
अपने भविष्य की शब्दों से, धुंधली तस्वीरें गढ़ते थे।।
उस पुस्तक के कुछ पद्यों को, जैसा का तैसा रखता हूँ।
बचपन की मीठी यादों की, बनके बरसात बरसता हूँ।। (40)

मैं कब से नाथ पुकार रहा, मेरे जीवन में लाली दो।
गोरी दो अथवा काली दो, भगवान मुझे घरवाली दो।।
सुनते हैं दयालु आप बड़े, दुनिया के संकट टारे हैं।
क्यों हम पर दया नहीं करते, क्या हम दुनिया से न्यारे है।।

है माँग हमारी छोटी सी, साधारण कोई खास नहीं।
मैं वही मांगने आया हूँ, जो आज हमारे पास नहीं।।
मेरी अंधियारी कुटिया पर, बस तुमको यही सोचना है।
शादी के चक्कर में मेरी, यह छट्ठी पंच योजना है।।

इक रोज सनत जी से हँसकर, माता भगवति ये कहतीं हैं।
बल्लू खों जा पुस्तक दे दई, बस उसकी ही धुन रहती है।।
इक रोज पिता ने चुपके से, वो पुस्तक कहीं छुपा डाली।
बोले बेटा से बड़े होओ, तब लाकर देंगे घरवाली।। (41)

जैन संत

इक क्षुल्लक जी की मिली सूचना, इक दिन नगर में आने की।
दिन रवीवार था हाट लगी, थी सबको पड़ी कमाने की।।
लेने को कोई नहीं गया, बल्लू भर पहुँचे लेने को।
इक भावी संत चला देखो, संतत्व का परिचय देने को।। (42)

होते हैं वस्त्र सहित साधु, बल्लू ने बात न जानी थी।
पर पिछी कमण्डल थे कर में, जिनसंत की शुभ्र निशानी थी।।
बस पिछी कमण्डल को देखा, ये जैन संत ही लगते हैं।
पर जैन संत तो नग्न रहें, ये प्रश्न भी मन में जगते हैं।। (43)

फिर पास में जाकर पूछ लिया, महाराज कहाँ पर जाओगे।
बोले क्षुल्लक जी, जिनमंदिर, क्या राह हमें बतलाओगे।।
क्षुल्लक जी को लेकर संग में, बल्लू जी आगे चलते हैं।
पर प्रश्न कई सारे मन में, भैया बल्लू के पलते हैं।। (44)

हैं जैन संत या अन्य कोई, मन निर्णय ये न कर पाया।
इसलिये प्रथम हिन्दु मंदिर, ले जाने का मन में आया।।
महाराज ये नगर जतारा, का गायत्री मंदिर कहलाता।
बोले क्षुल्लक जी पर बेटा! इससे न हमरा है नाता।। (45)

सोचा बल्लू ने अब शायद, शिव मंदिर इनको जाना हो।
शायद शिव के मंदिर में ही, बाबा ने किया ठिकाना हो।।
आगे आगे राकेश और, पीछे क्षुल्लक जी जाते हैं।
राकेश उन्हें शिव शंकर जी, के मंदिर में ले जाते हैं।। (46)



बल्लू ने अबकी बार उन्हें, शिवजी का मंदिर दिखलाया।
बोले क्षुल्लक जी पर बेटा!, जिनमंदिर अब तक न आया।।
सोचा राकेश ने ये शायद, जिन साधु ही नजराते हैं।
तब ही तो ये जिनमंदिर, जाने के ही भाव जताते हैं।। (47)

अतः उन्हें बल्लू भैया, जिनमंदिर जी ले जाते हैं।
क्षुल्लक जी पाकर जिनमंदिर, मन ही मन अति हर्षाते हैं।।
क्षुल्लक जी को मंदिर छोड़ा, बल्लू अपने घर आते हैं।
अपनी माता को फिर बल्लू, सारी बातें बतलाते हैं।। (48)

माँ ने बेटे को समझाया, हैं वो क्षुल्लक महाराज अरे।
इच्छामी उनको कहते हैं, ये भी अपने महाराज अरे।।
जो सिर्फ लंगोटी रखते हैं, वो ऐलक जी कहलाते हैं।
उनको भी सब जन इच्छामी, कहकर के शीष नवाते हैं।। (49)

जो नग्न दिगम्बर रहते हैं, वो जिनसाधू कहलाते हैं।
सब उन्हें नमोस्तु कहकह कर, श्री चरणों शीष नवाते हैं।।
ये सब जिनसाधू कहलाते, अन्यत्र कभी ना ले जाना।
बल्लू अति हर्षित मन में, जब इन सब बातों को जाना।। (50)

पहला व्यापार

आओ अब तुम्हें सुनाता हूँ, मैं बात प्रथम व्यापार की।
भैया बल्लू की उम्र हुई, थी अब दस वर्षों पार की।।
दिन रविवार का आया था, थी हाट में गलियाँ सजी धजी।
दादी दुकान पर बैठी थी, उनकी दुकान भी सजी-धजी।। (51)

बल्लू को बैठाकर दुकान, पर पिता सनत का समझाना।
ग्राहक कोइ आये तो कहना, सामान बाद में ले जाना।।
इतना कहकर पितु बेटा, से मंदिर पूजन को जाते हैं।
अब देखो कैसे बल्लू जी, अपनी दुकान चलवाते हैं।। (52)

द्विचक्रगामिनी पर सवार, इक युवक वहाँ पर आया था।
भैया पचास पैसे की दो, ये मूंगफली फरमाया था।।
सोचा बल्लू ने आज अगर, पहली ही बौनी बिगड़ गई।
दिन भर का धंधा खोयेगा, ये बात हृदय में समा गई।। (53)

पैसे पचास लेने बल्लू, ने फौरन हाथ बड़ा डाले।
बदले में तीन-चार खोवा, भर मूंगफली के दे डाले।।
वह युवक तुरत ले मूंगफली, मन में हर्षित हो चला गया।
बल्लू भी मन में हर्षित थे, पहला पहला व्यापार हुआ।। (54)

जब लौट के आये पिता सनत, तो पूछा क्या कोई आया था।
बोले बल्लू हाँ आया था, संग एक अठन्नी लाया था।।
वो बोला मूंगफली दे दो, तब मैंने मूंगफली दे दी।
बोनी ना बिगड़े इसीलिये, बदले में अठन्नी भी ले ली।। (55)

कुछ हँसी भरे कुछ डांट भरे, शब्दों में सुत को समझाया।
बल्लू ने आकर के घर पे, सबको ऐसा तब बतलाया।।
बल्लू ने पहले बिजनिस की, जब सबको बात बताई थी।
सुनकर के सबके चेहरों पर, इक हँसी उभर कर आई थी।। (56)



कल पानी पिलाया आज अमृत पिलाते हैं

करुणा के सागर की आओ, इक और लहर से मिलवाऊँ।
जब हुये थे बल्लू ग्यारह के, उस समय की घटना बतलाऊँ।।
जब हाट करन को लोग बहुत, ग्रामीण जतारा आते थे।
तब श्री सनत जी के घर के, बाहर से ही सब जाते थे।। (57)

भीषण तपती गर्मी में जब, कोइ आया जाया करते थे।
तब प्यास बुझाने की अक्सर, आवाज लगाया करते थे।।
पर गर्मी में कुछ दूर कुए से, पानी लाना पड़ता था।
इसलिये पिलाना पानी तब, दादी को मेंहगा पड़ता था।। (58)

प्यासे को दिये बिना पानी, दर से हम कैसे लौटायें।
ये करुण तरंगे बार-बार, बल्लू के उर में लहरायें।।
तब रोज नहाने मिट्टी के, मटकों में पानी आता था।
मिट्टी के मटकों का पानी, खुद ही ठंडा हो जाता था।। (59)

तब प्यासे, लोगों को लखके, मन करुणा से भर जाता है।
भर भर के लोटा लोगों को, बल्लू पानी पिलवाता है।।
ये पानी किसने खर्च किया, पूछा दादी ने आकर के।
बोले बल्लू जल पिला दिया, लोगों को लोटा भर भर के।। (60)

जब मीठी वाणी में बल्लू, ने दादी को सब बतलाया।
तब सुनकर करुणामय वाणी, दादी का मन था हर्षाया।।
तब दादी बैनी बाई के, मुख से यूँ बैन निकलते हैं।
जो मोड़ा भारी उपकारी, लक्षण साधुन से मिलते हैं।। (61)

मैं भी निर्ग्रंथ बनूँगा

टीकमगढ़ के ही पास अहा! श्री सिद्ध क्षेत्र आहार कहा।
प्रभु शांतिनाथ के शुभ दर्शन, पा हो जाता उद्धार अहा।।
उस सिद्ध क्षेत्र की भूमि पर, तब राज रहे विद्यासागर।
संघस्थ किसी साधु की समाधि, का था वो पावन अवसर।। (62)

उस महा महोत्सव में शामिल, होने को श्रावक मचल पड़े।
तब नगर जतारा से बस में, भैया बल्लू भी निकल पड़े।।
तब पिता और माता के संग, श्री सिद्ध क्षेत्र के वंदन का।
था अवसर पहला शांतिनाथ, विद्यासागर के दर्शन का।। (63)

गुरुवर विद्यासागर जी की, छवि नैनों बीच समाई थी।
प्रभु शांतिनाथ की दिव्य छवी, हृदय में अंकित पाई थी।।
लखकर निर्ग्रंथों का दर्शन, शुभ भाव हृदय में आये थे।
मैं भी निर्ग्रंथ बनूँ इक दिन, बल्लू ने भाव सजाये थे।। (64)

शान्ति बाबा की दिव्य कृपा

प्रभु शांतिनाथ की दिव्य कृपा, जिसके ऊपर हो जाती है।
जीवन की सभी विषमतायें, बस पल भर में खो जाती हैं।।
भावों की नींव रखी थी जो, प्रभु शांतिनाथ के चरणों में।
वो आज महल बन नजराती, गुरुवर विमर्श आचरणों में।। (65)

शादी न करने का संकल्प

इक और झलक दिखलाता हूँ, तुम सभी ध्यान से सुनना जी।
जो पथ नायक ने अपनाया, उस पथ को तुम भी चुनना जी।।
ये दृश्य बड़ा है दर्दनाक, जीवन का सच दिखलाता है।
झूठे जग के झूठे रिस्तों, की सच्चाई बतलाता है।। (66)



बल्लू के घर के बाजू में, इक और पड़ौसी रहता था।
सुख चैन की वंशी बजा-बजा, परिवार खुशी से रहता था।।
इक बिटिया थी उनके घर में, उसकी शादी हो जाती है।
पर कर्मोदय के आगे कब, भैया किसकी चल पाती है।। (67)

ससुराल में बिटिया जब पहुँची, नूतन रिस्तों को सजा सजा।
तब स्वार्थ के भूखे लोगों ने, बिटिया रानी को जला दिया।।
जैसे तैसे वो प्राण बचा, वापिस घर पे आ जाती है।
देखो किस्मत कैसे कैसे, कब किसको खेल खिलाती है।। (68)

वह बेटी छोटी विन्नू अब तक, लाड़ प्यार में पली बड़ी।
न कोई सहारा था उसका, अब जब कर्मों की मार पड़ी।।
इक दिन हाथों में बर्फ लिये, बल्लू उस राह गुजरते थे।
अक्सर वो छोटी बिन्नू की, हालत पर सोचा करते थे।। (69)

आते जाते सब लोगों को, लख स्वपन सजोया करती थी।
बीते दिन करती याद अरे, दुर्भाग्य पे रोया करती थी।।
छोटी बिन्नू ने खिड़की से, बल्लू को जब जाते देखा।
बल्लू को दी आवाज और, अस्रु भर नैनों से देखा।। (70)

बल्लू खिड़की के पास गये, बोले दीदी क्या बात कहो।
बोली छोटी बिन्नू-बल्लू, भैया! जा बर्फ हमें दे दो।।
उस बर्फ को फौरन बल्लू ने, उसके हाथों में थमा दिया।
लेकर के छोटी बिन्नू ने, उस मिष्ट बर्फ का स्वाद लिया।। (71)

वो चूस रही थी मिष्ट बर्फ, और बल्लू उसे निहार रहे।
था वर्तमान आँखों आगे, वा उसका भूत विचार रहे।।
है कर्म की लीला ये भारी, में काम भला क्या आऊँगा।
बल्लू ने दृढ़ संकल्प किया, अब शादी नहीं कराऊँगा।। (72)

भावी तीर्थेश

दुखियों को देख अरे जिनका, मन करुणा से भर जाता है।
वो ही धरती पर महापुरुष, कोई तीर्थंकर बन पाता है।।
भावी तीर्थंकर बनने के लक्षण उनमें नजराते थे।
तब ही क्लेशित जीवों को लख, उर से करुणा बरसाते थे।। (73)

उत्तर सुनाने को किया बहाना

विद्या अध्यन की खूब लगन, बचपन से ही बल्लू में थी।
उनकी इस खूबी की चर्चा, स्कूल के हर पहलु में थी।।
अब चलो सुनाता हूँ तुमको, मैं घटना कक्षा सात की।
इक बात बताता हूँ तुमको, अध्यन की शुभ सौगात की।। (74)

तब विषय परायण शिक्षक श्री, गौतम जी विषय पढ़ाते थे।
कुछ होमवर्क करने प्रतिदिन, कुछ विषय बताये जाते थे।।
कैमिस्ट्री के नित नये सूत्र, बच्चों से पूछे जाते थे।
पर देख खजूर की सन्टी को, बच्चों के दिल थर्राते थे।। (75)

जो सूत्र याद ना कर पाते, उनका तो यही बहाना था।
सर प्रश्न करें उससे पहले, लघु शंका उनको जाना था।।
इक दिन बीता दो दिन बीते, अब शिक्षक जी भी समझ गये।
कि प्रश्न के पहले एक साथ बच्चे बाहर किधर गयें।। (76)

बल्लू विद्या का अध्यन कर, कंठस्थ रोज कर आते थे।
हर प्रश्न का उत्तर बतलाने, वो उत्सुक हो हो जाते थे।।
लेकिन बल्लू से प्रश्नों के, उत्तर न पूछे जाते हैं।
क्योंकि शिक्षक विश्वास में थे, कि उसको उत्तर आते हैं।। (77)

भैया राकेश भी समझ गये, उनसे ही पूछा जाता है।
जो भी लघुशंका जाने की, अनुमति को हाथ उठाता है।।
भैया राकेश ने फिर अपनी, छोटी उंगली कुछ ऊपर की।
लघु शंका हमको जाना है, ऐसे भावों की प्रस्तुति दी।। (78)

बोले टीचर पहले तुमको, इक उत्तर बतलाना होगा।
उत्तर बतलाके ही बेटा, लघुशंका को जाना होगा।।
वो तो पहले से उत्सुक थे, हर प्रश्न का उत्तर देने को।
अपनी पुस्तक का हर सवाल, पल में ही हल कर देने को।। (79)

शिक्षक के सारे प्रश्नों का, प्रज्ञा से उत्तर सही दिया।
कर समाधान सब प्रश्नों का, वापिस अपना स्थान लिया।।
टीचर बोले क्यों बैठ गये, तुमको लघुशंका जाना था।
नहीं गुरूजी बस उत्तर, बतलाने एक बहाना था।। (80)

कक्षा की शान

तब ही शिक्षक गण कहते थे, इस कक्षा की तो शान है ये।
ऐसे शिष्यों से ही बनती, जग में गुरू की पहिचान है ये।।
इस प्रज्ञ पुरुष की प्रज्ञा का, बचपन से ही ये आलम था।
विद्या अध्ययन संग विनय भरा, उनमें इक अद्‍भुत संगम था।। (81)

स्काउट गाइड का सिपाही

तब उम्र के इस सोपान बीच, शिक्षण स्काउट ग्रहण किया।
तब यातायात व सड़क नियम, का बल्लू ने अभ्यास किया।।
आते जाते वाहन को तब, उंगली से दिशा दिखाते थे।
ज्यों मोक्षमार्ग के नेता हों, शिवपथ की राह दिखाते थे।। (82)

हर जगह अव्वल

जब पर्वराज के दिन आते, मंदिर में आयोजन होते।
बल्लू भी हर आयोजन में, बढ़चढ़ कर के सामिल होते।।
हो भजन, आरती, काव्य कला या, अन्य कला का अवसर हो।
राकेश प्रथम रहते सब में, चाहे कैसी भी टक्कर हो।। (83)

असाता का उदय

जब कर्म असाता उदय हुआ, तो रोग रतौंधी का आया।
जिसने जो कर्म किये जैसे, उसने वैसा ही फल पाया।।
दिन जन्म अष्टमी का आया, झाँकी से नगर सजाया था।
मित्रों संग झाँकी दर्शन को, बल्लू का मन ललचाया था।। (84)

सामान्य रोशनी में बल्लू को, नहीं नजर कुछ आता था।
जब तेज रोशनी होती थी, तो, धुंधला सा नजराता था।।
तब राह में चलती इक महिला, ना बल्लू को नजराई थी।
जब उससे जाकर टकराये, तो उसने खूब सुनाई थी।। (85)

इक श्वान राह में लेटा था, उस पर था पैर पड़ा जाकर।
बल्लू को थोड़ा काट लिया, कुत्ते ने गुस्से में आकर।।
बल्लू ने सारी बात तुरत, घर पर आकर बतलाई थी।
तब पिता सनत जी ने फौरन जाकर के दवा दिलाई थी।। (86)



जब कर्म असाता खोता है, तो रोग शमन हो जाता है।
श्री पाल से कुष्टी का तन भी, कन्चन जैसा हो जाता है।।
बल्लू भैया के साता का, जब उदय वहाँ पर आया था।
तब रोग रतौंधी ठीक हुआ, सबने आनंद मनाया था।। (87)

कंठ का माधुर्य

घर के आँगन में बैठे थे, बल्लू कुछ सोच विचार रहे।
बैठे बैठे बल्लू भैया, निज भावों को श्रृंगार रहे।।
तब ही इक पूजन की पुस्तक, माँ ने दी बल्लू को लाकर।
ये पूजन कितनी सुन्दर है, तुम हमें सुनाओ तो गाकर।। (88)

बल्लू ने अपने मधुर कंठ, से जब पूजन को दोहराया।
पूजन पढ़कर बल्लू का मन, हर्षातिरेक से भर आया।।
पहले शाला में जब हमको, पंडित राजेन्द्र पढ़ाते थे।
तब हमको पञ्च महागुरुओं, के बारे में बतलाते थे।। (89)

पहला एकासन

जब पर्वराज पर्यूषण का, शुभ पावन अवसर आया था।
दादी ने बल्लू को, एकाशन करने को समझाया था।।
दादी की मानी बात और, दशमी को किया था एकाशन।
जब सांझ ढली तो भूख लगी, क्योंकि पहला था एकाशन।। (90)

जब शाम को भूख लगी ज्यादा, बाजार में चुपके से जाकर।
अपनी कुछ भूख मिटा डाली, बाजार में मूंगफली खाकर।।
सोचा मन में जाने कैसे, सब एकाशन कर जाते हैं।
भगवन् में भी कर सकूँ कभी, बल्लू ये भाव सजाते हैं।। (91)

प्रियंका का जन्म

सन उन्निस सौ सत्तासी में, इक्कीस दिसम्बर जब आया।
माता भगवति की कुक्षि ने, तब एक सुता को था जाया।।
बल्लू को छोटी बहिन मिली, माँ ने इक बेटी पाई थी।
राकेश की झोली में जैसे, हर खुशी सिमट कर आई थी।। (92)

माँ जैसी ममता

बोतल से दूध पिलाते थे, वा खीर खिलाते थे उसको।
झूले में बिठाकरके बल्लु, अब रोज झुलाते थे उसको।।
ये प्रिय बहुत थी बल्लू को, इसलिये प्रियंका नाम दिया।
कमला दीदी ने भी छोटी, बहिना को महिमा नाम दिया।। (93)

अब डेड़ वर्ष की हुई बहिन, सबको लगती वो प्यारी थी।
काजल चोटी आदि करना, बल्लू की जिम्मेदारी थी।।
वो रोती और मचल जाती, तो बल्लु मन बहलाते थे।
उंगली उसकी हाथों में ले, बल्लू मंदिर ले जाते थे।। (94)

योग्यता का सम्मान

जब कक्षा आठ परीक्षा दी, तब उम्र थी तेरह वर्ष अहा।
पहली श्रेणी में पास हुये, न हर्ष का पारावार रहा।।
इस शिष्य की शुभ्र योग्यता का, मिलकर सबने सम्मान किया।
वा तीन वर्ष तक छात्रवृत्ति, देकर उनका बहुमान किया।। (95)

छोटा-सा व्यापार

अब उम्र हुई थी चौदह की, सोचा घर का आधार बनूँ।
राकेश ने सोचा क्यों न मैं, छोटा मोटा व्यापार करूँ।।
घर के बाजू में विद्यालय, थी अतः गली में चहल पहल।
इक लघु दुकान किराने की, खोली बल्लू ने करी पहल।। (96)



इक रात बंद करके दुकान, बल्लू जब सोये जाकर के।
जब उठे सुबह तब पता चला, सब ले गये चोर चुरा करके।।
सामान सभी पूंजी सारी, सब ले गये वहाँ चुरा करके।
फिर नये शिरे से की दुकान, बल्लू ने सभी भुलाकर के।। (97)

मित्रता

आयु के इस सोपान पे अब, कई मित्र साथ हो जाते हैं।
लोकेश, अनूप व अजित, अतुल, पंकज, संजय कहलाते हैं।।
शैलेन्द्र, नवीन, सुनील अहा, मोदी संजीव कहाते थे।
नीरज गुप्ता, संजीव भाई, संग बल्लू खेल रचाते थे।। (98)

सीखा बैडमिंटन

इस समय जतारा नगरी में, 'चिडिया बल्ला' का क्रेज बड़ा।
हर गली और चौराहे पर, सबके ही मन पर भूत चढ़ा।।
बल्लू के मित्र अतुल इक दिन, दीदी संग खेल रचाते हैं।
इस ही अवसर पर प्रिय मित्र, राकेश वहाँ आ जाते हैं।। (99)

तब अतुल नगाइच ने बल्ला, बल्लू के हाथों थमा दिया।
आओ अब हम दोनों खेलें, राकेश से यूँ संवाद किया।।
राकेश वहाँ पर बोले यूँ, ये खेल मुझे नही आता है।
तब कहा मित्र ने क्या कोई, पहले से सीख के आता है? (100)

राकेश मित्र बल्ला पकड़ो, यह खेल तुम्हें आ जायेगा।
इक बार खेलके तो देखो, फिर मजा तुम्हें भी आयेगा।।
दोनों मित्रों ने मिल करके, वह खेल वहाँ आरम्भ किया।
बल्लुकोमजाबहुतआया, प्रतिदिनकाक्रमअबबनालिया।।(101)

पहली पिक्चर

अब उम्र बड़ रही थी ज्यों ज्यों, रंगीनी मन पे छाती थी।
पिक्चर का शौक बड़ा मन में, बस रुचि वहीं पर जाती थी।।
बुआ मनीषा, नीलम के संग, आज सिनेमा जाकर के।
दस साल के थे बल्लू पहली, जब पिक्चर देखी जाकर के।। (102)

धर्म की तलास

था अब्दपीर भारी मेला, तब निकट जतारा के भरता।
हर मुस्लिम भाई आकर के, उस मेले में शिरकत करता।।
तब पिता सनत जी भी दुकान, मेले में वहाँ लगाते थे।
चादर झण्डा वा कुछ मिठाई की, वहाँ दुकान सजाते थे।। (103)

भैया राकेश हुये उत्सुक, पितु संग मेले में जाने को।
अपने भाई वा पिता संग, जाकर के काम बटाने को।।
मेले की रंगत देख देख, राकेश विचार रहे मन में।
यहाँ धन का अर्जन तो होता, पर धर्म न मिलता जीवन में।। (104)

एन.सी.सी.

नवमी कक्षा में बल्लू ने, एन.सी.सी. को अपना करके।
पहले भारी खुश हुये अहा, एन.सी.सी. ड्रेस को पाकर के।।
कुछ दिन परेड में भाग लिया, इक दिन विचार ऐसा आता।
इस ड्रेस को रोज सम्हालूँ मैं, मेरा तो समय व्यर्थ जाता।। (105)

सर एम.के.जैन के पास गये, बोले न समय मिल पाता है।
विद्या अध्ययन का समय मेरा, इसमें ही अब खो जाता है।।
राकेश न लौटाओ ड्रेस, तुम कभी कभी आते रहना
राकेश ने ली वापिस ड्रेस, माना अपने सर का कहना।। (106)



नाट्य मंचन में जीवंत अभिनय

आते जब पर्वराज के दिन, सब नगर सजाया जाता था।
प्रभु की भक्ति का नव उत्सव, हर रोज रचाया जाता था।।
जिनशासन के पावन चरित्र, हर रोज दिखाये जाते थे।
नाटक आदि के द्वारा प्रतिदिन, चित्त लुभाये जाते थे।। (107)

तब 'जैन नवयुवक संघ' संस्था, नगर में प्यारी प्यारी थी।
जिनशासन की प्रभावना में हर किसी पे लगती भारी थी।।
जिनशासन की प्रभावना की, नित नई भावना भाता था।
बस इसी प्रयोजन को लेकर, लघु नाटक संघ रचाता था।। (108)

भैया राकेश भी नाटक में, बढ़ चढ़ कर भाग लिया करते।
अपनी प्रतिभा व अभिनय से, सबका मन मोह लिया करते।।
श्री कपूर चंद जी बंसल व, वीरेन्द्र सुभाष प्रकाश अहा।
इनके निर्देशन में ही तो, नाटक का अभिनय होत रहा।। (109)

कभी राजुल का चरित्र लेकर, वैराग्य दिखाया जाता था।
कभी मैना,सीता,द्रोपदि सा, बहुमान सजाया जाता था।।
राकेश मंच पर मैना, व, राजुल का रोल निभाते थे।
दर्शक लखकर उस अभिनय को, चित्राम से तब रह जाते थे।।(110)

खुशियों की फुलझड़ी

अब आओ सुनाता हूँ तुमको, रिस्तों की कुछ पावन कड़ियाँ।
जिनको सुनकर खिल जाती हैं, खुशियों की मन में फुलझड़ियाँ।।
अपने नाटक का चित्र लिये, राकेश अहा घर जाते हैं।
दादी के हाथों चित्र थमा, कर कुछ ऐसे बतलाते हैं।। (111)

बोले बाई हमने मन में, अब व्याह की बात विचारी है।
इक देख रखी लड़की हमने, जो सबसे सुन्दर प्यारी है।।
बोलो बाई हमरी पसंद, क्या तुमरे मन को भाई है।
अब देर करो न तुम कुछ भी, कर दो इस वर्ष सगाई है।। (112)

है तो बहुतई प्यारी बेटा!, दादी मुँह से यूँ कहन लगीं।
सब हँसे, पास में खड़ी हुई, माता भगवति भी हँसन लगीं।।
मैना सुन्दरि के रूप में ये, बल्लू का फोटो है दादी।
जब बात सुनी ऐसी सबसे, तब खुलके खूब हँसी दादी।। (113)

तीसरा पर्व पूर्ण

कैसे परिवार के बीच रहे, कैसे घर में वो पले बड़े।
घर वालों के मन में कैसे, सपने पलते थे बड़े-बड़े।।
इन सब बातों को लेकर के, तीजा अध्याय समाप्त करूँ।
अगला अध्याय कहूँ उससे, पहले गुरु चरणों शीष धरूँ।। (114)

❑❑❑❑



bhavlingi sant

shramnacharya shri 108 vimarsh sagar ji gurudev

"चतुर्थ पर्व"

प्रतिभा पर्व

संजीवनी भावलिंगी संत (महाकाव्य)

चित्र समूह-2
ब्रह्मचर्य जीवन दर्शन



ब्र. राकेश जी अपने अध्ययनकक्ष में। साथ में पिता श्री सनत कुमार, माता श्रीमती भगवती देवी, भाभी स्नेहलता, बड़े भ्राता राजेश कुमार, लघु भ्राता चक्रेश कुमार, बुआ शीला देवी, छोटी बहिन महिमा। पीछे दिख रहे हैं वे पुरस्कार जो राकेश ने बैडमिंटन और शतरंज में जीते थे।



जब जतारा आए तो उनका पूर्व का
चित्र और पुरस्कार पूछने लगे–हमें क्यों छोड़ गए?



ब्र. राकेश जी ललितपुर के एक
देवालय की छत पर। वर्षायोग : 1995 के समय।



"चतुर्थ पर्व"

"प्रतिभा पर्व"

मंगलाचरण
पंचमेरु की वंदना

*तीर्थंकरों का न्हवन जल, जिनपर सदा बहता रहे।
जिनकी अनादि से सतत, महिमा ये जग कहता रहे।।
उन पाँचो मेरू पर विराजित, हैं असी जिनधाम जो।
मेरी विमलता के स्वरों में, उनको नम्र प्रणाम हो।। (1)*

सुदर्शन मेरु

*मेरू पहला नाम सुदर्शन, इस भूँ पर कहलाता है।
सोलह जिन चैत्यालय जिस पर, सबके ही मन भाता है।।
उन सभी जिनालय में स्थित जिन, बिम्बों को मैं ध्याता हूँ।
भावों में निर्मलता भरकर, उनके चरणों सिर नाता हूँ।। (2)*

विजय मेरु

*दूजा मेरू है विजय नाम, जो विजय का पथ दर्शाता है।
कर्मों पर जय कैसे पायें, ये सम्यक मार्ग दिखाता है।।
इस विजय नाम के मेरू पर, है सोलह जिनमंदिर प्यारे।
जो करे वंदना भावों से, कट जाते भव बंधन सारे।। (3)*

अचल मेरु

*है अचल नाम तीजा मेरु, जो शाश्वत है अविनाशी है।
जो करे वंदना भावों से, मिल जाती शिवसुख राशी है।।
है चार सुवन, इक इक बन में, चउ मंदिर है अतिशयकारी।
जो भी ध्याता है भावों से, मिट जाती है भव बीमारी।। (4)*

मंदर मेरु

*चौथा मेरू मन्दर मेरू, शुभ नाम से जाना जाता है।
देवों का नित आकर समूह, इसकी स्तुतियाँ गाता है।।
कर्मों का क्षय करने हेतु, शुभ भाव लिये मन के अंदर।
मैं ध्याता हूँ अंतरमन से, इस मेरू के सोलह मंदिर।। (5)*

विद्युन्माली मेरु

*सब मेरून में पंचम मेरू, विद्युन्माली शुभ नाम कहा।
जिसने ध्याया इसको उर से, उसने पाया शिवशर्म अहा।।
मैं भी वसुकर्म नशाने को, सोलह जिन मंदिर ध्याता हूँ।
शिव रमणी का अभिलाषी मैं, प्रभु की गुणगीता गाता हूँ।। (6)*

*जब जब भी मुख खोलें गुरुवर, जिनवाणी के नवसूत्र झरें।
धरती पर विचर विचर गुरूवर, भक्तों का नित उद्धार करें।।
उनके जीवन की गाथा का, अग्रिम अध्याय सुनाता हूँ।
उससे पहले मैं गुरुवर के, चरणों में शीष झुकाता हूँ।। (7)*

जीवन एक कोरा कागज

*जीवन के कोरे कागज पर, सब कर्मों के रंग भरते हैं।
जैसे रंग भरते जाते हैं, वैसे ही चित्र उभरते हैं।।
कोई सदाचार के रंग भरकर, जीवन को श्रेष्ठ बनाता है।
कोई दुराचार के रंगों से, जीवन वदरंग बनाता है।। (8)*

अनूठा चित्रकार

*राकेश के चित में चित्रकार, बनने का शौक समाया था।
तब चित्रकारिता करने को, उपक्रम भी खूब रचाया था।।
नगरी के फेमस चित्रकार, पाठक जी तब कहलाते थे।
इक रोज किसी दीवार पे वो, दुर्गा का चित्र सजाते थे।। (9)*



उस चित्र सजाते चित्रकार, की कलम निहारा करते थे।
अपने भीतर के चित्रकार, को वहाँ निखारा करते थे।।
देखत देखत ही सीख गये, राकेश चित्रकारी करना।
हर एक कल्पना में मन की, सुन्दर सुन्दर से रंग भरना।। (10)

जो कला सीख कर आये थे, उसका उपयोग किया घर पर।
माँ सरस्वती का चित्र बनाया, था पहले इक कागज पर।।
घर की दीवार पे फौरन ही, वैसा सु चित्र उभार दिया।
रंग भरने को सुतली लकड़ी, से सुन्दर ब्रस तैयार किया।। (11)

बाजार से सुन्दर रंग लिये, नाना रंगों को भर करके।
कुछ ही पल में तैयार हुआ, वह पावन चित्र सु वनकरके।।
तब घर के सारे लोगों ने, उस चित्र की खूब प्रशंसा की।
राकेश की सुन्दर प्रतिभा की, भूरि भूरि अनुशंसा की।। (12)

दीवार पे घर की एक चित्र, बल्लू ने वहाँ उभारा था।
नेता सुभाष चंद बोस का, इक सुन्दर-सुअक्स उतारा था।।
जो राह गुजरते हर व्यक्ति, की नजरों में आ जाता था।
इतना सुन्दर वो चित्रण था, हर किसी के मन को भाता था।। (13)

तब चित्रकार पाठक इक दिन, उस राह से आन गुजरते हैं।
जाते जाते उस चित्रण का, अवलोकन सहज वो करते हैं।।
चित्राकर्षण ने रोक लिया, थम गये कदम अंदर आये।
पूछा इतने सुन्दर सुन्दर, ये चित्र यहाँ किसने जाये।। (14)

राकेश खड़े थे बाजू में, हमने ये चित्र बनाये हैं।
बेटा कहो ये चित्र सजाना, किसने तुम्हें सिखाये हैं।।
बोले राकेश ये चित्रकला के, आपसे ही गुर पाये हैं।
आश्चर्य चकित पाठक बोले, पर हमने कहाँ सिखाये हैं।। (15)

बोले राकेश तुम्हें हमने, बस चित्र बनाते देखा था।
देखत-देखत ही बस हमने, इस कला को तुमसे सीखा था।।
सुनकर अत्यंत प्रशन्न हृदय, पाठक जी का हो जाता है।
तुम श्रेष्ठ बनोंगे चित्रकार, ऐसा आगाज बताता है।। (16)

फिर चित्रों में रंग भरने की, बातें पाठक जी बतलाते।
राकेश बड़े ही ध्यान से सुन, सब आत्मसात करते जाते।।
राकेश से अभिवादन पाकर, पाठक जी घर को जाते हैं।
राकेश भी नूतन चित्रो की, संरचना में लग जाते हैं।। (17)

शतरंज का खेल

राकेश से बातों-बातों में, लोकेश खरे यूँ कहते हैं।
तुम प्यारे मित्र हमारे हो, संग ही में हम तुम रहते हैं।।
तुम भी शतरंज सीख लो तो, हम तुम मिलकर संग खेलेंगे।
किसमें कितनी क्षमतायें हैं, मिलकरके खूब टटोलेंगे।। (18)

शतरंज की सब चालें, मोहरे, राकेश ने सब कुछ सीख लिया।
लोकेश संग कभी अतुल संग, शतरंजी फिर आनंद लिया।।
शतरंजी भूत सवार हुआ, उसका ही दिखता जोर रहा।
भैया राकेश का अध्यन भी, अब होन लगा कमजोर जरा।। (19)



पद विहार का संकल्प

शतरंज की बात हुई ये तो, अब आगे मैं ले जाता हूँ।
स्कूटर पहली बार चलाने, की मैं बात बताता हूँ।।
है उम्र अभी बस पन्द्रह की, ना जाने क्या क्या जान गये।
राकेश बैठ स्कूटर पर, संग अजित के अब बंधान गये।। (20)

राकेश से बोले अजित वहाँ, अब तुम थोड़ा आगे आओ।
ये हाथ एक्सीलेटर पर, व पैर ब्रेक पर तुम लाओ।।
राकेश सीट पर जब बैठे, एक्सीलेटर को दवा दिया।
जब गाड़ी तेज बड़ी आगे तो, फौरन ब्रेक भी लगा दिया।। (21)

जैसे ही ब्रेक लगा फौरन, स्कूटर तब रुक जाता है।
न तब राकेश सम्हाल सके, तिरछा होकर गिर जाता है।।
तब से मन में संकल्प किया, ना गाड़ी कोई चलाऊँगा।
मानों जैसे संकल्प लिया, ताउम्र ही पैदल जाऊँगा।। (22)

बचपन से थे हुशियार बड़े, पर खेलों में मन लगा लिया।
इसलिये तो कक्षा दसवीं को, सेकेण्ड डिवीजन पास किया।।
मन में था खेद बहुत भारी, नम्बर अबके कम आये हैं।
अब मन में अध्ययन करने का, बल्लू संकल्प जगाये हैं।। (23)

विषय चयन

शिक्षा के दस सोपान पार, अब ग्यारह की दहलीज खड़े।
था विषय चयन का अवसर अब, थे मन में बहुत विचार बड़े।।
विज्ञानी को विज्ञान रुचा, विज्ञान विषय को चुन डाला।
अब बायो लूँ या मैंथ चुनूँ, था निर्णय बहुत समझवाला।। (24)

राकेश और लोकेश बीच, थी एक मित्र संज्ञा प्यारी।
दोनों की जोड़ी कृष्ण सुदामा, सी लगती थी मनहारी।।
दोनों ने चयन किया बायो, दोनों पहुँचे फारम भरकर।
थे एस.एच. चौहान गुरु, जब देखा फारम को पढ़कर।। (25)

तब एक बार दो बार नहीं, चउबार फार्म लौटाया था।
राकेश का बायो को चुनना, कुछ उनकी समझ न आया था।।
अपनी प्रतिभा को पहिचानो, बेटा! न बायो चयन करो।
है गणित ही तेरे योग्य विषय, प्रतिभा का न यूँ दमन करो।। (26)

इक ओर सलाह गुरु की थी, इक ओर मित्रता थी भारी।
दोनों में से इक को चुनने, की थी राकेश की अब बारी।।
गर विषय गणित का चयन किया, तो मित्र दूर हो जायेगा।
गर बायो का मैं चयन करूँ, तो सर जी को ना भायेगा।। (27)

चिन्तन मन्थन तब खूब किया, थी मन में अब दुविधा भारी।
पर निर्णय में गुरु की सलाह, पर पड़ी मित्रता ही भारी।।
हैं गणित विषय के शिक्षक कम, नगरी में, यही बहाना था।
पर मित्र संग अध्ययन करना, बल्लू ने मन में ठाना था।। (28)

इस तरह चयन कर बायो का, जीवन का नव अध्याय लिखा।
इक श्रेष्ठ डॉक्टर बनने का, सपना ज्यों नैनों बीच दिखा।।
पर किसे पता था ये इक दिन, इक धर्म वेद्य बन जायेगा।
जो जनम मरण के रोगी हैं, ये उनके रोग मिटायेगा।। (29)



बने चैम्पीयन

कहते हैं गुरु गुड़ रह जाते, चेला शक्कर हो जाता है।
इस नायक के जीवन में भी, कुछ ऐसा ही नजराता है।।
चिड़िया बल्ला का खेल बहुत, राकेश के मन को भाया था।
प्रिय मित्र वो अतुल नगाइच थे, जिनने ये खेल सिखाया था।। 30)

दूजा था सबसे प्रिय खेल, राकेश के मन जो भाया था।
लोकेश खरे ने यह शतरंजी, खेल उन्हें सिखलाया था।।
संयोग बना विद्यालय में, इन खेलों का आयोजन था।
प्रतिभाशाली प्रतिभाओं का, ये सुंदर-सा संयोजन था।। (31)

लोकेश अतुल के कहने से, राकेश ने भागीदारी की।
लोकेश खरे वा भाई अतुल, की भी जमके तैयारी थी।।
चिड़िया बल्ला में भाई अतुल, शतरंज में माहिर मित्र खरे।
जब मैच फाइनल आया था, राकेश के सन्मुख खेल रहे।। (32)

राकेश ने अपनी प्रतिभा का, सबसे लोहा मनवाया था।
जिनसे सीखा था खेल उन्हीं, दोनों को वहाँ हराया था।।
यह दृश्य देखकर आँखों में, सबके वो दृश्य उभर आया।
जब एकलव्य की प्रतिभा के, सन्मुख गुरु द्रोण था शरमाया।। (33)

उनकी प्रतिभा उनको हरदम, हर क्षेत्र में आगे रखती थी।
कभी गीत काव्य वा चित्रकला, कभी अध्ययन बीच उभरती थी।।
हर एक कला में बल्लू की, क्षमता कुछ अजब निराली थी।
कुदरत ने आकर के जैसे, उनकी हर कला सम्हाली थी।। (34)

द्वय खेल चैम्पियन का खिताब, राकेश ने प्रतिभा से पाया।
हर ओर इसी की चर्चा थी, सबने यश गौरव को गाया।।
हर क्षेत्र में आगे रहते थे, फिर भी मन में कोई मान न था।
था विनयशील प्यारा जीवन, अभिमान को कोई स्थान न था।। (35)

संतों का समागम

जब हुये थे गुरुवर सत्रह के, उस समय की गाथा गाता हूँ।
उनके जीवन की कुछ मीठी, घटनायें तुम्हें बताता हूँ।।
मुनिराज नगर में आये थे, श्रुतसागर नाम बड़ा प्यारा।
बल्लू चर्या में लग्न रहे, जीवन में अवसर था न्यारा।। (36)

ऐलक जी पूज्य दयासागर, फिर नगर जतारा में आये।
जिनसाधु का दर्शन पाकर, थे सबके ही मन हर्षाये।।
राकेश तो अपने अध्यन में, बस सतत लीन से रहते थे।
अक्सर वो धर्म कर्म सबसे, बस उदासीन ही रहते थे।। (37)

जब कभी कभी मंदिर जाते, तो दर्शन कर आ जाते थे।
ऐलक जी के छहढाला पर, उपदेश न मन को भाते थे।।
इक दिन माँ भगवति यूँ बोली, बेटा राकेश को समझाकर।
है पहली बार लगा चौका, महाराज को लाना पडगाकर।। (38)

पहली वार लगा चौका

था पहला अवसर चौके का, सब ही उत्साहित थे मन में।
बहु पुण्य से मिल पाते अवसर, श्रावक को ऐसे जीवन में।।
तब पिता सनत संग दो बेटे, धारण कर वस्त्र धवल प्यारे।
मंगल द्रव्यें ले हाथों में, पडगाहन करते थे सारे।। (39)



पर चार पाँच दिन बीत गये, ना ऐलक जी का योग बना।
फिर पुण्ययोग से अगले दिन, आहार का शुभ संयोग बना।।
जिस कमरे में बल्लू पढ़ते, उसमें चौका लगवाया था।
क्रम से सबने आहार दिये, घर में ज्यों उत्सव छाया था।। (40)

बल्लू ने भी इक चम्मच भर, हलुआ ऐलक जी को देकर।
होवे निर्विघ्न आहार अतः, भा रहे भाव हर्षित होकर।।
बस तभी अचानक जलाहार, में अंतराय हो जाता है।
साधु का गर हो अंतराय, तो श्रावक भी दुख पाता है।। (41)

तब हुआ बहुत दुख सब घर को, आँखों से आँसु आते हैं।
शुद्धि करके अपने तन की, ऐलक जी मंदिर जाते हैं।।
भैया राकेश कमण्डल ले, कर मंदिर तक पहुँचाते हैं।
दर्शन वंदन करके उनका, वापिस घर पे आ जाते हैं।। (42)

चौके का बचा हुआ भोजन, माता ने थाल परोस दिया।
अत्यंत सुखद अनुभूति संग, राकेश ने भोजन आज किया।।
आलू की सब्जी बिन जिनको, न रुचता था कोई भोजन।
पर आज नमक बिन लौकी की, सब्जी में भी था हर्षित मन।। (43)

राकेश ने पहली बार आज, नीरस ये भोजन खाया था।
भोजन में टेस्ट नहीं लेकिन, अनुभूति में सुख पाया था।।
श्रद्धा से भाव जगे मन में, हैं धन्य ये संतो का जीवन।
जड रस की चाह नही मन में, चेतन रस से संतुष्ठित मन।। (44)

जिनालय का अतिशय

अतिशय कारी जिनमंदिर है, ये नगर जतारा का भारी।
अक्सर देवों के अतिशय की, होती रहतीं चर्चा भारी।।
प्राचीन जिनालय के भीतर, इक भौंयरा है अतिशय कारी।
जिसमें इक प्रतिमा के तन से, पानी झिरता रहता भारी।। (45)

मिलकर सबने मन में सोचा, बीना बारहा हम जायेंगे।
जाकर के विद्यासागर जी, गुरुवर को बात बतायेंगे।।
बस गई और जाकर पूछा, पर उनने कुछ भी नहीं कहा।
सब जन निराश हो जाते हैं, न कोई मिला उपाय यहाँ।। (46)

पुण्य का प्रकोप

सब लोग अन्य महाराजों के, दर्शन करने जब जाते हैं।
तब बीच में ऐलक, निर्भयसागर जी का दर्शन पाते हैं।।
थी पैर में पट्टी बंधी हुई, राकेश ने उनसे पूछ लिया।
महाराज श्री ये हुआ है क्या, ये किसने तुमरा हाल किया।। (47)

ना पुण्य भी ज्यादा अच्छा है, ऐलक जी यौं बतलाते हैं।
सम्मान भी मिलता है इससे, कभी हाथ पांव मिट जाते हैं।।
इक दिन विहार कर रए गुरुवर, थी राह में भीड़ बहुत भारी।
इस पैर के ऊपर से भैया, तब चढ़ गई भीड़ वहाँ सारी।। (48)

राकेश बने मंत्री

अब जैन नवयुवक संघ संस्था, का चुनाव था किया गया।
जिसमें अध्यक्ष अनिल जी व, मंत्री राकेश को लिया गया।।
है दूर दूर तक संघ जतारा, का ये जाना जाता है।
सुन्दर सुन्दर प्रस्तुतियों में, ये अव्वल माना जाता है।। (49)



कायोत्सर्ग का पूर्वाभ्यास

जब पूज्य दयासागर जी का, था नगर दमोह में आयोजन।
तब जैन नवयुवक संघ को, ऐलक जी का था सुआमंत्रण।।
पहुँचा था संघ दमोह और, उस आयोजन में भाग लिया।
राकेश ने बैण्ड बजाया व, मैना का सुन्दर रोल दिया।। (50)

नाटक का मंचन सफल हुआ, व सफल बैण्ड का गान हुआ।
सबने खूबड़ तारीफ करी, सबका खूबड़ सम्मान हुआ।।
राकेश , अरविन्द, स्वतंत्र सिंघई, अब कुण्डलपुर को जाते हैं।
तब वस्त्र दूर कर प्रभु जैसा, वो ध्यान का चित्र खिचाते हैं।। (51)

दादागुरु

अब विमल गुरू के दर्शन की, सौगात सुनाता हूँ तुमको।
श्री विमल सिन्धु के प्रथम दर्श, की बात बताता हूँ तुमको।।
श्री सिद्धक्षेत्र सोनागिर में, श्री चन्द्रप्रभु का था आँगन।
श्री विमल गुरू का छियत्तर वाँ, था जन्म जयन्ति आयोजन।। (52)

आयोजन समिति के द्वारा, इक पत्र जतारा आया था।
नव युवक संघ को आयोजन, में सादर वहाँ बुलाया था।।
राकेश का पहला अवसर था, श्री सोनागिर के वंदन का।
संग त्याग तपस्या की मूरत, श्री विमल सिन्धु के दर्शन का।। (53)

बुन्देलखण्ड के संस्कार, बल्लू के मन को भाते थे।
तब ही तो घुमड़ घुमड़ करके, यह भाव हृदय में आते थे।।
ये बीस पंथ के हैं साधु, हम तेरह पंथी कहलाते।
जबकि राकेश को तेरह-बीस, के भेद भी ढंग से न आते।। (54)

तब उन्हीं पुरातन संस्कार, का मान लिये थे वो मन में।
श्री विमल सिन्धु से दूर रहे, ना पहुँचे गुरु के चरणन में।।
संसार की अहो, विचित्र दशा न रिस्ते स्थिरता पाते।
जो अप्रिय लगते कभी हमें, वो ही प्रिय इक दिन हो जाते।। (55)

जिन विमल गुरू से दूर रहे, राकेश प्रथम ही दर्शन में।
हैं वो अब दादागुरू अहा ! श्रद्धा है उनके चरणन में।।
जिन विमल गुरू का नाम जपो, सब काम स्वयं बन जाते हैं।
झोली भर भर के ले जाते, जो भी इस दर पे आते हैं।। (56)

कक्षा 12 में जिला टॉप

कक्षा बारह में पढ़ते थे, जब समय परीक्षा का आया।
कैमिस्ट्री का पेपर देने, राकेश याद सब कर आया।।
हर प्रश्नपत्र हल करने में, राकेश व्यस्त हो जाते हैं।
हल थे न जिनपे प्रश्नों के, वो नकल राह अपनाते हैं।। (57)

उस समय परीक्षक राम रतन, दीक्षित कक्षा में रहते हैं।
सर विश्कर्मा जी राम रतन, दीक्षित से कुछ यूँ कहते हैं।।
सब बच्चे तांक झांक करते, पर इसकी लगन निराली है।
इसकी अद्‌भुत प्रतिभा हमको, बस अचरज करनेवाली है।। (58)

विश्कर्मा जी से कहन लगे, श्री राम रतन जी दीक्षित सर।
इस बालक की सब बच्चों में, बुद्धि है सबसे तेज प्रखर।।
ये बच्चे तांक झांक करते, पर कुछ भी काम न आयेगा।
इस कक्षा में ये बालक ही, अव्वल श्रेणी को पायेगा।। (59)

सर ने जैसा बोला वैसा, राकेश ने करके दिखा दिया।
इस समय बारवीं में भैया, राकेश ने डिस्टिक टॉप किया।।
तब प्रथम श्रेणी से पास हुये, गुरु मात पिता को मान दिया।
मेधावि छात्र के रूप में तब, परिषद द्वारा सम्मान लिया।। (60)

भगवान चन्द्रप्रभु के प्रति गहन आस्था

श्री चन्दाप्रभु के सुमिरन का, शुभ फल तुमको दिखलाता हूँ।
राकेश की कक्षा बारह की, दूजी घटना बतलाता हूँ।।
कुछ गलतफेमियों से कैसी, दुर्घटनायें घट जाती हैं।
रिस्ते भी परम मित्रता के, वो तार तार कर जाती हैं।। (61)

इण्टर की इसी परीक्षा में, मित्रों के संग राकेश अहा।
उनके बाजू में बैठा था, इक मित्र सहादत नाम रहा।।
राकेश के बाजू में खिड़की, पर भाई सहादत का आया।
गाइड के कुछ पन्ने देने, वो भाई सहादत को लाया।। (62)

राकेश के हाथों पेज थमा, कुछ वहाँ इशारे से बोला।
राकेश ने हाथों में लेकर, हर एक पृष्ठ को था खोला।।
न प्रश्न मिला एकई उनमें, सब पृष्ठ वहाँ पर देख लिये।
न मिले प्रश्न तो पृष्ठ सभी, राकेश ने बाहर फेंक दिये।। (63)

यह देख सहादत के मन में, कई शंकाओं ने जन्म लिये।
राकेश ने उत्तर देख सभी, वो बाहर कागज फेंक दिये।।
मेरा भाई ये कागज ले, कर मुझको देने आया था।
इस तरह कई शंकाओं ने, उसके मन में घर पाया था।। (64)

राकेश ने पहली श्रेणी से, जब नगर जतारा टॉप किया।
तब फेल सहादत के मन में, कुछ वैर भाव ने जन्म लिया।।
इक टी.आई. का लड़का था, व के.के. शर्मा नाम कहा।
राकेश संग वो पढ़ता था, राकेश का जिगरी मित्र रहा।। (65)

के.के. शर्मा के जन्म दिवस, का प्यारा अवसर आया था।
उसने मित्रों संग घर अपने, राकेश को आज बुलाया था।।
राकेश साथ मित्रों के तब, खुश हो उसके घर जाता है।
था वैर सहादत के मन में, रस्ते में वो आ जाता है।। (66)

राकेश निकट आया जैसे, राकेश को सबने घेर लिया।
राकेश ने ये सब देखा तो, इक पल में ही सब जान लिया।।
राकेश के मन में चन्द्राप्रभु, के प्रति श्रद्धान विशेष रहा।
प्रभु चन्दा के आलम्बन बिन, ना दिखता कोई शेष वहाँ।। (67)

मन ही मन में चन्दाप्रभु का, सुमिरन श्रद्धा से करते हैं।
जो श्रद्धा से करते सुमिरन, प्रभु उनके संकट हरते हैं।।
प्रभु की श्रद्धा प्रभु की भक्ति, तब रंग वहाँ पर लाती है।
राकेश के कानों में तब ही, आवाज वहाँ इक आती है।। (68)

देखा सन्मुख के.के.शर्मा, गाड़ी पर हो सवार आया।
राकेश को अपने पास बुला, फौरन गाड़ी पर बैठाया।।
राकेश को अपने साथ बिठा, अपने घर वो ले जाता है।
इस तरह प्रभु के सुमिरन से तब , वो संकट टल जाता है।। (69)



गुजिया की पार्टी

राकेश के कक्षा बारह तक, सोपान पार हो जाते हैं।
आगे का अध्ययन करने को, टीकमगढ़ नगरी जाते हैं।।
रहने को इक कमरा किराये, पर टीकमगढ़ में लिया गया।
वी.एस.सी. वायो का अध्यन, तब शुरू वहाँ पर किया गया।। (70)

राकेश संग लोकेश खरे, विद्या अध्ययन को जाते हैं।
राकेश के नूतन मित्र वहाँ, कमलेश, पवन बन जाते हैं।।
इक शाम सभी मित्रों के मन, गुजिया खाने की लागी थी।
गुजिया से झींगुर निकल पड़ा, सबने मिल गुजिया त्यागी थी।। (71)

राकेश रोज दर्शन करने, मंदिर बजार के जाते थे।
अपने मीठे मीठे स्वर से, नित भक्तामर वो गाते थे।।
मुनिवर विरागसागर जी का, तब संघ वहाँ पर आया था।
राकेश थे अध्यन व्यस्त बड़े, दर्शन भी न कर पाया था।। (72)

मेंहदी का शौक

राकेश को बेहद शौक रहा, कर में मेंहदी रचवाने का।
मेंहदी के रंगो से नित ही, अपने दोइ हाथ सजाने का।।
अपने लम्बे सुन्दर नख वो, इस तरह सजाया करते थे।
मेंहदी के रंग के नेल पेन्ट, से उन्हें रचाया करते थे।। (73)

शुभ नाम कर्म का उदय रहा, गोरी सुन्दर काया पाई।
थे पतले पतले हाथ और, अद्भुत सी कोमलता पाई।।
इक बार की बात बताऊँ मैं, उनकी इस कोमल काया की।
जो सबको भ्रम पैदा कर दे ऐसी इक सुन्दर माया की।। (74)

लोकेश मित्र के कमरे पर, राकेश एक दिन जाते हैं।
दरवाजे पर ही खड़े-खड़े, लोकेश संग बतियाते हैं।।
था मेंहदी बाला कर वाहर, व शेष बदन सब अंदर था।
वह हाथ देख यूँ लगता ज्यौं, लड़की का कर कोइ सुंदर था।। (75)

तब ही मकान के मालिक भी, दादा कपूर जी आते हैं।
गमले में पानी देने को, संग अपने पानी लाते हैं।।
वह मेंहदी वाला हाथ उन्हैं, कमरे से बाहर नजराया।
लड़की है कोई खड़ी हुई, ऐसा विचार मन में आया।। (76)

दादा कपूर का कहना था, अनुशासन में रहना होगा।
कमरे पर ना लड़की आये, ये ध्यान तुम्हें रखना होगा।।
वह शीघ्र वहाँ पर जब आये, बल्लू को वहाँ खड़ा पाया।
आश्चर्य चकित हो चले गये, जाकर चाची को बतलाया।। (77)

अपनी पत्नि से बोले वो, सारी ही घटना बतलाकर।
हमने भारी अचरज देखा, लोकेश के कमरे पे जाकर।।
बल्लू के मेंहदी लगे हाथ, गोरे गोरे शुभ सजते हैं।
सच कहुँ तो उसके हाथ हमें, लड़किन के जैसे लगते हैं।। (78)

सीखा रोटी बनाना

जब रहे अकेले टीकमगढ़, ना भोज बनाना आता था।
अधकच्चा रहता था भोजन, वा कभी कभी जल जाता था।।
पर मेहनत से बनता भोजन, तो स्वाद बहुत ही आता था।
कच्चा पक्का जैसा बनता, बल्लू के मन को भाता था।। (79)



छुट्टी में जब घर पे आये, मां ने पूछा सब बता दिया।
बेटे की बातें सुनकर के, माता को भारी दुःख हुआ।।
कुछ दिनों बाद सारा भोजन, स्वादिष्ठ बनाना सीख गये।
टीकमगढ़ से छुट्टी लेकर, जब पुनः जतारा नगर गये।। (80)

जब आये वो अपने घर पर, तो एक्सपर्ट बनकर आये।
हाथों से अपने बनी हुईं, सुन्दर-सुन्दर रोटी लाये।।
माता ने जब रोटी देखी, तब खूब प्रशन्न हुई मन में।
हालातों के आगे सब कुछ, करना आ जाता जीवन में।। (81)

भावी गुरुवर का आचार्य पदारोहण

जिस वसुधा का पावन कण कण, मंगल पवित्र कहलाता है।
सदियों से जो उपसर्गों की, नित गौरव गाथा गाता है।।
गुरुदत्त महामुनिवर ने इस, वसुधा से शिवपुर पाया था।
तब ही से पावन सिद्ध क्षेत्र, यह द्रोणागिर कहलाया था।। (82)

इस ही पावन धरती पर जब, मुनिवर विरागसागर आये।
श्री कल्पद्रुम मण्डल विधान, का आयोजन था रचवाये।।
अध्यक्ष घुवारा जी तब थे, समिति द्वारा आयोजन था।
मण्डल नवयुवक जतारा को, भी दिया गया आमंत्रण था।। (83)

उन्निस सौ वानवे का सन था, दिन आठ नवम्बर का प्यारा।
श्री विरागसागर मुनिवर ने, तब सूरी पद को स्वीकारा।।
बल्लू भी उस आयोजन में, सामिल हो भाग्य सराते थे।
अपने भावी गुरुवर के सुन्दर, गीत खुशी से गाते थे।। (84)

बल्लू ने दिनभर बैण्ड बजा, कर गीत झूमकर गाये थे।
भावी गुरुवर के सूरीपद, में सामिल होने आये थे।।
आयोजन समिति के द्वारा, सम्मान संघ का किया गया।
सम्मान पत्र राकेश सहित, सम्पूर्ण संघ को दिया गया।। (85)

भविष्य के आचार्य, बने आचार्य

बी.एस.सी. अध्यन पूर्ण हुआ, थी बीस बरस की उम्र अभी।
बल्लू अब आगे पढ़ें और, घर परिजन चाहत रहे सभी।।
लेकिन बल्लू भैया का मन, अब कुछ दिन घर रहने का था।
विद्या अध्यन की कड़ियों में, इक साल गेफ देने का था।। (86)

राकेश आ गये जब घर पे, तो सोचा अब क्या काम करें।
मन में आया बी.एड. करें, व पत्राचार से फार्म भरें।।
पर अनुभव सर्टिफिकेट वहाँ, आवश्यक उन्हें बताया था।
इसलिये भाई राकेश ने, ये उपक्रम वहाँ रचाया था।। (87)

तब सरस्वती शिशु मंदिर में, शिक्षक बनने का मन आया।
राकेश ने जाकर विद्यालय, आचार्य का पद था अपनाया।।
राकेश जो अब तक पेन्ट-शर्ट, में ही नजराया करते थे।
वो धोती-कुर्ता पहिन पढ़ाने, को अब जाया करते थे।। (88)

बन गये सबके प्रिय

अपनी व्यवहार सरलता से, वो सबके प्रिय कहाते थे।
रहते थे सब उनसे प्रशन्न, वो सबके मन को भाते थे।।
रग रग में थी जिम्मेदारी, पग पग पर था विश्वास खरा।
राकेश को पा विद्यालय के, परिवेष में था उत्साह भरा।। (89)

चौरसिया श्री रमेश जी थे, उस समय प्रधानाचार्य वहाँ।
कहते राकेश सा विश्वासी, न मिला कोई आचार्य यहाँ।।
चौरसिया जी विद्यालय से, कारणवस बाहर जाते थे।
राकेश जी व मिश्रा जी को, जिम्मेदारी दे जाते थे।। (90)

बच्चों से लगाव

राकेश सु-मन में बच्चों के, प्रति था अपार स्नेह अहा।
बस इसीलिये सारे बच्चे, रखते थे उनसे नेह बड़ा।।
इक तीन साल का नन्ना मुन्ना, प्यारा प्यारा बच्चा था।
स्कूल में आना शुरु किया, पर अभी उम्र में कच्चा था।। (91)

भोजन की बेला में सारे, स्कूली बच्चे आकर के।
सब बैठा करते थे, लम्बी सी एक कतार बनाकर के।।
हर बच्चा भोजन के पहले, शुभ मंत्र वहाँ पर कहता था।
लेकिन वो छोटा बच्चा बस, गुमसुम ही बैठा रहता था।। (92)

आचार्यश्री राकेश वहाँ, बालक के पास सु-जाते थे।
तब प्रेम से अपने हाथों से, भोजन उसको करवाते थे।।
भोजन के संग वो लाड़ प्यार, से उसका मन बहलाते थे।
आचार्य श्री राकेश तभी, बालक के मन को भाते थे।। (93)

इक दिन माथे पे तिलक एक, राकेश लगाकर जाते हैं।
सब शिक्षक अपनी कक्षा में, जा जाकर विषय पढ़ाते हैं।।
विमला दीदी की कक्षा में, वह नन्हा बालक रोता था।
दीदी के खूब मनाने पर भी, बालक चुप न होता था।। (94)

चौरसिया जी ने खुद आकर, बालक का मन बहलाया था।
उनने भी कोशिश खूब करी, बालक ना चुप हो पाया था।।
जब कोशिश खूब करी लेकिन उसको ना चुप होते जाना।
तब पूछ लिया उस बालक से, बेटा क्या तुमको घर जाना।। (95)

बालक ने रोते रोते कुछ, शब्दों का था सञ्चार किया।
अपने अंदर के भावों का, उसने कुछ यूँ इजहार किया।।
जो टीका लाल लगाये हैं, उनकी कक्षा में जाना है।
बस चौरसिया जी समझ गये, राकेश निकट ले जाना है।। (96)

बालक को ले चौरसिया जी, भैया राकेश के पास गये।
वह दृश्य देखकर चौरसिया, जी भी इक पल को चौंक गये।।
देखा बालक दौड़ा दौड़ा, भैया राकेश के पास गया।
चेहरे पर थी मुस्कान खिली, रोना धोना सब भूल गया।। (97)

चौरसिया जी यूँ कहन लगे, भैया राकेश से बतियाकर।
दीदी भी चुप न करा सकीं, चुप हुआ आपके दर आकर।।
बोले राकेश जी बच्चों के, प्रति नेह आपका प्यारा है।
तुमरे अंदर माँ के जैसी, ममता का अजब नजारा है।। (98)

वो बड़ी लगन से अब, विद्यालय में भी रोज पढ़ाते थे।
बस इसीलिये तो कुछ बच्चे, घर पर भी पढ़ने आते थे।।
छोटे भाई चक्रेश भी अब, कुछ घर पर बैच पढ़ाते थे।
घर के संचालन में दोनों, मिलकर के हाथ बटाते थे।। (99)

चतुर्थ पर्व पूर्ण

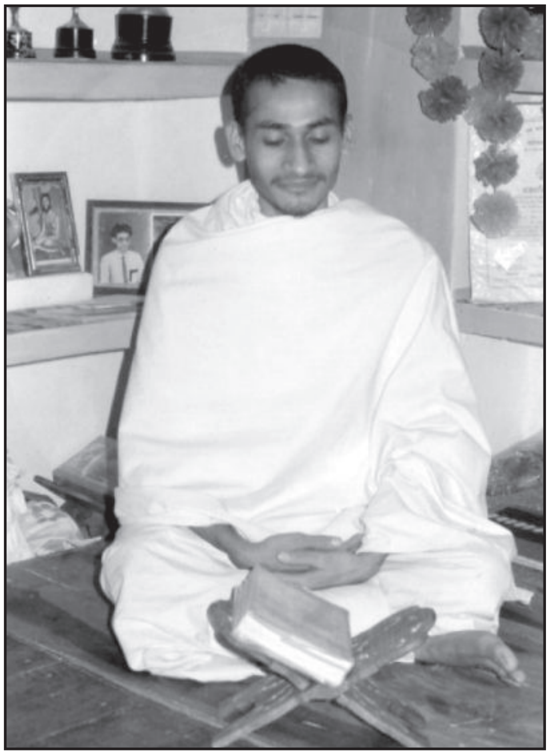
गुरुवर की मधुर कहानी का, पूरा चौथा सौपान किया।
अपनी शक्ति अनुसार यहाँ, हमने गुरु का गुणगान किया।।
इस कथा में जितने शब्द चुने, वे शब्द अमर हो जायेंगे।
सदियों तक गुरु गौरव गाथा, भव्यों के कंठ सुनायेंगे।। (100)

❑❑❑❑

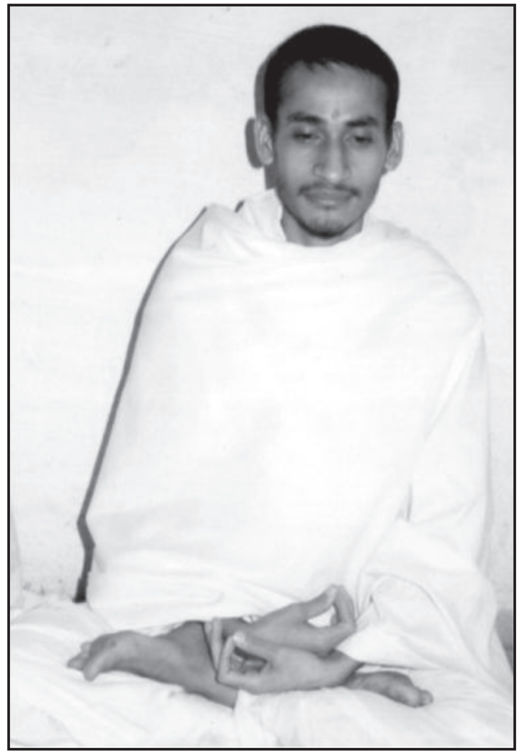


चित्र समूह-2

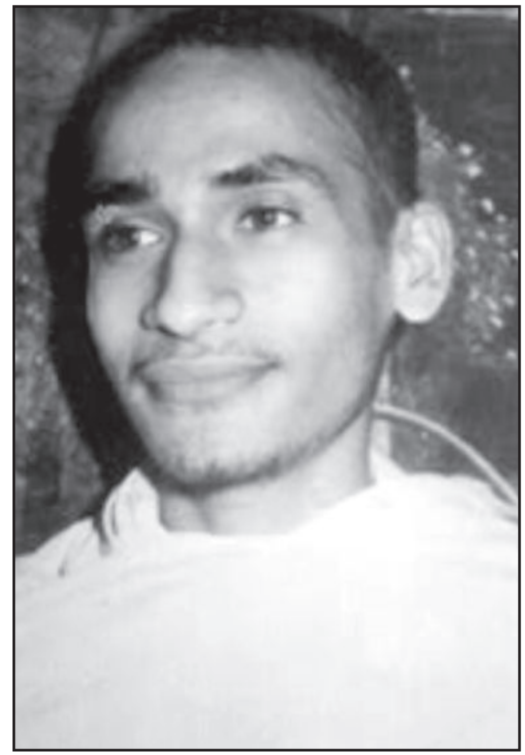
ब्रह्मचर्य जीवन दर्शन



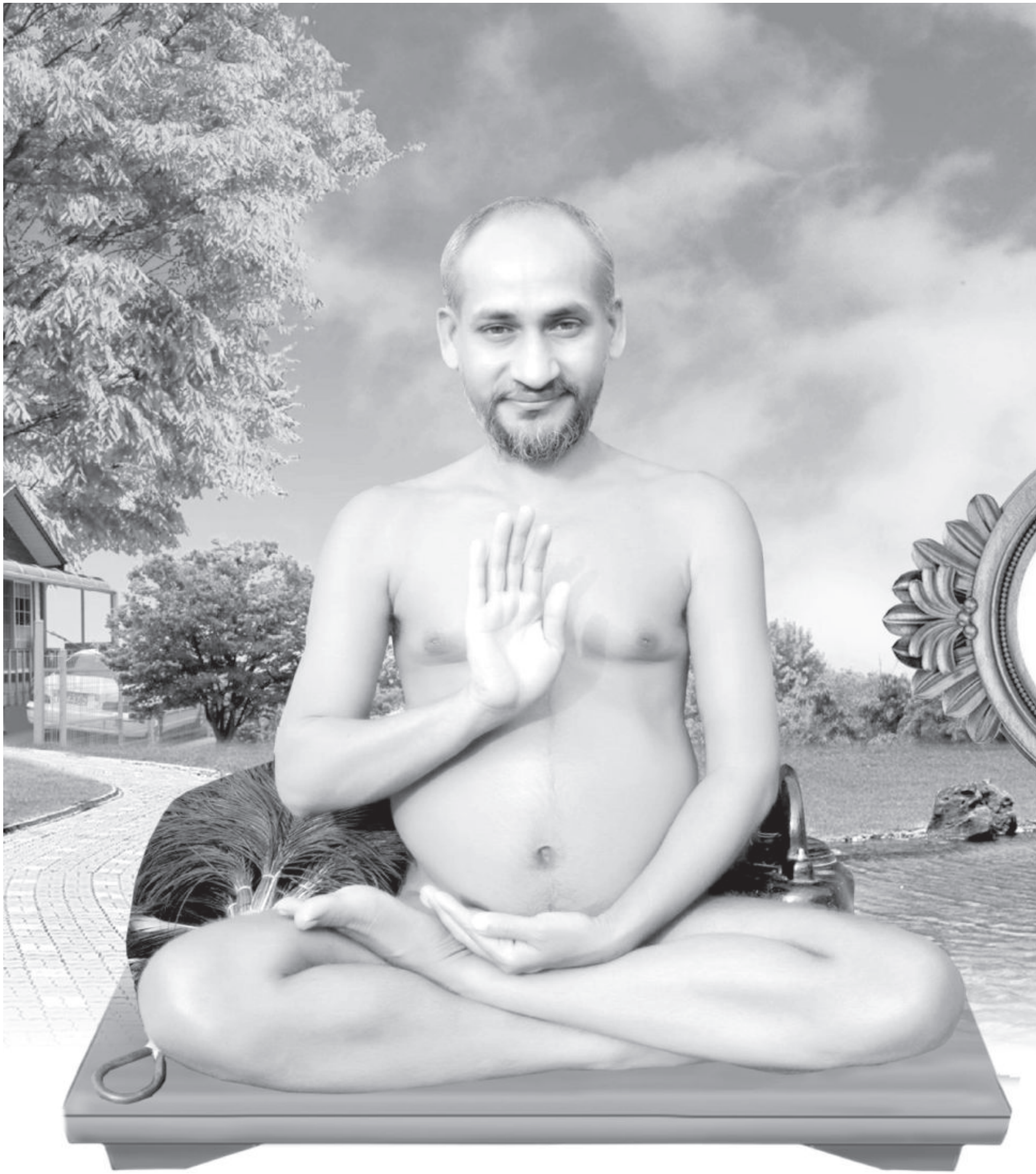
वैराग्य-पथ के पथिक ने अध्ययन कक्ष से स्वाध्याय का काम लेना शुरू कर दिया।



ललितपुर में जाप करने बैठे तो एक स्नेही ने उतारा चित्र। (सन् 1995)



फिर एक झलक सन् 1995 की।



bhavlingi sant

"पंचम पर्व"

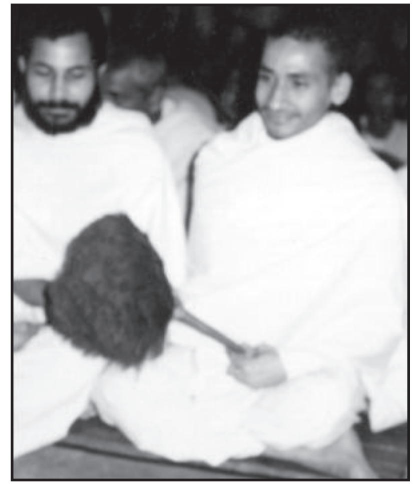
परिवर्तन पर्व

संजीवनी भावलिंगी संत (महाकाव्य)

चित्र समूह-2
ब्रह्मचर्य जीवन दर्शन



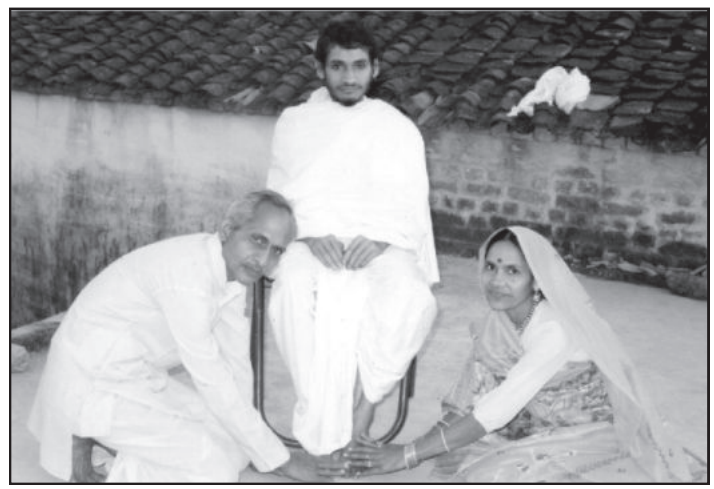
ब्र. राकेश जी एवं ब्र. विनोद जी जतारा में।
जैसे सोच रहे हो–इन वस्त्रों से कब मुक्त होंगे? (1995)



ललितपुर में गुरुदेव के पिच्छिका-परिवर्तन के समय उनकी पुरानी पीछी हाथ में ले भावना करने लगे–तुम कब आओगी हाथों में? समीप हैं ब्र. विनोद जी।



राकेश भैया जी अपनी दादी बेनी बाई के साथ



'आचरण को प्रणाम' : माता-पिता चरण स्पर्श करते हुए।



"पंचम पर्व"

"परिवर्तन पर्व"

मंगलाचरण

अरिहंत स्तुति

चउ कर्म घातिया नाश दिये, जो केवलज्ञान प्रकाशी हैं।
जिन जनम मरण का नाश किया, बन गये प्रभु अविनाशी हैं।।
दे समोशरण में दिव्य ध्वनी, प्रभु धर्मतीर्थ विकसाया है।
उन अर्हत प्रभु के चरणों में, वंदन कर मन हर्षाया है।। (1)

सिद्ध स्तुति

जो किंचित कम अंतिम शरीर शुद्धात्म प्रदेशों के वासी।
जो व्यय उत्पाद ध्रौव्य युत हैं, लोकाग्र शिखर के रहवासी।।
उन शुद्ध सिद्ध परमातम के, शुद्धात्म प्रदेशों को वंदन।
जिनकी पूजन, वंदन सुमिरन, से मिट जाते भव दुख क्रन्दन।। (2)

आचार्य स्तुति

जो पंचाचारों का पालन, नित करते और कराते हैं।
भव्यों को भव से तरने को, जो स्वयं तीर्थ कहलाते हैं।।
उर में श्रद्धा के भाव संजो, उन सूरी गुरुवर को वंदन।
भव सिंधु सुखाने वाले गुरुवर, के चरणों का अभिनंदन।। (3)

उपाध्याय स्तुति

अध्यन में नित उपयोग रमा, पच्चीस मूलगुण पाल रहे।
जो यतियों को शिक्षा देकर, अज्ञान महातम टाल रहे।।
उन उपाध्याय जी गुरूवर के, चरणों की रज भी है चंदन।
उन जैसे रत्नत्रय के गुण, पाने को करता हूँ वंदन।। (4)

साधु स्तुति

जो दर्शन ज्ञान चरित्र रूप, रत्नत्रय के शुभ साधक हैं।
व्यवहार मोक्षमग के द्वारा, निश्चय शिवमग आराधक हैं।।
नित ज्ञान ध्यान तप लीन सदा, जो मुक्ति रमा अनुरागी हैं।
वंदन उन सर्व साधुओं को, जो भव तन भोग विरागी हैं।। (5)

जिनधर्म स्तुति

संसार दुखों से दूर करे, उत्तम सुख में जो धरता है।
सब कर्म मुक्त हो जाता है, जो इसको धारण करता है।।
उर में सच्ची श्रद्धा लाओ, जिनधर्म बड़ा उपकारी है।
चारों गतियों में जीवों का, ये ही सच्चा हितकारी है।। (6)

जिनागम स्तुति

जिनमुख से जो भी कहा गया, वो ही आगम कहलाता है।
प्रत्यक्ष प्रमाण अनुमानों से, अविरोध तत्त्व बतलाता है।।
वस्तु स्वरूप का प्रतिपादक, सब जीवों का हितकारक है।
उस जिन आगम को है वंदन, जो मिथ्यापथ संहारक है।। (7)

जिन चैत्य स्तुति

त्रय लोकों के कृत्रिम अकृत्रिम, जिनबिम्बों को करें नमन।
जिनके दर्शन से होता है, भवि जीवों का मिथ्यात्व वमन।।
शत इन्द्रों से अर्चित वंदित, पावन हैं मंगलकारी हैं।
जिन चैत्य दर्शनों की भैया, शुभ महिमा अतिशयकारी है।। (8)

जिन चैत्यालय स्तुति

अर्हंत जिनालय में आकर, सुर नर प्रभु के गुण गाते हैं।
प्रभु की भक्ति में झूम झूम, हर्षाते मन उमगाते हैं।।
जिन सब विभाव का कर अभाव, जो निज स्वभाव प्रगटाया है।
उन अरिहंतो के जिन आलय, की महिमा को सिर नाया है।। (9)



गुरु आशीष की कामना

गुरुवर की अमर कहानी का, अगला अध्याय सुनाता हूँ।
उससे पहले गुरु चरणों की, रज अपने शीष चढ़ाता हूँ।।
सामर्थ्य नहीं है शब्दों की, ये कलम अगर थक जाये तो।
गुरुवर मुझको संबल देना, ये कथा अगर रुक जाये तो।। (10)

जीवन के महासफर में मैं, उस चौराहे पर खड़ा हुआ।
नायक ने जहाँ से पथ बदला, वा सारे जग से बड़ा हुआ।।
आयू का अब नूतन पड़ाव, इक्कीस वर्ष आयू धारी।
कैसे उनको वैराग्य हुआ, अब कथा सुनाता हूँ सारी।। (11)

जतारा पंचकल्याणक की भूमिका

वो नगर जतारा का मंदिर, प्राचीन बहुत ही है भारी।
इस भव्य जिनालय में राजित, हर प्रतिमा है अतिशय कारी।।
जब नव निर्माण हुआ, चौबीसी का मंदिर के अंदर ही।
तब नव जिनबिम्ब विराजे थे, शोभा लगती अति सुंदर सी।। (12)

इक सौ चालिस वा चार वर्ष, के बाद सु-मंगल वारी थी।
नगरी में पंचकल्याणक की, सुन्दर अद्भुत तैयारी थी।।
हर मन में था उत्साह अजब, घर घर में उत्सव छाया था।
घर घर में ऐसा लगता था, त्योहार ही जैसे आया था।। (13)

सागर में विरागसागर

जय हो जय हो जय हो जय हो, जय हो गुरुवर विरागसागर।
सब दुख संकट मिट जाते हैं, गुरुवर तुमरे चरणों आकर।।
जिनकी निश्छल मुस्कानों से, श्रृष्टी सारी मुस्काती है।
अम्बर भी शीष झुकाता है, अवनि भी गुरू गुण गाती है।। (14)

ऐसे गुरुवर विरागसागर, को पाकर हर्षित जन मन था।
श्री कल्पद्रुममण्डल विधान का, शुभ मंगल आयोजन था।।
तब नगर जतारा के श्रावक, हाथों में श्रीफल लेकर के।
गुरुवर को अपनी नगरी में, लाने के भाव सजोकरके।। (15)

गणमान्य लोग थे नगरी के, नवयुवक साथ नजराते थे।
भैया राकेश जी संग उनके, अपने शुभ भाव सजाते थे।।
आयोजन में थे व्यस्त गुरू, ना समय अभी मिल पाया था।
फिर भी सुभाष जी ने श्रीफल, संग अपना भाव बताया था।। (16)

बदलीं मन की परिभाषायें

जब रात को गुरु वैयावृत्ति, का समय वहाँ पर आया था।
राकेश का मन भी वैया, वृत्ति करने को ललचाया था।।
मन में तब सुंदर भाव सजा, राकेश वहाँ पर जाते हैं।
पर भीड़ बहुत थी कमरे में, दरवाजे पर रुक जाते हैं।। (17)

गुरुवर बैठे थे पाटे पर, श्रावक जन सेवा करते थे।
सेवा कर अपनी झोली में, वो पुण्य सु-मेवा भरते थे।।
हर्षित पुलकित जब वात्सल्य, मय देखा गुरूवर का चेहरा।
भैया राकेश सु-मन पर वो, अंकित हो गया बहुत गहरा।। (18)

अपने मन में राकेश अभी, तक ये ही सोचा करते थे।
होते साधु गम्भीर बहुत, ये भाव ही मन में धरते थे।।
परिभाषायें मन की सारी, गुरू दर्शन करके बदल गईं।
तब सोच रहे मन ही मन में, ये आँखें मेरी सफल भईं।। (19)

गाम्भीर संत और वात्सल्य का, अद्भुत संगम देखा था।
सब स्वपन सरीखा लगता था, सब कुछ अब तक अनदेखा था।।
भक्तों का इतना खुलकरके, गुरुवर से सब कुछ कह देना।
गुरुवर थे मौन मगर, सबके मुस्कानों से उत्तर देना।। (20)

निर्भय होकर सारी बातें, श्रावक का साधु से कहना।
था स्वपन सरीखा ये सब कुछ, राकेश के देख रहे नयना।।
बस तभी अचानक दृश्य एक, दूजा सन्मुख आ जाता है।
जो दृश्य देख पुलकित था मन, तन रोमांचित हो जाता है।। (21)

मन, गुरु चरणों में छूट गया

देखा द्वारे से बाल मुनि, कमरे के अंदर आते हैं।
तब बैठ विनय से गुरुवर के, चरणों में शीष झुकाते हैं।।
मुनिवर थे वो विशुद्धसागर, जो अब आचार्य कहाते हैं।
उस विराग उपवन की खुश्बू, जो जन जन तक पहुँचाते हैं।। (22)

वो बालमुनि चरणों आकर गुरुवर के चरण दवाते हैं।
सेवा वैयावृत्ति करके, मन ही मन में मुस्काते हैं।।
राकेश ने जब यह देखा तो, मन में अति हर्ष अपार हुआ।
लख गुरु शिष्य का यह रिस्ता, तन में रोमांच अपार हुआ।। (23)

राकेश के जीवन में पहला, ये सुन्दर अवसर आया था।
जब जाकर के इतने करीब, साधु का दर्शन पाया था।।
गुरुवर मन में यूँ समा गये, मन गुरु चरणों में छूट गया।
तन तो आ गया जतारा पर लगता था सब कुछ छूट गया।। (24)

क्या हमें भी मिलवाओगे

यूँ प्रथम दर्श गुरुवर का पा, मन के मुरझाये फूल खिले।
ज्यौं सती चंदना को वीरा, शबरी को जैसे राम मिले।।
अब हृदय पटल पर यादें वन, गुरु का आशीष उभरता था।
रहते घर पे पर बार बार, गुरु दर्शन को मन करता था।। (25)

भैया राकेश जतारा में, फिर विद्यालय में जाते हैं।
विद्यालय के आचार्य अन्य, राकेश से यूँ बतियाते हैं।।
बोले राकेश जी नगरी में, उत्सव छाया हर आँगन है।
अब सुना है पच कल्याणक का, होने वाला आयोजन है।। (26)

राकेश जी बोले ठीक सुना, आयोजन होनेवाला है।
नगरी में रहनेवालों का, सब दुखड़ा खोनेवाला है।।
जो भी शामिल होगा इसमें, जीवन मंगल हो जायेगा।
जो गुरु चरणों में जायेगा, बिन माँगे सब पा जायेगा।। (27)

सब शिक्षक साथी बोल उठे, क्या हमको भी मिलवाओगे।
तुम अपने गुरुवर जी से क्या, हमको परिचित करवाओगे।।
राकेश जी बोले हाँ भैया, तुम सबको हम मिलवायेंगे।
जब गुरुवर श्री विरागसागर, अपनी नगरी में आयेंगे।। (28)

अब सोच रहे राकेश यही, कैसे इनको मिलवायेंगे।
अपना भी नहीं ठिकाना है, क्या हम उनसे मिल पायेंगे।।
जब मैं ही ना मिल पाया तो, इनको कैसे मिलवाऊँगा।
ना मिला सका तो फिर कैसे, मैं चेहरा इन्हें दिखाऊँगा।। (29)



कुछ नहीं असम्भव दुनिया में

बस तभी अचानक मिश्राजी यूँ, बीच बात में बोल पढ़े।
मानों भविष्य के चित्र कई, शब्दों में उनने यहाँ गढ़े।।
बोले, राकेश जी! उनके संग, रह तुम महाराज न बन जाना।
ऐसा ना हो महाराज के, संग तुमरा भी हो जाये जाना।। (30)

राकेश प्रेम वा ऋजुता से, तब उन सबको समझाते हैं।
आसान नहीं इस पथ चलना, ये उनको बात बताते हैं।।
जब पुण्य और पुरुषार्थ जहाँ, पर ये दोनों मिल जाते हैं।
तब भव्य जीव कोई विरले, इस शिवपथ पे चल पाते हैं।। (31)

फिर अंत में थोड़े शब्दों में राकेश ने उनको बता दिया।
''कुछ नहीं असम्भव दुनियाँ में'' मन्तव्य वहाँ पर जता दिया।।
कुछ समय बाद फिर से, भौतिकवादी विचार हो जाते हैं।
जग की रंगीनी गलियों में, राकेश पुनः खो जाते हैं।। (32)

पंचकल्याणक की तैयारियाँ

जितना जितना आयोजन का, शुभ समय पास में आता था।
नगरी के नर-नारी, बालक, वृद्धों का मन हर्षाता था।।
गुरुवर विरागसागर जी ने, आशीर्वाद फरमाया था।
आयोजन के पहले अपने, दो शिष्यों को पहुँचाया था।। (33)

गुरुवर विरागसागर जी का, आशीर्वाद संग ले आये।
मुनिवर विशुद्धसागर जी, लेकर संघ जतारा में आये।।
गुरुवर विरागसागर जी के, थे लघु शिष्य प्यारे प्यारे।
छोटी सी कद काठी के थे, वे मुनिवर इस जग से न्यारे।। (34)

भावी संत की संतों से विरक्ति

मुनिवर विशुद्धसागर जी के, निर्देशन में प्रारंभ हुआ।
उस महा महोत्सव का भैया, धीरे-धीरे आरम्भ हुआ।।
राकेश की मौसेरी बहिना, मंगला दीदी कहलाई थीं।
तब ही मुनिवर के दर्शनार्थ, वो नगर जतारा आई थीं।। (35)

घर पर आकर दीदी बोलीं, राकेश हमारे संग आओ।
मंदिर में मुनिवर का दर्शन, तुम हमको शीघ्र करा लाओ।।
राकेश गये संग मंदिर तक, रूक गये कदम दरवाजे पर।
मुनिवर अंदर कमरे में हैं, तुम दर्शन कर आओ जाकर।। (36)

राकेश से बोली यूँ दीदी, तुम भी दर्शन करने आओ।
बोले राकेश नहीं दीदी, तुम ही भर दर्शन कर आओ।।
भैया बोले महाराज लोग, आलू आदि छुड़वाते हैं।
वो ही हमको प्रिय लगते हैं, वो ही हमरे मन भाते हैं।। (37)

ये भावी संत अहा देखो, संतों से कैसे डरता था।
ये भावी महा त्याग मूरत, संतों के त्याग से डरता था।।
बस योग्य निमित्ताधीन ही है, जग में हर कारज का होना।
जीवन में जो कुछ है पाना, जीवन में जो कुछ है खोना।। (38)

संगीत का जादू

संगीत का जादू सिर चढ़कर, राकेश के बोला करता था।
आते नवयौवन का जैसे, दरवाजा खोला करता था।।
घर के बाहर के कमरे में, नित डेक बजाया करते थे।
फिल्मी नूतन गाने सुनकर, नित मन बहलाया करते थे।। (39)



कुछ दिनों बाद राकेश अहा, इक टी.व्ही. घर पे ले आये।
फिल्मी गीतों का शौक बहुत, था इससे टी.व्ही. घर लाये।।
टी.व्ही. पर इक गाने वाला, चैनल ही उनको भाता था।
क्योंकि फिल्मी गीतों का नित, आयोजन उसपे आता था।। (40)

भारी ऊँची आवाज में वो, नित गीत बजाया करते थे।
खुद सुनते थे संग संग अपने, सबको सुनवाया करते थे।।
फिल्मी गीतों का शौक गजब, उनके जीवन में आया था।
राकेश ने प्रभु भक्ति पूजा, संतों को वहाँ भुलाया था।। (41)

इक दिन मुनिवर विशुद्धसागर जो अब आचार्य कहाते हैं।
घर के बाहर से मुद्रा ले, आहारचर्या को जाते हैं।।
राकेश के फिल्मी गीतों के, सुनने का वो ही समय रहा।
आवाज तेज करके गीतों का, लेते थे आनंद अहा।। (42)

महाराज को देखा जब माँ ने, राकेश को ऐसे समझाया।
अपने कुल की मर्यादा को, माँ ने बेटे को बतलाया।।
महाराज निकर रय बाहर से, तुम फिलम के गीत बजा रय हो।
करलो नमोस्तु जाकर के, काहे तुम हमें लजा रय हो।। (43)

बोले भैया, मैया से यूँ, अम्मा! तुम कछु न जानत हो।
कम उमर में बन गये जे साधु, अम्मा क्या तुम ये जानत हो?
कम उमर में साधु बन गय हैं, न फिल्मी गीत सुने हुइएँ।
कम से कम सुनत तो जैहें वे जो मन में गर रह गइ हुइए।। (44)

ऐसे नहिं बोलत हैं बेटा, लगता है पाप बहुत भारी।
माँ की बातों में छिपी हुई, थी शिक्षा आतम हितकारी।।
तब तक तो निकल गये मुनिवर, वो बात आई और चली गई।
शिक्षा माँ की प्यारी-प्यारी, राकेश से तब न पली गई।। (45)

आचार्य श्री का नगर आगमन

कुछ समय बाद गुरुवर, विरागसागर के नगर आगमन की।
सुनकर सब खुशियों से भीगे, ज्यौं घटा बरसती सावन की।।
सागर नगरी से कर विहार, गुरु नगर जतारा ओर बढ़े।
हर मन में था उत्साह बढ़ा, सबके सु-भाव थे बढ़े चढ़े।। (46)

तैयारी नगर आगमन की, हर ओर दिखाई देती थी।
गुरु-शिष्य मिलन की चर्चा ही, हर ओर सुनाई देती थी।।
राकेश भी मन में सोच रहे, वो क्षण कितना पावन होगा।
गुरूवर विरागसागर जी का, जब नगरी में आवन होगा।। (47)

गुरुवर की आगवानी में बजाया बैण्ड

दिन इंतजार के खत्म हुये, वह समय सुपावन आया था।
गुरुवर का स्वागत करने को, सारा ही नगर सजाया था।।
दिन सात फरवरी धन्य हुआ, जब नगरी में गुरुवर आये।
भैया राकेश भी बैण्ड बजाकर, झूम झूम कर हर्षाये।। (48)

गुरु शिष्य मिलन

गुरुवर विरागसागर जी से, मुनि विशुद्धसागर आन मिले।
गुरु शिष्य का अद्भुत मिलन हुआ, भक्तों के मन के सुमन खिले।।
गुरुवर के नगर आगमन पर, भक्तों ने भाव बिछाये थे।
भक्तों की भीड़ बड़ी भारी, सिर ही सिर बस नजराये थे।। (49)



फिर गुरुवर के संग जन समूह, गजरथ स्थल पर आया था।
दस मिनिट का शुभ आशीर्वचन, गुरुवर से सबने पाया था।।
उस छोटे से उद्‌बोधन में, गुरु ने आगम का सार दिया।
मानो उस ही उद्‌बोधन ने, राकेश का तब उद्धार किया।। (50)

बोले गुरुवर गर भरना है, तो खाली भी होना होगा।
अवगुण से जब खाली होंगे, तब सद्‌गुण से भरना होगा।।
घट भरा हुआ न भरता है, खाली घट ही भर सकता है।
संसार मार्ग का त्यागी ही, सच्चा शिवसुख वर सकता है।। (51)

राकेश ने पहली बार सुना, था जैन संत का उद्‌बोधन।
राकेश को अंदर तक छूता, था गुरुवर का हर एक वचन।।
लगता था कोई जगतारक, उद्धारक बनकर आया था।
भैया राकेश ने भवसिन्धु, तरने का संबल पाया था।। (52)

सुनकरके शुभ आशीष वचन, गुरु को मंदिर ले जाते हैं।
चाँदी के कलशा हाथों में, सब गुरु के चरण धुलाते हैं।।
गुरु आरति को जगमग दीपक, कोई हाथों से श्रृंगार रहे।
कोई बार बार अतृप्त नयन, गुरुवर का वदन निहार रहे।। (53)

गुरुवर क्या नगरी में आये, मानो दीवाली आई थी।
जो कभी किसी ने न देखी, ऐसी खुशहाली छाई थी।।
प्रतिदिन गुरुवर के दिव्य वचन, मानो अमृत से झरते थे।
विन माँगे ही झोली सबकी, गुरुवर विराग तब भरते थे।। (54)

वह घटना, जिसने बदल दिया जीवन

आओ अब तुम्हें दिखाता हूँ, उस घटना का सम्यक् चिंतन।
राकेश का जिस घटना भर से, बस बदल गया पूरा जीवन।।
गुरुवर विराग के आने से, हर दिन उत्सव नजराता था।
गुरु वात्सल्य आबाल वृद्ध, सबको ही पास बुलाता था।। (55)

इक रात को साढ़े आठ बजे, राकेश निकलते हैं घर से।
नित की भाँति हाथों अपने, वो तास की गड्‌डी लेकर के।।
मुन्नु भैया की थी दुकान, चौराहे पर वो जाते हैं।
प्रिय मित्र से जाकर के सारी, वो मन की बात बताते हैं।। (56)

प्रिय मित्र चलो अब समय हुआ, जल्दि दुकान को बंद करो।
हम तास खेलने चलते हैं, अब मित्र जरा तुम शीघ्र करो।।
मुन्नु भैया बोले ऐसे, भैया राकेश को समझाकर।
पहले गुरु की वैयावृत्ति, कर आयें हम मंदिर जाकर।। (57)

भैया राकेश को मुन्नू की, यह बात समझ आ जाती है।
वैयावृत्ति कैसी होती, ये उत्सुकता बढ़ जाती है।।
यूँ सोच रहे थे वो पहले, न ऐसा अवसर आया है।
बहु पुण्य उदय से गुरूसंघ, इस नगरी में आ पाया है।। (58)

बोले राकेश ठीक भैया, हम पहले मंदिर जायेंगे।
कैसी होती वैयावृत्ति, ये हम भी करके आयेंगे।।
मुन्नु के संग राकेश और, सब साथी मंदिर जाते हैं।
देखा कमरे में पाटे पर, गुरुवर विराग नजराते हैं।। (59)



आजीवन त्याग का नियम

गुरु कक्ष भरा था भक्तों से, सब झूम झूम कर गाते थे।
सब गुरू की वैयावृत्ति कर, अपना सौभाग्य मनाते थे।।
कमरे के कोने में नूतन, इक क्षुल्लक जी नजराते हैं।
जो अब आचार्य विभवसागर, के नाम से जाने जाते हैं।। (60)

मुन्नु राकेश का हाथ पकड़, गुरु चरणों में ले जाते हैं।
जैसे तैसे हिम्मत करके, गुरु चरणों को छू पाते हैं।।
राकेश ने हिम्मत जब करके, पैरों को वहाँ दबाया था।
तब ही राकेश के बारे में, मुन्नु ने यह बतलाया था।। (61)

बोले मुन्नु आचार्य श्री!, ये हमरे मित्र कहाते हैं।
राकेश नाम इनका गुरुवर, बस आलु प्याज ये खाते हैं।।
उस समय गुरूवर मौन रहे, संकेतों में बतियाते हैं।
राकेश से पूछा गुरुवर ने, क्या आलु प्याज वो खाते हैं।। (62)

राकेश ने जोड़े हाथ वहाँ, अति नम्र भाव दिखलाते हैं।
फिर बोले वो आचार्य श्री!, हाँ आलु प्याज तो खाते हैं।।
गुरुवर ने पुनः इशारे से, क्षुल्लक जी को दिखलाया था।
जाओ उनकी सेवा कर लो, राकेश को ये समझाया था।। (63)

राकेश ये मन में सोच रहे, भारी अपमान हुआ अपना।
गुरुवर की वैयावृत्ति का, रह जायेगा मेरा सपना।।
क्षुल्लक जी की वैयावृत्ति, क्यों? गुरुवर की ही करना है।
गुरुवर के शब्द गूँजते थे, खाली होकर ही भरना है।। (64)

आचार्य श्री ये देख रहे, लड़का कुछ चिंतन करता है।
करने को शायद त्याग अरे, इसके मन भाव उभरता है।।
तुम चार माह का त्याग करो, गुरुवर ने यूँ संकेत किया।
बोले राकेश आज से बस, गुरुवर आजीवन त्याग दिया।। (65)

सुनकर अति हर्ष हुआ गुरु को, राकेश को शुभ आशीष दिया।
राकेश भी हर्षित हो मन में, फिर पैर दवाना शुरू किया।।
तब तक मुन्नु इक और बात, गुरुवर के सन्मुख धरते हैं।
गुरुवर! भैया राकेश अरे ये रात में भोजन करते हैं।। (66)

गुरुवर ने फिर संकेतों से, भैया बल्लू से पूछ लिया।
हाँ रात में भोजन करते हैं, राकेश ने सहज जवाब दिया।।
गुरुवर ने फिर संकेत किया, कि चार माह का त्याग करो।
ये पाप का कारण है भैया, न इससे इतना राग करो।। (67)

राकेश ने कुछ सोचा समझा, कुछ मन में जरा विचार किया।
फिर रात का भोजन गुरुवर के, सन्मुख आजीवन त्याग दिया।।
गुरुवर ने फिर हर्षित होकर, राकेश को शुभ आशीष दिया।
जिन जिन ने ये सब कुछ देखा, शुभ अनुमोदन का भाव किया।। (68)

ये नियम नहीं थे मामूली, राकेश का जीवन बदल गये।
आगे चलकर ये छोटे व्रत, ही महाव्रतों में बदल गये।।
छोटे छोटे से नियम एक, दिन बहुत बढ़े हो जाते हैं।
जो बालक घुटनों पर चलते, इक रोज खड़े हो जाते हैं।। (69)



करके गुरु की वैयावृत्ति, चुपचाप वो घर की ओर चले।
चिन्तन इतना गहराया कि, न बात किसी से कहीं मिले।।
ले लिये नियम पर अब पालन, कैसे होगा चिंता भारी।
चिन्तन में न कुछ पता चला, कब राह गुजर गईं थी सारी।। (70)

घर का कुलाचार

खटिया पे जाकर लेट गये, सीधे वो अपने घर आकर।
दादी ने जब देखा उदास, तो पूछ लिया उससे जाकर।।
बेटा बल्लू तुम आज भला, कैसे जल्दि से आ गए हो।
क्या भूख लगी न आज तुम्हें, क्या भोजन तुम नइ खा रय हो।। 71)

तब कुलाचार ये था घर का, कोई निशि न भोजन करता था।
पितु की आज्ञा का तब घर में, हर कोई पालन करता था।।
बल्लू ही रात में खाते थे, पर दादी लाड़ दिखाती थी।
बल्लू की खातिर रोज रोज, भोजन वो वहाँ छिपाती थी।। (72)

बोले बल्लू दादी! हमने, अब रात का भोजन त्याग दिया।
गुरु चरणों में यह नियम लिया, गुरू चरणों से अनुराग किया।।
आजीवन आलू और प्याज, व रात का भोजन त्यागा है।
त्यागी के चरणों में रहके, अब त्याग भाव मन जागा है।। (73)

साधु सेवा

इस समय जतारा नगरी में, हर ओर धर्म की चर्चा थी।
कहीं साधु की सेवा के स्वर, कहीं गूँज प्रभु की अर्चा की।।
हर युवा में उत्सुकता भारी, गुरुसंघ सु सेवा करने की।
कहीं आहार चर्या की रुचियाँ, कहीं रुचि कमण्डल भरने की।। (74)

जब युवा साथियों का समूह, गुरुसंघ साथ जंगल जाता।
गुरुवर का हाथ कमण्डल ले, राकेश भी संग में हो जाता।।
इक रोज कमण्डल हाथों में, ले संग गुरूवर के जाते हैं।
मैं भी अब धर्मी श्रावक हूँ, ये भाव हृदय में आते हैं।। (75)

जाना साधु चर्या को

जंगल से निवृत होकर के, जब संघ लौटकर आता है।
मंदिर की छत पर एक दृश्य, राकेश को तब नजराता है।।
साधुजन वहाँ कमण्डल को, अपने हाथों से पौंछ रहे।
भैया राकेश ये घटनाक्रम, तब बहुत देर से देख रहे।। (76)

मन में तब प्रश्न उठा उनके, ये सब ऐसा क्यों करते हैं।
क्यों सभी कमण्डल पौंछ पौंछ, कर धूप में उल्टे धरते हैं।।
क्यों आप ये ऐसा करते हैं, इक साधु जी से पूछ लिया।
ये है साधु चर्या भैया, साधु ने उत्तर खूब दिया।। (77)

साधु की चर्या में साधक, उपकरण तीन कहलाते हैं।
जो पिछी कमण्डल और शास्त्र, के नाम से जाने जाते हैं।।
शौचोपकरण है ये भैया, शुद्धि के काम में आता है।
भैया दिन में इकबार कमण्डल, अवस सुखाया जाता है।। (78)

भैया राकेश ने साधु जी, की बातों का श्रद्धान किया।
बातों ही बातों में उनसे, साधु चर्या का ज्ञान लिया।।
पर किसे पता था आज मिला, वो आगे काम में आयेगा।
जिसने साधु से ज्ञान लिया, वो खुद साधु बन जायेगा।। (79)



मिल गई नाम राशी

इक दिन गुरुवर जी संघ सहित, आहार चर्या को जाते हैं।
पर क्षुल्लक श्री विमुक्तसागर, चौके से वापिस आते हैं।।
सारी नगरी में चर्चा थी, उनके वापिस आ जाने की।
साधु के भूखे रहने की, आहार विधि ना पाने की।। (80)

राकेश ने जब ये बात सुनी तो वो भी मंदिर जाते हैं।
सोचा जाने क्या बात हुई, खुद चलो देखकर आते हैं।।
गुरुवर श्री विरागसागर जी, चर्या कर मंदिर आते हैं।
क्षुल्लक जी को फिर से आहार, चर्या हेतु भिजवाते हैं।। (81)

क्षुल्लक जी श्री विमुक्तसागर, फिर से चर्या को जाते हैं।
सुखनंदन जी के चौके में, आहार सही हो जाते हैं।।
उनको मंदिर तक पहुँचाने, भैया राकेश भी जाते हैं।
तब क्षुल्लक जी की नजरों में, भैया राकेश समाते हैं।। (82)

क्षुल्लक जी ने चलते चलते, राकेश के कर को थाम लिया।
भैया क्या नाम तुम्हारा है, क्षुल्लक जी ने यूँ प्रश्न किया।।
तब विनयभाव से क्षुल्लक जी, का प्रश्न वहाँ स्वीकार किया।
है नाम मेरा राकेश जैन, राकेश ने उत्तर तुरत दिया।। (83)

राकेश के मुख से सुन उत्तर, क्षुल्लक जी ने तब पुनः कहा।
जो नाम तुम्हारा है भैया, पहले वो मेरा नाम रहा।।
मुख पर प्रशन्नता लाकर के, राकेश ने तब सम्मान किया।
मुझको भी शिवपथ चुनना है, मानो मन में संधान किया।। (84)

लिया पूजन का नियम

राकेश को संग लेकर क्षुल्लक, जी संत वसतिका आते हैं।
राकेश को पास बुला अपने, पाटे के पास बिठाते हैं।।
क्षुल्लक जी ने फिर प्रश्न किया, बोलो भैया क्या करते हो।
क्या धन्धा पानी कोई है, या अध्ययन में चित धरते हो।। (85)

बोले राकेश अभी हमने, बी.एस.सी. तक शिक्षा ली है।
कुछ समय पास करने हेतु, विद्यालय में सर्विस की है।।
क्षुल्लक जी बोले संतो से, लगता गहरा अनुराग तुम्हें।
क्या जमीकंद का त्याग किया, इतना बतलाओ आज हमें।। (86)

अब तक तो आलु और प्याज, के बिना पेट न भरता था।
कल तक तो मैं महाराज श्री, नित रात में भोजन करता था।।
कल पुण्य उदय से प्रथम वार, गुरु की सेवा का लाभ लिया।
गुरु कृपा हुई इन तीनों को, तबसे आजीवन त्याग दिया।। (87)

आश्चर्य हुआ क्षुल्लक जी, को फिर पुनः प्रश्न वो करते हैं।
बोले भैया क्या रोज आप, जिनवर की पूजा करते हैं।।
न पूजन करना आती है, न कोई कभी अभिषेक किया।
भैया ने बड़ी सरलता से, क्षुल्लक जी को सब बता दिया।। (88)

क्षुल्लक जी ने यूँ समझाया, राकेश को कुछ उपदेश दिया।
अपना सौभाग्य है ये भैया, जो जिनकुल में है जन्म लिया।।
पूजन करना आवश्यक है, इस कुल की रीत पुरानी है।
नित देव शास्त्र गुरू की पूजन, जैनी की यही निशानी है।। (89)



अब से तुम नियम करो भैया, कि पूजा रोज रचाओगे।
जैनी कुल में जन्में हो तो, इस कुल की रीत निभाओगे।।
लेकिन हमको महाराज श्री! पूजन करना न आती है।
अभिषेक विधि न आती है, वस ये ही बात सताती है।। (90)

लेकिन महाराज हमें पूजन, जिस दिन करना आ जायेगा।
तब से प्रतिदिन पूजा करने, का नियम शुरु हो जायेगा।।
क्षुल्लक जी बहुत प्रशन्न हुये, राकेश ने पूजन नियम लिया।
मानों प्रभु की पूजा करके, प्रभु बनने का संकल्प किया।। (91)

दिनभर गुरु की चर्या में हो, शामिल कर्तव्य निभाते हैं।
राकेश शाम ढलने पर अब, गजरथ स्थल पर जाते हैं।।
रस्ते में गुप्ता की दुकान, मावा के पेड़े वहाँ लिये।
न याद नियम आया अपना, पेड़े खाये व निकल लिये।। (92)

नियम भंग की व्याकुलता

जब लौट के अपने घर आये, तब उन्हें प्रतिज्ञा याद आई।
ये नियम भंग हो गया मेरा, मन में थी व्याकुलता छाई।।
सोचा मन में सब जाकर के, गुरुवर को बात बताऊँगा।
इस नियम भंग का प्रायश्चित्त, गुरुवर से लेकर आऊँगा।। (93)

अगले दिन मन में खेद भरा, भैया मंदिर जी जाते हैं।
पाटे पर गुरुवर को बैठा, भैया राकेश जी पाते हैं।।
हिम्मत भारी करके मन में, गुरुवर को बात बताते हैं।
मन में पछतावा भारी था, आँखों से भाव जताते हैं।। (94)

बोले गुरुवर बेटा अब, आगे सावधान होके रहना।
कोई नियम टूटना जाये कभी, बस इतना गुरुवर का कहना।।
गुरुवर से शिक्षा प्रायश्चित्त, लेकर के मन संतुष्ठ हुआ।
फिर से व्रत में स्थिर होकर, अंतर आतम अति तुष्ठ हुआ।। (95)

वैराग्य के सन्मुख परिणतिया

जब रात को घर पर लेटे थे, तब चिंतन धारा चलती है।
मन की परिणतियाँ बार बार, वैराग्य की ओर मचलती हैं।।
जब समय समय पर शादी की, चर्चा के अवसर आयेंगे।
तब मीठा वहाँ खिलाने के, कुछ नेग निभाये जायेंगे।। (96)

अतः कभी घर पर रहकर, जब ऐसा अवसर आयेगा।
तो उस अवसर पर फिर, कैसे ये नियम मेरा पल पायेगा।।
अतः नियम घर पे रह करके न पालन हो पायेगा।
ये नियम सुरक्षित धर्म मार्ग, पर जाकर ही रह पायेगा।। (97)

जो कुछ कहना, गुरु से कहना

बस तभी किया निर्णय मन में, मैं कल जब मंदिर जाऊँगा।
तब अपने मन की बात सभी, गुरुवर को जा बतलाऊँगा।।
अगले दिन फिर मध्यान्ह काल, राकेश जिनालय जाते हैं।
सबसे पहले कमरे में मुनि, निर्णयसागर को पाते हैं।। (98)

वंदन करके मुनिवर जी का, मन में किञ्चित विचार आये।
अपने मन की सब बात यहाँ, क्या मुनिवर जी को बतलायें?
अगले ही पल मन में उनके, शिष्यत्व का जब संचार हुआ।
हर बात गुरु से ही कहना, चइये ये श्रेष्ठ विचार हुआ।। (99)



समर्पण के स्वर

अतः किया मुनिवर को तब, वंदन गुरुवर के पास गये।
स्वाध्याय निरत गुरुवर को लख, मन में अति ही आनंद भये।।
सविनय गुरु को वंदन करके, मन की सब बात बताई थी।
भैया ने आत्म समर्पण की, सौगात वहाँ पर पाई थी।। (101)

जब शिष्य समर्पण की भाषा, गुरु के चरणों में रखते हैं।
तब शिष्य के नम्र निवेदन में, गुरुवर भव्यत्व निरखते हैं।।
गुरु ने मंगल आशीष दिया, फिर बड़े प्रेम से समझाया।
कैसे निकलें हम मोहजाल, से पावन रस्ता दिखलाया।। (102)

मिला सिग्नल, शिवपथ पर चलने का

बोले गुरुवर संयम के, सांचे में धीरे धीरे ढलना।
नगरी से संघ विहार करे, तो तुम भी साथ-साथ चलना।।
फिर शेष सभी चर्चायें हम आगे चलकर के कर लेंगे।
गर दृढ़ता जो नजरायेगी, तो आगे चलकर व्रत देंगे।। (103)

गुरुमुख से ऐसे वचन सुने, अत्यंत हर्ष मन में छाया।
मानो शिवपथ पर चलने का, गुरुमुख से था सिग्नल पाया।।
गुरु चरणों में वंदन करके, राकेश जी घर आ जाते हैं।
पर गुरुवर के अनमोल वचन, कानों में गूँज मचाते हैं।। (104)

तैयारियाँ शुरु

राकेश ने अब विद्यालय में, जाना भी लगभग छोड़ दिया।
घर के भी सारे कामों से, था रिस्ता अपना तोड़ लिया।।
न मित्रों में मन लगता था, न रिस्ते नाते भाते थे।
हर समय गुरू की सेवा में, वो दौड़े दौड़े जाते थे।। (105)

नगरी में पंचकल्याणक का, शुभ महा महोत्सव जारी था।
नगरी के सभी युवाओं में, दिखता उत्साह सु भारी था।।
आवास व्यवस्था की, जिम्मेदारी राकेश पे आई थी।
पर मुनीसंघ की सेवा ही, राकेश के मन को भाई थी।। (106)

वैरागी को मिले वैरागी

राकेश को इक दिन पता चला, कि गुरुवर के संग जाने को।
नीरज, सज्जू भी राजी हैं, शिव सुख का पथ अपनाने को।।
राकेश ने उनसे बात करी, अपना मन्तव्य बताया था।
तीनों ने संग संग चलने का, फिर अपना लक्ष्य बनाया था।। (107)

पाँचवाँ पर्व पूर्ण

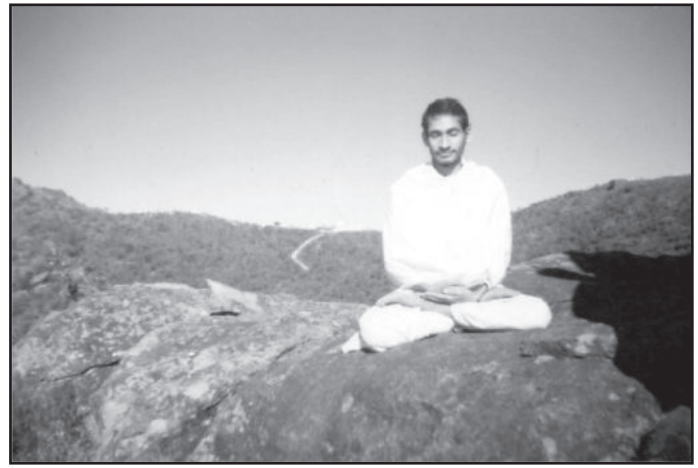
वैराग्यमई भावों के संग, पंचम सोपान समापन है।
जिनकी ये गौरव-गाथा है, उन चरणों का अभिवादन है।।
वैराग्य भाव से सजे हुये, वैरागी को पथ दर्शक है।
भक्ति से लिखी गई गाथा, यह शिष्यों को आदर्शक है।। (108)

❑❑❑❑

चित्र समूह-2
ब्रह्मचर्य जीवन दर्शन



बड़े भ्राता राजेश जी एवं छोटे भ्राता चक्रेश जी के मध्य ब्र. राकेश जी।



शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर जी के चिर-परिचित
वन के एकान्त में ध्यान करते हुए :
ब्र. राकेश जी (भाव यही रहे होंगे कि इसी पावन क्षेत्र से निर्वाण हो)



बड़ी भगिनी कमला जी एवं लघु भगिनी प्रियंका के मध्य ब्र. राकेश जी।



आचार्यवर्य श्री भरतसागर जी (अब समाधिस्थ) से
मधुबन में आशीर्वाद पाते हुए। (सन् 1996)



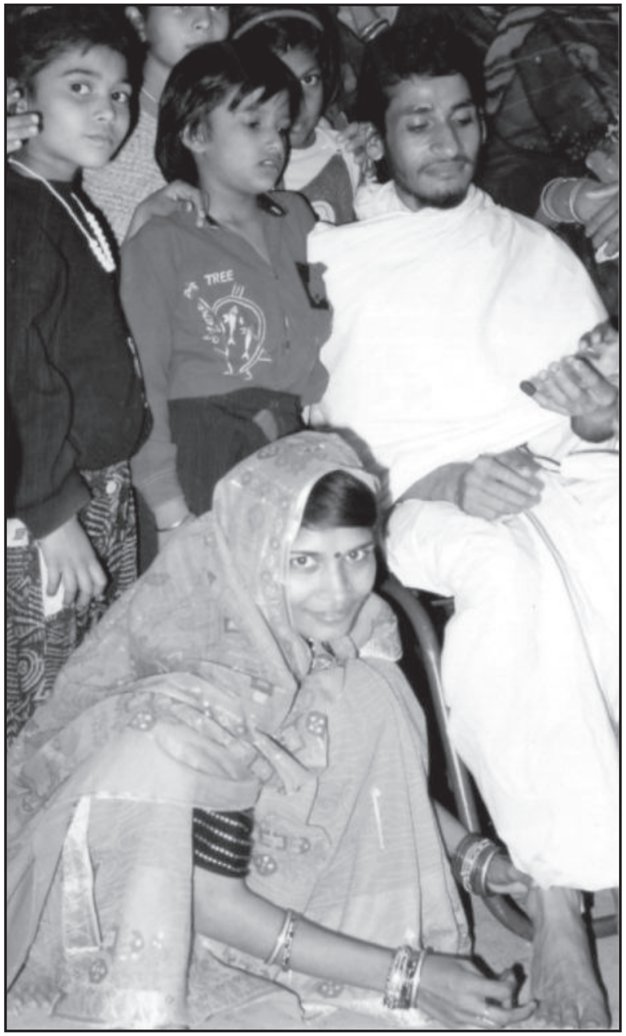
bhavlingi sant

"षष्ठम् पर्व"

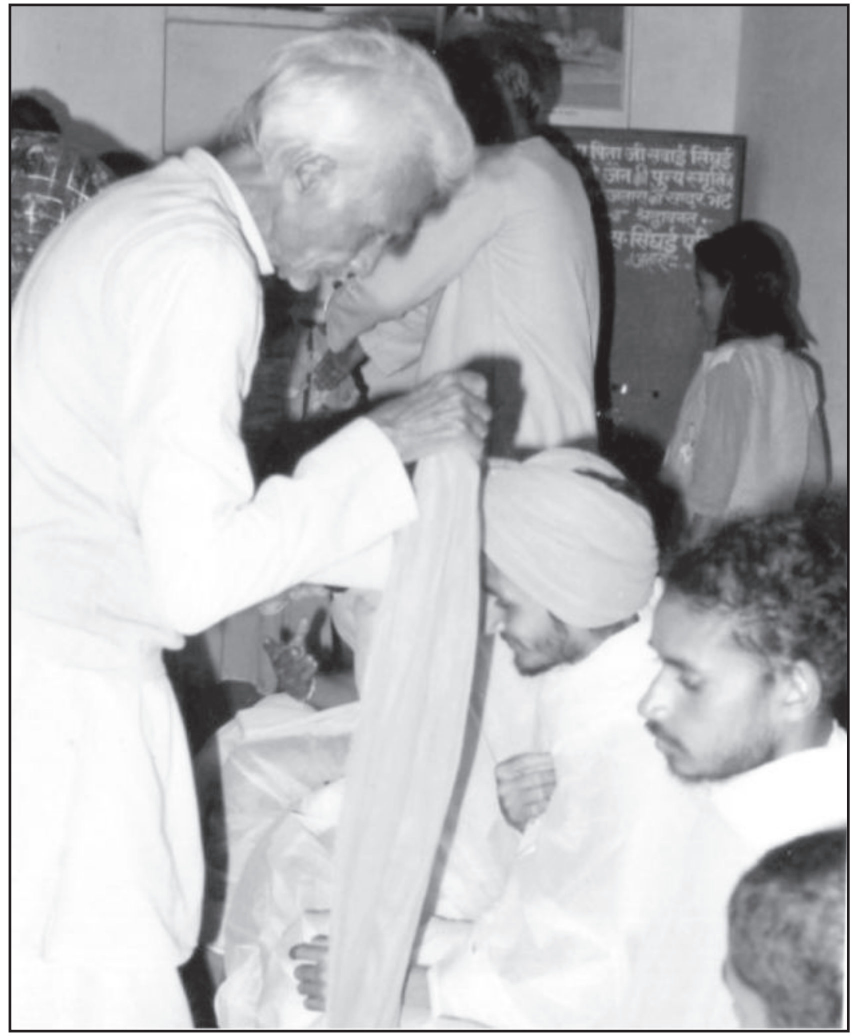
विशुद्धि पर्व

संजीवनी भावलिंगी संत (महाकाव्य)

चित्र समूह - 3
ऐलक दीक्षा दर्शन



बिनौली से पूर्व किया राकेश कुमार का शृंगार।
बहिनों ने लगाई मेंहदी, भाभी ने लगाया महावर। बच्चे हुए निछावर।



श्री फूलचंद जी ने पगड़ी बांधी गौरवपूर्वक ब्र. राकेश सहित सभी ब्र. भाईयों को।



"षष्ठम् पर्व"

"विशुद्धि पर्व"

मंगलाचरण

अभेद आत्मा

वसु कर्म नाश कर दिये प्रभु, शुद्धात्म प्रदेश निवासी हो।
व्यवहार से जाने जाते हो, तुम सिद्धालय के वासी हो।।
ज्ञायक स्वभाव प्रगटाने को, मैं तुमको ज्ञेय बनाता हूँ।
ज्ञायक व ज्ञान ज्ञेय का मैं, संबंध सहज विसराता हूँ।। (1)

चैतन्य स्वभाव

हे प्रभो! आपसा अविनाशी हूँ, बात समझ में तब आई।
जब व्यय उत्पाद ध्रौव्य से युत, निज सत्ता की श्रद्धा पाई।।
हे प्रभो! आपके वंदन से, निज ज्ञायक प्रभु का वंदन हो।
चैतन्य स्वभाव झलक जाये, उस पल का नित अभिनंदन हो।। (2)

आत्मज्ञता

ज्ञायक स्वभाव वाला हूँ मैं, पर, पर को ज्ञेय बनाया है।
स्वद्रव्य ज्ञेय बनता जिससे, उस परिणति को विसराया है।।
निज आत्मज्ञता प्रगट करूँ, हे नाथ! मुझे वो संबल दो।
चरणों में वंदन बार-बार, मुझको निज सा आतम बल दो।। (3)

सिद्धों के आठ क्षायिक गुण

क्षायिक सम्यक्त्व ज्ञान क्षायिक, क्षायिक दर्शन प्रगटाया है।
क्षायिक बल प्रगट किया, भगवन् सूक्ष्मत्व आत्मगुण पाया है।।
अवगाहनत्व गुण अगुरुलघु, अव्यावाधत्व की अभिव्यक्ति।
वसु गुण प्रगटाने को वंदन, आतम में ऐसी दो शक्ति।। (4)

तारने की शक्ति

निज में रहकर जग को जाना, जग जानके भी निज लखते हो।
चैतन्य प्रदेशों से झरनेवाला, अमृत रस चखते हो।।
तर गये, तारने की शक्ति, फिर भी तुममें नजराती है।
इसलिये ये श्रद्धा बार बार, तब चरणों में झुक जाती है।। (5)

मेरे आदर्श

अब नमन करूँ उन चरणों, में जो जीवन के आदर्शक हैं।
शिव पथ पर चलते हुये, जो मेरे प्रतिपल मार्ग प्रदर्शक हैं।।
गुरुवर के चरणों का वंदन, करके मैं आगे बढ़ता हूँ।
उनके जीवन के अब अग्रिम सोपान की झाँकी गढ़ता हूँ।। (6)

श्री आदिनाथ जिनबिम्ब प्रतिष्ठा का मंगल आयोजन था।
सानंद हुआ सम्पन्न यहाँ, बस सबका यही प्रयोजन था।।
गुरुवर विरागसागर जी ने, नगरी से गमन किया आगे।
सब भाव विह्वल हो नर नारी, गुरुवर के पीछे थे भागे।। (7)

राकेश ने किया पड़गाहन

पहले, विहार के गुरू संघ, का शुभ मंगल आहार हुआ।
गुरुदेव का अंतिम पडगाहन, श्री मोतीलाल के द्वार हुआ।।
उस अंतिम दिन भैया राकेश, ने गुरूवर को पडगाया था।
भैया राकेश बहुत खुश थे, व अपना भाग्य सराया था।। (8)

गुरुवर से राग-गृह का त्याग

गुरु चरणों के अनुरागी ने, गुरु के चरणों से राग किया।
गुरुवर जब नगरी से निकले, तो उसने भी घर त्याग दिया।।
आचार्य संघ माँची रुककर, फिर मंजना ग्राम में आया था।
वैरागीपन भैया राकेश का, उसको संग ले आया था।। (9)

नवधाभक्ति

आहार चर्या का समय हुआ, मुनिसंघ की चर्या न्यारी थी।
मुनिसंघ को आहार देने की, राकेश ने की तैयारी थी।।
तन पर थे धवल वस्त्र प्यारे, मन में निर्मलता आई थी।
वैयावृत्ति की परिणतियाँ, अंतस में अहोस समाईं थीं।। (10)

इक श्रावक के घर खड़े हुये, थे उसके नम्र निवेदन पर।
ऐलक श्री विश्वजीतसागर, रुक गये उनके पड़गाहन पर।।
संग में श्रावक जन के भैया, राकेश ने विधि मिलाई थी।
लेकिन अब तक सारी विधियाँ, न उन्हें समझ में आई थी।। (11)

ऐलकजी को संग लेकर के, राकेश जी घर पे जाते हैं।
श्रावक जन अन्य साधुओं के, पडगाहन में रूक जाते हैं।।
ऐलक श्री विश्वजीतसागर, जी से बोले राकेश वहाँ।
हे स्वामिन! इच्छामि वंदन, मम गृह में करो प्रवेश यहाँ।। (12)

सुन करके ऐलक जी घर के, अंदर प्रवेश कर जाते हैं।
पर चौके के द्वारे जाकर, ऐलक जी कुछ रुक जाते हैं।।
भोजन शाला में आने का, राकेश निवेदन करते हैं।
उस नम्र निवेदन को स्वीकृत, ऐलकजी वहाँ पे करते हैं।। (13)

चौके में सन्मुख पाटा था, व पास में वृद्धा दादी थी।
राकेश को आगे क्या बोलूँ, ये विधी समझ ना आती थी।।
राकेश ये सोच रहे मन में, कुछ समझ न आये क्या मैं करूँ।
ऐलक जी सोच रहे मन में, बोले तो आसन गृहण करूँ।। (14)

दोनों ही खड़े हुये, मन में, दोनों के अलग विचार रहे।
राकेश वहाँ ऐलक जी के, चेहरे की ओर निहार रहे।।
ऐलक जी अपनी आँखों पर, अति मोटे लेन्स लगाये थे।
जिससे उनके दोनों नैना, बहु बड़े बड़े नजराये थे।। (15)

राकेश ये सोच रहे मन में, ये पड़ गये अपने हिस्से में।
गलती मुझसे कुछ हो गई है, जिससे ये लगते गुस्से में।।
महाराज! बैठिये आप यहाँ, राकेश सहजता में बोले।
ऐलक जी बैठ गये पाटे, पर मुस्काते होले होले।। (16)

ऐलक जी समझ गये फौरन, ये बालक तो अन्जाना है।।
होती साधु चर्या कैसी, शायद इसने न जाना है।
ब्रह्मचारी भैया अजय तभी, क्षुल्लक जी को पडगा लाये।
उच्चासन ग्रहण करें कहकर, उच्चासन पर थे बैठाये।। (17)

इस घटना क्रम पर बड़ी, गौर से भैया ने तब ध्यान दिया।
अपनी गलती हो गई कहाँ, राकेश ने तब स्वीकार किया।।
निर्विघ्न हुआ आहार वहाँ, ऐलक जी का उस चौके से।
राकेश प्रशन्न हुये भारी, शिक्षा पाई उस मौके से।। (18)

पिता का निवेदन

मंजना से ग्राम मवई पहुँचे, राकेश गुरूवर के संग में।
वैराग्य हिलोरें लेता था, रंग रहे थे गुरुवर के रंग में।।
तब मवई में था विश्राम अहा, संघ रात मवई में ठहर गया।
गुरुवर को यहाँ भिजाने को, तब पूर्ण जतारा शहर गया।। (19)



तब रात को पिता सनत जी ने, बेटा राकेश को समझाया।
स्कूल की छुट्टी हुईं बहुत, बेटा राकेश को बतलाया।।
दो दिन हो गये गुरुवर के संग, अब घर वापिस कब जायेंगे।
बोले राकेश अहार तलक, हम गुरुवर के संग जायेंगे।। (20)

ये सोच पिता संतुष्ठ हुये, कुछ दिन में घर आ जायेंगे।
राकेश सोचते थे मन में, न लौट के घर को जायेंगे।।
तब पिता लौट जाते घर को, आशाओं का इक दीप लिये।
राकेश भी आगे बढ़ते हैं, वैराग्यमयी संदीप लिये।। (21)

सिद्धक्षेत्र आहार जी

फरवरी अठारह का दिन था, जब सिद्धक्षेत्र पहुँचे गुरुवर।
श्री सिद्धक्षेत्र के आँगन में, प्रभु शांतिनाथ जी के दर पर।।
आओ यह अतिशय सिद्धक्षेत्र, इसका परिचय करवाता हूँ।
श्री सिद्धक्षेत्र पावन अहार, जी की महिमा बतलाता हूँ।। (22)

बुन्देलखण्ड की धरती का, हर कण कण है पावन प्यारा।
इस धरती पर इस सिद्धक्षेत्र, का अतिशय है सबसे न्यारा।।
इक्किस फुट ऊँची शांतिनाथ, भगवन् की प्रतिमा प्यारी है।
भक्तों के सारे दुख संकट, ये पल में हरने वाली है।। (23)

बारह सौ सैंतिस विक्रम का, सम्वत, शुभ बेला जब आई।
तब गल्हण सुत श्री उदयचंद, जाहड ने प्रतिमा पधराई।।
ब्राह्मण सुत श्री पापट से तब, सुन्दर प्रतिमा बनवाई थी।
श्री कुंथुनाथ अरनाथ की प्रतिमा, बाजू में गढवाईं थीं।। (24)

क्षेत्र का नाम अहार, क्यों पड़ा

प्राचीन काल की किवदंती, मैं तुमको यहाँ सुनाता हूँ।
इस क्षेत्र का नाम अहार पड़ा, कैसे घटना बतलाता हूँ।।
इस धरती पर इक मुनिवर ने, मासोपवास तप साधा था।
इस घोर तपस्या के द्वारा, निज आतम को आराधा था।। (25)

तब किसी यक्षणी ने आकर, मुनिवर को खूब सताया था।
उन नग्न दिगम्बर यतिवर पर, भारी उपसर्ग रचाया था।।
प्रभु शांतिनाथ की दिव्य कृपा से, घोर उपद्रव दूर हुआ।
मासोपवास के बाद मुनीवर, का अहार भरपूर हुआ।। (26)

सिद्ध क्षेत्र क्यों कहलाता है

तब से वसुधा का नाम अहा!, आहार क्षेत्र कहलाया है।
जो भी इच्छा लेकर आता, उसने वैसा फल पाया है।।
प्रभु मल्लिनाथ के शासन में, सत्रहवे मदन कुमार हुये।
इस सिद्धभूमि से वो अपने, सब कर्म काट भवपार हुये।। (27)

महावीर प्रभु के शासन में, जो अष्टम केवलि कहलाये।
वो ही विष्कम्बल जी मुनिवर, इस धरती से शिवपद पाये।।
तब से यह भूमि सिद्धक्षेत्र, के नाम से जानी जाती है।
भक्तों की श्रद्धा घुमड़ घुमड़, कर दर्शन करने आती है।। (28)

सिद्धभूमि पर सिद्धत्व की आधार शिला

अब बार दूसरी भूमि पर, भैया राकेश जी आये थे।
तब प्रथम बार तो रागी बन, अब वैरागी बन आये थे।।
इस सिद्धक्षेत्र पर सिद्धों सी, रख डाली थी आधार शिला।
गुरुवर विरागसागर जी के, चरणों में भव का पार मिला।। (29)



सज्जू, नीरज ने मिलकरके, राकेश के संग विचार किया।
व्रत ब्रह्मचर्य का लेने को, तीनों ने मन तैयार किया।।
परिवार की अड़चन आने से, सज्जू ने पुनः विचार दिये।
कुछ समय रहेंगे हम संघ में, व्रत ब्रह्मचर्य का बिना लिये।। (30)

किन्तु राकेश का मन तो अब, व्याकुल था संयम पाने को।
ज्यौं पिजड़े में पंछी कोई, व्याकुल रहता उड़ जाने को।।
राकेश ने पुनः विचार किया, अब मुझको तो व्रत लेना है।
व्रत लेने की अब बात यहाँ, गुरुवर से जाके कहना है।। (31)

प्रथम पाठ-किया याद

फिर पुनः विचार हुआ मन में, मन में ये चिंतन आता है।
कि अभी मुझे जिनशासन के, बारे में कुछ न आता है।।
जिनधर्म का क्या क्या आता है, पूछा तो क्या बतलाऊँगा।
गुरुवर के सन्मुख बेजवाब, व शर्मिन्दा हो जाऊँगा।। (32)

सोचा पहले हमको थोड़ा, जिनधर्म का ज्ञान जरूरी है।
गुरुवर के निकट जायें कैसे, ये बहुत बड़ी मजबूरी है।।
तब ही दुकान पर जाकर के, दो बुक खरीद भैया लाये।
इक ब्रह्मचर्य से संबंधित, दूजी छहढाला ले आये।। (33)

अब प्रथम ढाल छहढाला की, कंठस्थ रात में कर डाली।
राकेश की प्रज्ञा बचपन से, ही थी अचरज करनेवाली।।
सोचा अब कल प्रातः उठकर, गुरुवर के सन्मुख जाऊँगा।
व्रत ब्रह्मचर्य लेने हेतु, श्रीफल का अर्घ्य चढाऊँगा।। (34)

गर पूछ लिया गुरुवर जी ने, बोलो तुमको क्या आता है।
कह दूँगा छहढाला की, छह ढालों का मतलब आता है।।
सुनने की कहेंगे गर गुरुवर, तो पहली ढाल सुना देंगे।
न ज्यादा वहाँ समय होगा, वो बीच में बंद करा देंगे।। (35)

ब्रह्मचर्य का निवेदन

बाईस फरवरी को प्रातः, वो पास गुरु के जाते हैं।
श्री फल अर्पित कर, ब्रह्मचर्य के पावन भाव बताते हैं।।
गुरूवर विरागसागर जी सुन, कर बात मंद मुस्काते हैं।
फिर धीरे से बैठाकरके, राकेश को यूँ समझाते हैं।। (36)

माता-पिता की आज्ञा

बोले गुरुवर पहले तुमको, पितु माता को लाना होगा।
पहले उनकी अनुमति का इक, श्री फल भी चढ़वाना होगा।।
उनकी अनुमति मिल जाने पर, व्रत ब्रह्मचर्य तुमको देंगे।
पश्चात संग में रहने की, अनुमति भैया तुमको देंगे।। (37)

राकेश गुरूवर को वंदन, करके कमरे पर आते हैं।
अब क्या होगा कैसे होगा, ये सोच सोच घबराते हैं।।
पर तभी विनोद मवई वाले, ग्रह नगर जतारा जाने को।
राकेश के कमरे पर आये, जाने की बात बताने को।। (38)

आकर बोले राकेश! कहो, क्या साथ जतारा चलना है।
हमरी मानो तो चलो घरें, काहे को इते मचलना है।।
बोले राकेश घरे जावे को, अब विचार हमरो नईयाँ।
घर जाके दादा से हमरी, ये बात बता देना भईया।। (39)



घर पे जैसे ही पता चला, माता को न विश्वास हुआ।
पितु भाई और बहिना का मन, भी सुनकर बहुत उदास हुआ।।
स्नेह पिता का उमड़ पड़ा, माता की ममता भारी थी।
बेटा को घर ले आने की, करली सबने तैयारी थी।। (40)

राग-और वैराग्य का संघर्ष

चौबीस फरवरी को पितु, श्री बेटे को लेने जाते हैं।
परिवार संग जाकर अहार, बेटे को यूँ समझाते हैं।।
पितु सनतकुमार जी यूँ बोले, बेटा क्या मन में ठानी है।
यह ब्रह्मचर्य व्रत लेने की, करता तू क्यों नादानी है।। (41)

भैया राकेश यूँ कहते हैं, व्रत ब्रह्मचर्य का लेना है।
तुम सबको गुरुवर के सन्मुख, जाकर के सहमति देना है।।
बोले पितु हम आचार्य श्री, के पास न जावे आये हैं।
तुम जल्दी चलो घरे भैया, हम तुम्हें लिवावे आये हैं।। (42)

घर छोड़ आये हैं अब हमको, घर पे वापिस न जाना है।
गुरुवर के चरणों में रहना, अब हमरा यहीं ठिकाना है।।
पितु के स्वर आवेशित होकर, फूटे कैसे नहिं जाओगे।
क्या सबके सामने घर भर को, तुम शर्मिंदा करवाओगे।। (43)

माँ की ममता

तब तक माँ की ममता बोली, न ऐसे सबको ठुकराना।
पहले घर पे रहके सीखो, कुछ समय बाद फिर आ जाना।।
व्रत तो मुझको लेना ही है, सबको भैया समझाते हैं।
जब न समझा कोई तो, वो कमरे से बाहर जाते हैं।। (44)

वैराग्य-राग में द्वन्द छिड़ा, दोनों में एक न हारा था।
न राग की शक्ति कम होती, वैराग्य का बल भी न्यारा था।।
दिन भर वैरागी के सन्मुख, रागी जन जोर दिखाते हैं।
पर वैरागी के भावों को, कमजोर न वो कर पाते हैं।। (45)

पिता का मोह

अगले दिन फिर मिलकर सबने, भैया राकेश को समझाया।
रागी जीवों ने फिर मिलकर, वैरागी का मन भरमाया।।
अब पिता सनत जी का पारा, कुछ ऊपर सा नजराया था।
अब तक तो नम्र निवेदन था, अब गुस्सा स्वर में आया था।। 46)

में अभी वहाँ आचार्य श्री, के पास में फौरन जाता हूँ।
वो लाये भगाके हैं हमरे, बेटे को अभी बताता हूँ।।
बस तभी बीच में दादी जी, के अधरों से स्वर फूट पड़े।
वाणी में कम्पन था थोड़ा, आँखों से अस्रु फूट पड़े।। (47)

दादी का प्यार

बल्लू तुम घर पे नहीं गये, तो इतई जान हम दे देंगे।
कुछ दिनों बाद तुम आ जइयो, हम बिल्कुल भी न रोकेंगे।।
बोले बल्लू इस दुनिया में, सब लोग अकेले आते हैं।
जब जाने की बेला आती, सब लोग अकेले जाते हैं।। (48)

सब आये अकेले हैं जग में, जाना भी सदा अकेला है।
बस मोह के कारण इस, दुनियाँ में दिखता अद्भुत मेला है।।
दादी न मोह करो हमसे, हमको अपना हित करने दो।
संसार महादुख सागर से, अब दादी हमें उभरने दो।। (49)



फिर ये तो सिद्धक्षेत्र प्यारा, गर यहाँ समाधि पाओगी।
तब तो ये निश्चित ही मानो, तुम श्रेष्ठ गति में जाओगी।।
इतना कहकर राकेश तभी, कमरे से बाहर चले गये।
वैरागी के आगे रागीजन, फिर से सारे हार गये।। (50)

फिर तभी शाम को नगर जतारा, से सुभाष जी आये थे।
राकेश ने अपने मनोभाव, उनको जाकर बतलाये थे।।
बोले सुभाष जी भैया गर, तुममें हम दृढ़ता पायेंगे।
तो सहयोगी हैं हम तुमरे, घरवालों को समझायेंगे।। (51)

मित्रों का स्नेह

छब्बीस फरवरी का दिन था, तब क्षेत्र पे लगता था मेला।
गुरुवर के हाथों प्रथम, आर्यिका दीक्षा की पावन बेला।।
कॉलेज समय के मित्र सभी, भैया राकेश के आते हैं।
लोकेश, पवन संग आकर के, कमलेश वहाँ समझाते हैं।। (52)

इक ओर गुरूवर के द्वारा, हो रहीं आर्यिका दीक्षा थी।
इक ओर सभी मित्रों द्वारा, राकेश की कठिन परीक्षा थी।।
तब सभी मित्र बारी-बारी, राकेश का मन भरमाते थे।
गुजरे जीवन की सुन्दर सी, सौगातें उन्हें सुनाते थे।। (53)

पहले राकेश को फिल्म देखने, का था शौक बड़ा भारी।
नाना फिल्मों के नाम सुना, मन भरमाने की तैयारी।।
टीकमगढ़ के उस अमुक सिनेमा, में आई पिक्चर न्यारी।
राकेश भी हमरे साथ चलो, जा पिक्चर है बहुतई प्यारी।। (54)

बोले राकेश सुनो मित्रो, अब मेरा लक्ष्य निराला है।
तुमरी इन सारी बातों से, न मन ये डिगने वाला है।।
वो समय दूसरा था भैया, अब समय दूसरा आया है।
पहले थीं फिल्में बहुत लखीं, अब मोक्षमार्ग मन भाया है।। (55)

फिर तभी मित्र कमलेश ने उस, वैरागी से कुछ यूँ बोला।
भैया राकेश की वैरागी, परिणति को शब्दो से तोला।।
है कठिन डगर ये मित्र बड़ी, क्या तुम इसपे चल पाओगे।
पहले से चिंतन तुम करलो, वरना पीछे पछताओगे।। (56)

लोकेश खरे, थे पास खड़े, उनने भी अपनी बात रखी।
सन्मुख बचपन की यारी की, मीठी मीठी सौगात रखी।।
राकेश हमारे बचपन का, है परम मित्र प्यारा प्यारा।
वो बात हमारी मानेगा, विश्वास की मन में है धारा।। (57)

फिर पवन बीच में बोल पड़े, हमरा आना यहाँ सफल रहा।
लगता है फिल्म देखने अब, राकेश का मन भी मचल रहा।।
भैया राकेश को मित्रों की, न बात कोइ मन भाती थी।
आतम की परिणति बार-बार, आतम हित में लग जाती थी।। (58)

मित्रों की राग भरी बातों, से बचके बाहर जाना था।
इसलिये लघुशंका जाने, का सुन्दर किया बहाना था।।
मित्रों को छोड़ उस कमरे पर, वो पंच पहाडी पहुँच गये।
प्रभु शांतिनाथ के चरणों में, शुभ धर्म ध्यान में लीन भये।। (59)



जब इंतजार करते करते, मित्रों को काफी समय हुआ।
उस समय सभी मित्रों के, मन में आशंका का उदय हुआ।।
जब खोज करी तो पंच पहाड़ी, पर सबने उनको पाया।
जब ध्यान मगन राकेश मिले, तो मन अचरज से भर आया।। (60)

फिर पुनः सभी मित्रों ने मिल, बातों का जाल बिछाया था।
अपनी कॉलेज की यादों का, फिर से सामान सजाया था।।
राकेश मौन होकर के बस, सब बातें सुनते जाते हैं।
व लौट के पंच पहाड़ी से, फिर से नीचे आ जाते हैं।। (61)

रात विताना भारी है

दिन अस्त हुआ था और सांझ, का समय वहाँ पर आया था।
राकेश के मन में रागी जीवों, को लख चिंतन आया था।।
इन लोगों की चिंतनधारा, बस राग की आग जलायेगी।
रहकर यूँ इनके बीच अरे, ये रात गुजर ना पायेगी।। (62)

अतः श्री रावेश वहाँ, कमरे से बाहर आते हैं।
सीधे मुनिवर विशुद्धसागर, जी के कमरे में जाते हैं।।
जाकर के मुनिवर के चरणों, में नम्र निवेदन वहाँ किया।
अपने सारे हालातों को, जैसा का तैसा बता दिया।। (63)

तब मंद मंद मुस्कान भाव, मुनिवर के चेहरे पर आये।
फिर भैया जी से मधुर-मधुर, शब्दों में वो थे बतिआये।।
बोले मुनिवर भैयाजी! तुम, अब किंचित भी न घबराना।
वैयावृत्ति के बाद हमारे, तखत के नीचे सो जाओ।। (64)

प्रभु से प्रार्थना

मुनिवर का वात्सल्य लखकर, नयना उनके भर आते हैं।
वंदन करके प्रभु शांतिनाथ, के श्री चरणों में जाते हैं।।
जाकर के प्रभु को नमस्कार, कर अपनी व्यथा सुनाते हैं।
शब्दों के संग दो आँखों से, आँसु भी झरते जाते हैं।। (65)

बोले, भगवन! तुमको हमने, हृदय में सदा बसाया है।
शिवमग दृढ़ता से पाने का, अब हमने भाव बनाया है।।
रागीजन राग दिखाते हैं, बहुतई हमको समझाते हैं।
पर मेरे भावों को भगवन!, कमजोर नहीं कर पाते हैं।। (66)

दृढ़ निश्चय है मेरा भगवन!, न पीछे कदम हटाऊँगा।
निकला हूँ जिस पथ पर चलने, उसपर ही कदम बढ़ाऊँगा।।
मुझको जो कुछ भी करना था, भगवन! मैंने कर डाला है।
अब आगे का सब काम प्रभु, बस तुमरे हाथ सम्हाला है।। (67)

प्रभु चरणों नम्र निवेदन कर, वापिस कमरे में आते हैं।
देखा जब कमरे पर आकर, अचरज से वो भर जाते हैं।।
कमरे पर थे सब लोग मगर, इस विषय में न कोई बात भई।
सब रागीजन के बीच यहाँ, ये रात खुशी से बीत गई।। (68)

सत-बीस फरवरी की बेला, जब सुप्रभात अवसर आया।
राकेश के संग तब सिद्धक्षेत्र, का कण कण भी था हर्षाया।।
इस दिन इक महा तपस्वी के, संयम का शुभ उद्घाटन था।
फागुन का महिना भी ऐसा, लगता था जैसे सावन था।। (69)



बरसा, शान्ति बाबा का आशीष

उठकर के पिता सुबह जल्दी, राकेश के सन्मुख आते हैं।
आकर अपने प्रिय बेटा को, वो कुछ ऐसे समझाते हैं।।
बेटा व्रत लेने की तुमरी, जा मती बहुत ही सन्मति है।
तुमने मन में गर ठानी है, तो हमरी भी अब अनुमति है।। (70)

जब पिता के ऐसे वचन सुने, तो मन अचरज से भर आया।
ये सब हो गया भला कैसे, राकेश को नहीं समझ आया।।
प्रभु शांतिनाथ के चरणों का, ये अतिशय वहाँ नजर आया।
राकेश ने श्रद्धा से मन ही, मन शांतिनाथ को सिर नाया।। (71)

गुरुवर हम पर उपकार करो

प्रातः को साढ़े आठ बजे, आचार्यकक्ष में जाते हैं।
जाकर के पितु के संग वहाँ, गुरु चरणों शीष झुकाते हैं।।
गुरु को वंदन कर भावों से, चरणों में श्री फल धरते हैं।
गुरुवर दे दो व्रत ब्रह्मचर्य, विनती चरणों में करते हैं।। (72)

गुरूवर ये पिता श्री हमरे, हम संग अपने ले आये हैं।
संग अपने परिवारी जन की, सबकी अनुमति ले आये हैं।।
व्रत ब्रह्मचर्य का देकर के, गुरुवर हमपर उपकार करो।
गुरु संघ में रहने की हमको, आज्ञा देकर उद्धार करो।। (73)

दो वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत

राकेश का नम्र निवेदन सुन, गुरुवर थोड़ा मुस्काते हैं।
वात्सल्य भाव से सिंचित कर, गुरुवर जी प्रश्न उठाते हैं।।
गुरुवर बोले व्रत ब्रह्मचर्य, कितनी अवधि का लेना है।
बोले राकेश हमें गुरुवर, व्रत आजीवन ही लेना है।। (74)

गुरुवर सुनकर फिर मुस्काये, फिर सन्मुख दूजा प्रश्न किया।
क्या उम्र बताओ है तुमरी, क्या तुमने अब तक काम किया।।
गुरुवर का सुनकर प्रश्न वहाँ, गुरु चरणों शीष झुकाते हैं।
इक्कीस वर्ष हो गई उमर, भैया राकेश बताते हैं।। (75)

आजीवन व्रत न देंगे हम, पहले कम व्रत लेना होगा।
बोले गुरुवर संघ में रहकर, अपना परिचय देना होगा।।
बोले राकेश तो गुरुवर हम, दस पाँच बरस का ले लेंगे।
बोले गुरुवर दस पाँच नहीं, दो वर्ष का ही व्रत हम देंगे।। (76)

गुरु चरणों में वंदन करके, बोले भारी उपकार किया।
होकर प्रशन्न भारी मन में व्रत ब्रह्मचर्य स्वीकार लिया।।
पूछा गुरुवर ने व्रत पालन, क्या घर पे रहके करना है।
या संघ में रहकर व्रत पालन, कर करके और निखरना है।। (77)

वस्त्र परिवर्तन

उत्साह भरे शब्दों में फिर, राकेश गुरूवर से बोले।
अपने वैरागी हृदय के, उद्‌गार वहाँ पर यूँ खोले।।
गुरुवर जी मैं इस व्रत को, अब रहकर के संघ में पालूँगा।
रंगीन वस्त्र सब त्याग, गुरूवर धवल वस्त्र मैं धारूँगा।। (78)

पर वस्त्र नहीं हैं अभी यहाँ, उपलब्ध ये गुरुवर कहते हैं।
पर तभी विहितसागर क्षुल्लक, इक जोड़ी लाकर देते हैं।।
गुरुवर के हाथों से फौरन, तब वस्त्र धवल स्वीकार किये।
राकेश ने गुरुवर के सन्मुख, तब वस्त्र तुरत ही बदल लिये।। (79)



जब वस्त्र पुराने पेन्ट शर्ट, फौरन उतार के फेंक दिये।
तब अंत धरोहर समझ पुत्र की, पिता ने सब स्वीकार लिये।।
जिनशासन की रक्षा हेतु, अपना सुत वहाँ प्रदान किया।
इस तरह पिता ने वैरागी पथ, को आदर सम्मान दिया।। (80)

तब नगर जतारा के घर घर में, एकई बात सुनाती थी।
भैया का सुन वैराग्य सभी की, आँख तुरत भर आती थी।।
द्वय-पुण्य और पुरुषार्थ मिलें, तब ऐसा अवसर आता है।
रागी जीवों के बीच कोई, तब वैरागी हो पाता है।। (81)

स्कूल स्टाफ का प्रयास

वैराग्य की चर्चा सुन करके, स्कूल का सब स्टॉफ चला।
आकर अहार जी सिद्धक्षेत्र, पर गुरु विराग से आन मिला।।
राकेश जी जिस विद्यालय, में अध्यापन रोज कराये थे।
वो ही सब शिक्षक साथी अब, उनसे से मिलने को आये थे।। 82)

प्राचार्य रमेश जी चौरसिया, का गुरु से नम्र निवेदन था।
इक सरल स्वभावी प्रिय शिक्षक, की यादों का संवेदन था।।
बोले गुरुवर जी आपने हमसे, प्रिय शिक्षक को छीन लिया।
उनको भी साधु बना आपने जिन चर्या में लीन किया।। (83)

हमरा सारा स्टॉफ उन्हें, अब याद बहुत ही करता है।
सब छात्र समूह हमारा उनकी, सौगातें उर धरता है।।
हमरा सारा स्टॉफ और, सब छात्र प्रभावित रहते थे।
आचार्य नहीं दूजे उनसे, सब लोग गर्भ से कहते थे।। (84)

ये हमरा नम्र निवेदन है, इसको गुरुवर स्वीकार करें।
हमरे शिक्षक को लौटाकर, हमपर थोड़ा उपकार करें।।
बोले गुरुवर है बहुत खुशी, जो ऐसा अवसर पाया है।
जिनशासन को वर्धित करने, इक भव्य संघ में आया है।। (85)

जिसतरह अभी तक विद्यालय, में ज्ञान की ज्योति जलाई है।
सद् संस्कार की शिक्षायें, बच्चों को जो सिखलाई हैं।।
बसउसीतरह भैया आगे, जिनधर्म का मान बढ़ायेंगे।
सद्ज्ञान और सद्संस्कार के, सबको पाठ पढ़ायेंगे।। (86)

भैया राकेश के चेहरे को, गुरुवर ने मुस्काके देखा।
भैया ने बड़ी नम्रता से, गुरु चरणों में माथा टेका।।
जिनशासन को उन्नत करने, गुरु शब्दों में आशीष मिला।
आगे चलकर जो भैया जी के, जीवन में बन पुष्प खिला।। (87)

भैया राकेश ने हाथ जोड़, गुरु वचनों का सम्मान किया।
संग आये सब शिक्षकगण के, भावों का भी बहुमान किया।।
इस तरह सभी शिक्षक साथी, होकर निराश घर जाते हैं।
भैया राकेश भी अब अपनी, चर्या में लीन हो जाते हैं।। (88)

माँ का उपकार

माँ के उपकारों से बढ़कर जग, में कोई उपकार नहीं।
माँ से बढ़कर इस दुनिया में, कोई भी पद स्वीकार नहीं।।
देती है जीवन जो हमको, जो इस दुनिया में लाती है।
सह करके लाखों कष्ट हमारे, जीवन को विकसाती है।। (89)



माँ संस्कार की सौरभ है, माँ आदर्शों की खान रही।
माँ ही ममता की मूरत है, माँ करुणा की पहिचान कही।।
माँ बेटों की पथ दर्शक है, माँ ही बेटों की शान रही।
इसलिये धरा पर माँ जैसी, न कोई चीज महान कही।। (90)

माँ के सूत्र

वैरागी बेटे के सन्मुख, माँ की ममता अब हार गई।
बेटे को वापिस पाने की, जब हर कोशिश बेकार भई।।
तब माँ ने अपने सीने पर, पत्थर रख खुद को समझाया।
रो रोकर बड़ी कठिनता से, बेटे का मोह छूट पाया।। (91)

अपनी साड़ी के पल्लु से, आँखो के आंसु पौंछ लिये।
अपने वैरागी बेटे को, माता ने कुछ निर्देश दिये।।
इक ओर आँख से आँसु, की तब धारा बहती जाती थी।
माता भगवति अपने बेटे से, कुछ यूँ कहती जाती थी।। (92)

जाते हो बेटा शिवमग पर, सन्मार्ग यही कहलाता है।
पर मोहभाव मेरा बेटा, आँसु बन बाहर आता है।।
मैं रोक के अपने भावों को, तुमको इतना बतलाती हूँ।
इक माँ की सीख सुनो बेटा मैं, तुमको आज सुनाती हूँ।। (93)

बेटा! गुरुवर विरागसागर, जी मात पिता तुमरे होंगे।
जो मिले तुम्हें ऐसे गुरुवर, सौभाग्य बड़े तुमरे होंगे।।
बेटा! हमने था जन्म दिया, अब हमको याद न करना तुम।
वो ही है तुमरे मात पिता उनकी, आज्ञा चित धरना तुम।। (94)

बेटा जिस पथ पे निकले हो, धीरे धीरे आगे बढ़ना।
संयम के इन सोपानों पर, धीरे-धीरे ऊपर चढ़ना।।
तलवार की धार है ये बेटा, पग जरा सम्हल के तुम धरना।
तुम समय और तन के माफिक, बेटा संयम धारण करना।। (95)

होकर के सावधान बेटा, जीवन को नियमित तुम करना।
जो गुरुवर जी को बुरा लगे, ऐसा कोई काम नहीं करना।।
परिवार गुरु जिनशासन की, है लाज तुम्हारे हाथों में।
इनको उन्नत करने की भी, सौगात तुम्हारे हाथों में।। (96)

आगम सम्मत हर कारज हो, गुरू आज्ञा सबसे ऊपर हो।
गुरूवर से बड़कर न कोई, दूजा बेटा! इस भूँपर हो।।
गुरू आदेशों का पालन ही, जीवन का लक्ष्य बनाना तुम।
गुरू पद्चिन्हों को ही जीवन का, बस आदर्श बनाना तुम।। (97)

इन बातों को सुनकर बेटा, जीवन में धारण करना तुम।
पूरी दृढ़ता से जीवन में, अब इनका पालन करना तुम।।
गर अभी भी जो कमजोरी हो तो लौटके घर चल सकते हो।
कर लिया है धारण जो वाना, उसको भी तुम तज सकते हो।। (98)

वैरागी बेटे का संकल्प

सब बात ध्यान से सुन माँ की, भैया राकेश वहाँ बोले।
अपने मन के उद्गार सभी, बेटा ने माँ सन्मुख खोले।।
न काम करूँगा वो कोई, जिससे गुरू का सम्मान गिरे।
माँ बाप और जिनशासन का, जिससे कोई बहुमान गिरे।। (99)



बेटे की समझाइस

इक बात सुनो हमरी माता, घर पे जाके तुम मत रोना।
कर करके याद हमें माता, अब कभी दुखी तुम मत होना।।
छोटे भाई चक्रेश और महिमा, को खुश रखना होगा।
उन सबके संग मैया तुमको, खुद को भी स्वस्थ रखना होगा।। (100)

जिनधर्म बड़ा उपकारी है, न इसको छोड़ कभी देना।
कैसे भी दुख व संकट हों, न धर्म से मुँह मोड़ लेना।।
परमार्थ भूत जिन, आगम, गुरू नित इनका आराधन करना।
प्रभु भक्ति में अपना जीवन, आनंद सहित यापन करना।। (101)

किसी ने सब खोया-किसी ने सब पाया

इस तरह प्रथक संबंध यहाँ, माँ बेटे का हो जाता है।
जन्मों जन्मों का प्रेम मात्र, पल भर में ही खो जाता है।।
इस तरह किसी ने सब खोया, खोकर के किसी ने सब पाया।
इक तरफ प्रबल वैराग्य और, इक तरफ मोह की है माया।। (102)

माँ की पलकों पे बसे हुये, सब सपने पल में विखर गये।
लेकर विदाई अंतिम भैया, जब गुरू चरणों में निकर गये।।
दिल में अरमानों की अर्थी, आँखों में अश्क समंदर था।
माँ पिता से पुत्र बिछड़ने का, दर्दीला दुख का मंजर था।। (103)

बेटे से अंतिम ले विदाई, माँ बाप नगर की ओर चले।
लगता था जैसे अरमानों के, बसे हुये सब गांव जले।।
सब पहुँच गये घर पे लेकिन, मन किसी का घर पे न लगता।
कोई रोता उनकी यादों में, कोई रात रात भर था जगता।। (104)

इस तरह संघ में गुरुवर, के इक वैरागी का शुभागमन।
इक श्रेष्ठ शिष्य को पाकर के, था गुरुवर का भी हर्षित मन।।
इस तरह पूर्ण में करता हूँ, छटवाँ पावन सोपान यहाँ।
संग गुरू चरणों में है वंदन, जिनकी ये पावन कथा यहाँ।। (105)

छहवाँ पर्व पूर्ण

❑❑❑❑

चित्र समूह - 3
ऐलक दीक्षा दर्शन



मेंहदी के बाद आया क्रम नेत्रांजन का, लगाया भाभी ने।



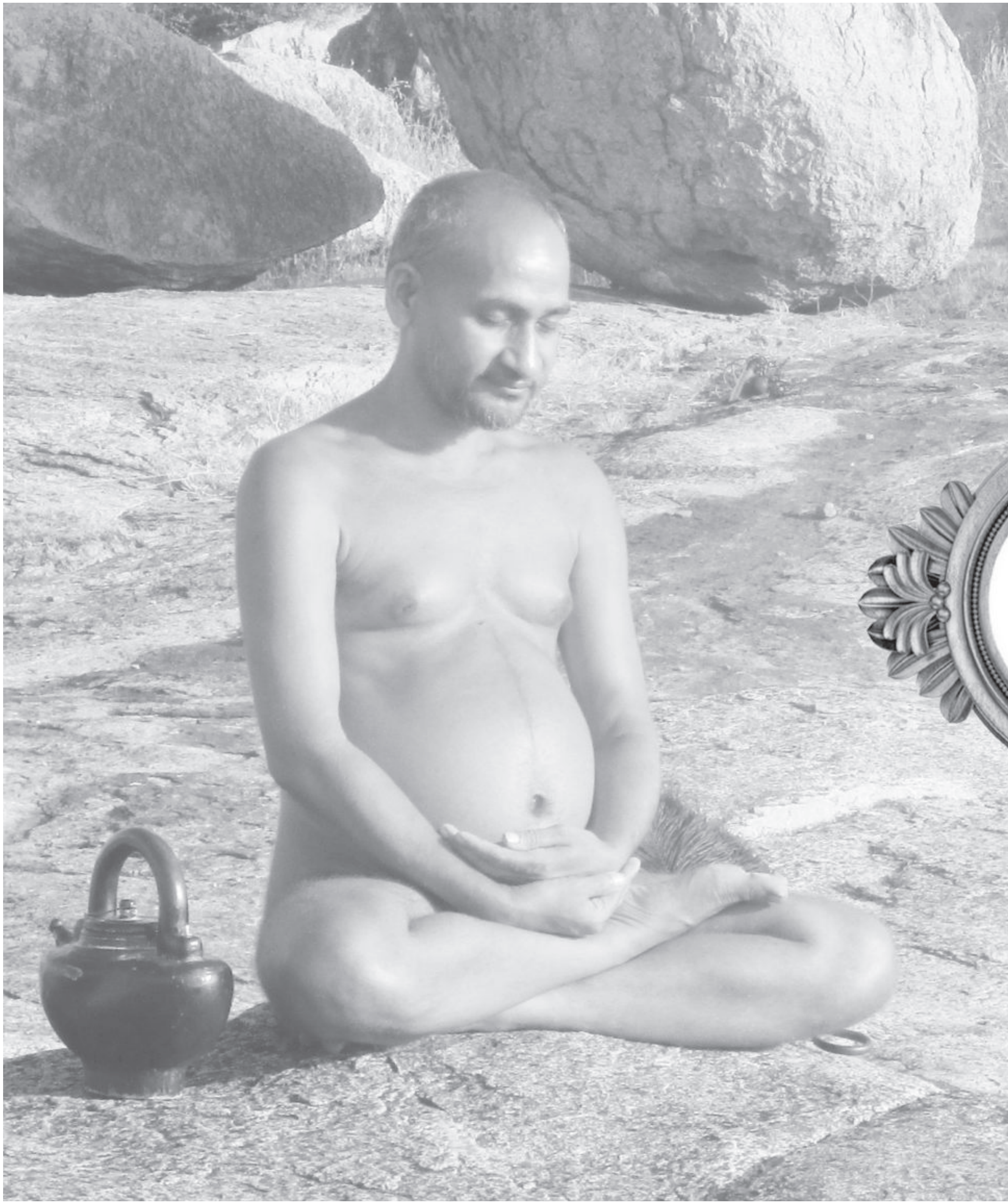
मेंहदी से पूर्व किया उवटन भाभी ने।



गृह नगर जतारा से चला, वर बारात लेकर मुक्तिवधु के ग्राम की ओर। ब्र. राकेश सहित सभी भाई। विनौली।



धर्म के अश्व पर सवार ब्र. राकेश। लौकिक शिक्षा का भवन छूट रहा है। अलौकिक शिक्षा की ओर चरण।



bhavlingi sant

shramanacharya shri 108 vimarsh sagar ji gurudev

"सप्तम् पर्व"

गुरु कृपा पर्व

संजीवनी भावलिंगी संत (महाकाव्य)

चित्र समूह - 3
ऐलक दीक्षा दर्शन



लोगों की आँखों में समा गया बिनौली का दृश्य।
आगे हैं–ब्र. राकेश भैया,
इनके पीछे छः भाई और जतारा प्रसन्न।



विनौली के बाद भैया जी संत हो जावेंगे अतः छोटी बहिन प्रियंका ने 'अंतिम पारिवारिक राखी' बांधी सभी भाईयों को। समीप ही माता श्री विराजित हैं।



राजकुमारों की सफल पंक्ति। बिनौली के लिए तैयार सातों वीर बहादुर।



भरी फिर अपने लाल की गोदी :
दादी बैनी बाई सहित पिता सनत जी,
माता भगवती जी, अग्रज राजेश,
बहिन प्रियंका, मौसाजी दीपचंद जी
एवं चाची किरण व्या ने। (जतारा।)



"सप्तम् पर्व"

"गुरु कृपा पर्व"

मंगलाचरण

तीर्थंकर केवली

जो गर्भ जन्म तप ज्ञान और, निर्वाण महापद पाये थे।
देवों ने आकर अवनि पर, पाँचों कल्याण मनाये थे।।
जो तीर्थंकर बनकर जन्में, जन जन को शिवमग दर्शाया।
उन तीर्थंकर केवलि प्रभु, का वंदन करके मन हर्षाया।। (1)

सामान्य केवली

था पुण्य और पुरुषार्थ योग, अर्हंत लिंग प्रगटाया था।
निज आतम में निज आतम से, निज आतम को ही पाया था।।
वो दिव्य साधना का बल था, कैवल्य ज्ञान को प्रगट किया।
उन सब सामान्य केवली जिन, के चरणों वंदन करे हिया।। (2)

समुद्घात केवली

सातों कर्मों की स्थितियाँ, आयु के सम कर लेने को।
करते हैं जिनवर समुद्घात, कर्मों का क्षय कर देने को।।
निज आत्म प्रदेशों को फैला, कर कर्म प्रदेश नशाते हैं।
उन "समुद्घात केवलि" प्रभु, को हम सादर शीष झुकाते हैं।। (3)

उपसर्ग केवली

जिनलिंग प्रगट कर भावलिंग, निज आतम ध्यान लगाया था।
विधि का विपाक उपसर्ग बना, मुनिवर को खूब सताया था।।
निज स्वात्म द्रव्य के स्वाश्रय से, केवल्य ज्ञान तब प्रगट किया।
"उपसर्ग केवली" कहलाये, वंदन कर हर्षित आज हिया।। (4)

मूक केवली

दीक्षा लेते ही मौन लिया, केवल्य स्वरूप उपाया था।
न दिव्य देशना कभी खिरी, सीधा शिवपुर को पाया था।।
बस रहे मूक इसलिये प्रभु, वो "मूक केवली" कहलाये।
करता हूँ वंदन बार बार, मम् कर्म समूह विनश जाये।। (5)

अंत:कृत केवली

कई जन्मों का पुरुषार्थ प्रबल, संबल बनकर जब प्रगट हुआ।
जिनलिंग की महिमा से अंतर, मुहुरत में केवल प्रगट हुआ।।
अतः केवली अंतः कृत, इस जग में प्रभुवर कहलाये।
श्रद्धा भक्ति से बार-बार, मस्तक चरणों में झुक जाये।। (6)

आओ प्रारंभिक वैरागी, जीवन की हम तस्वीर गढ़ें।
आओ गुरुवर के जीवन का, अब हम अग्रिम अध्याय पढ़ें।।
गुरुवर विरागसागर जी की, उस दिव्य नजर को है वंदन।
जिनकी यह जीवन गाथा है, उन चरणों का नित अभिनंदन।। (7)

पपौरा में गुरुसंघ

इस सिद्ध क्षेत्र से गुरुवर जी, का संघ पपौरा जाता है।
गुरुवर के संग पैदल चलना, भैया राकेश को भाता है।।
जब धवल वस्त्र धारण करके, भैया राकेश निकलते थे।
तब देखके रागी जीवों के, मन में वैराग्य मचलते थे।। (8)

अतिशय क्षेत्र पपौरा जी

इस क्षेत्र पपौरा का वैभव, जिनशासन का उजियारा है।
ऊँचे ऊँचे जिनमंदिर का, लगता समूह अति प्यारा है।।
ऊँचे जिनमंदिर के ऊँचे, शिखरों पर ध्वज लहराते हैं।
दर्शन करनेवाले भव्यों के, मन को सहज लुभाते हैं।। (9)



ऐसे अद्‌भुत तीरथ दर्शन, बहु पुण्य उदय से मिलते हैं।
जिनबिम्बों के दर्शन पाकर भव्यों के, सरसिज खिलते हैं।।
हर एक कदम तीरथ दर्शन को, भव्यों का जब बढ़ता है।
तब पुण्य सातिशय का ग्राफ, भव्यों का ऊपर चढ़ता है।। (10)

तीरथ का शुभ दर्शन करके, गुरु संघ बहुत हर्षाया था।
गुरुसंग दर्शनों का पहला, अवसर भैया ने पाया था।।
मन मोर सभी का नाच उठा, जिनबिम्बों का दर्शन करके।
भैया राकेश भी हर्षित थे, उस भूमि का पर्सन करके।। (11)

प्रथम कक्षा

इस भूमि पे रहकर गुरूवर ने, कक्षा एक लगाई थी।
अपने शिष्यों को रत्नकरण्डक, श्रावकाचार सिखाई थी।।
भैया राकेश भी गुरुवर की, हर शिक्षा उर में धरते थे।
अपनी दैनिक चर्या के संग, कंठस्थ पाठ वो करते थे।। (12)

निश्छल भाव से गुरु सेवा

निश्छल भावों से शिष्य कोई, जब अपनी गलती कहता है।
तो गुरुवर का आशीष भी, उसपे सदा बरसता रहता है।।
भैया राकेश का गुरु चरणों, में निश्छल अहा समर्पण था।
तन मन अर्पण, जीवन अर्पण, अपना सर्वस्व समर्पण था।। (13)

इक दिन गुरुवर के जीवन में, था उदय असाता का आया।
गुरुवर विरागसागर जी की, तब पीठ में दर्द उभर आया।।
गुरुवर थे कक्ष में एकाकी, भैया जी वहाँ पे जाते हैं।
जाकर के बड़ी विनय से तब, चरणों में शीष झुकाते हैं।। (14)

फिर नम्र निवेदन कर बोले, गुरुदेव कृपा का दान करें।
वैयावृत्ति का इक अवसर, गुरुवर जी हमें प्रदान करें।।
गर पीठ पे थोड़ा सेंक करूँ, तो दर्द ठीक हो जायेगा।
गुरुवर की सेवा करने का, शुभ लाभ हमें मिल जायेगा।। (15)

गुरुवर जी मुख से न बोले, वह आवेदन स्वीकार लिया।
गुरुवर की मौन सहज हाँ को, भैया जी ने भी जान लिया।।
बाजू वाले चौके में तब, भैया जी फौरन जाते हैं।
उस चौके के अन्दर इक बूढ़ी, अम्मा जी को पाते हैं।। (16)

बोले दादी से दादी जी! इक काम हमें करके दे दो।
हमको आवश्यक है दादी, तुम तबा गरम करके दे दो।।
कुछ देर बाद हम कारज से, जब निवृत होकर आयेंगे।
तब तबा आपका दादी जी, हम वापिस लौटा जायेंगे।। (17)

बोली दादी बैठो भैया! मैं पाटा तुम्हें लगाती हूँ।
तुम इंतजार करलो थोड़ा, मैं तबा गर्म कर लाती हूँ।।
ऐसा कहकर दरवाजे पर, दादी ने पाटा डाल दिया।
भैया जी ने भी सहज भाव से, पाटे को स्वीकार लिया।। (18)

तब क्षुल्लकजी श्री विमदसिंधु, लघुशंका हेतु आते हैं।
भैया राकेश को चौके में, पाटे पर बैठा पाते हैं।।
थोड़े से तेवर तेज किये, भैया को पास बुलाते हैं।
बोले तुम कैसे बैठे हो, कुछ डाँट के स्वर दिखलाते हैं।। (19)



भैया जी यूँ बोले, उनसे कुछ काम था मुझको चौके में।
क्षुल्लक जी बोले एकाकी महिला है देखो चौके में।।
ये सारी बात अभी जाकर, मैं गुरुवर को बतला दूँगा।
तुम नहीं जानते हो गुरुवर से, घर तुमको भिजवा दूँगा।। (20)

भैया जी ने तब शांत भाव से, सुनकर पुनः विचार किया।
मन ही मन में अपनी गलती, को भैया ने स्वीकार लिया।।
फिर सोचा क्षुल्लक जी गुरुवर, को सारी बात बतायेंगे।
उससे पहले ही जाकर के, हम बात स्वयं बतलायेंगे।। (21)

भैया राकेश जी फौरन ही, गुरुवर के कक्ष में जाते हैं।
गुरुवर के सन्मुख बात सभी, ज्यों कि त्यों जा बतलाते हैं।।
सुन करके बोले गुरुवर जी, भैया जी तुमने ठीक किया।
जो अपनी गलती आकर के, गुरुवर के सन्मुख बता दिया।। (22)

ऐसा ही गर बेटा अपना, जीवन सम्पूर्ण बना लोगे।
तो गुरुकृपा से जीवन में, उन्नति खूब तुम पा लोगे।।
भैया राकेश ने गुरु शिक्षा को, हाथ जोड़ स्वीकार किया।
गुरुवर ने सिर पर हाथ रखा, खूबई मंगल आशीष दिया।। (23)

भैया जी अब करके वंदन, गुरुवर को वापिस जाते हैं।
चौके से लेकर गर्म तबा, जल्दि वापिस आ जाते हैं।।
गुरुवर की कर वैयावृत्ति, अपना सौभाग्य मनाया था।
गुरुवर को कुछ आराम मिला, गुरु शुभाशीष को पाया था।। (24)

गुरु संघ टीकमगढ़ में

गुरुवर अब क्षेत्र पपौरा से, टीकमगढ़ नगरी आते हैं।
मंदिर मंझार में श्रावक जन, गुरुवर जी को ठहराते हैं।।
सब नये नये ब्रह्मचारी गण, था नया नया संयम पालन।
गुरु कदम कदम पर सिखा रहे थे, नव जीवन का संचालन।। (25)

जल गालन की शिक्षा

संघस्थ सभी भैया जन को, गुरुवर ने चर्या सिखलाई।
जल गालन व बिलछानी की, गुरुवर ने विधियाँ बतलाई।।
सबकी कैनों में कड़े लगे, सब कूप का जल उपयोग करें।
सब जीव दया के पालन में, अपना अपना उपयोग धरें।। (26)

गुरु आज्ञा

चर्या के संग गुरुवर जी ने, ज्ञान अर्जन का आह्वान किया।
सबने मिलकर गुरुवर जी के, इस निर्णय का सम्मान किया।।
सब नये नये थे त्यागीगण, गुरुवर ने अतः विचार किया।
तब प्रथम भाग के अध्यन का, गुरु ने सबको आशीष दिया।। (27)

तब सभी साधकों को गुरुवर जी, स्वयं पढ़ाया करते थे।
मध्यान्ह गुरुवर प्रवचन सार, स्वाध्याय कराया करते थे।।
अध्यात्म शब्द भैया जी को न समझ में कुछ भी आते थे।
कुछ समझ में न आने से भैया जी, अक्सर सो जाते थे।। (28)

इक दिन भैया राकेश ने सब, भैया लोगों से बात करी।
अपने मन की दुविधा सारी, भैया ने सन्मुख आज धरी।।
भैया राकेश ने पूछा यूँ, भैया जी इतना बतलाओ।
क्या प्रवचन सार में तुम्हें समझ, कुछ आता है ये जतलाओ।। (29)

सब एकइ स्वर में बोल उठे, न बात समझ कुछ आती है।
स्वाध्याय में जाकर बार बार, निद्रा ही हमें सताती है।।
भैया राकेश जी यूँ बोले, क्यों न हम सब इक काम करें।
उस काल में हम सब प्रथम भाग, की तैयारी अविराम करें।। (30)

प्रस्ताव सुना भैया जी का, सबने ही खूब पसंद किया।
अगले दिन से कक्षा पढ़ना, सब ही लोगों ने बंद किया।।
स्वाध्याय हुआ मध्यान्ह काल, ब्रह्मचारी कोई नहीं आये।
आखिर हो गई क्या बात भला, गुरुवर भी नहीं समझ पाये।। (31)

जब स्वाध्याय पूरा करके, गुरुवर कमरे में आते हैं।
आकर अपने कमरे में, भैया लोगों को बुलवाते हैं।।
फिर कक्षा में न आने का, कारण गुरुवर ने पूछ लिया।
सब प्रथम भाग पढ़ रहे थे हम, उत्तर सबने मिल एक दिया।। (32)

बिन गुरु आज्ञा के तुम सबने, आना ये कैसे बंद किया।
गुरु चरणों रहकर भी तुमने, न गुरू का कुछ बहुमान किया।।
इक बात ध्यान रखना तुम सब, स्वच्छेचारी स्वीकार नहीं।
शिष्यों का गुरु आज्ञा के बिन, कुछ भी होता उद्धार नहीं।। (33)

गुरुमुख से सुन कर्तव्य वचन, अपना अपराध समझ आया।
प्रायश्चित्त हमें दें गलती का, सबने इक स्वर में फरमाया।।
प्रायश्चित्त रूप में गुरूवर ने, इक दिन को घी का त्याग दिया।
सब भैया लोगों ने मिलकर, गुरुमुख से वो स्वीकार किया।। (34)

सबने मिल यही विचार किया गर, कक्षा में न जायेंगे।
तो प्रतिदिन गुरुवर के मुख से, हम त्याग रसों का पायेंगे।।
इस तरह रोज अब स्वाध्याय में, मिलकर के सब जान लगे।
तब रुचि पूर्वक सुनने से, सब विषय समझ में आन लगे। ।(35)

गुरु कृपा से हर काम सरल

श्री कर्मकाण्ड जी की कक्षा, का गुरुवर ने आरंभ किया।
जो जो कक्षा में बैठेंगे, नामांकन का प्रारंभ किया।।
भैया राकेश जी सोच रहे, हम प्रथम भाग पढ़ने वाले।
क्या कर्मकाण्ड को समझेंगे पहली सीढ़ी चढ़ने वाले।। (36)

सब ऐलक, क्षुल्लक, माताजी, मुनिराज नाम लिखवाते थे।
कक्षा में अध्ययन करने को, अपना उत्साह दिखाते थे।।
गुरुवर के पूछे जाने पर, राकेश मौन ही रहते हैं।
भैया राकेश को मौन देख, गुरुवर जी उनसे कहते हैं।। (37)

भैया राकेश भी कक्षा में, अध्यन हेतु आ सकते हैं।
इस तरह योग्य शिष्यों की क्षमता, गुरुवर वहाँ परखते हैं।।
गुरुमुख से ऐसे वचन सुने, तब मन में पुनः विचार किया।
गुरुवर को कर वंदन भैया, जी ने पढ़ना स्वीकार किया।। (38)

गुरुदेव कृपा से काम कठिन भी, सहज सुगम हो जाते हैं।
गुरुदेव शरण में आकर के, सब दुख संकट खो जाते हैं।।
तब गुरु कृपा से कर्मकाण्ड का, कठिन विषय भी सुगम हुआ।
अब शास्त्र कठिन होते है, ऐसा मन का भ्रम भी खतम हुआ।। (39)



व्याकरण की शिक्षा

कुछ समय बाद गुरुवर जी ने, व्याकरण शास्त्र प्रारंभ किया।
कातंत्र रूपमाला का सब, साधु वृन्दों को ज्ञान दिया।।
अब तो भैया राकेश की, हर कक्षा में भागीदारी थी।
हर एक परीक्षा में अच्छे, अंको की भी तैयारी थी।। (40)

गुरु अवतरण दिवस

उन्निस सौ सन पिचानवे में, बारह अप्रैल सु दिन आया।
गुरुवर का था अवतरण दिवस, शिष्यों में था उत्सव छाया।।
इक भव्य सभा में शिष्यों ने, गुरुवर का तब गुणगान किया।
भैया राकेश ने गुरु जीवन पर, लिख रचना यशगान किया।। (41)

कुछ शब्दों के संयोजन में, गुरु के जीवन को साधा था।
निज काव्य कला के धागों से, गुरुवर का जीवन बांधा था।।
हर एक शब्द में गुरुभक्ति, हर छंद में गजब समर्पण था।
वह काव्य यहाँ पर प्रस्तुत है, जिसमें जीवन भी अर्पण था।। (42)

गुरु विराग जीवन गाथा

—रचियता श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित की, माटी जिसे उगाती है,
यह माटी ही उस भव्य जीव की, जन्म भूमि कहलाती है।
ऐसे ही एक भव्य जीव, जो है गुरुवर विराग सिंधु,
उनके बारे में कहने से, पहले चरणारबिन्द वन्दू।।

दो मई सन् त्रेसठ का वह, दिन भी कितना पावन है,
जब इस धरती पर जन्म लिया, लग रहा था जैसे सावन है।
खिल गया हृदय माँ श्यामा का जब गोदी में उनकी आए,
और पिता कपूर हुए हर्षित, मन ही मन वह भी मुस्काए।।

उस ग्राम पथरिया के कण-कण, में नूतन रंगत छाई थी,
सूखे तरु सरिता, तालाबों में, झूम उठी तरुणाई थी।
खिल गईं कली झूमे तरुवर, प्रमुदित थी तरुण लतायें भी,
वह वसुन्धरा भी झूम उठी, प्रमुदित थी दशों दिशायें भी।।

बचपन की बाल चेष्टायें, सबके मन को हर लेती थीं,
मीठी तुतलाई बोली थी, सबको प्रसन्न कर देती थी।
जब-जब मुस्काते तब चेहरा भी, कमल सदृश खिल जाता था,
जब चाँद देखता शरमाकर, वह मेघों में छिप जाता था।।

अब चंचल मन की चंचलता को चंचल हो बतलाता हूँ,
जब देखें चंचल चन्द्र किरण, तब उनमें ही खो जाता हूँ।
चलिये चलते हैं चौके में चौके की बात सुनाता हूँ,

निर्वस्त्र लिये झाडू लोटा, कहते माँ से मुनिवर आए,
जल्दी ही पड़गाहन कर लो, और लड्डू पेड़ा खिलवाये।
माँ ने देखा तो विस्मित हो, वह अपने में खो जाती थी,
मन में असीम स्नेह जगा, बेटे को गले लगाती थी।।



अब इनका वह बचपन देखें, जब ये अरविन्द कहाते थे,
माँ के ये प्यारे कटनी के गुरुकुल में पढ़ने जाते थे।
गुरुकुल में पढ़ते थे संग-संग में व्रत भी धारण करते थे,
देख दुःखी प्राणी को उर में दया के भाव उमड़ते थे।।

बचपन में साधु बनने की, बात ये सोचा करते थे,
ललना के पाँव दिखत पलना में बात सार्थक करते थे।
समय चक्र चलते-चलते अब नया सबेरा हो आया,
सन्मतिसागर आ रहे ससंघ यह समाचार इनने पाया।।

मन नई हिलोरें लेता था, ये फूले नहीं समाते थे,
सन्मतिसागर के दर्शन करने लालायित हो जाते थे।
आ गया संघ सन्मतिसागर का, खूब ये सेवा करते थे,
मैं मुख्य बात अब बतलाऊँ, ये रोज कमण्डल भरते थे।।

ये रोज कमण्डल भरते थे, सेवा का फल इनने पाया,
खाली होकर ही भर सकते, यह तथ्य समझ इनकी आया।
मैं आज कमण्डल की गाथा को तुम सबको बतलाता हूँ,
कुछ और न कहकर इनकी मैं वैराग्य की गाथा गाता हूँ।।

धर्म सुधा बरसाने वाले, सन्मति संघ का गमन हुआ,
ये चले कमण्डल लेकर संग, निज इच्छाओं का दमन किया।
पहले इनकी चर्चाओं से, गुरुवर को ना आभास हुआ,
लेकिन जब चले संग में, तो उनको भी फिर कुछ भास हुआ।।

बस चलते-चलते जब बुढ़ार, की सीमा में प्रवेश हुआ,
इनके अन्तर की नवल ज्योति का यहीं पर श्री गणेश हुआ।
सन्मतिसागर से कहा उन्होंने मैं वापस नहीं जाऊँगा,
दो मुझको हे गुरुवर दीक्षा, मैं जीवन सफल बनाऊँगा।।

कम उम्र भाव दृढ़ देख गुरुवर, मन ही मन मुस्काते हैं,
ऐसे शुभ वचन सुने तो, फिर वो मना नहीं कर पाते हैं।
इस नवल ज्योति का, 20 फरवरी अस्सी में यों जन्म हुआ,
क्षुल्लक श्री पूर्णसागर हो, निज भावों को पूर्ण किया।।

देखो कर्मों का चक्र, भी बड़ा भयानक होता है,
जिसका भी आता कर्म, उदय वह तो कर्मों को रोता है।
बस ऐसा ही एक कर्म चक्र, इन पर भी मंडराया था,
लेकिन अनवरत साधना मन, बिल्कुल न डिगने पाया था।।

इनका भी दृढ़ निश्चय था कि, मैं पिच्छी कभी न छोड़ूँगा,
चाहे हो जाए समाधिमरण, सत्पथ से मुख न मोड़ूँगा।
संग यह भी था संकल्प, कि जिस पल कर्म बंध कट जायेगा,
मुनि दीक्षा धारण कर, मैं निज आतम शुद्ध बनाऊँगा।।

इस कर्मचक्र ने छः माहों तक अपना प्रभाव जमाया था,
किन्तु दृढ़ तप के आगे इसने भी निज माथ झुकाया था।
कर्मों की कड़िया टूट गईं, पहुँचे ये विमल सिंधु के पास,
दे दो गुरु मुनि दीक्षा मुझको, निज आतम हो मेरा आवास।।

इस तरह हुई मुनि-दीक्षा इनकी गुरुवर विमल सिंधू के पास,
सब राग छोड़ हो गये विराग सागर हैं जो सबके उर वास।
इनने अपनी अनवरत तपस्या का देखो फल पाया है,
हित उपदेशों से हम सबका भी जीवन सफल बनाया है।।

श्री सिद्धक्षेत्र द्रोणागिर में, आठ नवम्बर का शुभ दिन,
हर्षित थे सभी संघ साधु, हर्षित थे सब श्रावक जन-मन।
श्री विमल सिंधु का शुभाशीष पा पद आचार्य दिया तत्क्षण,
जयकारा गूँज उठा नभ में, आचार्य विरागसागर को नमन।।

जिनने निर्लेप गगन जैसा निज, आतम को है बना लिया,
धर कर रत्नत्रय का वाना, मन शुद्धोपयोग में लगा दिया।
जिनकी अमृत वाणी सुनकर, हम करते हैं निज कर्म शमन,
ऐसे गुरुवर के चरणों में निज भाल झुकाकर करूँ नमन।।

प्रथम केशलोंच

वैराग्य भाव जब और बड़ा, तो तन से निस्पृहता आई।
तब केश लोंच करने की, मन में अहा भावना गहराई।।
पहुँचे गुरुवर के चरणों में, श्री फल के संग निवेदन था।
भैया राकेश का केशलोंच, करने का शुभ आवेदन था।। (43)

गुरुवर जी बोले केशलोंच, हर कोई नहीं कर सकता है।
भैया दृढ़ता की केशलोंच, में होती आवस्यकता है।।
गुरुदेव आपका शुभाशीष, रहता मेरे संग पल पल है।
गुरुदेव न दृढ़ता कम होगी, आशीष आपका संबल है।। (44)

बोले गुरुवर ये मोक्षमार्ग की, सबसे कठिन परीक्षा है।
इस केशलोंच के बिना किसी की, न होती जिनदीक्षा है।।
मन में गर दृढ़ता है तुमरे, तो केशलोंच अभ्यास करो।
हम ऐलक जी से कह देंगे, तुम मन में दृढ़ विश्वास धरो।। (45)

मई पन्द्रह सन पिचानवे की, जब सुप्रभात बेला आई।
था केशलोंच पहला पहला, वैराग्य परिणति मुस्काई।।
गुरुवर ने अपने कर कमलों से, केशलोंच प्रारंभ किया।
इस कठिन परीक्षा को देना, भैया जी ने आरंभ किया।। (46)

इस केशलोंच की बेला में, मजबूती पाता भेदज्ञान।
तन से निस्पृहता आती है, पाकर आतम का बलाधान।।
तब केशलोंच की बेला में, अपना आतमबल जाना था।
में शीघ्र बढ़ूँ संयम पथ पर, भैया जी ने अब ठाना था।। (47)

राकेश बने, बड़े भैया

इक दिन गुरुवर ने कमरे में, भैया लोगों को बुलवाया।
भैया लोगों को पास बिठा, गुरुवर ने ऐसा बतलाया।।
तुम सबका क्रम निर्धारित हो, हमरे मन में ये इच्छा है।
चुनना है तुम सबको मिलकर, तुम सबकी यही परीक्षा है।। (48)

सबसे आगे किसको रक्खें, तुम ही सब मिलकर बतलाओ।
सबकी सहमति से मिलकर तुम, इक ऐसा नाम खोज लाओ।।
सबने मिलकरके इक स्वर में, राकेश का नाम सुझाया था।
ये ठीक है गुरुवर ने बोला, ये ही उनके मन भाया था।। (49)



बोले गुरुवर तुम चाहो तो, सबका क्रम हम निश्चित कर दें।
सब बोले-गुरूवर ठीक, आप ही इस क्रम को निश्चितता दें।।
गुरुवर ने सब क्रम निश्चित, कर भैया राकेश को बड़ा किया।
सबने खुश हो गुरु निर्णय पर, भैया राकेश को मान दिया।। (50)

पैसों से बड़कर धर्म की कीमत

उस पूर्व समय में भैया जी, जब विद्यालय में पढ़ते थे।
अपने उज्जवल भविष्य की, नित नूतन तस्वीरें गढ़ते थे।।
उस समय वजीफा की राशी, राकेश छोड़कर आये थे।
अब पिता सनत जी उसकी चर्चा, को टीकमगढ़ आये थे।। (51)

तब पिता सनत जी बोले यूँ, भैया राकेश से आकर के।
अपने हस्ताक्षर कर आओ, कॉलेज में भैया जाकर के।।
भैया राकेश जी बोले अब, हमरी भी कुछ मर्यादा है।
पैसों से बढ़कर अब हमको, इस भेष की कीमत ज्यादा है।। (52)

बाना पहिना है ब्रह्मचर्य, का अब न वापिस जायेंगे।
जो त्याग चुके हैं अब उसको, न वापिस हम ले पायेंगे।।
तब पिता सनत ने बार-बार, भैया राकेश को समझाया।
पर वैरागी व त्यागी के, मन को न कुछ भरमा पाया।। (53)

तब पिता सनत जी से बोले, भैया दिलीप कारी ऐसे।
तुम साथ हमारे चलना, चलकर अभी निकलवा दें पैसे।।
फिर से दिलीप कारी बोले, है आज बहुत खुश मेरा मन।
इस भेष संग भैया जी ने अब, बदल लिया अपना जीवन।। (54)

जब अभी विरक्ति है इतनी, भावी फल फिर कैसे होंगे।
जिन शासन के भैया हमरे, ये श्रेष्ठ सफल साधक होंगे।।
सुन करके पिता सनत जी का, तब हर्ष विभोर हुआ था मन।
ऐसा लगता था ऐसे सुत, को जन के सफल हुआ जीवन।। (55)

किया कंठस्थ प्रतिक्रमण

इक रोज सभी भैया लोगों, को गुरु ने पास बुलाया था।
तब पास बिठाकर गुरुवर ने, सबको ऐसे समझाया था।।
सब प्रातः चार बजे उठकर, अपना प्रतिक्रम तुम किया करो।
चालीस मिनिट का समय लगे, ऊँचे स्वर से सब पढ़ा करो।। (56)

सब प्रतिक्रमण में रोज सुबह, अब चार बजे जग जाते थे।
सुनकर उनकी आवाज, तेज, सब जाग पड़ौसी जाते थे।।
भैया जी को यह प्रतिक्रमण, श्रावक का पूरा याद हुआ।
गुरू आज्ञा से सब शिष्यों को, थोड़ा न थोड़ा लाभ हुआ।। (57)

आहार-चर्या में कुशलता

भैया राकेश का पुण्य बहुत, और प्रज्ञा बड़ी निराली थी।
गुरु आज्ञा व साधु सेवा, की परिणतियाँ भी आली थीं।।
जिन जिन साधु महाराजों को, तब अंतराय बहु आता था।
तब तब भैया जी को उनकी, चर्या में भेजा जाता था।। (58)

कभी विशद, विशल्य के संग ड्यूटी, कभी विमद विहित संग जाते थे।
साधु सेवा गुरु आज्ञा का, पालन कर हर्ष मनाते थे।।
साधु की सेवा का अवसर, पाके सौभाग्य मनाते थे।
अपने गुरुवर की अक्षरसः आज्ञा में समय बिताते थे।। (59)



इक दिन भैया जी ने सोचा, अंतराय बहुत ही आते हैं।
रोटी के ग्रास भी क्षुल्लक जी, को बिल्कुल न चल पाते हैं।।
दो ग्रास किये इक रोटी के, आहार कराना शुरू किया।
रोटी के ग्रास चलें ज्यादा भैया, ने यही विचार किया।। (60)

इक रोटी के दो ग्रास वहाँ, करके राकेश चलाते थे।
तब उनके मनोभाव लखकर, क्षुल्लक जी भी हर्षाते थे।।
श्रावक भी अक्सर कहते थे, ये भैया जब संग जाते हैं।
तब अपनी सूझ-बूझ से, ये साधु को अहार कराते हैं।। (61)

मुनि हेमन्त सागरजी से मिलन

हेमन्त सिन्धु जी संघ सहित नगरी, टीकमगढ़ में आये।
गुरुवर से पावन मिलन हुआ, सबके ही मन थे हर्षाये।।
कुछ दिन रुककर मुनिवर जी द्वय, जब टीकमगढ़ से जाते हैं।
तब क्षेत्र वानपुर तक पहुँचा, भैया जी पुण्य कमाते हैं।। (62)

गुरु-सेवा

गर्मी का जब मौसम आता, गुरुवर को बहुत सताती थी।
गर्मी के कारण रात-रात भर, नींद उन्हें न आती थी।।
भैया राकेश, विनोद, अरूण गुरु सेवा उर में धरते थे।
वे देर रात तक जाग जाग, गुरुवर की सेवा करते थे।। (63)

निद्रा गुरुवर को आ जाती, तो चुपके से हट जाते थे।
फिर पुनः देखने गुरुवर को, वो बार-बार आ जाते थे।।
भैया राकेश विनोद अरुण, इस तरह रात भर जग जगकर।
अपना सौभाग्य मनाते थे, गुरुवर की सेवा में लगकर।। (64)

ललितपुर चातुर्मास-1995

था चतुर्मास का काल निकट, श्रीफल चरणों में धरते थे।
गुरुवर को नगरी ले जाने, श्रावक जन आया करते थे।।
जब नगर ललितपुर वालों की, झोली का पुण्य उदय आया।
गुरुवर विराग के चतुर्मास, का अवसर था उनने पाया।। (65)

टीकमगढ़ से गुरु गमन किया, तब क्षेत्र बानपुर होत भये।
गुरुवर जी चातुर्मास हेतु, अब नगर ललितपुर पहुँच गये।।
उन्नि सौ सन पिचानवे का, अब चातुर्मास ये आया था।
कीना स्थापन चतुर्मास, सबने ही हर्ष मनाया था।। (66)

सामायिक प्रतिमा

प्रभु पार्श्वनाथ निर्वाण दिवस, दिन मोक्ष सप्तमी का आया।
गुरु चरणों श्रीफल अर्पित कर, प्रतिमा लेने मन दर्शाया।।
गुरु से त्रय प्रतिमा धारण, करके शुभाशीष तब पाया था।
संयम पथ पर इक और कदम, धरके मन अति हर्षाया था।। (67)

स्वाध्याय

गुरुवर विरागसागर जी ने, इक और नियम दिलवाया था।
संध्याबेला की सामायिक, करके स्वाध्याय कराया था।।
भैया राकेश ने सब भैया, के संग अध्यन प्रारंभ किया।
गुरु आज्ञा से चारित्र, चक्रवर्ती का शुभ प्रारंभ किया।। (68)

गलती का प्रायश्चित्त

इस चतुर्मास की बेला में, जब पर्वराज के दिन आये।
तब कर्म निर्जरा के सबने, नूतन नूतन उत्सव पाये।।
श्रावक के घर घर में होवे, बस संस्कार का आरोपण।
तब श्रावक संस्कार हेतु, था एक शिविर एक आयोजन।। (69)



नाना ग्रुप में तब संस्कार, श्रावक जन खूवई पाते थे।
गुरुवर विरागसागर जी तब, खुद संस्कार सिखलाते थे।।
तब आदिनाथ ग्रुप का जिम्मा, भैया जी को था दिया गया।
प्रतिक्रमण कराने का गुरुवर, द्वारा था शुभ संकेत दिया।। (70)

तब शाम समय वो श्रावक जन, को प्रतिक्रमण करवाते थे।
जैसा जितना सीखा गुरु से, उतना ही वो बतलाते थे।।
जब प्रतिक्रमण में वीर भक्ति, चउ कायोत्सर्ग दिये सबको।
ये भैया जी के शब्द सुनाई, दिये थे ऊपर गुरूवर को।। (71)

जब प्रतिक्रमण करवा करके, भैया जी वापिस आते हैं।
तब अपने पास वहाँ उनको गुरुवर, फौरन बुलवाते हैं।।
बोले गुरुवर जी प्रायश्चित, तुम बोलो कबसे देन लगे।
क्या अपनी ही मन मर्जी से, तुम भी सब कारज करन लगे।। (72)

गुरुमुख से ऐसे वचन सुने, भैया भय से कँप जाते हैं।
फिर थोड़ी हिम्मत जुटा, गुरुवर को ऐसे बतलाते हैं।।
गुरुवर! जी प्रायश्चित तो हमने, कभी किसी को दिया नहीं।
बोले गुरुवर लेकिन हमने, देते तुमको हैं सुना अभी।। (73)

अभी शाम जब प्रतिक्रमण, श्रावक जन को करवाया था।
चउ क्रतिकर्म का प्रायश्चित्त, क्या तुमने न बतलाया था?
भैया राकेश ने गुरुमुख से, जब अपनी गलती को जाना।
फौरन गुरु चरणों में वंदन, कर अपनी गलती को माना।। (74)

बोले भैया जी गुरुवर जी!, इस बात से हम थे अनजाने।
ये कृतिकर्म है प्रायश्चित्त के, नाथ न अब तक थे जाने।।
हम भी रोजाना करते थे, इसलिये सहज ही बतलाया।
आगे से ध्यान रखेंगे हम कह, शर्म से मस्तक झुक आया।। (75)

गुरुवर जी इस गल्ती का, कोई प्रायश्चित्त हमको दीजे।
आगे से ध्यान रखेंगे हम, इस बार क्षमा बस कर दीजे।।
बोले गुरुवर अजानता में, यह गलती तुमसे हुई यहाँ।
तुमने गलती को मान लिया, बस यही प्रायश्चित्त हुआ यहाँ।। (76)

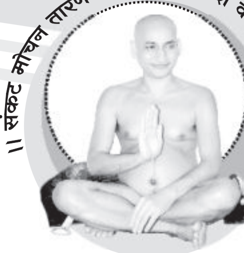
श्रद्धा, सेवा, समर्पण की शिक्षा

फिर भी तुमको बतलाता हूँ, मैं तीन बात उर में धरना।
है यही हमारा प्रायश्चित्त, जीवन भर तुम पालन करना।।
अपने गुरुवर के प्रति "समर्पण", सेवा व 'श्रद्धान' जहाँ।
दिन दूना रात चौगुना तब, शिष्यों का है उत्थान वहाँ।। (77)

पाकर के गुरुमुख से शिक्षा, मानो अमृत घट पाया था।
भैया जी ने गुरु शिक्षा, को सर माथे आज लगाया था।।
जो शिष्य गुरू की शिक्षा को, जीवन भर पालन करते हैं।
दुख संकट खुद उन शिष्यों के, सन्मुख आने से डरते हैं।। (78)

पिच्छि का अभ्यास

जो शिष्यों के हित में तत्पर हों, वही गुरु कहलाते हैं।
हर समय वो शिष्यों के हित में, नित नूतन सूत्र बताते हैं।।
इक रोज शाम को ब्रह्मचारी, गण गुरु की सेवा करते थे।
गुरु सेवा करके अपने अपने, पुण्य कोष को भरते थे।। (79)



बोले गुरूवर कल से तुम सब, जब सेवा करने आओगे।
अपने कर बसन हाथ में, ले भूँ शोधन करते आओगे।।
जब रोज बसन से भूँशोधन, करते करते तुम आओगे।
तभी पिछी से भूँशोधन के, योग्य सभी बन पाओगे।। (80)

भैया राकेश के साथ-साथ, ब्रह्मचारी गण जब चलते थे।
तब सम्यक् चर्या देख देख, श्रावक के हृदय मचलते थे।।
तब रोज रोज उनकी चर्या, लख श्रावक कहने लगते हैं।
ये ब्रह्मचारी भैया तो सबरे, साधुन जैसे लगते हैं।। (81)

गुरु के निकट सामायिक

रोज सुबह की सामायिक, गुरुवर जी निकट कराते थे।
प्रातः ही चार बजे भैया सब, गुरु निकट आ जाते थे।।
सब संघ की दैनिक चर्याओं में, पाटे रोज लगाते थे।
इस तरह सभी भैया साधु, सेवा करके हर्षाते थे।। (82)

भैया राकेश गये आचार्य श्री विद्यासागर जी के पास

गुरुवर विरागसागर जी की, अविराम लेखनी सतत चली।
उनकी अविराम लेखनी ने, इक श्रेष्ठ अनूठी कृति खिली।।
"आगम चक्खू साहू" पुस्तक, में आगम सार समाया था।
छपने से पहले कई प्रमुख, संतों को भी दिखलाया था।। (83)

आचार्य श्री विद्यासागर के, पास कृति ले जाने को।
भैया राकेश, अरूण दोनों को, भेजा कृति दिखाने को।।
बीनाबाराँ में विराजमान, थे गुरुवर श्री विद्यासागर।
दोनों भैया जी ने वंदन कीना, गुरु के चरणों जाकर।। (84)

'आचार्य वंदना' करने की, फिर अनुमति माँगी गुरुवर से।
गुरु ने प्रसन्न मन से अनुमति, दी अपना हाथ उठा करके।।
दो दिन तक संघ में रहने की, अनुमति माँगी दोइ भैया ने।
खुश होकर के आशीष दिया भव, सिन्धु के तैरइया ने।। (85)

आचार्य श्री विद्यासागर जी से वार्ता

दोनों ब्रह्मचारी भैया से, पूछें सूरी विद्यासागर।
तुम आये कहाँ से गुरू कौन, जल्दी बतलाओ समझाकर।।
भैया राकेश जी यूँ बोले, हम नगर ललितपुर से आये।
गुरुवर विरागसागर हमरे, हम शिष्य उन्हीं के कहलाये।। (86)

गुरुवर ने सुनकर के उत्तर, चेहरे पर हर्ष उभर आया।
तब पुनः उठा गुरू हाथ और, दोनों ने शुभ आशिष पाया।।
तब ही इक ब्रह्मचारी भैया, गुरु के कमरे में आते हैं।
दोनों ब्रह्मचारी भैया को, वो अपने संग ले जाते हैं।। (87)

संकोच

भैया राकेश, अरुण प्रातः, स्नान को छत पे जाते हैं।
आचार्य श्री को संघ सहित, कुछ दूर पे बैठा पाते हैं।।
तब चन्द्र, अभय, निर्भय सागर, कुछ चर्चा गुरु से करते थे।
कभी आगम पर चर्चा होती, कभी हास्य विनोद उभरते थे।। (88)

स्नान समय भैया राकेश, ने मन में कुछ संकोच किया।
गुरुवर विद्यासागर जी ने, उनके भावों को जान लिया।।
गुरुवर बोले महाराजों से, धीरे से ऐसे बतलाकर।
ये ब्रह्मचारी संकोच कर रहे, हैं हमको ऊपर पाकर।। (89)



भैया राकेश के कानों में, गुरुवर के शब्द पढ़े जाकर।
अतः सभी की तरह शीघ्र, तैयार हुये भैया न्हाकर।।
फिर वस्त्र धवल उज्ज्वल निर्मल, वो पहिन जिनालय जाते हैं।
अभिषेक किया पूजन करके, आहार चर्या में जाते हैं।। (90)

अवलोकनार्थ कृति भेंट

मध्यान्ह काल करके वंदन, भैया राकेश व अरुण चले।
गुरुवर विद्यासागर जी से, जाकर के दोनों पुनः मिले।।
करके विनम्रता से वंदन, भैया राकेश बताते हैं।
"आगम चक्खू साहू" पुस्तक का, कच्चा प्रिन्ट दिखाते हैं।। (91)

गुरुवर विरागसागरजी ने इस, पुस्तक का शुभ सृजन किया।
यज्ञोपवीत आदि विषयों को, गुरुवर ने संकलन किया।।
छपने से पहले गुरूवर ने, यह कृति आप तक भेजी है।
अवलोकन व संशोधन की, आशा भी संग संग भेजी है।। (92)

बोले गुरुवर विद्यासागर, ये कृति अभयसागर को दो।
फिर तभी एक ऐलक बोले, भिजवा देंगे हम हमको दो।।
इस तरह कृति देकर उनको, गुरुवर को शीष झुकाते हैं।
वापिस अपने गुरुचरणों में वो, नगर ललितपुर आते हैं।। (93)

गुरु के प्रति श्रद्धा की प्रेरणा

गुरु चरणों में जो गहन आस्था, श्रद्धा उर जो धरते हैं।
निष्कपट समर्पित भावों से, गुरु की सेवा जो करते हैं।।
गुरुसेवा ऐसे शिष्यों की, हर पीड़ा हरने वाली है।
गुरुदेव कृपा से उन शिष्यों की, हर इक रात दिवाली है।। (94)

भैया अरविन्द के जीवन में, इक कर्म असाता उदय हुआ।
तब बड़े बड़े धब्बों वाला, इक रोग सेऊआ उन्हें हुआ।।
कई वेद्य डॉक्टर दिखा चुके, आराम न किंचित भी पाया।
तब भैया जी राकेश ने उनको, एक उपाय था बतलाया।। (95)

बोले भैया राकेश गुरु, श्रद्धा से जीवन जिया करो।
तुम रोज रोज गुरु चरणों का, प्रक्षालन भैया किया करो।।
जब रोज वदन से गुरु चरणों, का शुभ प्रक्षाल लगाओगे।
तो गुरु भक्ति से भैया जी तुम, शीघ्र ठीक हो जाओगे।। (96)

भैया राकेश के वचनों पर, श्रद्धा अरविन्द जी लाते हैं।
अब रोज रोज गुरु चरणों को, श्रद्धाजल से धुलवाते हैं।।
फिर रोज गुरु चरणोदक, को भैया अरविन्द लगाते हैं।
गुरु भक्ति के पावन जल, से वो शीघ्र ठीक हो जाते हैं।। (97)

स्वपन में सर्प दर्शन

कार्तिकी महीने में भैया, जब पर्व दिवाली आता था।
तब सपनों में अहि दल दिखना, भैया को खूब सताता था।।
तब कभी स्वपन में सर्प सैकड़ों, पीछे भागा करते थे।
कभी सपनों में भैया जी को, विषधर वो काटा करते थे।। (98)

तब पर्व दिवाली आसपास ये, स्वपन रोज ही आते थे।
अक्सर भैया जी इन सपनों से, डर करके जग जाते थे।।
जाकर के पूज्य गुरूवर को, सारा घटना क्रम बतलाया।
सुन करके सारी घटना को, गुरुवर ने रस्ता दिखलाया।। (99)



बोले गुरुवर तुम पर्व दिवाली, के दिन मंदिर में जाना।
भगवान के सन्मुख जा करके, तुम ऐसा ऐसा बतलाना।।
जो स्वपन में हमको दिखते हैं, उनसे न राग अरु द्वेष हमें।
है वीतराग प्रभु की श्रद्धा, का मन में भाव विशेष हमें।। (100)

मैं जिन प्रभु का आराधक हूँ, तुम भी अर्चा उनकी करना।
उनकी पूजा अर्चा में तुम, अपनी श्रद्धा निर्मल धरना।।
भैया राकेश का गुरुवर के, प्रति और अधिक श्रद्धान हुआ।
जब सर्पों का सपनों में आना, और काटना बंद हुआ।। (101)

दीक्षा पूर्व शिखर जी की वंदना

अब चतुर्मास निष्ठापन की, बेला नगरी में आई थी।
तब विमल भावना दीक्षा की, भैया लोगों ने भाई थी।।
गुरुवर विरागसागर बोले, दीक्षा को तुम जल्दी पाओ।
उससे पहले सम्मेद शिखर, की भाव वंदना कर आओ।। (102)

तुम लोग अभी तो वाहन से, जल्दी करके आ जाओगे।
दीक्षा लेकर पैदल पैदल, फिर मुश्किल से कर पाओगे।।
भैया राकेश, विनोद, अरुण, अरविन्द, विनय, संदीप चले।
भैया विनीत व अजय, साथ, में चले गुरू आशीष तले।। (103)

इन त्यागी वृन्दों की टोली, बीना में पहले जाती है।
भैया विनोद की बहिना भी, बीना से संग हो जाती है।।
सब मिलकर पुण्य भावना ले, सम्मेद शिखर आ जाते हैं।
भैया राजेश म्यूजियम में, जाकर के सब रुक जाते हैं।। (104)

सबने मिलकर सम्मेद शिखर, की पावन भाव वंदना की।
दीक्षा के पावन भावों से, पर्वत की शुभ्र अर्चना की।।
जो भी भावों से तीर्थराज, का वंदन करने आता है।
कहते हैं नरकादि गतियों से, छुटकारा पा जाता है।। (105)

स्वयं की दृढ़ता

करके वंदन उस तीर्थराज का क्षेत्र बनारस जाते हैं।
तब वहाँ के आश्रम में, जाकर सब त्यागीजन रुक जाते हैं।।
फिर वहाँ व्यवस्थापक जी से, भैया राकेश ने बात करी।
हम लोग शुद्ध भोजन लेंगे, अपने मन की सब बात धरी।। (106)

आश्रम में वही व्यवस्थापक, ब्राह्मण की जाति धरता था।
भैया जी को था पता नहीं, वो वहाँ नौकरी करता था।।
बोला वो भैया लोगों से, जो यहाँ सु-आन पधारे हैं।
निश्चित ही मानों भैयाजी, ये तो सौभाग्य हमारे हैं।। (107)

तब सभी ब्रह्मचारी भैया, पूजन करने को जाते हैं।
बाजार से कुछ फल आदि, लेकर शीघ्र लौटकर आते हैं।।
अंदर बैठा इक व्यक्ति, जूता संग भोजन करता पाया।
ये देख सभी भैया लोगों को, न भोजन करना भाया।। (108)

उस समय व्यवस्थापक द्वारा, अति नम्र निवेदन किया गया।
तब उसके नम्र निवेदन पर, भोजन का निर्णय लिया गया।।
भोजन करने जब बैठ गये, भोजन की थाली आती है।
उड़कर लिज्जत पापड़ की, तब थैली इक बाहर आती है।। (109)

भैया विनोद की बहिना तब, चौके के अंदर जाती है।
तब भोजन है सारा अशुद्ध, आकर के वहाँ बताती है।।
बस उसी समय सारे भैया जी, थाली से उठ जाते हैं।
मिलकरके सभी ब्रह्मचारी, वापिस कमरे में आते हैं।। (110)

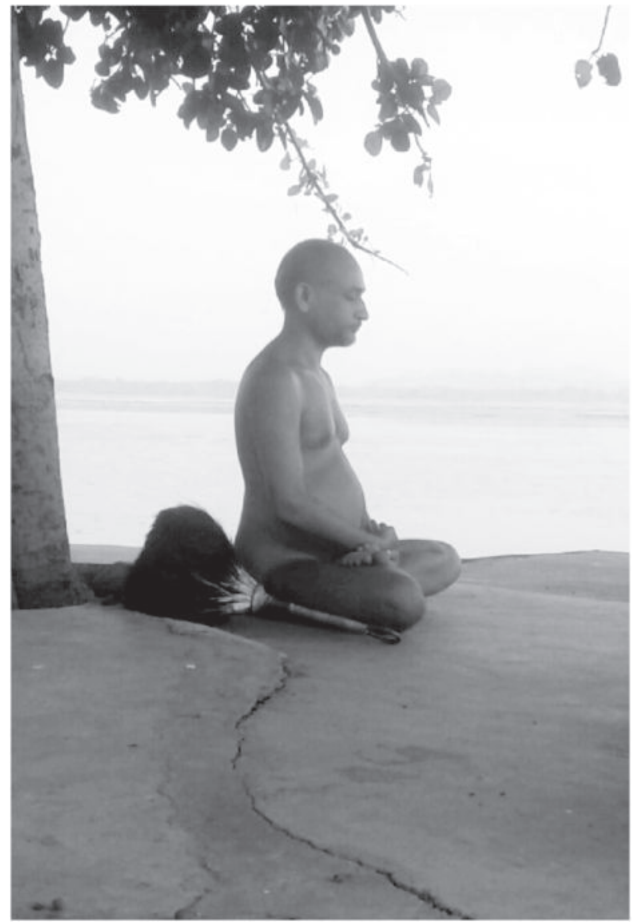
भैया राकेश ने उसी समय, भोजन का पूरा त्याग किया।
कुछ भी न लूँगा गुरु दर्शन से, पहले उनने नियम लिया।।
जब नगर ललितपुर में वापिस, सब भैया जी आ जाते हैं।
भैया राकेश सहित भैया, जन गुरू प्रायश्चित्त पाते हैं।। (111)

दीक्षा की भावना

गुरुवर जी संघ सहित लेकर, अब मंदिर अटा सु आते हैं।
फिर से मिलकर सब भैया, जन दीक्षा का भाव सजाते हैं।।
भैया राकेश सहित गुरुवर, ने दीक्षा निश्चित कर डाली।
बस सभी ब्रह्मचारी भैया लोगों की, झोली भर डाली।। (112)

इस तरह गुरु की गाथा का, सप्तम सोपान भी पूर्ण हुआ।
दीक्षा के पहले तक वर्णन, अब यहाँ तलक सम्पूर्ण हुआ।।
गुरुवर की चरण वंदना कर, अंतिम मंगल मैं करता हूँ।
गुरु जैसे अनुपम गुण पाने, नित गुरू अर्चना करता हूँ।। (113)

सप्तम पर्व पूर्ण



परम भाव लीन योगीराज विमर्शसागर जी
करते तप शैल नदी तट पर,
तरु तल वर्षा की झड़ियों में।



“अष्टम् पर्व”

गुरु अवलम्बन पर्व

चित्र समूह - 3
ऐलक दीक्षा दर्शन



देवेन्द्रनगर (पन्ना) म.प्र. के मंच पर
ब्र. राकेश राजकुमार के रूप में विराजित
(23.02.1996, तप कल्याणक का पावन दिवस, कुल 13 दीक्षाएं हुई थीं)



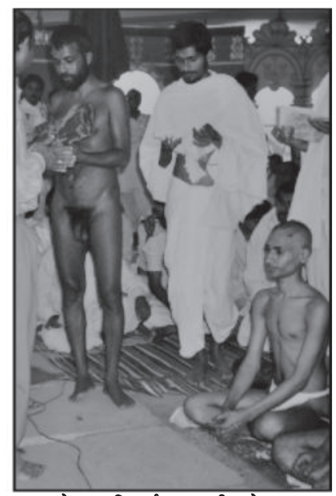
मुकुट, अलंकारादि का त्याग
करते हुए ब्र. राकेश।



वस्त्रों का त्याग करते हुए।



ऐलक जी के दिव्य बाना में :
ब्र. राकेश हुए ऐलक विमर्शसागर।
(देवेन्द्रनगर, 23/02/1996)



ऐलक विमर्शसागर जी को
शास्त्र भेंट करते हुए



"अष्टम् पर्व"

"गुरु अवलम्वन पर्व"

मंगलाचरण

हैं परालम्ब से भिन्न सदा, स्वालम्बन की नित परिणतियाँ।
पंचम गति को तुम प्राप्त हुये, प्रभु नाश दईं चारों गतियाँ।।
उपमायें सब फीकी लगतीं, प्रभु अनुपम पद को पाया है।
उन ज्ञान शरीरी अविनश्वर, प्रभु के चरणों सिर नाया है।। (1)

आत्मा के शास्वती, आनंद का रसपान है।
आत्मा का ज्ञान है, नित आत्मा का ध्यान है।।
चैतन्य ध्रुव है धाम, जिनका जो सतत निष्काम है।
निज आत्म रस के जो रसिक, सिद्धों को सतत प्रणाम है।। (2)

जिनका सतत उपयोग आतम, ध्यान में ही रम रहा।
सातवे छटवे गुणस्थानों, में ही तरतम रहा।।
उन पूज्य गुरुवर के अलौकिक, दिव्य जीवन की कथा।
सिद्धों के सम उपयोग की, निर्मल है अविकारी दशा।। (3)

दीक्षा की स्वीकृति

गुरुवर द्वारा दीक्षा की, सबको अनुमतियाँ मिल जाती हैं।
भैया लोगों के जीवन में, तब मिश्री सी घुल जाती है।।
दीक्षा के पावन समाचार, जब नगर नगर में जाते हैं।
भैया लोगों की बिन्दौरी, को गाँव नगर उमगाते हैं।। (4)

बीना में बिनौली

भैया विनोद की गृह नगरी, बीना में प्रथम बिनौली थी।
ब्रह्मचारी श्री संदीप 'सरल', ने भरी सभी की ओली थी।।
तब अनेकान्त विद्यामंदिर में, काज सभी सम्पन्न हुये।
बस एक मात्र भैया राकेश के, वहाँ तनिक प्रवचन हुये।। (5)

पथरिया में बिनौली

बीना नगरी से भैया सब, अब नगर पथरिया जाते हैं।
इस नगर पथरिया के लाला, ब्रह्मचारी अरुण कहाते हैं।।
इस पत्थर की नगरी से ही, गुरुवर विराग ने जन्म लिया।
पारस पत्थर बन गये गुरु, लोहे को छूकर स्वर्ण किया।। (6)

तिगौड़ा में बिनौली

अब नगर पथरिया से मिलकर, सब ग्राम तिगौड़ा आते हैं।
भैया संदीप का रूप देख, नर नारी सब हर्षाते हैं।।
इस ग्राम तिगौड़ा से चलकर, सब नगर घुवारा पहुँच गये।
इनसे पहले गुरूदेव संघ ले, नगर घुवारा पहुँच गये।। (7)

खुली जीप में बिनौली

तब खुली जीप में ही सवार, भैया जी सन्ध्या सात बजे।
उस नगर घुवारा में निकले, सब भैया देखो सजे धजे।।
इस नगर घुवारा से गुरुवर, का संघ ग्राम भगवाँ आया।
पैदल भैया गुरु संघ चले, यह देख सु-जन मन हर्षाया।। (8)

अजब बिनौली

भगवाँ में आकर सामायिक, करने भैया जी जाते हैं।
बस तभी युवा कुछ नगर ललितपुर, के फौरन आ जाते हैं।।
उन युवा साथियों ने, भैया लोगों को गजब सजाया था।
फिर सजा धजा कर अपने-अपने, कांधों पर बैठाया था।। (9)



मानव के कांधों पर सवार, ये पहली अजब बिनौली थी।
भगवाँ नगरी के घर घर में, फिर भरी गई शुभ ओली थी।।
भगवाँ से गुरुवर संघ सहित, फिर क्षेत्र द्रोणगिर जाते हैं।
तब ऐलक श्री विनम्रसागर, विज्ञान, गुरू को पाते हैं।। (10)

द्रोणगिर में पंचकल्याणक एवं दीक्षा

उस सिद्ध क्षेत्र द्रोणागिर पर, कल्याणक पाँच रचाते हैं।
तप कल्याणक में गुरुवर जी, त्रय दीक्षा वहाँ कराते हैं।।
ऐलक श्री विश्वजीतसागर, व विशद, मेरचंद जी भैया।
तीनों ने मुनि दीक्षा पाई, बन गये भव सिन्धु तैरइया।। (11)

जतारा में बिनौली

गुरुवर जी द्रोणागिर जी से फिर, वापिस भगवाँ होत भये।
ले संघ सहित गुरुवर विराग, अब बड़ा मलहरा पहुँच गये।।
दिन बारह फरवरी का आया हाथों में श्री फल लेकर के।
आ गये जतारा वासी तब, श्रद्धा से दामन भर करके।। (12)

संयम पथ पर बढ़ने वाले, बस एक जतारा के लाला।
भैया राकेश ने शिवपथ चुन, नगरी को रोशन कर डाला।।
गुरुवर हमको आशीष मिले, भैया जी को ले जायेंगे।
अपनी नगरी के गौरव की, विन्दौरी खूब सजायेंगे।। (13)

भैया राकेश के संग सारे, ब्रह्मचारी भैया जाते हैं।
पाकर के उन्हें जतारा में, सब नर नारी हर्षाते हैं।।
दिन तेरह फरवरी का प्यारा, नगरी में मानों उत्सव था।
सब उत्सव फीके दिखते थे, संयम का महा महोत्सव था।। (14)

गृह का अंतिम शृंगार

भाभी स्नेहलता पैरों में, म्हावर खूब लगाती थीं।
आँखों में काजल की किनार, भैया के खूब सजातीं थीं।
हाथों में मेंहदी बहिनायें, मिलकर के खूब रचाती थीं।।
सब आस पड़ौस की महिलायें, हर्षित हो भजन सुनातीं थीं।। (15)

यादों के झरोखे

यादों का इक सुंदर जहान, सबके ही दिल में बसता था।
तब पितु के आँसु झरते थे, कभी माँ का हृदय सिसकता था।।
सुत को दूल्हा बनवाने की, ख्वाहिश थी मैया के मन में।
इक सुन्दर दुल्हन लाने की, आशा पलती थी जीवन में।।
लगता था सपना टूट गया, हाथों से अपना छूट गया।
माता का मोह सिसकता था, कि भाग्य हमारा रूठ गया।। (16)

इक ओर पिता के सब अरमां, आँसु बन आँखों से बहते।
भैया चक्रेश भी आँखों से, बिन बोले ही दुखड़ा कहते।।
दादी समझाती थी सबको, कुछ धीर बंधाती थी सबको।
बहिना की राखी रोती थी, पर गीत सुनाती थी सबको।। (17)

अश्वों पे सवार, राजकुमार

श्री फूल चंद जी दादा ने, माथे पर साफा बाँध दिया।
मानो मुक्ति रानी वरने, भैया जी ने श्रृंगार किया।।
माथे पे पीले साफे पर, स्वर्णिम सा मुकुट निराला था।
तब कंठ सजा था फूलमाल से, गजरा खूश्बू वाला था।। (18)

भैया राकेश के घर पे ही, भैया लोगों का भोजन था।
श्रृंगारित भैया लोगों को, करने का शुभ आयोजन था।।
इस तरह सभी भैया जी के, सोलह सोलह श्रृंगार हुये।
प्रभु नेमिनाथ के दर्शन कर, अश्वों पर सभी सवार हुये।। (19)



भैया राकेश जी अग्रिम घोड़े, पर शोभा को पाते थे।
भैया को लखके नरनारी, सब फूले नहीं समाते थे।।
भैया राकेश जतारा की, गलियों से अहा निकलते थे।
तब जैन अजैन सभी बन्धु, दर्शन को खूब मचलते थे।। (20)

श्री सरस्वती विद्या मंदिर के, पास विनौली जब आई।
भैया राकेश के अभिवादन, करने सु-आस्था उमगाई।।
भैया राकेश को देख सभी, के नैन तृप्त न होते थे।
सब शिक्षक साथी देख उन्हें, पूरव यादों में खोते थे।। (21)

बोले सब मिलकर शिक्षक, गण हमरी तो आँखें धन्य हुईं।
है धन्य गली और चौवारे, सारी ही नगरी धन्य हुई।।
भैया राकेश जी इस नगरी, में खेले कूंदे पढ़े लिखे।
बचपन यौवन देखा सबने, पर आज विरागी रूप दिखे।। (22)

बस तभी प्रेम नारायण मिश्रा, यादों में खो जाते हैं।
जो पूर्व समय में कहे गये, वो वचन याद अब आते हैं।।
वो पूर्व समय में एक दिना, भैया राकेश से कहते थे।
कि "तुम्हीं मुनी मत बन जाना", ये सोच के आँसु बहते थे।। (23)

यादों की दुनियाँ में जाकर, वो लौट लौट कर आते थे।
कोई तिलक लगाते भैया को, कोई मालायें पहिनाते थे।।
अब पाण्डुक शिला पे होकर के, सब वापिस मंदिर आते हैं।
आगे आगे नवयुवक युवतियाँ, झूम झूम कर गाते हैं।। (24)

भक्तों ने एक बजार बीच, सुन्दर स्टेज सजाई थी।
मिलकरके नगर वासियों ने, भैया की गोद भराई थी।।
भैया राकेश के श्री मुख से, मंगल उद्‌बोधन हुआ यहाँ।
सब नगर प्रतिष्ठित लोगों ने, भी थे उद्‌बोधन दिये वहाँ।। (25)

सबने मिलकर इन सुन्दर यादों, को भी खूब सजाया था।
भैया के संग सुंदर चित्रों की, सौगातों को पाया था।।
कोई हँसता था कोई रोता था, कोई पाता था कोई खोता था।
इस तरह खुशी का व गम का, इक पल में दर्शन होता था।। (26)

भैया राकेश विनोद अरुण, संदीप विनीत अरविन्द रहे।
वीरेन्द्र अजय के साथ, विनौली भैया लक्ष्मीचंद रहे।।
इस तरह जतारा नगरी में, ये शुभ आयोजन गरिमा मय।
शुभ भाव रहे भैया जी की, ये शिवयात्रा हो मंगलमय।। (27)

भैया जी संग बिनौली के सब, मोही बंधन तोड़ चले।
माँ, बाप, भाई, और बहिना से, ये वैरागी मुख मोड़ चले।।
माँ की ममता से राग नहीं, बहिना की राखी रोती थी।
उस समय भाई चक्रेश के, हाथों की वैशाखी रोती थी।। (28)

अंतिम विदा

बहिना महिमा भैया, चक्रेश के सारे संबल छूट गये।
तब पिता सनत जी के इक, पल में सारे सपने टूट गये।।
पर्याय के संबंधी सारे, इक पल भी नहीं सुहाते थे।
इस वैरागी को अब तो बस, गुरुवर विराग ही भाते थे।। (29)



*सबकी आँखों में छोड़, अश्क भैया वापिस हो जाते हैं।
तब तक गुरुवर विरागसागर, पन्ना नगरी आ जाते हैं।।
सब पहुँच गये गुरु चरणों में, जाकर के शुभ आशीष लिया।
फिर नगर जतारा की विन्दौरी, का मंगल संदेश दिया।। (30)*

पन्ना में बिनौली

*पन्ना समाज को पता चला, खुशियों से भरी दिवाली है।
देवेन्द्र नगर में भैया जी, की दीक्षा होने वाली है।।
गुरुवर से ले आशीष तुरत, ही सभी व्यवस्था कर डाली।
रिक्सों में बैठाकर सबको इक, भव्य विनोली करवा ली।। (31)*

*गुरुवर के संग करके विहार, देवेन्द्रनगर में आते हैं।
सब नगर निवासी भैया, लोगों को लखके हर्षाते हैं।।
नगरी में पच कल्याणक की, तैयारी सारी पूर्ण हुई।
वा सभी व्यवस्थायें दीक्षा, आयोजन की संपूर्ण हुईं।। (32)*

ऐलक दीक्षा देवेन्द्रनगर

*नगरी से आठ किलो मीटर, दूरी पर ये आयोजन था।
गुरुवर को वहीं रुकाने का, सब लोगों का संयोजन था।।
साधु वृन्दों की चर्या को, कुछ कमरे वहाँ बनाये थे।
चद्दर बल्ली पाटीसन से, वो सुन्दर रुम सजाये थे।। (33)*

*भैया राकेश के परिवारी, जन भी चौका ले आये थे।
गुरुसंघ को अहार कराने के, शुभ मंगल भाव सजाये थे।।
गुरुवर जब चर्या को निकलें, ले श्रावक मन में भाव बड़े।
अत्रो अत्रो स्वर गूँज रहे, हाथों ले मंगल द्रव्य खड़े।। (34)*

*शुभ मंगल गुरु आहार हुआ, दिन बाइस फरवरी का आया।
आहार विधि का गुरुवर ने अभ्यास सभी को करवाया।।
गुरुवर विरागसागर जी का, तब शुभ मंगल निर्देशन था।
तब भीड़ थी इतनी भारी कि, दुर्लभ भी करना दर्शन था।। (35)*

करपात्र में आहार का अभ्यास

*कर पात्री बनकर भैया जी अभ्यास सभी जब करते थे।
तब भेष ब्रह्मचारी का पर, मुनियों सी शोभा धरते थे।।
भैया राकेश को उसी समय, था अंतराय आ जाता है।
फिर भी भैया जी का चेहरा तो, समता से मुस्काता है।। (36)*

*शेष सभी का निरंतराय, आहार वहाँ हो जाता है।
फिर गुरूसंघ ईर्याभक्ति कर, सामायिक पे जाता है।।
पंडित श्री उदयचंद जी का, सानिध्य वहाँ पर पाया था।
श्री गणधर वलय विधान सभी, भैया जी को करवाया था।। (37)*

*दिन बीत गया शुभ उत्सव में, सन्ध्या की बेला आई थी।
भैया जी की मिलकर सबने, मेंहदी की रस्म निभाई थी।।
भैया राकेश को जब मेंहदी, रचने का शुभ अवसर आया।
तब ब्रह्मचारिणी भुआ की बेटी, सीमा ने अवसर पाया।। (38)*

मेंहदी की रस्म

*इक ओर हाथ में मेंहदी के, रंग दीदी भरती जाती थीं।
संग संग अपने भावों को, भैया जी को वो बतलाती थीं।।
भैया जी आप इस मारग, के इक श्रेष्ठ उदाहरण बन जायें।
ये मेंहदी तुमको शिव रमणी, के वरण में कारण बन जाये।। (39)*



भैया राकेश ने मुस्काकर, उन भावों का सम्मान किया।
मुक्ति का वरण करूँगा मैं, अपने मन में संकल्प लिया।।
वैरागी रंग मेंहदी के संग, भावों में चढ़ते जाते थे।
प्रतिपल वैरागी सांचों में, जीवन को गढ़ते जाते थे।। (40)

वायु में भी वैराग्य घुला, नभ से वैराग्य बरसता था।
वैराग्य मई यह दृश्य देखने, खुद वैराग्य तरसता था।।
उस समय नगर की वसुधा, भी वैराग्य भाव उपजाती थी।
वैराग्य स्वरों में श्रृष्टि भी, वैरागी गीत सुनाती थी।। (41)

दीक्षा की घड़ियाँ

दिन तेइस फरवरी का आया, सबका ही एक प्रयोजन था।
भैया लोगों का सुप्रभात, में केशलोंच आयोजन था।।
भैया राकेश की मन दृढ़ता, तब दिखती अजब निराली थी।
मुखमण्डल की मुस्कान सभी, को अचरज करने वाली थी।। (42)

भैया लोगों का केशलोंच, सानंद हुआ सम्पन्न वहाँ।
यह दृश्य देखकर लाखों के, नयना हो गये थे धन्य यहाँ।।
मंगल स्नान की शुभ बेला, अब गुरु कृपा से आई थी।
परिवारी लोगों ने मिलकर, यह सुन्दर रस्म निभाई थी।। (43)

केश लोंच / मंगलस्नान

माँ बहिन, भुआ, भाभी चाची, भैया सब रस्म निभाते थे।
पर्याय का अंतिम न्वहन यहाँ, भैया जी का करवाते थे।।
माँ यादों में खो जाती है, नन्हा जब गोद में आया था।
तब मैंने इसको ऐसे ही, नहलाया और सजाया था।। (44)

मंगल स्नान के बाद सभी, भैया जिनमंदिर जाते हैं।
जाके सुन्दर भावों से प्रभु, पूजा अभिषेक रचाते हैं।।
पूजन करके भैयाजी सब, आहार चर्या में जाते हैं।
चौके में गुरु व गुरु संघ, को मिल आहार कराते हैं।। (45)

गुरु संघ को देकर यथायोग्य, आहार वो वापिस आते हैं।
मिलकरके सब दीक्षार्थीगण, सामायिक में खो हो जाते हैं।।
गुरु आज्ञा से दीक्षार्थीजन का, यथायोग्य श्रृंगार हुआ।
मानों मुक्ति श्री को वरने का, ये मंगल आधार हुआ।। (46)

अंतिम श्रृंगार

सबसे आगे गज पर भैया, राकेश जी अद्भुत सजते थे।
सब युवक युवतियाँ नाच रहे, व बैण्ड नगाड़े बजते थे।।
अंतिम शोभायात्रा थी, ये भैया की हाथी के ऊपर।
ताउम्र चलेंगे अब पैदल, पैदल ही इस सारी भूँ पर।। (47)

ये त्यागी सजे धजे देखो, जिस राह से अहा निकलते थे।
दर्शन करने को मानव क्या, स्वर्गों के देव मचलते थे।।
शोभा यात्रा अब चलकरके, दीक्षा स्थल पर आती है।
इक झलक देखने को उनकी हर, नजर मचल सी जाती है।। (48)

गुरुवर जी अपने संघ सहित, पहले ही वहाँ विराज रहे।
मानों पत्थर के इंतजार में, शिल्पी कोई विराज रहे।।
गुरूवर विरागसागर सबसे, ऊपर बैठे सिंहासन पर।
आजु वाजू में मुनि आर्यिका, संघ विराजा आसन पर।। (49)



दीक्षा मंच

*दीक्षार्थी गण सब आकर के, गुरुवर को धोक लगाते हैं।
मुखमण्डल पर खुशियों के, अद्‌भुत भाव उभरकर आते हैं।।
गुरुवर विरागसागर जी ने, दो हाथ उठा आशीष दिया।
नत मस्तक होकर के सबने, गुरु शुभाशीष स्वीकार किया।। (50)*

*सब हो कतार मय बैठ गये, गुरुवर का जब संकेत मिला।
सबका ही मुखमण्डल लगता, था जैसे कोई फूल खिला।।
भैया राकेश की कमसिन, कमसिन उम्र लुभाती थी मन को।
गोरी गोरी कोमल काया, भी खूब लुभाती जन मन को।। (51)*

दूल्हा बने मुक्ति वधु के

*सिर पे पीली पगड़ी प्यारी, व कमर पे नील कछोटा था।
भैया जी के उन्नत ललाट पे, तिलक शोभता छोटा था।।
पगड़ी के ऊपर स्वर्णिम स्वर्णिम, मुकुट बंधा प्यारा प्यारा।
हाथों में मेंहदी की आभा, था कण्ठ में फूल हार न्यारा।। (52)*

*जो भी लखता इक बार अहा! बस लखता ही रह जाता था।
आँखों से अस्रु वह जाते, भावों से यूँ कह जाता था।।
इस छोटी सी कोमल वय में, कैसा दृढ़ संयम धारा है।
सब मोह के बंधन तोड़ दिये, सब जग से किया किनारा है।। (53)*

*भैया राकेश के बाजू में, नौ और ब्रह्मचारी भैया।
उत्सुक थे सारे तिरने को, भवसिंधु ले संयम नैया।।
भैया राकेश की एक ओर, त्रय क्षुल्लक जी आ राज गये।
अब होकर सब तेरा पंथी, शिव के थे वहाँ विराज रहे।। (54)*

तेरह पंथी शिव के

*अब वारी नम्र निवेदन की, गुरु से दीक्षा आवेदन की।
तीनों क्षुल्लक जी ने बोली, गाथा आतम संवेदन की।।
गुरुवर विरागसागर सन्मुख, भैया राकेश जी अब बोले।
अपनी जन्मों की पीढ़ा के पट, आज यहाँ उनने खोले।। (55)*

रत्नत्रय की पालकी

*बोले, अनादि से हे गुरुवर!, मैंने बस राग बढ़ाया है।
अब हे गुरुवर तब चरणों में, अनुभव विराग का आया है।।
जिस संयम पथ पर बढ़ने का, मैं भाव हृदय में धरता हूँ।
उन भावों का सारा श्रेय, गुरु चरणों अर्पित करता हूँ।। (56)*

*मैं परम पूज्य गुरुवर, विरागसागर सा गुरुवर पाकर के।
मैं "लकी" मानता हूँ, खुदको इन श्री चरणों में आकरके।।
रत्नत्रय की पावन गुरुवर, वो शुभ्र पालकी हमको दो।
हैं जिसपे आप सवार हुये, गुरुवर हमको भी शरणा लो।। (57)*

*गुरुवर देना आशीष हमें, ये कदम कभी न थम पायें।
जब तक मुक्ति न मिल जाये, तब तक गुरुवर बढ़ते जायें।।
तब कवि हृदय भैया जी के, भावों में काव्य उभर आया।
वो चार लाइनें प्रस्तुत हैं, जिनको भैया जी ने गाया।। (58)*

"हे गुरूवर ! प्रार्थना है, पालकी दो बोधि की।
पाऊँ न निर्वाण जब, तक हो कृपा सम्बोधि की।।
तब चरण का दास बनकर, मैं रहूँगा उम्र भर।
बस तू ही है जिंदगी में, एक मेरा हम सफर।।"



हृदयोद्गार

अब सर्व प्रथम गुरु चरणों में, मैं क्षमाभाव अपनाता हूँ।
गुरुवर जी क्षमा करें मुझको, मैं बार बार सिर नाता हूँ।।
जाने अन्जाने में गुरुवर जो, भी अपराध हुये हमसे।
दो हाथ जोड़ मन से गुरुवर जी, क्षमा चाहते हैं तुमसे।। (59)

मुखरित हुये क्षमा के स्वर

सब करें क्षमा मुनिराज आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक भैया जी।
वा करें क्षमा वो मात पिता, जो देह के जन्म दिवैया जी।।
सब भाई बहिन सब मित्र सखा, सब रिस्ते नाते दार करें।
एक इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक, सब जीव क्षमा के भाव धरें।। (60)

गुरुवर जी भव भव की पीढ़ा, हरकर मेरा उद्धार करो।
दीक्षा देकर गुरुवर मेरे, मेरे ऊपर उपकार करो।।
ये विनय प्रार्थना भैया की, सुनके गुरुवर मुस्काते हैं।
गुरुवर सराहना करते हैं, श्रावक जयकार लगाते हैं।। (61)

इक ओर सभी संबंधों के, सब महल बिखरते जाते थे।
इक ओर संपदा संयम की, त्यागीजन भरते जाते थे।।
ना कोई बेटा होंगे अब, न किसी के ये देवर होंगे।
ना मामा, चाचा, भाई अब, ना मोह के वो तेवर होंगे।। (62)

बिखरते संबंधों के महल

माँ बाप के जीवन में देखो, ये कैसी बेला आई है।
गम और खुशी के मिश्रित स्वर, में गूँज रही शहनाई है।।
माता भगवति ये सोच रहीं, अब बल्लु किससे बोलेगी।
किसके सन्मुख जाके अपनी, पीढ़ायें सारी खोलेगी।। (63)

इक ओर पिता जी सोच रहे, वो महाराज कहलायेगें।
न प्रेम भरी चर्चा कोई, बस दूर से दर्शन पायेंगे।।
न अपने घर के सुख, दुख की चर्चा कोई कर पायेंगे।
न प्यार से इनको अब आगे, अपना बेटा कह पायेंगे।। (64)

भैया राकेश जी सोच रहे, जो आँसु आज बहाते हैं।
वो मात पिता भाई बहिना, तन के साथी कहलाते हैं।।
अब तलक मोह में पड़कर, के बस घोर महादुख पाये हैं।
मोही बनकर के हाय यहाँ, कितने भव व्यर्थ गँवाये हैं।। (65)

विरागी राकेश

फिर पूज्य गुरुवर ने दीक्षा का, अर्थ विशद बतलाया था।
इस शिवमग में आने वाले, सब कष्टों को समझाया था।।
कहीं फूल बिछेंगे राहों में, कहीं कांटे लोग बिछायेंगे।
कहीं पूजा व अर्चा होगी, कहीं गाली लोग सुनायेंगे।। (66)

समता का पथ

पूजा व गाली दोनों को, ही समता से सुनना होगा।
सब मान और अपमान छोड़कर, समतापथ चुनना होगा।।
इस तरह गुरुवर ने सबकी, दृढ़ता की पुनः परीक्षा ली।
फिर पूछ सभी से गुरुवर ने, आज्ञा दे डाली दीक्षा की।। (67)

फिर गुरुवर सिंहासन से, उठकर शिष्यों के सन्मुख आये।
आकर के शिष्यों के सन्मुख, वो मंद मंद से मुस्काये।।
गुरुवर की कृपा दृष्टि पाकर, शिष्यों को खुशी अपार हुई।
सिर पे गुरुवर ने हाथ रखा, यूँ लगा कि नैया पार हुई।। (68)



दीक्षा संस्कार

गुरुवर ने योग्य मुहुरत में, दीक्षा कारज आरम्भ किया।
पंडित जी, कुछ भैया जी, ने गुरुवर का तब सहयोग किया।।
तब तेरह स्वच्छ धवल उज्ज्वल, चोकोर वस्त्र मंगवाये गये।
भैया लोगों के हाथों से, जिनपर स्वस्तिक बनवाये गये।। (69)

था ठोस धरातल मंच जहाँ, वो वस्त्र वहीं बिछवाते हैं।
अक्षत से उन पर श्वेत धवल, स्वस्तिक अंकित करवाते हैं।।
फिर उन स्वस्तिक वस्त्रों पर जा, गुरुवर की आज्ञा पाकर के।
दीक्षा के मंगल भाव सजा, एक दीक्षार्थी बैठे जाकर के।। (70)

फिर गुरुवर का संकेत मिला, सब वस्त्रों का परित्याग करें।
तन के सारे आभूषण वा, सब अलंकार का त्याग करें।।
सुनकरके गुरुवर की वाणी, सब वस्त्राभूषण त्याग दिये।
भैया राकेश जी त्याग खड़े, सब मात्र एक कोपीन लिये।। (71)

यह वस्त्र त्याग का दृश्य देख, जय जयकारे हर ओर लगे।
यह दृश्य देखकर वैरागी, हर ओर भाव वैराग्य जगे।।
सब ध्यान मग्न हो बैठ गये, आतम चिंतन में लीन भये।
लख परम वीतरागी मुद्रा, रागादि भाव सब क्षीण भये।। (72)

गुरुवर जी उत्तर मुख ठाड़े, पूरब मुख थे दीक्षार्थी गण।
अब पंच मुष्ठि से गुरुवर ने, शिष्यों का किया केश लुंचन।।
फिर गन्दोदक का पावन जल, गुरुवर ने मस्तक पर छोड़ा।
फिर मंत्रों का उच्चार किया, अक्षती पुंज सिर पे छोड़ा।। (73)

फिर शुभाशीष का हाथ रखा, सबका सिर प्रक्षालन करके।
मंगल दर्शाया गुरुवर ने सिर, पे स्वस्तिक अंकन करके।।
भैया राकेश सहित सबके, सिर पे लवंग प्रक्षेप किया।
सबके अंदर गुरुवर जी ने, अणुदीक्षा का निक्षेप किया।। (74)

गुरुवर द्वारा अणुदीक्षा की, सानंद विधि सम्पन्न हुई।
अब नामकरण गुरुवर द्वारा, ये विधि यहाँ सम्पन्न हुई।।
गुरुवर जी के श्री मुख से जब, शिष्यों का नामकरण होता।
तब गगन भेदता भक्तों का, जय का शुभ उच्चारण होता।। (75)

नामकरण

कम समय में आकर ही जिनने, गुरु के विश्वास को जीता था।
गुरु भक्ति से निज आतम का, न कोई कोना रीता था।।
हर काम संघ का जब होता, जिनसे विमर्श गुरू करते हैं।
उन श्री भैया राकेश का गुरुवर, नाम विमर्श ही धरते हैं।। (76)

बने ऐलक विमर्शसागर

भैया राकेश को नाम मिला था, "ऐलक श्री विमर्शसागर"।
भैया विनोद बन गये वहाँ पर, ऐलक श्री विहर्षसागर।।
भैया जी अरुण विनिश्चय, सागर बनके सन्मुख आते हैं।
भैया वीरेन्द्र वहाँ पर अब, क्षुल्लक विभद्र कहलाते हैं।। (77)

लक्ष्मी भैया क्षुल्लक विमार्गण, सागर जी बन जाते हैं।
श्री विनय सागर जी क्षुल्लक, अब भैया विवेक बन जाते हैं।।
क्षुल्लक जी विनिश्चल सागर, जी भैया विनीत कहलाते हैं।
भैया जो अजय रहे अब तक, वो विजय सिंधु बन जाते हैं।। (78)



भैया अरविन्द को गुरुवर जी, से नाम विलोचन खूब मिला।
भैया संदीप का मन भी, नाम विनिर्भय पाकर खूब खिला।।
त्रय क्षुल्लक श्री विमुक्त सागर, थे साथ विशल्य, विभव सागर।
थे नाम पूर्व के दिये यहाँ, पर श्री गुरुवर विरागसागर।। (79)

तेरह दीक्षा सम्पन्न हुईं, जिनशासन ने गौरव पाया।
गुरुवर विराग-शिष्यों का यश, धरती अम्बर सबने गाया।।
गुरुवर के संघ में अब टोटल, चौतींस पिच्छियाँ कहलाईं।
यह बाल विरागी संघ देखकर, सारी दुनियाँ हर्षाईं।। (80)

अगले दिन प्रातः काल की, पावन बेला में मुखशुद्धि का।
गुरुवर ने था सम्पन्न किया, ये कारज भाव विशुद्धि का।।
मुख शुद्धि की क्रिया, दीक्षा के बाद जब तलक न होती।
तब तक साधक को प्रवचन, करने की ना ही अनुमति होती।। (81)

मुखशुद्धि

इस मुख शुद्धि की क्रिया में, कुछ व्रत उपवास लिये जाते।
उस नये नये साधक द्वारा, कुछ रस परित्याग किये जाते।।
ऐलक विमर्शसागर जी ने, व्रत णमोकार स्वीकार किया।
ऐलक जी ने दो रस आजीवन दही, तेल को त्याग दिया।। (82)

सब नव दीक्षित साधक गण, को गुरुवर ने मौन दिलाया था।
तब छैः महीने का मौन, महाव्रत ऐलक जी ने पाया था।।
बेटे के संयम भावों ने, पितु माता का श्रृंगार किया।
व्रत ब्रह्मचर्य का आजीवन, पितु माता ने स्वीकार लिया।। (83)

बेटे के पथ पर मातापिता

सब नये नये साधक गण थे, अब आई पाणना की बेला।
चौके हर ओर नजर आते, लगता था नगरी में मेला।।
ऐलक जी भारी उत्सुक थे, कैसी आहार चर्या होगी।
देने का अनुभव बहुत किया, लेने की क्या परिणति होगी।। (84)

प्रथम आहार

ऐलक विमर्शसागर जी अब, आहार मुद्रा ले निकले पड़े।
श्री सनतकुमार के चौके में, ऐलक जी पड़गे हुये खड़े।।
आहार विधि प्रारंभ हुई, तब अंतराय हो जाता है।
बस पल भर में सब लोगों का, आनंद वहाँ खो जाता है।। (85)

बस एक कमण्डल के जल, से अपने वस्त्रों को धोना है।
संयम की रक्षा करना है, अपने प्रमाद को खोना है।।
गुरुवर जी ने नव दीक्षित, सब शिष्यों को ऐसा नियम दिया।
सब शिष्यों ने होकर विनम्र, गुरु वचन वहाँ स्वीकार किया।। (86)

नियम

अब प्रतिक्रमण का अर्थ, गुरुवर ने शिष्यों को बतलाया।
शुद्ध उच्चारण कैसे करना, गुरुवर ने सबको सिखलाया।।
ऐलक विमर्शसागर जी ने, उत्साहित होकर भाग लिया।
गुरु के द्वारा सिखलाये गये, सारे अर्थों को सीख लिया।। (87)

प्रतिक्रमण की कक्षा

देवेन्द्र नगर से गुरुवर जी का, अब विहार हो जाता है।
अतिशयकारी श्रेयांसगिरि पर, गुरु संघ अब आता है।।
ऐलक विमर्शसागर जी का, दर्शन करके मन हर्षाया।
अतिशयकारी श्रेयांसगिरि का, प्रथम दर्श उनने पाया।। (88)

श्रेयांसगिरी में गुरुसंघ

गुरुवर जी ज्यादा नहीं रुके, आगे की ओर विहार किया।
तब नगर सलेहा आदि नगरों, को गुरुवर ने धन्य किया।।
अब गुरु संघ चलते चलते, कटनी नगरी में आया था।
गुरुवर की अगवानी करके, सबने सौभाग्य मनाया था।। (89)

ग्रीष्मकालीन वाचना कटनी

फिर ग्रीष्मकाल की भव्य, वाचना कटनी में आरम्भ हुई।
शुभ-धर्म आचरण की गुरुवर, द्वारा चर्चा प्रारंभ हुई।।
है महाग्रंथ जो रत्नकरण्डक श्रावकाचार कहाता था।
धर्मोपदेश में गुरु द्वारा वो, ही समझाया जाता था।। (90)

आलाप पद्धति की कक्षा, साधु वृन्दों के लिये चली।
श्रीधवला जी पर विद्वतजन, सब रोज वाचना करें भली।।
ऐलक विमर्शसागर जी को, तब अंतराय बहु आते थे।
समता भावों से ऐलक जी, कर्मों को खूब खपाते थे।। (91)

अंतराय

भोजन शोधन के लिये कभी, संघस्थ दीदीयाँ जाती थीं।
लेकिन जब तीव्र उदय आता, तो वो भी बचा न पातीं थीं।।
वैयावृत्ति धीरज भैया आकर, के खूबई करते थे।
ऐलक विमर्शसागर जी का, वे ध्यान बहुत ही धरते थे।। (92)

विद्वत श्री एल.सी.जैन जबलपुर, जब दर्शन को आते थे।
तब जैन गणित संघस्थ साधुओं, को आकर बतलाते थे।।
अब नगर जबलपुर की समाज का, बार बार आवेदन था।
गुरुवर जी वर्षायोग करें, उनका ये नम्र निवेदन था।। (93)

ऐलक विमर्शसागर जी इक, चौके में पड़गे जाते हैं।
उनके पीछे ऐलक विहर्ष जी, संग विनिश्चय आते हैं।।
आगे चौके में होता क्या, मैं आओ तुम्हें सुनाता हूँ।
क्या नमक फिटकरी का अंतर, मैं आओ तुम्हें बताता हूँ।। (94)

नमक फिटकरी का भेदज्ञान

तीनों ऐलक महाराजों की, आहार विधि प्रारंभ हुई।
श्रावक द्वारा नाना वस्तु, ज्यों ही देना आरम्भ हुई।।
ऐलक जी तीनों समझ गये, जैसे ही थोड़ा स्वाद लिया।
है नमक समझ कर भोजन में, फिटकरी चूर्ण है डाल दिया।। (95)

तीनों ऐलक इक दूजे को, बस लख लखके मुस्काते हैं।
आँखों आँखों में अपने, भावों को वो वहाँ बताते हैं।।
ऐलक विमर्शसागर जी को, था अंतराय तब होता है।
श्रावक जन को जब पता चला, तो सबका ही मन रोता है।। (96)

गुरुवर जी अपना संघ लिये, आगे विहार कर जाते हैं।
श्रावक जन मिलकर वाकल में, आहार चर्या करवाते हैं।।
ऐलक विमर्शसागर जी का, फिर अंतराय हो जाता है।
गुरु संघ नहीं रुकता फिर भी, आगे विहार हो जाता है।। (97)

मार्ग का भ्रम

तब ग्राम सिहौरा ओर गुरु के, पग नित बढ़ते जाते थे।
बस शाम समय श्रावक मिलकर, गुरु का विहार करवाते थे।।
जो निश्चित था स्थान किया, गुरु संघ वहाँ न पहुँच सका।
जंगल में रस्ता भटक गये, न आगे कोई मारग था।। (98)

मौसम था साफ अतः जंगल में, गुरुवर जी रूक जाते हैं।
इक उच्च शिला पर शिष्य सभी, गुरुवर जी को बैठाते हैं।।
लेकर अपनी अपनी चिटाई, भूमि पर साधु बैठ गये।
अस्वस्थ रहे कुछ साधक जन, लेकर चटाई वो लेट गये।। (99)

कुछ मिनिट बाद ही मौसम के, अंदाज दिखे अचरज वाले।
बस कुछ ही समय में घिर आये थे, बादल तब काले काले।।
हो गई हवायें तेज वहाँ, पर काले मेघ गरजते हैं।
बिजली की चमचम साथ मेघ तब, मूसलधार बरसते हैं।। (100)

तब ग्राम सिहौरा के श्रावक, लेकर के वाहन आते हैं।
वाहन में भरकर टेण्ट तखत, पाटे सब लेकर आते हैं।।
बस कुछी समय में टेण्ट गाड़कर, पाटे अंदर डाल दिये।
फिर सभी साधुओं को जल्दी से, उसके अंदर वहाँ किये।। (101)

ऐलक विमर्शसागर जी को जब, टेण्ट के अंदर न पाया।
गुरुवर विरागसागर जी ने, फौरन श्रावक से पुछवाया।।
गुरुवर ने वहाँ इशारे से पूछा, ऐलक जी कहाँ गये।
सब साधु दिखते हैं अंदर, पर ऐलक जी न दिखा रये।। (102)

गुरु का हृदय

श्रावक जन ने ऐलक जी को, पानी में लेटा तब पाया।
बोले श्रावक जन ऐलक जी!, गुरुवर ने अंदर बुलवाया।।
ऐलक जी को लेकर श्रावक, जल्दी से अंदर आते हैं।
गुरुवर के सन्मुख श्रावक जन, ऐलक जी को ले जाते हैं।। (103)

त्रय दिवस हुये थे अंतराय, तन में कमजोरी भारी थी।
पानी में भीग गये जिससे तब, देह ठिठुरती सारी थी।।
ऐलक जी के सिर पे गुरुवर, ने अपना हाथ फिराया था।
उनका सिर अपनी गोदी में, रख करके उन्हें सुलाया था।। (104)

ऐलक जी के पूरे शरीर, पे गुरुवर ने मालिस करदी।
ऐलक जी को यूँ लगा, कि जैसे तन में एनर्जी भरदी।।
अब ठंड हुई थोड़ी सी, कम ऐलक जी को निद्रा आई।
गुरुवर जी ने अपने हाथों से तब चिटाई थी उढवाई।। (105)

फिर नगर सिहौरा में गुरुवर का, सुबह सुबह आगमन हुआ।
गुरुसंघ को पाके श्रावक जन, का मन खुशियों से मग्न हुआ।।
तब बाल ब्रह्मचारी भैया, जी अजित सिहौरा रहते थे।
जो गुरु सेवा में सदा काल ही, सबसे आगे रहते थे।। (106)

ब्र. अजित भैया का सेवाभाव

गुरुवर विद्यासागर जी के, अब शिष्य श्रेष्ठ कहलाते हैं।
मुनिवर प्रसादसागर जी के, अब नाम से जाने जाते हैं।।
भैया जी अजित सिहौरा, ने जब सारी घटना को जाना।
ऐलक जी की वैयावृत्ति, करने का निज मन में ठाना।। (107)

ऐलक जी को करके वंदन, भैया जी बाहर जाते हैं।
मिट्टी की पट्टी लेकर के, वो शीघ्र लौटकर आते हैं।।
ऐलक जी से बोले भैया, उपचार तनिक करवा लीजे।
बस उदर पे अपने मिट्टी की, पट्टी थोड़ी रखवा लीजे।। (108)

इससे तन की गर्मी सारी, जल्दी बाहर आ जायेगी।
बस कुछ ही समय में आपको, थोड़ी सी राहत मिल जायेगी।।
कुछ समय बाद ही गुरुसंघ, आहार चर्या को जाता है।
ऐलक जी का फिर से चौथा, अब अंतराय हो जाता है।। (109)

फिर संघ सिहौरा से चलकर, अब आगे को बड़ जाता है।
तब गांव से बाहर संघ, सभी जंगल करने को जाता है।।
जंगल हेतु इक साधु जी, इक वृक्ष के नीचे जाते हैं।
बस उसी समय उस वृक्ष के मालिक, भी फौरन आ जाते हैं।। (110)

गुरु की सीख

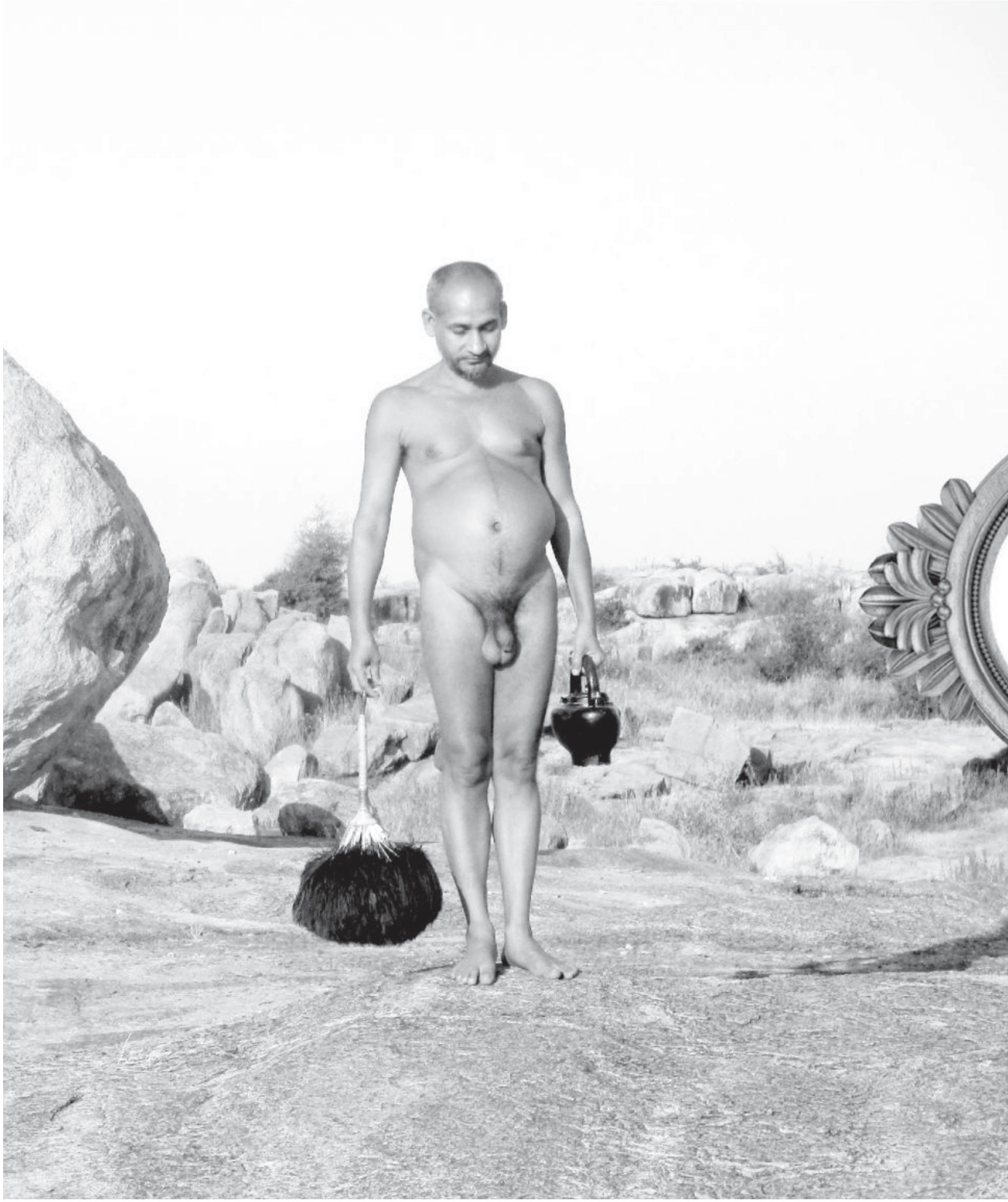
उसने उस वृक्ष के नीचे से, तब साधु जी को उठा दिया।
साधु जी ने यह घटनाक्रम, गुरुवर को जाके बता दिया।।
उस समय पूज्य गुरुवर जी ने, इक नियम सभी को दिलवाया।
कि वृक्ष के नीचे जंगल करने, न जायें ये समझाया।। (111)

ऐलक दीक्षा तक का वर्णन, ये अष्टम पर्व सुनाता है।
पहली दीक्षा की शुभ गाथा, ये पर्व तुम्हें बतलाता है।।
ये पर्व हुआ है अब पूरा, आगे का नौ में वर्णन है।
गुरु शुभाशीष से लिखा गया, गुरु चरणों का स्पर्शन है।। (112)

अष्टम पर्व पूर्ण



प्रफुल्लित सहज मुद्रा में
पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागर जी



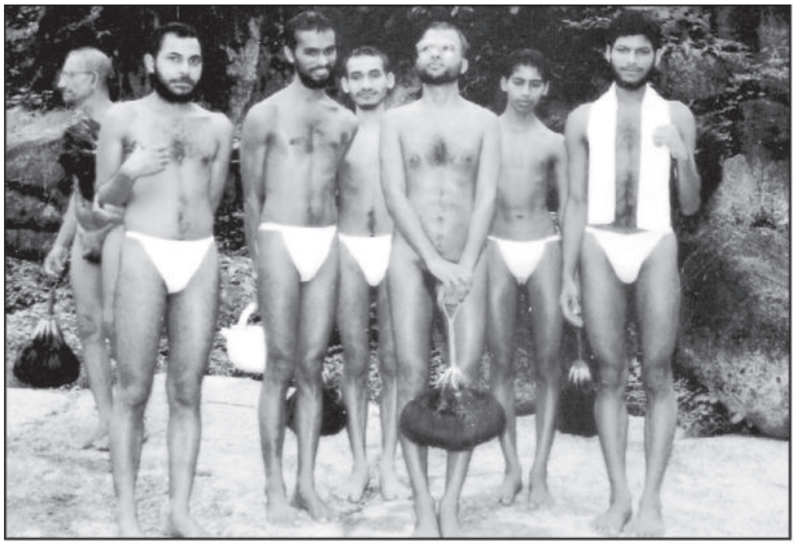
bhavlingi sant
shramnacharya shri 108 vimarsh sagar ji gurudev

"नवम् पर्व"

साधना पर्व

संजीवनी
भावलिंगी संत (महाकाव्य)

चित्र समूह - 3
ऐलक दीक्षा दर्शन



मढ़िया जी जबलपुर में परम पूज्य आचार्य विरागसागर जी के साथ ऐलक विमर्शसागर साथ में है मुनि विश्वजीत सागर जी, ऐलक विशल्यसागर जी, ऐलक विहर्षसागर जी ऐलक विनिश्चय सागर जी एवं क्षुल्लक विमदसागर जी।



भिण्ड-चातुर्मास : 1997, पिच्छिका परिवर्तन के अवसर पर ऐ. विमर्शसागर जी की पुरानी पीछी, उनके देहतत्व के पिता दो प्रतिमाधारी श्रावक श्री सनतकुमार को प्रदान करते हुए : आचार्य विरागसागर जी।



मंगलाचरण

जिनके चरणों में बैठ श्रमण, जन व्रताचरण अपनाते हैं।
जो पंचाचारों का पालन, खुद करते और कराते हैं।।
जिनशासन की समृद्धि का, जिनने सब भार सम्हाला है।
उन सूरिश्वर के चरणों का, वंदन दुख हरने वाला है।। (1)

आचार्य परमेष्ठि का स्वरूप

जो पंचाचारों का पालन कर, आचारत्व सु-पाल रहे।
जो श्रुत का बन अथाह सिंधु, गुण आधारत्व सम्हाल रहे।।
देते हैं जो नित प्रायश्चित, गुण व्यवहारत्व के धारी हैं।
सदा सदा उन सूरिश्वर के, चरणों धोक हमारी है।। (2)

जो आयोपाय को दर्शाकर, गुण दोष निरावृत करते हैं।
जो अपने प्रकारत्व द्वारा, नित क्षपक की सेवा करते हैं।।
जो उत्पीड़क बनकरके, शिष्यों के नित दोष निकाल रहे।
उन सूरि गुरुवर के चरणों में, भक्ति से नत भाल रहे।। (3)

जो शिष्य स्वयं के दोष प्रगट, गुरु के सन्मुख कर जाते हैं।
तब गरम लोह पे जल की बूँदों, सा गुरुवर पी जाते हैं।।
क्षपकों को सुख देने वाले, जो मनहर शब्द सुनाते हैं।
उन सुख वहत्व गुण के धारी, गुरुवर को शीष झुकाते हैं।। (4)

ऐसे ही गुरुवर हैं जिनकी, ये मंगल जीवन गाथा है।
जिनके चरणों में आकर के, खुद ही माथा झुक जाता है।।
गुरुवर विमर्शसागर जी की, शुभ कथा को आगे कहता हूँ।
उनका ही शिष्य हूँ छोटा सा, उनके चरणों में रहता हूँ।। (5)

दंश परिषह जय

निर्गृंथ साधना के साधक, नित बाईस परिषह सहते हैं।
नित कर्म निर्जरा करते हैं, मुँह से न कुछ भी कहते हैं।।
गुरुवर जी नगर सिहौरा से, आनंद पुरी में आते हैं।
तब रात को साधक दंश परिषह, सह सहकर मुस्काते हैं।। (6)

जबलपुर प्रवेश

अब नगर जबलपुर में गुरुवर, का भव्य प्रवेश कराया था।
प्यारे प्यारे वैरागी पा, सबका ही मन हर्षाया था।।
गुरुवर विराग के शिष्य बड़े, मुनि विशुद्धसागर आते हैं।
मिलकरके अपने गुरुवर से, मन में भारी हर्षाते हैं।। (7)

मढ़िया जी जबलपुर चातुर्मास 1996

गुरुवर को संघ सहित मिलकर, सब लार्डगंज ले जाते हैं।
कुछ दिन तक लार्डगंज में ही, गुरुवर जी को रूकवाते हैं।।
फिर लार्डगंज से गुरुवर जी, मढिया जी में आ जाते हैं।
सन उन्निस सौ छियानवे का, शुभ चातुर्मास रचाते हैं।। (8)

ऐलक जी का प्रथम चातुर्मास

ऐलक विमर्शसागर जी का, यह पहला चातुर्मास रहा।
गुरुवर के संग नित ज्ञान ध्यान, में रहने का उल्लास रहा।।
इस चतुर्मास में कर्मकाण्ड, कातंत्र आदि की कक्षायें।
गुरुवर के मुख से पढ़ पढ़कर, सब शिष्यों के मन हर्षाये।। (9)

ऐलक जी प्रथम अनुभव

इस चौमासे में जब पर्यूषण, का पावन अवसर आया।
तब गुरुवर जी ने एक साधना, शिविर का उत्सव करवाया।।
जिसमें छहढाला की कक्षा, लेने की सब जिम्मेदारी।
ऐलक विमर्शसागर जी के, हाथों में सौंपी थी सारी।। (10)



तब प्रथम बार ऐलक जी ने, छहढाला अध्यन करवाया।
उनका आतम विश्वास यहाँ, खुलकर के अब सन्मुख आया।।
ऐलक जी से अध्यन करके, सबका ही मन था हर्षाया।
तब ऐलक जी ने भी अध्यन, करवाने का अनुभव पाया।। (11)

गुरु का विशेष स्नेह

ऐलक विमर्शसागर जी पर, गुरु का स्नेह बरसता था।
जिसको पाने सब शिष्यों का, तब अंतःकरण तरसता था।।
शिष्यों की प्रतिभा को गुरुवर, उत्साहित करते रहते थे।
आगे बढ़ने को गुरुवर जी, नित प्रेरित करते रहते थे।। (12)

चातुर्मास में जब पिच्छिका, परिर्वतन अवसर आया।
तब आयोजन का ऐलक जी, से संचालन था करवाया।।
ऐलक जी का सुन संचालन, सब श्रावक भाव विभोर हुये।
सबके मन को था ये भाया, इसके चर्चा सब ओर हुये।। (13)

मढ़िया जी से बिहार

मढिया जी से करके विहार, संजीवनी नगर आते हैं।
शिव नगर,कोनी, पाटन होकर, गुरु नगर कटंगी जाते हैं।।
मुनिराज विशदसागर जी लेकर, संघ सहित तब आते हैं।
मिलकरके अपने गुरुवर से, मन में भारी हर्षाते हैं।। (14)

क्षुल्लक द्वय में से एक, विनिर्भय प्यारा नाम धराते हैं।
सूरी सुनीलसागर जी के, अब नाम से जाने जाते हैं।।
यूँ गुरु शिष्य का मिलन देख, सबका ही मन हर्षाया था।
ये नगर कटंगी वालों ने किश्मत, से अवसर पाया था।। (15)

कटंगी में कल्पद्रुम

गुरुवर विरागसागर जी का, सानिध्य कटंगी में पाया।
मिलकर समाज ने कल्पद्रुम, मण्डल विधान था रचवाया।।
ब्रह्मचारी श्री संजीव कटंगी, गुरुसेवा में आते थे।
ऐलक विमर्शसागर जी से स्नेह, भाव दिखलाते थे।। (16)

कुण्डलपुर में नववर्ष

फिर नगर कटंगी से गुरुवर जी, कुण्डलपुर आ जाते हैं।
गुरुवर जी से मिलकर, निर्णयसागर मुनिवर हर्षाते हैं।।
ऐलक विमर्शसागर जी का, ये पुनः वंदना का अवसर।
हर्षित था मन गुरुवर के संग, कुण्डलपुर का शुभ वंदनकर।। (17)

तब नये वर्ष की पावन, बेला कुण्डलपुर में आई थी।
इस नये वर्ष पर गुरुवर ने, कुछ कक्षा नई लगाई थी।।
सन उन्निस सौ सतानवें का, नव वर्ष हुआ आगमन यहाँ।
गुरुवर रहते हैं जहाँ जहाँ, रहता है चैनो अमन वहाँ।। (18)

कुण्डलपुर का करके वंदन, गुरुवर आगे बढ़ जाते हैं।
गुरु ग्राम पठेरा से होकर अब, नगर दमोह में आते हैं।।
तब नन्हे बड़े जिनालय में, गुरुवर का संघ रूकाया था।
नगरी में गुरु के आने से, हर ओर महोत्सव छाया था।। (19)

त्याग एवं गुरुभक्ति से रोग शमन

नगर जबलपुर वाले अब, भी आते जाते रहते हैं।
श्री बाहुबली टिम्बर वाले, गुरूवर जी से यूँ कहते हैं।।
ऐलक विमर्शसागर जी का, कुछ स्वास्थ्य ठीक न दिखता है।
कोई योग्य वेद्य को शीघ्र दिखाने, की अब आवश्यकता है।। (20)



तब शीघ्र बुलाकर वेद्यराज को, ऐलकजी को दिखवाया।
हैं टी.बी. के प्रारंभिक लक्षण, वेद्यराज ने बतलाया।।
बस उसी समय से ऐलकजी ने, नमक, दूध, मीठा, त्यागा।
गुरु की भक्ति के साथ प्रभु, के चरणों में रख अनुरागा।। (21)

ऐलकजी के रस परित्याग का, गुरुवर को जब पता चला।
तब ऐलकजी को गुरुदेव का, खूब खूब आशीष मिला।।
बोले गुरुवर ये त्याग तुम्हारा रोग शमन अब कर देगा।
संग में छैना लेते रहना, कमजोरी न होने देगा।। (22)

संघस्थ अंजना, किरण बहिन, ऐलक जी संग चौके जातीं।
आहार के संग संग औषधियाँ, ऐलक जी को वो चलवातीं।।
गुरुवर जी का था शुभाशीष, संग प्रभु भक्ति रंग लाती है।
कुछ समय बाद ही यहाँ रोग की, इति श्री हो जाती है।। (23)

ऐलकजी के अब केशलोंच, का समय पूर्णता पाता है।
तब केशलोंच मुनिवर, निर्णयसागर द्वारा हो जाता है।।
नगर दमोह से अब गुरुवर, प्रस्थान वहाँ कर जाते हैं।
फिर नगर पथरिया की माटी, के लाल पथरिया आते हैं।। (24)

पथरिया के लाल पथरिया में

इस नगर पथरिया की माटी ने, ही सौभाग्य उपाया था।
गुरुवर विरागसागर जैसा, अनमोल रतन उपजाया था।।
जब तक ये श्रृष्टि गुरु विराग, की गौरव गाथा गायेगी।
तब तक इस नगरी की माटी, अपना सौभाग्य मनायेगी।। (25)

ऐलक विमर्शसागर जी का, तब चित्त अती हर्षाया था।
अपने गुरुवर की जन्म भूमि, का पहला दर्शन पाया था।।
बस तीन दिवस तक रुके पथरिया, अब आगे बढ़ जाते हैं।
फिर ग्राम बम्हौरी होकर के गुरुदेव, घुवारा आते हैं।। (26)

धुवारा में सिद्धचक्र विधान

यहाँ सिद्ध चक्र का पाठ हुआ, गुरुवर जी का सानिध्य मिला।
सिद्धों का करके आराधन, भव्यों का हृदय कमल खिला।।
बड़ागाँव करके बिहार, गुरुवर जी अब आ जाते हैं।
मिल करके श्रावक सिद्धचक्र, का पाठ यहाँ रचवाते हैं।। (27)

गुरुदेव का बुलावा

आचार्यश्री सन्मतिसागर जी, का शुभ संदेशा आया।
तब क्षेत्र करगुँवा पर गुरुवर, को संघ सहित था बुलवाया।।
आचार्य श्री आदिसागर की, पुण्य तिथि का अवसर था।
त्रेपन वीं पुण्य तिथि का सुंदर, आयोजन इस भूँपर था।। (28)

गुरु सन्मति का संदेशा पा, गुरुवर विराग बढ़ जाते हैं।
तब अतिशय क्षेत्र करगुँवा पर, गुरुवर जल्दी आ जाते हैं।।
आचार्यश्री सिद्धान्त सिंधु, संग कुमुदनंदी जी आते हैं।
गुरुवर विरागसागर जी की, अगवानी वो करवाते हैं।। (29)

दादागुरु का प्रथम दर्श

ऐलक विमर्शसागर जी ने अपने, गुरुवर के गुरुवर का।
तब प्रथम बार दर्शन कीना था, अपने दादा गुरुवर का।।
श्रद्धा से मन था भरा हुआ, अस्रुजल चरण पखार रहे।
कभी देखें अपने गुरुवर को, कभी दादागुरु निहार रहे।। (30)



प्रथम गणिनी आर्यिका विजयमति जी पधारीं

गुरुवर विरागसागर जी अपने, गुरुवर सन्मतिसागर से।
सोलह वर्षों के बाद मिले, थे रत्नत्रय सौदागर ये।।
फिर अगले दिन ही, विजयमति गणिनि माता आ जाती हैं।
सन्मति विराग संग निर्ग्रंथों का, दर्शन कर हर्षाती हैं।। (31)

जब ग्रंथ वाचना का प्रभात की बेला में अवसर आया।
तब सन्मति सिन्धु ने विराग, सिन्धु के मुख से करवाया।।
सन्ध्या बेला में विराग संघ जब, भक्ति जोर से पढ़ता था।
इक साथ स्वरों में अवरोहण इक, साथ ही ऊपर चढ़ता था।। (32)

उच्चारण सुनकर गुरुवर, सन्मतिसागर का मन हर्षाया।
इक दिन बैठे थे साथ साथ, गुरुवर विराग को बतलाया।।
ये संघ आपका शुद्ध उच्चारण, जोर-जोर से करता है।
तन के अणुओं को शुद्ध ये, पावन उच्चारण नित करता है।। (33)

सुनकर गुरुवर विराग बोले, ये सब आशीष आपका है।
मैंने जो भी सिखलाया है, वो सब गुरुदेव आपका है।।
आदि गुरु की तब पुण्य तिथि, उत्साहित भक्त मनाते हैं।
गुरुवर विराग फिर क्षेत्र करगुँवा, से विहार कर जाते हैं।। (34)

टीकमगढ़ ग्रीष्मकालीन वाचना

गुरुवर विराग करके विहार, टीकमगढ़ नगरी आते हैं।
तब समयसार की करी वाचना, विद्वत जन हर्षाते हैं।।
सत्रह मई से चौबीस जून तक, ग्रीष्म काल के वाचन का।
तब इसी बीच में शिविर लगाया, ज्ञानाचार सु-अर्जन का।। (35)

साधना का अतिशय

संयम के महारथी का मैं, आतम विश्वास दिखाता हूँ।
अब उनके उच्च मनोबल, की इक घटना तुम्हें सुनाता हूँ।।
विधि अंतराय का तीव्र उदय, जब ऐलक जी का आया था।
इक्कीस दिनों तक अंतराय, कर्मों ने उन्हें सताया था।। (36)

ऐलक जी जब अस्वस्थ हुये, तो गुरुवर ने आदेश दिया।
सबसे पहले चर्या हेतु ऐलक, जी को तब उठा दिया।।
संघस्थ दीदीयाँ किरण अंजना, चर्या में संग जाते थे।
ब्रह्मचारी भैया जय निशांत, अक्सर चौके में आते थे।। (37)

पर ऐलक जी का स्वास्थ्य निरंतर, गिरता गिरता जाता था।
कभी अंतराय से बच जाते, तो तुरत वमन हो जाता था।।
संघस्थ साधुओं की सेवा में, निशदिन तत्पर रहते थे।
उन वेद्यराज को बड़े प्रेम से, सुरेन्द्र पठा सब कहते थे।। (38)

ऐलकजी के कमरे में वो, बी.पी.लेने को आते हैं।
बी. पी. मशीन लाकर के, वो ऐलकजी को लगवाते हैं।।
बी.पी.इतना लो हुआ कि उनको, समझ नहीं कुछ भी आया।
त्रयवार किया था चेक मगर, इक बार भी पकड़ नहीं पाया।। (39)

यह देख डाक्टर साहब भी, इकदम से घबरा जाते हैं।
माथे पे तुरत पसीने के कण, झलक झलक तब जाते हैं।।
चुपचाप बिना कुछ बोले ही, वो वापिस घर आ जाते हैं।
उस दिन अहार ऐलकजी के, भी निरंतराय हो जाते हैं।। (40)



दो तीन दिनों में ही सामान्य, हुआ बी.पी.ऐलकजी का।
फिर से आये थे डाक्टर, जी बी.पी.चैकप करने उनका।।
सामान्य मिला बी.पी.लेबल, जब बी.पी.उनने चेक किया।
तभी डाक्टर साहब ने ऐलक, जी से यूँ जिक्र किया।। (41)

ऐलकजी आपका संयम ही, हम सब लोगों का संबल है।
मैं बड़े हर्ष से कहता हूँ, कि तुमरा उच्च मनोबल है।।
गुरूवर विरागसागर जी का, शुभ वर्षायोग कराने का।
था भिण्ड वासियों का आवेदन, भिण्ड नगर ले जाने का।। (42)

भिण्ड चातुर्मास 1998

गुरुवर ने कर स्वीकार निवेदन, टीकमगढ़ से गमन किया।
अपनी पद रज से गुरुवर ने, कई गाँव नगर को धन्य किया।।
फिर धूमधाम से गुरु विराग, अब भिण्ड नगर में आते हैं।
गुरु अगवानी में श्याम मेघ, जम करके जल बरसाते हैं।। (44)

इक ओर उमड़ती थी श्रद्धा, इक ओर बरसती जल धारा।
श्रद्धा से भीगे लोगों की, भक्ति का उत्सव था न्यारा।।
सन उन्निस सौ सतानवे में, उन्निस जुलाई का दिन आया।
तब भिण्ड सदर में चतुर्मास का, स्थापन उत्सव छाया।। (45)

ऐलक विमर्शसागर जी के, बहु अंतराय हो जाते थे।
लालु विकास व विमल यहाँ, प्रतिदिन चर्या में जाते थे।।
ऐलक जी से इन लोगों का, जुड़ गया अजब-सा नाता था।
उनके ही संग रहना हरदम, उनका ही संग सुहाता था।। (46)

"जीवन है पानी की बूँद" महाकाव्य का उद्भव

प्रतिदिन गुरुवर जंगल हेतु, नसिया मंदिर जी जाते थे।
अस्वस्थ अवस्था के कारण, ऐलक जी न जा पाते थे।।
इक दिन गुरुवर जंगल जाते, जाते ऐलक जी से कहते।
आओ जंगल तुम साथ चलो, क्यों यहीं पे तुम बैठे रहते।। (47)

गुरुवर ने थामा हाथ और, अपने संग संग ले जाते हैं।
ऐलक जी भी अब गुरुवर, के पीछे पीछे हो जाते हैं।।
गुरु चरणों का अनुशरण करें, धीरे धीरे वो चलते थे।
चलते चलते तब काव्य सृजगता के, कुछ भाव मचलते थे।। (48)

चिन्तन की गर्भ स्थली से, तब इक पन्ति ने जन्म लिया।
"जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाय रे" याद किया।।
जब पुनः लौटकर जंगल से वापिस गुरुवर जी आते हैं।
तब दूजी पन्ति के चिन्तन में, ऐलक जी लग जाते हैं।। (49)

टी.वी. पर कभी अतीत काल में, एक सीरियल देखा था।
नाम था "होनी अनहोनी", ये शब्द अभी अनदेखा था।।
आधार बना इन शब्दों को, दूजी पन्ति को जन्म दिया।
"होनी अनहोनी कब क्या, घट जाय रे" ये जोड़ दिया।। (50)

इस तरह बना इक महाकाव्य, जो जग में गाया जाता है।
जिन धर्म के हर आयोजन में, जो नित्य सुनाया जाता है।।
कई साधुवृन्दों ने इसके, ऊपर कई छंद बना डाले।
पर मूल भजन ये गुरुवर का, वे सब टीका लिखने वाले।। (51)



यह रचना जब ऐलक जी ने, अपने गुरुवर को सुनवाई।
यह रचना सुनकर गुरुवर के, मन में प्रसन्नता थी छाई।।
गुरुवर ने तब ऐलक जी को, भरपूर वहाँ आशीष दिया।
गुरु शुभाशीष से इस रचना ने, सारे जग में नाम किया।। (52)

गुरुवर विमर्शसागर जी इस, रचना के करनेवाले हैं।
अब तीन हजार से अधिक, छंद इस रचना में कर डाले हैं।।
प्रतिदिन धर्मोपदेश पहले, नव छंद की रचना करते हैं।
अपना सारा उपदेश गुरुवर, उसके ऊपर करते हैं।। (53)

"जीवन है पानी की बूँद", वाले बाबा कहलाते हैं।
यह भजन गुरुमुख से सुनकर, सब नर नारी हर्षाते हैं।।
दो पन्ति में गुरुवर जी ने, जीवन का सच भर डाला है।
जो भी सुनता ये भजन उसे, वैराग्य जगाने वाला है।। (54)

क्या हिन्दु मुस्लिम सिक्ख ईशा, क्या जैन अजैन भी भाते हैं।
सब खुश होकर मोबाइल में, इसकी रिंगटॉन लगाते हैं।।
गुरुवर जब अपने मधुर कंठ, से इसको अहा सुनाते हैं।
तब भजन को सुनकर लोगों के, स्वयमेव कदम थम जाते हैं।। (55)

तेला का उपवास

अब चातुर्मास में पर्यूषण का, पावन अवसर आया था।
गुरुवर ने श्रावक शिविर का, शुभ आयोजन वहाँ कराया था।।
नसियाँ जी में था शिविर लगा, छै सौ लोगों ने भाग लिया।
ऐलक विमर्शसागर जी ने, तब प्रश्न पत्र तैयार किया।। (56)

व्रत त्याग तपस्या के संग संग, पर्यूषण की पावन बेला।
ऐलक विमर्शसागर जी ने, कर लिया रतनत्रय का तेला।।
गुरु शुभाशीष से ठीक हुआ, निर्विघ्न पारणा करवाई।
सब भक्तों के मन झूम उठे, घर घर में थी खुशियाँ छाई।। (57)

परिवार जुड़ा था श्री विमल, भैया जी का ऐलक जी से।
उद्यापन किया था तेला का, मम्मी ने तब ऐलक जी के।।
इस अवसर पे मंदिर जी में, चाँदी के छत्र चढ़ाये थे।
मंदिर जी में तब द्रव्य दिया, पूजन के सैट धराये थे।। (58)

इकतिस अक्टूबर चतुर्मास का, निष्ठापन हो जाता है।
छटवें आचार्य पदारोहण का, अवसर अब आ जाता है।।
दिन आठ नवम्बर का आया, तब भिण्ड नगर में उत्सव था।
आचार्य पदारोहण के संग, पिच्छी परिवर्तन उत्सव था।। (59)

विराग विद्यापीठ का शिलान्यास

तब विराग विद्यापीठ भवन, का शिलान्यास करवाया था।
कीर्ति स्तम्भ जिनालय में, आयोजन ये करवाया था।।
ऐलक विमर्शसागर जी से, तब संचालन करवाया था।
तब बड़ी कुशलता से ऐलक, जी ने कर्तव्य निभाया था।। (60)

बने व्रती

ऐलक जी के जो मात पिता, दादी ने इस ही अवसर पर।
गुरु विराग से दो प्रतिमा, के व्रत स्वीकारे हर्षाकर।।
इस चतुर्मास में संस्कार की, परिभाषा सिखलाई थी।
इस चतुर्मास में नव पीढ़ी ने, नव सौगातें पाई थीं।। (61)



इस भिण्ड नगर से अब गुरुवर, बस थे विहार करनेवाले।
ब्रह्मचारी तब श्री धर्मचंद, जी आये नौ गांव वाले।।
श्री फल अर्पित करके बोले, गुरुवर इच्छा पूरी करदो।
हम भाव समाधि के लाये, गुरुदेव समाधि का वरदो।। (62)

तन की जर्जरता देख गुरुवर, ने विहार अब टाल दिया।
तब पूर्व समाधि के जाने का, सभी विचार निकाल दिया।।
अब शीतकाल की ग्रंथ वाचना, गुरुवर यहाँ रचाते हैं।
जिनवाणी के अमृत रस का, सबको रसपान कराते हैं।। (63)

गलती बनी शिक्षा

इस चतुर्मास की एक और, सुंदर घटना बतलाता हूँ।
गलती शिक्षा कैसे बनती, आओ मैं तुम्हें बताता हूँ।।
उपसंघों को पत्रादि लिखने, का जो सारा काम अभी।
ऐलक विमर्शसागर जी के, हाथों होता था पूर्ण सभी।। (64)

इक दिन गुरुवर जी ऐलक जी, से पत्र एक लिखवाते हैं।
लिखकर पहुँचाने से पहले, गुरु को आकर दिखलाते हैं।।
गुरुवर ने देखा पत्र और, कुछ संशोधन बतलाया था।
फौरन ऐलक जी ने गुरुवर, की मेज से पेन उठाया था।। (65)

वो कुछ सुधार करते उससे, पहले गुरूवर ने टोक दिया।
ऐलक जी को संसोधन, करने से गुरुवर ने रोक दिया। ।
बोले गुरुवर किससे पूछा, ये किसका पेन उठाया है।
जब सन्मुख ही हम बैठे हैं, फिर पूछ नहीं क्यों पाया है।। (66)

बिना किसी की आज्ञा, के वस्तु ले लेना चोरी है।
इससे व्रत दूषित होता है, ये बात नहीं कुछ थोरी है।।
ऐलकजी ने फौरन ही अपनी, गलती को स्वीकार किया।
तब बड़ी सहजता से गुरुवर, की शिक्षा को उर धार लिया।। (67)

बोले ऐलकजी गलती हमसे, हो गई आप क्षमा करदो।
देकर के प्रायश्चित्त गुरुवर, अब हमको आप शुद्ध करदो।।
ऐसी गलती गुरुवरजी अब, आगे से नहीं करूँगा मैं।
ये अनमोली शिक्षा गुरुवर!, जीवन भर याद रखूँगा मैं।। (68)

गुरु की हर शिक्षा शिष्यों के, जीवन में अमृत होती है।
फिर शिष्यों के जीवन से वो, शिक्षा न विस्मृत होती है।।
गुरु कदम कदम पर शिष्यों को, कर्तव्य बोध करवाते हैं।
कैसे जीवन को जीना है, ये गुरुवर ही सिखलाते हैं।। (69)

मुनि-विग्रह सागर की समाधि

अब नये वर्ष का हुआ आगमन, हर्षित नगरी सारी थी।
ब्रह्मचारी धर्मचंद जी ने, अंतिम करली तैयारी थी।।
गुरुवर जी ने पूछा उनसे, क्या दीक्षा तुमको लेना है।
ब्रह्मचारी धर्मचंद जी, जब हर्षित हो बोले लेना है।। (70)

पूछा गुरुवर जी ने दीक्षा, पण्डाल में या फिर कमरे में।
बोले दीक्षा पण्डाल में हो, क्या करेंगे लेके कमरे में।।
तब दीक्षा हेतु चार जनवरी, दिन निश्चित करवाया था।
नौगाँव से ब्रह्मचारी जी के, घरवालों को बुलवाया था।। (71)

चैत्यालय मंदिर की छत पर, दीक्षित उनको तब किया गया।
क्षुल्लक विग्रहसागर उनको, तब नाम वहाँ पर दिया गया।।
क्षुल्लक विग्रहसागर जी की, दिन चर्या की जिम्मेदारी।
ऐलक विमर्शसागर जी आदि, महाराजों को दी सारी।। (72)

तब सुप्रभात की बेला थी, दिन सात जनवरी का आया।
क्षुल्लक जी को जंगल क्रिया, करवाने का अवसर आया।।
ऐलक विमर्शजी साथ, विनिश्चय सागर दोनों जाते हैं।
जंगल के बाद पुनः वापिस, पाटे तक उनको लाते हैं।। (73)

तब उनका छोटा बेटा था, जो जयकुमार कहलाता था।
अक्सर वो महाराजों के संग, रहकर सहयोग कराता था।।
क्षुल्लक जी को बैठाने में उनने कुछ मद्द कराई थी।
तब हाथ की चमड़ी खिसक गई, हड्डी बाहर नजराई थी।। (74)

गुरुवर को जब ये पता चला, तो सबको डाँट लगी भारी।
बोले-क्षुल्लक जी क्षमा करो, ये गल्ती हमरी है सारी।।
क्षुल्लक जी ने ये वचन सुने, तो आँख में आँसु भर आये।
गुरु क्षमा माँग रय शिष्यों से, ये कैसे पाप उदय आये।। (75)

गुरुवर! ये जेल की दीवारें, अब टूट रहीं हमरी जानो।
मेरी शुद्धातम की आजादी, का है ये अवसर मानो।।
क्षुल्लक जी के वैराग्यमई, वचनों को सुन गुरु मुस्काये।
क्षुल्लक जी की दृढ़ भेदज्ञान, धारा से बहुतई हर्षाये।। (76)

दो तीन दिवस अब बीत गये, क्षुल्लकजी थोड़े ठीक भये।
आहार चर्या के लिये उन्हें, चौके में साधुजन ले गये।।
चौके में तब क्षुल्लकजी ने, आहार लेने से मना किया।
गुरुवरजी को आहार चर्या, पे जाने का संकेत दिया।। (77)

उस दिन माताजी विन्ध्यश्री, ऐलक विमर्श जल्दि आये।
ऐलक जी व माताजी तब, दोनों को अंतराय आये।।
माँ विंध्यश्री क्षुल्लकजी, के तब करीब आकर बैठ गईं।
बस तभी अचानक क्षुल्लकजी, की उल्टी साँसे शुरू भईं।। (78)

माताजी ने क्षुल्लकजी के, सब वस्त्र अलग तब करवाये।
दीवार सहारे लगा सु-आसन, क्षुल्लक जी को बैठाये।।
ऐलकजी को जब पता चला, गुरुवर को संदेशा भेजा।
आहार चर्या से लौट गुरुवर ने, क्षुल्लक जी को देखा।। (79)

गुरुवर ने अन्तिम समय जान, मुनि दीक्षा के उपचार किये।
दस मिनिट बाद क्षुल्लकजी ने, अपने प्राणों को त्याग दिये।।
हर शिष्य के जीवन में ऐसी, ही उत्तम श्रेष्ठ समाधि हो।
गुरुपादमूल हो अंत समय, न कोई आधी व्याधी हो।। (80)

गुरुवर का सुखद रूप

फिर छैः मई उन्निस सौ अठानवे, भिण्ड नगर से गमन हुआ।
उस ही दिन तब ऐलक विमर्शसागर जी, का अंतराय हुआ।।
गुरुवर जी का तब संघ गमन कर, ग्राम फूफ आ जाता है।
ऐलक विमर्शसागर जी का, फिर अंतराय हो जाता है।। (81)



अगले दिन फूफ गांव में ही, आहार चर्या को जाते हैं।
ऐलक विहर्षसागर जी को, गुरुवर जी साथ भिजाते हैं।।
पर प्रबल कर्म तब अंतराय का, वहाँ उदय में आता है।
फिर से ऐलक जी को चर्या में, अंतराय आ जाता है।। (82)

इस कारण से गुरूदेव एक दिन, और यहाँ रूक जाते हैं।
अगले दिन चौके में ऐलक जी, के संग गुरुवर जाते हैं।।
गुरुवर ने सबको सावधान, करके आहार दिलाया था।
तब गुरुवर के ही शुभाशीष से, आहार ठीक हो पाया था।। (83)

इटावा में वाचना

अब फूफ गाँव से कर विहार, गुरु नगर इटावा आते हैं।
गुरुवर को नगरी में लाकर, सब नर नारी हर्षाते हैं।।
इस नगर इटावा में गुरुवर ने, ग्रीष्म काल का समय दिया।
मिलकर सब नगर वासियों ने, साधु सेवा का लाभ लिया।। (84)

करके विहार गुरुवर आये, जो सिरसागंज कहाता है।
इस नगरी में ऐलक जी, को फिर अंतराय हो जाता है।।
फिर अतिशय क्षेत्र बटेश्वर, को गुरु संघ गमन कर जाता है।
गुरु आज्ञा से ऐलक जी को, तब वही रुकाया जाता है।। (85)

बंदरों का हुआ क्रोध शांत

भैया संजय जी ऐलक जी के, साथ वहाँ रुक जाते हैं।
जो वर्तमान में मुनि विशोकसागर जी जाने जाते हैं।।
ऐलक विमर्शसागर जब, अगले दिन चर्या को जाते हैं।
जल में ही अंतराय आया, वो वापिस मंदिर आते हैं।। (86)

मंदिर के संत निलय में आकर, ऐलक जी रूक जाते हैं।
कुछ समय बाद संजय भैया भोजन, कर वापिस आते हैं।।
कुछ बंदर तब छत पर आये, भारी आतंक मचाते थे।
वो उछल कूंद करते भारी, मुँह बना-बना दिखलाते थे।। (87)

संजय भैया जी उन्हें भगाने, डण्डा एक खोज लाये।
बंदर सारे क्रोधित होकर, संजय भैया पे बन आये।।
क्रोधित देखा बंदर, समूह संजय भैया जी भाग खड़े।
बंदर सारे वापिस लौटे, ऐलकजी पर जा टूट पड़े।। (88)

ऐलकजी के कमरे में, सारे बंदर अब आ जाते हैं।
कमरे में आकर के बंदर, सारे उत्पात मचाते हैं।।
ऐलकजी के सन्मुख दो बंदर, क्रोधित होकर आते हैं।
तब मीस मीस कर दांत वो, अपने गुस्सा वहाँ दिखाते हैं।। (89)

बहु क्रोध में आकर बंदर इक, पाटे पर तब चढ़ जाता है।
ऐलक जी की लख वीतरागता, स्वयं शांत हो जाता है।।
धीरे धीरे सारे बंदर अब, वहाँ शांत हो जाते हैं।
लख परम शांत मुद्रा उनकी, सब उसमें ही खो जाते हैं।। (90)

राजा श्रैणिक ने पाप कर्म, व अहंकार के बस होकर।
खूंखार शिकारी कुत्ते छोड़े, थे मुनिराज यशोधर पर।।
उन परम वीतरागी मुनिवर की, वीतराग आभा पाकर।
खूंखार शिकारी कुत्ते भी हो गये, शांत चरणों आकर।। (91)



इस शासन में तो सिंह गाय, इक घाट पे पानी पीते हैं।
निर्ग्रंथ चरण में बैरभाव तज, सभी खुशी से जीते हैं।।
इस वीतराग पथ की महिमा, जिसने भी उर से जानी है।
इनके चरणों में आ करके तब, अग्नि हो गई पानी है।। (92)

पुनः गुरु चरणों में

फिर अगले दिन ऐलकजी के, आहार ठीक हो जाते हैं।
करके विहार अब क्षेत्र बटेश्वर, गुरु शरण में आते हैं।।
जब भाव वंदना करी क्षेत्र की, ऐलकजी हर्षाये थे।
प्रभु नेमिनाथ की जन्म भूमि, पाकर सौभाग्य मनाये थे।। (93)

पच्चीस जून ऐलक दीक्षा, का दृश्य बड़ा मन भावन था।
ऐलक जी का तब यहाँ बड़ा ही, कुशल रहा संचालन था।।
क्षुल्लक जी विश्वलोक सागर, का यहीं समाधि मरण हुआ।
गुरु चरणों में क्षुल्लक जी को, तब श्रेष्ठ गति का वरण हुआ।। (94)

गुरुवर ने सुना "जीवन है पानी की बूँद"

शोरीपुर के जिन मंदिर में, गुरुवर का संघ विराज रहा।
तब प्रमुदित हो गुरु शिष्यों की, बातों का यूँ अंदाज रहा।।
तब ही गुरुवर ऐलक, विमर्शसागर जी से यूँ कहते हैं।
तुम अपना भजन सुनाओं वो, जिसके प्यासे सब रहते हैं।। (95)

जब गुरुवर का आशीष मिला, ऐलकजी खुश हो जाते हैं।
तब "जीवन है पानी की बूँद", अपना प्रिय भजन सुनाते हैं।।
ऐलक जी के जब मधुर कंठ, से गुरुवर जी ने भजन सुना।
सुन करके भजन ये मधुर मधुर, सबका आनंद हुआ दुगुना।। (96)

पुनः भिण्ड वर्षायोग 1998

था चतुर्मास का काल निकट, सबके ही सतत प्रयास रहे।
तब भिण्ड इटावा वालों के, कुछ ज्यादा ही विश्वास रहे।।
अब भिण्ड नगर को फिर से, गुरुवर का ये वर्षायोग मिला।
पाकर के फिर से गुरुवर को, सारे भक्तों का हृदय खिला।। (97)

फिर क्षेत्र बटेश्वर से चलकर, अब नगर अटेर में आते हैं।
अब नगर अटेर से आगे चंबल, पाकर सब रुक जाते हैं।।
तब बैठ के नौका में गुरुवर, चंबल नदिया को पार किया।
जिनने अपने रत्नत्रय की, नौका से सबको तार दिया।। (98)

सब कहते थे अपने गुरुवर, नगरी में आज पधारेंगे।
आकर के भक्तों की बिगड़ी, अब फिर से गुरु सुधारेंगे।।
जब भिण्ड नगर में हुआ, आगमन नर नारी हर्षाये थे।
गुरुवर अठानवे का अब, वर्षायोग रचाने आये थे।। (99)

मंदिर परेड में गुरुवर जी ने, तब ये वर्षायोग किया।
मंदिर परेड के मुख दरवाजे का, तब जीर्णोद्धार किया।।
फिर भिण्ड नगर में गुरुवर के, आने से धर्म वयार चली।
उपदेशों की अमृत वर्षा, शिविरों की तब भरमार चली।। (100)

ऐलक जी के निर्देशन में 'विरागवाणी' प्रारंभ

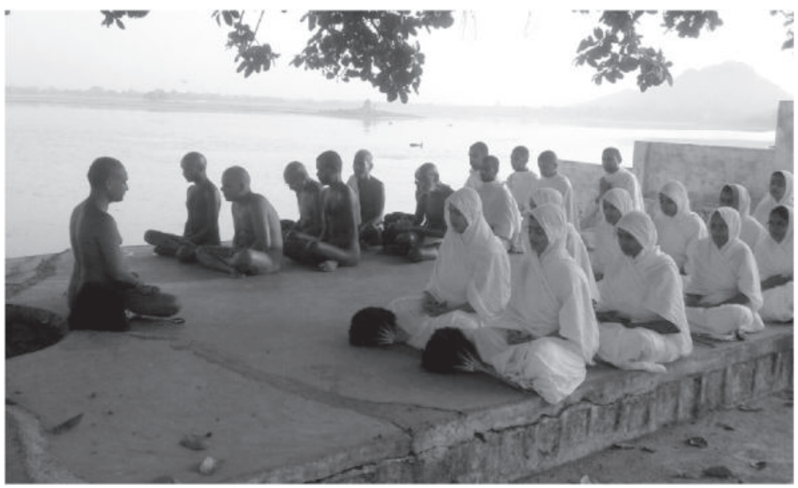
इस चतुर्मास में ही जिसमें, ऐलक जी का निर्देशन था।
इक "विरागभारती" मासिक पुस्तक, का सुंदर संचालन था।।
अब 'विराग वाणी' नाम से, ये मासिक पुस्तक चलती है।
गुरु संघ की सारी चर्चायें, इसमें हर माह निकलतीं हैं।। (101)

पर्यूषण में फिर शिविर लगा, फिर संस्कार लहराये थे।
कई सारे नये नये आयोजन, गुरुवर ने करवाये थे।।
अक्टूबर बीस का दिन आया, तब चौमासा सम्पन्न हुआ।
फिर आठ नवम्बर को आचार्य, पदारोहण था खूब हुआ।। (102)

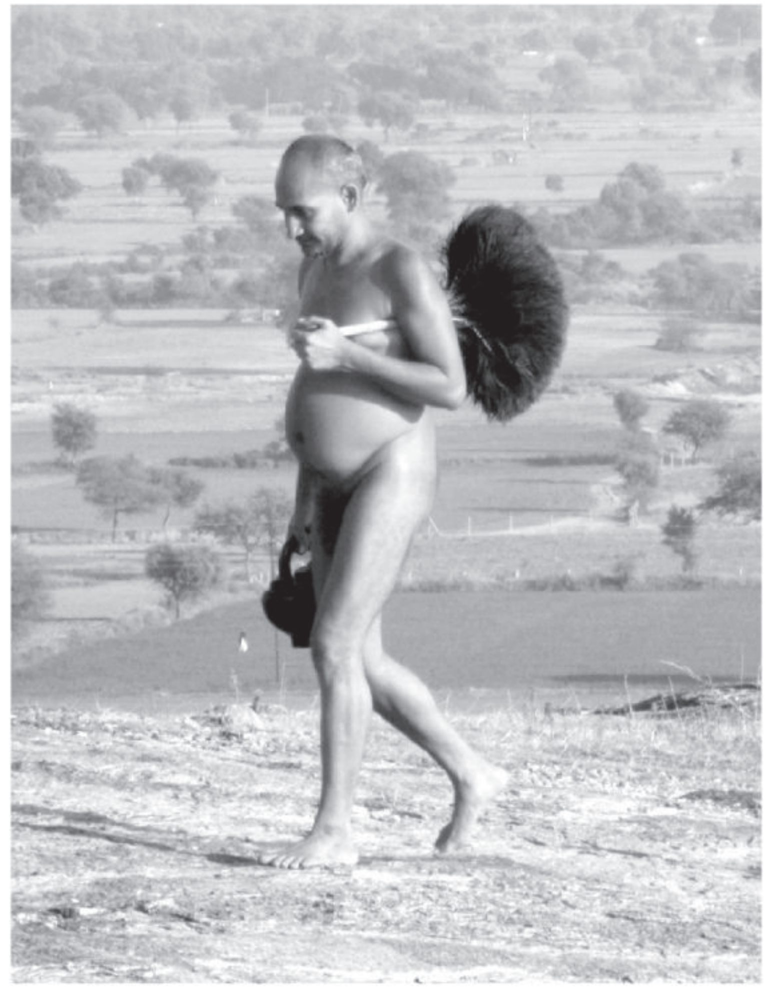
नौवा पर्व पूर्ण

गुरूवर की गाथा का नौंवा, अध्याय पूर्ण अब करता हूँ।
इसके निर्विघ्न समापन पर, गुरुवर को वंदन करता हूँ।।
उनके चरणों की महिमा है, उनकी ही जीवन गाथा है।
मेरा तो श्रद्धा भक्ति से, उनके चरणों में माथा है।। (103)

❑❑❑❑



साधु–साध्वियों को अध्यात्म ध्यान–योग की शिक्षा देते श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी



देख–देखकर पग धरते हो, धरती को उपकृत करते हो

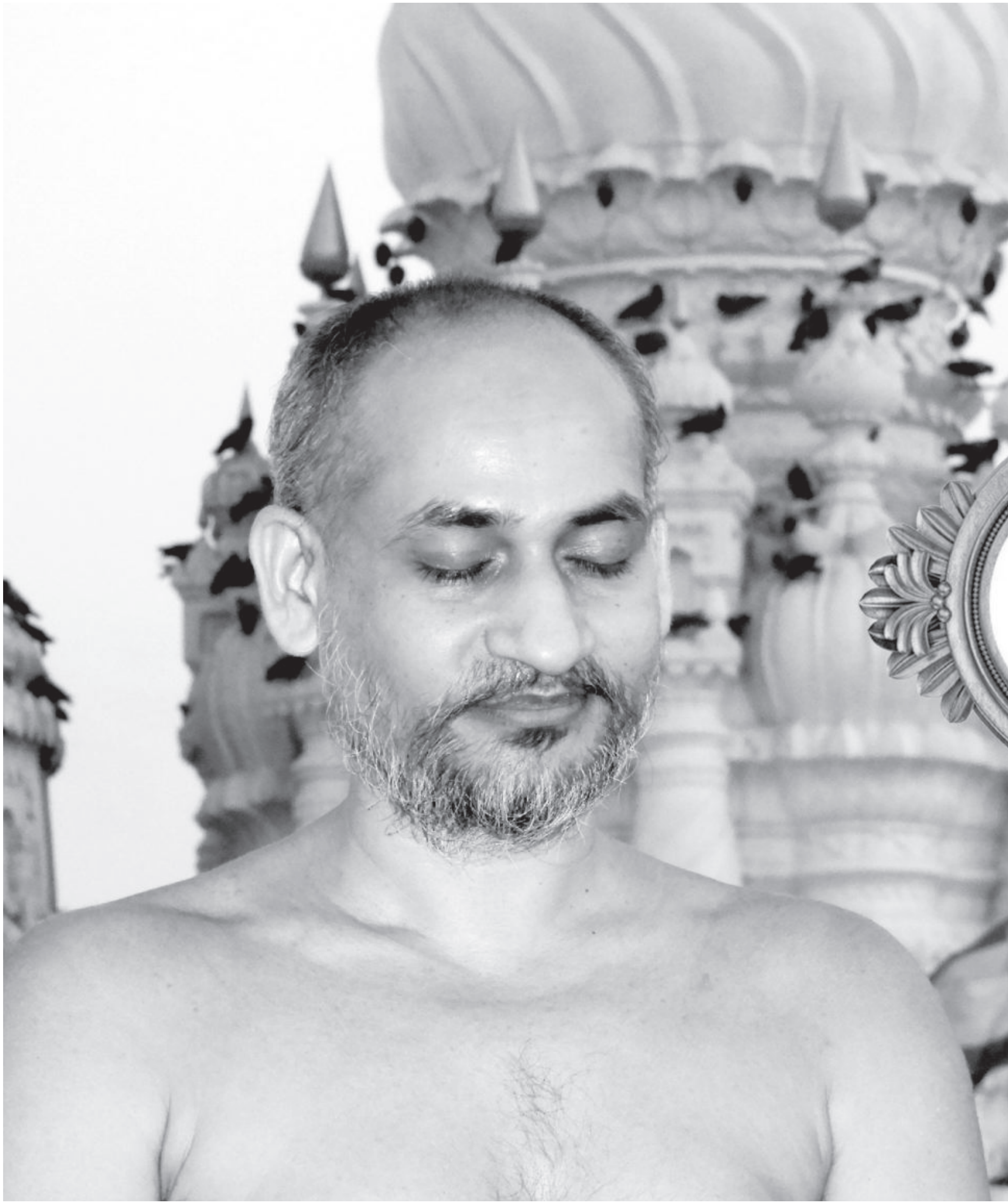
चित्र समूह - ५
मुनि दीक्षा दर्शन



मुनि-दीक्षा की प्रक्रिया के प्रथम चरण में ऐ. विमर्शसागर जी के केशलुंचन के बाद,
ब्र. विमल जी शीश-प्रक्षालन करते हुए प्रसन्न। (तीर्थ क्षेत्र बरासौं, भिण्ड, 14 दिस. 1998)



लंगोटी त्याग की आज्ञा सुनने तैयार ऐलक विमर्शसागर जी।
साथ हैं ऐलक विभवसागर जी।



bhavlingi sant

"दशम् पर्व"

निर्ग्रंथ पर्व

संजीवनी भावलिंगी संत (महाकाव्य)

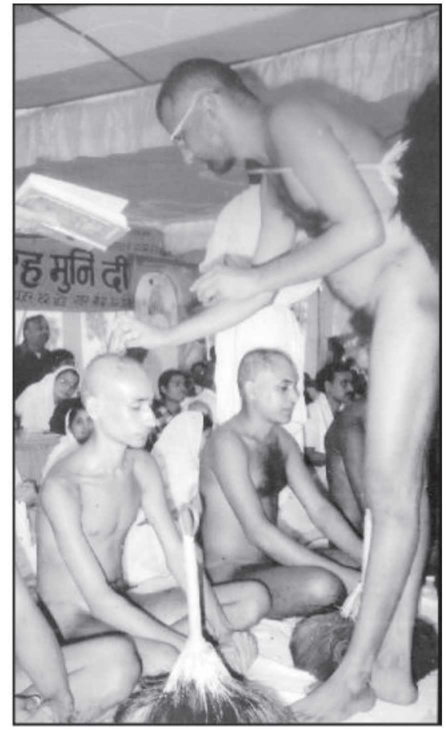
चित्र समूह - 4
मुनि दीक्षा दर्शन



वस्त्र त्याग, जिन मुद्रा में ध्यानस्थ
मुनि विमर्शसागर



अंजुली में मंगल द्रव्य लिये मुनि श्री विमर्शसागर जी,
समीप हैं पिता श्री सनतकुमार जी एवं छोटी बहन महिमा



मुनि-दीक्षा संस्कार करते हुए
गुरुदेव विरागसागर जी।



"दशम् पर्व"

"निर्ग्रंथ पर्व"

मंगलाचरण

निर्ग्रंथ वंदना

निर्ग्रंथ लिखे निर्ग्रंथ कथा, निर्ग्रंथों को करके वंदन।
जिनके चरणों के अर्चन से, मिट जाते भव भव के कृंदन।।
निर्ग्रंथ पंच हैं, पंचमगति, पाने उनको मैं ध्याता हूँ।
उनके स्वरूप का अभ्यर्चन, कर निज स्वरूप को भाता हूँ।। (1)

पुलाक निर्ग्रंथ वंदना

जो मुनिवर जी उत्तर गुण, की न कभी भावना भाते हैं।
जो कभी कदाचित मूलगुणों, में अपने दोष लगाते हैं।।
सम्यक्त्व भाव से शुद्ध सदा, जो भाव लिंग अपनाते हैं।
उन पुलाक मुनिवर के चरणों, हम सादर शीष झुकाते हैं।। (2)

वकुश निर्ग्रंथ वंदना

निर्दोष विधि से मूलगुणों का, जो नित पालन करते हैं।
किन्तु तन व उपकरणों में जो, मोह भाव भी धरते हैं।।
जो पंच समिति त्रय गुप्ति से, दस पूरब तक के हैं ज्ञाता।
उन सब निर्ग्रंथों के चरणों में, भक्ति से सिर झुक जाता।। (3)

कुशील निर्ग्रंथ वंदना

तीजे निर्ग्रंथ कुशील मुनि, दो भेद रूप कहलाते हैं।
जो प्रतिसेवना व कषाय के, भेद से जाने जाते हैं।।
मूलोत्तर गुण के धारी हैं, जो त्रय कषाय के जेता हैं।
उनके श्री चरणों का वंदन, भव-भव के दुख हर लेता है।। (4)

निर्ग्रंथ वंदना

वो चौथे हैं निर्ग्रंथ मुनि, जहाँ मोहनीय का उदय नहीं।
हैं शेष घातिया कर्मोदय भी, जल रेखा सम दिखें यहीं।।
अंतर मुहुरत के अंदर ही, जो केवल ज्ञान उपा लेंगे।
वो यथाख्यात चारित्र धनी, उनको हम शीष झुका लेंगे।। (5)

स्नातक निर्ग्रंथ वंदना

वो यथाख्यात संयम धारी, जो कर्म घातिया नाशे हैं।
वे केवलज्ञानी मुनिवर ही, स्नातक संज्ञा पाते हैं।।
उन स्नातक निर्ग्रंथों के, चरणों में शीष झुकाता हूँ।
अब गुरुवर की जीवन गाथा, को आगे यहाँ सुनाता हूँ।। (6)

बरासौ में गुरुसंघ

फिर एक दिसम्बर सन अठानवे, संघ बरासौ जाता है।
इस पावन भूमि का दर्शन, कर सबका मन हर्षाता है।।
मैं आओ सुनाता क्षेत्र बरासौ, की तुमको पावन गाथा।
जिसको सुनके इस भूमि पर, खुद ही है माथा झुक जाता।। (7)

है "पुर पट्टन वरनेर बरासौ", क्षेत्र का पूरा नाम अहा।
छैः मील की दूरी पर ये पावन, क्षेत्र भिण्ड से शोभ रहा।।
चंबल की विस्तृत वसुधा पर, यह क्षेत्र बसा प्यारा प्यारा।
इसके बाजू में ही बहती है, नदी वेसली की धारा।। (8)

महावीर प्रभु का समोशरण, इस ही वसुधा पर आया था।
सब जिओ और जीने दो का, संदेशा यहीं सुनाया था।।
प्रभु महावीर के चरण पड़े, ये धरती पावन कहलाई।
यह अतिशय क्षेत्र हुआ पावन, भक्तों की श्रद्धा उमगाई।। (9)



दो भव्य जिनालय बने हुये, इक गर्भ गृह कहलाता है।
इक मानस्तम्भ बना प्यारा, शोभा दूनी कर जाता है।।
इस क्षेत्र की इक किवदंती है, मंदिर निर्माण के बारे में।
उसको संक्षिप्त बताता हूँ, मैं तुमको यहाँ इशारे में।। (10)

साढ़े सत्रह सौ वर्ष पूर्व, दिन क्वांर दोज का आया था।
इस वसुधा पर यह जिनमंदिर, देवों ने तभी बनाया था।।
हर साल क्वांर में कृष्ण पक्ष, की दोज का जब दिन आता है।
तब वर्षी मेला का आयोजन, यहाँ कराया जाता है।। (11)

है मूल जिनालय किलेनुमा, जो गाँव से ऊँचाई पर है।
इस भव्य जिनालय के दर्शन, हो जाते कुछ दूरी से है।।
है सदी ग्यारवीं की प्रतिमा, प्रभु वीरा की अतिशय कारी।
जिसका दर्शन भर करने से मिट, जाती दुख बाधा सारी।। (12)

श्रमणत्व का उद्भव

इस क्षेत्र बरासौ का पहला, दर्शन का अवसर आया था।
ऐलक विमर्शसागर जी का, मन प्रमुदित था हर्षाया था।।
कुछ दिन तक क्षेत्र बरासौ पर, गुरुवर ने था विश्राम लिया।
ऐलक विमर्शसागर जी ने अब, मुनि दीक्षा का भाव किया।। (13)

ऐलक जी के संग साधु जन, गुरु चरण भावना धरते हैं।
मुनि दीक्षा दे दो हे गुरुवर, यह नम्र निवेदन करते हैं।
शिष्यों की शुभ्र भावना को, गुरुवर जी ने स्वीकार लिया।
ये आयोजन इस भूमि पर, कैसे होगा सु-विचार किया। (14)

उस समय बरासौ के बीहड़, में तीन डाकुओं के दस्ते।
हर ओर था बस आतंक वहाँ, सब बंद कर रखे थे रस्ते।
अपहरण चल रहे थे तब ही, सब ही आने से डरते थे।
पर गुरुवर जी के भाव वहीं, दीक्षा देने को करते थे। (15)

उस गाँव के मुखिया को गुरुवर, जी ने तब पास बुलाया था।
इस क्षेत्र पे दीक्षा देने का, अपना मन्तव्य बताया था।
बोला मुखिया मैं सभी, डाकुओं से मिलकरके आता हूँ।
न कोई विघ्न आने दूँगा, गुरुवर विश्वास दिलाता हूँ। (16)

फिर सभी डाकुओं से चर्चा, जाकर मुखिया करके आया।।
जो बोला सभी डाकुओं ने, आकर गुरुवर को बतलाया।
सारे डाकू ये कहते हैं, गुरुवर से जाके कह देना।
दीक्षायें क्षेत्र बरासौ पर, ही निश्चिंतित होकर देना। (17))

आयोजन यहीं करें गुरुवर, हम भी कर्तव्य निभायेंगे।
जब तक गुरुवर हैं रुके यहाँ, न विघ्न कोई आ पायेंगे।।
हर ओर अमन ही होगा अब, हम सब रक्षक बन जायेंगे।
इस पुण्य काम में भागीदारी, करके पुण्य कमायेंगे।। (18)

तब क्षेत्र कमेटी को गुरुवर, ने अपने पास बुलाया था।
दीक्षा का काम शुरू करने, का तब उनको बतलाया था।।
प्रभुवीर के चरणों में जाकर, इक श्रीफल अर्पित कर आओ।
चौदह बारह को दीक्षा की, सब तैयारी में लग जाओ।। (19)



फिर सभी गाँव वासी मिलकर, गुरुवर चरणों में आते हैं।
आयोजन में अपनी सेवा, देने के भाव बताते हैं।।
हम घर की बैठक में अतिथि, लोगों को तब ठहरायेंगे।
हम साथ जलाने को लकड़ी, पानी, उपलब्ध करायेंगे।। (20)

अतिशय कारी इस भव्य जिनालय, से कुछ दूरी पर चलकर।
दीक्षा हेतु इक बहुत बड़ा, पण्डाल लगाया था सुंदर।।
थीं प्रथम बार तेरह मुनि, दीक्षा एक साथ होने वाली।
आ गई वो बेला दीक्षा की, सबको पुलकित करने वाली।। (21)

तब मंच के बीचों बीच गुरुवर, सिंहासन पर राजे थे।
इक ओर विराजी माताजी, मुनिवर इक ओर विराजे थे।।
गुरुवर के सन्मुख तेरह ही, भव्यों ने था स्थान लिया।
आयोजन का संचालन नीरज, जी सतना ने खूब किया।। (22)

जिस बीहड़ में चौका हेतु, श्रावक जन भी न आते थे।
पच्चिस से तीस हजार लोग, सन्मुख बैठे नजराते थे।।
ये श्रद्धा का सैलाब देख, कुछ बात समझ न आई हो।
लगता था किसी देवता ने, अपनी माया फैलाई हो।। (23)

आयोजन में शामिल होने, विद्वान लोग भी आये थे।
प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश, संग, पंडित नीरज भी आये थे।।
ब्रह्मचारी जयनिशांत, पंडित श्री, सुमतिचंद्र व नरेन्द्र रहे।
पंडित हरिश्चंद्र जी के संग, पंडित जी वहाँ महेन्द्र रहे।। (24)

ऐलक विमर्शसागर जी के, संग सबने श्री फल भेंट किये।
अपने दीक्षा के भाव, गुरुवर जी के सन्मुख भेंट दिये।।
तब सुनी प्रार्थना गुरुवर ने, भावों से तब आशीष दिया।
फिर योग्य मुहुरत में दीक्षा, का कार्य वहाँ प्रारंभ किया।। (25)

कुछ ही क्षण में जो शेष रहे, थे अम्बर वो भी त्याग दिये।
सब त्यागे अम्बर बने दिगम्बर, निज आतम अनुराग किये।।
फिर संस्कार मुनिदीक्षा पा, वो भाव पुराने भूल गये।
बस एक समय में पंचम से सप्तम, छट्टम में झूल गये।। (26)

ऐलक विमर्शसागर जी अब, मुनिवर विमर्श कहलाते हैं।
निज शुद्धातम के ही विमर्श में, अब मुनिवर खो जाते हैं।।
अठवीस मूल गुण संस्कार, कर रत्नत्रय का दान दिया।
निश्चय व्यवहार मोक्षमग का, सुन्दर उपहार प्रदान किया।। (27)

28 मूलगुण

शुभ पाँच महाव्रत पाँच समितियाँ, छैः आवश्यक का पालन।
फिर पाँच इन्द्रियाँ कर निरोध, करते जीवन का संचालन।।
कर केशलोंच व नग्न रहें, हैं क्षिति शयन, स्नान नहीं।
दिन में इक बार, खड़े भोजन व, दंत धवन का नाम नहीं।। (28)

मुनिवर विमर्शसागर जी संग, बारह मुनिवर जी और रहे।
मुनिराज विशल्य, विभव, विहर्ष, मुनिराज विनिश्चय साथ कहे।।
मुनि विश्वशील, व विमद, विहित, व विश्वलोचन मुनिराज कहे।
मुनिराज विश्वयश, विश्वभूति, मुनिविश्वधर्म, विश्ववीर रहे।। (29)



डाकुओं का सेवाभाव

*इस आयोजन की भव्य सफलता, में सबने सहयोग दिया।
अपने अपने कर्तव्यों का, तब सबने पालन खूब किया।।
तब सभी डाकुओं ने भी अपने, सेवा भाव दिखाये थे।
सबकी सेवा में भर-भर के ट्राली, अमरुद भिजाये थे।। (30)*

*मुनिदीक्षा का आयोजन कर, अब संघ जिनालय जाता है।
प्रभु वंदन वा गुरु वंदन कर शिष्यों का मन हर्षाता है।।
अगले दिन प्रातः मुखशुद्धि, का आयोजन हो जाता है।
सबका कुछ दिन का मौन और व्रत, तप संयम हो जाता है।। (31)*

शीत परिषह

*इस क्षेत्र बरासों पर ही अब, कुछ दिन का और प्रवास रहा।
वो माह दिसम्बर के दिन थे, तब शीतकाल का वास रहा।।
मुनिवर विमर्श संग मुनि विहर्ष, व साथ विनिश्चय रहते थे।
छोटे से तलघर में ही, त्रय मुनिराज विराजे रहते थे।। (32)*

*ऊपर से तलघर खुला हुआ, तब ठंड पड़ रही थी भारी।
तीनों की नूतन दीक्षा थी, थी अनुभव की भी लाचारी।।
मुनिराज विनिश्चय वृद्ध पुजारी, जी को पास बुलाते हैं।
इक फर्स डाल दो तलघर पर, उसको ऐसा बतलाते हैं।। (33)*

*उस वृद्ध पुजारी जी का, मुनिराजों से तब यूँ कहना है।
मुनिराज बन गये आप सभी, अब परिषह भी तो सहना है।।
ये वाणी वृद्ध पुजारी की, अटपटी लगी सबको भारी।
पर मुनिचर्या का बोध कराने, वाली बात रही भारी।। (34)*

*है मुनि अवस्था में परिषह, जय कर्म निर्जरा का कारण।
तीनों लोकों में पूज्य, दिगम्बर भेष नहीं ये साधारण।।
तब शांत भाव से सुन मुनिवर, बड़ गये समता धारण करके।
कर्तव्य परायण वृद्ध पुजारी, हर्षित फर्स डाल करके।। (35)*

कदम-कदम पे अग्नि परीक्षा

*भव्यों को भवपार लगाती है, वो ही जिनदीक्षा है।
इस तलवार की धार पे चलना, सचमुच कठिन परीक्षा है।।
फूलों में और शूलों में, नित समता रखना होती है।
कदम-कदम उपसर्ग भरे, हर कदम पे अग्नि परीक्षा है।। (36)*

*इस आयोजन के बाद पुनः, फिर संघ भिण्ड आ जाता है।
छैः सात दिवस रुककरके, फिर अम्बाह नगर आ जाता है।।
अतिशय क्षेत्र सिंहौनिया जी, को गुरूसंघ अब जाता है।
तब सात मील की दूरी ही बस, श्रावक एक बताता है।। (37)*

बैठे-बैठे गुजरी रात

*दोपहर बाद गुरुवर जी, अपने संघ सहित बढ़ जाते हैं।
रस्ते में नदिया पाकर तब गुरुवर, थोड़ा रुक जाते हैं।।
इक इक श्रावक इक मुनिवर, को कांधो पे वहाँ उठाते हैं।
श्रावक समूह इस तरह, संघ को नदी पार करवाते हैं।। (38)*

*दूरी जितनी बतलाई थी, उससे दूरी ज्यादा निकली।
चलते-चलते ही बीच राह में, सन्ध्या बेला वहाँ ढ़ली।।
आगे देखा तो कोई वहाँ, स्थान नजर न आता था।
गुरुवर जी ने सन्मुख देखा, बस इक टीला नजराता था।। (39)*



बोले गुरुवर जी अल्प समय, में पूर्ण सांझ ढल जायेगी।
अब सन्मुख वाले टीले पर, ही रात बिताई जायेगी।।
मुनिवर विमर्शसागर जी अपने, मन में यही विचार रहे।
है सर्दी का मौसम भारी, और संघ में साधु वृद्ध रहे।। (40)

इस तरह रात में यूँ रुकना, बिल्कुल भी ठीक नहीं होगा।
स्थान कोई अनुकूल यहाँ, रुकने को ढूँढ़ना ही होगा।।
मुनिवर बोले यूँ गुरुवर से, हम थोड़ा शीघ्र निकल करके।
अनुकूल कोई स्थान देखते हैं, हम आगे चलकर के ।। (41)

मुनिवर विमर्श मुनिवर विहर्ष, गुरु आज्ञा लेकर शीघ्र चले।
जल्दी जल्दी से कदम बढ़ाकर, थोड़ा सा आगे निकले।।
तब देड़ किलोमीटर आगे, चलकरके रोड दिखाई दी।
फौरन आये गुरु चरणों में, आकर सब बात बताई थी।। (42)

गुरुवर थोड़ा आगे चलकर, पक्का रस्ता आ जायेगा।
उस रस्ते पर निश्चित रुकने का, कुछ साधन मिल जायेगा।।
पक्का रस्ता आते आते, अब अंधकार हो जाता है।
गुरु आज्ञा पाकर संघ, वहीं रस्ते पर ही रुक जाता है।। (43)

देखा समीप में इक नूतन, गृह का निर्माण वहाँ पाया।
उस नूतन गृह में श्रावक, लोगों ने गुरूवर को ठहराया।।
ईटों का ऊँचा आसन इक, गुरुवर को सबने बना दिया।
गुरुवर को ऊँचा बैठाकर, सबने नीचे स्थान लिया।। (44)

ग्रामीणों की आस्था

फिर गुरुवंदना प्रतिक्रमण कर, देव वंदना को जाते।
उस समय वहाँ ग्रामीण निवासी, कुछ मिलकरके आ जाते।
बाबा! क्या लोगे आप भला, हमको सेवा का अवसर दें।।
क्या दूध चाय ले आयें हम, या भोजन जल्दी बनवा दें।। (45)

गुरुवर ने सबको संत दिगम्बर, की चर्या को बतलाया।
सुनके गुरुवर से चर्या को, भक्ति से सबने सिर नाया।।
श्रावक बोला गर प्याँल जरा, सा मिल जाये तो ले आयें।
वो बोले पास ठठेरे हैं, गर बोलो तो हम ले आये।। (46)

मुनिवर विमर्शसागर बोले, हाँ आप ठठेरे ले आयें।
श्रावक से बोले आप, ठठेरे नीचे इसमें बिछवायें।।
तब बिछे ठठेरों पर साधु, सामायिक करने बैठ गये।
फिर तभी ठठेरों के कारण, खुजली से सब बेहाल भये।। (47)

वो सभी गांव वाले आपस में, खुसर फुसर कुछ करन लगे।
धीरे-धीरे इक दूजे से वो, कुछ कुछ ऐसा कहन लगे।।
जे जैनी बाबा रुक तो गये, जा घर में न दरवाजे हैं।
ऊपर से ठंडी का मौसम, जा हवा जोर से बाजे है।। (48)

फिर वहाँ एक व्यक्ति आया, आकर सबको बतलाता है।
मेरा इक तलघर छोटा सा, बाजू में ही पड़ जाता है।।
उस कमरे में व्यापार का, मैं सारा सामान रखाता हूँ।
बाबा उसमें गर रुक जायें, फौरन खाली करवाता हूँ।। (49)



जाकर के सभी गाँव वाले, गुरु से अर्जी कर देते हैं।
तब पास में कमरा होने से, गुरुवर भी हाँ भर देते हैं।।
उस छोटे से तलघर में सारे, साधुजन आ जाते हैं।
पर बैठे बैठे ही अपनी, वो सारी रात बिताते हैं।। (50)

सिंहौनिया में गुरुसंघ

स्थान बहुत छोटा था पर वो, सभी बड़े दिल वाले थे।
सब "जियो और जीने दो", को जीवन में जीने वाले थे।।
गुरूवर का संघ सुबह चलकरके, क्षेत्र सिहौंनिया जाता है।
प्रभु शांतिनाथ का दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाता है।। (51)

भिण्ड में शीतकालीन वाचना

करके वंदन गुरूवर जी ने, अब आगे कदम बढ़ाये थे।
तब नगर पोरसा और गोरमी, पुनः भिण्ड अब आये थे।।
फिर नगर भिण्ड में शीतकाल, की ग्रंथ वाचना शुरू भई।
प्रतिदिन गुरुवर के उपदेशों, में चर्चा होती नई-नई।। (52)

दो विमल धाराओं का मिलन

इक दिन सुभाष जी ने आकर, गुरुवर जी को ये बतलाया।
गुरुवर को गुरुवर पुष्पदंत के आने का मन बतलाया।।
शायद उनका मुनि, दीक्षा दिवस यहीं मनाया जायेगा।
हर्षाकर तब गुरुवर बोले, आनंद बड़ा तब आयेगा।। (53)

मुनिवर विमर्शसागर जी को, गुरुवर ने पास बुलाया था।
तुम पुष्पदंत सागर जी को, इक पत्र लिखो समझाया था।।
लिखना गुरुवर का संघ, आपसे मिलने को उत्साहित है।
वो नगर पधारें साथ रहें, इसमें ही हम सबका हित है।। (54)

आचार्य विमलसागर की दो, धाराओं का संगम होगा।
इस भिण्ड नगर में ही मुनि दीक्षा, दिवस का आयोजन होगा।।
ठहरेंगे मिलकर साथ-साथ, हम वात्सल्य बरसायेंगे।
मिलकरके दोनों यहाँ, एकता का संदेश सुनायेंगे।। (55)

जब पुष्पदंतसागर जी इस, शुभ प्रेम पत्र को पाते हैं।
तब लघु भाई का संदेशा, पा फूले नहीं समाते हैं।।
अपने छोटे भाई का सब, स्वीकार निवेदन करते हैं।
फिर भिण्ड नगर में ही आयोजन, करने की हाँ भरते हैं।। (56)

अठवीस जनवरी को प्रातः, दोनों संघों का मिलन हुआ।
जीवन्त हो उठी रामायण, जब राम-भरत सम्मिलन हुआ।।
इस मिलन की चर्चा आम हुई, हर चौराहे हर गली गली।
गुरुवर दोनों बैठे संग संग, हो रही थी चर्चा भली भली।। (57)

दो शिष्य मिले दो भाई मिले, दो शिवसाधक मिल जाते हैं।
यह मिलन देखकर शिष्य, और सब नरनारी हर्षाते हैं।।
दो संतो का यह वात्सल्य, बन गया था श्रेष्ठ उदाहरण ये।
सब शिष्यों को अनुशरण योग्य, था दृश्य नहीं साधारण ये।। (58)

संतों की काव्य गोष्ठि

दोनों संघो की सामूहिक, सारी चर्यायें होती थीं।
अनुभव की खट्टी मीठी सी, सारी चर्चायें होतीं थीं।।
फिर तीस जनवरी को सुंदर था, रखा गया इक आयोजन।
था धर्म भाव से ओत प्रोत, इक काव्य गोष्ठी आयोजन।। (59)

इसका संचालन खुद गुरुवर, श्री पुष्पदंत जी करते थे।
जो अपने उर में काव्य की, कोमल अनुभूति को धरते थे।।
मुनिवर विमर्शसागर जी ने, भी इसमें काव्य पाठ कीना।
उनके कोमल व मधुर कंठ से, काव्य लगा भीना भीना।। (60)

जब पुष्पदंतसागर जी ने, मुनिवर से काव्य का श्रवण किया।
तब मधुर कंठ की कोमल कविता, ने उनका मन मोह लिया।।
इस गौरवर्ण के साधक की, कविता ने गजब कमाल किया।
तब पुष्पदंत सागर जी ने, खूबई उनका सम्मान किया।। (61)

विराग संघ के सिरमौर

इक दिन मध्यान्ह की बेला में, जब स्वाध्याय का समय रहा।
तब पुष्पदंतसागर जी का, भी संघ वहाँ पर राज रहा।।
सब शिष्य हाथ में ले किताब, गुरुवर कमरे में जाते हैं।
अपने कमरे में तब, विमर्शसागर मुनिवर रुक जाते हैं।। (62)

सिंहासन पर दोनों गुरुवर, सब शिष्य सामने बैठ गये।
तब पुष्पदंतसागर जी को, मुनिवर न कहीं दिखात रये।।
तब अन्य साधुओं से पूछा, इक वो महाराज कहाँ पर हैं।
तब साधुजन बोले गुरुवर, वो शायद वहीं कक्ष पर हैं।। (63)

तब थोड़ा इंतजार करके, फिर एक भक्त को पहुँचाया।
श्री पुष्पदंतसागर जी ने, मुनिवर विमर्श को बुलवाया।।
वह श्रावक जाकर के बोला, गुरूवर जी तुम्हें बुलाये हैं।
मुनिवर बोले नहीं स्वास्थ्य, ठीक इससे हम न आ पाये हैं।। (64)

श्रावक ने जाकर बात सभी, गुरुवर जी को बतलाई थी।
गुरुवर ने फिर से एक सूचना, मुनिवर को भिजवाई थी।।
जाओ मुनिवर जी से पूछो, कि आते हो तो ठीक यहाँ।
या उनकी वैयावृत्ति करने, मैं खुद ही आ जाऊँ वहाँ।। (65)

सुनकर मुनिवर जी ने सोचा, में हूँ साधक साधारण सा।
वो हैं आचार्य महान बड़े, उनका आना न उचित यहाँ।।
छोटों के पास बड़े आयें, इसमें उनका सम्मान नहीं।
न इसमें विनय बड़ों की है, इसमें उनका बहुमान नहीं।। (66)

यूँ चिंतन करके मुनिवर जी, अब स्वाध्याय में जाते हैं।
तब पुष्पदंतसागर जी उनको, लखकर के मुस्काते हैं।।
भो मुने! हुआ क्या आज तुम्हें, क्यों आज यहाँ तुम न आये?
बोले मुनिवर सर में पीड़ा, के कारण हम न आ पाये।। (67)

अच्छा बैठो तुम और सुनो, हमने जो काव्य बनाया है।
अपने प्रिय अनुज विराग सिंधु, के गुण को हमने गाया है।।
फिर पुष्पदंतसागर जी ने, इक रचना वहाँ सुनाई थी।
जिसको सुन कर सब शिष्यों में, गुरुकी भक्ति उमड़ाई थी।। (68)

तब गुरुवर विरागसागर से, श्री पुष्पदंतसागर बोले।
मुनिवर विमर्शसागर जी की, प्रज्ञा को अनुभव से तोले।।
सुनिये प्रिय अनुज विराग सिंधु, ये शिष्य आपके प्यारे हैं।
जिनशासन की प्रभावना में ये, सब शिष्यों में न्यारे हैं।। (69)



इन मुनिवर का मधुरिम सा स्वर, सबका मन सहज रिझाता है।
मुखमण्डल का ये तेज प्रखर, दृष्टि बाधित कर जाता है।।
चेहरे पर सहज खेलती है, मुस्कान अहो मन भावन है।
ऊपर से गौर वर्ण तन का, निर्ग्रंथ दशा शुभ पावन है।। (70)

ये संघ आपका प्यारा है, पर ये सिरमौर संघ के हैं।
इनको थोड़ा विशेष देखो, ये साधु अलग ढंग के हैं।।
गुरुवर विरागसागर बोले, हो काव्यपाठ या कोई भजन।
शुभ श्रेष्ठ रीत से मुनि विमर्श, सागर करते हैं संचालन।। (71)

इन सब बातों को सुन करके नगरी में चर्चा आम हुई।
हर गली और चौराहे पर रोजाना सुबहोशाम हुई।।
कि पुष्पदंतसागर जी ने, मुनिवर विमर्शसागर जी को।
गुरुवर विराग से माँग लिया है, अपने संग ले जाने को।। (72)

अब तो मुनिवर जी पुष्पदंत, सागर जी के संग जायेंगे।
अपने गुरुवर को छोड़के, अब उनको ही गुरू बनायेंगे।।
अब तो विमर्शसागर जी से, कई लोगों ने ये पूछ लिया।
क्या आपने पुष्पदंतसागर के, संग जाने का ठान लिया।। (73)

बोले मुनिवर जी मैं क्यों, अपना संघ छोड़कर जाऊँगा।
जीवन में गुरुवर एक चुने, न दूजा कोई बनाऊँगा।।
कुछ दिनों बाद जब पुष्पदंत, सिंधु बिहार कर जाते हैं।
तब सारी बातों के बजार खुद ही, ठण्डे हो जाते है।। (74)

रूर में आचार्य संघ

फिर भिण्ड नगर से कर, विहार गुरु रुर ग्राम आ जाते हैं।
इस रुर ग्राम के बारे में, आओ हम तुम्हें बताते हैं।।
ये ही वो पावन वसुधा है, जिसपे जनमे थे एक लला।
जो बन सूरि विशुद्ध सागर जन, जन का करते आज भला।। (75)

मुनिवर का प्रथम चौमासा भिण्ड 1999

अब फिर से भिण्ड नगरिया में, तीजा चौमासा गुरूवर का।
अपने गुरुवर के संग ये, पहला चौमासा था मुनिवर का।।
कीर्ति स्तम्भ जिनालय का, समुचित विकास करवाने को।
ये चौमासा था जैनों को इक, नव सौगात दिलाने को।। (76)

चातुर्मास स्थापना

उन्निस सौ सन निन्यानवे में, दिन सात जुलाई का आया।
तब चैत्यालय मंदिर में, गुरुवर का चौमासा रचवाया।।
आचार्य वीरसागर जी का, भी संग चौमासा करवाया।
मिल करके दोनों संघों ने, जिन शासन का ध्वज फहराया।। (77)

मोक्ष सप्तमी

प्रभु पार्श्वनाथ निर्वाण दिवस, दिन मोक्ष सप्तमी का आया।
तब सात मुमुक्षु जीवों ने, गुरुवर से शिवमग को पाया।।
क्षुल्लक श्री विनयसिंधु के संग, अरविन्द, फूलचंद जी दीपक।
पंकज संग हीरा लाल चले, आशीष ने अपनाया शिवमग।। (78)

मुनिवर विमर्शसागर जी के, हाथों था सारा संचालन।
निर्विघ्न और सानंद हुआ, सम्पन्न ये सारा आयोजन।।
गुरुवर विराग निर्देशन में, मंदिर का सारा काम हुआ।
कीर्तिस्तम्भ की तैयारी में, वर्षायोग तमाम हुआ।। (79)



फिर माह नवम्बर में भैया, जब पन्द्रह तारिख आई थी।
तब विरल श्री माताजी संग, दो दीदी दीक्षा पाई थीं।।
अठवीस नवम्बर का दिन था, तब चातुर्मास का निष्ठापन।
अब माह दिसम्बर में नौ तारिख, को था पिच्छि परिवर्तन।। (80)

कीर्तिस्तम्भ पंचकल्याणक

छब्बीस जनवरी से कीर्तिस्तम्भ, जिनालय परिसर में।
कल्याणक पाँच मनाये गये, प्रभु भक्ति के पावन स्वर में।।
दीक्षा कल्याणक के दिन फिर, से गुरुवर ने दीक्षायें दीं।
तब पाँच भव्य जीवों ने शुभ, मुनि आदि की दीक्षायें ली।। (81)

करगुवाँ जी पंचकल्याणक

गुरुवर विराग इस आयोजन, के बाद गमन कर जाते हैं।
मेहगाँव गोहद व नगर ग्वालियर, सोनागिर आ जाते हैं।।
इस सिद्ध क्षेत्र का कर वंदन, गुरुवर जी आगे जाते हैं।
अब अतिशय क्षेत्र करगुँवा पर, करके विहार आ जाते हैं।। (82)

मुनिवर विशुद्ध, मुनिराज विशद, श्री विभव, विमद, मुनि आये थे।
क्षुल्लक श्री कुंदकुंद सागर, संग विश्वशील जी आये थे।।
सारे शिष्यों ने मिलकर के, गुरुवर की अगवानी कीनी।
अपनी श्रद्धा,अपनी भक्ति, गुरु चरणों अर्पित कर दीनीं।। (83)

बारह से उन्निस मार्च तलक, था क्षेत्र करगुँवा का आँगन।
कल्याणक पाँच मनाये गये, निर्विघ्न हुआ था आयोजन।।
इस अतिशय क्षेत्र से संघ, शिखर जी जाने को तैयार रहा।
था गर्मी का मौसम भारी, और लम्बा बहुत विहार रहा।। (84)

मुनि विमर्शसागर जी का उपसंघ

गर्मी में गर्म प्रकृति तन की, तब शीघ्र बमन हो जाता था।
लम्बा विहार मुनिवर विमर्शसागर, से न हो पाता था।।
गुरुवर विरागसागर जी ने, मुनिवर का वहाँ विचार किया।
मुनि विश्वपूज्य के संग उनका, नव संघ वहाँ तैयार किया।। (85)

अब तक जो पल पल वा पग पग, गुरु उंगली थामे चलते हैं।
अब इस तन के कारण मुनिवर, गुरुसंघ से अलग निकलते हैं।।
अब गुरुवर सन्मुख न होंगे, बस उनका अनुशासन होगा।
कभी सपनों में कभी यादों में, प्रतिपल गुरुका दर्शन होगा।। (86)

गुरुदेव का सम्मेद शिखर की ओर विहार

छब्बीस मार्च अब गुरु विराग, सम्मेद शिखर की ओर बड़े।
तब गुरु उपकार के आँसु, शिष्यों की आँखो से टपक पड़े।।
गुरुवर को वहाँ विदा करने, मुनिवर विमर्श जी जाते हैं।
आँखो से आँसु झरते हैं, परिकिरमा तीन लगाते हैं।। (87)

फिर करी वंदना जब झुकके, गुरुवर ने हृदय लगाया था।
अच्छे से रहना हिलमिल कर, गुरुवर ने तब समझाया था।।
इस तरह संघ अब पृथक हुआ, मुनिवर वापिस आ जाते हैं।
मध्यान्ह काल में मुनि विशुद्ध सागर, बिहार कर जाते हैं।। (88)

त्रय संघ शेष अब झाँसी में, गुरुवर विरागसागर जी के।
मुनिवर विमर्श मुनिराज विशद, मुनिराज विमद सागर जी के।।
मुनिवर विमर्श, मुनिराज विशद, दोनों ही आपस में मिलकर।
लोगों के नम्र निवेदन पर, आये वो शहर जिनालय पर।। (89)



मुनिवर का प्रथम उपदेश

उन्तीस मार्च को मुनिवर जी, का प्रथम हुआ था उद्‌बोधन।
उनका उद्‌बोधन सुनकरके, हर्षित था झाँसी का जन जन।।
कुछ स्वाध्याय करने वाले, श्रोता प्रबुद्ध भी आये थे।
मुनिवर से बहुत प्रभावित होकर, मन ही मन हर्षाये थे।। (90)

झाँसी से बिहार

दोनों संघों ने मिलकरके, संध्या में यहाँ विहार किया।
जाकरके नगर बबीना में, मुनिराजों ने आहार लिया।।
फिर नगर बबीना से चलकर, अब क्षेत्र पवा आ जाते हैं।
इस क्षेत्र पवा पर सेठ जिनेश्वर, दास अहार लगाते हैं।। (91)

तालवेहट में भव्य अगवानी

दोनों संघों की तालबेहट में, जोरदार अगवानी की।
मंगल उपदेश हुआ प्रातः, गूँजी मंगल गुरुवाणी थी।।
अप्रैल पाँच का दिन था ये, जब तालबेहट में आये थे।
इन युवा साधकों को पाकर, सब नरनारी हर्षाये थे।। (92)

प्रथम ग्रीष्मकालीन वाचना

मुनिराज विशद सागर जी अब, आगे विहार कर जाते हैं।
तब तालबेहट नगरी में ही, मुनिवर विमर्श रूक जाते हैं।।
मुनिवर विमर्शसागर जी का, सानिध्य वहाँ सबने पाया।
सोलह अप्रैल को वीर जयंति, का भारी उत्सव छाया।। (93)

भारी जुलूस के बाद किया, था धर्म सभा का आयोजन।
मुनिवर से ग्रीष्मकाल करने, का था समाज का आवेदन।।
श्री विजय कृष्ण अध्यक्ष रहे, व मंत्री संत कुमार रहे।
संग सुमत नरेन्द्र चौधरी थे, संग अरुण निवेदन साथ रहे।। (94)

भक्तामर शिविर

सत्ताइस तारीख से लेकर, इक माह निरंतर यहाँ चला।
इस शिक्षण सम्यकज्ञान शिविर, में सीखी सबने ज्ञान कला।।
जिसमें प्रातः भक्तामर का, शिक्षण मुनिराज कराते थे।
बच्चों को कक्षा बाल बोध की, संध्याकाल लगाते थे।। (95)

सन्ध्या बेला में गुरु भक्ति, व मुनिवर भजन सुनाते थे।
फिर आरती प्यारे गुरुवर की, सब झूम झूम कर गाते थे।।
इक माह तलक मुनिवर जी से, जिन जिन ने पाई शिक्षा थी।
अठवीस मई को मुनिवर ने, उन सबकी करी परीक्षा थी।। (96)

बाद शिविर के मुनिवर ने, कुछ नियम वहाँ दिलवाये थे।
जैनी श्रावक के योग्य, आचरण कुछ पालन करवाये थे।।
तब त्याग अभक्ष्य कराये सभी, पूजन के नियम दिलाये थे।
निशि भोजन का भी त्याग और, जिनदर्शन नियम कराये थे।। (97)

श्रुतपंचमी पर्व

सैरोन क्षेत्र के वंदन का, मुनिवर ने मन में लक्ष्य लिया।
इकतीस जनवरी तालबेहट से, मुनिवर जी ने गमन किया।।
तब बीच राह में नगर जखौरा, मुनिवर जी को मिलता है।
लख मुनिवर की चर्या पावन, भक्तों का हृदय मचलता है।। (98)

तब गुरुवर के सानिध्य में, ही श्रुतपांचे पर्व मनाने का।
उससे पहले सैरोंन क्षेत्र, का शुभ वंदन करवाने का।।
कुलदीप जी आदि लोगों, ने सैरोन वंदना करवाई।
मिलकरके सभी समाज जखौरा, मुनिवर को लौटा लाई।। (99)



तालवेहट में सिद्धचक्र

छैः जुन को श्रुत पांचे उत्सव, नगरी में तब सम्पन्न हुआ।
पाकर के श्रेष्ठ तपोधन को, सबका ही हृदय प्रसन्न हुआ।।
अब नगर जखौरा से मुनिवर, फिर तालबेहट आ जाते हैं।
सब सिद्धचक्र का आराधन, मुनिवर के साथ कराते हैं।। (100)

इस अवसर पर मुनि श्रुतनंदी, मुनि मार्दवनंदी आये थे।
मुनिवर विमर्शसागर जी से, मिलकर खूबई हर्षाथे थे।।
ये आठ जून से सत्रह तक, था सिद्धचक्र का आराधन।
पंडित नरेन्द्र जी खरगापुर का, था विधान में निर्देशन।। (101)

कई बार जखौरा वालों ने, मुनिवर को श्रीफल भेंट किया।
तब सत्रह जून को तालबेहट से, मुनिवर जी ने गमन किया।।
अगले दिन कर वेलई अहार, व शाम जखौरा में आये।
मुनिवर का फिर सानिध्य मिला, नगरी में थे उत्सव छाये।। (102)

पूजन शिविर

तब जून अठारह से मुनिवर ने, शिविर एक लगवाया था।
जिसमें पूजन अभिषेक विधि का, सम्यक् ज्ञान कराया था।।
आबाल, वृद्ध महिलायें युवा, सबने था इसमें भाग लिया।
श्रावक के छैः कर्तव्यों में, पहली पूजा का ज्ञान किया।। (103)

मुनि विश्वकीर्ति एवं ऐलक विनम्र सागर से मिलन

फिर इसी बीच करते विहार, मुनि विश्वकीर्ति आते हैं।।
ऐलक विनम्र सागर जी व, क्षुल्लक जी विनिश्चल आते हैं।
तब मिलन हुआ था भव्य अहा, सब गुरू भाई हर्षाते हैं।
कुछ दिन तक साथ रहे फिर, वो आगे विहार कर जाते हैं।। (104)

अब क्षेत्र वानपुर के दर्शन, करने के भाव हृदय आये।
मुनि विश्वपूज्य को संग लेकर, छब्बीस जून को बड़ आये।।
तब गाँव रायपुर होत भये, उन्तीस जून को मुनिवर जी।
प्रातः ही साढ़े सात बजे, पहुँचे वाँसी में गुरूवर जी।। (105)

वाँसी में पाठशाला

है जैन समाज बहुत थोड़ी, पर इक प्राचीन जिनालय है।
अतिशय कारी हैं पार्श्वनाथ, प्रभु त्रय वेदी का आलय है।।
इक बगिया सुंदर बीच, कुँआ व यात्री वास बनाया है।
सामाजिक समरसता भारी, जिसने सम्मान दिलाया है।। (106)

इक दिन प्रातः नौ बजे, सभी वाँसी वाले आ जाते हैं।
मुनिवर विमर्शसागर जी को, वो अपनी बात बताते हैं।।
मुनिवर हमरे भी बच्चों के, कुछ संस्कार अच्छे होवें।
हम चाहत हैं हमरे भी गाँव, में एक पाठशाला होवे।। (107)

मुनिवर से पाकर शुभाशीष, तैयारी में जुट जाते हैं।
सब आस पास के गाँवों में, आमंत्रण देने जाते हैं।।
तब तीस जून मध्यान्ह में साढ़े, तीन बजे आयोजन था।
तब "श्री विराग सद्ज्ञान पाठशाला", का शुभ उद्घाटन था।। (108)

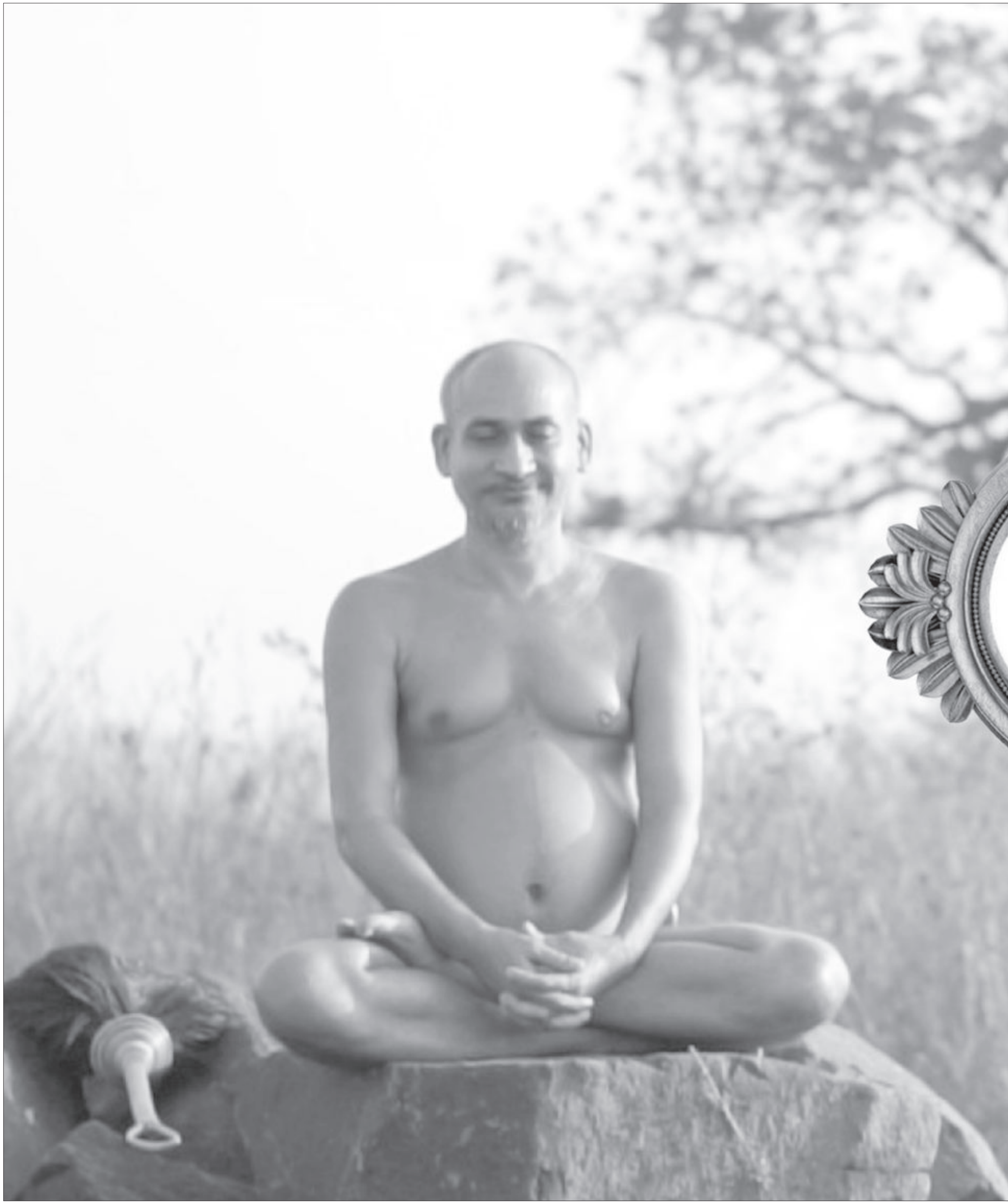
मुनिवर ने अपने उद्बोधन में, संस्कार के बीज दिये।
जो नियम बताये मुनिवर ने, सबने हँसकर स्वीकार किये।।
तब ग्राम जखौरा वालों ने, इसमें विशेष सहयोग दिया।
संग तालबेहट व देवरान, के लोगों ने भी भाग लिया।। (109)

दसवाँ पर्व पूर्ण

गुरु का जीवन आकाश वृहद, मैं नन्हा-सा बालक बोलो।
फिर भी मन कहता आसमान, को अपने हाथों से छूलो।।
गुरूवर की जीवन गाथा का, सोपान दसम ये पूरा है।
पर मैं जितना लिखता जाता, उतना ही लगे अधूरा है।। (110)

❑❑❑❑





bhavlingi sant

shramanacharya shri 108 vimarsh sagar ji gurudev

"एकादश पर्व"

प्रेरणा पर्व

संजीवनी भावलिंगी संत (महाकाव्य)

चित्र समूह - 4
मुनि दीक्षा दर्शन



''जय तृषा-परीषह करत जेर कहुँ रंज चलत नहिं मन सुमेर'
दीक्षोपरांत प्रथम आहार चर्या को मंदिर जी से निकलते हुए मुनिराज पू. विमर्शसागर जी। (15 दिसम्बर 1998) बरासौ



"एकादश पर्व"

"प्रेरणा पर्व"

मंगलाचरण

चार तरह के साधक मिलकर, एक संघ कहलाते हैं।
जो ऋषि मुनी अनगार यति, के नाम से जाने जाते हैं।।
इन रत्नत्रय धारी श्रमणों के, चरणों शीष झुकाता हूँ।
मैं उन जैसा बन जाने की, ही सदा भावना भाता हूँ।। (1)

ऋषि वंदना

नाना ऋद्धि धारण करते, वे सब ऋषिराज कहाते हैं।
ये सभी ऋषीगण चार तरह, के भेद रूप कहलाते हैं।।
उन सब ऋषिराजों के चरणों, में करता भावों से वंदन।
जिनके चरणों के पर्शन से, रज भी हो जाती है चंदन।। (2)

अक्षीणऋद्धि धारी मुनिवर, जिस चौके में आहार करें।
भोजन अक्षय हो जाता है, चाहे कितने आहार करें।।
ऋषिराज विक्रियाऋद्धि के, धारी जो मुनिवर होते हैं।
इन राजऋषि गुरुओं को वंदन, कर्म कालिमा खोते हैं।। (3)

जो बुद्धि को निर्मल करते, बुद्धिऋद्धि को धरते हैं।
जो औषधऋद्धि के धारी, वे सब रोगों को हरते हैं।।
ऐसे सारे ही श्रमण जगत में, ब्रह्मऋषि कहलाते हैं।
उन सब ऋषियों के चरणों में, हम सादर शीष झुकाते हैं।। (4)

आकाश गमन ऋद्धि धारी, जो देव ऋषि कहलाते हैं।
जिनने कैवल्य उपाया है, वो परम ऋषि कहलाते हैं।।
उन देवऋषि और परमऋषि, श्रमणों को करता हूँ वंदन।
हो निज स्वभाव में थिरता, भावों से करता हूँ अभिनंदन।। (5)

अब गुरुवर के जीवन का, मैं अगला सोपान सुनाता हूँ।
उससे पहले मैं उनके चरणों, की रज शीष चढ़ाता हूँ।।
निर्विघ्न हो लेखन यज्ञ मेरा, हर शब्द बने मंगल कारी।
मैं बार बार लेता हूँ, गुरुवर के चरणों की बलिहारी।। (6)

अब तीस जून को बाँसी से, मुनिवर विहार कर जाते हैं।
चिलगौआ में सब श्रावक जन, मिलकर आहार कराते हैं।।
फिर शाम को चिलगौआ से चलकर, सूरिगाँव विश्राम किया।
तब दो जुलाई को क्षेत्र, बानपुर में दर्शन, आहार लिया।। (7)

मुनिराज पहुँचे बानपुर

पश्चात बानपुर क्षेत्रपाल, में मुनिराज आ जाते हैं।
प्रभु शांतिनाथ की दिव्य छवि, के दर्शन कर हर्षाते हैं।।
प्रभु शांतिनाथ का अतिशय, शुभ जन कहते नहीं अघाते हैं।
कहते हैं बाबा शांतिनाथ, तो नित ही बढ़ते जाते हैं।। (8)

शान्तिबाबा का अतिशय

प्रभु शांतिनाथ व कुंथुनाथ संग, अरहनाथ की प्रतिमायें।
जब यहाँ विराजित करवाई, थीं एक बराबर प्रतिमायें।।
लेकिन प्रभु शांतिनाथ ने जब, आकर अतिशय दिखलाया था।
तब लोगों ने प्रतिदिन प्रतिमा, को ऊपर बढ़ते पाया था।। (9)



अब वर्तमान में अरहनाथ, व कुंथुनाथ तो उतने हैं।
पर शांतिनाथ भगवान अभी, उन दो प्रतिमा से दुगने हैं।।
ऐसे प्रभु शांतिनाथ जी के, चरणों में वंदन है मेरा।
प्रभु आप समान बढ़े हम भी, मिट जाये कर्मों का फेरा।। (10)

अब दो जुलाई करके विहार, मुनिवर पडवाँ आ जाते हैं।
घर दो जैनों के एक, जिनालय दर्शन कर हर्षाते हैं।।
पडवाँ में महरौनी नगरी के, श्रावकजन आ जाते हैं।
मुनिवर महरौनी आप पधारें, यही भावना भाते हैं।। (11)

महरौनी में महामुनि

अगले दिन प्रातः कर विहार, मुनिवर महरौनी आ जाते।
अगवानि भव्य करी मुनिवर, की बड़े जिनालय ले जाते।।
तब चतुर्मास का काल निकट था, चतुर्मास का पड़गाहन।
कई जैन समाजों का मुनिवर के, चरणों में था आवेदन।। (12)

तब नगर जखौरा तालबेहट, महरौनी वाले आये थे।
नगरी मडावरा वालों ने, भी अपने भाव सजाये थे।।
सब बार बार श्रीफल अर्पित, कर नम्र निवेदन करते थे।
अपनी अपनी नगरी का, वर्षायोग निवेदन धरते थे।। (13)

अब सात जुलाई को मुनिवर, आगे विहार कर जाते हैं।
श्री अतिशय क्षेत्र गिरार, वंदना का शुभ भाव सजाते हैं।।
मुनिराज सैदपुर हो करके, अब साढ़ूमल आ जाते हैं।
संस्कृत विद्यालय में श्रावक मुनिवर को अहार कराते हैं।। (14)

विद्यालय में उपदेश दिया, आगे मुनिवर बढ़ जाते हैं।
तब नगर मडावरा में मुनिवर, का भव्य प्रवेश कराते हैं।।
जैनी श्रावक के दो सौ घर, इस भव्य नगर में बसते हैं।
जिनवर के ग्यारह भव्य, जिनालय इस नगरी में सजते हैं।। (15)

अब नौ जुलाई को कर अहार, उपदेश दिया व गमन किया।
रात्रि में मुनिवर भीकमपुर, मंदिर में जा विश्राम लिया।।
भीकमपुर का जिनमंदिर भी, प्राचीन व अतिशय कारी है।
जिनमंदिर का दर्शन करके, हर्षाते सब नर नारी हैं।। (16)

अतिशय क्षेत्र गिरार वंदना

फिर दस जुलाई की प्रातः बेला, सात किलोमीटर चलकर।
शुभ अतिशय क्षेत्र गिरार का, वंदन किया मुनिवर ने आकर।।
प्रभु आदिनाथ की भव्य सु-प्रतिमा, अतिशय कारी प्यारी है।
"आदी बाबा" कहते इसको, श्रद्धा से सब नर नारी हैं।। (17)

"आदि बाबा" का कर दर्शन, मुनिवर का मन हर्षाया था।
मंदिर में चार वेदियाँ लख, मन में विकल्प उठ आया था।।
इन चार वेदियों का होना, मंदिर जी में ये दोष रहा।
इक और वेदिका बनवाने का, मुनिवर ने उपदेश दिया।। (18)

निर्विघ्न हुआ आहार यहाँ, पर दोनों ही मुनिराजों का।
अब चतुर्मास के हेतु आना, हुआ था शुरु समाजों का।।
मध्यान्ह काल में मुनिवर जी, ने वहाँ धर्म उपदेश दिया।
फिर चतुर्मास का श्रीफल सभी, समाजों ने था भेंट किया।। (19)



महरौनी चातुर्मास 2000

सबकी श्रद्धा को मुनिवर ने, हँस करके तब स्वीकार किया।
इस चतुर्मास का महरौनी, वालों को शुभ आशीष दिया।।
मुनिवर का चौमासा पाकर, महरौनी में दीवाली थी।
यह खबर सभी के दामन को, खुशियों से भरने वाली थी।। (20)

सन दो हजार का चतुर्मास, महरौनी में करने हेतु।
चल पड़े मुनीवर महरौनी, सबकी झोली भरने हेतु।।
तब दस जुलाई को शाम चले, गिदवाहा में विश्राम लिया।
मुनिवर मडावरा नगरी में ग्यारह जुलाई आहार किया।। (21)

दो दिन मडावरा में ठहरे, बाजार में तब उपदेश हुआ।
दो दिन मुनिवर के रहने, से शुभ धर्ममयी परिवेश हुआ।।
डॉक्टर रमेश बिजनौर के संग, डाक्टर अशोक जी आये थे।
लक्ष्मण प्रसाद संग चौमासे, के सबने भाव सजाये थे।। (22)

बारह जुलाई को कर विहार, साढ़ूमल में आ जाते हैं।
साढ़ूमल से तेरह को चल, छायनमें रात बिताते हैं।।
चौदह जुलाई को महरौनी, चन्दा प्रभु कौलोनी आये।
हर्षित होकर श्रावक जन ने, मुनिवर को आहार करवाये।। (23)

मध्यान्ह काल में ग्राम पठा से, कुछ श्रावक आ जाते हैं।
दीदी विमलेश भी तब संग संग, मनोज पठा भी आते हैं।।
उस समय पठा में आयोजित था, एक विधान का आयोजन।
मुनिवर जी का सानिध्य मिले, ये ही था सबका आवेदन।। (24)

नगरी आये हमरे गुरुवर

पर यहीं से मुनिवर जी ने, उन सबको मंगल आशीष दिया।
अब महरौनी नगरी हेतु, मुनिवर मंगल प्रस्थान किया।।
तब सभी युवाओं ने मिलकर, नगरी को खूब सजाया था।
मानो नगरी की गली गली को, दुल्हन आज बनाया था।। (25)

लोगों में था उत्साह गजब, गुरुवर के नगर आगमन पर ।
सब झूम रहे थे मस्ती में, उत्सव छाया था हर मन पर।।
गलियाँ गुलाल से लाल भईं, सब वस्त्र गुलाबी लगते थे।
गुरुवर की भक्ति में रंग के, सब भक्त गुलाबी लगते थे।। (26)

नगरी के प्रमुख मार्गों पर, यह भव्य जुलूस घुमाया था।
नगरी आये हमरे गुरुवर, मानों ये सबे बताया था।।
फिर धूमधाम से श्रावक जन, मुनिवर जी को मंदिर लाये।
तब बड़े जिनालय का दर्शन, वंदन कर मुनिवर हर्षाये।। (27)

पन्द्रह जुलाई मध्यान्ह काल, सारी नगरी हर्षाई थी।
अब चतुर्मास मंगल स्थापन, की शुभ बेला आई थी।।
साढ़ूमल से श्री जयकुमार, पंडित जी इसमें आये थे।
सारे आयोजन पंडित जी ने, ही सम्पन्न कराये थे।। (28)

चातुर्मास स्थापना

जब चातुर्मास का मुख्य कलश, स्थापन का अवसर आया।
तब शिखर चंद जी 'दाऊ', ने मंगल स्थापन करवाया।।
इस आयोजन में मुख्य अतिथि, एस.डी.एम. जी आये थे।
आयोजन सब सम्पन्न हुआ, सारे जन हर्ष मनाये थे।। (29)



सोलह जुलाई को गुरु पूर्णिमा, पर्व मनाया था सबने।
शिष्यों से गुरु की महिमा का, अमृत तब पाया था सबने।।
फिर वीर की शासन जन्म जयन्ति का शुभ पर्व मनाया था।
सत्रह जुलाई को मुनिवर के सानिध्य में अवसर पाया था।। (30)

तीन पुरुषों की विधि

मुनिवर को महरौनी आये, अब चार पाँच दिन बीत गये।
लेकिन चौके में अब तक, बस व्रतधारी बूढ़े लोग रहे।।
हों तीन पुरुष पड़गाहन में, मुनिवर ने सहज प्रतिज्ञा ली।
सब चौके वाले परेशान पर, मुनिवर की न विधि मिली।। (31)

तब विधी नहीं मिल पाने से, मुनिवर वापिस आ जाते हैं।
अब देववंदना करने को, मुनिवर कमरे में आते हैं।।
सारी नगरी में चर्चा थी, मुनिवर की विधि न मिल पाई
चौके वाले सब दुखी हुये, सबकी ही आँखें भर आईं।। (32)

सब श्रावक पहुँचे सामायिक, के बाद पुनः विनती लेकर।
मुनिवर चर्या को फिर निकलें, कुछ ध्यान भावना पर देकर।।
लेकिन मुनिवर जी मौन रहे न शब्द कोई मुख से निकले।
कर लिया निवेदन बहुत मगर, मुनिवर चर्या को न निकले।। (33)

अगले दिन मुद्रा ले मंदिर से, मुनिवर चर्या को निकले।
मुनिवर का पड़गाहन लखने, श्रावक नगरी के उमड़ पड़े।।
चौके थे वही पुराने फिर, वो विधि मिला न पाते थे।
फिर अंतराय न हो जाये, सब श्रावक जन घबराते थे।। (34)

तीनों चौकों के पुरुष तभी, इक चौके में आ जाते हैं।
उन तीनों के सन्मुख जाकर, मुनिवर ठाड़े हो जाते हैं।।
मिल गई विधि सब लोगों को, तब मन में हर्ष अपार हुआ।
सब ओर थी हाथों में ताली और, मुख से जय जयकार हुआ।। (35)

निर्विघ्न हुआ आहार अहा, श्रावक हर्षित झूमें गायें।
मुनिवर को पहुँचाने मंदिर श्रावक, सब झूम-झूम आये।।
सबने पूछा मुनिवर जी से, कल विधी रही क्या भारी थी।
बोले मुनिवर त्रय पुरुषों की, कल के दिन विधि हमारी थी।। (36)

बोले मुनिवर कल एक एक, तो पुरुष सभी में नजराये।
पर तीन पुरुष इक साथ कहीं भी, हमको नजर नहीं आये।।
बस इसीलिये तो कल हमरी, तब विधि नहीं मिल पाई थी।
पर आज तीन जब एक हुये, तो तभी विधि मिल पाई थी।। (37)

पाँच युवाओं की विधि

अगले दिन कई युवाओं की, टोली मुनिवर संग चलती थी।
पर आज के दिन भी मुनिवर जी, की कहीं विधि न मिलती थी।।
तब सभी युवाओं ने सोचा, भैया कई ऐसो तो नइयाँ।
हो पाँच पुरुष की विधि आज, ईसे ही विधि मिल रई नइयाँ।। (38)

दौड़े दौड़े मंदिर पहुँचे, सोले के वस्त्र पहिन आये।
इक चौके में हो गये खड़े, पाँचों जब युवा नजर आये।।
बस तभी विधि मिल गई, तुरत मुनिवर पडगाये जाते हैं।
निर्विघ्न हुये आहार और, सब जय-जयकार लगाते हैं।। (39)



युवाओं में धर्म का बीजारोपण

सब समझ गये कि मुनिवर जी, अब विधि युवाओं की ले रए।
अब पडगाहन में युवा, सभी पहले से ही ठाड़े हो गए।।
अब मुनिश्री भी रोज विधी, में दो दो युवा बड़ाते थे।
नौ, ग्यारह, तेरह, पन्द्रह, सत्रह आदि विधी मिलाते थे।। (40)

इक ओर विधि में मुनिवर, की पुरूषों की संख्या बड़ती थी।
इक ओर पुरूष व चौकों की, संख्या भी प्रतिदिन चढ़ती थी।।
अब प्रतिदिन युवा साथियों की चौकों में मांगे बढ़ती थी।
हर ओर युवाओं की टोली, पड़गाहन हेतु उमड़ती थी।। (41)

दस बजे का आलम ये रहता, देखें जिस ओर नजर डालें।
हर गली गली व द्वार द्वार, पर दिखते पीत वस्त्र वाले।।
होकर कतार में बद्ध युवा, तन पे पीले कपड़े डाले।
कुछ रहते युवा व्यवस्था में, जो पेन्ट-शर्ट कपड़े वाले।। (42)

यह पडगाहन का दृश्य, अनौखा सभी देखने आते थे।
निर्दोष श्रमणचर्या लखकर, सब फूले नहीं समाते थे।।
नवयुवक अभी तक मुनिवर, का पडगाहन कर ले जाते थे।
पर डर के कारण वो चौके, के भीतर तक न जाते थे।। (43)

आहार चर्या पूरी होने तक, बाहर ही सब रहते थे।
लेकिन आहार मुनीवर को, अंदर जाके न देते थे।।
इक दिन सबसे मुनिवर बोले, मैं तभी पडग के जाऊँगा।
गर तुम आहार नहीं दोगे, तो मैं वापिस आ जाऊँगा।। (44)

सब युवा मुनीवर से बोले, हम सभी युवा हैं हे मुनिवर।
न विघ्न कोई आ जाये, वहाँ इससे थोड़ा लगता है डर।।
मुनिवर बोले इक काम करो, कुछ लड़कों का क्रम निश्चित हो।
पर रोज रोज आकर चौके, में लड़के सारे आहार दो।। (45)

मुनिवर की बात समझ आई, सबने उसको स्वीकार किया।
सब युवा साथियों ने मिलकर, अगले दिन से आहार दिया।।
अब मुनिवर ने धीरे-धीरे, सब जैनाचार सिखाया था।
सब युवा साथियों को थोड़ा थोड़ा, सा त्याग कराया था।। (46)

इस तरह धर्म का मान बड़ा, हर ओर धर्म की अर्चा थी।
हर गली गली व चौराहे, बस मुनिवर की ही चर्चा थी।।
जुड़ गये धर्म से युवा सभी, अब फिल्मी गाने छोड़ दिये।
सबने अब मुनिवर के मीठे, भजनों से रिस्ते जोड़ लिये।। (47)

वाणी सुन फूटे श्रद्धा के अंकुर

इक माँ ने अपने बेटे को, इक दिन ऐसे समझाया था।
अपने घर में भी मुनिवर, का चौका हो भाव बताया था।।
बेटे को धर्म न भाता था, बोला घर पे न आऊँगा।
जब तक चौका होगा घर में, मैं बाहर समय बिताऊँगा।। (48)

माँ मन मसोस कर रह जाती, बेटे से आखिर कहती क्या।
चौके के भाव बहुत बनते पर, एक अकेली करती क्या।।
माँ का घर व माता का मन, मंदिर के सन्मुख रहता था।
पर बेटा पाया था ऐसा जो, धर्म से उन्मुख रहता था।। (49)



प्रतिदिन मुनिवर मंदिर जी, में उपदेशामृत बरसाते थे।
वाणी गुरुवर की सुन सुनके, सब भव्य जीव हर्षाते थे।।
इक दिन गुरुवर के श्री मुख, से जिनवाणी अमृत झरता था।
वो माँ का बेटा अपने घर, की छत पे टैला करता था।। (50)

मुनिवर के मधुर मधुर वैना, उसके कानों में वहाँ पड़े।
थम गये कदम कुछ देर सुना, अपनी छत पर ही खड़े खड़े।।
मन सुनकर इतना शांत हुआ, ऐसा पहले तो हुआ नही।
अब तक संतो की वाणी ने उस, यौवन मन को छुआ नहीं।। (51)

अगले दिन वो उपदेश पूर्व, जल्दी रेडी हो जाता है।
अपने घर की छत पर जाकर, सीढ़ी पर वो जम जाता है।।
गुरुवर के मुखसे "ओम नमः सिद्धेभ्या", की जब मधुर ध्वनी।
उपदेश सुना इससे पहले न, ऐसी वाणी कभी सुनी।। (52)

उस युवक के मन में अब श्रद्धा के अंकुर उगते पाये थे।
मुनिवर की श्रद्धा भक्ति, से नगरी में उत्सव छाये थे।।
अगले दिन वह तैयार हुआ, मंदिर के बाहर प्रांगण में।
जाकर पहले ही बैठ गया, सुनने की इच्छा थी मन में।। (53)

अब तो उससे न रहा गया, चौथे दिन मंदिर में आकर।
मुनिवर की धर्मसभा में, वो बैठा सबसे आगे जाकर।।
श्री धन्यकुमार पवैया जी, संचालन सुन्दर करते थे।
फिर धर्मसभा के बाद वही कुछ, प्रश्न भी पूछा करते थे।। (54)

यह युवक रोज अब मुनिवर के, उपदेशों को लिखता रहता।
हर प्रश्न का उत्तर देने में, अब वो सबसे आगे रहता।।
वह युवक था भाई सतीश सिंघई, अब मुनिवर का दीवाना था।
अब मुनिवर से मिलने कमरे, में उसका आना जाना था।। (55)

अब तो मुनिवर के वचनों का, अक्षरसः पालन करता था।
वो भी अब धर्म सभाओं का, सुंदर संचालन करता था।।
इक दिन अपनी माँ से जाकर, उस युवक ने अपना मन खोला।
माँ तू तो सच सच कहती थी, पर मैंने उसको न तोला।। (56)

माँ नगर में जो मुनिवर आये, वो सबसे जुदा निराले हैं।
अपनी करुणा से जन-जन, को आनंदित करने वाले हैं।।
माँ अब तू चौका लगा मैं, मुनिवर को पडगाकर लाऊँगा।
अपने गुरुवर को अब अपने, हाथों से आहार कराऊँगा।। (57)

बन गया वो गुरु का दीवाना, गुरुवर को भगवन कहता था।
अब तो अपने भगवन् की ही, भक्ति में डूबा रहता था।।
उसके मन में श्रद्धा बनकर, गुरुनाम सु-दीपक जलता था।
गुरु नाम से होती रोज शाम, गुरु नाम से सूर्य निकलता था।। (58)

मोक्ष सप्तमी

दिन सात अगस्त का अब, आया प्रभु पार्श्वनाथ निर्वाण दिवस।
प्रभु पार्श्वनाथ की पूजा, की सारे भक्तों ने हरष हरष।।
तब श्री महेन्द्रबाबा ने स्वर, संगीत से रंग जमाया था।
मुनिवर के संग प्रभु पूजा में, तब भारी आनंद आया था।। (59)



भक्तामर शिविर प्रारंभ

उस ही दिन से भक्तामर का, शुभ शिविर यहाँ प्रारंभ किया।
श्री शिखर चंद परिवार ने, मंगल कलश का पूरा लाभ लिया।।
इस शिविर में सारे नर नारी, सब वृद्ध युवा बच्चे सारे।
अब रोज सिखाते भक्तामर, नूतन ढंग से मुनिवर प्यारे।। (60)

जिसने की शरम उसके फूटे करम

अगले दिन से ही मुनिवर ने, श्री भक्तामर का शिविर लिया।
हों श्वेत वस्त्र सिर पे टोपी, मुनिवर ने सबको नियम दिया।।
तब भाई सतीश सिंघई जी, भी इक सुंदर टोपी ले आये।
पूरे बाजार में वो दिनभर, सुंदर टोपी में नजराये।। (61)

अगले दिन वो सिर पे टोपी, रख धर्मसभा में आया था।
तब मुनिवर को कुछ लड़कों ने, कल का सब हाल बताया था।।
बोले महाराज श्री कल के, दिन हमरे भाई सतीश सिंघई।
दिनभर बजार में श्वेत ध्वल, टोपी के संग घूमे खूबई।। (62)

पूछा मुनिवर ने तो बोले, भैया सतीश जी सिंघई वहाँ।
हम ईसें घूमें जिससे हमसे, युवा हों प्रेरित सभी यहाँ।।
जब मुझ सतीश सा कोई, नास्तिक टोपी के संग घूम रहा।
फिर धर्मकाज में सिर पे टोपी, सभी लगायें शर्म कहाँ।। (63)

इससे प्रेरित हो युवा सभी, जब रोज सभा में आते थे।
तब सिर पे टोपी लगा, गुरु अनुशासन को अपनाते थे।।
मुनिवर जी का शुद्ध उच्चारण, सबको आकर्षित करता था।
हर कोई शुद्ध उच्चारण को, कंठों में धारण करता था।। (64)

श्रमण संस्कृति रक्षा पर्व

पन्द्रह अगस्त रक्षाबंधन का, पर्व सुपावन आया था।
श्रमण संस्कृति रक्षा का, सबने संकल्प उठाया था।।
बांधे हाथों में ब्रह्मसूत्र, मुनिवर से था उपदेश सुना।
श्री देवशास्त्र गुरु की रक्षा, का धागे के संग भाव बुना।। (65)

पर्वों का राजा

माह सितम्बर शुरु हुआ, अब पर्वों का राजा आया।
तीन से बारह माह सितम्बर, पर्यूषण अवसर पाया।।
जिसमें प्रतिदिन दस धर्मों पर, मुनिवर जी का उपदेश हुआ।
सुनकर गुरु की अमृतवाणी, सब दूर हृदय का क्लेश हुआ।। (66)

अब पर्यूषण के बाद सितम्बर, चौदह का शुभ दिन आया।
था पर्व क्षमावाणी का दिन, नगरी में था उत्सव छाया।।
तब बड़े जिनालय से मुनिवर, संग भव्य जुलूस निकाला था।
वह नगर ललितपुर का चांचड़, मण्डल भी गजब निराला था।। (67)

श्रद्धा का ये भारी जुलूस, अब क्षेत्रपाल आ जाता है।
मुनिवर के शुभ आशीष तले, यह पर्व मनाया जाता है।।
भक्तों की आँखों से आंसु, बनकर जब गुरुवाणी बरसी।
अब क्षमा के जल में वर्षों के, थे बैर धुले चेतन हरसी।। (68)

अहिंसा दिवस

बापू की याद दिलाने को, दो अक्टूबर का दिन आया।
यह दिवस "अहिंसा दिवस", रूप में मुनिवर जी ने मनवाया।।
इक भव्य विशाल "अहिंसा रैली", का सुंदर आयोजन था।
फिर मुनिवर जी का सार्वजनिक "संदेश अहिंसा" पावन था।। (69)



डायमण्ड जुबली

इस चतुर्मास के जब सौ, दिन सानंद यहाँ सम्पन्न हुये।
तब चतुर्मास की "डायमण्ड जुबली", आयोजन के भाव हुये।।
कहीं रंगोली कहीं दीप जले, कई और बहुत आयोजन थे।
श्री सिंघई सतीश ने प्रश्न किये, जो जुड़े गुरु के जीवन से।। (70)

मैन मार्केट में गुरुवाणी

संत किसी जाती का न, न धर्म विशेष का होता है।
सब जीव मात्र का हित उसके, सद्उपदेशों से होता है।।
जब जैनों के संग कुछ अजैन, भी गुरुवाणी को ललचाये।
तब पंच दिवसीय उपदेशामृत, मैन बजार में करवाये।। (71)

गुरुवर को सुनने जैन अजैन, सभी जन दौड़े आते थे।
उपदेशामृत सुन मुनिवर का, वो फूले नहीं समाते थे।।
जब संस्कार का पाठ यहाँ पर, मुनिवर जी ने सिखलाया।
जिसने इकबार सुना गुरुवर, को बार-बार दौड़ा आया।। (72)

कैसे ये महीना चार गये, कब चौमासा ये बीत गया।
न कोई समझ पाया कब, कैसे समय का ये घट रीत गया।।
जब अक्टूबर का महीना, व तारिख सत्ताइस आई थी।
इस चतुर्मास निष्ठापन में, आँखें सबकी भर आई थीं।। (73)

अब चंदाप्रभु जिनालय में मुनिवर विमर्श जी जाते हैं।
जाकरके भव्य जिनालय में वेदी का न्यास कराते हैं।।
मुनिवर जी का सानिध्य मिला आयोजन ये सम्पन्न हुआ।
प्रभु की नूतन वेदी के नव निर्माण का शुभ संकल्प हुआ।। (74)

आचार्य पद्मनंदी जी से मिलन

आचार्य पद्मनंदी जी अब, महरौनी नगरी में आये।
यह संत मिलन का समाचार, सुन सारे श्रावक हर्षाये।।
मुनिवर विमर्शसागर जी ने, नगरी से कुछ बाहर आकर।
आचार्य संघ की अगवानी, की मुनिवर ने आगे जाकर।। (75)

आकर मंगल उद्बोधन था, फिर संग में आहार चर्या थी।
मध्यान्ह में दोनों संघों में, कुछ हुई तत्त्व की चर्चा थी।।
आचार्य पद्मनंदी जी ने, मध्यान्ह काल में गमन किया।
पीछे श्रुतनंदी आते हैं, ऐसा थोड़ा संकेत दिया।। (76)

दो दिवस बाद मुनिवर, श्रुतनंदी अपने संघ सहित आये।
संग अमरनंदी, मार्दवनंदी, व क्षुल्लक पद्म सिंधु आये।।
मुनिवर विमर्शसागर जी से, मिलकर के मुनिवर हर्षाये।
मुनिवर के प्रति श्रुतनंदी जी, वात्सल्य बहुत ही दर्शाये।। (77)

सुकुमाल मुनि

दोनों मुनिराजों का पावन, उपदेश हुआ मंगलकारी।
मुनिवर विमर्शसागर जी, ने उपदेश दिया पहली बारी ।।
मुनिवर विमर्शसागर जी को, लख-श्रुतनंदी जी कहते हैं।
"ये मुनिवर हैं सुकुमाल मुनि", वस हरपल हँसते रहते हैं।। (78)

दो संघ वहाँ महरौनी में, आपस में मिलकर साथ रहे।
तब इसी बीच मुनि विश्वकीर्ति, सागरजी भी वहाँ आत रहे।।
संग में ऐलक विनम्रसागर, व साथ विनिश्चलसागर थे।
निर्ग्रंथ सहोदर खूब मिले, इक दूजे से हर्षाकर के।। (79)



पिच्छिका परिवर्तन

दिन चौदह माह दिसम्बर का आया, पिच्छिका परिवर्तन।
मुनिवर विमर्शसागर जी का, मुनिदीक्षा दिवस का आयोजन।।
बाजार बीच में रखा गया था, ये सारा ही आयोजन।
ऐलक विनम्रसागर जी ने, तब किया मंच का संचालन।। (80)

तब दाऊ शिखर चंद जी का, भैया पुण्योदय था भाग्य खिला।
मुनिवर की पुरानी पिच्छिका, तब पाने का सौभाग्य मिला।।
मुनिवर विमर्शसागर जी, से ये पिछी पुरानी पाकर के।
तब दाऊ वहाँ पर झूठ उठे, मन में भारी हर्षा कर के।। (81)

पूजन प्रशिक्षण शिविर

मुनिवर विमर्शसागर जी ने फिर, पूजन शिविर लगाया था।
ऐलक विनम्रसागर जी का, निर्देशन सबने पाया था।।
मुनिवर की मीठी वाणी में, प्रभु की पूजा का आयोजन।
वो शिविर भुलाये न भूलें, महरौनी के सब श्रावक जन।। (82)

मुनि विश्वकीर्तिसागर जी, व संग ऐलक विनम्रसागर।
मुनिवर विमर्शसागर जी ने, तब करी विदाई हरषा कर।।
कुछ दिनों वाद मुनिवर, श्रुतिनंदी जी विहार कर जाते है।
मुनिवर विमर्शसागर जी से, जाते जाते कह जाते है।। (83)

अद्वितीय वैयावृत्ति

मुनिवर विमर्शसागर जी तुमने, मुझे पिता के तुल्य रखा।
मेरी सेवा वैयावृत्ति कर-करके, खूबई ध्यान रखा।।
इतना सम्मान तो पुत्र कोई, भी पिता को न दे सकता है।
फिर से मिलना, तुमसे मुनियों, की सबको आवश्यकता है।। (84)

दिन में शादी दिन में भोज

धर्मोपदेश उन्नीस जनवरी, मुनिवर का था नारा ओज ।
"दिन में शादी दिन भोज, मात-पिता की सेवा रोज''।।
मुनिवर का संदेश ये पावन, जिसको सबने माना था।
बस मुनिवर के ही वचनों पर चलना, समाज ने ठाना था।। (85)

केवलचंद जी भैया जी के, परिवार में शादी आई थी।
शादी के कारड़ प्रिन्ट हुये, हो गई थी वहाँ सगाई भी।।
उनने गुरू वचनों को सुनकर, शादी के कारड़ बदल दिये।
फिर पुनः कार्ड जो प्रिन्ट हुये, उनमें सुंदर निर्देश दिये।। (86)

उस कारड़ में लिखवाया था, मुनिवर विमर्शसागर जी की।
आज्ञानुसार दिन में होंगी, अब सारी क्रिया शादी की।।
दिन में भोजन दिन में पानी, दिन में शादी जो करता है।
वो ही सच्चा जैनी भाई जिनधर्म, सु-पालन करता है।। (87)

इस चातुर्मास में श्रेष्ठीवर श्रीराजकुमार, सतभैया जी।
थे सिंघई सतीश, प्रशांत सिंघई व धन्यकुमार पवैया जी।।
भाई प्रशाांत, अनिल जी मिठया, कोमल, ऋषभ कठरया जी।
बाबा महेन्द्र व शिखर चौधरी, दाऊ शिखर कठरया जी।। (88)

अरविन्द जैन जी वीर, रेडियो वाले हरदम साथ रहे।
हर वक्त समर्पित कपूरचंद्र जी, लौंडुआ की क्या बात कहें।।
डॉ. के. सी. जैन के संग, श्री जैन साब का नाम आया।
इस चातुर्मास में इन सबने गुरु, सेवा का अवसर पाया।। (89)



विदाई

बीस जनवरी मुनिवर जी, का अब विहार संभावित था।
भक्तों के मन में चतुर्मास, ये अब तक भी स्थापित था।।
मध्यान्ह काल में धर्मसभा, सब जैन अजैन भी आये थे।
आँखों में आँसु कैद किये, पर कोई रोक न पाये थे।। (90)

कोई गीत विदाई के गाता, कोई अपने दुःख कहता था।
बस गुरु जुदाई का ही गम, सबकी आँखों में बहता था।।
वाणी गुरुमुख से खिरती थी, सबकी आँखों में नमीं रही।
सब क्षमा माँगते गुरुवर से, चौमासे में गर कमी रही।। (91)

करने बिहार जब मुनिवर ने, द्वय अपने चरण बड़ाये थे।
भक्तों ने अपनी श्रद्धा के, आँसु से चरण धुलाये थे।।
कहते हम भक्ति के प्यासे, गुरुवर न छोड़ हमें जाओ।
कब आओगे गुरुवर फिर से, बस इतना तो बतला जाओ।। (92)

भक्तों की आँखों में आँसु, दिल में श्रद्धा उपहार दिये।
मुनिवर जी महरौनी नगरी, से पाँच बजे थे गमन किये।।
चलकर महरौनी से मुनिवर, अब ग्राम मढ़ावरा आते हैं।
सीरोन क्षेत्र की वंदनार्थ, मुनिवर आगे बढ़ जाते हैं।। (93)

दस बारह दिन सीरोन रूके, फिर गौना से होके मुनिवर।
शुभ अतिशय क्षेत्र नवागढ़ का, दर्शन करने आये गुरुवर।।
इस अतिशय क्षेत्र का वंदन कर, अब बड़ा गाँव का दर्श किया।
रुक करके सात दिनों तक मुनिवर, ने थोड़ा विश्राम किया।। (94)

घुवारा प्रवास

फिर बड़ागाँव से अब मुनिवर जी आगे वहाँ निकलते हैं।
मुनि विश्वपूज्य को संग लेकर मुनिवर विमर्शजी चलते हैं।।
मुनिवर जी अपने संघ सहित अब नगर घुवारा आये थे।
तब अनुज विमदसागर जी से मिलकर मुनिवर हर्षाये थे।। (95)

बड़े जिनालय में ही दोनों, संघ वहाँ इक साथ रहे।
तब सभी संघ की क्रियायें, एकई संग दोनों करत रहे।।
मध्यान्ह काल उपदेश रूप, में मूलाचार जी पढ़ते थे।
जिसकी इक इक गाथा में वो, अपने आचार को गढ़ते थे।। (96)

दोनों ही मुनिवर जंगल हेतु, पास किले पर जाते थे।
जाकर के दूर किले पर दोनों, आतम ध्यान लगाते थे।।
तब नगर घुवारा के घर-घर, में धर्म प्रभाव बड़ाया था।
उपदेशों में मुनिवर जी ने, तब धर्माचार सिखाया था।। (97)

होली का दिन जब आया था, सब रंग उमंग से भरे हुये।
हाथों में नानारंग लिये, सब चौराहों पर खड़े हुये।।
मुनिवर विमर्शसागर जी, तब आहार चर्या को जाते हैं।
इक शूद्र के छू जाने से, मुनिवर अंतराय कर आते हैं।। (98)

घुवारा में सिद्धचक्र

फिर दो से ग्यारह मार्च तलक, श्री सिद्धचक्र का आयोजन।
दो मुनिवर का सानिध्य मिला, तब हुआ सफल सब संयोजन।।
पंडित रमेश जी नगर, घुवारा वालों का था निर्देशन।
दोनों मुनिवर के उपदेशों, से रहे प्रभावित सारे जन।। (99)

आयोजन के उपरान्त, यहाँ मुनिराज विमदसागर जी ने।
कर दिया गमन, कुछ दूरी, तक तब पहुँचाया मुनिवर जी ने।।
कुछ समय बाद, मुनिवर विमर्शसागर जी ने भी गमन किया।
करके बिहार अब रामटोरिया, वालों को सानिध्य दिया।। (100)

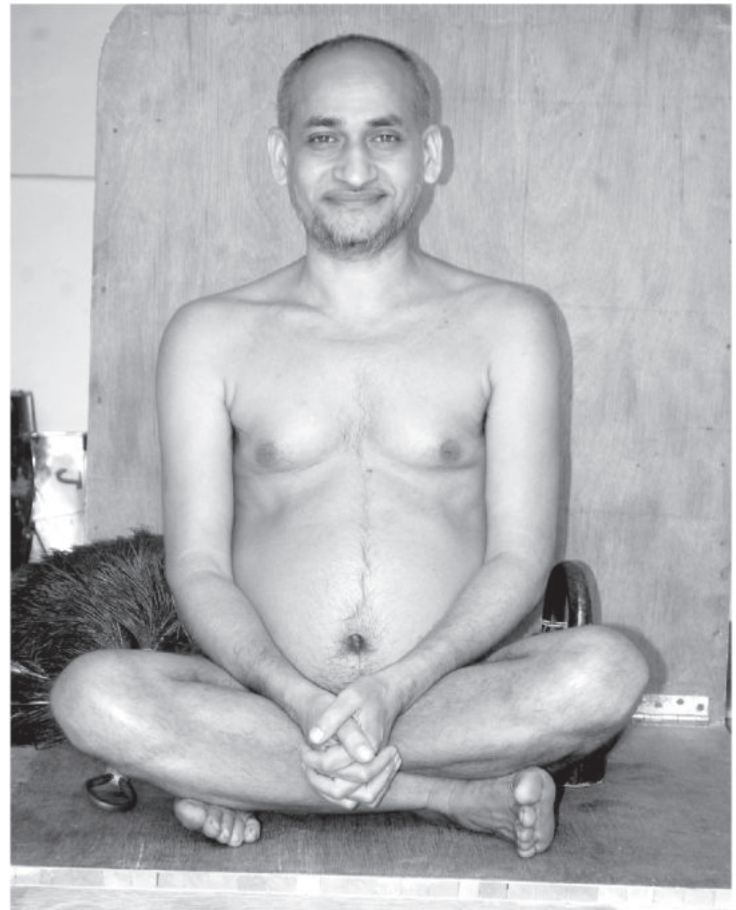
णमोकार अखण्ड जाप

जब रामटोरिया वालों को, गुरुवर का शुभ सानिध्य मिला।
कुछ आयोजन करवाने का, सबको ही था आधार-मिला।।
चौदह से तेइस मार्च तलक, नवकार का जाप अखण्ड रहा।
प्रतिदिन मुनिवर के उपदेशों, से सबका ही मन हरस रहा।। (101)

ग्यारहवाँ पर्व पूर्ण

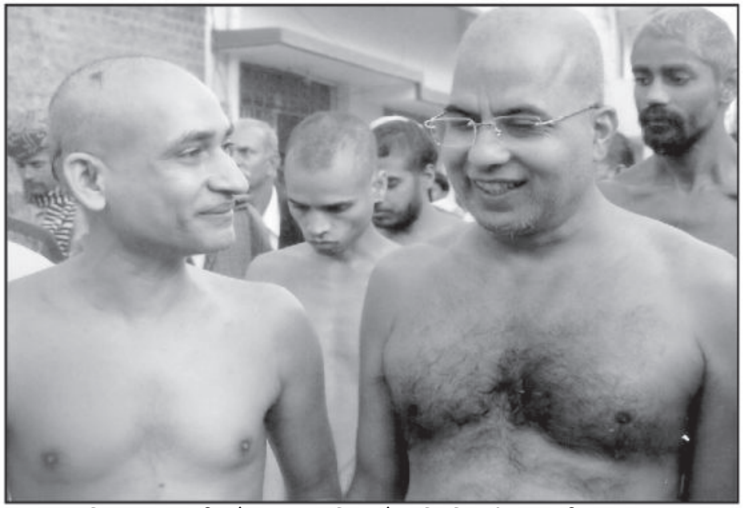
एकादश अब सोपान हुये, पूरे मुनिवर की झाँकी के।
अब आगे तुम्हें सुनाऊँगा, सोपान बचे जो वाँकी के।।
करके गुरुवर जी को वंदन, अब कलम ने कुछ विश्राम लिया।
किन्तु संग-संग अग्रिम लेखन, का कलम ने अब संकल्प किया।।
(102)

❑❑❑❑

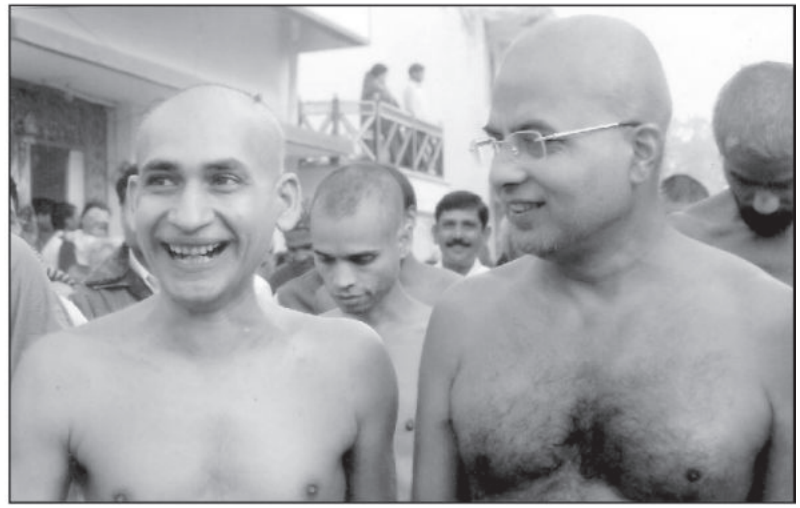


सहज प्रसन्न वदन – श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी मुनिराज

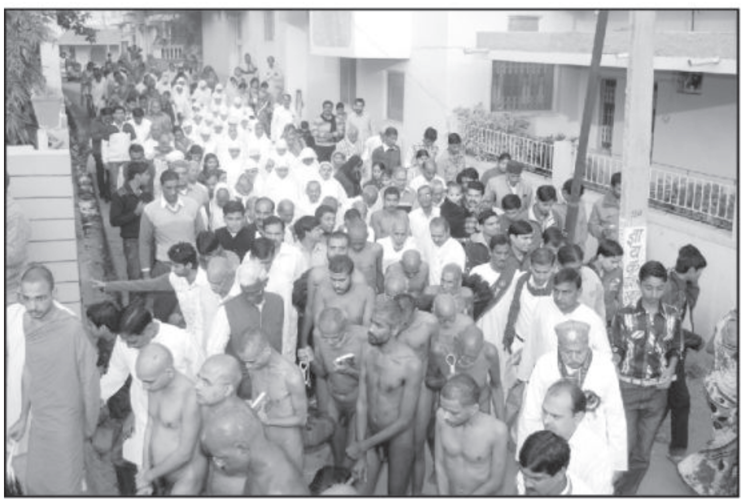
चित्र समूह - 5
आचार्य पद दर्शन



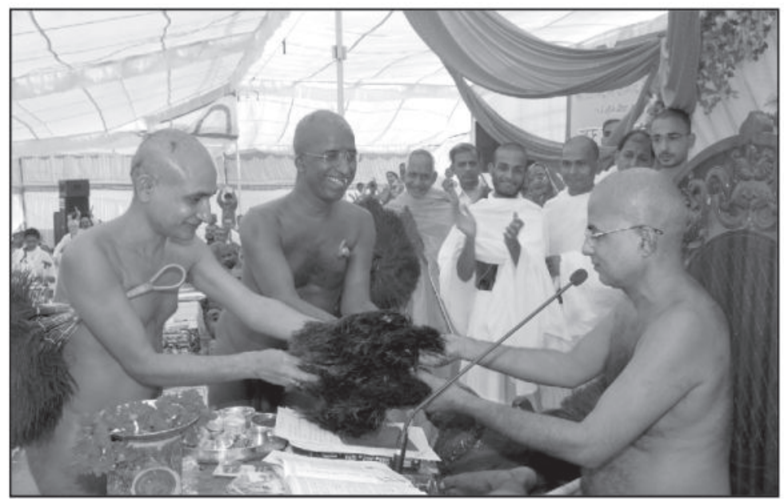
गुरु विरागसागर जी को अपलक निहारते मुनि विमर्शसागर जी।



आचार्य पदारोहण शोभायात्रा के समय ऐसा क्या कह दिया गुरु विरागसागर जी ने कि शिष्य मुनि श्री विमर्शसागर जी खिलखिलाकर हँस पड़े।



आचार्य पद संस्कार महोत्सव में जाते हुए आचार्यश्री विरागसागर जी ससंघ एवं श्रावकजन



आचार्य पद संस्कार पूर्व पूज्य गुरुदेव को पिच्छी भेंट करते हुए मुनि श्री विमर्शसागर जी व मुनि श्री विनम्रसागर जी



bhavlingi sant

shramnacharya shri 108 vimarsh sagar ji gurudev

"द्वादश पर्व"

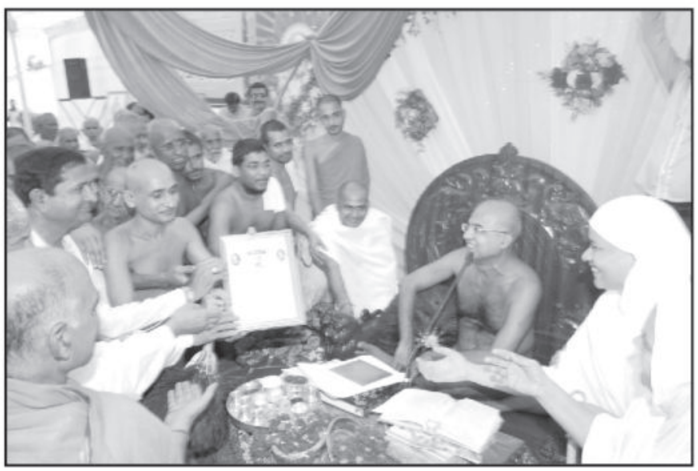
विशुद्धि पर्व

संजीवनी भावलिंगी संत (महाकाव्य)

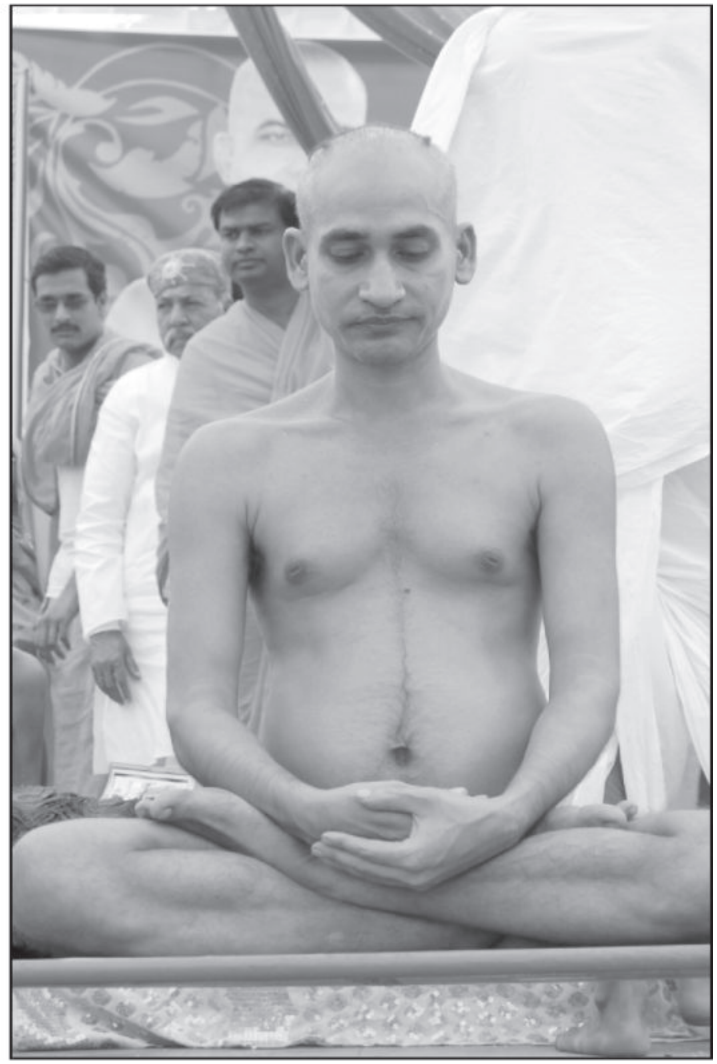
चित्र समूह - 5
आचार्य पद दर्शन



सूरिगच्छाचार्य पद की घोषणा करते हुए मुनि श्री विमर्शसागर जी
(बाँसवाड़ा १२/१२/२०१०)



आचार्य श्री को सूरिगच्छाचार्य प्रशस्ति पत्र भेंट करते हुए
मुनि श्री विमर्शसागर जी, मुनि श्री विनम्रसागर जी, आर्यिका विशिष्टश्री, आर्यिका सत्यमति,
क्षुल्लक विरंजनसागर, क्षुल्लक अतुल्यसागर एवं सुरेश सिंघवी (बाँसवाड़ा) एवं मुनिसंघ



आचार्य पदारोहण के समय तीर्थंकर मुद्रा
में विराजित मुनिश्री विमर्शसागर जी



"द्वादश पर्व"

"विशुद्धि पर्व"

मंगलाचरण

ये संघ चतुर्विध कहलाता, ऋषिवर मुनिवर यतिवर अनगार।
ऋद्धि धारी "ऋषि" कहाते हैं, सामान्य श्रमण "अनगार"।।
श्रमण जो उपशम और क्षपक, श्रेणी चढ़ते वे "यति" कहे।
अवधि, मनः पर्यय ज्ञानी "मुनियों", के चरणों शीष रहे।। (1)

निज स्वभाव से द्रव्य कभी, भी पर स्वरूप न होते हैं।
उस निज स्वभाव के आश्रय से, ही राग द्वेष सब खोते हैं।।
स्वाश्रय से जिनने चेतन को, चित् स्वरूप ही पाया है।
स्वाश्रय में स्थिरता पाने, नित उनको शीष झुकाया है।। (2)

इस तन के देवालय में, बैठा चेतन देव निराला है।
परिणमन जो प्रतिपल होता है, वो देखन जानन वाला है।।
अव्यक्त देव को प्रगटाने मैं, व्यक्त देव को ध्याता हूँ।
उनके आश्रय अवलम्बन से, मैं निज स्वरुप को भाता हूँ।। (3)

अब गुरु जीवन की गाथा, का अग्रिम अध्याय यहाँ जारी।
गुरु चरणों में वंदन करता, जिनकी महिमा अतिशय कारी।।
रहते निर्लेप हवा जैसे व, अमित व्योम सा हृदय रहा।
उन गुरुवर विमर्शसागर जी के, चरणों मस्तक झुका रहा।। (4)

गुरु भाइयों से मिलन

अब रामटोरिया से मुनिवर जी, नगर शाहगढ़ ओर चले।
तब पूर्व विराजित नगर शाहगढ़, में मुनिराज विशुद्ध भले।।
मुनिवर विशुद्ध मुनिवर विशल्य, मुनि विश्ववीर संग आये थे।
मुनिवर विमर्शसागर जी की, अगवानी कर हर्षाये थे।। (5)

दो संत मिले, निर्ग्रंथ मिले, भावी दोनों भगवंत मिले।
दो भवसागर के अंत मिले, वात्सल्य भाव जीवंत मिले।।
मुनिवर विमर्श, मुनिवर विशुद्ध, दोनों का फिर उद्बोधन था।
आतम हित के नव सूत्र मिले, सुनकर हर्षित सबका मन था।। (6)

मध्यान्ह काल मुनिवर विशुद्धसागर जी, ने स्वाध्याय किया।
पञ्चास्तिकाय का विषय, वहाँ पर मुनिवर ने विस्तार दिया।।
यह ग्रंथराज मुनिवर विमर्शसागर जी, को तब भेंट किया।
इसको अवश्य पढ़ना विशुद्धसागर जी, ने संकेत दिया।। (7)

सोलह अप्रैल सु-दिन आया, प्रभुवीर जयन्ति आयोजन।
नगरी में भारी धूमधाम से, किया गया था संयोजन।।
मुनि विश्ववीर, मुनिवर विमर्श, मुनिवर विशल्यसागर जी का।
उद्बोधन था मंगलकारी, मुनिवर विशुद्धसागर जी का।। (8)

मुनिवर विमर्श संग विश्वपूज्य, आगे बिहार कर जाते हैं।
नरवां कारीटोरन, गिरार के वंदन कर हर्षाते हैं।।
करके गिरार का शुभ वंदन, अब बरायठा नगरी आये।
पंडित श्री राजकुमार ऋषभ, आदि अगवानि करवाये।। (9)



वरायठा में श्रुतपंचमी

सत्ताइस फरवरी को श्रुत, पंचमि महापर्व का दिन आया।
मुनिवर विमर्श ने बड़े, हर्ष से महापर्व को मनवाया।।
पंडित श्री राजकुमार रहे, उनका सारा संचालन था।
श्रुतपंचमि का शुभ सार लिये, मुनिवर जी का उद्‌बोधन था।। (10)

इक्किस से इकतिस मई तलक, पूजन का शिविर लगाया था।
जिसमें पूजन करना सबको, मुनिवर जी ने सिखलाया था।।
फिर ग्रीष्म काल में मुनिवर ने, जिन वचनामृत को बरसाया।
निर्ग्रंथों से निर्ग्रंथ वचन, सुनकर सबका मन हर्षाया।। (11)

दो वैरागी निकल पड़े

मुनिवर जी का सानिध्य यहाँ, जब दो युवकों ने पाया था।
अपने मन में गुरुवाणी को, सुनकर वैराग्य जगाया था।।
गुरुवर ने जब वरायठा से, आगे की ओर था गमन किया।
संदेश और आशीष ने तब, मुनिवर के संगही गमन किया।। (12)

बण्डा नगरी में गुरुवर

मुनिवर विहार कर चार जून, को वण्डा नगरी में आये।
वण्डा नगरी के बड़े जिनालय, में मुनिद्वय को ठहराये।।
स्वाध्याय लाभ मध्यान्ह काल, में मुनिवर के मुख से पाया।
सन्ध्या बेला में गुरुभक्ति, आरति करके मन हर्षाया।। (13)

अगले दिन प्रातः श्रावक, जन हाथों में श्रीफल ले आये।
धर्मोपदेश पाने मुनिवर से, मन में भाव सजा लाये।।
श्री रत्नकरण्डक श्रावकाचार, पे मुनिवर का उपदेश हुआ।
कई दिन तक एक विषय पर, वाणी सुनकर हर्ष विशेष हुआ।। (14)

मुनिवर की आहार चर्या से, सब ही जन बहुत प्रभावित थे।
मुनिवर का सौम्य स्वभाव, सरलता, आदि गुण मन भावित थे।।
निर्दोष एषणा चर्या की, न जग में कोई तुलना थी।
ऐसी चर्या लख हृदय सभी, के श्रद्धा ज्योत तो जलना थी।। (15)

हर हाल में सहज

इक दिन अध्यक्ष महोदय, ने तेरा और बीस के पंथ लिये।
इन पंथों को लेकर मुनिवर जी, से कुछ थोड़े प्रश्न किये।।
सारे प्रश्नों का समाधान, मुनिवर ने बड़ी सहजता से।
कर दिया, चकित थे सभी लोग, मुनिवर की सहज सरलता से ।। (16)

उस समय उपस्थित रहीं, वहाँ कुछ ब्रह्मचारिणी बहनें थीं।
गुरुवर विद्यासागर जी, की संघस्था सारी बहनें थीं।।
मुनिवर की सहज सरलता, से वो बहिनें सभी प्रभावित थीं।
मुनिवर की दिव्य शांत मुद्रा, उन सबके मन को भावित थी।। (17)

अध्यक्ष महोदय से बोलीं, दीदी थोड़ा सा मुस्काकर।
ऐसे कोई प्रश्न न किया करें, मुनिवर के पास आप आकर।।
अध्यक्ष महोदय मुस्काये, फिर शीघ्र वहाँ से चले गये।
वो प्रश्न सहजता में पूछे थे, अविनय के न भाव रहे।। (18)

अध्यक्ष महोदय चले गये, फिर दीदी सारी कहतीं हैं।
मुनिराज इतै के लोगों की, ऐसी परिणतियाँ रहती हैं।।
ऐसे प्रश्नों के समाधान, इन लोगों को न दिया करें।
जब व्यर्थ के प्रश्न करे, कोई तो आप मौन ले लिया करें।। (19)



ये प्रश्न मात्र ही करते हैं, न जीवन में बदलाव कोई।
कुछ लोग तो ये ही चाहत है, कि हो जाये अलगाव कोई।।
सब ब्रह्मचारिणी बहनों का, अभिप्राय रहा सम्यक् मन में।
निर्ग्रंथ भेष में भक्ति थी, उन सब बहनों के जीवन में।। (20)

उस ही दिन सन्ध्या बेला में, मुनिवर जी ने तब गमन किया।
श्री शांतिनाथ जिनालय में, मुनिवर ने जा विश्राम लिया।।
वो ब्रह्मचारिणी बहिनें, सब सन्ध्या बेला में आती हैं।
मुनिवर को कर वंदन थोड़ा, मुनिवर से यूँ बतियाती हैं।। (21)

आचार्य विद्यासागर जी जैसी चर्या

गुरुदेव! आपको बड़े जिनालय, से बिहार न करना था।
कुछ और समय रुक कर, मुनिवर जी धर्म भावना भरना था।।
फिर बातों ही बातों में, मुनिवर जी से उनने पूछ लिया।
क्या आहार चर्या करत भये, आचार्य श्री का दर्श किया।। (22)

बोले मुनिवर मुस्का करके, ऐसा अवसर तो न पाया।
यद्यापि दो तीन बार उनके, दर्शन का शुभ अवसर आया।।
बस अरिहंतों की चर्या को, आगम में पढ़कर जाना है।
अपने गुरुवर की चर्या को, निज का आदर्श सु-माना है।। (23)

दीदी बोलीं मुनिराज आपकी, सुंदर हर इक किरिया है।
गुरुवर विद्यासागर से मिलती, जुलती आहार चर्या है।।
मुनिवर ने मौन भाव से ही, उस चर्चा को सम्मान दिया।
दीदी लोगों ने कर वंदन, मंदिर जी को प्रस्थान किया।। (24)

बण्डा से बिहार

अगले दिन मुनिवर गये, वहाँ नेमिगिरी का वंदन करने।
प्रभु नेमिनाथ के चरणों, का वंदन कर भव कृंदन हरने।।
वापिस फिर शान्ति जिनालय, में मुनिवर का मंगल उद्‌बोधन।
सन्ध्या में शान्ति जिनालय, से सागर हेतु कर दिया गमन।। (25)

सागर में सागर

फिर जून आठ वण्डा से चल, नौ जून को कर्रापुर आये।
फिर ग्यारह जून को मुनिवर अंकुर कॉलौनी सागर आये।।
फिर एकादश को, अंकुर कॉलौनी सागर में पधराये।
सब धूमधाम से अगवानी कर, मुनिवर को मंदिर लाये।। (26)

संघवाद की संकीर्णताओं से दूर

सारी समाज को मुनिवर के, आने से हर्ष विशेष हुआ।
मंदिर के मध्यलोक में, फिर मुनिवर जी का उपदेश हुआ।।
फिर गुरुवर विद्यासागर का मुनि दीक्षा दिवस मनाया था।
मुनिवर का शुभ सानिध्य मिला, जन-जन में हर्ष समाया था।। (27)

मुनिवर की सौम्य सरलता, की सारी समाज में अर्चा थी।
हैं संघवाद से दूर मुनीश्वर, ये समाज में चर्चा थी।।
अतः एस. के. जैन की, अगुवाई में सबने मिल करके।
इस चतुर्मास का नम्र निवेदन, किया सभी ने मुनिवर से।। (28)

चातुर्मासिक निवेदन

सारी समाज का भक्ति भाव, और नम्र निवेदन को तोला।
फिर मंद मंद मुस्काकरके, मुनिवर ने उनसे यूँ बोला।।
चौमासे की आज्ञा, हेतु गुरुदेव पास जाना होगा।
हम पत्र यहाँ से लिख देंगे, आदेश तुम्हें लाना होगा।। (29)



श्री गया क्षेत्र में राजित हैं, हमरे गुरुवर विरागसागर।
अपने श्रद्धा के भावसुमन, चरणों में आओ पहुँचाकर।।
सबने मिलकर गुरुवर विरागसागर, का जय-जयकार किया।
इक श्रेष्ठ आज्ञाशील शिष्य का, मुनिवर को सम्मान दिया।। (30)

सबका कई बार निवेदन था मुनिवर जी पत्र हमें लिख दें।
मुनिवर जी कहते देखत हैं उस उचित समय को आने दें।।
छब्बीस जून स्कूल डेट से मुनिवर का था जन्म दिवस।
कई स्थानों के लोग बहुत गुरुचरणों आये हरष-हरष।। (31)

तब भिण्ड, जतारा और जखौरा महरौनी वरायठा के।
कुछ तालवेहट से आये थे, सब भक्त यहाँ पर मुनिवर के।।
नगरी में उत्सव भारी था, सब नर नारी हर्षाये थे।
मुनिवर से पत्र लिखाने के, फिर से शुभभाव बताये थे।। (32)

उनकी श्रद्धा व भक्ति का, मुनिवर जी ने सम्मान किया।
सुन करके विनती बार-बार, मुनिवर ने उनको पत्र दिया।।
मुनिवर ने पत्र दिया संग, अपना आशीर्वाद प्रदान किया।
अब शीघ्र गया जी जाओ, तुम मुनिवर जी ने संकेत दिया।। (33)

थर्माकॉल का केक

मुनिवर का जन्म महोत्सव था, भक्तों ने यहाँ मनाया था।
महरौनी भिण्ड के भक्तों ने, गुरुवर का कक्ष सजाया था।।
गुब्बारों का सुन्दर समूह, कमरे में वहाँ लगाया था।
इक थर्माकॉल का केक, मनोहर सबने वहाँ सजाया था।। (34)

मुनिवर आहार चर्या करके, जब वापिस मंदिर आते हैं।
आकर देखा मुनिवर कमरे, को बदला बदला पाते हैं।।
कमरे को देखा मुनिवर ने, बाहर जाकर के बैठ गये।
यह देख के सारे भक्त लोग, मन में थोड़े भयभीत भये।। (35)

आखिर क्या बात हुई, भैया गुरुवर कमरे में नहीं गये।
मिल करके विनती करने को, गुरु के चरणों में भक्त गये।।
बोले मुनिवर निर्ग्रंथों की, निर्ग्रंथ वसतिका रहने दो।
गुब्बारे केक हटा करके, सादा कमरे को रहने दो।। (36)

सब मिलकर बोले मुनिवर जी, वो केक नहीं कोई असली है।
वो थर्माकॉल से बना हुआ है, मुनिवर वो तो नकली है।।
बोले मुनिवर ये नकली है, पर रंग तो असली जैसा है।
जो भी देखेगा इसको, उसको लगेगा असली जैसा है।। (37)

इससे धर्मी और धरम की, भैया लोक में वहु निंदा होगी।
हमतो जिनशासन के रक्षक, भैया कहलाते हैं योगी।।
सब भक्त समझ गये फौरन ही गुरुवर का उत्तर सुन करके।
ये योगी आत्म धरम वाले नहीं, मतलब है आडम्बर से।। (38)

जाकर के गुब्बारे सारे व, केक वहाँ से हटा दिया।
भक्तों की श्रद्धा ने गुरुवर को, और अधिक सम्मान दिया।।
निर्ग्रंथ वदन निर्ग्रंथ वचन, निर्ग्रंथी चिंतन वाले हैं।
निर्ग्रंथों के सिरमौर ये साधक, सारे जग से आले हैं।। (39)



संघवाद की ओछी सोच

मुनिवर से कुछ समाज बन्धु, तब पत्र वहाँ ले जाते हैं।
पर गुरुवर विरागसागर जी, के पास नहीं वो जाते हैं।।
कुछ संघवाद की ओछी सोच, में श्रावक जन फंस जाते हैं।
दस आठ दिना तब बीत गये, पर कुछ भी न बतलाते हैं।। (40)

अध्यक्ष महोदय एक दिना, श्री राजकुमार जी आते हैं।
आके मुनिवर के चरणों, में वंदन करके बतलाते हैं।।
मुनिवर जी ये चौमासा, तो अंकुर कॉलौनी में करना।
गुरुदेव आपसा सरल स्वभावी, साधु है दुर्लभ मिलना।। (41)

सागर चातुर्मास 2001

अध्यक्ष महोदय स्वयं वहाँ पर, मनः प्रेरणा पाकर के।
गुरुवर विरागसागर जी से, अनुमति ले आये जाकर के।।
मुनिवर के मुख से चातुर्मास की, वहाँ घोषणा सुन करके।
इस चातुर्मास की तैयारी में, जुट गये सारे मिलकर के।। (42)

गुणमति माताजी का विनय गुण

गुणमती आर्यिका माताजी, अंकुर कॉलोनी आती हैं।
गुरुवर विद्यासागर जी की, जो सुशिष्या कहलाती हैं।।
माताजी अपना संघ लिये, मुनिवर के दर्शन को आईं।
मुनिवर का वात्सल्य, पाकर माताजी खूवई हर्षाईं।। (43)

मुनिवर के श्री चरणों में, माताजी कुछ समय बिताती हैं।
कुछ तत्त्व की चर्चा करती हैं, कुछ अपना ज्ञान बड़ाती हैं।।
वात्सल्य पूर्ण ये मिलन हुआ, आगे बिहार कर जाती हैं।
माताजी इस कॉलोनी से, मोरा जी मंदिर जाती हैं।। (44)

गौराबाई के मंदिर में, आचार्य देवनंदी जी का।
दिन चतुर्दशी का निश्चित था, शुभ चतुर्मास स्थापन का।।
मुनिवर विमर्शसागर जी ने, दिन गुरुपूर्णिमा चयन किया।
चौमासे का स्थापन उस दिन, होगा ये संकेत दिया।। (45)

रत्नत्रय के त्रय साधक

आषाढ़ सुदी चउदस के दिन, मुनिवर चर्या को जाते हैं।
तब बाहुबलीसागर जी को, कुछ लोग यहाँ कर जाते हैं।।
श्री बाहुबलीसागर जी, का ये चतुर्मास जो होना था।
ये पहले से ही निश्चित था, मोरा जी में ही होना था।। (46)

कुछ मायाचारी लोग वहाँ, पर अपना जाल बिछाते हैं।
स्वारथ सिद्धि के लिये लोग, कितने अंधे हो जाते हैं।।
श्री बाहुबलीसागर जी से, मिलने कुछ ढोंगी जाते हैं।
मोराजी के कुछ लोग यहाँ, ये मायाचार दिखाते हैं।। (47)

श्री बाहुबलीसागर जी को, श्रीफल अर्पित कर कहते हैं।
हम नम्र निवेदन लाये हैं, अंकुर कॉलौनी रहते हैं।।
मुनिवर विमर्शसागर जी का, चौमासा वहाँ पे होना है।
वो साधु भोले भाले हैं, चर्या और ज्ञान सलोना हैं।। (48)

हम लोगों को मुनिवर विमर्शसागर जी, ने ही भेजा है।
मुनिवर ने तुम्हें बुलाने का, इक नम्र निवेदन भेजा है।।
मुनिवर जी ने ये बोला है, हम दो से तीन हो जायेंगे।
रत्नत्रय के त्रय साधक मिल, चौमासा यहाँ रचायेंगे।। (49)



श्री बाहुबलीसागर ऐसा सुनकर, राजी हो जाते हैं।
उपवास किया था फिर भी चलकर, कॉलौनी आ जाते हैं।।
कुछ लोग छोड़ करके, उनको चुपचाप वहाँ से चले गये।
न कोई समाज से चर्चा की, न मुनिवर से कुछ बता गये।। (50)

मुनिवर चर्या से लौट वसतिका, में जब वापिस आते हैं।
तब बाहुबलीसागर जी को, वो वहाँ विराजा पाते हैं।।
मुनिवर ने वंदन प्रतिवंदन, करके सम्मान दिया उनको।
सब कुशल क्षेम पूछी मुनिवर ने, फिर स्थान दिया उनको।। (51)

मुनिवर की उदारता

होकर समाज के लोग, इकट्ठे गुरु वसतिका आते हैं।
मुनिवर विमर्शसागर जी को, वो सारी बात बताते हैं।।
बोले मुनिवर अब आ गये, तो कोई बात नहीं आ जाने दो।
हम तीनों मिलकर चौमासा कर लेंगे, सब कुछ जाने दो।। (52)

अध्यक्ष महोदय तब बोले, हम ऐसा न कर पायेंगे।
महाराज श्री वस चौमासा, तो आपका ही करवायेंगे।।
मुनिवर बोले अब समय नहीं, वो और कहाँ अब जायेंगे।
चौमासा उनको करने दो हम, मिलके उन्हें निभायेंगे।। (53)

मुनिवर बोले सब लोगों से, जो होगा देखा जायेगा।
लेकिन उनका चौमासा कल, हमरे संग थापा जायेगा।।
मुनिवर के निर्णय का सब लोगों, ने मिलकर सम्मान किया।
उनका भी चौमासा करवाने का, अब मन में ठान लिया।। (54)

अगले दिन पाँच जुलाई, को था चातुर्मास का स्थापन।
सारी समाज उत्साहित थी, लगता था भारी आयोजन।।
अध्यक्ष महोदय संग सारे मुनिवर, के कक्ष में आते हैं।
श्री उदयचंद पंडित जी संग, सब श्रीफल वहाँ चढ़ाते हैं।। (55)

मुनिवर जी को करके वंदन, सब अपने भाव बताते हैं।
मुनिवर ने शुभ आशीष दिया, संग मंच पे मुनिवर जाते हैं।।
मुनिवर विमर्श मुनि विश्वपूज्य, संग बाहुबली महाराज हुये।
उस चातुर्मास स्थापन के, अब शुरू वहाँ सब काज हुये।। (56)

सौभाग्य जगा था नगरी का, जो ऐसे गुरूवर पाये थे।
रत्नत्रय धारी तीन तीन चौमासा करने आये थे।।
सम्यग्दर्शन और ज्ञान चरित सी लगती तीनों धारायें।
ये नगरी तीर्थ प्रयाग बनी, आबालवृद्ध सब हर्षायें।। (57)

फिर उदयचंद पंडित जी ने, बोली आयोजन करवाया।
जब चतुर्मास के मुख्य कलश, की बोली का अवसर आया।।
परिवार विलानी जी का था, जिसने सौभाग्य ये पाया था।
अनुमोदन कर सब लोगों ने, अपना सौभाग्य जगाया था।। (58)

जब चतुर्मास के स्थापन व, भक्ति का अवसर आया।
श्री बाहुबलीसागर जी का, मुनिवर ने नाम था दोहराया।।
मुनिवर के इस वात्सल्य भाव, का सब लोगों ने यश गाया।
जिनने जिनने यह आयोजन, देखा सबका मन हर्षाया।। (59)



ये देह से छोटे साधु हैं, पर हृदय गगन-सा है विशाल।
साधु के प्रति सम्मान गजब, व वात्सल्य है बेमिशाल।।
ये ही साधु की चर्या है, ये ही साधु का जीवन है।
साधु के अंदर वात्सल्य, मानों भैया संजीवन है।। (60)

संग चतुर्मास स्थापन के था, गुरु पूर्णिमा का अवसर।
गुरु भक्ति से आप्लावित था, अंकुर कॉलोनी का घर-घर।।
फिर छह जुलाई को महावीर शासन, की जयन्ति आई थी।
तब वीर की वाणी की घर-घर, में अर्चा वहाँ रचाई थी।। (61)

भक्तामर प्रशिक्षण शिविर

भक्तामर शिक्षण शुरू हुआ, हर ओर धवल परिधान दिखे।
हर सिर पे टोपी धवल वहाँ मानो सारे विद्वान दिखे।।
मुनिवर द्वारा शुद्ध उच्चारण व अर्थ सीख भक्तामर का।
सब श्रावक लोगों ने बढ़चढ़कर, लाभ लिया इस अवसर का।। (62)

मुनिवर के श्रीमुख से जब, धर्मामृत की गंगा वहन लगी।
ये ज्ञानी ध्यानी संत जुदा हैं, सारी नगरी कहन लगी।।
मुनिवर की अमृत वाणी, सुनने लोग बहुत से आते थे।
मध्यान्ह काल में जीवकाण्ड का, तब रसपान कराते थे।। (63)

गुरुपद मम उर में बसते हैं

मुनिवर सबकी सुनते रहते, और मंद-मंद मुस्काते थे।
मुनिवर सबकी बातें सुनकर, समता से सब सह जाते थे।।
नित फूल शूल में समता है, निंदा स्तुति में समता है।
समता योगी पर से हटकर, समता स्वभाव में रमता है।। (64)

श्री बाहुबलीसागर इक दिन, मुनिवर के कमरे में आये।
मुनिवर विमर्शसागर जी से, एकान्त में वो कुछ बतियाये।।
मुनिवर तुम हो ज्ञानी ध्यानी, चर्या भी बड़ी निराली है।
उपदेश की शैली भी तुमरी, सबका मन हरने वाली है।। (65)

जिनशासन की महती प्रभावना, जग में करनेवाले हो।
व्यवहार कुशल तुम श्रेष्ठ श्रमण, इस जग से अरे निराले हो।।
बात हमारी इक मानो कुछ, सोच को अपनी मोड़ो तुम।
जो हल्दी टमाटर लेते हो, अब उनको खाना छोड़ो तुम।। (66)

गर हल्दी टमाटर त्याग करो, तो तुम्हें वचन में देता हूँ।
मैं अपना बालाचार्य पद, तुमको प्रदान कर देता हूँ।।
मुनिवर बोले महाराजश्री!, न पद की कोई चाह मेरी।
गुरुपद मम उर में बसते हैं, न पद पर रही निगाह मेरी।। (67)

पद के बिन ही मैं धर्मध्यान, से अपने कर्म नशाता हूँ।
जितनी प्रभावना हो पाती, उतनी में करता जाता हूँ।।
फिर बाहुबलीसागर बोले, मुनिवर तुम चिंता नहीं करो।
तुमरे गुरुवर की आज्ञा हम, मंगवा लेंगे विश्वास धरो।। (68)

बोले मुनिवर इसमें गुरुवर की, आज्ञा की कोई बात नहीं।
जो दिया है हमको गुरुवर ने, वो कोई कम सौगात नहीं।।
जब बाहुबलीसागर बोले, तुम हमरे मन को भाते हो।
इस पद के पूर्ण योग्य मुनिवर, तुम हमको तो नजराते हो।। (69)



तुम हमरी बात मानलो, वस हल्दी आदि का त्याग करो।
यह पद अपना तुमको देते हैं, तुम इसको स्वीकार करो।।
मुनिवर बोले महाराज श्री पद, को तो पास अपने रखिये।
इस पद में रहकर के ही आप, जिनमत की मर्यादा रखिये।। (70)

मैं कोई और पद लेने का, किंचित भी इच्छुक नहीं यहाँ।
गुरुवर ने मुनिपद दिया मुझे, पद इससे बड़ा है और कहाँ।।
इस पद की गरिमा को सहेज, कर हमको आगे रखना है।
महाराज श्री मुझको अपनी, क्षमतायें अभी परखना है।। (71)

जो कही त्याग की बात, आपने उसको फिर मैं सोचूँगा।
जब मिलूँगा अपने गुरुवर से, तब उनसे पहले पूछूँगा।।
गुरुवर जिस-जिस का त्याग कहेंगे, उसको वहीं छोड़ दूँगा।
पर त्याग करूँगा जब भी मैं, अपने गुरुवर से ही लूँगा।। (72)

यह त्याग आपके कहने से, तो नहीं यहाँ कर सकता हूँ।
क्षमा करें पर आपके भावों, का सम्मान मैं करता हूँ।।
श्री बाहुबलीसागर कहते हैं, और सोच लेना मन में।
तुम तब हमको बतला देना, जब भाव बनें तुमरे मन में।। (73)

मुनिवर बोले जो बोला है, वो सोच समझ के बोला है।
मुख से निकले हर शब्दों, को पहले ही हमने तोला है।।
मुनिवर विमर्शसागर जी तब, इतना कह करके मौन हुये।
फिर बाहुबलीसागर जी, उठकर चले गये नाराज हुये।। (74)

सानंद चल रहा चौमासा, हर ओर धर्म लहराता था।
छोटे से मुनिवर ज्ञान बड़ा, लख सबका मन हर्षाता था।।
तब चौके खूवई लगते थे, अपना सौभाग्य जगाने को।
लम्बी कतार चौके वालों की, मुनिवर को पड़गाने को।। (75)

हाथों में मंगल द्रव्य लिये, मन वच तन की शुद्धि लेकर।
अपने मुख में पड़गाहन के, पावन-पावन से स्वर लेकर।।
पड़गाहन कम मेला ज्यादा, सब देखन वाले आते थे।
नाना द्रव्यों से श्रावक जन, मुनिवर की विधि मिलाते थे।। (76)

साधना की विशुद्धि

इक चौके में कई दिन तक, मुनिवर विमर्शसागर न आये।
मुनिवर को रोज ही पड़गाते पर, विधि न उनकी मिल पाये।।
अब तो समाज के लोग, सभी वस यही भावना भाते थे।
उस चौके में मिल जाये विधि, नाना तदवीर लगाते थे।। (77)

दो चार बार तो लोगों ने, मुनिवर से जाकर बोल दिया।
उस चौके वाले की पीढ़ा, को शब्दों में जा खोल दिया।।
कई दिवस गये पर आपकी, दृष्टि उस चौके पर नहीं गई।
खूवई वो विधि मिलाते हैं, पर विधि आपकी नहीं मिली।। (78)

इक दिन मुनिवर मंदिर जी से लेकर के विधि निकरते हैं।
शुरूवात विधि की मुनिवर जी उस चौके से ही करते हैं।।
शुभ योग और संयोग बना जीवन में कलियाँ आज खिली।
कई दिनों बाद मुनिवर की उस चौके में जाकर विधि मिली।। (79)

हर ओर हर्ष की लहर चली, सब जय जयकार लगाते हैं।
चौके वाले सब मुनिवर, की परिकरमा तीन लगाते हैं।।
श्रावक जन सब आगे-आगे, मुनिवर जी पीछे चलते थे।
मुनिवर के पीछे चर्या लखने, भक्त समूह मचलते थे।। (80)

मुनिवर को घर के द्वारे पर ले पहुँचे श्रद्धा भाव लिये।
दो पग मुनिवर ने द्वारे पर, जाकर अपने प्रक्षाल किये।।
चौके वालों ने श्रद्धा व, भक्ति के भावों से भरकर।
मन वच तन की शुद्धि बोली मम घर में आये हे मुनिवर।। (81)

लेकिन तब ही मुनिवर के, मन में इक विचार आ जाता है।
चिन्तन में मुनिवर खो जाते न पग आगे बढ़ पाता है।।
यहाँ नहीं कहीं और चलो, यह मन में बात गुँजाती थी।
क्यों मुनिवर घर में न जाते, यह बात समझ न आती थी।। (82)

मुनिवर द्वारे पर खड़े रहे, घर के अंदर नहीं जाते हैं।
सब बार-बार शुद्धि बोलें, अपनी अरदास लगाते हैं।।
बाहर थी भीड़ खड़ी भारी, सब यही निवेदन करते थे।
पर मुनिवर के पग एक इंच, भी आगे को न बढ़ते थे।। (83)

आखिर अंतस की गूँज सुनी, मुनिवर बाहर से लौट गये।
मुनिवर जी दूजे चौके में, जाकर के सीधे पड़ग गये।।
आहार वहाँ निर्विघ्न हुआ, मुनिवर मंदिर आ जाते हैं।
मुनिवर मंदिर जी में, आकर के तुरत मौन हो जाते हैं।। (84)

सोचा मुनिवर ने चौके वाले, गर आकर के पूछेंगे।
तब उनके प्रश्नों के उत्तर, हम कैसे भला यहाँ देंगे।।
मेरे अंतस के भावों पर, विश्वास भला किसको होगा।
इसलिये यहाँ पर मौन से रहना, ही अब श्रेयस्कर होगा।। (85)

मुनिवर जी अपने पाटे पर, लेकर के मौन विराज गये।
पीछे से वो चौके वाले भी, लोग वहाँ पर पहुँच गये।।
मुनिवर की चरण वंदना कर, उस चौके का स्वामी बोला।
धीरे-धीरे उसने अपने पीड़ा, दुख दर्दों को खोला।। (86)

मुनिवर जी आप हमारे घर, पर नहीं गये ये ठीक रहा।
मुनिवर ने पूछा भैयाजी, बोलो तो आखिर हुआ है क्या।।
बोला श्रावक मुनिवर जी, हमको क्षमा करें बतलाता हूँ।
मैं अपनी गलती व अपनी, श्रद्धा को यहाँ बताता हूँ।। (87)

कई दिन से चौका खाली था, मन में विश्वास ये आया था।
निश्चित ही आज हो जायेगा, इस लोभ में आ पड़गाया था।।
पर प्रातः आठ बजे, मुनिवरजी समाचार ये आया था।
भाई का बेटा दुर्घटना में, काल के गाल समाया था।। (88)

तब सूतक घर में हुआ था, मुनिवर चौका नहीं लगाना था।
पर लोभ था गुरु के चरणों का, मुनिवर न मन ये माना था।।
पर आप तो आये थे घर तक, फिर वापिस पग क्यों लौटाये।
आश्चर्य बड़ा भारी मन में, मुनिवर हम नहीं समझ पाये।। (89)

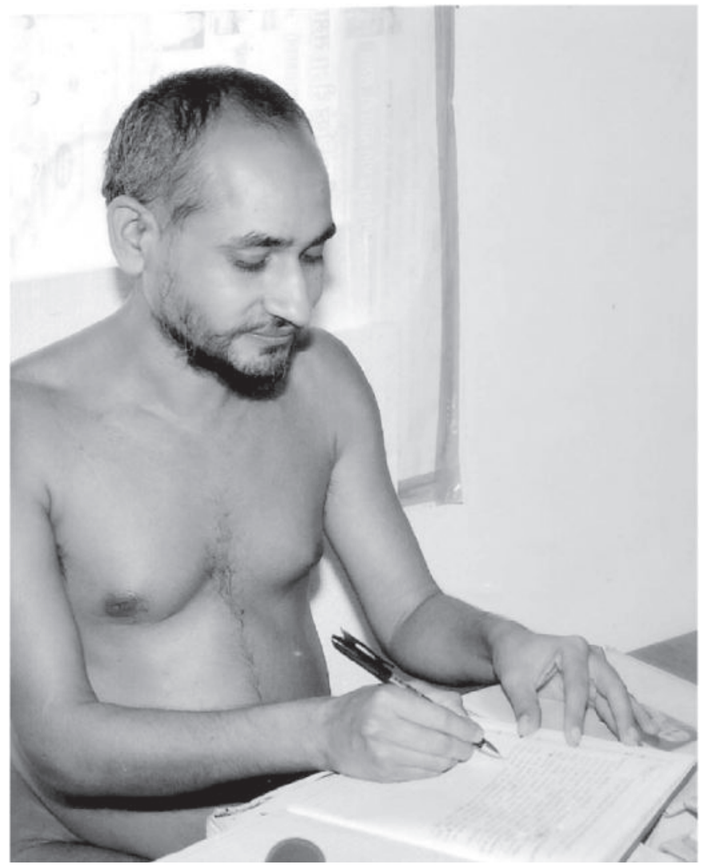
मुनिवर बोले जब मैं चौके, के दरवाजे पर आया था।
तब ही अंतस में बार-बार, मेरे विचार यह आया था।।
कि लौट चलो कहीं और चलो, इस चौके में नहीं जाना है।
इसलिये निवेदन बार-बार, सुनकर भी मन न माना है।। (90)

यद्यपि मन में तब आया था, कोई पूछेगा क्या बोलेंगे।
लेकिन मन ये भी कहता था, इस चौके आहार नहीं लेंगे।।
अंतर में द्वंद मचा भारी आखिर, हम वहाँ से लौट गये।
और ठीक रहा ये आज आपके, चौके अंदर नहीं गये।। (91)

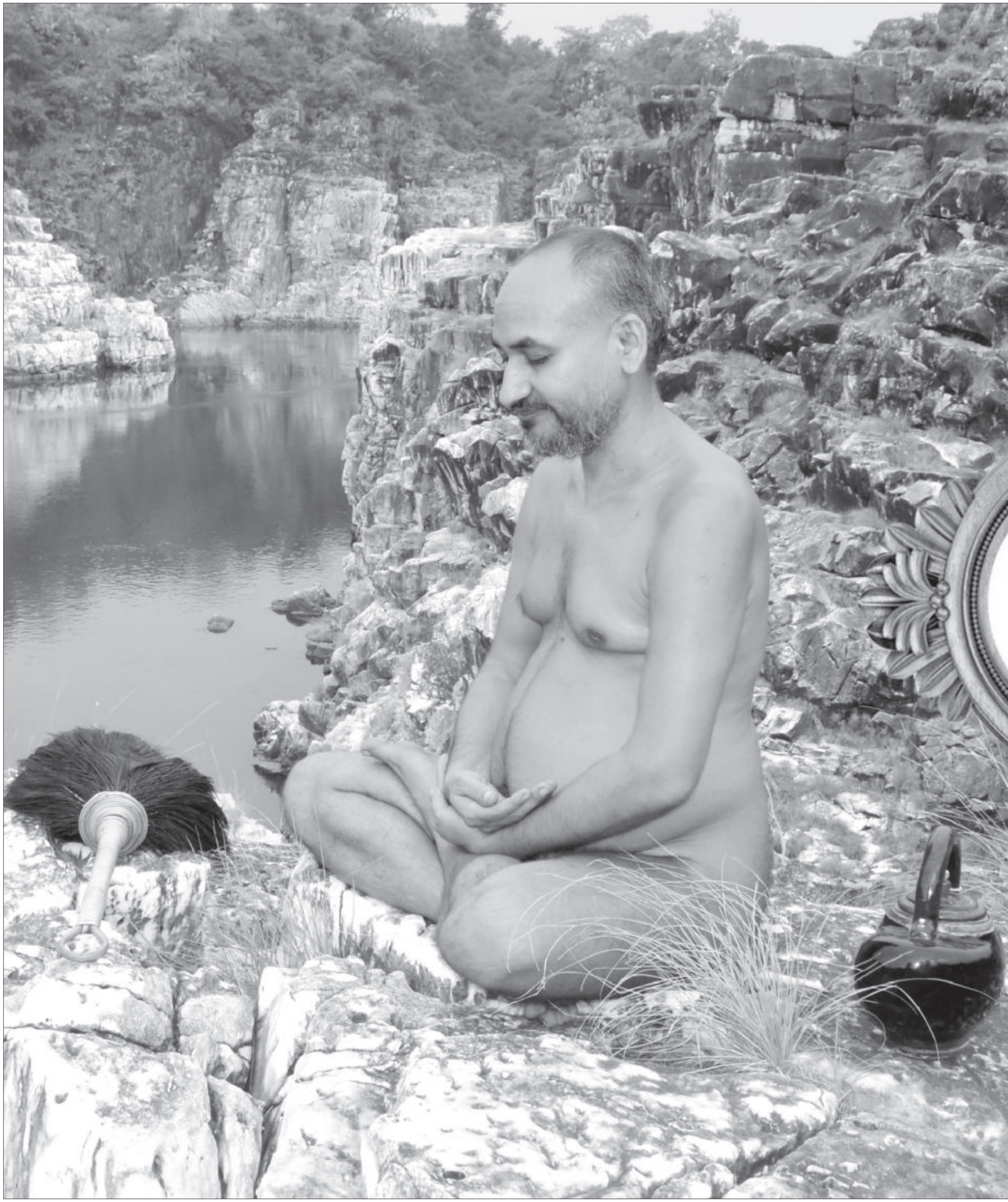
जिस-जिसने सुना वो ही बोला, मुनिवर की विशुद्धि भारी है।
उसके कारण ही मुनिवर को, आभासी घटना सारी है।।
धन्य हैं मुनिवर धन्य हैं, मुनिवर धन्य विशुद्धि भाव दशा।
यह पञ्चम काल भी धन्य-धन्य, जिसमें दिखती यह मुनि दशा।। (92)

बारहवाँ पर्व पूर्ण

इस बारहवें सोपान को, अब मैं पूर्ण यहाँ पर करता हूँ।
ये लेखन खुद होता जाता, मैं गुरु चरणों चित धरता हूँ।।
अब शेष कथा इस महामना, की मैं आगे सुनवाता हूँ।
इस खण्ड को पूरा करके, मैं गुरुवर को शीष झुकाता हूँ।। (93)



आचार्य अमितगति कृत 'योगसार प्राभृत' की प्राकृत टीका का लेखन करते हुए पूज्य आचार्य विमर्शसागर जी।



bhavlingi sant

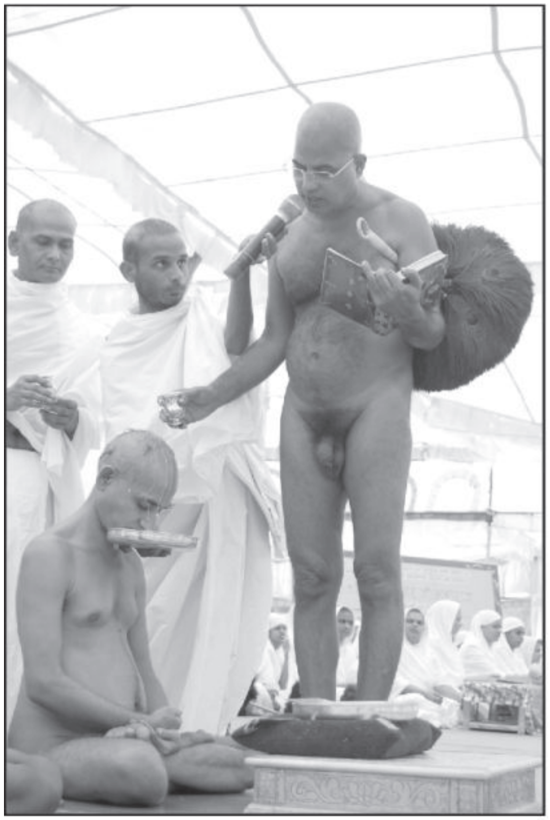
shramnacharya shri 108 vimarsh sagar ji gurudev

"त्रयोदश पर्व"

समता पर्व

संजीवनी भावलिंगी संत (महाकाव्य)

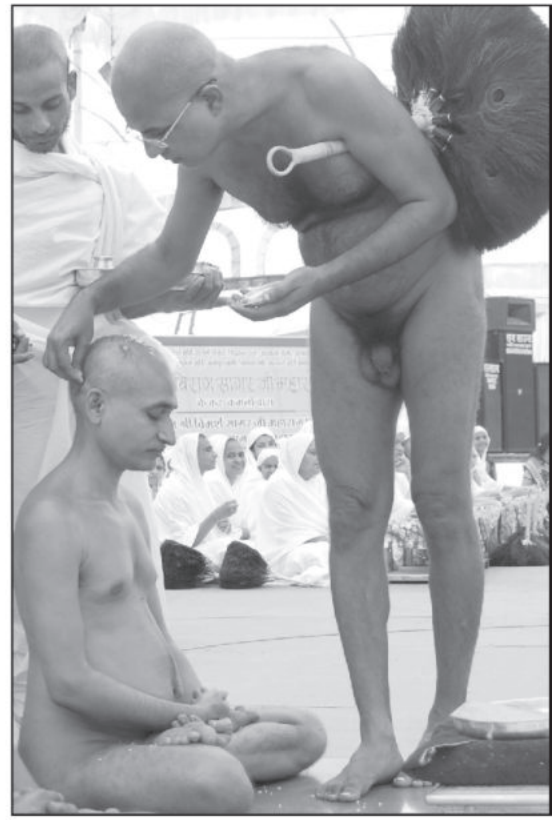
चित्र समूह - 5
आचार्य पद दर्शन



सिर पर गंधोदक निक्षेप करते पूज्य आचार्यश्री



पूज्य आचार्यश्री बायें हाथ से सिर का स्पर्श कर आशीर्वाद देते हुए (१२/१२/२०१०)



केशलोंचन विधि सम्पन्न करते हुए पूज्य आचार्यश्री



"त्रयोदश पर्व"

"समता पर्व"

मंगलाचरण

जगत शिरोमणि सिद्धों की वंदना

अविनाशी अविकारी प्रभुवर, चेतन रस के ध्रुव धाम रहे।
जय जगत शिरोमणि सिद्ध सदा, जयवंत सहज अभिराम कहे।।
प्रभु ध्यान अनल की प्रगटाकर, सब कर्म कलंक जला डाले।
मैं नमन अनंतों वार करूँ, प्रभुवर अनंत गुण प्रगटाने।। (1)

प्रभु आप अबंध कषाय रहित, व आप विमोह विराजे हो।
चैतन्य सुखामृत के सागर, चैतन्य वाटिका साजे हो।।
तन का आकार मिटा डाला, प्रभु ज्ञानाकार बनाया है।
उन ज्ञायक प्रभु की ज्ञायकता, को हमने शीष झुकाया है।। (2)

जिनका अनुभव सिद्धालय सा

अब उन चरणों में है वंदन, जिनका चारित्र हिमालय सा।
जब ध्यान मगन हो जाते हैं, सुख का अनुभव सिद्धालय सा।।
अब उनका नाम सुमरता हूँ, जिनकी ये गौरव गाथा है।
निर्विघ्न हो लेखन काज मेरा, उनके चरणों नत माथा है।। (3)

आशीष कामना/संकल्प

मेरे शब्दों में आकर के, गुरुवर नूतन सामर्थ्य भरो।
कहीं कलम न ये थक जाये, मेरी गुरुवर अपना आशीष वरो।।
आलेख यात्रा को अपनी, अब आगे यहाँ बड़ाता हूँ।
शब्दों को शृंगारित करके, गुरुवर की गाथा गाता हूँ।। (4)

फिर मुकुट सप्तमी का दिन, आया पार्श्वनाथ निर्वाण दिवस।
अंकुर कॉलोनी में भक्तों, ने खूब मनाया हरष-हरष।।
अब चातुर्मास में रक्षाबंधन, पर्व का पावन दिन आया।
उपसर्ग कथा श्रमणों की सुन, सबका ही अंतस थर्राया।। (5)

दस धर्मों की गंगा

अब चातुर्मास चलते-चलते, महिना अगस्त का आया था।
तेइस अगस्त से पर्वराज का, पावन अवसर पाया था।।
इन दस धर्मों की गंगा में, खुवई सबने स्नान किया।
गुरुवर के उपदेशामृत से सबने, पा आतम ज्ञान लिया।। (6)

स्मृति पटल पर अंकित हो गई क्षमावाणी

इक-इक करके दस दिवस तलक, गुरुवर का श्रुत उपदेश हुआ।
अब पर्वक्षमावाणी आया जो, सचमुच बड़ा विशेष हुआ।।
वस सागरवालों ने ही इस, सागर में नहीं नहाया था।
अपितु कई जगह के भक्तों ने, डुबकी का लाभ उठाया था।। (7)

न छोटा दिखता था कोई, न बड़ा दिखाई देता था।
सबकी नजरों में वस, साधर्मी भाई दिखाई देता था।।
इस क्षमापर्व को मुनिवर ने, कुछ ऐसे ढंग से समझाया।
सब बैर विरोध मिटे मन के, वस प्रेम ही प्रेम नजर आया।। (8)

हर आँख से आँसु बन करके, वहता था मन का कलापन।
लगता था सबको धन्य हुआ है, आज हमारा ये जीवन।।
स्मृति पटल पर यादें बन, सबके ये पर्व समाया था।
कई कई दिनों तक मुनिवर का, यशगान सभी ने गाया था।। (9)



रत्नत्रय के पथ पर

रत्नत्रय धारी मुनिवर के, रत्नत्रय से भावित होकर।
त्रय रत्न चले रत्नत्रय के, इस पथ पर सम्भावित होकर।।
भैया आशीष जी धन्य हुये, मुनिवर से ब्रह्मचर्य पाकर।
जो वर्तमान में विचर रहे, बनकर मुनिवर सुवीरसागर।। (10)

नगरी वरायठा से आये, भैया संदेश जी हर्षाकर।
जीवन को धन्य किया उनने, मुनिवर से व्रत को अपनाकर।।
भैया जितेन्द्र जी भिण्ड नगर, से गुरु संघ में आये थे।
वस्त्रों की रंगीनी तजकर, पा धवल वस्त्र हरषाये थे।। (11)

तीनों शिवपथ के पथिक बने, शिव पथ चलना आरम्भ किया।
तीनों ने मुनिवर के अनुशासन, में ढलना प्रारम्भ किया।।
मुनिवर की आज्ञा में रहकर, वो श्रेष्ठ साधना करते थे।
हर हालत में बस गुरुवर की आज्ञा, मस्तक पर धरते थे।। (12)

चिर यादें बन कर शेष रहा

प्रभु की पूजन आराधन का, अब शिविर लगाया मुनिवर ने।
जिसमें पूजन की विधियों का, सद् ज्ञान कराया गुरुवर ने।।
चिर यादें बनकर शेष रहा, ये शिविर वहाँ सबके मन में।
न ऐसा अद्भूत आयोजन देखा, था किसी ने जीवन में।। (13)

मुनिवर के चिंतन से उपजीं, इस चतुर्मास में दो कृतियाँ।
जीवन को श्रैष्ठ बनाने की, जिसमें कुछ लिखी थीं विधियाँ।।
"हे वंदनीय गुरुवर" पहली दूजी, "शंका की एक रात"।
कृतियों को पाकर हर्षित थी, विद्वत समाज सब एक साथ।। (14)

पिच्छिका परिवर्तन

दिन पन्द्रह नवम्बर का आया, निष्ठापन की बेला आई।
मुनिवर ने सब सीमाओं के, बंधन से थी मुक्ति पाई।।
जो संयम का उपकरण अहा, पिच्छिका परिवर्तन आया।
श्रावक समूह ने पिच्छि लेने, देने का अवसर पाया।। (15)

मंगलगिरी पंचकल्याणक का निवेदन

अब मंगलगिरी पर अवसर था, कल्याणक पाँच मनाने का।
आचार्य देवनंदी जी के, सानिध्य में यहाँ कराने का।।
आयोजक मिलकर मुनि विमर्शसागर जी, के चरणों आये।
आयोजन में शामिल होने को, श्रीफल चरणों में लाये।। (16)

नगरी से गमन

मुनिवर जी थोड़ा मुस्काये, उन भावों का सम्मान किया।
आने पर समय बतायेंगे, कहकर मुनिवर ने टाल दिया।।
थे लोगों में मतभेद बड़े, इस आयोजन को ले करके।
मुनिवर कर गये बिहार अतः, अपना शुभ आशिष दे करके।। (17)

मंगल बिहार की बेला थी, नर-नारी सभी उदास अरे।
मुनिवर नगरी से जाते हैं, होता था न विश्वास अरे।।
पर ये भी है ध्रुव सच्चाई, जो आता है वो जाता है।
आना जाना जग की रीती, वो जग की रीत निभाता है।। (18)

श्री बाहुबलीसागर जी, भी उनको विदाई देने आये।
मुनिवर ने क्षमायाचना की, तो उनके आँसु भर आये।।
तब वहाँ बाहुबलीसागर जी, बहुतई भावुक हो जाते हैं।
हृदय से छलकता वात्सल्य, मुनिवर को गले लगाते हैं।। (19)



न लाँघी समता की रेखा

दोनों आँखों से पश्चाताप, के अविरल आँसु बहते हैं।
श्री बाहुबलीसागर जी तब, मुनिवर विमर्श से कहते हैं।।
बोले विमर्शसागर जी, मैंने तुमसा साधु न देखा।
तुमने सब सहन किया लेकिन, न लाँघी समता की रेखा।। (20)

मैंने तुमको क्या नहीं कहा, पर तुमने सब कुछ सहन किया।
सब कुछ हँस करके सुना, मगर न तुमने कभी जबाब दिया।।
मुनिवर ने मुस्काकर उनके, भावों का तब सम्मान किया।
मुनिवर ने चरणों का वंदन कर, प्रेम का शुभ उपहार दिया।। (21)

सागर से बिहार

जिस जिसने भी यह दृश्य, लखा आँखों से आँसु छलक गये।
मुनिवर की सरलता के आगे, सब श्रावक जन नत शीष भये।।
मुनिवर विमर्शसागर जी ने, मुनि विश्वपूज्य को संग लेकर।
कर दिया गमन रहली पटना, के दर्शन का सुलक्ष्य लेकर।। (22)

मुनिवर ने चर्या ढाना में, करके सबको उपदेश दिया।
मुनिवर ने फिन पटनाबुजुर्ग, के लिये था शुभ प्रस्थान किया।।
महेन्द्र कुमार कृषि पंडित, आदि लोगों ने अगवानी।
कर मुनिवर को नगरी लाये, सुनने उनकी अमृत वाणी।। (23)

दिन चौदह दिसम्बर का आया, सारा ही नगर सजाया था।
तब दीक्षा दिवस यहाँ चौथा, मुनिवर का खूब मनाया था।।
पण्डाल विशाल लगाया था, तैयारी बड़ी अनौखी थी।
क्योंकि पटना बुजुर्गं नगरी में, भक्ति सचमुच चोखी थी।। (24)

भाग्य जागे जो ऐसे गुरु पा लिये

आयोजन में शामिल होने, को भक्त बहुत से आये थे।
मन में गुरुभक्ति श्रद्धा लेकर, गुरुवर के गुण गाये थे।।
तब शीतकाल में वाचन का, मुनिवर से नम्र निवेदन था।
सारी समाज का गुरु चरणों में, भक्ति भरा आवेदन था।। (25)

पा लिया पा लिया, उनके आशीष को।
रख दिया भक्ति से, चरणों में शीष को।।
सारी तैयारियाँ, उसकी होने लगीं।
ज्ञान की चाहतें मन, भिगोने लगीं।। (26)

भाग्य जागे जो, ऐसे गुरु पा लिये।
किस्मतों के सितारों, को चमका लिये।।
हो गया अब शुरु, ज्ञान का सिलसिला।
जो मिला है यहाँ, वो कहीं न मिला।। (27)

पंच अस्ती काय, की वाचना चल रही।
ज्ञान का जल मिला, चेतना खिल रही।।
साथ ही मिल रहा, ज्ञान छह ढाल का।
पाके हर्षित था मन, वृद्ध व बाल का।। (28)

रात को गुरु की, सेवा में आते थे सब।
भक्ति के सिंधु में, डूब जाते थे सब।।
गुरु के भजनों को, सुनते व गाते थे सब।
भक्ति की वारिशों में, नहाते थे सब।। (29)

भैया पंकज मुकेश, व देवेन्द्र जी।
भैया संतोष जी, साथ श्री महेन्द्र जी।।
गुरु की भक्ति में, सब लीन तत्पर सदा।
गुरु के भजनों को गा, मन लुभाते सदा।। (30)

प्रातः साढ़े पाँच बजे से, जिनभक्ति गुरु भक्ति पा।
होता था आतम स्वस्थ बड़ा, नित स्वाध्याय की शक्ति पा।।
थी माह जनवरी की सर्दी पर, ज्ञान की प्यास निराली थी।
मुनिवर की वाणी स्वाध्याय, में रुचि जगाने वाली थी।। (31)

पधारो गुरुदेव

पंडित द्वय सनत विनोद वहाँ, इक दिन गुरु चरणों आते हैं।
रजवांस में कल्याणक पाँचों, होने की बात बताते हैं।।
श्रीफल चरणों अर्पित करके, बोले सानिध्य आपका दो।
इस आयोजन में साथ हमारे, शुभ आशीष आपका हो।। (32)

बोले मुनिवर गुरु की, आज्ञा शिष्यों का है श्रृंगार अहा।
जो गुरु आज्ञा में चलते हैं, उन शिष्यों का उद्धार कहा।।
पंडित जी पहले आपको, गुरुवर से आज्ञा लाना होगी।
उसके पश्चात ही आयोजन, के लिये हमारी हाँ होगी।। (33)

जिनशासन उन्नत होगा

पंडित द्वय बोले मुनिवर जी, गर पत्र आप जो लिख देंगे।
तो हम गुरुवर विरागसागर, जी से अनुमति ले आवेंगे।।
बैठ गवासन से मुनिवर गुरु, नाम पत्र तब लिखते हैं।
तभी अचानक पंडित जी, मुनिवर के तलुबे लखते हैं।। (34)

पंडित श्री सनतकुमार जी, की नजरें तलुवे पर जाती हैं।
मुनिवर के तलुवे की, रेखाओं पर दृष्टि टिक जाती है।।
बोले मुनिवर जी आपके, पग में गजरेखा नजराती है।
संग आपके पग में शुभ्र, पताका भी मुनिवर फहराती है।। (35)

इन चिन्हों से दर्शित होता, जिनशासन अब उन्नत होगा।
गुरुदेव आपके द्वारा, जिनशासन का भारी हित होगा।।
अब जिनशासन की शुभ्र, ध्वजा गुरु हाथों से फहरायेगी।
ये पग की रेखायें कहतीं, ये बात न खाली जायेगी।। (36)

पंडित जी की इस बात का, मुनिवर ने हँसकर सम्मान किया।
संग गुरुवर जी को लिखकर, के पंडित जी को तब पत्र दिया।।
मुनिवर से लेकर पत्र, वहाँ विद्वत हर्षित हो जाते हैं।
गुरुवर विरागसागर जी से, आज्ञा लेने को जाते हैं।। (37)

लोक मूढ़ताओं का जाल

(दोहा)

जब तक सम्यक् दर्श नहीं, तब तक सब वेकार।
सम्यक्दर्शन के बिना, बड़ता है संसार।।
क्या आतम का हित, अहित जान न पाते हैं।
लोक मूढ़ता जाल में, फँस-फँस जाते हैं।। (38)

मुनिवर जंगल के लिये, जाते थे कुछ दूर।
एक वृक्ष पर जहाँ, लगे रहते ध्वज भरपूर।।
ध्वजमंडित उस वृक्ष, को मुनिवर ने देखा।
पंकज भैया से तभी, मुनिवर ने पूछा।। (39)



नाना रंग के ध्वज, यहाँ क्यों ये लगाये हैं।
देखा पहली बार यह, हम समझ न पायें हैं।।
पंकज भैया ने वहाँ, तब बात बताई थी।
सारी घटना मुनिवर जी, को वहाँ सुनाई थी।। (40)

इस गाँव में पहले रहती थी, इक बूढ़ी सी महिला गुरुवर।
थी खीर पंसद बड़ी उसको, सब कहते हैं ऐसा मुनिवर।।
उस बूढ़ी माँ ने अंत समय में, खीर को खाके मरण किया।
उस माँ की देह को पुत्रों ने इस, ही स्थान पे वरण किया।। (41)

उसके पुत्रों ने एक समाधि, स्थल यहाँ बनाया था।
वा उसी समाधि स्थल पर इक, ध्वज छोटा लगवाया था।।
तब से मुनिवर जी कभी-कभी, यहाँ भजन कीर्तन होते हैं।
बस चढ़ा के ध्वज इस वृक्ष पे, मुनिवर अज्ञानी खुश होते हैं।। (42)

खीर बहुत भाती थी उसको, खीर को खाके मरण किया।
तब खीरमाई माता का उसको, सब लोगों ने नाम दिया।।
तब से ही बस खीर माई, माता को पूजा जाता है।
अज्ञानी लोगों को गुरुवर, अज्ञान नजर न आता है।। (43)

सुन करके मुनिवर तब बोले, इससे जिनधर्म महान कहा।
तप त्याग साधना के बल, से सब बनते हैं भगवान यहाँ।।
ऐसे ही निज भगवत् स्वरूप, की हम उपासना करते हैं।
प्रभुवर के इस पावन सम्यक्, स्वरूप की श्रद्धा धरते हैं।। (44)

हैं अन्य धर्म में लोग प्रभु, के सत् स्वरूप से अन्जाने।
मिथ्यात्व ग्रसित अज्ञानी, जन करते हैं कारज मनमाने।।
इन लोक मूढ़ताओं में, ही वो धर्म मानते रहते हैं।
अपने अधर्म को अज्ञानी, जन धर्म मानते रहते हैं।। (45)

जिनधर्म में जन्म मिला, हमको भैया सौभाग्य हमारा है।
जिनधर्म का पालन भव-भव, में भैया सबको सुखकारा है।।
मिथ्यात्व मूढ़ताओं में, भैया कभी भूल के मत फंसना।
जिनवाणी का रस पी पीकर, भी कभी तृप्त न हो रसना।। (46)

विकलांग सम्यग्दर्शन

जिनवाणी के शब्दों का, सम्यक् अर्थ गुरु बतलाते हैं।
निश्चय व्यवहार की राहों, पर क्रमशः चलना सिखलाते हैं।।
अर्हंत प्रभु के लघुनंदन, इनकी वाणी जिनवाणी है।
जो इस वाणी में दोष गिने, वह पापी है अज्ञानी है।। (47)

मुनिवर का नित उपदेश, रोज छहढाला ग्रंथ पे होता था।
जिसको सुन करके जन, मानस अंतर का कालुष धोता था।।
मंदिर के सन्मुख विद्यालय, में रोज बैठकर सुनते थे।
तब भाई मुमुक्षु शीतलचंद जी, गुरुवाणी को गुनते थे।। (48)

इक दिन अपने उपदेश में, गुरुवर सबको यूँ बतलाते हैं।
विकलांग जो सम्यक्दर्शन है, उससे मुक्ति न पाते हैं।।
मास्टर साहब शीतलचंद जी, ने इस उपदेश को श्रवण किया।
गुरु मुख से जिनवाणी सुनकर भी, मान हृदय में बड़ा लिया।। (49)



शीतलचंद जी जब रोज शाम, कुछ समय टहलने जाते थे।
कुछ युवा भी सन्ध्या बेला, में उनके संग-संग हो जाते थे।।
उन युवा साथियों को, शीतलचंद जी ने वहाँ बताया था।
उन युवा साथियों के ऊपर, अज्ञान जाल फैलाया था।। (50)

मैं इसीलिये तो साधु, लोगों की श्रद्धा न करता हूँ।
कुछ का कुछ कहते रहते हैं, इससे विश्वास न धरता हूँ।।
कुछ युवा साथियों ने पूछा, मुनिवर जी ने क्या बोला है।
या उनके शब्द बजन को, तुमने सही-सही न तोला है।। (51)

उपदेश दिया कल मुनिवर ने विकलांग कहा सम्यक्दर्शन।
कई भेद पढ़े, कई बार पढ़े पर पढ़ा न ये सम्यक्दर्शन।।
कई साल हुये अध्ययन करते, जिनवाणी हृदय समाई है।
पर ऐसी परिभाषा भैया, हमको तो समझ न आई है।। (52)

सम्यक्दर्शन के भेद कई, हमरे अध्ययन में आये है।
पर ये विकलांग नाम का, सम्यक्दर्शन समझ न पाये हैं।।
सब युवा रहे चुपचाप, वहाँ कोई उत्तर न दे पाये।
मुनिवर की वैयावृत्ति को, जब रात युवा मंदिर आये।। (53)

मुनिवर के सन्मुख युवा, साथियों ने भावों को खोला था।
पूछा मुनिवर से आपने, क्या कल ऐसा ऐसा बोला था।।
मुनिवर थे मौन, संकेत दिया, कल सुबह तुम्हें बतलायेंगे।
सम्यक्दर्शन विकलांग भी, होता है कैसे समझायेंगे।। (54)

अगले दिन युवा साथियों ने, मुनिवर की आकर अर्चा की।
फिर अपने उसी प्रश्न पे, मुनिवर जी से थोड़ी चर्चा की।।
मुनिवर ने पूछा अंग भंग, व्यक्ति बोलो क्या कहलाता।
सब युवा भाई बोले मुनिवर जी, वो अपंग है कहलाता।। (55)

मुनिवर बोले सम्यक्दर्शन, के अंग आठ ही होते हैं।
जो इनका पालन करते हैं, वो सम्यक्दृष्टि होते हैं।।
इन आठ अंग में से भैया, गर एक अंग भी कम होगा।
तो तुम्हीं बताओ वो विकलांग, क्या सम्यक्दर्शन न होगा।। (56)

मैंने सम्यक्दर्शन को गर, विकलांग कहा क्या हानी है।
ये मैं नहीं कहता हूँ, भैया ये कहती माँ जिनवाणी है।।
बोले सब युवा मुनीवर से, जब आज घूमने जायेंगे।
तब हम उनको समकित विकलांग, की परिभाषा समझायेंगे।। (57)

सब युवा मुनीवर से बोले, हम गुरु अपमान न सह सकते।
हमरे निर्ग्रंथ गुरु ज्ञानी ऐसे, कुछ भी न कह सकते।।
वो मास्टर शीतलचंद जी ही, कुछ का कुछ कहते रहते हैं।
वो अपने वाक्जाल में, मुनिवर हमें फाँसते रहते हैं।। (58)

मुनिवर बोले गाथा प्रमाण, ले जाकर उनको समझाना।
स्वाध्याय अभी वो और करें, ऐसा तुम जाकर बतलाना।।
सब युवा साथियों ने जाकर, फिर उनको गाथा समझाई।
तब शीतल समाधान पाकर शीतल में शीतलता आई।। (59)



योगी की योग निद्रा

उसकी कोई थाह कहाँ पाये, जिसने अपने को पाया है।
वो सोकर भी नित जागा है, जिसने संयम को पाया है।।
जो योग निद्रा शयन करें, सपने हैं आतम अनुभव के।
आतम वैभव को लब्ध किया, न दृश्य लुभाते वैभव के।। (60)

इक दिन कुछ युवा मुनीवर, के चरणों में वंदन करते हैं।
गुरुदेव ! आपके संग रुकेंगे रात, निवेदन करते हैं।।
मुनिवर के कमरे के सन्मुख, इक कमरा तब नजराया था।
उस कक्ष में रात बिताने का, मुनिवर से आशीष पाया था।। (61)

वैयावृत्ति कर मुनिवर की, सब अपने घर को जाते हैं।
तब सभी युवा उस सामने, वाले कमरे में सो जाते हैं।।
चुपके चुपके कई बार युवा, मुनिवर को देखने आते थे।
हर बार आत्म चिंतन में लीन, मुनिवर जी को वो पाते थे।। (62)

जब प्रातः तीन बजे देखा, मुनिवर सामायिक लीन मिले।
यह देख सभी के मन में, गुरु श्रद्धा के अनुपम फूल खिले।।
वो प्रातः आठ बजे मिलकर, मुनिवर के कक्ष में आते हैं।
कर क्षमायाचना गुरुवर के, चरणों में शीष झुकाते हैं।। (63)

मुनिवर ने पूछा क्षमा किसलिये, बतलाओ क्या बात हुई।
क्या गलती है कुछ पहले की, या बात कोई कल रात हुई।।
सब युवा साथियों ने बोला, मुनिवर अब हमने माना है।
क्या संत साधना होती है, ये कल की रात ही जाना है।। (64)

"जब जग विषयों में रच पच कर गाफिल निद्रा में सोता हो।
अथवा वह शिव के निष्कंटक पथ में विष कंटक बोता हो।।
हो अर्द्ध निशा का सन्नाटा बन में बनचारी चरते हो।
तब शांत निराकुल मानस तुम तत्त्वों का चिंतन करते हो।।"

मुनिवर इस पंचम काल में, भी सच्चे निर्ग्रंथों का दर्शन।
पाकर के आज हुआ पावन, हम सबका जीवन अंतरमन।।
मुनिवर कल हम शीतलचंद जी, के संग घूमने जाते थे।
तब शीतलचंद जी हम, सब भैया लोगों को वहकाते थे।। (65)

उनने हमसे यूँ बोला कि, महाराज रात भर सोते हैं।
कहते थे इस पंचम युग, में सच्चे साधु न होते हैं।।
बोले हम पर विश्वास नहीं, तो खुद ही जाकर देखो तुम।
इक रात उन्हीं के कमरे में, सब रात बिताकर देखो तुम।। (66)

इसलिये हे मुनिवर! हम सब, मिलकर यहाँ पे रात बिताये थे।
हम सोने नहीं हे मुनिवर! हम तो यहाँ देखने आये थे।।
लेकिन सच्चा साधु स्वरूप, लख करके मन भर आया है।
हमने लोगों की बातों में, गुरुवर का मान घटाया है।। (67)

मुनिवर कर दीजे आप क्षमा, हमको भी आतम बल दीजे।
हम देवशास्त्र गुरु की, रक्षा में तत्पर हों संबल दीजे।।
बोले मुनिवर कोई बात नहीं, आगे से दृढ़ श्रद्धा धरना।
ऐसा शंकित व्यवहार कभी, अब साधु के संग मत करना।। (68)



सद्-ज्ञान नहीं था तुम सबको, इससे ये गलती हो पाई।
अब अपना ज्ञान बड़ाने का, कुछ उपक्रम करो युवा भाई।।
मुनिवर की मानी बात वहाँ, सबने ये क्रम आरम्भ किया।
कुरता पायजामा टोपी के, संग स्वाध्याय प्रारंभ किया।। (69)

करके विहार पटना बुजुर्ग, से मुनिवर अब रहली आये।
रहली के आदि बाबा के, दर्शन मुनिवर के मन भाये।।
रहली में मुनि वैराग्यनंदि, मुनि तीर्थनंदि से मिलन हुआ।
मुनिवर विमर्शसागर जी का, पटना को वापिस गमन हुआ।। (70)

आचार्य देवनंदी जी से मिलन

रहली से मुनिवर कर बिहार, पटना बुजुर्ग आ जाते हैं।
आचार्य देवनंदी जी भी, पटना बुजुर्ग पधराते हैं।।
मुनिवर ने अगवानी की, दोनों संघों का तब मिलन हुआ।
आहार चर्या के बाद देवनंदी, जी का तब गमन हुआ।। (71)

रजवांस में पंच कल्याणक

पंडितश्री सनत-विनोद समाज, के संग वहाँ पर आते हैं।
रजवांस में पंचकल्याणक का, श्रीफल गुरु चरण चढ़ाते हैं।।
श्रीफल के संग गुरुवर विरागसागर जी, का भी पत्र दिया।
पढ़ करके पत्र मुनीवर ने, आयोजन का आशीष दिया।। (72)

इकतीस जनवरी को मुनिवर, पटना बुजुर्ग से गमन किया।
ढाना, सागर व ग्राम बाँदरी, को पदरज से धन्य किया।।
तब सात जनवरी को, मुनिवर रजवांस ग्राम में आते हैं।
मिलकर समाज संग पंडित, द्वय अगवानी भव्य कराते हैं।। (73)

महीना फरवरी में तारिख दस, से सोलह तक था आयोजन।
दस को घटयात्रा के संग-संग, मंगलध्वज का था आरोहण।।
ध्वज आरोहण के होते ही, सबके मन में आशंका थी।
जल वृष्टि कहीं न हो जाये, सबके मन में ये शंका थी।। (74)

आर्यिका आदर्शमति दर्शनार्थ पधारीं

शंकायें मन की सत्य हुईं, वारिस से भूँ का न्वहन हुआ।
इस बीच श्री आदर्शमति, माताजी का आगमन हुआ।।
सम्पूर्ण आर्यिका संघ वरसती, बारिस में भीगा आया।
आहार चर्या के बाद संघ, मुनिवर के दर्शन को आया।। (75)

आदर्शमति माताजी मुनिवर, के दर्शन को जब आईं।
माताजी ने करके वंदन, पूछी सब क्षेम कुशलताईं।।
रत्नत्रय के आराधन की, मुनिवर से थोड़ी चर्चा की।
मुनिवरजी हमको शीघ्र निकलना है, कह फिर से अर्चा की।। (76)

मुनिवर जी समय नहीं हम, पर कुछ तत्त्व की चर्चा करना थी।
कुछ शंकायें हैं मन में, जो उनको भी सन्मुख धरना थीं।।
इस तरह पूज्य माताजी ने, मुनिवर का बहु सम्मान किया।
मुनिवर से आशीर्वाद और अनुमति, लेकर के गमन किया।। (77)

ध्वज आरोहण के बाद बहुत, वर्षा हो जाने के कारण।
पण्डाल हुआ गीला सारा, मिट्टी में आया गीलापन।।
तब यहाँ प्रतिष्ठाचार्य रहे पंडित, गुलाब जी 'पुष्प' अहा।
पंडित जी ने सब लोगों को, अविराम मंत्र का जाप कहा।। (78)



अविराम मंत्र का जाप चला, बारिस भी तब रूक जाती है।
सूरज की प्रखर रश्मियों से, भूमि भी सूख सी जाती है।।
आगे का सारा आयोजन, सानंद वहाँ सम्पन्न हुआ।
व अंत में गजरथ महामहोत्सव, का कारज निस्पन्न हुआ।। (79)

बरौदिया में पंचकल्याणक

रजवांस गाँव के पास वसा है, ग्राम बरौदिया नाम कहा।
शुभ पंचकल्याणक आयोजन, उस गाँव में भी आयोजित था।।
मुनिवर विमर्शसागर जी को, उन सबने श्रीफल भेंट किया।
आयोजन में शामिल होने का, मुनिवर ने आशीष दिया।। (80)

आयोजन में पहले से ही, मुनिराज विशदसागर जी थे।
मुनिवर विमर्शसागर जी के, अग्रज श्री विशद् सिंधु जी थे।।
मुनिवर पहुँचे आयोजन में, दो विराग शिष्य का मिलन हुआ।
दोनों का शुभ सानिध्य मिला, आयोजन भी यह धन्य हुआ।। (81)

रमता जोगी बहता पानी

मुनिवर विमर्शसागर जी फिर, रजवांस गाँव आ जाते हैं।
मुनिवर को पुनः रोकने के, श्रावक सब भाव सजाते हैं।।
गुरुवर से अनुमति लाने की, मुनिवर जी बात बताते हैं।
श्री सनत विनोद समाज, संग सिलवानी नगरी जाते हैं।। (82)

जाकर के निवेदन खूब किया, गुरुवर विरागसागर जी को।
नगरी में रूकने की आज्ञा, दीजे विमर्शसागर जी को।।
गुरुवर विरागसागर बोले कह, देना जाके मुनिवर को।
अब मूलसंघ से पृथक हुये, दो वर्ष हुये पूरे उनको।। (83)

हमरी आज्ञा कहना उनसे, सिलवानी उनको आना है।
आशीष यही है तुम सबको, उनका बिहार करवाना है।।
पंडित द्वय ने आकर सारी, मुनिवर को खबर सुनाई थी।
गुरुवर विरागसागर जी की, आज्ञा सशब्द बताई थी।। (84)

गुरुदेव रोकने की अनुमति, लेने गये थे हम गुरुवर से।
पर अब बिहार करवाने का, आशीष मिला है गुरुवर से।।
मुनिवर ने गुरु आज्ञा पाकर, चलने की करली तैयारी।
मुनिवर नगरी से जायेंगे सुन, दुखी थे सारे नर-नारी।। (85)

मुनिवर अहार मुद्रा लेकर, आहार चर्या के हेतु चले।
श्रावक हाथों में द्रव्य लिये, मुनि के पड़गाहन हेतु चले।।
अत्रो-अत्रो तिष्ठो तिष्ठो, वंदन के स्वर गुंजाते थे।
जिस गली से गुजरे मुनिवर जी, भक्ति के मेघ लहराते थे।। (86)

मुनिराज वीर की चर्या ले, हर गली गली व द्वार चले।
श्रावक थे सारे परेशान मुनिवर, की कहीं न विधि मिले।।
नगरी के जैन, अजैन सभी, गुरुदर्शन पा हर्षाते थे।
सब अपने अपने योग्य द्रव्य से, गुरु की विधि बनाते थे।। (87)

मुनिवर को पड़गाने हेतु, सब्जी बाले फल देते थे।
कोई दुकान से खुद अपने, लाकर के श्रीफल देते थे।।
कहते थे कैसे भी हो पर, मुनिवर की विधि मिलाओ तुम।
हमरी दुकान से जो सामग्री, चढ़ये वो ले जाओ तुम।। (88)

बस तभी अचानक इक चौके, में विधि वहाँ बन जाती हैं।
तब जैन अजैन सभी लोगों की, मन कलियाँ खिल जाती हैं।।
हर ओर हर्ष की लहर बड़ी, श्रावक जयकार लगाते थे।
होकर प्रशन्न श्रावक अपने, घर मुनिवर को ले जाते थे।। (89)

लेकिन जब अंतराय आता, तब कोई बचा न पाता है।
प्रभु आदिनाथ से महापुरुष, को भी दर-दर भटकाता है।।
मुनिवर को लेकर श्रावक जन, जब अपने घर को जाते थे।
मन में था भारी हर्ष लिये, वो झूम-झूम कर जाते थे।। (90)

कुछ हरी घांस के रस्ते में, बहु अंकुर वहाँ निकलते थे।
उस हरी घांस पे पग धरके, श्रावक जन वहाँ पे चलते थे।।
मुनिवर जी ने जब यह देखा, तो बीच राह से लौट आये।
लेकिन फिर पुन: विधि मुनिवर की, श्रावक नहीं मिला पाये।। (91)

मुनिवर ने आकर मंदिर में, आहार मुद्रा को खोल दिया।
अगले दिन आहार चर्या तक, का मुनिवर जी ने मौन लिया।।
तब जैन अजैन की भीड़, बड़ी मंदिर जी में लग आई थी।
गुरु का आहार न होने से, सबकी आतम दुख पाई थी।। (92)

सब जैन अजैन ये कहते थे, आहार बिना हम मुनिवर को।
इस तरह से न जाने देंगे, अपनी नगरी से गुरुवर को।।
पंडित श्री सनत विनोद, वहाँ मुनिवर से अर्जी करते हैं।
आहार बाद करना बिहार, मुनिवर ये भावना धरते हैं।। (93)

मुनिराज इशारे से बोले कल, का भी कहाँ भरोसा है।
है चर्या कर्माधीन बड़ी, पर हमको तो संतोषा है।।
पंडित जी बोले मुनिवर जी, मन में विश्वास समाये हैं।
कल चर्या अच्छे से होगी, हम सबने भाव बनाये हैं।। (94)

अगले दिन मुनिवर जाते हैं, जब आहार बेला आती है।
तब पुण्य उदय से मुनिवर जी, की विधि शीघ्र मिल जाती है।।
लेकिन चौके में जाते ही, तब अंतराय हो जाता है।
इस अतंराय से श्रावक जन, का दिल भारी दु:ख पाता है।। (95)

दिल दुखी सभी का है मुनिवर, इक दिना और अब रूक जाओ।
हम सबके मन हैं दुखी हे, मुनिवर दुखी छोड़कर न जाओ।।
मुनिवर बोले गुरु आज्ञा है, हमको सिलवानी जाना है।
अब समय हमारे पास नहीं, अब संभव न रूक पाना है।। (96)

बढ़ चले कदम सिलवानी की ओर

वहती नदिया कहलाती है, रमता जोगी कहलाता है।
बहती नदिया रमता जोगी, थम जाये तो सड़ जाता है।।
भक्तों की श्रध्दा के आँसु, मुनिवर को रोक न पाये थे।
क्या जैन अजैन सभी लोगों, ने तब आँसु छलकाये थे।। (97)

रजवांस गाँव से मुनिवर जी, आगे बिहार कर जाते हैं।
वस दो ही किलो मीटर चलकर, मुनिवर जी तब रूक जाते हैं।।
उस गाँव का नाम था ग्रंट, वहीं मुनिवर जी का आहार हुआ।
मुनिवर का सुन उपदेश ग्राम, वासी सबका उद्धार हुआ।। (98)

सन्ध्या बेला में मुनिवर ने, उस ग्रंट गाँव से गमन किया।
जाकर के ग्राम बाँदरी में, मुनिवर जी ने विश्राम लिया।।
अगले दिन ग्राम बाँदरी, में ही मुनिसंघ आहार हुआ।
आहार के बाद बिहार किया, विदवासन में विश्राम हुआ।। (99)

प्रातः ईशरवारा होकर, मुनिवर जी किशनपुरा आये।
सब ग्राम निवासी लोग, मुनिवर की चर्या कर हर्षाये।।
फिर चले शाम को मुनिवर जी, विछुआ में जा विश्राम किया।
प्रातः चलकर सुल्तानगंज, में मुनिवर ने आहार लिया।। (100)

फिर कदम बड़े कुछ और वहाँ सन्ध्या में वियरमऊ आये।
मुनिराजों को आहार करा, सब ग्राम निवासी हर्षाये।।
सन्ध्या बेला में गमन किया था, ग्राम सिहौरा जैसीनगर।
प्रातः बेला में चलकर के, सिलवानी पहुँचे थे मुनिवर।। (101)

मुनिवर विशुद्धसागर जी, व मुनिराज विशदसागर जी से।
सब गुरु संघ लेकर पहुँचे, अपने लघु भ्राता को लेने।।
ज्यों राम भरत का मिलन हुआ, ऐसे सब गले मिले भाई।
यह मिलन देखकर संतों का, भक्तों की आँखें भर आईं।। (102)

जैसे चंदा को पा-करके कोई चकोर हर्षाया हो

मुनिवर विमर्शसागर जी थे, व्याकुल गुरुवर से मिलने को।
जैसे इठलाती सरितायें सागर, में जाकर मिलने को।।
गुरु पादमूल क्या मिले लगा, जैसे सब कुछ ही पाया हो।
चंदा को लखकर अहा, कोई जैसे चकोर हर्षाया हो।। (103)

गुरु पाद मूल को पा मुनिवर, चरणों में जाकर लेट गये।
क्या भेंट करूँ सब कुछ उनका, मुनिराज स्वयं ही भेंट भये।।
त्रय भक्ति युत गुरु चरण, वंदना करके मन हर्षाया था।
गुरुवर ने अपने शिष्यों को, सीने वहाँ लगाया था।। (104)

गुरु शिष्य मिलन की अनुभूति, को शब्दों में कैसे गाऊँ।
इक श्रेष्ठ शिष्य बन सकूँ, कभी वस यही भावना नित भाऊँ।।
इक श्रेष्ठ शिष्य का लक्षण है, जो चाहे गुरु से दूर रहे।
पर उसका चित्त समर्पण व, गुरु भक्ति से भरपूर रहे।। (105)

मुनिवर का उपसंपत गुण

मुनिवर विमर्शसागर जी ने, उपसंपत गुण का पालन कर।
निज सहित संघ को सौंप दिया, गुरुवर विरागसागर के कर।।
संग ब्रह्मचारी आशीष और, भैया जितेन्द्र भी आये थे।
वो दोनों भैया भी मुनिवर ने, गुरुवर को सम्हलाये थे।। (106)

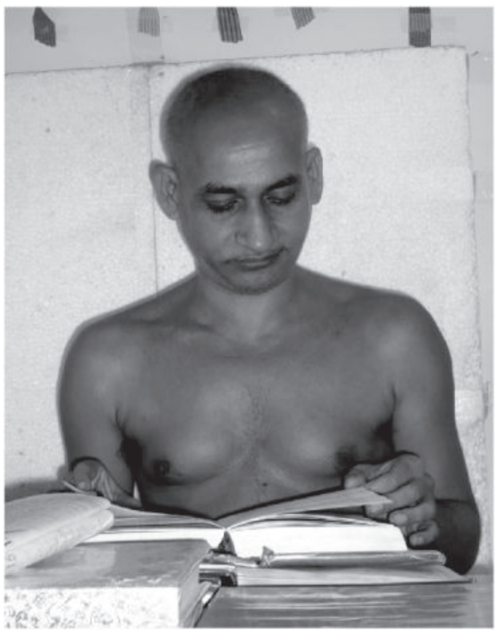
मुनिवर के भाव समर्पण की, गुरुवर ने खूब प्रशंसा की।
उनकी गुरुभक्ति की सारे, शिष्यों ने भी अनुशंसा की।।
बोले गुरुवर कर समय समय, पर इसी तरह वात्सल्य मिलन।
श्री मूलाचार की चर्या का, हम सभी करें मिलके पालन।। (107)

मुनिवर विमर्शसागर जी को, सिलवानी में सब श्रावक जन।
पहिचान दिये भाँति-भाँति, न जाने उनका नामकरण।।
कोई मंद मंद मुस्कान कहे, कोई होंठ गुलाबी कहता था।
कोई गोरे-गोरे से मुनिवर पहिचान बताता रहता था।। (108)

तेरहवाँ पर्व पूर्ण

इस तरह त्रयोदस हुये पूर्ण ये पर्व गुरु आराधन के।
उनकी पावन गाथा लिखकर लगते हैं ये कर पावन से।।
गुरुवर के पावन जीवन से जो भव्य प्रेरणा पायेगा।
निश्चित ही अपने कर्म काट वो नर विचिन्त्य बन जायेगा।। (109)

❏❏❏❏



ज्ञानाभ्यास करे मनमाहीं, ताके मोह–महातम नाहीं



कायोत्सर्ग मुद्रा में स्थित
श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी



bhavlingi sant

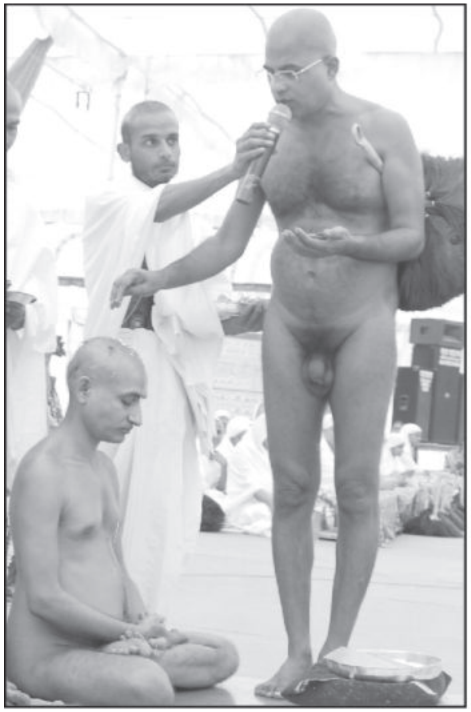
shramnacharya shri 108 vimarsh sagar ji gurudev

"चतुर्दश पर्व"

विज्ञानी पर्व

संजीवनी भावलिंगी संत (महाकाव्य)

चित्र समूह - 5
आचार्य पद दर्शन



आचार्य पद के संस्कार करते हुए प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज
(बाँसवाड़ा १२/१२/२०१०)



श्री कार लेखन करते हुए पूज्य विरागसागर जी।



"चतुर्दश पर्व"

"विज्ञानी पर्व"

मंगलाचरण

महामंत्र को नमन

अरिहंतों को करके वंदन, मैं सिद्धों के गुण गाता हूँ।
सूरी वृन्दों के चरणों में, श्रद्धा से शीष झुकाता हूँ।।
मंगलमय उपाध्याय मुनिवर, उनके चरणों वंदन मेरा।
सब साधु वृन्दों को वंदन, जिससे मिटता भव का फेरा।। (1)

जो पंच परम पद के धारी, उनको जिसमें वंदन होता।
उस महामंत्र के सुमिरन से, भव भव का उर क्रंदन खोता।।
यह मंत्रशिरोमणि आद्य मंत्र, यह मंत्रराज कहलाता है।
इस णमोकार को जो जपता, वो भवसागर तर जाता है।। (2)

जो णमोकार का विश्वासी, श्रद्धा से इसको ध्याता है।
उसके जीवन के सब संकट, ये णमोकार विनशाता है।।
है जैन जगत का प्राणभूत, ये महामंत्र मंगलकारी।
हर शक्ति का उद्भव जिससे, वीजाक्षर का शुभ आधारी।। (3)

इस महामंत्र की महिमा से, अग्नि बन गई जल का झरना।
इस बीज मंत्र के सुमिरन से, विषधर फूलों का हार बना।।
महिमा अवाद्य यह मंत्र आद्य, जो इसका ध्यान लगाता है।
अपराजित मंत्र ये सिद्ध शिला, के आंगन तक ले जाता है।। (4)

संकल्प

इस णमोकार के सुमिरन से, भावों को शुद्ध बनाता हूँ।
जो णमोकार बन गये स्वयं, उनको मैं शीष झुकाता हूँ।।
गुरुवर के जीवन का दर्शन, अब आगे तुम्हें कराता हूँ।
यह पाप विनाशक शुभ्र कथा, कह अपने पाप नशाता हूँ।। (5)

सागर में आकर नदी मिली, सागर ने नदी का रूप लिया।
सिलवानी से गुरुवर विरागसागर जी, ने अब गमन किया।।
तब ग्राम केवलारी से, श्री गुरुदेव सहजपुर ओर चले।
जिस ओर कदम बड़ जाते थे, लग जाते जिनमत के मेले।। (6)

रास्ता भटके, जंगल में रात

जब ग्राम सहजपुर जाने को, शुभ कदम बड़े थे गुरुवर के।
तब साथ चल रहे इक, सज्जन वो कहन लगे यूँ गुरुवर से।।
गुरुदेव अगर हम सन्मुख वाले, इस पहाड़ के ऊपर से।
चड़कर गर नीचे उतर गये, तो पहुँच जायेंगे मंजिल पे।। (7)

तब सात किलोमीटर चलने, का श्रम बच जायेगा गुरुवर।
बस इस पहाड़ के पार सहजपुर, गाँव दिखायेगा गुरुवर।।
गुरुवर ने सब साधुजन से, पूछा बोलो क्या करना है।
साधु बोले गुरुवर हमको, तो आज्ञा ही चित धरना है।। (8)

गुरुवर तब संघ सहित पर्वत, पर चढ़कर नीचे आते हैं।
वो सज्जन जी तब आगे-आगे, चलकर राह दिखाते हैं।।
वो राह भटक गये सज्जन जी, इसका न उनको पता चला।
आ गया संघ था जंगल में, और तभी वहाँ दिनमान ढला।। (9)

गुरुवर ने निर्णय किया, तभी जंगल में रात बितायेंगे।
ढल चुका है दिन छा गया, अंधेरा अब आगे न जायेंगे।।
निकटस्थ गाँव के लोगों को, जब इस घटना का पता चला।
तब वहाँ सैकड़ों लोगों का, कुछ समय में आ पहुँचा रेला।। (10)

मानव घेरे में साधु

आकर के गाँव वासियों ने, गुरु के चरणों वंदन करके।
चलें गाँव में आप निवेदन, किया ये श्रद्धा उर धरके।।
गुरुवर बोले हम लोग, दिगम्बर जैन श्रमण कहलाते हैं।
दिन ढ़लते ही हम लोग कहीं, भी न आते न जाते हैं।। (11)

इसलिये आज इस जंगल में, ही हम सब रात बितायेंगे।
कल भोर नहीं होगी जब, तक हम लोग कहीं न जायेंगे।।
पर गुरुवर जी कुछ दूरी पर, ही झरना भारी बहता है।
जंगल के जन्तु आते हैं, पानी पीने, डर रहता है।। (12)

बस अभी कुछ समय बाद, यहाँ उनकी आवाजें आयेंगी।
खूँखार जानवर जंगल में, आवाजें अभी सुनायेंगी।।
बोले गुरुवर अब जो भी हो, हम यहीं पे रात बितायेंगे।
परिषह समता से सह लेंगे, हम प्रभु का ध्यान लगायेंगे।। (13)

बाबाजी अगर रात्रि में, सब यहीं पे समय बितायेंगे।
तो हम सब भी गुरुदेव, आपके साथ ही रात बितायेंगे।।
फिर सभी गाँव वालों ने, लम्बा घेरा वहाँ बनाया था।
मानव घेरे के बीच में, सब साधुजन को बैठाया था।। (14)

चारों कोनों पर आग, जलाकर पूरी रात जागरण था।
उन गाँव वासियों का दिखता, गुरुओं के प्रति समर्पण था।।
साधु जन सारी रात परिषह, सहकर भी आनंदित हैं।
इसलिये तो साधु धरती पर, देवों द्वारा भी वंदित हैं।। (15)

हो गई भोर गुरुवर ने, तब सबको मंगल आशीष दिया।
फिर गुरुवर जी ने संघ सहित, अपने गन्तव्य को गमन किया।।
फिर ग्राम सहजपुर से आगे, महाराजपुरा वो जाते हैं।
महाराज पुरा से कर बिहार, बीना बारहा आ जाते हैं।। (16)

बीना बारहा से कर बिहार, अब संघ देवरी आता है।
फिर ग्राम गौर झामर, सुरखी, से ग्राम चितोरा जाता है।।
गुरुवर का संघ चितोरा से, अब सागर को ही जाना था।
सागर से पहले अंकुर कॉलौनी, का मंदिर आना था।। (17)

अंकुर कॉलौनी में भव्य आगवानी

मुनिवर विमर्शसागर जी ने था, किया यहाँ पर चौमासा।
इसलिये यहाँ अगवानी में, दिखता विशेष था उल्लासा।।
प्रातः की मंगल बेला में, गुरुवर का संघ यहाँ आया।
हर ओर गूँजते जयकारे नगरी, में था उत्सव छाया।। (18)

गुरुवर का सम्मान

गुरुवर विराग मुनिवर विमर्श, के गूँज रहे थे जयकारे।
भक्ति सैलाव उमड़ता था, बन बन के नदिया के धारे।।
मुनिवर बोले गुरुवर सन्मुख, मेरा जयकारा न बोलो।
गुरु और शिष्य को एक तराजू, पर भैया तुम न तोलो।। (19)



जिनमंदिर शिलान्यास

आकर मंगल उपदेश हुआ, पहले मुनिवर फिर गुरुवर का।
श्रावक आनंद विभोर हुये, उपदेश सुना जब गुरुवर का।।
मुनिवर का चातुर्मास हुआ था, तब से चर्चा जारी थी।
मंदिर को और बड़ा करने, की लोगों की तैयारी थी।। (20)

गुरु शिष्य का पावन योग मिला, सबने थी तैयारी करली।
मंदिर के पास में भूमि को, सारी समाज ने क्रय करली।।
भूमिपूजन व शिखरों पर, कलशारोहण का आयोजन।
दो दिन में सारा काम हुआ, सारी समाज का हर्षित मन।। (21)

महावीर जयन्ति, सागर में

अंकुर कॉलोनी से चलकर, अब संघ नगर में आता है।
मोरा जी के जिनमंदिर में, आकर ठहराव जमाता है।।
महावीर जयन्ति आयोजन था, गौराबाई जिनालय में।
महावीर के जयकारे गूँजे थे, सागर के हर आलय में।। (22)

मोरा जी मंदिर प्रांगड में था, राजवार्तिक पर वाचन।
जिसमें गुरुवर जी रोज बताते थे, क्या है सम्यक्दर्शन।।
यह ग्रीष्मकाल आगम वाचन, श्रुत पंचमी पर्व विराम हुआ।
इस महाग्रंथ के वाचन से, सम्यक्दर्शन अभिराम हुआ।। (23)

मुनिराज विनिश्चयसागर जी, संग विश्वशांति मुनिवर आये।
मुनिराज विश्वलोचन जी संग, क्षुल्लक विनीतसागर लाये।।
मुनिवर श्री विश्वकीर्ति जी, ऐलक विनम्रसागर आये।
गुरुवर विराग से मिलन हुआ, सब शिष्यों के मन हर्षाये।। (24)

मुनिवर का श्रेयांसगिरी की ओर गमन

मुनिवर विमर्शसागर जी ने, गुरुवर की शुभ आज्ञा पाकर।
श्रेयांशगिरी की ओर गमन कर, दिया छोड़ करके सागर।।
मुनिवर विमर्शसागर जी के संग, मुनि विनर्घ्य सागर आये।
करके बिहार कर्रापुर से, मुनि शांतिनगर वण्डा आये।। (25)

नैनागिर की वंदना

शांतिनगर में बाहुबलीसागर जी, से फिर मिलन हुआ।
मुनिद्विय का दलपतपुर होकर, नैनागिर जी को गमन हुआ।।
प्रभु पार्श्वनाथ का समोशरण, इस नैनागिर में आया था।
वरदत्तादि मुनिराजों ने निर्वाण, यहाँ से पाया था।। (26)

इस सिद्धक्षेत्र के दर्शन से, सिद्धत्व जागता है मन में।
जो भाव से वंदन कर लेता, सब कुछ पा जाता जीवन में।।
दो दिन तक मुनिद्विय रुके, यहाँ भावों से प्रभु का वंदन कर।
हर्षित मन का प्रभु अंदर था, इस सिद्धक्षेत्र का दर्शन कर।। (27)

दो दिन रूककर मुनिवर द्वय, ने अब आगे कदम बड़ाये थे।
वो ग्राम बम्हौरी नगर, शाहगढ़ नगर घुवारा आये थे।।
तब नगर घुवारा से भगवां, फिर द्रोणागिरि प्रवेश हुआ।
इस सिद्धक्षेत्र की माटी के, स्पर्श से हर्ष विशेष हुआ।। (28)

द्रोणगिरी वंदना

गुरुदत्त मुनिवर के तन में, दुष्टों ने आग लगाई थी।
इस भूमि पर उपसर्ग सहन, कर मुक्ति रमा परणाई थी।।
उन गुरुदत्तादि मुनियों ने, इस भूमि से निर्वाण लिया।
इस भूमि को भक्तों ने लघुसम्मेद शिखर का नाम दिया।। (29)



निर्वाण स्थली यह पावन, मुनिराजों के मन को भाई।
इस सिद्धक्षेत्र का वंदन, कर चेतन परिणतियाँ हर्षाईं।।
इस सिद्धक्षेत्र का वंदन कर, मुनिवर द्वय आगे जाते हैं।
बड़ा मलहरा से होकर, गुलगंज में मुनिवर आते हैं।। (30)

गुलगंज में पंडित भागचंद जी, 'इन्दु' को सौभाग्य मिला।
मुनिवर द्वय की सेवा करके, उनके हृदय का कमल खिला।।
गुलगंज से अब करके, बिहार गुरुदेव छतरपुर आते हैं।
मुनिद्वय को बड़े जिनालय में, सब हर्षित हो ठहराते हैं।। (31)

तब नगर छतरपुर में कुछ दिन, रूककर मुनिवर ने गमन किया।
छत्तीस किलोमीटर चलकर के, ग्राम वमीठा वरण किया।।
ब्रह्मचारी श्री विशल्य भैया जी, इसी गाँव में जन्माये।
जो पूर्वसमय मुनिवर विशल्य सागर, का नाम गुरु से पाये।। (32)

ब्रह्मचारी श्री विशल्य भैया के, घर पर ही आहार हुआ।
फिर पन्ना नगरी को मुनिवर द्वय, जी का वहाँ बिहार हुआ।।
पन्ना घाटी चलकर मुनिवर, द्वय ऊपर आ जाते हैं।
ग्राम वमीठा के श्रावक गण, साथ वहाँ न आते हैं।। (33)

अम्बर से दिगम्बर

दोनों अम्बर की तरह, दिगम्बर मुनिवर बड़ते जाते थे।
न कोई व्यवस्था साथ रही, न श्रावकगण नजराते थे।।
अविराम गति से बिना रूके, मुनि संघ ये बड़ता जाता है।
तभी बड़ा-सा इक होटल, मुनिवर जी को नजराता है।। (34)

होटल में रुकना ठीक नहीं, तब पग आगे बड़ जाते हैं।
सौ मीटर दूरी पर मुनिद्वय, खाली वरामदा पाते हैं।।
मुनिवर द्वय उस बरामदे में, जाकर जमीन पर बैठ गये।
प्रतिक्रमण भाव में मुनिवर द्वय, उस समय वहाँ पर लीन भये।। (35)

दिगम्बरत्व की चर्या

निकटस्थ गाँव के लोग, साधुओं को लखकर आ जाते हैं।
सब लोग विनय से मुनिवर के, चरणों में शीष झुकाते हैं।।
इक व्यक्ति बोला साधु जी, क्या कोई आपके साथ नहीं।
न दिखता है साधन कोई न, सुविधा की सौगात कहीं।। (36)

मुनिवर विमर्शसागर जी, तब उस व्यक्ति को समझाते हैं।
हम नग्न दिगम्बर साधु हैं, साधन को न अपनाते हैं।।
बस पास हमारे एक कमण्डल, एक पिछी ये कहलाती।
इन पिछी कमण्डल से ही हमरी, सभी व्यवस्था बन जाती।। (37)

व्यक्ति बोला फिर साधु जी, क्या चाय दूध भोजन पानी।
मुनिवर के मुख से पुनः खिरी, समझाने को अमृत वाणी।।
हम लोग तो चौबिस घण्टे में, इक बार ही भोजन लेते हैं।
फिर चौबिस घण्टे को भोजन, पानी का त्याग कर देते हैं।। (38)

हम चाय कभी भी न पीते, न रात में भोजन करते हैं।
इक बार ही दिन में पानी व, इक बार ही भोजन करते हैं।।
व्यक्ति दूजा बोला साधु जी, हमको भी कोई वर दो।
जो काम आपके आये हम, ऐसा सेवा का अवसर दो।। (39)



मुनिवर बोले है काम लघु जो, आप अभी कर सकते हो।
दो तखत गाँव में मिल जायें, तो आप यहाँ ला सकते हो।।
मुनिवर से सेवा का, अवसर पाकर सब जन हर्षाते हैं।
फौरन जाके दो तखत गाँव से, लोग वहाँ ले आते हैं।। (40)

तीजा व्यक्ति बोला साधु, जी आप कहाँ पर जायेंगे।
मुनिवर बोले हम प्रातः, बेला में पन्ना को जायेंगे।।
व्यक्ति बोला पन्ना वाले, क्या आपको लेने आयेंगे।
मुनिवर बोले हम लोगों का, नहीं उन्हें पता क्या आयेंगे।। (41)

व्यक्ति बोला पन्ना वालों को समाचार हम कर देंगे।
साधु जी आने वाले हैं उनको हम ये बतला देंगे।।
मुनिवर ने हँसकर उन सब लोगों को मंगल आशीष दिया।
फिर मुनिवर द्वय ने वहीं बैठकर, सन्ध्या का शुभध्यान किया।। (42)

दिगम्बरत्व की चर्या

पन्ना वालों को मुनिद्वय के, आने का जब संकेत मिला।
सारी समाज में हर्ष हुआ, जो सुंदर अवसर हमें मिला।।
पन्ना के बहुत युवा साथी, गुरु की सेवा को आते हैं।
मुनिवर द्वय कर दर्शन सेवा, कर मन में अति हर्षाते हैं।। (43)

पन्ना के युवा साथ अपने, देशी घृत लेकर आये थे।
घी से मालिस करके मुनिवर, की वो कर्त्तव्य निभाये थे।।
मालिस तो कर दी मुनिवर की, वो लोग पौंछना भूल गये।
मुनिवर जी लेटे युवा, सभी वापिस पन्ना को लौट गये।। (44)

उस घी के कारण वहाँ, हजारों लाल चीटियाँ आती हैं।
मुनिवर विमर्शसागर जी, के पूरे तन पर लग जाती है।।
मुनिवर को जब आभास हुआ, तो आत्म ध्यान में लीन हुये।
तन से है चेतन जुदा-जुदा, इस भेद ज्ञान में लीन हुये।। (45)

मुनिराज यशोधर के ऊपर, उपसर्ग भयानक आया था।
राजा श्रेणिक ने मरा हुआ, इक सर्प गले पहिनाया था।।
उस सर्प के कारण उनके तन पर बहुत चीटियाँ आईं थीं।
तन को छलनी कर दिया, मगर मुनिवर को डिगा न पाईं थीं।। (46)

तब सारी रात ही मुनिवर जी के, तन पर चीटीं लगी रहीं।
बैठे-बैठे ही आत्म ध्यान में, मुनिवर की सब रात गई।।
मुनिवर विनर्घ्य सागर जी, ने जब देखा तो अचरज भारी।
मुनिवरजी की गोरी काया, तब दिखती थी कारी कारी।। (47)

तन का न अंग शेष कोई, जिसपे चींटी न चिपकी हो।
न कोई उपांग बचा बाकी, जिसपे चींटी न लिपटी हो।।
मुनिवर विनर्घ्यसागर जी, ने फिर पूर्ण सावधानी देकर।
इक इक चींटी को अलग किया, हाथों में पिच्छी को लेकर।। (48)

था पुण्ययोग जो सभी चींटियों, ने गुरु की शरणा पाई।
तन पर मुनिवर के रहीं, मगर किंचित न पीड़ा पहुँचाई।।
तब सभी चींटियों पर, मुनिवर जी ने करूणा छलकाई थी।
उनकी रक्षा के लिये बैठकर सारी रात बिताई थी।। (49)



उपसर्ग हुआ अब दूर मुनीवर, ने समता का भाव धरा।
मुनिवर की दिव्य साधना का, चेहरा अब और लगा निखरा।।
प्रातः बेला मुनिवरद्वय ने, पन्ना नगरी को गमन किया।
पन्ना में भव्य प्रवेश हुआ, सारे लोगों ने लाभ लिया।। (50)

निःसंग साधना

आहारचर्या का समय हुआ, मुनिवर चौके में जाते हैं।
श्रीशांत कुमार जी के घर, पर मुनिवर पड़गाये जाते हैं।।
क्षुल्लक विशंक सागर जी के ये पूर्व पिता जी का घर था।
मुनिवर विमर्शसागर जी की, चर्या का पाया अवसर था।। (51)

जब-जब भी गर्मी का, मौसम आकर के रंग दिखाता था।
मुनिवर विमर्शसागर जी, का तब पित्त बहुत बड़ जाता था।।
उस दिन भी गर्मी तेज रही, व पित्त प्रभाव बड़ा आया।
मुनिवर विमर्शसागर जी ने केवल जल ही जल ले पाया।। (52)

कुछ दिन रूककर पन्ना, मुनिवर देवेन्द्र नगर को जाते हैं।
गुन्नौर सलेहा श्रेयांसगिरि के, बीच में दर्शन पाते हैं।।
मुनिराज विनिश्चय सागर जी, से मध्य राह में मिलन हुआ।
दोनों मुनिवर का मिलकर के, देवेन्द्र नगर आगमन हुआ।। (53)

देवेन्द्र नगर से अब मुनिवर नागौद नगर आ जाते हैं।
नागौद नगर में रूक करके, आगे को कदम बड़ाते हैं।।
नागौद से पहुँचाने मुनिद्वय, को बहुत से श्रावक आते हैं।
पर नगर की सीमा तक पहुँचाकर, सब वापिस हो जाते हैं।। (54)

निःसंग योगी-मानो देशभूषण और कुलभूषण

निःसंग गगन से मुनिवर द्वय, आगे को बड़ते जाते हैं।
कुल भूषण व मुनिराज देशभूषण, की याद दिलाते हैं।।
बस तभी अचानक अम्बर के, आँचल में हल चल आई थी।
काली काली घनघोर घटायें, आसमान पर छाईं थीं।। (55)

बादल की गड़गड़ तेज हवा, बिजली भी चमचम करती थी।
हो गई मूसलाधार शुरू वारिश, भी छम-छम करती थी।।
निर्वाध गति से मुनिवर द्वय, आगे को बड़ते जाते हैं।
लगता था बादल घुमड़-घुमड़ उनका अभिषेक कराते हैं।। (56)

दोनों मुनिवर थे एकाकी, संग कोई नजर न आता था।
रुकना है कहाँ जाना है, किधर ये नहीं समझ में आता था।।
मुनिवर विनर्घ्यसागर बोले, मुनिवर श्रीविमर्शसागर से।
बोलो मुनिवर रुकना है, कहाँ हमको अब आगे जाकर के।। (57)

मुनिवर बोले आकाश में, जब तक नजर उजाला आयेगा।
तब तक कोई न कोई हमें, रुकने को गाँव मिल जायेगा।।
बस बड़े चलो जब कोई हमें, स्थान उचित मिल जायेगा।
स्थान उचित मिलते ही अपना, भी चलना रुक जायेगा।। (58)

अनुकूल हमारा पुण्य रहा, तो हाल ठीक हो जायेंगे।
अनुकूल व्यवस्था वाले भी, सब लोग स्वयं मिल जायेंगे।।
मुनिवरद्वय का यह संघ अहा नित आगे बड़ता जाता था।
घिर गया अंधेरा मगर कोई, स्थान नजर न आता था।। (59)



वस तभी वहाँ पर पीछे से इक, बस आके रूक जाती है।
उसमें बैठे इक युवा की नजरें, मुनिवर जी पे जाती हैं।।
वह युवा उतर करके बस से, फौरन नीचे आ जाता है।
आकर के मुनिवर द्वय के, श्री चरणों में शीष झुकाता है।। (60)

पूछा मुनिवर जी आप गमन, कर अभी कहाँ से आये हैं।
मुनिवर विमर्शसागर बोले, भैया नागौद से आये हैं।।
उस युवक ने पूछा हे गुरुवर, अब रात कहाँ विश्राम कहो।
मुनिवर बोले कुछ पता नहीं, ये धन्य-धन्य निर्ग्रंथ अहो।। (61)

उस युवक ने पूछा क्या मुनिवर, नागोद से कोई नहीं आया।
मुनिवर बोले कुछ साथ रहे, फिर आगे कोई नहीं आया।।
पंकज है नाम मेरा गुरुवर, मुनिसंघ की सेवा करता हूँ।
सतना का रहने वाला हूँ, गुरुपद रज माथे धरता हूँ।। (62)

मुनिवर है पास में विद्यालय, उसमें अच्छा स्थान भी है।
बस आप हमारे संग चले, हमरी थोड़ी पहिचान भी है।।
चलकर पचास मीटर ही, वस स्कूल वहाँ पर पाया था।
पंकज भैया ने मुनिद्वय को, विद्यालय में ठहराया था।। (63)

कर दिया एक स्थान साफ, पत्थर का आसन लगा दिया।
मुनिवर द्वय को वंदन करके, उस उपलासन पर बिठा दिया।।
स्कूल की चाबी मंगवाके, दो कमरे उसने खुला दिये।
सतना से कर संकेत वहाँ, दो पाटे फौरन मंगा लिये।। (64)

सतना में श्रमण

मुनिवर द्वय ने कर प्रतिक्रमण, अब सामायिक चित लाये थे।
सतना से गुरु सेवा करने, कुछ लोग वहाँ पर आये थे।।
अगले दिन सतना नगरी में, मुनिवर द्वय अहा पधारे हैं।
सब गुरु भक्ति में झूम-झूम, कहते सौभाग्य हमारे हैं।। (65)

सतना चातुर्मास-2002

मुनिवर की अमृत वाणी, सुन श्रावक जन सारे हर्षाये।
मुनिवर की चरण सन्निधि, को सारे श्रावक जन ललचाये।।
था चतुर्मास का समय निकट, दिन रविवार का आया था।
सारी समाज ने चौमासे का, श्रीफल वहाँ चड़ाया था।। (66)

सन दो हजार दो का, चौमासा मुनिवर सतना में ही हो।
इतना सा बस आशीष हे, गुरुवर इस सतना समाज को दो।।
मुनिवर विमर्शसागर बोले आशीष हमारा पूरा है।
पर गुरुवर के आदेश बिना मेरा आशीष अधूरा है।। (67)

मुनिवर बोले भैया पहले, गुरु चरणों में जाना होगा।
गुरुवर विरागसागर जी से, अनुमति लेकर आना होगा।।
बस तभी अमरपाटन समाज के, लोग निवेदन को आये।
उनको भी मुनिवर जी ने, तब गुरुवर के रस्ते दिखलाये।। (68)

सतना समाज को गुरुवर, से चौमासे का आशीष मिला।
पाकर गुरुवर का शुभाशीष, सतना समाज का भाग्य खिला।।
सन दो हजार दो में, तेईस जुलाई को मंगलवार रहा।
था चतुर्मास का स्थापन, सतना समाज था झूम रहा।। (69)



तब श्री रवीन्द्र जी जैन, 'बड़े' भाई फैशन गाइड वाले।
थे चतुर्मास का मुख्य, कलश स्थापन करवाने वाले।।
सिद्धार्थ भाई के हाथों, में आयोजन का संचालन था।
सानंद हुआ सम्पन्न और, निर्विघ्न सभी आयोजन था।। (70)

फिर गुरु पूर्णिमा पर गुरु, भक्तों ने आकर आशीष लिया।
इस पर्व का अर्थ बताने, को मुनिवर जी ने उपदेश दिया।।
प्रतिदिन उपदेश धर्म का, मुनिवर विमर्शसागर करते थे।
फिर प्रश्न मंच का आयोजन, मुनि विनर्घ्यसागर करते थे।। (71)

वीरशासन जयन्ति

फिर वीरशासन जयन्ति, का पर्व पावन आ गया।
ये पर्व पावन ज्ञान का, सबके दिलों पर छा गया।।
प्रभु वीर का शासन जगत, में ये सदा जयवंत हो।
प्रभु वीर के संदेश की, धरती पे गूँज दिगंत हो।। (72)

भक्तामर शिक्षण शिविर

फिर आठ-आठ से श्री भक्तामर, शिक्षण शिविर लगाया था।
जिसमें शुद्ध उच्चारण करना, मुनिवर जी ने सिखलाया था।।
सब पुरुष श्वेत परिधानों, में महिलायें केशरिया रंग में।
सब भक्तामर का आलोडन, कर डूब रहे भक्ति रंग में।। (73)

पर्वराज पर्यूषण

अब माह सितम्बर का आया, था चली धर्म की पुरवाई।
श्री पर्वराज पर्यूषण की, देखो पावन बेला आई।।
प्रतिदिन दस धर्मों के ऊपर, मुनिवर की सुन अमृत वाणी।
शीतलता का अनुभव करते, भवदाह से तप्त हुये प्राणी।। (74)

मध्यान्ह काल मुनिवर मुख से, तत्त्वार्थ सूत्र का सुन वाचन।
सुनकर सब भव्य किया करते थे, अपने हित का निर्वाचन।।
सिद्धार्थ जी सन्ध्या बेला में, श्रावक प्रतिक्रमण कराते थे।
फिर सांस्कृतिक आयोजन में, सब धर्म की शिक्षा पाते थे।। (75)

मुनिवर द्वारा प्रतिदिन दस, प्रश्नों का सुंदर आयोजन था।
स्वाध्याय करें सब श्रावक, जन मुनिवर का यही प्रयोजन था।।
अब पर्व क्षमावाणी आया, उपदेश सुना जब मुनिवर का।
आँखों से वह निकली धारा, अब शुद्ध हुआ अंतर सबका।। (76)

श्रमण वसतिका

अब अतिशय क्षेत्र श्रेयांसगिरी, पर गुरु प्रेरणा पाकर के।
सतना समाज ने श्रमण वसतिका, का निर्माण करा करके।।
भारी था पुण्य किया अर्जित, सबने था उसमें दान किया।
आगामी पंचकल्याणक के पहले, उसका निर्माण किया।। (77)

आर्यिका विलक्ष्यश्री समाधि

अक्टूबर चार का दिन था, ये प्रातः के साढ़ें आठ बजे।
पन्ना रहवासी दो सज्जन मुनिवर, के कक्ष में आ पहुँचे।।
करके बंदन गुरु चरणों में, वो अपनी बात सुनाते हैं।
सबके शरीर में कंपन है, व होंट कांपते जाते हैं।। (78)

बोले मुनिवर जी चरणों में, वस हमरा यही निवेदन है।
इक जीव का हित कर सकें, गुरुवर हमरा यही प्रयोजन है।।
गुरुदेव हमारी माताजी का, स्वास्थ्य अभी कुछ ठीक नहीं।
गुरुदेव आखरी बेला ही, वस उनकी हमको दीख रही।। (79)



कल रात डॉक्टर साहब ने, घर ले जाने को बोल दिया।
वस दो घण्टे रह सकती हैं, ऐसा रहस्य भी खोल दिया।।
किन्तु अब तक है पुण्य योग, जो उनकी साँसें शेष रहीं।
किन्तु अब जीवन की किरणें, कुछ दिखती नहीं विशेष कहीं।। (80)

शायद अब ज्यादा समय नहीं, गुरुवर! जिंदा रह पायेंगी।
अपनी मृत्यु से हे, गुरुवर! अब ज्यादा न लड़ पायेंगी।।
पर उनने जीवन भर गुरुवर, वस यही भावना भाई थी।
हो मरण समाधि से मेरा, उनके मन बात समाई थी।। (81)

गुरुवर हमरी माताजी की, यह भाव दशा स्वीकार करो।
गुरुदेव समाधि करवाके, अब उनका भी उद्धार करो।।
स्वीकृति हमें दे दो गुरुवर, जिससे हम उनको ले आयें।
हम भी अपने कर्त्तव्यों का, गुरुवर कुछ पालन कर पायें।। (82)

सब बात ध्यान से सुन, उनकी मुनिवर जी मन में सोच रहे।
सहसा अनुमति कैसे दे दूँ, मुनिवर मन में संकोच रहे।।
ये पुरुष नहीं है महिला है, कैसे कारज हो पायेगा।
न दीदी कोई आर्यिका है, तब कौन सम्हलवा पायेगा।। (83)

फिर गुरुवर क्षेत्र श्रेयांशगिरी, पर जो सतना से पास में है।
दीदी और आर्यिका माताजी, का संघ भी उनके साथ में है।।
अतः भावना इनकी गुरु, चरणों पूरी हो जायेगी।
इन अम्मा जी की श्रेष्ठ समाधि, गुरु चरणों हो पायेगी।। (84)

ऐसा मन में निर्णय करके, मुनिवर ने उनको समझाया।
गुरुवर के पावन चरणों, में जाने का रस्ता बतलाया।।
दोनों सज्जन तब चले गये, मुनिवर की बात समझ आई।
व तभी नातिनी उन, अम्मा जी की रोती रोती आई।। (85)

मुनिवर जी को करके वंदन, मुनिवर जी से वो कहती है।
दोनों आँखों से उसके, अविरल अश्रु धारा बहती है।।
हमरी दादी का मरण, समाधि हे मुनिवर करवाने की।
हे गुरुवर हमको बतलाओ क्यों, मना यहाँ तुमने कर दी।। (86)

हमरी दादी का मरण, समाधि मुनिवर करवाना होगा।
उनकी इस मरण साधना को, हे गुरुवर! सधवाना होगा।।
ऊपर चर्चा ये चलती थी, तब तक उनको वो ले आये।
मंदिर के कक्ष समाधि में, बेटा बहुओं ने लेटाये।। (87)

आकरके ऊपर मुनिवर से, सबने फिर पुनः प्रार्थना की।
उनको संबोधन देने की, मुनिवर से पुनः याचना की।।
करके स्वीकार निवेदन को, मुनिवर दोनों नीचे आये।
है ज्यादा समय नहीं इनका, मुनिवर जी सबको बतलाये।। (88)

मुनिवर ने फिर निर्देश दिया, रंगीन वस्त्र अब हटवादो।
रंगीन वस्त्र का त्याग कराके, धवल वस्त्र अब पहिनादो।।
मुनिवर से पा निर्देश, तभी वहुओं ने फौरन काम किया।
कमरे के अंदर माताजी को, धवल स्वरूप प्रदान किया।। (89)



फिर चन्द्राणि देवी को, संबोधन देने मुनिवर आये।
सबने मुनिराजों को वंदन, कर उच्चासन पर बैठाये।।
मुनिवर को लखकर के, चन्द्राणि देवी को तब वहाँ लगा।
जैसे कि भाग्य जगाने को, आये हों कोई परम पिता।। (90)

मृत्यु शैया पर लेटी थीं, चन्द्राणि देवी हर्ष हुआ।
मुनिवर को देखा जैसे ही, समभावों का उत्कर्ष हुआ।।
अपलक मुनिवर को देख रहीं, मानो जैसे सब कुछ पाया।
श्रीफल गुरु चरणों अर्पित कर, श्रद्धा से उर को नहलाया।। (91)

जड़ शब्द हुये थे मौन मगर, चेहरे के भाव ये कहते थे।
मुनिवर मेरा उद्धार करो, आँखों से आँसु वहते थे।।
मुनिवर विमर्शसागर जी ने, उनके भावों को पढ़करके।
अपनी दृष्टि से उनके अंदर, श्रेष्ठ समाधि गढ़ करके।। (92)

मुनिवर बोले अम्मा जी, तुमरा कोई पुण्य प्रसून खिला।
जो मृत्यु शैया पर भी, तुमको संतों का शुभ दर्श मिला।।
अम्मा जी सभी विकल्पों को, तज अब प्रभु का स्मरण करो।
अपने भावों को निर्मल कर हे, भव्य समाधि मरण करो।। (93)

शुभ भाव समाधि के हैं, क्या अम्मा जी हमको बतलाओ।
सिर हिला के अम्मा जी, बोली गुरुदेव समाधि करवाओ।।
मुनिवर ने पूछा अम्मा जी, क्या यूँ ही समाधि करना है।
या फिर दीक्षा लेकर के, उत्तम मरण समाधि वरना है।। (94)

अंतिम संबोधन

चन्द्राणि देवी के मुख पर, भारी प्रसन्नता छाई थी।
दीक्षा लेनी की शुभ्र भावना, तब उनने प्रगटाई थीं।।
मुनिवर विमर्शसागर जी ने, वैराग्य मई उपदेश दिया।
मानों मुनिवर ने शब्दों में, मुक्ति का ही संदेश दिया।। (95)

संसार सुखों में जीव अनादि, से सुख ही सुख मान रहा।
पर्याय अनंतों खो डालीं पर, सच्चा सुख न जान रहा।।
संसार शरीर व भोगों में, फंसकर चउगति दुख पाये हैं।
किन्तु भोगों को तज करके, संयम को न अपनाये हैं।। (96)

संसार नाश करनेवाली, दीक्षा दुर्लभ कहलाती है।
बहु पुण्य और पुरुषार्थ योग, से जिनदीक्षा मिल पाती है।।
भो भव्य त्याग दे मोह सभी, अब कुटुम और परिवारों का।
न पुत्र और बहु सम्पत्ति से, न मोही रिस्तेदारों का।। (97)

तज राग द्वेष व मोह, सभी ये भाव विभाव कहाते हैं।
इनका आश्रय करने से, आतम का स्वभाव विनशाते हैं।।
आतम के सभी विभावों से, हे भव्य! विरत अब हो करके।
संयम प्रदायिनी दीक्षा को, स्वीकार करो खुश हो करके।। (98)

मुनिवर का सुन उपदेश अहा, मन में निर्मलता आई थी।
इस अंत समय में भी चेहरे, पर अजब शांति छाई थी।।
चन्द्राणि देवी ने अपने, दोनों कर जोड़ दिखाये थे।
दीक्षा लेने के भाव प्रबल, चेहरे पर तब नजराये थे।। (99)



तब सेठ दुलीचंद जी ने भी, इक पिछी पुरानी लाकर के।
मुनिवर के हाथों सौंपी थी, तब भाव समाधि भाकर के।।
सब परिजन पुरजन से पूछा, मुनिवर ने आगे काम किया।
इक धवल साटिका देकर के, सम्पूर्ण परिग्रह हटा दिया।। (100)

मुनिवर ने करके संस्कार, अब उन्हें आर्यिका बना दिया।
शुभ नाम विलक्ष्य श्री देकर, निर्वाण का पावन लक्ष्य दिया।।
अम्मा जी अब बन गईं, आर्यिका पिच्छि को था पकड़ लिया।
मानों भवसागर तिरने का, उपक्रम हाथों से जकड़ लिया।। (101)

मुनिवर कहते देखो माताजी, सिद्ध विमान ये आया है।
ये सिद्धलोक में ले जाने, माताजी तुमको आया है।।
माताजी वचनों को सुनकर, फौरन सचेत हो जाती थीं।
वो सिद्ध विमान देखने को, आँखें चंचल हो जाती थीं।। (102)

मुनिवर कहते अब आप, आर्यिका माता हो व्रत धारे हैं।
चारो प्रकार के अशन, त्याग माताजी यहाँ तुम्हारे हैं।।
मुनिवर के मुख से संबोधन, सुन चित हर्षित हो जाता था।
मुनिवर का हर इक शब्द उन्हें, अमृत जैसा नजराता था।। (103)

पंडित निर्मल जी सतना का, भी यथायोग्य निर्देशन था।
पर संग-संग गुरुआज्ञा का, भी पूरा-पूरा पालन था।।
मुनिवर ने पाठ समाधि का, माताजी को फिर सुनवाया।
संग-संग संक्षिप्त अर्थ उसका, मुनिवर जी ने तब बतलाया।। (104)

कमरे के बाहर भीड़, बड़ी श्रद्धालुजन उमगाते थे।
सब क्षपक दर्शनों को, लालायित फूले नहीं समाते थे।।
मुनिवर जी का संकेत मिला, तब वैद्यराज जी आते हैं।
दस मिनिट शेष हैं यहाँ बचे, नाड़ी को देख बताते हैं।। (105)

मुनिवर ने भी जब उल्टी, सांसों को आते जाते देखा।
तो समझ गये अब शेष, नहीं है ज्यादा जीवन की रेखा।।
माताजी से अरिहंत सिद्ध, का उच्चारण तब करवाया।
पश्चात ओम का उच्चारण, माताजी द्वारा करवाया।। (106)

जिसमें पाँचों ही परम, गुरु इक साथ समाये रहते हैं।
उस महा बीज अक्षर को, ज्ञानी ओम नाम से कहते हैं।।
इस महा बीज अक्षर का, सुमिरन संतापों को हरता है।
वो श्रेष्ठ समाधि पाता है, जो इसपे श्रद्धा धरता है।। (107)

इस महाबीज अक्षर का, सुमिरन माताजी ने वहाँ किया।
माताजी ने सुमिरन करते, करते प्राणों को त्याग दिया।।
इस नश्वर देह से हुई, विदा आतम स्वतंत्रता पाने को।
माताजी ने कर दिया शुरू, उपक्रम सिद्धालय जाने को।। (108)

प्रातः दस बजे की बेला थी, मृत्यु का तब शुभ वरण किया।
इस तरह आर्या विलक्ष, श्री ने भव्य समाधि मरण किया।।
मध्यान्ह काल में शिविका में, मृत देह को वहाँ सजाया था।
मुनिवर ने निर्देशन में अंतिम, संस्कार करवाया था।। (109)

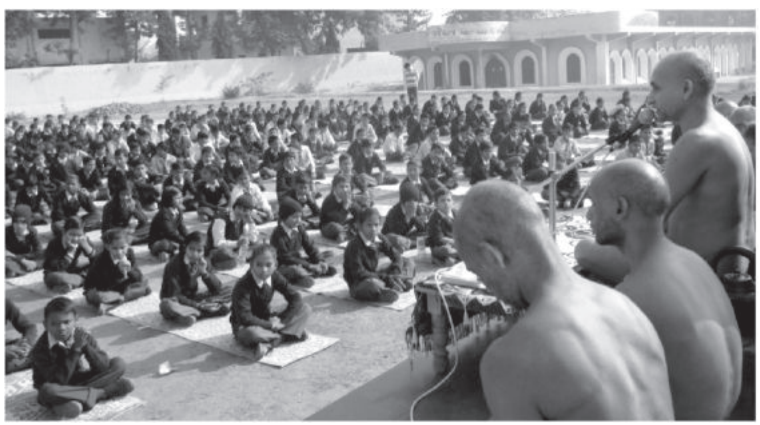


मुनिवर द्वय ने उपवास रखा, सारी समाज में उत्सव था।
सब लोग गुलाल उड़ाते थे, मृत्यु का महा महोत्सव था।।
वैराग्यमयी, आनंदमयी इस, आयोजन का प्रतिपल था।
मुनिवर जी के शुभ आशीषों का, सबने पाया संबल था।। (110)

चतुर्दश पर्व पूर्ण

इस तरह पूर्ण अब करता हूँ, मैं यह मंगल सोपान यहाँ।
शब्दों के जल से गुरु जीवन, गाथा का शुभ स्नान यहाँ।।
अब मैं अगले सोपानों में, आगे की बात बताऊँगा।
गुरु चरणों में वंदन करके गुरु, जीवन गीत सुनाऊँगा।। (111)

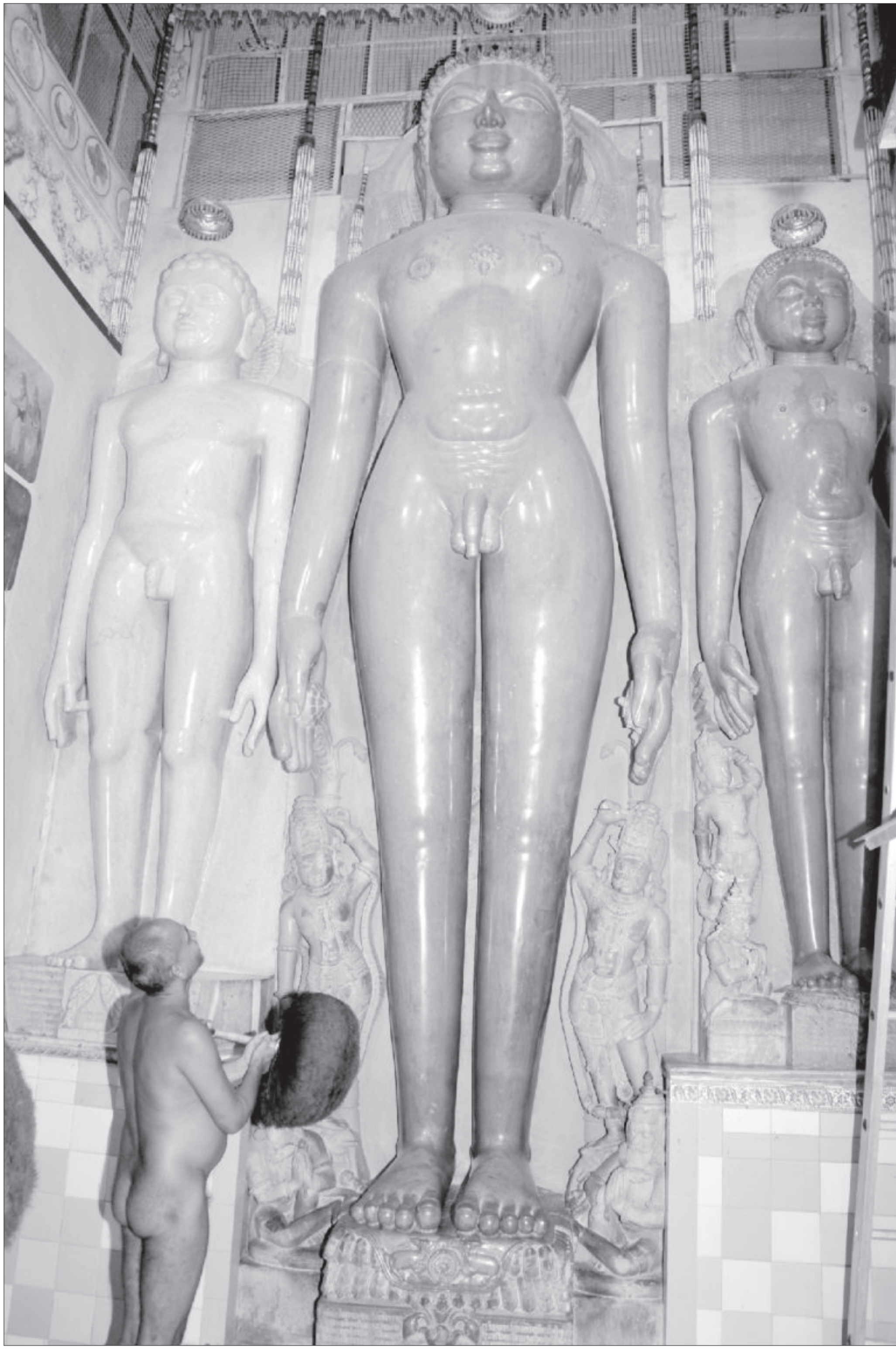
❑❑❑❑



अतिशय क्षेत्र बड़ागाँव १५०० छात्र–छात्रओं को संस्कार की शिक्षा देते हुए आचार्य श्री विमर्शसागर जी



विजयनगर राजस्थान में सैंट पॉल स्कूल में अरिहंत ज्ञान गंगा महोत्सव में २००० बच्चों को 'देश और धर्म के लिये जीयो' का सन्देश देते हुए पूज्य श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज



bhavlingi sant

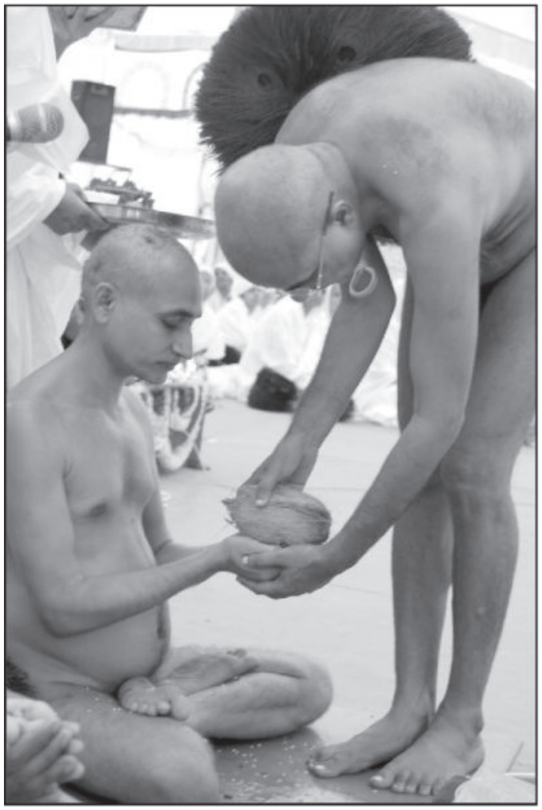
shramnacharya shri 108 vimarsh sagar ji gurudev

"पञ्चदश पर्व"

समर्पण पर्व

संजीवनी भावलिंगी संत (महाकाव्य)

चित्र समूह - 5
आचार्य पद दर्शन



पवित्र अंजलि में मंगल द्रव्यपूर्वक व्रत प्रदान करते हुए
पूज्य विरागसागर जी



आचार्य पद के समय मुनि विमर्शसागर जी महाराज के जन्मदात्री पिता श्री सनतजी एवं माता भगवती देवी।
धर्म के माता–पिता श्री सुरेश चन्द जी एवं श्रीमती रेखा बाबरिया (रामगंज मंडी) एवं
पद प्रदाता आचार्य श्री विरागसागर जी।



"पञ्चदश पर्व"

"समर्पण पर्व"

मंगलाचरण

आदिनाथ स्तवन

अशरण की शरणा तुम्हीं, हो जग के आधार।
आदिनाथ वृषभेष को, वंदन बारम्बार।। (1)

आतम के आनंद में, रहते हैं नित लीन।
करूँ चरण की वंदना, देना पद स्वाधीन।। (2)

राग द्वेष संसार का किया आपने अंत।
भविजन को संसार में दिखलाया शिवपंथ।। (3)

आद्य तीर्थ को आपने विकसाया जिनदेव।
समोसरण में देशना, खिरी अहा स्वयमेव।। (4)

नाथ अनाथों के तुम्हीं, तुम ही दीनानाथ।
करूँ भाव से वंदना हे, प्रभु आदिनाथ।। (5)

गुरु कथा आगे सुनो, भैया धरके ध्यान।
जो भी चित धरके सुने, हो जाये कल्याण।। (6)

शब्द शब्द अमृत अहा! गुरु जीवन का सार।
गुरु जीवन आधेय है, शब्द यहाँ आधार।। (7)

गुरु गुण की जयमाल ये, जो भी कंठ सजाय।
निश्चित वो गुरुदेव सा, संयम धन पा जाय।। (8)

गुरु मुख से निकला हुआ, शब्द मंत्र बन जाये।
जो भी जपले भाव से, वो भव से तिर जाये।। (9)

तेजस्वी हैं सूर्य सम, चंदा से तमहार।
गुरुवर हैं लगते अहा, मोक्षमहल के द्वार।। (10)

पूजन प्रशिक्षण शिविर

सतना के चौमासे का वर्णन, शेष बचा जो कहता हूँ।
उससे पहले उन चरणों में, वंदन जिन चरणों रहता हूँ।।
अक्टूबर का महीना आया, प्रभु भक्ति का उत्सव छाया।
सतना नगरी में गुरुवर ने तब, पूजन शिविर था लगवाया।। (11)

जो स्वर्ण की तरह चमकती थी, वो पाण्डुक शिला बनाई थी।
उसके ऊपर कमलासन पर, प्रभु की प्रतिमा पधराई थी।।
प्रातः बेला में नरनारी, पूजन, उत्सव में आते थे।
गुरु के मुख से पूजन के स्वर, सुन झूम-झूम कर गाते थे।। (12)

जब पूजन शिविर समाप्त हुआ प्रभु को मंदिर ले जाते हैं।
यह दृश्य देखकर लोगों की आँखों में आँसु आते हैं।।
श्रीमति वंदना जी तो तब इतनी विह्वल हो जाती हैं।
मुँह से सिसकी आँखों से धारा अविरल वहती जाती है।। (13)



बोली प्रभु को तुम समोसरण से मंदिर जी मत ले जाओ।
फिर कहाँ मिलेगा हमको ऐसा समोसरण ये बतलाओ।।
इतना आनंद हे गुरुवर हमको पहले कभी नहीं आया।
न मिला कभी गुरुवर हमको जो शिविर में दस दिन में पाया।। (14)

मिल पाते हैं ऐसे अवसर जब कभी भाग्य जगता होगा।
साक्षात प्रभु का समोसरण कितना सुंदर लगता होगा।।
लगता है जीवन में प्रतिदिन ऐसी ही प्रभु की भक्ति हो।
भगवान के सन्मुख भक्तों की ऐसी निर्मल अभिव्यक्ति हो।। (15)

परमात्म प्रकाश का हिन्दी अनुवाद

चौमासे में गुरुवर जी ने अपना उपयोग सजाया था।
परमात्म प्रकाश का मुनिवर ने हिन्दी अनुवाद रचाया था।।
फिर सुप्रभात स्तोत्र रचा, थुदि गोम्टेश की रचना की।
संग पञ्चमहागुरुभक्ति की स्वयंभू स्तोत्र की रचना की।। (16)

पंडित निर्मल जी समय-समय पर गुरु चरणों में आते थे।
गुरुवर के मुख से सुन करके पद्यानुवाद हर्षाते थे।।
प्रतिदिन पंडित सिद्धार्थ गुरु चरणों में अध्ययन करते थे।
तत्त्वों की चर्चा करते थे, श्रद्धा अपने उर धरते थे।। (17)

मूढ़ भक्ति

स्वाध्याय चल रहा था इक दिन इक सज्जन बाहर से आये।
श्रद्धा भक्ति से दर्शन कर गुरु चरणों में मस्तक नाये।।
फिर गुरु चरणों का प्रक्षालन करने के भाव बताये थे।
स्वाध्याय बाद तुम कर लेना ऐसा मुनिवर समझाये थे।। (18)

पंडित सिद्धारथ जी ने भी उनको खूबई समझाया था।
पर उनने कुछ भी नहीं सुना न उन्हें समझ में आया था।।
उनने अब नीचे थाल रखा मुनिवर के चरणों को खीचा।
फिर अपनी श्रद्धा के जल से गुरुवर के चरणों को सींचा।। (19)

मुनिवर ने ज्ञाता दृष्टा बन ये सब समता से ग्रहण किया।
उन सज्जन को भी मुनिवर ने समता से शुभ आशीष दिया।।
वो चले गये फिर मुनिवर से पंडित सिद्धारथ कहते हैं।
भक्ति के रूप में लोग यहाँ विघ्नों को करते रहते हैं।। (20)

अज्ञानी जन अज्ञान दशा में कर्म कमाया करते हैं।
ज्ञान अर्जन में विघ्नों को कर अंतराय कमाया करते हैं।।
ज्ञानार्जन करता हो कोई तो विघ्न कभी भी मत करना।
कोई जिनवाणी पढ़ता हो तो श्रद्धा से उर में धरना।। (21)

श्रद्धा की श्वेत रंगोली

फिर चार नवम्बर दिन आया दीवाली का शुभ आयोजन।
संग संग मुनिवर ने किया यहाँ पर चातुर्मास का निष्ठापन।।
कमरे के बाहर रंगों से कुछ बने चित्र नजराये थे।
सुंदर-सुंदर चित्रों को लख मुनिवर खूबई हर्षाये थे।। (22)

सुंदर रंगों से कहो यहाँ किसने ये चित्र सजाये हैं।
मुनिवर ने पूछा कहो, यहाँ किसने ये भाव बनाये हैं।।
बतलाया तब श्रीमति श्वेता ने ये चित्राम सजाये हैं।
सबके मन को पल में हरले ऐसे कुछ भाव दिखाये हैं।। (23)



अमर पाटन में पिच्छिका परिवर्तन

माह नवम्बर में दस को शुभ रविवार का दिन आया।
मुनिवर ने आगे गमन किया, सब भक्तों को रोता पाया।।
नगर अमरपाटन को मुनिवर सतना से अब जाते हैं।
सारी समाज के लोग यहाँ हर्षाते खुशी मनाते है।। (24)

मुनिवर विनर्घ्यसागर जी की यह गृह नगरी कहलाती है।
मुनिवर विनर्घ्यसागर को पा खुशियाँ दुगुनी हो जाती हैं।।
नगर अमर पाटन को मुनिवर ने मंगल आशीष दिया।
पिच्छी परिवर्तन करवाने का शुभ मंगल संकेत दिया।। (25)

तब बड़ी भव्यता से मुनिवरद्वय का शुभ नगर आगमन था।
सप्पू जी थे अध्यक्ष दीपचंद जी का तब खूवई मन था।।
गाँधी बजार में मुनिवर जी का तब मंगल उद्बोधन था।
पिच्छी परिवर्तन शीतकाल, मुनिदीक्षा का आवेदन था।। (26)

उपा. आत्मासागर जी से मिलन

गुरु आज्ञा से मुनिवर विमर्शसागर जी ने आशीष दिया।
फिर शीतकाल में शास्त्र वाचना का मंगल आगाज किया।।
आत्मासागर जी उपाध्याय का नगर में जब आगमन हुआ।
दोनों संघों का आत्मीयता से तब मंगल मिलन हुआ।। (27)

दीक्षा दिवस

दिन चौदह माह दिसम्बर का नगरी में उत्सव छाया था।
मुनिवर विमर्शसागर जी का तब दीक्षा दिवस मनाया था।।
महरौनी भिण्ड ललितपुर व सतना सागर से आये थे।
गुरुवर का दीक्षा दिवस मना सब भक्त बहुत हर्षाये थे।। (28)

गुरु चरणों में मुनिश्री

श्रेयांशगिरी से गुरु विरागसागर का संदेशा आया।
मुनिवर विमर्शसागर जी को गुरुवर जी ने तब बुलवाया।।
मुनिवर दोनों करके विहार श्रेयांशगिरी आ जाते हैं।
गुरु पादमूल को पाकर दोनों शिष्य बहुत हर्षाते हैं।। (29)

त्रय भक्ति युत द्वय शिष्यों ने गुरु चरणों शीष झुकाया था।
गुरुवर ने भी वात्सल्य भाव से उनको गले लगाया था।।
श्रेयांशगिरी में कल्याणक का जारी शुभ आयोजन था।
तब इसी बीच महरौनी वालों का भी एक निवेदन था।। (30)

महरौनी के कल्याणक में अपना मंगल आशीष वरो।
मुनिवर विमर्शसागर जी का सानिध्य हमें गुरुवर दे दो।।
गुरुवर ने शुभ आशीष दिया, मुनिद्वय ने मंगल गमन किया।
गुन्नौर कुपी व नगर विजावर ग्राम ढिकोली धन्य किया।। (31)

शीत परिषह जय

चल रहा जनवरी का महिना चलती थी शीत लहर भारी।
तब ओस और कोहरे के कारण दिखती देह धवल सारी।।
जब ग्राम ढिकौली से मुनिवरजी ग्राम लार को जाते हैं।
बस तभी गगन में काले काले मेघ वहाँ घिर आते हैं।। (32)

फिर शीतलहर के साथ शुरु मेघों से जलवृष्टि भारी।
द्वय आत्म बिहारी मुनिवर के पग बड़ते थे वारी-वारी।।
दो आत्मबली बड़ते जाते परिषह समता से सहते थे।
उपयोग लगाके आतम में आगे को बड़ते रहते थे।। (33)



अब सिद्ध क्षेत्र आहार की पावन भूमि पर आ जाते हैं।
प्रभु शांतिनाथ का वंदन कर सारे परिषह खो जाते हैं।।
करके वंदन मुनिवर दौनों अब महरौनी की ओर चले।
महरौनी के सब श्रावक जन मुनिवर को लेने अहा चले।। (34)

भारी जुलूस के साथ मुनिद्विय को नगरी में लाये थे।
मुनिवर का दर्शन वंदन कर सब नर-नारी हर्षाये थे।।
आगामी पंचकल्याणक के शुभ पात्रों का तब चयन किया।
पंडित श्रीविमल सौंरया का निर्देशन सबने प्राप्त किया।। (35)

इन्द्रध्वज विधान ललितपुर

दो दिन रुककर मुनिवर जी द्वय अब नगर ललितपुर जाते हैं।
सारे श्रावक उत्साहित हो अगवानी भव्य कराते हैं।।
तब श्री दिगम्बर जैन समिति के लोगों ने भी आकर के।
अपना सौभाग्य मनाया था चरणों का प्रक्षालन करके।। (36)

फिर डोंडाघाट जिनालय में मुनिवर द्वय को ले जाते हैं।
आके श्री इन्द्रध्वज विधान की शुरूवात करवाते हैं।।
श्रीप्रेम चंद सर्राफ के द्वारा ध्वज आरोहण किया गया।
पंडित नरेन्द्र खरगापुर के द्वारा निर्देशन दिया गया।। (37)

खिरती थी प्रतिदिन इस विधान में मुनिवर की अमृतवाणी।
प्रतिदिन आगम पर चर्चा सुन हर्षित होते श्रावक ज्ञानी।।
निज आत्म ज्ञान के संग भक्ति ही परमशांति का मार्ग कहा।
मध्यान्ह काल में निश्चय व व्यवहार ज्ञान में भेद कहा।। (38)

कुंवर बुंदेला ने लिया आशीष

वीरेन्द्र सिंह जी कुंवर बुन्देला ने चरणों में आकर के।
जो आयुर्वेदिक मंत्री थे गुरु चरणों शीष झुका करके।।
बोले मुनिवर दर्शन वंदन करके यूँ आज लगा हमको।
मानो क्षत्रिय पर्याय मेरी हो गई धन्य पाके तुमको।। (39)

सारे तीर्थंकर जैन धर्म के क्षत्रिय धर्म निभाते थे।
लाचार दीन दुखियों पर वो उर से करुणा बरसाते थे।।
मैं हुआ धन्य जो तीर्थंकर के कुल में मैंने जन्म लिया।
हो गया धन्य ये जन्म आज जो मुनिवर तुमरा दर्श किया।। (40)

कर्त्तव्य बोध

कर्तव्य परायणता का तीजे दिन पावन उपदेश दिया।
हो संस्कार मय जीवन ये मुनिवर ने शुभ संदेश दिया।।
जब हो कर्त्तव्य परायणता व संस्कार मय हो जीवन।
तब ही जैनत्व सुरक्षित है जिनधर्म का होगा संरक्षण।। (41)

जो शक्ति पुञ्ज कहाता है ऐसा यौवन हो व्यसन मुक्त।
जिनधर्म को उन्नत करने को जैनत्व से यौवन रहे युक्त।।
नित ही समाज व धर्म की सेवा में यौवन की तत्परता।
ऐसे युवकों के द्वारा ही जिनधर्म सुरक्षित हो सकता।। (42)

शंका न हो श्रद्धा मन में मुनिवर जी ने संदेश दिया।
श्रद्धा से जीवन बन जाता सुखमय ऐसा उपदेश दिया।।
मुनिवर बोले गर मानव का जीवन व्यसनी हो जाता है।
बन जाता है नासूर और जिनधर्म वहाँ खो जाता है।। (43)



बस भेदभाव तजके निर्ग्रंथों की चर्या का अर्चन हो।
सब संत पंथ व ग्रंथ वाद तज शिवपथ का दिग्दर्शन हो।।
जिन दर्शन में व्यक्ति नाहीं उसके गुण पूजे जाते हैं।
ये जिनदर्शन गुणदर्शन है गुण ही जग पूज्य बनाते हैं।। (44)

सद्ज्ञान का अर्जन करो साथ चारित्र का शुभ निर्माण करो।
सम्यक्दर्शन व ज्ञान चरित का पालन कर निर्वाण करो।।
इस तरह रोज गुरु के मुख से शुभ अमृत वाक्य निकलते थे।
जिनको सुनकर आतम हित के पथ पर सब प्राणी चलते थे।। (45)

इस तरह फरवरी पन्द्रह को ये आयोजन सम्पन्न हुआ।
नूतन वेदी पर प्रभु प्रतिमा का स्थापन सम्पन्न हुआ।।
शिखरों पर कलशारोहण तब शांतिवाई ने करवाया।
जाकर के अटाजिनालय में आयोजन पूरा हो आया।। (46)

अनुपम वात्सल्य / अद्भुत चर्या

लोहा पीतल बाजार में मुनिवर का मंगल उपदेश हुआ।
दिन रविवार का था भैया तब जन शैलाव विशेष हुआ।।
भाई सतीशजी सिंघई वहाँ पर महरौनी से आये थे।
उनने गुरुचरणों में श्रद्धा के पावन सुमन चढ़ाये थे।। (47)

बोले मुनिवर की चर्या में तीर्थंकर प्रभु नजराते हैं।
वात्सल्य भाव में गुरु विरागसागर दर्शन हो जाते हैं।।
शुभ विश्व हितंकर विमल भावना मुनिवर में लहराती है।
तब ही तो गुरु चरणों से श्रद्धा की कड़ियाँ जुड़ जाती हैं।। (48)

भाई अनिल जी महासचिव थे जैन समाज ललितपुर के।
आयोजन का संचालन पूरा किया था शब्दों के बल पे।।
श्री सुंदर लाल अनौरा जी अध्यक्ष वहाँ कहलाते थे।
गुरु चरणों में कर क्षमायाचना बार-बार झुक जाते थे।। (49)

महरौनी पंचकल्याणक-2003

तभी वहाँ पर महरौनी के गुरु भक्तों ने आकर के।
आगामी पंचकल्याणक की गुरु चरण भावना भाकर के।।
श्रीफल चरणों में अर्पित कर भक्तों का यही निवेदन था।
महरौनी को अब गमन करें गुरुवर सबका आवेदन था।। (50)

मुनिवर ने नगर ललितपुर से महरौनी को अब गमन किया।
नगरी की सीमा तलक हजारों लोगों ने जा विदा किया।।
फरवरी अठारह का दिन था महरौनी नगरी शुभागमन।
क्या नर-नारी क्या वृद्ध युवा वस झूम रहा था सबका मन।। (51)

सब झूम-झूम कर गाते थे रंगीन गुलाल उड़ाते थे।
कोई गुरु आरती करते थे चरणों को आज धुलाते थे।।
सम्पूर्ण नगर में हुआ भ्रमण सैलाव जिनालय में आया।
भक्तों ने गुरु का दर्शन कर अपनी श्रद्धा को नहलाया।। (52)

भक्तों को शुभाशीष देकर मुनिवर जी मंचासीन हुये।
तब धर्म सभा भर गई खचाखच श्रावक गण आसीन हुये।।
आगामी पंचकल्याणक की तब वहाँ भूमिका बतलाई।
पंडित श्रीवर्धमान जी ने कुछ नियमावलियाँ दिखलाईं।। (53)



नगरी के सभी वरिष्ठ लोग तब बने वहाँ पर सहभागी।
भैया सतीश का संचालन हर शब्द गुरु का अनुरागी।।
आगामी पंचकल्याणक ये व्यालीस वर्ष के बाद यहाँ।
होने वाला था इस कारण दिखता था हर्ष विशेष यहाँ।। (54)

उन्नीस फरवरी हुआ शुरु यह आयोजन अतिशयकारी।
मुनिवर की भाव विमलता व भक्तों की थी श्रद्धा न्यारी।।
पच्चीस फरवरी पूर्ण हुआ इतिहास भी फीका लगता था।
गजरथ व पुष्पवृष्टियों से रोमांच दिलों में जगता था।। (55)

विमर्श मार्केट

महरौनी वालों का मुनिवर के प्रति विशेष समर्पण था।
उनकी श्रद्धा उनका सब कुछ बस गुरु चरणों में अर्पण था।।
भक्ति से एक "विमर्श बजार" बनाया गुरु दीवानों ने।
इस रूप में श्रद्धा अर्पित की गुरु चरणों के परवानों ने।। (56)

बीना में गुरु, भाईयों से मिलन

गुरुवर विरागसागर जी का संदेशा आया मुनिवर को।
करके विहार बीना आयें ये फरमाया था मुनिवर को।।
गुरु आज्ञा को पाके मुनिवर वीना नगरी को गमन किया।
तब गाँव पठा पाली बालावेहट खिमलासा धन्य किया।। (57)

करके विहार मुनिवर दोनों बीना नगरी आ जाते हैं।
गुरु चरण मेघ को पा शिष्यों के मन मयूर हर्षाते हैं।।
मुनिवर विशुद्ध मुनिराज विशद, ऐलक विनम्र सागरजी से।
मुनिवर विहर्ष सागरजी आदि मिलन हुआ हर्षा करके।। (58)

मुँगावली में मुनिवर

पन्द्रह अप्रैल को वीर जयन्ति का पावन अवसर आया।
बीना के इटावा मंदिर में यह आयोजन तब करवाया।।
मुनिवर विमर्श के संग विनर्घ्य मुनि विश्वपूज्य भी जाते हैं।
मुनिवर त्रय अब करके बिहार भैया मुँगावली आते हैं।। (59)

छै सात दिनों तक मुनिवर त्रय इस नगरी में रुक जाते हैं।
जिनवाणी की अमृत वर्षा प्रतिदिन मुनिवर बरसाते हैं।।
तेजस्वी मुखमण्डल से सुन गुरुवर की ओजस्वी वाणी।
सब धन्य-धन्य हो जाते थे सुनने जो आते थे प्राणी।। (60)

ब्रह्मचारी राजू भैया का निवेदन

ब्रह्मचारी श्री राजू भैया इक दिन मंदिर जी आते हैं।
मुनिवर की चरण वंदना कर मन में खूवई हर्षाते हैं।।
गुरुवर विद्यासागर जी के ये शिष्य सलौने कहलाते।
मुनिराज विशद्सागर जी के जो नाम से अब जाने जाते।। (61)

आहार दान के बाद मुनीश्वर से भैया जी यूँ बोले।
अपने अंतस के भाव विमल मुनिवर के चरणों में खोले।।
हे मुनिवर सुस्वर नाम कर्म का उदय आपको है न्यारा।
बस इसीलिये तो कंठ आपका मधुर सुरीला है प्यारा।। (62)

जब आप भक्तियों का उच्चारण अपने मुख से करते हैं।
स्पष्ट सुनाई देते हैं जो भी उच्चारण करते है।।
हो समयसार आदि ग्रंथों का आपके स्वर में उच्चारण।
तो मुनिवर वो उपयोगी हो जायेंगे जन-जन साधारण।। (63)



गर आपके स्वर में ग्रंथों की गाथायें गाईं जायेंगी।
तो आपके स्वर में इन ग्रंथों की महिमा दुनिया गायेगी।।
भैया जी का चिंतन सुनकर मुनिवर ने थोड़ा मुस्काकर।
भैयाजी को आशीष दिया "देखेंगे" ऐसा बतलाकर।। (64)

स्वतंत्रता की प्रेरणा

इक दिन प्रातः की बेला में मुनिवर द्वय जंगल जाते हैं।
संग में मुँगावली नगरी के ब्रह्मचारी भैया जाते हैं।।
देखा ट्रॉली बिन तेज दौड़ता नजर ट्रैक्टर आया था।
उसको देखा तो मुनि विमर्शसागर जी ने फरमाया था।। (65)

मुनिवर बोले देखो ये बिन ट्राली के तेज दौड़ता है।
सब बोले पर तब तक ही है जब ट्राली नहीं जोड़ता है।।
पुरुषों का ट्रैक्टर है स्वतंत्र जब तक न इसमें ट्राली है।
ये पुरुष स्वतंत्र है तब तक ही जब तक न घर घरवाली है।। (66)

घर वाली घर में आते ही ये, पराधीन हो जाता है।
अपनी स्वतंत्रता का सारा आनंद वहाँ खो जाता है।।
स्त्री रूपी ट्रॉली के लग जाने से सब खो जाता है।
फिर पुरुष कहाँ वो रह जाता कोल्हु का बैल हो जाता है।। (67)

स्त्री ट्राली से दूर रहो निज आतम का कल्याण करो।
भागो भागो जल्दी भागो, भागो भैया निर्वाण वरो।।
मुनिवर का चिन्तन सुनकर के सब बोले वहाँ युवा भाई।
गुरुदेव प्रेरणामयी मार्मिक बात आपने बतलाई।। (68)

मण्डी बामौरा प्रवास

अब मुनिवर त्रय नगरी मुँगावली से आगे बढ़ जाते हैं।
भौंरासा क्षेत्र का वंदन कर ये महाव्रती सुख पाते हैं।।
करके वंदन अब मुनिवर जी मण्डी बामौरा आये थे।
मुनिवर की अगवानी करने सब युवा वृद्ध उमगाये थे।। (69)

श्री नीलमणि व पवन जैन आदि ने संघ की सेवा की।
साधु सेवा को कर करके शातिशय पुण्य सु मेवा ली।।
नित जैन पाठशाला में जो अध्यापन वहाँ कराती थीं।
वो सभी दीदियाँ जिनवाणी का अमृत पीने आती थीं।। (70)

पन्द्रह से बीस दिना रुककर जिनवाणी का रस वर्षाया।
बस तभी वहाँ गुरुवर विरागसागर का संदेशा आया।।
है नगर ललितपुर में इक्किस जिन दीक्षाओं का आयोजन।
होने वाला है उसमें शामिल होना है तुम करो गमन।। (71)

आर्यिका भावना प्रभावना मति माताजी से मिलन

मुनिवर का संघ गमन करके अब नगर खुरई आ जाता है।
इस नगर खुरई को एक और सुंदर अवसर मिल जाता है।।
गुरुवर विद्यासागर जी की शिष्यायें थीं दो माता जी।
दोनों माताजी ने मिलकर श्रमणों की शुभ अगवानी की।। (72)

थी शुभ प्रभावना और भावना मति नाम की माताऐं।
जब चरण वंदना करती थीं तो देख सभी जन हर्षाये।।
इस श्रमण संघ के आने से उत्साह नजर आता भारी।
यह मिलन देखकर संतों का हर्षित थे सारे नर नारी।। (73)



दो दिन तक खुरई रुके मुनिवर नगरी में उत्सव छाया था।
लगता था समोसरण जैसा तब खुरई नगर में आया था।।
श्री प्रभावना मति आर्यिका माताजी ने ध्यान रखा।
मुनिसंघ को कष्ट न हो कोई उनको शीतल स्थान रखा।। (74)

मुनिसंघ को नवनिर्मित मकान में तब सबने ठहराया था।
लेकिन स्थान गरम था वो गर्मी का मौसम आया था।।
लेकिन माताजी जहाँ रूकीं थीं वो शीतल स्थान दिया।
माताजी ने मुनिवर के लिये स्थान था खाली वहाँ किया।। (75)

इक नम्र निवेदन मुनिवर से माताजी ने तब वहाँ किया।
ठण्डे स्थान पे रुकने का मुनिवर जी से अनुरोध किया।।
मुनिवर बोले हम लोगों का क्या कहीं भी हम रुक जायेंगे।
माताजी बोली हम अपना कर्त्तव्य कहाँ ले जायेंगे।। (76)

इस भीषण गर्मी में मुनिवर जी आप तो चलकर आये हैं।
प्रतिकूल साधनों में मुनिवर कब धर्म कहाँ सध पाये हैं।।
अनुकूल रहे स्थान तो मुनिवर श्रेष्ठ साधना होती है।
फिर सेवा करना भी तो हमरी जिम्मेदारी होती है।। (77)

माताजी के अनुरोध को फिर मुनिवर जी ने स्वीकार किया।
माताजी के शुभ भावों को मुनिवरजी ने सम्मान दिया।।
मध्यान्ह काल मुनिराजों के वंदन को माताजी आईं।
तत्त्वों की चर्चा मुनि विमर्शसागर जी से कर हर्षाईं।। (78)

दोनों संघों में वात्सल्य का भाव नजर आया भारी।
यह देख एकता के धागों में बंध गये थे सब नर नारी।।
मुनिवर जी ने अब गमन किया आँखें सबकी भर आती हैं।
मुनिवर जी को देने विदाई माताजी भी संग जातीं हैं।। (79)

विरागानुशासन

मुनिवर तीनों करके विहार अब खिमलासा आ जाते हैं।
खिमलासे में अर्जिका विशा व विभाश्री मिल जाते हैं।।
मुनिराजों की अगवानी करने माताजी तब आईं थीं।
मुनिराजों का दर्शन वंदन करके बहुतई हर्षाईं थीं।। (80)

मुनिवर तीनों खिमलासा से पाली बिहार कर जाते हैं।
पाली नगरी में मुनिवर जी जाकर तीनों रुक जाते हैं।।
माताजी ने मुनिवर जी को तब समाचार भिजवाया था।
इक दिन मुनिवर रुक जायें वहाँ ये तब संकेत कराया था।। (81)

माताजी का संकेत था ये इक साथ ललितपुर जायेंगे।
मुनिवर ने संदेशा भेजा आगे पीछे ही जायेंगे।।
माताजी बोली जाकर के गुरुदेव को सब बतला देंगे।
चिंता न आप करें मुनिवर हम जाके उन्हें मना लेंगे।। (82)

मुनिराज आर्यिका संघ संग में नगर ललितपुर जाते हैं।
नगरी से पहले गौशाला में जाकर के रुक जाते हैं।।
आहारविधी सम्पन्न हुई मुनिवर को अंतराय आया।
श्रावक लोगों ने मिल करके आगे बिहार तब करवाया।। (83)



मुनिराज आर्यिका संघ गमन कर नगर ललितपुर आया था।
पर संघ से कोई भी साधक न उनको लेने आया था।।
मुनिवर विमर्श ये समझ गये कि नियम संघ में चलते हैं।
कि मुनि आर्यिका संघ गुरु आज्ञा के बिन न मिलते हैं।। (84)

मुनिसंघ अटा मंदिर पहुँचा गुरुवर की चरण वंदना की।
गुरु संघ विराजा था सारा पर प्रतिक्रिया न कोई की।।
मुनिवर तीनों गुरुवंदन कर कमरे में ऊपर जाते हैं।
कुछ समयवाद गुरुवर के संग आहार चर्या को जाते हैं।। (85)

अगले दिन प्रातः गुरुवर जी जब जंगल हेतु जाते हैं।
तब मुनिवर सारी बात वहाँ गुरुवर जी को बतलाते हैं।।
गुरुवर बोले तुमरा मुनिवर गुरु संघ के प्रति समर्पण है।
ये गुरु भक्ति का भाव सभी शिष्यों के लिये आकर्षण हैं।। (86)

मुनिवर विमर्शसागर जी साधक आप बड़े कहलाते हैं।
जो छोटे साधु करते हैं आधार वो तुम्हें बनाते हैं।।
इसलिये आपको लेने को कोई साधु न आये थे।
आगे रस्ता न बन जाये इसलिये ये सब दर्शाये थे।। (87)

मुनिवर बोले आशीष आपका और आपका दर्श मिला।
लगता है ऐसा जैसे सारे संघ का ही सानिध्य मिला।।
फिर जान बूझकर हो गुरुवर या अनजाने में हो गलती।
छोटे या बड़े करें गुरुवर गलती तो होती है गलती।। (88)

ये नियम संघ का तोड़ा है गुरुदेव हमें प्रायश्चित्त बरें।
गलती तो गलती है गुरुवर न छोटे बड़े की बात अरे।।
गुरुवर विरागसागर जी ने हँस करके तब आशीष दिया।
ये बात खत्म हो गई यहाँ मुनिवर ने चरण स्पर्श किया।। (89)

ललितपुर में 21 दीक्षायें

फिर आठ जून को गुरु विरागसागर जी ने दीक्षायें दीं।
इक्कीस भव्य जीवों को तब गुरुवर ने शिव शिक्षायें दीं।।
ऐलक विनम्र सागर जी अब मुनिवर के पद में आये थे।
मुनिवर विनम्रसागर जी की संज्ञा गुरुवर से पाये थे।। (90)

उत्तर प्रदेश से अब गुरुवर जी छत्तिसगढ़ की ओर चले।
जिस जिस नगरी से गुजरे वो भवि जीवों के थे पुण्य फले।।
मुनिवर विमर्श मुनिवर विनम्र दो संघ चले अलवेले थे।
दोनों ही ज्ञानी साधक थे वो गुरु विराग के चेले थे।। (91)

अब सत्रह जून सु-दिन आया दोनों संघों ने गमन किया।
मुनिवर विनर्घ्य मुनि विश्वपूज्य मुनि विजय सिंधु को साथ लिया।।
क्षुल्लक श्रीमान विशारदजी क्षुल्लक विधेय जी संग खड़े।
दो संघ सात पिच्छी लेकर अब नगर चंदेरी ओर बड़े।। (92)

स्वभाव से मिलन

सैरोन क्षेत्र का वंदन कर अब नगर चंदेरी आते हैं।
इन वीतराग संतों को लख नर नारी सब हर्षाते हैं।।
तब नगर चंदेरी में स्वभावसागरजी मिलने को आये।
जो शिष्य सरल सूरी विद्यासागर जी के हैं कहलाये।। (93)



थूवौन जी से मुनिवर

मुनिवर विमर्श, मुनिवर विनर्घ्य मुनि विश्वपूज्य को साथ लिये।
मुनिवर ने नगर चंदेरी से थूवौन को पग थे बड़ा दिये।।
मुनिराज सरल सागर जी तब पहले ये वहाँ विराजे थे।
वात्सल्य भाव से हीन अरे वो साधक बड़े अभागे थे।। (94)

नाम सरल था मगर जटिलता भीतर बहुत समाई थी।
वो मनः जटिलता संत मिलन में बाधक बनकर आई थी।।
मुनिवर तीनों ही क्षेत्र वंदना करके भारी हर्षाये।
मुनिराज सरलसागर लेकिन उनसे मिलने को न आये।। (95)

मुनि त्रय सन्ध्या बेला में अब आगे विहार कर जाते हैं।
जाकर के पाटई गाँव में मुनिवर तीनों रात बिताते हैं।।
चौबीस जून को कर बिहार अमरौद गाँव आ जाते हैं।
अमरौद गाँव में ही तीनों मुनिराज वहाँ रूक जाते हैं।। (96)

अशोकनगर की ओर

श्रावकगण तभी अशोकनगर के दौड़े-दौड़े आते हैं।
आकर के फौरन मुनिराजों का चौका वहाँ लगाते हैं।।
ब्रह्मचारी पंकज भैया संग आये कबूलचंद जैन वहाँ।
श्रीराधेलाल धुर्रा वालों ने दिया था तब आहार यहाँ।। (97)

अमरौद गाँव से कर बिहार मुनिवर वरखेड़ा आते हैं।
तब लालाजी इक भक्त मण्डली ले दर्शन को जाते हैं।।
दस आठ लोग थे संग उनके मुनिवर से यही निवेदन था।
हो हमरी नगरी में प्रवेश कल यही एक आवेदन था।। (98)

बोले कल ही मुनिवर विनम्रसागर जी नगरी आयेंगे।
हम संग आपके उन मुनिवर का भव्य प्रवेश करायेंगे।।
25 जून को मुनि विमर्शसागर जी संघ सहित आकर।
आये नगरी में अगवानी की लोगों ने तब हर्षाकर।। (99)

रंगोली नाना रंगों से घर-घर के द्वार सजाये थे।
मुनिवर का स्वागत करने को तब स्वागत द्वार लगाये थे।।
कोई चरण पखारे मुनिवर के कोई आरती थाल उतार रहा।
कोई बैण्ड वाद्य जयकारो से भूमण्डल को गुंजार रहा।। (100)

चातुर्मास का निवेदन

मुनिवर को गंज के मंदिर में स्वागत करके ले आये थे।
चन्दाप्रभु, बाहुबली दर्शन करके मुनिवर हर्षाये थे।।
मंदिर के हाल में किया गया फिर धर्म सभा आयोजन था।
अध्यक्ष रमेश चौधरी जी सबका ही एक निवेदन था।। (101)

श्रीफल अर्पित कर भावों से शब्दों में शुभ संवेदन था।
होवे चौमासा नगरी में अंतस का भाव निवेदन था।।
मुनिवर बोले पहले भैया गुरु चरणों में जाना होगा।
गर चौमासा करवाना है गुरु शुभाशीष लाना होगा।। (102)

मुनिवर विमर्शसागर जी से मुनिवर विनम्रसागर बोले।
इस बार अशोकनगर में चौमासे के भाव अपने खोले।।
मुनिवर विमर्शसागर जी ने तब उनको ऐसा समझाया।
दोनों ही पत्र लिखें मुनिवर को ऐसा रस्ता दिखलाया।। (103)



गुरुवर की आज्ञा जिसको हो वो यहाँ पे चातुर्मास करे।
व दूजा संघ चंदेरी में जाकर के वर्षावास करे।।
ये बात ठीक जम गई वहाँ दो पत्र वहाँ पर लिख करके।
अध्यक्ष रमेश चौधरी को दे दिये पत्र बुलवाकर के।। (104)

पच्चीस जून मुनिवर विमर्शसागर चर्या को जाते हैं।
आहार विधी न मिलने से मुनिवर वापिस आ जाते हैं।।
सारी समाज में चर्चा का ये विषय बन गया था भारी।
आगम चर्या है मुनिवर की चर्चा करते थे नर नारी।। (105)

मेरा प्रथम दर्श

पच्चीस जून को ही लेखक ने प्रथम दर्श गुरु का कीना।
इस प्रथम दर्श में ही गुरु चरणों में सब अर्पण कर दीना।।
उस दिन से ही मन आज तलक गुरु चरणों का दीवाना है।
गुरु चरणों में जीना मरना गुरु शरणा एक ठिकाना है।। (106)

इस पहले दर्शन में ही सब कुछ जैसे मैंने पाया था।
उस भोली सी मुस्कान में जैसे जादू कोई समाया था।।
वो वात्सल्य पावन मुद्रा आँखों में अब भी छाई है।
ऐसी करुणा ऐसी समता कहीं और नजर न आई है।। (107)

गुरुवर करुणा के सागर हैं, नित करुणारस छलकाते हैं।
जो भी चरणों में आता है, शिव मारग गढ़ते जाते हैं।।
उनकी करुणा रग रग में, बन करके आशीष समाई है।
मैं कुछ भी नहीं जो कुछ भी हूँ, सब गुरुवर की परछाई है।। (108)

पन्द्रहवाँ पर्व पूर्ण

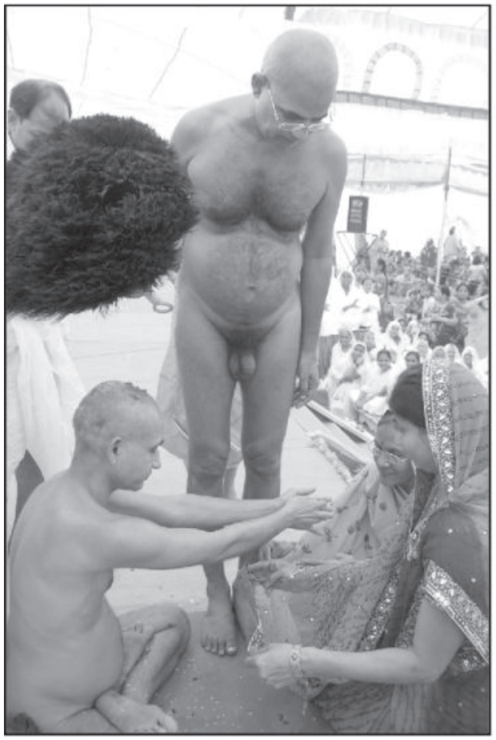
गुरुवर की है असीम करुणा जिसका वस मैं आभारी हूँ।
गुरु चरणों का सेवक हूँ मैं इस महा भाग्य का धारी हूँ।।
ये पन्द्रहवां सोपान हुआ पूरा गुरु का आशीष रहा।
उन गुरु चरणों में श्रद्धा से मैं मस्तक अपना झुका रहा।। (109)

❑❑❑❑



जीवाणं रक्खणो धम्मो

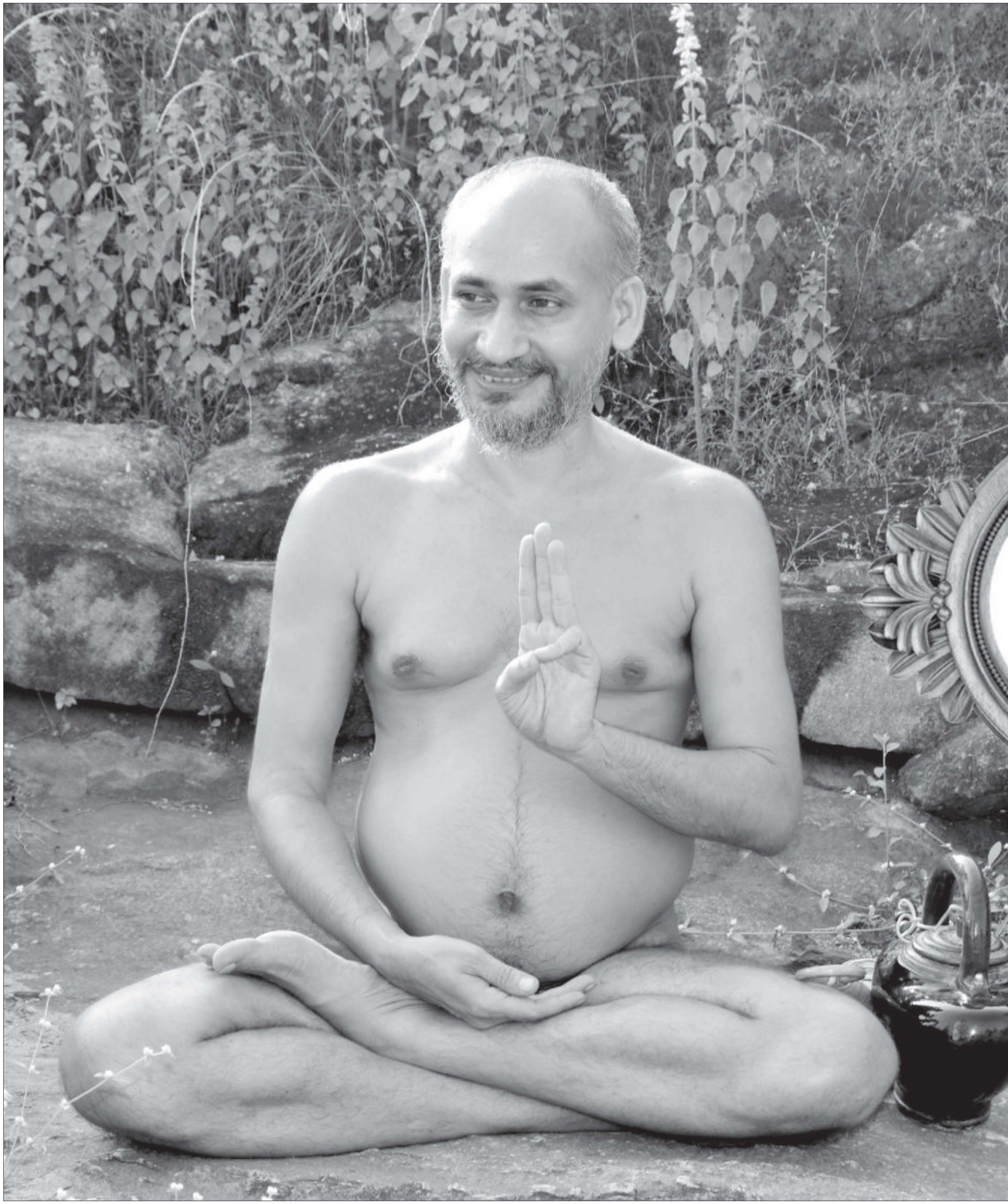
चित्र समूह - 5
आचार्य पद दर्शन



पूज्य विमर्शसागर जी जन्मदात्री माँ भगवती जी एवं धर्ममाता रेखा बाबरिया को मंगल द्रव्य प्रदान करते हुए।



पिताश्री सनतकुमार जी का सम्मान करते हुए मुनिसंघ सेवा समिति के अध्यक्ष श्री सुरेश जी संघवी



"षोऽश पर्व"

गुरु आशीष पर्व

संजीवनी भावलिंगी संत (महाकाव्य)

bhavlingi sant
shramanacharya shri 108 vimarsh sagar ji gurudev

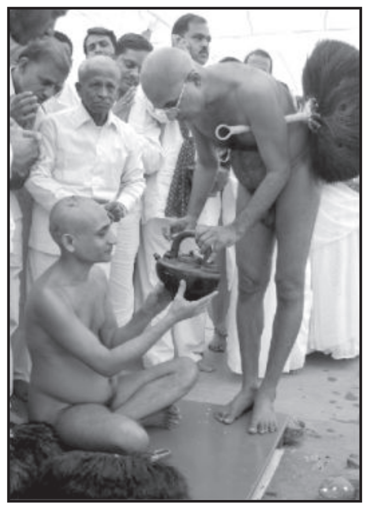
चित्र समूह - 5
आचार्य पद दर्शन

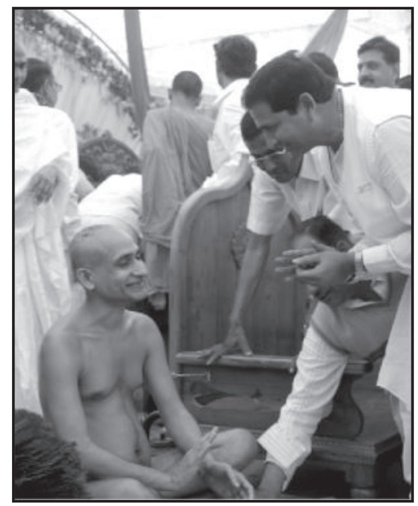

आचार्य पद संस्कार विधि में मुनि श्री विमर्शसागर जी के चरणाभिषेक करते हुए संघस्थ त्यागीव्रती


नवोदित आचार्य श्री को पिच्छी प्रदान करते हुए श्री भूपेन्द्र जैन बाँसवाड़ा


नवोदित आचार्य विमर्शसागर जी को ज्ञानोपकरण प्रदान करते त्यागीव्रती


आचार्य पद संस्कार विधि में मुनि श्री विमर्शसागर जी के अंगुष्ठ में चंदनलेप करते हुए मुनि सेवा संघ के अध्यक्ष श्री सुरेश जी सिंघवी


पूज्य आचार्य विरागसागर जी के करकमलों से कमण्डलु ग्रहण करते हुए पूज्य विमर्शसागर जी


पूज्य आचार्य विमर्शसागर जी से सिंहासन पर विराजित होने के लिए निवेदन करते हुए – अध्यक्ष सुरेश सिंघवी।



"षोऽश पर्व"

"गुरु आशीष पर्व"

जिनवाणी (सरस्वती) वंदना

भारती माँ भारती अब, हमको स्वर का ज्ञान दो।
मैं वंदना करता रहूँ, चरणों की माँ वरदान दो।।
भारती माँ.........

नयनों से बस तुमको, निहारा ही करूँ माँ शारदा।
नयना युगल की रोशनी चरणों पे माता वारता।
देखूँ जिधर बस आप हो, हे मात! वो संधान दो।।
भारती माँ.........

शुचि धर्म की सरिता, वहादो है यही बस प्रार्थना।
आशीष की अनुपम कृपा, दो है यही बस याचना।
बस आपको पहिचान लूँ, मैं मुझको सम्यक् ज्ञान दो।।
भारती माँ.........

आपकी दृष्टि हे माता! है सतत वरदायिनी।
आपकी पावन कृपा हे, शारदे शिव दायिनी।
निज आत्म हित के वास्ते हे, वाणी माँ! श्रद्धान दो।।
भारती माँ.........

आज तक सिद्धत्व की, उपलब्धियाँ जिनको मिलीं।
हे सिद्धि दातृ आपकी दृष्टि, से शिवकलियाँ खिली।
अपना दृष्टिपात्र हमको, भी बना सम्मान दो।।
भारती माँ.........

आपसे निर्ग्रंथ शासन, शारदे जयवंत है।
आपके चरणों का वंदन, करते सब निर्ग्रंथ हैं।
कर कृपा अब तारिणी, निर्ग्रंथ का वहुमान दो।।
भारती माँ.........

पावन कथा गुरु नाम, की आगे बड़ाता हूँ यहाँ।
हे माता! देना आज संबल, थक न जाऊँ मैं यहाँ।
गुरु चरण का दास, बनकर रह सकूँ वो भान दो।।
भारती माँ.........

जन्म जयन्ति

छब्बीस जून का दिन आया, गुरु जन्म जयन्ति आई थी।
ये जन्म दिनांक है ठीक, नहीं स्कूल में गई लिखाई थी।।
महरौनी, जखौरा, तालवेहट व भिण्ड, ललितपुर सागर से।
गुरु जन्म महोत्सव करने को, सब भक्त आये थे मुनिवर के।। (1)

अशोकनगर के भक्तों को, इसका न कुछ मालूम पड़ा।
अचरज में सब पड़ गये, वहाँ जब भक्तों का मेला उमड़ा।।
आगत भक्तों के संग सबने, गुरु जन्म जयन्ति मनाई थी।
गुरु भक्ति में गुरु सेवा में, सबने ही लगन लगाई थी।। (2)

अशोकनगर चातुर्मास-2003

था चतुर्मास का समय निकट, भक्तों का मन उमगाया था।
ऐसे गुरुवर ऐसा अवसर, जो सहज हाथ में आया था।।
लेने अनुमति चौमासे की, गुरुवर विराग के पास चले।
नगरी तब लखनादौन विराजे थे, शुभ गुरुवर भले-भले।। (3)



गुरुवर विरागसागर जी के, चरणों में अर्ज लगाई थी।
चौमासा हो मुनिवर विमर्श का यही भावना भाई थी।।
गुरुवर विरागसागर जी ने, सबको मंगल आशीष दिया।
अशोकनगर की झोली में, मंगल चौमासा डाल दिया।। (4)

गुरुवर की जय जयकार, अहा करते करते वापिस आये।
गुरु वचन और गुरु की, चिट्ठी मुनिवर को देकर हर्षाये।।
मुनिवर ने जब चिट्ठी खोली, मानो समाज का भाग्य खुला।
मुनिवर विमर्शसागरजी, के चौमासे का सौभाग्य मिला।। (5)

संकेत मिला मुनिवर विनम्र, को चंदेरी चौमासे को।
जैसे शीतल जल सहज मिला, हो बहुत देर से प्यासे को।।
मुनिवर विनम्रसागर जी ने, अब चंदेरी को गमन किया।
मुनिवर विमर्शसागर जी ने, भी बजरंग गढ़ को गमन किया।। (6)

बजरंगगढ़ वंदना

यह वर्षायोग करें उससे, पहले तीरथ के दर्शन को।
मुनिवर बजरंगढ़ जाते हैं, प्रभु शांतिनाथ के वंदन को।।
प्रभु शांतिनाथ का जिनमंदिर, सबका मन मोहित करता है।
ये शांतिनाथ बाबा प्यारा, भक्तों की झोली भरता है।। (7)

शान्ति बाबा का अतिशय

संबत बारह सौ छत्तिस में, ये जिनमंदिर बनवाया था।
ये मंदिर पाणाशाह ने, बनवा करके पुण्य कमाया था।।
ये जिन मंदिर तुड़वाने को, इक मुस्लिम शासक आया था।
प्रभु शांतिनाथ की प्रतिमा ने, तब अतिशय वहाँ दिखाया था।। (8)

प्रभु की मूरत खण्डित करने, जैसे ही हाथ बढ़ाया था।
प्रभु प्रतिमा के अंगूठे से, तब दूध निकलता पाया था।।
इस भव्य जिनालय को, क्षति पहुँचाने को जब आगे आये।
तब आसमान से देवों ने, उन पर अंगारे बरसाये।। (9)

ये जिनमंदिर खुद ही अपने, अतिशय की महिमा गाता है।
जो एक बार आ जाता है, वो बार-बार फिर आता है।।
प्रभु शांतिनाथ व कुंथुनाथ, प्रभु अरह नाथ का दर्शन कर।
तीनों मुनिवर करके बिहार, आते हैं पुनः अशोक नगर।। (10)

ऐतिहासिक अगवानि

अशोकनगर के भक्तों ने, मिलकर इतिहास रचाया था।
जो हुआ नहीं पहले ऐसा, मंगल प्रवेश करवाया था।।
इस नगरी के भक्तों का, तब उत्साह देखते बनता था।
मानो उतंग लहरें बनके, सागर का नीर उफनता था।। (11)

नवोदित जिले का प्रथम चातुर्मास

बारह जुलाई को चतुर्मास, का स्थापन करवाया था।
सारी समाज ने मिल करके, अपना सौभाग्य मनाया था।।
इस चतुर्मास का कलशा, स्थापित करने का शुभ अवसर।
अध्यक्ष रमेश चौधरी के, परिवार ने पाया था अवसर।। (12)

भैया त्रिलोक जी ने सारी, क्रिया सम्पन्न कराई थी।
इस अवसर पर ही नगरी ने, सौगात नई तब पाई थी।।
शासन ने इस नगरी को इस दिन नूतन जिला बनाया था।
मुनिवर की धर्मसभा में ही, इसका संदेश सुनाया था।। (13)



श्री भक्तामर शिक्षण शिविर

भक्तामर शिक्षण शिविर, का अव मंगल आयोजन शुरू हुआ।
इस ज्ञान यज्ञ में ज्ञानार्जन, करने का उपक्रम शुरु हुआ।।
नगरी वालों को आयोजन, यह अद्भूत अजब निराला था।
जो कभी नहीं पाया, ऐसा आनंद दिलाने वाला था।। (14)

भक्तामर के अक्षर-अक्षर, का उच्चारण करवाया था।
कैसे शुद्ध उच्चारण करना, मुनिवर ने वहाँ सिखाया था।।
इक काव्य वहाँ प्रतिदिन, मुनिवर द्वारा सिखलाया जाता था।
प्रतिदिन उसका पद्यानुवाद, मुनिवर द्वारा हो जाता था।। (15)

अनुपम पद्यानुवाद

पद्यानुवाद मुनिवर प्रतिदिन, जब कंठ से गाया करते थे।
कुछ लोग तो बस पद्यानुवाद, ही सुनने आया करते थे।।
मुनिवर का यह पद्यानुवाद, लोगों को इतना भाता था।
कि गली-गली चौराहों पर, ये सुनने को मिल जाता था।। (16)

है अनुपम रचना गुरुवर की, मैं उनको शीष झुकाता हूँ।
हर कंठ गाये उस रचना, को बस यही भावना भाता हूँ।।
गुरुवर की अमर कृति, में से कुछ पन्ति यहाँ सुनाता हूँ।
गुरुवर के शब्दों में ही, उसकी मंगल गीता गाता हूँ।। (17)

"श्री भक्तामर स्तोत्र महान, रचा गुरु मानतुंग ने जान।
भक्ति जब हृदय समाई है।। ऽऽऽ

आदि विधाता आदिनाथ की महिमा गाई है।

चरण में वंदन है, चरण रज चंदन है।"

पधारो स्वामी मोरे अँगना रे

मुनिवर की चर्या श्रेष्ठ ज्ञान, से सभी प्रभावित रहते थे।
मुनिवर हैं सबसे जुदा-जुदा, सारे जन ये ही कहते थे।।
मुनिवर थे तीन और चौके, तब बहुतायत में लगते थे।
जिसके घर मुनिवर जाते थे, उसके ही भाग्य चमकते थे।। (18)

मुनिवर के मन में पड़गाहन की, विधि गजब आ जाती थी।
आसानी से मुनिराजों की, तब विधि नहीं मिल पाती थी।।
यह दृश्य अनूठा पड़गाहन, का सभी देखने आते थे।
पड़गाहन लखके मुनिवर का, सारे जन हर्ष मनाते थे।। (19)

शिविर के दीवाने

मुनिवर विमर्शसागर जी ने, अब पूजन शिविर लगाया था।
जिसमें मुनिवर जी ने सबको, पूजन करना सिखलाया था।।
प्रतिदिन नगरी की गलियों, में केशरिया और धवल वाने।
हर ओर दिखाई देते थे, तब लोग शिविर के दीवाने।। (20)

इस तरह सैकड़ों लोगों ने, पूजन के अनुभव पाये थे।
पूजन की विधियाँ सीख-सीख, सब नर नारी हर्षाये थे।।
डॉक्टर श्री सुगनचंद जी ने, बनके कुवेर तब भाग लिया।
पूजन का निमय लिया आजीवन, जीवन अपना बदल दिया।। (21)

मेरा वैराग्य

नगरी में सेठ पदमचंद जी, जो ग्राम सिंघाड़ा वासी हैं।
कई सालों से वो धर्म, नगरिया अशोक नगर के वासी हैं।।
अनकी पत्नि श्री मति सरोज, जी गृहस्थ धर्म सहभागी हैं।
अपने पति के जैसे वो भी, शुभ धर्म भाव अनुरागी हैं।। (22)



इन दोनों का मैं बड़ा पुत्र, राजीव नाम को धरता था।
नित श्रद्धा और समर्पण से, मुनिवर की सेवा करता था।।
वैय्यावृत्ति में नित, तत्पर आहार चर्या में जाता था।
गुरु चरणों का अनुरागी था, अपना सौभाग्य मनाता था।। (23)

मुनिवर की ज्ञान मई चर्या, जो आगम के अनुसारी थी।
अपने मन श्रद्धा दर्पण में, गुरु की तस्वीर उतारी थी।।
गुरु चर्या ने वो असर किया, कि सारा जीवन बदल गया।
जो विषयों में सुख का भ्रम था, मानो पलभर में निकल गया।। (24)

गुरु भक्ति की अनुपम ज्योति, मेरे अंतस में जागी थी।
घर बार दिखाई न देता बस, गुरु चरणों लौं लागी थी।।
गुरु भक्ति से प्रेरित होकर, गुरु पूजा एक रचाई थी।
पूजा के छंदों में गुरु भक्ति, तब मैंने प्रगटाई थी।। (25)

प्रतिदिन जिन पूजन करके, मैं पूजा की थाली लाता था।
अपने मित्रों के संग गुरुवर, की पूजा रोज रचाता था।।
गुरु भक्ति व गुरु वात्सल्य, से अंतस में वैराग्य जगा।
घर छोड़ गुरु चरणों रहना, भैया राजीव को उचित लगा।। (26)

मुनिराज शाम की भक्ति कर, जब अपने कक्ष में आते हैं।
मेरे वैरागी भाव भी मुनिवर, के पीछे आ जाते हैं।।
गुरु चरण बैठकर वीतरागता, रोज निहारा करता था।
ऐसी पर्याय हमारी हो दिन रात विचारा करता था।। (27)

सब दर्शन करके चले गये, मैं गुरु चरणों में रूका रहा।
मानों आतम की परिणितियाँ, गुरुवर के चरणों झुका रहा।।
मुनिवर विमर्शसागर जी ने, पूछा भैया क्या करते हो।
क्या तुम पढ़ाई में तत्पर हो या, काम कोई तुम करते हो।। (28)

मैंने बतलाया, हरषाकर मुनिराज अभी हम पढ़ते हैं।
पर अब गुरुदेव आपके संग, चलने के सपने गढ़ते हैं।।
बोले मुनिवर भैया तुमरी, ये मनोभावना अच्छी है।
पर क्या अंतस में भी तुमरे, वैराग्य भावना सच्ची है।। (29)

मैंने गुरुवर से कहा वहाँ, गुरुवर दृढ़ निश्चय मेरा है।
अब घर में मन न लगता है, कर्मों ने मुझको घेरा है।।
गुरुवर अब हमपे कृपा करो, हमको भी अपने संग ले लो।
जिन वीतरागता के रंगों, से आप रंगे वो रंग दे दो।। (30)

मुनिवर बोले पहले मम्मी, पापा से बात करो भैया।
उनकी अनुमति आवश्यक है, उसको तुम प्राप्त करो भैया।।
उनकी अनुमति के बाद ही, भैया ये संभव हो पायेगा।
जो भाव बनाया है तुमने, तब ही पूरा हो पायेगा।। (31)

गुरुदेव आप आशीष वरो मैं, घर पे बात चलाऊँगा।
पापा मम्मी को कल गुरुवर, चरणों में लेकर आऊँगा।।
मम्मी पापा को घर जाकर, मैंने ये सब कुछ बतलाया।
हम अनुमति इसकी न देंगे, पापा मम्मी ने समझाया।। (32)



कुछ समय वाद वो मान गये, गुरुवर के चरणों आते हैं।
तब मेरे बहुत मनाने पर, आखिर वो मान ही जाते हैं।।
फिर मात-पिता को संग लेकर गुरु चरणों का आशीष लिया।
शिवपथ पर आगे बढ़ने का, तब मन में दृढ़ संकल्प किया।। (33)

जज का जजमेंट

इस ही नगरी में ए.डी.जे. के, पद को शोभित करते थे।
वो महामना अति मृदु भाषी थे, नाम सुभाष जी धरते थे।।
मुनिवर से बहुत प्रभावित थे, दर्शन वंदन को आते थे।
चुपचाप सभा में आकर के, पीछे ही बैठ वो जाते थे।। (34)

मुनिवर का इक दिन अंतराय था, पट जल्दी लग जाते हैं।
ए.डी.जे. श्री सुभाष जी, तब दर्शन करने को आते हैं।।
खिड़की से उनने झांका, तो मुनिवर ने उनको देख लिया।
दरवाजा खोलके मुनिवर ने, तब उनको अंदर बुला लिया।। (35)

गुरु चरणों में वंदन कीना, चरणों में ध्यान लगाते हैं।
कुछ बात करी न, गुरुवर, को करके वंदन चल जाते हैं।।
जब बीत गये कुछ दिवस और, इक दिन सुभाष जी फिर आये।
गुरु चरणों की रज श्रद्धा से, मस्तक पर लेकर हर्षाये।। (36)

मुनिवर ने उनसे पूछ लिया, कि आप यहाँ जब आते हैं।
चुपचाप बैठते हैं आकर, चुपचाप ही वापिस जाते हैं।।
लगता है आपको कहना, कुछ पर आप नहीं कह पाते हैं।
क्या आपके मन में बात कहो, क्यों कर संकोच छिपाते हैं।। (37)

बोले सुभाष जी हे, गुरुवर जब पास आपके आता हूँ।
वात्सल्य छवि लख गुरुवरजी, में सहज शांत हो जाता हूँ।।
जो सहज शांति आकर, गुरुवर मैं पास आपके पाता हूँ।
वैसी अपूर्व व सहज शांति, मैं गुरुवर कहीं न पाता हूँ।। (38)

गुरुदेव! कोर्ट में जब, मुझको कोई निर्णय देना होता है।
तब हे गुरुदेव! आपके श्री चरणों में आना होता है।।
शुभ आपके शीतल चरणों, की मधुरिम छाया जब पाता हूँ।
तब बैठके श्री चरणों में, गुरुवर यही भावना भाता हूँ।। (39)

अपराधी को पर्याप्त सजा, निर्दोषी कभी न दण्डित हो।
हो मेरा ऐसा निर्णय, जिससे धर्म न मेरा खण्डित हो।।
निर्णय देने के पूर्व मैं, गुरुवर श्री चरणों में आता हूँ।
श्रीचरण युगल से हे गुरुवर! मैं दिव्य ऊर्जा पाता हूँ।। (40)

जज साहब के पावन भावों की, मुनिवर ने खूब, प्रशंसा की।
सबके ही ऐसे भाव बनें, ऐसी सुंदर अनुशंसा की।।
ए.डी.जे. श्री सुभाष जी, ने गुरु चरणों में वंदन कीना।
जीवन भर ऐसे भाव रहें, ऐसा आशीष वहाँ लीना।। (41)

बने विश्वतीर्थ, साधी समाधि

मुनिवर जब संघ सहित, चौमासे को नगरी में आये थे।
इक भक्त को तब भगवान, मिले थे सोये भाग्य जगाये थे।।
इक बाल ब्रह्मचारी भैया, श्री छौंगालाल कहाते थे।
कुल्हे की हड्डी टूट गई थी, जिससे चल न पाते थे।। (42)



बाबाजी ने मुनिवर जी, के चरणों में अर्ज लगाई थी।
करना है मरण समाधि, गुरुवर यही भावना भाई थी।।
मुनिवर बोले जब मरण, समाधि योग्य काल आ जायेगा।
बस भाव साधना आप करें, सब ठीक ठाक हो जायेगा।। (43)

ब्रह्मचारी जी को चतुर्मास, में मुनिवर ने उपदेश दिया।
शुभ मरण समाधि के साधन, का मुनिवर ने संकेत दिया।।
श्रावक जन को तब सेवा की, मुनिवर ने जिम्मेदारी दी।
भैया कैलाश ने खूबई सेवा, में तब रुचि दिखाई थी।। (44)

ब्रह्मचारी जी अब तक, केवल पक्का ही भोजन करते थे।
रस्ते का चला हुआ, भोजन ब्रह्मचारी जी न करते थे।।
मुनिवर ने अब कच्चे भोजन, का उनको नियम दिलाया था।
धर्मोपदेश दे देकर के, आतम को पुष्ट बनाया था।। (45)

मुनिवर ने फिर उपदेश दिया, आठे चऊदस उपवास करो।
उपयोग हटाके इस जग, से अपने आतम में वास करो।।
मुनिवर की हर आज्ञा को, वो हर्षित होकर सिर धरते थे।
होकर विनम्र अक्षरसः वो, गुरु आज्ञा पालन करते थे।। (46)

मुनिवर ने इक पिच्छी, कमरे में सन्मुख ही टंगवाई थी।
संयम को धारण करने की, शुभ पावन ज्योत जलाई थी।।
मुनिवर बोले ब्रह्मचारी जी, जब देह से आप विदा लेंगे।
शुभ करो भावना उससे, पहले जिनदीक्षा हम ले लेंगे।। (47)

मुनिवर के अमृतमयी वचन, सुनकर प्रशन्न हो जाते थे।
संयम को धारण करने के, सपनों में वो खो जाते थे।।
मुनिवर की आज्ञा के क्रम, से आहार पानी को त्याग किया।
निजभाव विशुद्धि वृद्धिंगत, करके आतम अनुराग किया।। (48)

दादा सुमेर जी और सुगन, चंद डाक्टर साहब आते थे।
उनकी सब चर्याओं में, शामिल हो कर्त्तव्य निभाते थे।।
इक रोज सुबह मुनिवर दर्शन, करने को मंदिर जाते हैं।
बस तभी युवा कुछ आकर, के मुनिवर को बात बताते हैं।। (49)

बोले, मुनिवर! बाबाजी की, तवियत खराब है कुछ भारी।
ऐसी हालत नजराती है, जैसे जाने की तैयारी।।
जल्दी से आप चलें नीचे, अब देर जरा भी न करिये।
जो भाव-सजाये थे पावन, उनको चलके पूरा करिये।। (50)

मुनिवर विमर्श मुनिवर विनर्घ्य, फौरन नीचे आ जाते हैं।
आकर देखा मुनिवर ने, सांसों का क्रम उल्टा पाते हैं।।
मुनिवर जी फौरन समझ गये, अब बेला अंतिम आई है।
अब काल समाधि का सन्मुख अंतिम घड़ियाँ घिर आईं हैं।। (51)

मुनिवर विमर्शसागर जी, ने तब वहाँ वैद्य को बुलवाया।
तब देखी नवज वैद्य जी ने, मुनिवर जी को यूँ बतलाया।।
दस मिनिट बचे हैं शेष, मात्र जो करना हो सो कर लीजे।
जो मरण सार्थक हो जाये, ऐसा संबोधन दे दीजे।। (52)



बस अल्प समय में समाचार, ये जान गई नगरी सारी।
शुभ क्षपक के दर्शन करने, को सब उमड़ पड़े थे नर नारी।।
मुनिवर ने फिर उपदेश दिया, वैराग्य मयीं अनुपम महान।
अब जान लिया मुनिवर जी ने, बाबाजी का अंतिम प्रयाण।। (53)

मुनिवर ने पूछा बाबाजी, क्या मुनिदीक्षा अब लेना है।
सिर हिलाके तब बाबाजी, ने संकेत किया हाँ लेना है।।
मुनिदीक्षा की जब बात सुनी, चेहरे पर हर्ष उभर आया।
मानो मुनिवर के शब्दों में, बाबा जी ने सब कुछ पाया।। (54)

परिग्रह का त्याग कराकरके, मुनि दीक्षा को साकार किया।
बाबाजी को मुनिदीक्षा देकर, मुनिवर ने उपकार किया।।
बाबाजी छौंगालाल बन गये, मुनिवर विश्वतीर्थ सागर।
हो गया सफल मानव, जीवन-जीवन में संयम अपनाकर।। (55)

पिच्छिका हाथ में आते ही, मानों इस जग का पार मिला।
मानों भवसिन्धु तिरने को इक, नौका का आधार मिला।।
नूतन मुनिवर आनंदित हो, संकेत कर रहे बार-बार।
हे गुरुवर हमसे भी बुलवाओ, मंत्रराज तुम णमोकार।। (56)

मुनि विश्वतीर्थ सागर जी, की वाणी में शिथिलता आई थी।
संकेत भरी उनकी वाणी, मुनिवर के हृदय समाई थी।।
उनकी संकेत भरी वाणी, भावों का पावन स्पंदन।
सब एक ही स्वर में बोल रहे थे महामंत्र का उच्चारण।। (57)

मुनिवर विमर्शसागर जी ने, मुनि विश्वतीर्थ सागर जी से।
क्या भाव आपके हैं, पावन शुभ मंत्रराज उच्चारण के।।
मुनि विश्वतीर्थ सागर जी, ने हाँ में स्वर का संकेत किया।
तब अपनी भाव विशुद्धि से, मुनिवर ने शुभ आशीष दिया।। (58)

मुनिवर विमर्शसागर जी ने, फिर णमोकार के पद पावन।
मुनि विश्वतीर्थसागर जी, से क्रमशः करवाये उच्चारण।।
फिर मुनिवर ने निज आतम, के शाश्वत स्वरूप को समझाया।
शुद्धात्म स्वरूपोऽहं चिद्रुपोऽहं, उच्चारण करवाया।। (59)

मुनि विश्वतीर्थसागर जी के, मुख पे समता नजराती थी।
पीड़ा दुख और विकल्पों की, न छाया कहीं दिखाती थी।।
निजआत्म ध्यान में लीन सतत, निज आतम का चिंतन जारी।
मानो इस ही भव से मुक्ति, को वरने की हो तैयारी।। (60)

शुद्धात्म स्वरूपोऽहं उच्चारण, के संग उनकी सांस थमीं।
सौभाग्य उदय हो गया अहा!, जो श्रेष्ठ समाधि उन्हें मिली।।
निर्ग्रंथ साधना का उत्तम, फल मरण समाधि कहलाता।
दो तीन भवों या सात आठ, भव में वो मुक्ति को पाता।। (61)

निर्ग्रंथ साधना लक्ष्यहीन, इसके बिन जानी जाती है।
भव भव की उग्र साधना से, भी मुक्ति न मिल पाती है।।
दो तीन भवों में मुक्ति है, गर श्रेष्ठ समाधि हो जाये।
सात-आठ भवों में सिद्धि हो, गर जघन समाधि घट जाये।। (62)



मुनि विश्वतीर्थसागर जी, ने इस तरह समाधि मरण किया।
निर्यापक श्रेष्ठ मिले उनको, संयम का शुभ फल वरण किया।।
उन श्रेष्ठ क्षपक के दर्शन, को था जन शैलाव उमड़ आया।
हो गये नेत्र तब धन्य सभी के, जिन-जिन ने दर्शन पाया।। (63)

हर ओर रही बस चर्चा ये, कि मुनिवर का आशीष मिला।
जिससे बाबाजी के जीवन, में श्रेष्ठ समाधि पुष्प खिला।।
मध्यान्ह काल में शिविका, में उन क्षपकराज को बैठाया।
उनके अंतिम दर्शन करने, तब सारा नगर उमड़ आया।। (64)

उनका अंतिम दर्शन करके, ये भाव सभी मन भाते थे।
हो ऐसा उत्तम श्रेष्ठ मरण, बस यही भाव मन आते थे।।
मुनिवर विमर्शसागर जी, का इसमें सारा निर्देशन था।
ये मरण नहीं था मृत्यु महोत्सव, का सुंदर आयोजन था।। (65)

भारी जुलूस तैयार हुआ था, अद्‌भुत दृश्य ये बेला का।
बस जन समूह लहराता ऐसे, लगता जैसे मेला सा।।
भक्तों ने जय, जयकारों से सारा आकाश गुंजाया था।
सारी समाज ने ऐसा अवसर प्रथम बार ही पाया था।। (66)

मुनिवर विमर्शसागर चलते थे, संघ सहित आगे आगे।
पीछे शिविका का दर्शन था, ये दृश्य सुपावन सा लागे।।
हाथों में लिये गुलाल युवा, हर ओर गुलाल उड़ाते थे।
इसलिये गुलाबी रंगे रंगे, सब लोग वहाँ नजराते थे।। (67)

पहुँचा जुलूस गौशाला में, अंतिम विधियाँ सम्पन्न हुईं।
शुभ विधि समाधि संस्कार की, योग्य समय निस्पन्न हुईं।।
मुनिवर विमर्शसागर जी ने, तब संघ सहित उपवास किया।
सारी समाज को श्रेष्ठ समाधि, फल का शुभ आशीष दिया।। (68)

फिर चतुर्मास के बीच, वहाँ मुनिवर जी के निर्देशन में।
छत्री का शुभ निर्माण हुआ, सारी समाज संयोजन में।।
छत्री का जब निर्माण हुआ, फिर चरण वहाँ पधराये थे।
मुनिवर की भव्य प्रेरणा से, सारे ही काम कराये थे।। (69)

पर्वराज के पावन दिन

ये चतुर्मास था जारी अब, दस लक्षण के दिन आये थे।
दसधर्मों पर गुरुवर की, वाणी सुन भविजन हर्षाये थे।।
प्रातः की बेला में मुनिवर, का जो उद्‌बोधन होता था।
चैनल के द्वारा सन्ध्या में, वो नगर प्रसारण होता था।। (70)

पंडित श्री राजकुमार शास्त्री, ग्राम रजपुरा से आये।
सन्ध्या में शास्त्र सभा करके, वो जिनवाणी रस बरसाये।।
इक-इक करके दस दिवस, गये अब पर्व क्षमावाणी आया।
मुनिवर के वचनों को सुनकर, हर हृदय क्षमा से भर आया।। (71)

हर श्रोता की आँखों से, झरती थी अविरल अस्त्रु धारा।
गुरुवाणी के गंगाजल से, हर मन का मैल धुला सारा।।
वर्षों की बैर कलुषतायें, क्षण भर में मन से साफ हुईं।
की क्षमा याचना तब सबने, सबकी ही गलती माफ हुईं।। (72)



जिनशासन जयवंत हुआ

कई एक उदाहरण दिखे, वहाँ वर्षों के वैर मिटा डाले।
मुनिवर की अमृतवाणी से, ये काम हुये अचरज वाले।।
थे इक वकील वो पेसे से, शुभ नाम सुभाष जी उनका था।
उनने अपने उद्‌बोधन में, इस चतुर्मास को खूब कहा।। (73)

इस चतुर्मास में लगता है, कि मानों चौथा काल हुआ।
पूर्व काल सा इस चौमासे, में न कोई बबाल हुआ।।
हर ओर अमन दिखता, भैया हर ओर शांति छाई है।
रत्नत्रय धर्म की बात यहाँ, मुनिवर ने सदा सुनाई है।। (74)

ये मुनिवर दिखते हैं हलके, पर ज्ञान बहुत ही भारी है।
मुनिवर की एक एक चर्या, जिन आगम के अनुसारी है।।
मुनिवर की चर्या में देखो, अब चौथा युग जीवंत हुआ।
ऐसे निर्ग्रंथों को पाकर, जिनशासन भी जयवंत हुआ।। (75)

मुनिवर विमर्शसागर जी, को तब अतंराय बहु आते थे।
मुनिवर के चौके में जिससे, श्रावक जन सब घबराते थे।।
चर्या में छोटे चाचा जी, धुर्रा वाले तब जाते थे।
मुन्नी बर्तन रानू बर्तन आहार कराने जाते थे।। (76)

मुनिवर आहार चर्या में, तब थोड़ा-थोड़ा ले पाते थे।
तब राजुकमार जी आदि, सब भक्ति से अहार कराते थे।।
तब कभी छोटे चाचा, वात्सल्य भाव उर में धरके।
जोरी से मुनिवर की अंजुलि, में वस्तु रख देते भरके।। (77)

इक दिन चौके में अंतराय, मुनिवर जी का हो जाता है।
चौके बालों का गुस्सा, छोटे चाचा पर उतराता है।।
सब शांत भाव से सुना, और आँखों में आँसु भर आये।
दिन में मुनिवर की वैयावृत्ति, करने को चाचा आये।। (78)

चातुर्मास निष्ठापन

अक्टूबर के महीने में भैया, जब पच्चिस तारीख आई।
तब चतुर्मास निष्ठापन की, मुनिवर ने किरिया करवाई।।
प्रभु महावीर निर्वाण दिवस, संग चतुर्मास सम्पन्न हुआ।
इस चतुर्मास में एक नया, इतिहास यहाँ निस्पन्न हुआ।। (79)

पिच्छी परिवर्तन

दिन पन्द्रह माह नवम्बर का, पिच्छी परिवर्तन का आया।
नई पिछी बनाने का, अवसर तब सुनील मामा ने पाया।।
मुनिवर विनम्रसागर जी भी अब, नगर चंदेरी से आये।
मुनिवर विमर्शसागर जी से मिलके वो खूवई हर्षाये।। (80)

मुनिवर विनम्रसागर द्वारा, आयोजन का संचालन था।
अद्‌भुत सुंदर प्यारा-प्यारा, ये पिच्छिका परिवर्तन था।।
अभिलाषा जी भैया सुबोध, की श्रीमति कहलाती थीं।
मुनिवर विमर्शसागर जी की, पिच्छी पाकर हर्षातीं थी।। (81)

शीतकालीन वाचना

अब चतुर्मास हो गया पूर्ण, फिर भी हर आशा प्यासी थी।
मुनिवर के जाने की चर्चा, सुनके हर तरफ उदासी थी।।
सतबीस नवम्बर को नगरी, से एक भक्त दल जाता है।
गुरुवर विराग से शीतकाल, की आज्ञा लेकर आता है।। (82)



अब शीतकाल हो गया, शुरू शुभ ग्रंथराज का है वाचन।
श्री कार्तिकेय अनुप्रेक्षा पर, मुनिराजों के अध्यात्म वचन।।
इक दिन मुनिवर विमर्शसागर जी, ग्रंथ का वाचन करते थे।
मुनिवर विनम्रसागर जी अगले, दिन प्रतिपादन करते थे।। (83)

गुरुवर का शुभ आशीष फला

दिन चौदह माह दिसम्बर का, नगरी में उत्सव छाया था।
मुनिवर विमर्शसागर जी का, मुनि दीक्षा दिवस जो आया था।।
मध्यान्ह काल में रखा गया, था ये सारा आयोजन था।
मुनिवर विनम्रसागर जी का, जिसमें सुंदर संचालन था।। (84)

मुनिवर विमर्शसागर जी, की पिच्छी को फिर से बदलाया।
भैया राजीव ने उनकी, पिच्छी पाने का अवसर पाया।।
जो श्रावक श्रेष्ठ पदम चंद जी, के ज्येष्ठ पुत्र कहलाते थे।
पिच्छी के संग व्रत ब्रह्मचर्य, लेकर मन में हर्षाते थे।। (85)

भैया राजीव ने मुनिवर से, व्रत ब्रह्मचर्य स्वीकार किया।
गृह त्याग के मंगल भावों, का मुनिवर से शुभ संकल्प लिया।।
गुरुवर का शुभ आशीष, फला जीवन में संयम प्रगटाया।
मुनिवर विचिन्त्य सागर वन के, गुरु चरणों का आश्रय पाया।। (86)

आर्यिका विज्ञानमति दर्शनार्थ पधारी

इस शीतकाल के बीच नगर विज्ञानमति माता आईं।
मुनिराजों का करके, वंदन माता जी खूवई हर्षाईं।।
माताजी ने मध्यान्ह काल, मुनिवर से थोड़ी चर्चा की।
फिर आगे गमन किया, उससे पहले मुनिवर की अर्चा की।। (87)

गमन की बेला

अब चतुर्मास व शीतकाल, के बाद गमन बेला आई।
सारे ही नगर के लोगों, में तब घोर उदासी थी छाई।।
लगता था हमसे अपनी, कोई वस्तु छिनने वाली हो।
लगता था गुरुवर ही सच्चे, रिस्ते नाते सब जाली हों।। (88)

दिन चौदह मार्च को मुनिराजों, का गमन सुनिश्चित होना था।
लगता था भक्तों के हाथों, से जैसे सब कुछ खोना था।।
मध्यान्ह काल में काव्य, गोष्ठी का प्रोग्राम रचाया था।
मुनिवर विमर्श संग मुनि विनम्र, रचना सौरभ महकाया था।। (89)

तब शिक्षक श्री महेन्द्र द्वारा, शुभ हुआ सफल संचालन था।
पहले न हुआ कभी ऐसा, ये सफल श्रेष्ठ आयोजन था।।
सन्ध्या की बेला में मुनिवर, ने अब आगे को गमन किया।
मानो भक्तों की श्रद्धा से, भगवान किसी ने छीन लिया।। (90)

मुनिवर का गमन कराने को, थी दूर-दूर तक भीड़ खड़ी।
आँसु बनके सबकी आँखों से, झरती श्रद्धा कड़ी-कड़ी।।
क्या युवा पुरुष आबाल, वृद्ध महिलायें सब ही रोते थे।
सब भाग रहे थे मुनिवर जी, के पीछे वेसुध होते से।। (91)

श्रद्धा का सैलाब

हज्जारों लोग उमड़ते थे, जैसे सैलाव कोई आया।
कोई भी अपनी श्रद्धा को, उस क्षण में रोक नहीं पाया।।
ब्रह्मचारी श्री त्रिलोक भैया, ने मुनिवर जी से वहाँ कहा।
ऐसा बिहार इस नगरी से, मुनिवर जी पहले नहीं हुआ।। (92)

जेल में मुनि श्री

ए.डी.जे. श्री सुभाष जी, का मुनिवर से नम्र निवेदन था।
हो नगर जेल में उद्‌बोधन, मुनिवर का ये आवेदन था।।
फिर जिला जेल में मुनिवर का, इक दिन मंगल उपदेश हुआ।
हर कैदी के अंतस को मुनिवर, की वाणी ने खूब छुआ।। (93)

पं. सुमतप्रकाश दर्शनार्थ पधारे

मुनिवर विमर्श मुनिवर विनम्र, आगे को अब बढ़ जाते हैं।
करके विहार मुनिवर जी, अब शाढ़ौरा नगरी आते हैं।।
श्री सुमतप्रकाश जी, खनियाधाना वाले शाढ़ौरा आये।
मुनिवर से अल्प समय चर्चा, वंदन करके वो हर्षाये।। (94)

चाँदखेड़ी में महावीर जयन्ति

रस्ते में गुना व रूठियाई, छबड़ा कई ग्राम नगर आये।
मुनिवर अब चलते-चलते, अतिशय क्षेत्र चाँदखेड़ी आये।।
प्रभु आदिनाथ का प्रथम, दर्श सचमुच ही अतिशयकारी था।
मुनिराजों को दर्शन करके, तब हर्ष हुआ अति भारी था।। (95)

बदला भेष

बारह दिन तक दो संघ, रुके महावीर जयन्ति आई थी।
महावीरजयन्ति मुनिवर, के चरणों में खूब मनाई थी।।
भैया राजीव ने ड्रेस, बदलकर किया संघ प्रवेश यहाँ।
थी वीर जयन्ति मुनिवर का, पाया आशीष विशेष यहाँ।। (96)

कोटा पहुँचे कर्म काटने वाले

आदिबाबा का शुभ दर्शन, करके अब आगे जाते हैं।
सांगोद देवली होत भये, कोटा नगरी आ जाते हैं।।
कोटा उपनगर छावनी में, गुरुवर आके रुक जाते हैं।
गर्मी का एक मास गुरुवर, रह करके समय बिताते हैं।। (97)

सूरी विवेकसागर जी, अपने संघ सहित तब आये थे।
मुनिवर विमर्शसागर जी, से मिलकरके वो हर्षाये थे।।
इस ही उपनगर छावनी में, संयमसागर मिलने आये।
वात्सल्य पूर्ण तब मिलन हुआ, लखके श्रावक जन हर्षाये।। (98)

मुनिवर जी अब करके, बिहार बल्लभ बाड़ी आ जाते हैं।
श्रुत पाँचें पर्व यहाँ मुनिवर, को पाकर सभी मनाते हैं।।
क्षुल्लक विशुद्धसागर जी, तब कुछ लोगों को लेकर आये।
बूँदी में देवपुरा में, पचकल्याणक आवेदन लाये।। (99)

केशवराय पाटन की वंदना

मुनिवर विमर्शसागर जी ने, अपना मंगल आशीष दिया।
मुनिवर ने कोटा नगरी से, बूँदी की ओर बिहार किया।।
अब नगरी पाटन, में मुनिवर कोटा नगरी से आते हैं।
प्रभु मुनिसुव्रत की चरण, वंदना कर भारी हर्षाते हैं।। (100)

पंचकल्याणक देवपुरा

अब पाटननगरी से, मुनिवर तालेड़ा नगरी जाते हैं।
तालेड़ा से करके विहार, बूँदी नगरी आ जाते हैं।।
पचकल्याणक आरम्भ हुआ, नगरी में गुरुवर जी आये।
घटयात्रा के संग सारे जन, मुनिवर जी को लेने आये।। (101)

अगवानी करके मुनिवर की, आयोजन स्थल पर लाये।
फिर ध्वज आरोहण आयोजन, का करके सब जन हर्षाये।।
बूँदी की देवपुरा नगरी, तब देवपुरी सी लगती थी।
क्योंकि प्रभुके कल्याणक, की सौरभ शुभ यहाँ महकती थी।। (102)

बूँदी में मुनिवर

मुनिवर विमर्श मुनिवर विनम्रसागर जी, का सानिध्य रहा।
आयोजन ऐसा हुआ सफल, हर मन कहता था अहा-अहा।।
इस आयोजन के बाद, यहाँ से बूँदीनगरी आते हैं।
बूँदीनगरी के भक्त सभी, अगवानी भव्य कराते हैं।। (103)

उत्साहित नगरी थी सारी, गुरुवर सबके मन भाये थे।
चौराहों पर मुनिवर द्वय, के मंगल उपदेश कराये थे।।
क्या जैन अजैन सभी, मुनिवर की वाणी सुनने आते थे।
गुरुवाणी की शुभ गंगा में, सब डुबकी रोज लगाते थे।। (104)

चौमासे का पड़गाहन

फिर आठ दिसम्बर मुनि विनम्रसागर, दूजा मुनि दिवस रहा।
तब खूब मनाया था उत्सव, हर मन में था उत्साह रहा।।
अब काल निकट था चतुर्मास, का भक्त सभी जन आते थे।
श्रीफल अर्पित कर चतुर्मास, की शुभ्र भावना भाते थे।। (105)

बूँदी नगरी व नगर, केकड़ी रामगंजमण्डी वाले।
वो नगर निवाई अलोद ग्राम, के भक्त बड़े थे मतवाले।।
हाथों में श्रीफल ले लेकर, सबका ही एक निवेदन था।
मुनिराजों के चौमासे को सब, लोगों का पड़गाहन था।। (106)

रामगंज मण्डी चातुर्मास-2004

तब रामगंजमण्डी वालों को, मुनि विमर्श का साथ मिला।
ऐसे मुनिवर को पाकर के, मानों सबका सौभाग्य खिला।।
मुनिवर बूँदी से कोटा, होकर रामगंजमण्डी आये।
नगरी में उत्सव भारी था, मानों अब अच्छे दिन आये।। (107)

षोऽश पर्व पूर्ण

इस तरह पूर्ण अब सोलहवाँ, सोपान यहाँ हो जाता है।
शुभ रामगंजमण्डी चौमासा, शुरु यहाँ हो जाता है।।
अब आगे का जीवन वर्णन, मैं आगे तुम्हें सुनाऊँगा।
गुरु चरणों में करके वंदन, गुरु मंगल गीता गाऊँगा।। (108)

❑❑❑❑



राष्ट्रयोगी से मिले राष्ट्रसंत, उमड़े श्रावक आया बसंत
आचार्य विमर्शसागर जी एवं मुनि तरुणसागर जी का आत्मीय मिलन
(फिरोजाबाद-२०१४)



bhavlingi sant

"सप्तदश पर्व"

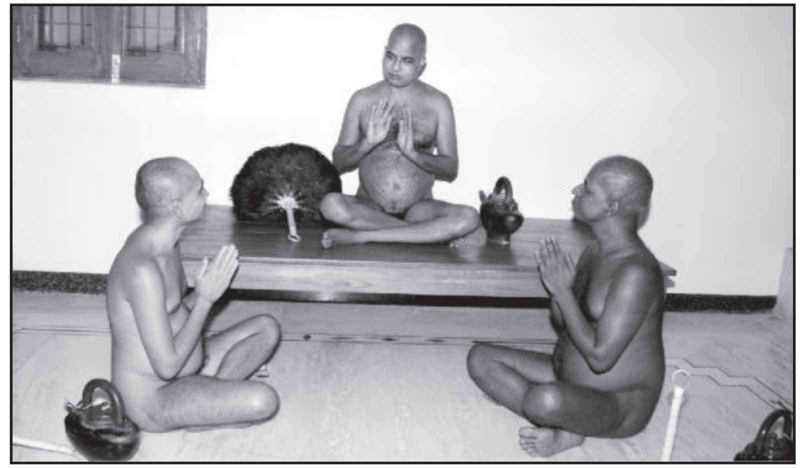
आचरण पर्व

संजीवनी भावलिंगी संत (महाकाव्य)

चित्र समूह - 5
आचार्य पद दर्शन



आचार्य पद स्थापना के समय आचार्य विरागसागर जी की संघस्थ आर्यिकाओं सहित
आर्यिका श्री सकलमती माताजी, आर्यिका श्री सत्यमती माताजी
(शिष्या आचार्य श्री विद्यासागर जी) एवं आर्यिका श्री भरतेश्वरी माताजी
(शिष्या आचार्य श्री भरतसागर जी महाराज)



पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज नवोदित आचार्य विमर्शसागर जी एवं
आचार्य श्री विनम्रसागर जी को रहस्य ग्रंथ की शिक्षाएँ देते हुए





हम सब हजारों भक्त साक्षी हैं आचार्य पदारोहण के (बाँसवाड़ा १२.१२. २०१०)



"सप्तदश पर्व"

"आचरण पर्व"

मंगलाचरण

(सवैया छंद)

जिसने जिब्भा के द्वारा प्रभु, नाम का सुमिरन रोज किया है।
संकट की घड़ियों में प्रभु ने, भक्तों का तब साथ दिया है।।
शब्दों का श्रृंगार समर्पित, भावों का उपहार दिया है।
जो कुछ पाया था चरणों से, वो चरणों में भेंट किया है।। (1)

भव दुख दावानल को प्रभु, के नाम ने पल में शांत किया है।
जो भव बन में भटके हैं, उनको शाश्वत विश्राम दिया है।।
जिसने प्रभु के नाम का, श्रद्धा से उर में श्रद्धान किया है।
उसने ही निज आतम के रस, का शाश्वत रसपान किया है।। (2)

केवल ज्ञान सी दृष्टि विमलता, पाके सब जग को जाना है।
ये व्यवहार कहाता है पर, निश्चय से निज को जाना है।।
हे वीतरागी देव! आपको, देखके हमने भी ठाना है।
आपकी भक्ति करते करते, आपके जैसा बन जाना है।। (3)

अपनी श्रद्धा और समर्पण, सब कुछ अर्पण करता हूँ?
आपकी भक्ति का शुभ, वैभव अपने उर में धरता हूँ।।
भक्ति के रंग में रंगता, उतना ही रोज निखरता हूँ।
शुभ आपके जैसा बन जाने, को आपका वंदन करता हूँ।। (4)

लिखने का बल देना गुरुवर

जिनने कुछ लिखने की, मुझको क्षमता दी है उनको वंदन।
जिनने मेरे भावों में, शक्ति भरदी है उनको वंदन।।
जिनके जीवन के ऊपर ये, गाथा लिखी उनको वंदन।
जिनने मेरे हाथों की हर, रेखा लिखी उनको वंदन।। (5)

जिनकी वाणी है मंगलमय, मंगलमय दर्शन है जिनका।
मंगलकारी भव दुखहारी, चरणों का पर्सन है जिनका।।
जिनकी दृष्टि है मंगलमय, मंगलमय उद्‌बोधन जिनका।
मंगलमय सादर चरणों, में वंदन अभिनंदन है मेरा।। (6)

नगर आगमन

चौपाई छंद

गुरु कथा को करता वंदन, आगे कुछ करता हूँ वर्धन।
कलम को संबल देना गुरुवर, लिखने का बल देना गुरुवर।।
दो हज्जार चार चौमासा, रामगंज मण्डी उल्लासा।
हर्षित थे सारे नर नारी, झूम रही थी नगरी सारी।। (7)

नगर पधारे गुरुवर प्यारे, गूँज रहे थे जय जयकारे।
भक्तों के मन डोल रहे थे, गुरु जयकारा बोल रहे थे।।
दानवीर कस्तूर चंदजी, सूरजमल व पारस मल जी।
जयकुमार जी श्री रमेश जी, केवल जी अनंत, पारस जी।। (8)

आदि सब गणमान्य लोग थे, गुरु अगवानी पुण्य योग थे।
बड़ी भव्य अगवानी करके, पहुँचे मंदिर जी लेकर के।।
गुरु पूर्णिमा आया उत्सव, गुरु चरणों में महा महोत्सव।
दो जुलाई का दिन था प्यारा, गुरु भक्तों का अजब नजारा।। (9)



चातुर्मास स्थापना

दिन जब चार जुलाई का आया, नगरी में तब उत्सव छाया।
चतुर्मास मुनिवर ने रचाया, भव्यों ने शुभ अवसर पाया।।
मुनिवर विश्वपूज्य सागर जी, क्षुल्लक श्री विशुद्ध सागर जी।
संग ब्रह्मचारी राजीव भैया, बाबूलाल भैया पहाड़िया।। (10)

श्री भक्तामर प्रशिक्षण शिविर

ग्यारह जुलाई का दिन आया, भक्तामर शिविर चलाया था।
तब दानवीर कस्तूर चंद जी, ने कलशा धरवाया था।।
इस शिविर में शामिल हो, सबने अपना सौभाग्य मनाया था।
शुद्ध उच्चारण का ज्ञान, यहाँ सबने गुरुवर से पाया था।। (11)

नूतन इतिहास रचा

अब समय बड़ा थोड़ा आगे, पन्द्रह अगस्त दिन आया था।
भारत विकाश परिषद ने तब, आयोजन एक कराया था।।
विद्यालय में मुनिवर जी, का पावन उपदेश कराया था।
इस आयोजन के लिये काव्य, मुनिवर ने एक रचाया था।। (12)

आगे चलकर इस काव्य ने, इक नूतन इतिहास रचाया था।
जो मध्य प्रांत के शिक्षा बोर्ड, ने अपना विषय बनाया था।।
कक्षा ग्यारह हिन्दी पुस्तक, मकरंद नाम से आती है।
जिस पुस्तक में मुनिवर जी की, यह शुभ रचना नजराती है।। (13)

ये प्रथम दिगम्बर संत हैं, जिनकी रचना ने गौरव पाया।
जिनकी रचना को शासन ने, पुस्तक में शामिल करवाया।।
गुरुवर की लेखनी से निकला, हर शब्द महा अतिशयकारी।
जिनधर्म प्रभावक हर रचना, हर रचना है मंगलकारी।। (14)

श्रीपार्श्वनाथ निर्वाण दिवस

प्रभु पारस का निर्वाण दिवस, बारह अगस्त को आया था।
सम्प्रति मुनि विश्वपूज्य सागर, का दीक्षा दिवस मनाया था।।
तब तीस आठ रक्षाबंधन, की पावन बेला आई थी।
मुनिवर से कथा सुनी सबने, आँखें सबकी भर आईं थीं।। (15)

श्री मज्जिनेन्द्र पूजन प्रशिक्षण शिविर

जब माह सितम्बर का आया, तब तीन से पन्द्रह तलक यहाँ।
श्री मज्जिनेन्द्र पूजन शिक्षण, का शिविर हुआ सम्पन्न यहाँ।।
तब तीन शतक इक अर्द्धशतक, लोगों ने इसमें भाग लिया।
पूजन विषयक विधियों का तब मुनिवर जी ने शुभ ज्ञान दिया।। (16)

बदली राह

इस शिवर में पात्र चयन हेतु, बोली इक दिन लगवाई थी।
तब श्रीकल्पना जी ने पाण्डु, शिला की बोली पाई थी।।
श्रीकल्पना जी विनोदजी, की पत्नि कहलाती थी।
धर्मपत्नि का वो पूरा अपना, कर्त्तव्य निभाती थीं।। (17)

घर में पूछे बिन यहाँ, कल्पना जी ने बोली लगाई थी।
कहीं घर पे डांट लगे न, इससे वो थोड़ा घबराईं थीं।।
घर पे जाकर विनोदजी को, सारा घटनाक्रम बतलाया।
बोले विनोद कोई बात नहीं, यह काम धर्म के ही आया।। (18)

चूँकि परिवार था अग्रवाल, वैसा कर्त्तव्य निभाते थे।
जिनमंदिर न आके विनोदजी, वैष्णवमंदिर जाते थे।।
पर उनकी पत्नि श्री कल्पना जैन, धर्म अपनाती थी।
जिनधर्म उपासक पति भी हों, वस यही भावना भाती थी।। (19)



इस विषय को लेकर मुनिवर, से उनने थोड़ी चर्चा की थी।
पति देव मेरे जिनधर्म उपासक, हो ऐसी अर्चा की थी।।
मुनिवर बोले दर्शन हेतु, कल जब मंदिरजी में आना।
तब अपने पतिदेव को भी, अपने ही साथ में ले आना।। (20)

कल तुम जब लेकर आओगी, तो हम उनको समझा देंगे।
जिनधर्म का पावन निर्मल पथ, हम उनको भी दिखला देंगे।।
अगले दिन श्री विनोद जी को, संग अपने लेकर आती हैं।
इक पतिदेव को देती हैं इक, श्रीफल स्वयं चढ़ाती है।। (21)

करके वंदन गुरुवर जी को, गुरु पादमूल में बैठ गये।
जो पहले कभी न हुये, आज वो ऐसे निर्मल भाव भये।।
पत्नि ने अपने स्वामी का, गुरुवर से परिचय करवाया।
यूँ लगा आज हो गये धन्य, जो गुरुवर का दर्शन पाया।। (22)

तब श्री विनोद जी मित्तल से, मुनिवर जी ने ये पूछ लिया।
बिन पूछे आपकी पत्नि ने, बोली का शुभ सौभाग्य लिया।।
बिन आपसे पूछे बोली, ली बतलाओ कैसा लगता है।
बोले विनोद जी खुश हूँ, मैं कब ऐसा भाग्य चमकता है।। (23)

बोले मुनिवर इस शिविर में, तुम दोनों को संग-संग आना है।
जोड़े से प्रभु आराधन, कर अपना सौभाग्य जगाना है।।
बोले विनोद महाराज श्री!, जैनों की पूजन की विधियाँ।
नहीं ज्ञान हमें कुछ भी गुरुवर, होगीं हमसे पग-पग त्रुटियाँ।। (24)

होगी गलती हमसे कोई, सब लोग वहाँ पर टोकेंगे।
होंगे कोई नाराज और, पूजन करने से रोकेंगे।।
हे गुरुवर! उन सबकी, बातें न हमें सहन हो पायेंगी।
इसलिये क्षमा मुझको कीजे, वस वहाँ कल्पना आयेगी।। (25)

मुनिवर बोले चिन्तित न हों, ये शिविर तो शिक्षण का ही है।
इस शिविर में जो भी होंगे, सबको विधि सिखाने का ही है।।
वर्षों से जो पूजन करते, उनकी कमियाँ नजरायेंगी।
पूजन की सम्यक् विधि है, क्या ये वहाँ सिखाई जायेंगी।। (26)

इसलिये आप निश्चिंत रहें, इस शिविर से लाभ बहुत होगा।
वो मिलेगा तुमको जीवन में, जो अब तक न पाया होगा।।
पर मुनिवर जी मैं तो अब, तक जिनधर्म से रहा अछूता हूँ।
अब आपके चरणों में आकर, जिनधर्म का कुछ में सीखा हूँ।। (27)

मुनिवर बोले हम आपको, टेबिल अलग वहाँ लगवायेंगे।
सारी पूजन की विधि वहाँ, हम तुमको अलग सिखायेंगे।।
हम जैसा तुम्हें बतायेंगे, तुम वस वैसा करते जाना।
आनंद के इस आयोजन में, आनंद बहुत तुमको आना।। (28)

हे गुरुवर! अब आशीष वरो, कोई भूल न हमसे हो जाये।
शुभ आपके मंगल निर्देशन, में हम भी कुछ शिक्षा पायें।।
गुरुवर बोले आशीष मेरा, तुम डरो न सब अच्छा होगा।
कल सुबह से धोती और, दुपट्टा पहिन के अब आना होगा।। (29)



अगले दिन श्री विनोद जी, प्रातः पाँच बजे आ जाते हैं।
सीधे आकर गुरु चरणों में, वो सादर शीष झुकाते हैं।।
गुरुवर ने आर्य भेष देखा, अपना मंगल आशीष दिया।
आगे कैसा क्या करना है, ये थोड़ा-सा संकेत दिया।। (30)

प्रभु भक्ति एवं गुरु आशीष का अतिशय

आया आनंद प्रथम ही, दिन आनंद महोत्सव में भारी।
प्रतिदिन उत्साहित होकर, के आने की करली तैयारी।।
मित्तल जी का इक बंधु, से अटका व्यापार पुराना था।
पैसा लगता था डूब गया, लगता न वापिस आना था।। (31)

पर प्रभु भक्ति व गुरु, भक्ति के भावों ने रंग दिखलाया।
उस अगले वन्धु का चलकर, खुद इनके पास फोन आया।।
भैया मैं अपने दो डम्फर, अब पास आपके भेज रहा।
सब कुछ हिसाब निपटा लेना, भैया जो बाकी बचा रहा।। (32)

तब श्री विनोद जी को, अचरज भारी गुरु चरणों आते हैं।
श्रीफल अर्पित कर श्रद्धा, से गुरुवर को बात बताते हैं।।
बोले गुरुवर आशीष, आपका इसमें कारण है भारी।
पर गुरुवर बोले भैया ये प्रभु, भक्ति की महिमा सारी।। (33)

इसलिये रोज अब प्रभु, दर्शन वंदन करने मंदिर आना।
प्रभु की भक्ति आराधन कर, प्रभु की भक्ति का फल पाना।।
तब ही विनोद जी ने मुनिवर, से जिन दर्शन का नियम लिया।
पक्के जैनी बनकर अपने, जिनशासन का सम्मान किया।। (34)

कहते विनोद जी गुरुवर ने, जीवन ये मेरा बदल दिया।
अब तक तो जीवन नीरस था, गुरुवर ने रस वरदान दिया।।
इस तरह गुरुवर के चरणों के, परम भक्त बन जाते हैं।
तब से लेकर अब तक गुरु, चरणों दौड़े-दौड़े आते हैं।। (35)

पर्वराज पर्यूषण

अब धीरे-धीरे और समय, आगे को बड़ता जाता है।
श्री पर्वराज पर्यूषण का, पावन अवसर आ जाता है।।
अठ्ठारह से सत्ताइस तलक, ये पर्व मनाया जाता है।
था माह सितम्बर पर्व क्षमावाणी, का उत्सव आता है।। (36)

जिनागम पंथी

यह कहते थे न तेरह में, न बीस पंथ में उलझे हैं।
जिन आगमपंथी ये साधक, सारी उलझन से सुलझे हैं।।
तेरा और बीस सभी पंथी, गुरुवर के चरणों आते थे।
सब राग द्वेष तज वीतरागता, की शीतलता पाते थे।। (37)

श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान

छब्बीस अक्टूबर से नगरी, में भारी उत्सव छाया था।
श्रीकल्पद्रुम विधान गुरुवर, के संग-संग रचवाया था।।
ब्रह्मचारी भैया जयनिशांत, इसको करवाने आये थे।
गुरुवर विराग आचार्य पदारोहण, का दिवस मनाये थे।। (38)

चातुर्मास निष्ठापन

अब माह नवम्बर बारह, तारिख पर्व दिवाली का आया।
प्रभु महावीर निर्वाण दिवस, पर लाडु का उत्सव पाया।।
गौतम का ज्ञान महोत्सव था, था चतुर्मास का निष्ठापन।
इक्कीस नवम्बर को मुनिवर ने, किया था पिच्छी परिवर्तन।। (39)



पिच्छिका परिवर्तन

पिच्छी संयम की रक्षक है, इससे जीवंत अहिंसा है।
इसको ही हाथों में रखकर, मुनिवर जी टालें हिंसा है।।
तब बहिन अनीता जी पत्नि, श्री महावीर जी की आईं।
मुनिवर विमर्शसागर जी की, पिच्छि पा खूवई हर्षाईं।। (40)

आदर्श महाकवि के चरणों में कवि

इस अवसर पर इस महाकवि, के चरणों कविगण आये थे।
अध्यात्ममयी कवि सम्मेलन, आयोजन खूब रचाये थे।।
इस तरह पूर्ण अब हुआ, यहाँ यह चतुर्मास मंगलकारी।
यह ज्ञान ध्यानमय संस्कारमय, चतुर्मास अतिशयकारी।। (41)

भानपुरा में वेदी प्रतिष्ठा

निकटस्थ है कस्वा भानपुरा, था वेदी प्रतिष्ठा आयोजन।
गुरुवर ने रामगंजमण्डी से, इस हेतु ही किया गमन।।
था एक दिसम्बर रामगंजमण्डी, से मुनिवर किया गमन।
फिर तीन दिसम्बर भानपुरा में, हुआ था मंगल शुभागमन।। (42)

मुनिवर विमर्श, मुनि विश्वपूज्य, संग थे क्षुल्लक विशुद्ध सागर।
संग बाल ब्रह्मचारी राजीव भैया, हर्षित गुरु को पाकर।।
युवकों में गुरुवर को पाकर, उत्साह गजब नजराया था।
गुरु चरणों को पाकर जैसे, उनने सब कुछ ही पाया था।। (43)

गुरुवर को नगरी में लाये, गुरु चरणों सभी समर्पित थे।
प्रातः से लेकर रात तलक, गुरुवर के चरणों अर्पित थे।।
आहार दान में रुचि बहुत, सारी समाज में दिखती थी।
चौके वालों की पन्ति लम्बी, बड़ी वहाँ पर गलती थीं।। (44)

मुनिवर की तब विधियाँ कठोर, मुश्किल से ही मिल पाती थीं।
पड़गाहन का यह दृश्य देखने, भीड़ उमड़ कर आती थीं।।
जिनसाधु की है चर्या क्या, लोगों ने सचमुच जाना था।
क्या जैन अजैन सभी ने निर्ग्रंथों, को ऊँचा माना था।। (45)

बारह से चौदह तलक दिसम्बर, में सुंदर आयोजन था।
था वेदी प्रतिष्ठा आयोजन, भैया निशांत संयोजन था।।
प्राचीन बहुत प्रतिमायें थीं, जिनकी शुद्धि करवाई थी।
मुनिवर के शुभाशीष से, नूतन वेदी पर पधराईं थीं।। (46)

सप्तम मुनि दीक्षा दिवस

मुनिवर जी का सप्तम मुनिदीक्षा, दिवस मनाया गया वहाँ।
तब बड़ी भव्यता से आयोजन, पूर्ण कराया गया यहाँ।।
ब्रह्मचारी जय भैया द्वारा, आयोजन का संचालन था।
गुरु भक्तों की गुरु भक्ति, का यह दृश्य बड़ा मन भावन था।। (47)

मुनिवर की पावन देह अहा, जो इस धरती पर लाये थे।
वो पूज्य पिता श्री सतनकुमार जी, आयोजन में आये थे।।
तब ब्रह्मचारिणी सरला, संगीता, आदि भी आईं थीं।
गुरु चरणों का वंदन करके, मन में खूवई हर्षाईं थीं।। (48)

राकेश जी नगर विधायक तब, इस आयोजन में आये थे।
श्रद्धा से वंदन कर गुरुवर, से शुभाशीष वो पाये थे।।
गुरुवर के चरण धुलाये थे, कस्तूर चंद जी बाबरिया।
कई नगर गाँव के गुरुभक्तों ने, गुरुवर का आशीष लिया।। (49)



नजर का असर

इस आयोजन के वाद असाता, कर्म उदय में आता है।
इससे मुनिवर के स्वास्थ्य पे, थोड़ा सा प्रभाव नजराता है।।
मुनिवर करते थे स्वाध्याय, इक वृद्धा माँ तब आती हैं।
गुरु चरणों में वंदन करके, वो सादर शीष झुकाती है।। (50)

फिर धीरे से वृद्धा माँ ने, मुनिवर की नरज उतारी थी।
फिर बोली धीरे से मुनिवर, को नजर लगी वहु भारी थी।।
ये स्वास्थ्य खराब हुआ मुनिवर, का इसी नजर के कारण था।
उस वृद्धा माँ ने पेश किया, श्रद्धा का श्रेष्ठ उदाहरण था।। (51)

फिर कर वंदन मुनिवर जी, को वृद्धा माँ वापिस जाती है।
और सांझ तलक तबियत, मुनिवर की पूर्ण ठीक हो जाती है।।
नजरों का पुद्गल पर, प्रभाव देखो कितना गहराता है।
पत्थर भी खोटी नजर लगे, टुकड़े-टुकड़े हो जाता है।। (52)

गुरु दक्षिणा

आयोजन सब सम्पन्न हुये, ब्रह्मचारी जयनिशांत जी ने।
इक बात कही जाते-जाते, मुनिवर विमर्शसागर जी से।।
बोले-मुनिवर! इन लोगों, ने वेदी तो पाँच बनाली हैं।
पर न पूजन करनेवाला, कोई न करनेवाली है।। (53)

इक बूढ़े दादाजी आकर, पूजा अभिषेक रचाते हैं।
पर निश्चित उनका समय, नहीं वो कब मंदिर जी आते हैं।।
मुनिवर जी आप प्रेरणा, दो सब पूजन करने को आयें।
कम से कम हर इक वेदी, पर दो चार लोग तो नजरायें।। (54)

मुनिवर ने कहा "देखते हैं", जैसा सुयोग बन जायेगा।
भगवान विराजे हैं, तो भक्तों का समूह भी आयेगा।।
मुनिवर ने आगे जाने का, अब मन में वहाँ विचार किया।
मंगल विचार का लोगों को, थोड़ा-थोड़ा संकेत दिया।। (55)

लोगों को जब ये पता चला, तो भक्ति भाव उमड़ आये।
तब शीतकाल का श्रीफल ले, गुरुवर के चरणों में आये।।
गुरुदेव आपके आने से, आई मंगल खुशहाली है।
आवाल वृद्ध सबके चेहरों, पर छाई धर्म की लाली है।। (56)

गुरुदेव आपके रुकने से, सब युवा संस्कारित होंगे।
जब धर्म का अमृत बरसेगा, संतप्त हृदय शीतल होंगे।।
गुरुदेव जिनालय हैं सूने इन, में अब आप उमंग भरो।
भक्ति से मंदिर गूँज उठें, गुरुवर भक्ति के रंग भरो।। (57)

कुछ दिन रुककर पूजन करने, की विधियाँ गुरुवर बतलाओ।
हम प्यासे हैं गुरुदेव, सभी वाणी से अमृत बरसाओ।।
गुरुवर बोले क्या सर्दी में, तुम सभी समय दे पाओगे।
हम आने को तैयार हैं, गुरुवर जब भी आप बुलाओगे।। (58)

तब पूजन शिविर लगाने, का मुनिवर ने शुभ आशीष दिया।
सब युवा खुशी से झूम उठे, गुरुवर का जय जयकार किया।।
पच्चीस दिसम्बर से मुनिवर, ने शिविर वहाँ प्रारंभ किया।
तब तीन सैकड़ा लोगों ने, उस शिविर में आके भाग लिया।। (59)



प्रातः की बेला में मुनिवर, पूजन की विधि सिखाते थे।
सन्ध्या में महाआरती का, आयोजन भव्य कराते थे।।
इस शिविर में नगरी के घर-घर, में उत्सव भारी छाया था।
वो मिला था प्यारे गुरुवर से जो, नहीं किसी से पाया था।। (60)

शोभायात्रा के संग हुआ इस, शिविर का भव्य समापन था।
जंगल में मोर नाचता हो, वैसे झूमें सबका मन था।।
गुरुवर ने 'गुरु दक्षिणा' में, पूजन के नियम दिलाये थे।
मंदिर में प्रभु पुजारी अब, हर वेदी पर नजराये थे।। (61)

राष्ट्र के नाम-एक पैगाम

छब्बीस जनवरी राष्ट्रपर्व का, दिन जब सन्मुख आया था।
तब नगर के चौराहे पर, गुरुवर का उपदेश कराया था।।
तब राष्ट्र के हित में मुनिवर, ने अपना संदेश सुनाया था।
उस समय हजारों बच्चों ने, गुरु शुभाशीष को पाया था।। (62)

गुरु की ओजस्वी वाणी से, वाणी का ओज बरसता था।
हर धर्म और मजहव का, वंदा सुनने उसे तरसता था।।
मुनिवर बोले सब धर्मों का, अपना-अपना ध्वज होता है।
उस धर्मध्वजा के लिये समर्पित, हर अनुयायी होता है।। (63)

लेकिन भारत का ध्वजा, तिरंगा सब धर्मों से ऊँचा है।
त्रय रंगों बीच समाया है, हर धर्म का सार समूचा है।।
हर धर्म का अनुयायी इसको, गर अपनी धर्मध्वजा माने।
हो जायें सभी अलगाव दूर, गर राष्ट्रधर्म को पहिचानें।। (64)

जब किसी जैन अनुयायी, को यह ध्वजा तिरंगा नजराये।
तब तीन रंग में सम्यक्, दर्शन ज्ञान चरित ही नजरायें।।
जब हिन्दु भाई ध्वजा, तिरंगा के त्रय रंगों को देखे।
तब त्रय रंगों में, ब्रह्मा विष्णु शिव शंकर को अवलोके।। (65)

मुस्लिम भाई जब भी देखे, तब सात, आठ, छै दर्शन हो।
हर ईसाई की नजरों में, वो होली गेट्स, गॉडसन हो।।
जब सबको अपने धर्म, तिरंगे के अंदर नजरायेंगे।
तब सम्प्रदाय के दंगे सारे, खुदी शांत हो जायेंगे।। (66)

भक्तामर गीता के जैसे, भारत की संविधान गाथा।
हर नगर के चौराहों पर हो, ये स्वाभिमान की अमर कथा।।
जिससे हर भारतवासी को, अपने अधिकार समझ आयें।
भारतवासी सच्चे अर्थों में, भारतवासी बन जायें।। (67)

मुनिवर के ये आदर्श वचन, हर जीवन के आदर्श बनें।
आदर्श बनें सब लोग, यहाँ ये हिन्दुस्तां आदर्श बने।।
हर गाँव शहर में गूँज, उठे आदर्शों की गौरव गाथा।
तब हिन्दुस्तान की धरती को, ये विश्व झुकायेगा माथा।। (68)

शिखर कलशारोहण

जनवरी माह उन्नतिस से, इकतिस तलक पुनः आयोजन था।
छोटा मंदिर कलशारोहण, ध्वजदण्ड, बिम्ब स्थापन था।।
मुनिवर का था सानिध्य, परम ब्रह्मचारी अनिल जी आये थे।
रथयात्रा संग आयोजन तब, सारे ही सफल कराये थे।। (69)



क्या आपमें जादू टोना है?

महिला बोली इक दिन गुरुवर, क्या आप में जादू टोना है।
सब दीवाने हो गये यहाँ, न जाने अब क्या होना है।।
गुरुदेव पधारे हो जबसे सब, दिन ही उत्सव वाले हैं।
गुरुदेव रात के भोजन के सबने, ही त्याग कर डाले हैं।। (70)

इसलिये हमारे काम सभी, गुरुदेव शीघ्र हो जाते हैं।
इसलिये आपकी भक्ति में, गुरुवर हम भी आ पाते हैं।।
मुनिवर बोले माताजी जैसे, घर के कारज निपटाये।
वस उसी तरह संसार काम भी, तुमरे शीघ्र निपट जाये।। (71)

जाहिद की गज़लें

गुरुवर ने काव्य श्रृंखला में, इक और कड़ी को जोड़ा था।
अपनी चिन्तन की धारा को, गुरुवर ने थोड़ा मोड़ा था।।
जाहिद की गज़लें एक कृति, गुरुवर ने यहाँ बनाई थीं।
गजलों के रूप में मुनिवर, से सौगात अनौखी पाई थी।। (72)

पंचमकाल में केवलज्ञान

इस शीतकाल में ही अद्भुत, घटना इक दिन घट जाती है।
गुरुवर की भाव विशुद्धि, को जो बार-बार बतलाती है।।
था शीतकाल का समय चरम, सबकी ही रूह कंपाती थी।
सर्दी के संग संग गुरु साधना, भी नित बड़ती जाती थी।। (73)

प्रतिदिन नगरी के युवा वृद्ध, गुरु की सेवा को आते थे।
प्रतिदिन श्रद्धा से सेवा कर, अपना सौभाग्य मनाते थे।।
इक रात को वैयावृत्ति कर, श्रावक जन सारे चले गये।
वैयावृत्ति के बाद गुरुवर, स्वाध्याय में लीन भये।। (74)

करते करते अध्ययन, गुरुवर को नींद वहाँ आ जाती है।
पाटे के पास चिटाई रखी, की रखी वहाँ रह जाती है।।
ठण्डी थी भारी बिन चिटाई, के मुनिवर जी सो जाते हैं।
लगते ही आँख वहाँ, गुरुवर जी सपनों में खो जाते हैं।। (75)

सपने में देख रहे गुरुवर, इक जंगल में वो जाते हैं।
जाते-जाते उनके मन में, कुछ यूँ विचार आ जाते हैं।।
वो देख रहे हैं लोकालोक, को आलोकित करने वाला।
कैवल्यज्ञान कुछ ही पल में, अब मुझको है होने वाला।। (76)

फिर सोचा मुझे ध्यान करने, इक जगह बैठ जाना होगा।
पर से हट करके निज स्वरूप, में मुझको रम जाना होगा।।
आगे देखा इक वृक्ष तले, वो आत्मध्यान में लीन हुये।
पद्मासन मुद्रा में राजित, वो निज स्वभाव तल्लीन हुये।। (77)

वो ध्यान में यूँ एकाग्र हुये, कर्मों की कडियाँ टूट पड़ीं।
केवल्यज्ञान होने की बेला, बिल्कुल सन्मुख आन खड़ी।।
बस उसी समय दूजी घटना, कमरे में तब घट जाती है।
जो पास में सोते थे क्षुल्लक, निद्रा उनकी खुल जाती है।। (78)

क्षुल्लक जी ने उठकर देखा, गुरुवर के ऊपर नजर गई।
इक पल में तब क्षुल्लक जी, आतम परिणतियाँ सिहर गई।।
ऐसी भीषण सर्दी में भी, गुरुवर ऐसे ही सोते हैं।
न ही चिटाई को ओड़ा है, न ही चिटाई पर सोते हैं।। (79)



पाटे के पास रखी चिटाई, को उनने वहाँ उठाया था।
फौरन चिटाई को लेकर के, गुरुवर को वहाँ उड़ाया था।।
जैसे चिटाई ऊपर आई, गुरुवर का सपना टूट गया।
होने ही वाला था गुरुवर को, कैवल्यज्ञान वो छूट गया।। (80)

निद्रा का सफर समाप्त हुआ, गुरुवर जी अब जग जाते हैं।
उठकर के मन ही मन, गुरुवर चिंतन करने लग जाते हैं।।
अहो! मुझे कैवल्यज्ञान, होने वाला था अभी यहाँ।
लेकिन इस काल की वाधा है, जो सपने में भी नहीं हुआ।। (81)

मुनिवर जी सोच रहे मन, में हो चेतन चाहे अचेतन हो।
इस जीवातम को परिग्रह तो, हर समय ही दुख निकेतन हो।।
जब तक है परिग्रह साथ, अरे केवल्यज्ञान न होता है।
परिग्रह संज्ञा के कारण ही, प्राणी भव-भव में रोता है।। (82)

अहिंसा की गूँज

मुनिवर ने अब आगे विहार, का मानस अपना बना लिया।
तब ही सरसों के जीवों ने, बहुतायत में था जन्म लिया।।
तब धर्म अहिंसा का पालन, जीवन्त हो उठा चर्या से।
मुनिवर ने तब आगे बिहार था, त्याग दिया दिन चर्या से।। (83)

सोलह दिवसीय शान्तिनाथ विधान

तब भानपुरा के भक्तों को, कुछ और समय का लाभ मिला।
तब सोलह दिन का शांतिनाथ, आराधन का शुभ पुण्य खिला।।
अब भानपुरा को कर, पावन मुनिवर आगे बढ़ जाते हैं।
छः मार्च को मुनिवर नगर, भवानी मण्डी में आ जाते हैं।। (84)

मुनिवर से मिले स्वभाव सागर

तब नगर भवानीमण्डी में, मुनिवर स्वभावसागर जी थे।
जिनका स्वभाव है शांत, सहज चेला विद्यासागर जी के।।
मुनिवर विमर्शसागर जी, की अगवानी करने आते हैं।
दोनों संघों का मिलन हुआ, सब श्रावक जन हर्षाते हैं।। (85)

अतिशय क्षेत्र कैथूली की वंदना

करके बिहार मुनिवर जी, अब कैथूली नगरी आते हैं।
यहाँ के अतिशयकारी बाबा, प्रभु पारसनाथ कहाते हैं।।
इस पावन भूमि पर भक्तों, ने एक विधान रचाया था।
गुरुवर के संग प्रभु भक्ति करके, अतिशय पुण्य कमाया था।। (86)

अर्हंतों सा रूप

करके विहार कैथूली से, मुनिवर रावतभाटा आये।
गुरुवर की पद रज पाने को, सब श्रावक जन दौड़े आये।।
मध्यान्ह काल में मुनिवर, ने जिनवाणी अमृत बरसाया।
सब स्वाध्यायी बंधु आये, सुन समयसार मन हर्षाया।। (87)

अगले दिन प्रातः आठ बजे, था धर्मसभा का आयोजन।
सब स्वाध्यायी बंधु आये, सुनने मुनिवर से आर्ष वचन।।
निश्चय-व्यवहार का आलम्बन, स्याद्वादमयी अध्यात्म वचन।
सम्यक् दर्शन पर मुनिवर का, मुखरित व प्रखर हुआ चिंतन।। (88)

मुनिवर जी कर उपदेश वहाँ, वापिस कमरे में आते हैं।
तब फूलचंद जी मुनिवर, के पीछे-पीछे आ जाते हैं।।
उनकी दोनों आँखों से, तब अश्रुधारायें बहतीं थीं।
ना देखे हैं ऐसे मुनिवर मानो, वह-वह के कहतीं थीं।। (89)

अपनी पत्नि से बोले वो, वंदन कर लो इन मुनिवर का।
पञ्चम युग में चौथे युग, सम साकार हैं ऐसे गुरुवर का।।
मुनिवर ने उनकी आँखों, में अश्रुधारा को जब देखा।
मुनिवर ने बड़े प्रेम से तब, क्या बात है बाबा से पूछा।। (90)

तब फूलचंद जी ने अपनी, आँखों के आँसु पोंछ लिये।
गुरुवर के चरणों में अपने, तब भाव उन्होंने व्यक्त किये।।
मुनिवर! दस प्रश्नों को लिखकर, मैं अपने संग में लाया था।
पूछूँगा धर्मसभा में ही, ये अहमभाव मन आया था।। (91)

लेकिन गुरुदेव! आपने जो, अध्यात्म सुधा थी बरसाई।
सब प्रश्न हो गये समाधान, मन में न कुछ शंका आई।।
फिर फूलचंद जी ने अपनी, आगे कुछ बात बताई है।
निर्ग्रंथों के मुख से ऐसी, अब तक न चर्चा पाई है।। (92)

जो बात है सच्ची मुनिवर जी, मैं आज आपसे कहता हूँ।
टोडरमल स्मारक के मैं, शिविरों में जाता रहता हूँ।।
उन शिविरों में गद्दी, पर जो विद्वान बिठाये जाते हैं।
आतम की वो गहरी-गहरी, सब बातें वहाँ बताते हैं।। (93)

पर आपके द्वारा जो, अध्यातम की गद्दी पर चर्चा है।
वैसी ही आपकी गद्दी, से नीचे चारित्र की अर्चा है।।
न कथनी में व करनी, में कोई भेद दिखाई देता है।
सच कहूँ आपमें अर्हंतों, सा रूप दिखाई देता है।। (94)

पर पंडित लोगों की, मुनिवर गद्दी पर ऊँची बातें हैं।
गद्दी से नीचे चर्या में, न दिखतीं वो सौगातें हैं।।
चालीस साल में प्रथम बार, ही ऐसा अवसर आया है।
निर्ग्रंथों के चरणों में जो, श्रद्धा से शीष झुकाया है।। (95)

अज्ञान भाव में जीते थे, अब ज्ञान रोशनी पाई है।
अब तक श्रद्धा की बातें थीं, सच्ची श्रद्धा अब आई है।।
मुस्कान मंद मुखमण्डल पर, मुनिवर सब सुनते जाते हैं।
मुख मौन मगर चारित्र मुखर, श्रद्धा अमृत बरसाते हैं।। (96)

चौषठ ऋद्धि विधान

मुनिवर जी सोलह मार्च को, अब आगे विहार कर जाते हैं।
श्रीपुरा ग्राम होकर गुरुवर, बोराब ग्राम आ जाते हैं।।
चौषठऋद्धि मण्डल विधान, का हुआ भव्य आयोजन था।
होली का अवसर था पावन, भक्तों का झूम रहा मन था।। (97)

गुरुवर आगे करके विहार, सिंगोली नगरी में आये।
चलते फिरते सिद्धों को पा, भव्यों के मन थे हर्षाये।।
गुरुवर की चरण सन्निधि में, मण्डल विधान रचवाया था।
सारी नगरी में भक्ति का शुभ, मंगल उत्सव छाया था।। (98)

इब्राहिम कुरैशी ने लिया आशीष

उत्सव में ओमप्रकाश जी, सकलेचा विधायक जी आये थे।
गुरुवर का शुभ आशीष, मिला वो फूले नहीं समाये थे।।
अल्पसंख्य आयोग के, जो अध्यक्ष भले कहलाये थे।
मुनिवर का शुभ आशीष, पाने इब्राहिम कुरैशी आये थे।। (99)



वीतराग मुद्रा का जादू

मुनिवर से समयसार सुनने, स्वाध्यायी जन सब आते थे।
शुद्धातम की गहरी चर्चा, गुरुमुख से सुन हर्षाते थे।।
मुनिवर की वीतराग मुद्रा, ने जादू कैसा कर डाला।
जो अब तक मुनि विरोधी थे, उनका भी हृदय बदल डाला।। (100)

चौकों में सबसे आगे अब, उनकी ही लगीं कतारें थीं।
उनके जीवन में भी आईं, श्रद्धा की गजब बहारें थीं।।
इक बार एक चौके में, मुनिवर को पड़गाया जाता है।
ले जाकर के उच्चासन पर, उनको बैठाया जाता है।। (101)

मुनिवर की वीतरागता की, वो लोग परीक्षा करते हैं।
कांजी स्वामी का इक फोटो, वो बाजू में ही धरते हैं।।
पर मुनिवर को इन बातों, से न कोई लेना देना था।
इन परम तपस्वी गुरुवर का, बस वीतरागता गहना था।। (102)

आहार हुआ निर्विघ्न वहाँ, नगरी में चर्चा आम हुई।
न राग द्वेष मुनिवर को है, समता मय चर्चा आम हुई।।
मुनिवर निज आतम में रमते, पर का न कोई काम अहा।
अपने निज शुद्धातम स्वरूप में, करते हैं विश्राम अहा।। (103)

नीराञ्जना

सिंगोली नगरी में अब, तक न कभी आरती होती है।
अज्ञानी जन यूँ कहते थे, कि इसमें हिंसा होती है।।
मुनिवर जब नगरी में आये, तो शुरु आरती वहाँ हुई।
कुछ अज्ञानी लोगों को, ये बातें नाहीं कुछ हजम हुई।। (104)

कुछ स्वाध्यायी बंधु आये, मुनिवरजी से चर्चा करने।
अपनी विपरीत धारणायें, मुनिवर के चरणों में धरने।।
बोले मुनिराज! आरती करने, में तो हिंसा होती है।
बोले मुनिवर, पूजा आदि, सावद्य क्रिया ये होती है।। (105)

बोले मुनिवर पूजा करने में, जल तो आप चढ़ाते हो।
उस जल को प्रासुक करने, को अग्नि भी रोज जलाते हो।।
पूछा मुनिवर ने एक बूँद, में कितने जीव कहाते हैं?
सब बोले मुनिवर! एक बूँद, में जीव असंख्य रहाते हैं।। (106)

बोले मुनिवर फिर-कहो!, रोज कितना जल व्यर्थ बहाते हो।
क्या उसमें हिंसा न होती, जो आरती व्यर्थ बताते हो।।
जिस दिन जल हिंसा का, लेकर के समाधान तुम आओगे।
उस रोज आरती हिंसा का, भी समाधान पा जाओगे।। (107)

फिन पुनः कहा मुनिवर जी, ने आचार्य हमारे कहते हैं।
जिन कामों में है पाप बहुत कम, पुण्य कोश भर देते हैं।।
वहु पुण्य कर्म हो लेश मात्र, सावद्य क्षम्य कहलाता है।
हो नफा अधिक व घाटा कम, वो काम किया ही जाता है।। (108)

पूजा आदि के करने में, हिंसा का नहीं प्रयोजन है।
मोहान्धकार व जन्मादि, रोगों का नाश प्रयोजन है।।
सबको अपने अपने भावों, के जैसा ही फल मिलता है।
इन पूजादि क्रिया के बिन, न मोक्ष महाफल मिलता है।। (109)



इसलिये सभी पूजादि की, क्रियायें भावों से करना।
किंचित सावद्य अगर होता, तो न विकल्प मन में धरना।।
गुरुवर से पाकर समाधान, सारे बंधु हर्षाये थे।
क्योंकि मुनिवर ने आतमहित, के मार्ग सही दिखलाये थे।। (110)

सप्तदश पर्व पूर्ण

अब गुरु चरणों का अभिनंदन, श्रद्धा से वंदन करता हूँ।
सत्रहवे इस सोपान को, अब मैं पूर्ण यहीं पर करता हूँ।।
आगे की जीवन लीला को, मैं आगे तुम्हें सुनाता हूँ।
गुरुवर के जीवन का लेखन, करके सौभाग्य मनाता हूँ।। (111)

❑❑❑❑





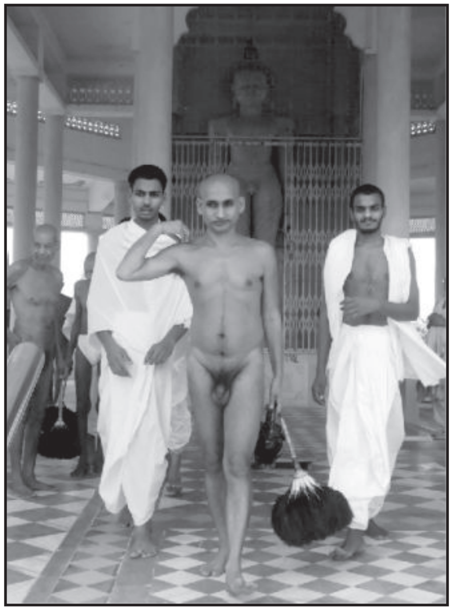
bhavlingi sant

"अष्टादश पर्व"

शील पर्व

संजीवनी भावलिंगी संत (महाकाव्य)

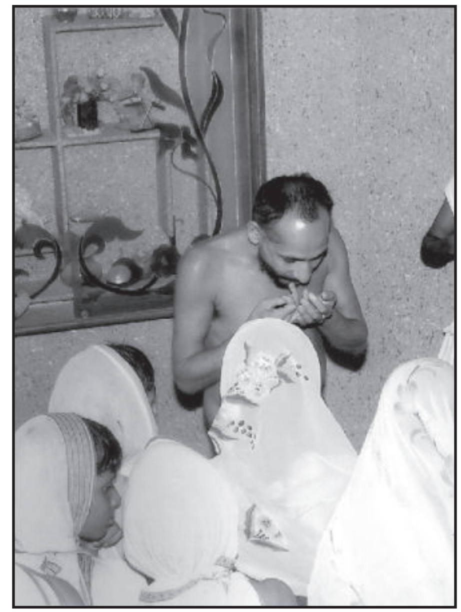
आहार चर्या दर्शन



छियालीस दोष बिना सुकुल,
श्रावक तनैं घर अशन को।



धन्य हो गये भाग्य हमारे, आज मिला पड़गाहन गुरु का।



इक बार दिन में ले आहार,
खड़े अलप निज पान में।



"अष्टादश पर्व"

"शील पर्व"

मंगलाचरण

जो स्वयंबुद्ध कहलाये थे, उपदेश किसी से नहीं सुना।
खुद ही आतम हित जान लिया, खुद ने ही शिव का मार्ग चुना।।
जिनने ज्ञानावरणादि कर्मों, की सत्ता को नाश दिया।
वंदन करता उन प्रभुवर को, निज गुण सत्ता उजियाश लिया।। (1)

आदिनाथ वंदना

अज्ञान अंधेरा नाश दिया, धरती पर ज्ञान प्रकाश किया।
जो जो श्री चरणों में आया, सबको आतम हित मार्ग दिया।।
प्रभु आदिनाथ के चरणों, में वंदन है भावों से मेरा।
वस यही भावना है मेरी, मिट जाये भव-भव का फेरा।। (2)

इस कर्म भूमि में प्रथम राज्य, का संचालन प्रभु आप किया।
फिर धर्मतीर्थ का संचालन, प्रभु दूर भवों का ताप किया।।
अपनी स्वतंत्र सत्ता के, आश्रय से स्वतंत्र पथ दिखलाया।
वंदन करता अपनी स्वतंत्रता, पाने को मन ललचाया।। (3)

प्रभु नाम मात्र का उच्चारण, पापों का क्षय कर देता है।
श्रद्धा से जिसने जाप किया, मुक्ति का शुभ फल देता है।।
प्रभु को वंदन कर भावों से, गुरुवर को शीष झुकाता हूँ।
गुरुवर जी की मंगल गाथा मैं, आगे तुम्हें सुनाता हूँ।। (4)

प्रतिमा पर फूल चढ़ा या फूल पर प्रतिमा?

इक दिन गुरुवर अपने कमरे, में तत्वों का चिंतन करते।
एकान्त वास चिंतवन लीन, दृष्टि को नाशा पे धरते।।
उस समय एक शंका लेकर इक, भव्य वहाँ पर आता है।
गुरु चरणों में वंदन करके, वो अपनी बात सुनाता है।। (5)

बोला मुनिवर जी! जब हम, दर्शन करने मंदिर जाते हैं।
तब किसी किसी प्रतिमा जी, पर हम फूल चढ़े वहाँ पाते हैं।।
तब फूल चड़ी प्रतिमा लखकर, श्रद्धा डगमग हो जाती है।
वंदन उनको न करे, या करें ? बात समझ न आती है।। (6)

मुनिवर बोले प्रतिमा पर, फूल चढ़े या प्रतिमा फूल चढ़ी।
इन दोनों में न बात मुझे, लगती है कोई खाश बड़ी।।
हम अपने घर से वीतरागता, का जब लक्ष्य लिये आये।
तो मंदिर जी में जाकर, के वस वीतरागता नजराये।। (7)

वह वीतरागता फूल चढ़ाने से, न खत्म हो जाती है।
शुभ समवशरण सा वैभव, होने पर भी वो नजराती है।।
इसलिये हमारा लक्ष्य हो, सम्यक् वीतरागता लखने का।
वस रागद्वेष से दूर वीतरागी, स्वभाव रस चखने का।। (8)

पूजन में पुष्प के भाव लिये, और चावल पीत चढ़ाते हो।
बोलों फल उन चावल का, या उन पुष्पों का तुम पाते हो।।
द्रव्यों से फल न मिलता है, सब भावों का फल पाते हैं।
जो जैसे भाव बनाते हैं, वो वैसे ही बन जाते हैं।। (9)

अप्रैल तीन का दिन आया, मुनिवर आगे बढ़ जाते हैं।
धनगांव, झांतला व थड़ौद, होकर चेची आ जाते हैं।।
श्री नेमिचंद चेची वालों की, भक्ति गजब निराली थी।
गुरु चरणों में उनकी श्रद्धा वस, अचरज करने वाली थी।। (10)

श्री शांतिनाथ मण्डल विधान, का आयोजन करवाया था।
तब विजयनगर से जैन समाज, का दल भी चेची आया था।।
विजयनगर में वेदीप्रतिष्ठा, हेतु नम्र निवेदन था।
गुरुवर का जब आशीष मिला, तो झूम रहा सबका मन था।। (11)

मुनि विप्रण सागर एवं ऐलक विनीतसागर से मिलन

अप्रैल सात के दिन मुनिवर ने, चेची से था गमन किया।
ठुकराई में जाकर मुनिवर विप्रणसागर, से मिलन किया।।
ऐलक विनीतसागर जी भी, संग उनके मिलने आये हैं।
जो वर्तमान में अब आचार्य विनीत, सिंधु कहलाये हैं।। (12)

तेरह अप्रैल को कर विहार, महुआ में मुनिवर आये थे।
प्रभु महावीर की जन्म जयन्ति, महुआ में मनवाये थे।।
तेइस अप्रैल को कर विहार, चंवलेश्वर पार्श्वनाथ आये।
प्रभु पार्श्वनाथ की अतिशयकारी, प्रतिमा के दर्शन पाये।। (13)

अब कदम बढ़े कुछ आगे, को तब शाहपुरा नगरी आई।
मुनिवर तेरह दिन रुके, वहाँ भक्तों की श्रद्धा रंग लाई।।
भीषण थी गर्मी चार दिनों, तक अंतराय हो गये यहाँ।
मुनिवर को अंतराय आने से, दुखी थी सभी समाज वहाँ।। (14)

विजयनगर में वेदी प्रतिष्ठा

मई का महीना अब आया था, तारिख तेईस सुहानी थी।
तब विजयनगर में मुनिवर की हो, रही भव्य अगवानी थी।।
चलते फिरते तीरथ जैसे, मुनिवर जी उनने पाये थे।
इसलिये सभी जन हर्षित थे, वो फूले नहीं समाये थे।। (15)

छब्बिस मई से अठवीस तलक था, वेदी प्रतिष्ठा आयोजन।
चन्द्राप्रभु का नूतन वेदी, पर भक्तों द्वारा स्थापन।।
पंडित जी रतनलाल काला, व लादूलाल कोठिया थे।
आयोजन सब सानंद हुआ, हर्षित नर सभी नारियाँ थे।। (16)

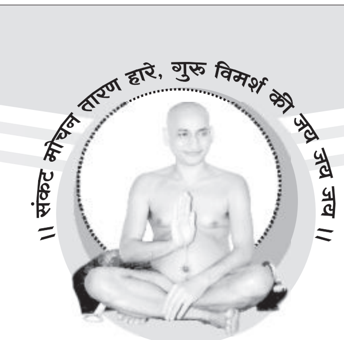
सिंगोली को मिली चातुर्मास की सुवास

था चतुर्मास का समय, निकट श्रद्धा भक्ति गहराई थी।
भक्तों की टोलियाँ हाथों में, ले लेकर श्रीफल आईं थीं।।
सिंगोली भानपुरा वाले, कोटा संग विजयनगर वाले।
श्रद्धा अपनी भी लाये थे, तब नगर भीलबाड़ा वाले।। (17)

मुनिवर जी अब करके, विहार चाँपानेरी आ जाते हैं।
इस चतुर्मास का शुभाशीष, सिंगोली वाले पाते हैं।।
सिंगोली चतुर्मास हेतु, सत्ताईस जून को गमन किया।
अब नगर भीलबाड़ा आये, कई ग्राम नगर को धन्य किया।। (18)

विमर्श के रंग में डूबा भीलबाड़ा

तब सुभाषनगर कॉलौनी में, मुनिवर की भव्य अगवानी की।
भैया अशोक अरविन्द जैन, सबने मिलके अगवानी की।।
तब सामूदायिक एक भवन, में पंच दिवस प्रवचन माला।
भारी उमड़ा सैलाब गजब, सबको अचरज करने वाला।। (19)



क्रम क्रम से इक इक कॉलौनी, में गुरुवर का उपेदश हुआ।
गुरुवर की मीठी वाणी ने, सबका ही अंतस पटल छुआ।।
इस ही क्रम में था आमलियों, की वाड़ी में भी उद्बोधन।
तब नगर वासियों के द्वारा था, चतुर्मास का पड़गाहन।। (20)

नौ दिन में बदला इतिहास

नगरी के वयोवृद्ध श्रावक, श्री सेठ वसन्ति लाल रहे।
मैं तुमको यहाँ बताता हूँ, जो शब्द थे उनने वहाँ कहे।।
बोले-मुनिवर चालीस साल, में प्रथम ये अवसर आया है।
जब एक साथ हर कॉलौनी, में ये उत्साह दिखाया है।। (21)

अब तक तो अलग-अलग, कॉलौनी चातुर्मास कराती थीं।
जिनको जो गुरुवर भाते थे, वो उनको लेकर आती थीं।।
पर आपकी वाणी ने गुरुवर, हर मन पे जादू कर डाला।
केवल नौ दिन में मुनिवर जी!, सारा इतिहास बदल डाला।। (22)

गुरुदेव आपकी सरल सौम्य, छवि सबके मन को भाई है।
इसलिये आज हर कॉलौनी, ने अर्जी यहाँ लगाई है।।
देकर के चौमासा गुरुवर, झोली हम सब की भर देना।
भावों से श्रीफल अर्पित है, गुरुवर निराश न कर देना।। (23)

मुनिवर ने शुभ आशीष दिया, इस बार अवस चौमासा हो।
निर्ग्रंथों के चौमासे की, पूरी तुम सबकी आशा हो।।
सिंगोली को चौमासा ये दे, चुके अतः मजबूरी है।
गरिमा रखना निर्ग्रंथों को, बचनों की बहुत जरूरी है।। (24)

अब आमलियों की बाड़ी से, मुनिवर ने आगे गमन किया।
जाकर के भक्तामर विधान में, शास्त्री नगर सानिध्य दिया।।
बारह जुलाई को कर विहार, मुनिवर जी नंदन वन आये।
तेरह जुलाई को मुनि विनम्रसागर जी, से मिल हर्षाये।। (25)

अनूठा आगमन

कई गाँव नगर को छोड़, बीच मुनिवर आगे बड़ते जाते।
सिंगोली वालों की खुशियों, के क्षण प्रतिक्षण बड़ते जाते।।
अठदस जुलाई का दिन आया, नगरी को बहुत सजाया था।
गुरुवर की अगवानी करने, सबने उत्साह दिखाया था।। (26)

महिलायें मंगल कलश लिये, केशरिया साड़ी थी तन पर।
पुरुषों के हाथों में ध्वज थे, रंगोली सजी थी हर दर पर।।
कहीं तोरणद्वार सजाये थे, कहीं मंगल चौक पुराये थे।
महिलायें मंगलचार करें सब, मिलकर खुशी मनाये थे।। (27)

सिंगोली चातुर्मास-2005

उपदेश हेतु सारी समाज ने, नूतन भवन बनाया था।
उस भवन का मुनिवर जी के, नाम पे नामकरण करवाया था।।
जिन दर्शन करके मुनिसंघ को, भवन में लाया जाता है।
चौमासे का फिर वहाँ, श्रीफल पुनः चढ़ाया जाता है।। (28)

इक्किस जुलाई को चतुर्मास, का मंगल ध्वज फहराया था।
वेगू के नेमिचंद जी ने, यह मंगल अवसर पाया था।।
कस्तूर चंद जी बाबरिया, जो रामंगजमण्डी वाले।
थे चतुर्मास का मुख्य कलश, वो स्थापन करने वाले।। (29)



भाई प्रमोद जी बाबरिया, ने सम्यक्‌दर्शन कलश लिया।
तब सम्यक्‌ज्ञान का तेजकुमार जी, मोहिवाल सौभाग्य लिया।।
भाई प्रकाश जी ने, सम्यक्‌चारित्र कलश धरवाया था।
निर्मल कुमार जी ने सम्यक्, तप का कलशा रखवाया था।। (30)

पंडित शैलेन्द्र शास्त्री ने, सुंदर संचालन किया वहाँ।
शुभ शास्त्र भेंट करने का, अवसर निर्मलजी ने लिया वहाँ।।
अठवीस जुलाई से मंगल, भक्तामर शिविर लगाया था।
शुद्ध उच्चारण भक्तामर का, मुनिवर ने खूब सिखाया था।। (31)

क्षमावाणी पर्व

आ गया पर्व अब पर्यूषण, दस धर्मों की रसधार वही।
स्वाध्याय, और उपदेश के, संग आयोजन की भरमार रही।।
फिर पर्व क्षमावाणी आया, हर दिल में क्षमा समाई थी।
श्वेताम्बर और दिगम्बर ने, मिल करके क्षमा मनाई थी।। (32)

मुनिवर की अमृतवाणी ने, अंतर के कालुष धो डाले।
आँखों में क्षमा का नीर लिये, सबने सब वैर मिटा डाले।।
फिर मुनिवर ने चौमासे में, पूजन का शिविर लगाया था।
जिसमें पूजन करने का सारा, विधि विधान बताया था।। (33)

पंडित जतीश भाई जी दर्शनार्थ पधारे

प्रातः की बेला में जिनभक्ति, का अमृत्व बरसता था।
मध्यान्ह काल में गुरुमुख से, तब समयसार रस झरता था।।
पंडित जतीशचंद जी मुनिवर, के दर्शन करने को आये।
गुरुमुख से सुनकर समयसार, पंडित जी भारी हर्षाये।। (34)

निर्ग्रंथ साधना का अतिशय

भगवान की भक्ति करने को, भक्तों का हृदय मचलता था।
सन्ध्या में महाआरती का, सुन्दर आयोजन चलता था।।
इस आयोजन के बीच में जब, तेइस तारिख का दिन आया।
तब सन्ध्या बेला में काले काले, बादल का दल आया।। (35)

हो रही झमाझम वारिस थी, आकाश में बादल छाये थे।
पर भक्तों की भक्ति को, वो किंचित न कम कर पाये थे।।
भक्तों का दल वारिश में, भी गुरुवर के कमरे में आया।
गुरुवर को महाआरती में ले, जाने का मन बतलाया।। (36)

मुनिवर बोले वारिश में, तो अब जाना न हो पायेगा।
क्योंकि न ईर्यासमिति, का इसमें पालन हो पायेगा।।
इस कारण महाआरती में, हम आज नहीं जा पायेंगे।
सब बोल उठे मुनिवर जी, हम दूजा रस्ता बतलायेंगे।। (37)

सन्मुख वाले घर का, रस्ता स्टेज पे जाके खुलता है।
गुरुदेव आपके कमरे से, सीधा पण्डाल में मिलता है।।
इसलिये परेशानी चलने, में गुरुवर कोई न आयेगी।
पर आपके चलने से गुरुभक्ति हम, सबको मिल जायेगी।। (38)

गुरुदेव प्रार्थना को सुनकर, उनके संग वहाँ पे जाते हैं।
"कर तू प्रभु का ध्यान", भजन गुरुवर जाके करवाते हैं।।
जब महाआरती करने को, भक्तों ने दीप जलाये थे।
तब ही आकाश में झूमझूमकर, मेघ वरसने आये थे।। (39)



इक ओर प्रभु की भक्ति, में सब सरावोर नर नारी थे।
इक ओर गगन से जलधारा, वरसाते बादल भारी थे।।
पण्डाल में पानी भरने से, पाइप मुड़ने लग जाता है।
पाईप मुड़ने से पाण्डाल, नीचे आने लग जाता है।। (40)

ये देख सभी जन घबराये, सब जय जयकार लगाते हैं।
मुनिवर विमर्शसागर जी, फौरन ध्यान लीन हो जाते हैं।।
पण्डाल हो गया था, गीला बिजली के तार भी छाये थे।
कोई तार टूट न जाये यहाँ, इससे सब जन घबराये थे।। (41)

पण्डाल जो गिरनेवाला था, वो इक पाटे पे लटक गया।
मुनिवर के ध्यान लीन होते, ही सारा मौसम पलट गया।।
मुनिवर के जय जयकारों से, धरती आकाश गुंजाया था।
मुनिवर की त्याग तपस्या से, ये चमत्कार नजराया था।। (42)

मुनिवर ने शुभ आशीष दिया, सबने श्रद्धा से सिर नाया।
निर्ग्रंथ साधना का अतिशय, यह साक्षात सबने गाया।।
अगले दिन सब समाज, बंधु गुरुवर के चरणों में आये।
श्रद्धा से गुरुवर का वंदन, करके सारे जन हर्षाये।। (43)

पूज्यों को श्रेय

गुरुदेव आप न होते, तो भारी दुर्घटना घट जाती।
इक तार टूटने से, गुरुवर जाने कितनी जानें जातीं।।
मुनिवर बोले यह चमत्कार, प्रभुवर की भक्ति का जानो।
ये सारा संकट अरहनाथ ने, दूर किया ऐसा मानो।। (44)

प्रभु भक्ति सम्मान में उनके, क्षमाभाव बहुमान में उनके।
प्रभु की महिमा बतलाने को, भाव लिखे शुभगान में उनके।।
मुनिवर जी ने इक कविता, में ये सारा ही हाल पिरोया।
अपने मन के भाव बीज को, कविता की भूमि में बोया।। (45)

वो गुरुवर की कविता प्यारी, मैं अब तुमको सुनवाता हूँ।
गुरुवर की भावसंपदा, से मैं अब परिचय करवाता हूँ।।
इसे मात्र कविता न जानो, भावों का श्रृंगार है प्यारा।
प्रभु भक्ति में श्रेष्ठ समर्पित, किया गया उपहार है प्यारा।। (46)

नाथ आज जब संकट आया।
तुमने धीरज हमें बंधाया।।

सांझ आज की थी अलवेली।
बनकर आई नाथ! पहेली।
मैं निर्बल सुलझा न पाया।
अरहनाथ ने बाधा झेली।
लखकर मूरत अरहनाथ की।
स्वामिन! संकट भी पछताया।।

उत्सव था प्रभु की भक्ति का।
भक्त-भक्त की अभिव्यक्ति का।।
कमठ कोई पानी ले आया।
किया प्रदर्शन निज शक्ति का।।
पाण्डाल में आकर उसने।
अपना ताण्डव खूब दिखाया।।

अरहनाथ की प्रतिमा प्यारी।
मन भावन है अतिशयकारी।।
पाण्डुकशिला पर शोभित होती।
अरहनाथ आतम हितकारी।।
क्षमा मांगता अरहनाथ से।
गर कर्त्तव्य निभा न पाया।।

हुआ शिविर सानंद समापन, किया गया सुंदर आयोजन।
था भारी जुलूस आयोजन, झूम रहा था सबका ही मन।।
आया दस अक्टूबर का दिन, भक्तामर का शिविर समापन।
पाई थी सबने जो शिक्षा ली, गुरुवर ने वहाँ परीक्षा।। (47)

मुनिवर की निस्पृहता

सत्रह अक्टूबर को, गुरुवर उपदेश सभा में जाते हैं।
तब निर्मल नेता माईक, पर सबको इक बात बताते हैं।।
बोले-गुरुवर विरागसागर, ने कुंथुगिरी जी तीरथ पर।
उस समय उपस्थित थी दो, सौ पिच्छि चौदह थे सूरिश्वर।। (48)

तब गुरुवर श्री विरागसागर, ने अपने प्रिय शिष्यवर को।
सूरिपद घोषित किया, वहाँ मुनिवर विमर्शसागर जी को।।
संग सिंगोली समाज को, गुरुवर ने संकेत दिया है ये।
मुनिवर सूरिपद स्वीकारें, उनको आशीष दिया है ये।। (49)

बोला है गुरुवर ने मुनिवर, से जाकर के ऐसा कहना।
आशीष मेरा है तुम, समाज से संस्कार करवा लेना।।
इसलिये हे मुनिवर!, चरणों में हम यही भावना करते हैं।
सिंगोली को ही ये अवसर मिल जाये अनुनय करते हैं।। (50)

इसलिये हे मुनिवर! हमरी, विमल भावना को स्वीकार करो।
इस आयोजन का अवसर, देकर के हम पर उपकार करो।।
उनकी इस बात को सुनते, ही ताली के नाद सुनाई दिये।
ऊँचे-ऊँचे हाथों को कर, मुनिवर के जय जयकार किये।। (51)

हम आसपास की बीस, गाँव की सब समाज बुलवायेंगे।
भारत के सब विद्वान हे, मुनिवर! आमंत्रित करवायेंगे।।
आयोजन बड़ी भव्यता से, हे मुनिवर! हम करवायेंगे।
अपने मुनिवर को सूरीपद, के आसन पर बैठायेंगे।। (52)

मुनिवर बोले गुरुवर ने, हममें श्रेष्ठ योग्यता आँकी है।
ये गुरु चरणों का है प्रताप, पर और निखरना बाँकी है।।
सूरिपद घोषित किया हमें, हम ऋणी हैं अपने गुरुवर के।
भव-भव में वो ही गुरु बनें, हम शिष्य बनें उन गुरुवर के।। (53)

अब अन्य किसी से या, समाज से संस्कार करवाने की।
गुरुवर ने बात कही है, जो वो बात नहीं हो पाने की।।
क्योंकि शिवपथ पर हमें, लगाने वाले हमरे गुरुवर हैं।
सिर पर भी संस्कार करने, वाले गुरुवर के ही कर हैं।। (54)



संकल्प हमारा है भैया!, जब संस्कार सर पे होगा।
जब भी होगा जैसे होगा, गुरुवर के ही कर से होगा।।
सिर पे न किसी का हाथ लगा, न आगे मैं रखवाऊँगा।
अपने गुरुवर के हाथों से, ही संस्कार करवाऊँगा।। (55)

गुरुवर जी ने अब तक, हमको तो मात्र श्रमण दीक्षा दी है।
बस रत्नत्रय पालन की, गुरुवर से हमने शिक्षा ली है।।
मैं अभी अगूँठा छाप हूँ, भैया सूरिपद के पालन में।
न गुरुवर से शिक्षा ली मैंने, इस पद के संचालन में।। (56)

सूरिपद की शिक्षा के बिन, सूरिपद को धारण करना।
कागज के फूल के जैसा है, इस पद का निर्वाहन करना।।
इसलिये प्रथम शिक्षा पद की, फिर बाद में ही दीक्षा होगी।
सब गुरु चरणों में छोड़ दिया, जैसी उनकी इच्छा होगी।। (57)

गुरु मुख से निस्पृहता बरसी, भक्तों ने जय जयकार किया।
भक्तों ने किया प्रयास मगर, मुनिवर ने न स्वीकार किया।।
मुनिवर के वचनों में अपने, गुरुवर के प्रति समर्पण था।
संकल्प अड़िग था मुनिवर का, गुरु चरणों में सब अर्पण था।। (58)

आई दीवाली

आ गया दिवाली का अवसर, श्रद्धा के दीप जलाये थे।
गुरुवर के संग श्रद्धा भक्ति, से वीरा के गुण गाये थे।।
था माह नवम्बर में दो, तारीख चतुर्मास का निष्ठापन।
इस तरह हुआ सानंद यहाँ, इस चतुर्मास का आयोजन।। (59)

श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान

फिर आठ नवम्बर गुरु विराग, का सूरीपद आरोह दिवस।
मुनिवर के संग सब भक्तों, ने था खूब मनाया हरष-हरष।।
इस ही अवसर पर, शुरु हुआ श्री सिद्धचक्र का आयोजन।
निर्ग्रंथ गुरु के पाद मूल, में सिद्ध प्रभु का आराधन।। (60)

पंडित श्री उदयचंद जी ने, ये आयोजन करवाया था।
पंडित शैलेन्द्र व हरिप्रसाद जी, ने भी हाथ बटाया था।।
सिद्धों के अनुपम गुण की, महिमा मुनिवर ने जब बतलाई।
सिद्धाराधन में सिद्धों के, सम बनने की उर में आई।। (61)

न छोड़ हमें जाओ गुरुवर

सोलह को पिच्छि परिवर्तन, पच्चीस को आगे जाते हैं।
व्यह्वल होकर सारे श्रावक, आँखों से नीर बहाते हैं।।
श्रद्धा के मोती बन बनकर, आँखों से आँसु बहते थे।
न छोड़ हमें जाओ गुरुवर, श्रद्धालुजन ये कहते थे।। (62)

नदिया जैसे निर्ग्रंथ मुनि, आगे को बढ़ते जाते हैं।
वो निर्मोही साधक उर, में न मोह कभी पनपाते हैं।।
होती प्रभात कहीं और, सांझ किसी और ठिकाने ढलती है।
इस तरह वीतरागी श्रमणों, की जीवन लीला चलती है।। (63)

रावतभाटा का लक्ष्य लिया, मुनिवर आगे बढ़ जाते हैं।
छब्बीस नवम्बर कर विहार, बोराव गाँव आ जाते हैं।।
तब भैंसरोड़गढ़ श्रीपुरा, होकर रावतभाटा आये।
रावतभाटा के भक्त सभी, मुनिवर को पाकर हर्षाये।। (64)



अहिंसा सर्किल का शिलान्यास

मुनिवर के नगर आगमन, पर नगरी को इक सौगात मिली।
तब वहाँ "अहिंसा सर्किल", की चौराहे पर थी नीव रखी।।
अध्यक्षा नगरपालिका की, लीला शर्मा भी आईं थीं।
पंडित श्री पवन शास्त्री ने सारी ही विधि कराई थी।। (65)

श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान

फिर बना विशाल जुलूस, वहाँ मुनिवर जी को मंदिर लाये।
मुनिवर को लाये मंदिर में, प्रभु के शुभ दर्शन करवाये।।
तब माह नवम्बर चलता था, उन्तिस तारिख का दिन आया।
श्रीकल्पद्रुम मण्डल विधान, का आयोजन था रचवाया।। (66)

पाटौदी श्रीराजमल जी, कोटा समाज से आये थे।
सन दो हजार छैः के, चौमासे के शुभ भाव सजाये थे।।
मुनिवर बोले जब चौमासे, का समय निकट आ जायेगा।
तब योग कहाँ के जीवों, का बनता है देखा जायेगा।। (67)

अब कल्पद्रुम मण्डल विधान, का आयोजन प्रारंभ हुआ।
प्रभु भक्ति संग अध्यात्म, देशना का उपक्रम आरंभ हुआ।।
दो समय गुरुवर की, वाणी भव्यों की प्यास बुझाती थी।
क्या जैन अजैन सभी के मन, गुरु की वाणी हर्षाती थी।। (68)

संयम दिवस का त्यौहार

सानंद हुआ सम्पन्न महोत्सव, सबका मन हर्षाया था।
अब पारसनाथ जिनालय में, गुरुवर का संघ पधराया था।।
दस-चार दिसम्बर दिन आया, मुनिवर का दीक्षा दिवस रहा।
भारी उत्सव के साथ मनाया, भक्तों का मन हरष रहा।। (69)

समर्पण के स्वर

मुनिवर द्वारा गुरुभक्ति से, प्रेरित हो जिसको लिखा गया।
उस कृति "समर्पण के स्वर", का भी भव्य विमोचन किया गया।।
कल्याण भाई अध्यक्ष, वहाँ के उनने चरण धुलाये थे।
तब शास्त्र भेंट कर अजित, और संजय जी मन हर्षाये थे।। (70)

कोटा सिंगोली भानपुरा, बूँदी बिजौलिया, विजयनगर।
तब रामगंजमण्डी वाले, वोराब, भिण्ड व अशोकनगर।।
तब नगर भीलवाड़ा, चेची से भक्त बहुत से आये थे।
गुरुवर का दीक्षा दिवस, मनाकर फूले नहीं समाये थे।। (71)

बरषा अध्यात्म का अमृत

फिर रावतभाटा की समाज, ने शीतकाल अवसर पाया।
मुनिवर ने अपनी वाणी से, अध्यात्म का अमृत बरसाया।।
प्रातः से लेकर सांझ तलक, बस ज्ञान की चर्चा होती थी।
मुनिवर की वाणी भव्यों का, अज्ञान अंधेरा खोती थी।। (72)

मुनिवर के ज्ञान के वैभव, को सब देख देख हर्षाते थे।
जो मुनि दर्शन न करते थे, वो सब सुनने को आते थे।।
आगम के गूढ़ रहस्यों, को मुनिवर पल में सुलझाते थे।
प्रतिदिन नूतन नूतन बातें, मुनिवर सबको समझाते थे।। (73)

कमण्डलु पकड़ने का रहस्य

इक दिन प्रातः पंडित संजय, जंगल मुनिवर को ले जाने।
हाथों में लिया कमण्डल, व तैयार हुये संग-संग जाने।।
मुनिवर ने देखा वहाँ, कमण्डल की टोंटी आगे पाई।
मुनिवर बोले टोंटी पीछे, करके चलिये संजय भाई।। (74)



संजय जी बोले प्रथम बार, ही हाथ कमण्डल आया है।
हम लोगों का मुनिराजों, से नाता न कभी जुड़ पाया है।।
मुनिवर बोले है बात, भली जो हाथ कमण्डल आया है।
पुण्यों से भैया संजय जी, तुमने सौभाग्य ये पाया है।। (75)

जब आज कमण्डल लिया, हमारा कल तुम अपना भी लोगे।
निर्ग्रंथ दशा को प्रगटाकर, पर्याय को पावन कर लोगे।।
बिन पिछी कमण्डल के, भैया संसार का अंत नहीं होता।
निर्ग्रंथ दशा अपनाये बिना, भव-भव का फेरा न खोता।। (76)

इस तरह कमण्डल लेने का, कारण क्या मुनिवर बतलायें।
क्या इसमें भेद छिपा भारी, मुनिवर जी हमको समझायें।।
मुनिवर बोले जब कभी समाधि, का अवसर आ जाता है।
तब वहाँ कमण्डल की टोंटी, आगे कर जाया जाता है।। (77)

संजय जी बोले हे गुरुवर, की भूल बड़ी भारी हमने।
मुनिवर बोले कोई बात नहीं, न जानबूझ कर की तुमने।।
जब तक गलती न कोई हो, तब तक सुधार कैसे होगा।
गुरु के बिन भव्यों का भैया!, जग में उद्धार नहीं होगा।। (78)

वेदी प्रतिष्ठा बूँदी

इस ही प्रवास में बूँदी से, श्रावक जन कुछ आ जाते हैं।
बूँदी में वेदी प्रतिष्ठा, का आयोजन वहाँ बताते हैं।।
भैया श्रीश्याम के संग, आये थे लालचंद पटवारी जी।
गुरुवर ने जब आशीष दिया, तब मन में खुशियाँ भारी थीं।। (79)

पात्रदान की योग्यता

जनवरी अठारह आई तब, मुनिवर ने मंगल गमन किया।
श्रीरत्नत्रय मण्डल विधान, बोराब गाँव आशीष दिया।।
बोराव से पहले भैंसरोड़गढ़, रस्ते में आ जाता है।
आहार दान का लाभ सहज, उस नगरी को मिल जाता है।। (80)

थे भाई मुमुक्षु फूलचंद, जो उस नगरी में रहते हैं।
गुरुवर के चरणों में आकर, वो अपनी बात यूँ कहते हैं।।
गुरुवर हमरे भी भाव बने, चौका घर पे लगवायेंगे।
चालीस साल के बाद, किन्हीं निर्ग्रंथों को पड़गायेंगे।। (81)

मेरे है गुरुवर भाव बड़े, पर्याय की पर लाचारी है।
इक हाथ में दो अंगूठे हैं, ये बड़ी समस्या भारी है।।
तुम ही बतलाओ हे गुरुवर, क्या पात्र दान दे सकता हूँ।
निर्ग्रंथों के कर में अहार दे, पुण्य लाभ ले सकता हूँ।। (82)

मुनिवर बोले क्या बतलायें, सब कुछ तो आप जानते हैं।
आगम में जो कुछ लिखा, हुआ उसको भी आप मानते हैं।।
जो अधिक अंग वाले, होते या हीन अंग हो जाते हैं।
वो पाणीपात्र में मुनिराजों, को दान नहीं दे पाते हैं।। (83)

राष्ट्र के नाम संदेश

छब्बीस जनवरी को आया, गणतंत्र दिवस का शुभ अवसर।
तब सिंगोली में राष्ट्रनाम, संदेश दिया था मुनि प्रवर।।
दस तीन फरवरी को, मुनिवर जी बूँदी नगरी में आये।
फरवरी अठारह-बीस, तलक वेदी प्रतिष्ठा करवाये।। (84)



कोटा समाज का पुनः पुनः निवेदन

कोटा समाज ने आकर के, फिर पुनः निवेदन कीना था।
अध्यक्ष राजमल पाटौदी, ने श्रीफल चरणों दीना था।।
सन दो हजार छैः का, चौमासा कोटा में करना गुरुवर।
कोटा के भक्तों की खाली, झोली को भी भरना गुरुवर।। (85)

अब रजतगृह कॉलौनी से, बाजार नागदी गुरु आये।
त्रय दिन तक शुभ मंगल, विधान गुरुदेव यहाँ पर करवाये।।
अठबीस फरवरी को कोटा, से पुनः निवेदन आया था।
महावीर जयन्ति में गुरुवर, को भक्तों ने पड़गाया था।। (86)

समंदरों पे बरसते हुये गुजर जाना

जब चार मार्च का दिन आया, तब गमन की बेला आई थी।
तब गगन से मेघों ने जमकर, खूबई वर्षा वरषाई थी।।
सब बूँदी वाले कहन लगे, अब गमन नहीं हो पायेगा।
पानी इतना है अधिक कि जाना, भी मुश्किल हो जायेगा।। (87)

मुनिवर बोले निर्ग्रंथों के जिस, ओर कदम बड़ जाते हैं।
सागर खुद रस्ता देते हैं, पर्वत चरणों झुक जाते हैं।।
हमरे गुरुवर ने कुछ, हमको आशीष दिया ऐसा भाई।
कोई भी ताकत निर्ग्रंथों को, रोक कभी भी न पाई।। (88)

गुरुवर की लिखी हुई, पन्ति में तुमको यहाँ सुनाता हूँ।
निर्ग्रंथ बुलन्दि भावों की, मैं तुमको यहाँ बताता हूँ।। (89)

सफर में खार मिलें तो न तुम ठहर जाना।
मिले जो आग का दरिया तो पार कर जाना।।
बनो तो ऐसे ही बादल यहाँ गगन भेदी।
समन्दरों पे वरषते हुये गुजर जाना।।

मुनिवर बोले है समय अभी तुम साढ़े चार तो बजने दो।
मंगल विहार होगा भैया, बाजे विहार के बजने दो।।
जैसे ही साढ़े चार बजे, वारिस फौरन रुक जाती है।
निर्ग्रंथ साधना के आगे श्रृष्टि, भी तब झुक जाती है।। (90)

नगरी अलोद को बूँदी से, गुरुवर विहार कर जाते हैं।
बूँदी वाले नम आँखों से, गुरु की विदाई कर पाते हैं।।
करके विहार तब पाँच, मार्च गुरुवर अलोद में आये थे।
चलते फिरते महावीरा को, पाकर जन-जन हर्षाये थे।। (91)

अलोद में सिद्धचक्र

फागुन महिने में पर्व आष्टान्हिक, जब पावन आया था।
तब सिद्धचक्र मण्डल, विधान भक्तों ने वहाँ रचाया था।।
तब सात मार्च से सोलह, तक सिद्धों का आराधन कीना।
सबको ही रुचिकर लगता था, गुरुमुख से धर्मामृत पीना।। (92)

पंडित दीवान पवन जी, ने ये आयोजन करवाया था।
तब अनिल शास्त्री जी ने, भी पूरा सहयोग निभाया था।।
श्रीमहेश पटवारी ने, सौधर्म इन्द्र बन पुण्य लिया।
उपदेश सभागृह का भूमिपूजन, भी सबने वहाँ किया।। (93)



महावीर जयन्ति का अनुरोध

फिर बीस मार्च को कर, विहार इक्कीस धोवड़ा पधराये।
कोटा समाज से श्रावक, दल अध्यक्ष राजमल जी आये।।
महावीर जयन्ति कोटा में, हो पुनः पुनः अनुरोध किया।
गुरुवर ने परख लिया भावों, को शुभ मंगल आशीष दिया।। (94)

आवाँ के शान्ति बाबा

वाईस मार्च को ग्राम धोवड़ा, से बिहार कर जाते हैं।
पच्चीस मार्च अतिशयकारी, आवां नगरी आ जाते हैं।।
प्रभू शान्तिनाथ की श्वेत, वर्ण अतिशयकारी प्रतिमा पावन।
दर्शन से सब दुखदर्द मिटें, जीवन बन जाता है सावन।। (95)

दिन पाँच रूका था संघ यहाँ, फिर मंगल किया विहार वहाँ।
उन्तीस मार्च का दिन था, वो जब श्री गुरुवर ने गमन किया।।
करके बिहार तब मुनिवर जी, शुभ नगर देवली में आये।
निर्ग्रंथों का दर्शन पूजन, वंदन कर श्रावक हर्षाये।। (96)

मुनि विनम्रसागर जी से मिलन

हिन्डोली नया गाँव आया, फिर बूँदी नगरी आई थी।
मुनिवर के नगर आगमन, पर सारी नगरी उमगाई थी।।
मुनिवर विनम्रसागर जी को, भी आज नगर में आना था।
दो संतों के इस महामिलन, का ही हर ओर तराना था।। (97)

लघुभ्राता जब मुनिवर विनम्र, मुनिवर विमर्श से गले मिले।
लगता था ज्यों सतयुग आया, हो राम से भाई भरत मिले।।
वात्सल्य भरा यह महामिलन, लखकर श्रावक भी धन्य हुये।
लगता था कई जन्मों के, तब इकत्रित आकर पुण्य हुये।। (98)

मंगल उद्बोधन संतों का, सुन प्रेम एकता गहराई।
कई दसकों से टूटी समाज, अब एक सूत में बंध पाई।।
दोनों ही मुनिराजों का, इक चौके में ही आहार हुआ।
दोनों की प्रेमपूर्ण चर्या से, प्राणवंत तब प्यार हुआ।। (99)

अप्रैल पाँच का दिन था, ये यादों में सबने बसा लिया।
छैः को मुनिवर विमर्शसागर जी, ने आगे को गमन किया।।
करके विहार तब, रजतगृह कॉलौनी में गुरुवर आये।
जिनमंदिर पर नूतन शिखरों का, शिलान्यास तब करवाये।। (100)

कोटा आगमन

अब देवपुरा से तालेड़ा, होकर के नया गाँव आये।
फिर कोटा के ऋद्धि सिद्धि, कॉलौनी में मुनिवर आये।।
ऋद्धि सिद्धि से अब कोटा, नगरी में भव्य आगमन था।
अप्रैल वो नौ का दिन प्यारा, हर्षित कोटा में जन-जन था।। (101)

अगवानि करने महापौर, मोहन जी वहाँ पधारे थे।
गुरुवर के पावन चरणों में, जल के कलशा वो ढारे थे।।
मुनिवर की अगवानि करके, सब गीता भवन में आये थे।
मुनिवर ने था उपदेश दिया, सबके ही मन हर्षाये थे।। (102)

महावीर जयन्ति

दस तारिख को विज्ञाननगर, ग्यारह को रामपुरा आये।
महावीर जयन्ति का जुलूस, प्रारंभ यहाँ से करवाये।।
मैदान सी.ए.डी. में जाकर, महावीर जयन्ति आयोजन।
मुनिवर की प्रशम मूर्ती में, होता था वीर प्रभु दर्शन।। (103)



मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी, इस आयोजन में आये थे।
संसदीय सचिव भवानी जी, इसमें गये बुलाये थे।।
तब ओमजी नगर विधायक थे, सांसद कृपालानि आये थे।
मुनिवर की चरण वंदना कर, आशीष सभी वो पाये थे।। (104)

मुनिवर बोले प्रभु महावीर, के पंचशील अपनाये हम।
खुद जियो सभी को जीने, दो वीरा का पथ अपनाये हम।।
यह विश्व अहिंसा महावीर की, जिस दिन भी अपनायेगा।
हिंसा आतंक तबाही का, सब खेल खत्म हो जायेगा।। (105)

अध्यक्ष राजमल जी के, संग सारी समाज ने आकर के।
चौमासा अगला कोटा में, हो यही भावना भाकर के।।
श्रीफल अर्पित कर किया, निवेदन गुरुवर जी आशीष वरो।
चौमासा दो हजार छैः का, कोटा में करके धन्य करो।। (106)

छैः सात दिना तक नसियां जी, में मुनिवर ने था वास किया।
सबको अपने उपदेशों से, मुनिवर ने शुभ्र उजास दिया।।
पुनः निवेदन चौमासे का, नसिया जी में था कीना।
मुनिवर ने मौन वहाँ रहकर, आशीष दिया भीना-भीना।। (107)

अंतस में जगा वैराग्य

थी धर्म परायण इक बहिना, नसिया जी में ही रहती थी।
बहिना का नाम था आशाजी, हित की ही आशा रहती थी।।
मुनिवर के दर्शन पूजन वंदन, करने को नित आती थीं।
मुनिवर के उपदेशों को, सुन जीवन को नित्य सजाती थीं।। (108)

इक दिन आकर के कमरे, में मुनिवर से वो बहिना बोली।
अपने अंतस की भावदशा, मुनिवर जी के सन्मुख खोली।।
गुरुदेव आपका प्रथम, दर्श महावीर जयन्ति दिन कीना।
उस वीतराग मुद्रा ने, अंतस में वैराग्य जगा दीना।। (109)

संघ में बहिनों को रखने से इन्कार

नाशा दृष्टि कर आप, मंच पर जब गुरुदेव विराजे थे।
मेरी नजरों में आप, वहाँ महावीर प्रभु से साजे थे।।
वो वीतरागता ही गुरुवर, भीतर तक हमको भाई है।
हम भी अपना कल्याण करें, ये शुभ्र भावना आई है।। (110)

उस बहिन ने थोड़ा रुक करके, फिर आगे बात बढ़ाई थी।
संघ में बहिनों को रखने, की तब अर्जी वहाँ लगाई थी।।
बोली गुरुदेव संघ में क्या, बहिनों को आप न रखते हैं?
मुनिवर जी मुस्काकर, बोले-बहिनों को साथ न रखते हैं।। (111)

बहिना बोली गुरुदेव, अगर कल्याण कोई करना चाहे।
संसार की राहों को तजकर, शिव मारग को धरना चाहे।।
तब आपको अपने साथ, सभी का ध्यान वहाँ रखना चाहिये।
बहिनों को भी हे गुरुवर जी, अपने संघ में रखना चाहिये।। (112)

मुनिवर बोले कल्याण अगर, करना है तो आशीष मेरा।
पर संघ में बहिनों को रखने, का किंचित नहीं विचार मेरा।।
लेकिन गुरुदेव आपको, अब थोड़ा विचार करना होगा।
अपने संग भव्यों का बेड़ा, गुरुदेव पार करना होगा।। (113)



मुनिवर बोले गुरुवर, विरागसागर जी हैं प्यारे प्यारे।
सब भव्यों को भवसागर, से गुरुवर जी हैं तारणहारे।।
गुरुवर के संघ माताजी का, भी संघ शोभा को पाता है।
बहिनों के लिये उचित सबसे, स्थान नजर वो आता है।। (114)

मुनिवर के ये सुनकर विचार, वो बहिन शांत हो जाती है।
अपने वैरागी जीवन के, वो चिंतन में खो जाती है।।
तब तक उपदेश का समय, हुआ मुनिवर उपदेश को जाते हैं।
अपनी करुणामयी वाणी से, जीवन का पथ दर्शाते हैं।। (115)

कोटा से बिहार

अप्रैल अठारह को गुरुवर, ने आगे किया विहार वहाँ।
हो गये गाँव व नगर धन्य, गुरुवर के पड़ते चरण जहाँ।।
अब ग्राम मायजा और अजेता, खटकड़ गाँव में जा पहुँचे।
तब ग्राम नैनवां के वासी, राजेन्द्र मारवाड़ा पहुँचे।। (116)

खटकड से आगे बड़े, कदम पीपलिया गाँव पधारे थे।
संयमसागर से मिलन हुआ, हर्षाये श्रावक सारे थे।।
फिर चैतपुरा होकर, मुनिवर जी देई गाँव आ जाते हैं।
दो दिन रुककर के श्रावक, जन को धर्म का पाठ पढ़ाते हैं।। (117)

नैनवाँ में निर्ग्रंथ

करके विहार अब नगर, नैनवां में गुरुवर जी आये थे।
उन्निस अप्रैल का दिन था, वो सब श्रावक मोद मनाये थे।।
नौ जिनमंदिर इस नगरी, में जिनमहिमा को नित गाते हैं।
यहाँ चार शतक जैनी बन्धु, के घर शोभा को पाते हैं।। (118)

अप्रैल तीस को गुरुवर संग, अक्षय तृतीया का पर्व हुआ।
प्रभु आदिनाथ को याद किया, राजा श्रेयांस पर गर्भ हुआ।।
यह अक्षय तृतीया पर्व बड़ा, ही पावन और निराला है।
शुभ दान तीर्थ की महिमा को, यह पर्व बताने वाला है।। (119)

आदिम तीर्थंकर आदिनाथ, छैः महीने न आहार मिला।
दर-दर नगरी नगरी घूमें, नवधाभक्ति न योग मिला।।
बड़ते-बड़ते जब कदम, हस्तिनापुर नगरी में आये थे।
राजा श्रेयांस को अपर रात, में सपने शुभ्र दिखाये थे।। (120)

तन हुआ दिगम्बर तज, अम्बर प्रभु आदिनाथ वैराग्य लिया।
तज राग द्वेष का आडम्बर, प्रभु बीतराग मय ध्यान किया।।
छै मास तलक प्रभु योग, धरा निज आतम ध्यान लगाते थे।
निज ध्यान अनल सुलगा, करके कर्मों का पुञ्ज जलाते थे।। (121)

प्रभु निराहार छै मास रहे, पर तनिक शिथिलता न आई।
तन की शुभ आभा दिन, प्रतिदिन प्रभुवर की बड़ती ही पाई।।
प्रभु मन में ये विचार आया, मुझे तीर्थ प्रवर्तन करना है।
आगामी सब साधक जन को, शिव की शुभ राहें गढ़ना है।। (122)

प्रभु आदिनाथ ने ध्यान तजा, आहार विधि हेतु निकले।
आहार विधि का पथ देने, ईर्या के पथ पर प्रभु चले।।
चान्द्री चर्या आचरण किया, मध्यान्ह काल में जाते थे।
अपने स्वामी का दर्शन कर, नर-नारी मोद मनाते थे।। (123)



पर श्रमणों की आहार विधी, का क्रम बिल्कुल अन्जाना था।
इसलिये प्रभु की विधि कहीं, मिलने का नहीं ठिकाना था।।
प्रभु गाँव-गाँव व नगर-नगर, जाते थे फिर आ जाते थे।
आहार विधि न बनती थी, सब नर-नारी दुख पाते थे। (124)

प्रभु के चरणों में आकर कोई, श्रद्धा के फूल चढ़ाता था।
कोई वस्त्राभूषण आदि की, चरणों में भेंट चढ़ाता था।।
तब कोई सुगंधित मालायें, कोई हाथी घोड़े लाते थे।
कोई अपनी कन्याओं को, अर्पित करने आ जाते थे।। (125)

कोई सुंदर सुंदर नाना, रत्नों को भेंट चढ़ाता था।
कोई प्रभुवर के चरणों में, खुद ही आकर चढ़ जाता था।।
कोई कहता सब कुछ, ले लो पर हमसे भोजन ग्रहण करो।
हे नाथ कृपा सिंधु हो, तुम हम पर भी थोड़ी कृपा करो।। (126)

प्रभु ऋषभदेव के चरण, हस्तिनापुर नगरी में पधराये।
हर ओर गूंजते जयकारे, यह दृश्य देखने सुर आये।।
प्रभु के शुभ दर्शन पाने, को तब उमड़ रही थी भीड़ बड़ी।
भोजन के थाल लिये हाथों, में भेंटें लेकर बड़ी-बड़ी।। (127)

प्रभु राजमहल की ओर बढ़े, ईर्यापथ पर संचालन था।
उन महाश्रमण के द्वारा, तब आहार चर्या का दर्शन था।।
सपने साकार हुये सारे, खुशियाँ ही खुशियाँ छाईं थीं।
जैसे हो शुष्क मरुस्थल, में सावन फुहार बरसाई थी।। (128)

राजा थे सोम श्रेयांस, खड़े आँखों से नीर बहाते थे।
उन परम वीतरागी प्रभु को, पा फूले नहीं समाते थे।।
राजा श्रेयांस को पूरब, की स्मृति पटल पर छाई थी।
फौरन निर्ग्रंथों की चर्या, सब उनके ज्ञान में आई थी।। (129)

राजा श्रेयांस ने तब, फौरन शुभ मंगल कलश उठाये थे।
नवधाभक्ति का ज्ञान, हुआ फौरन प्रभु को पड़गाये थे।।
हे स्वामिन! अत्र-अत्र तिष्ठो, सब जलाहार की शुद्धि है।
तन की शुद्धि मन की शुद्धि, वचनों में बड़ी विशुद्धि है।। (130)

दाता के सात गुणों से, युत राजा श्रेयांस नजराये थे।
थम गये प्रभु के कदम, वहीं सब जय जयकार लगाये थे।।
पड़गाहन उच्चासन देकर, चरणों को वहाँ धुलाया था।
भक्ति के भावों से भरकर, चरणोंदक शीष लगाया था। (131)

वसु द्रव्य सजी थीं थालों, में प्रभु पूजन भव्य रचाया था।
फिर प्रभु के चरणों में, सबने श्रद्धा से शीष झुकाया था।।
मन वच काया की है, शुद्धि आहार शुद्ध है हे भगवान।
मुद्रा छोड़ो, अंजुलि जोड़ो, आहार करो मेरे भगवन्।। (132)

थे इक्षु रस के कलश, पूर्ण प्रभु पाणी मुद्रा में डाले।
श्रेयांस सोम के आँगन, में देवो ने थे डेरे डाले।।
पञ्चाश्चर्य हो गये तुरत, नभ में था जय जयकार हुआ।
प्रभु ऋषभ देव का छै महीने, के बाद ये शुभ आहार हुआ।। (133)

उस दिन चौके का भोजन भी, अक्षय समृद्धि पाया था।
दिन था वो तृतीया का प्यारा, अक्षय तृतीया कहलाया था।।
उस दिन से अक्षय तृतीया, का यह पर्व मनाया जाता है।
शुभ दान तीर्थ की महिमा, को इस जग में गाया जाता है।। (134)

मुनिवर के पावन चरणों, में यह पावन पर्व मनाया था।
संग ग्रीष्मकाल का भी, अवसर नगरी वालों ने पाया था।।
श्री आदिनाथ प्रभु की, पूजा गुरुवर ने यहाँ रचाई थी।
एक और कृति गुरुवर जी ने, "खूबसूरत लाइन" रचाई थी।। (135)

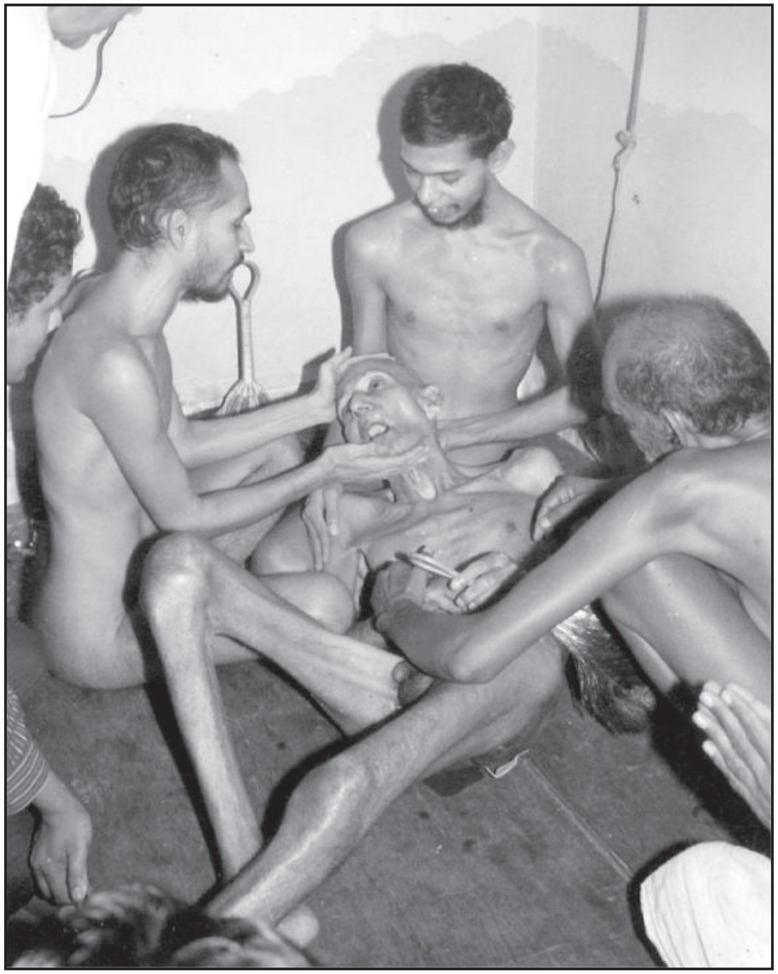
सोलह से अठदश जून तलक था, तीन दिवस का आयोजन।
ध्वज दण्डारोहण के, संग-संग शिखरों पर था कलशारोहण।।
आयोजन सब सम्पन्न हुये, सब नरनारी हर्षाये थे।
क्षुल्लक श्री पद्मसिंधु भी, गुरुवर के दर्शन को आये थे।। (136)

अष्टादश पर्व पूर्ण

गुरुवर के पावन चरणों में, श्रद्धा से शीष झुकाते हैं।
गुरुवर की पावन कथा पे, थोड़ा अल्प विराम लगाते हैं।।
अठदश सोपान हुये पूरे, अब आगे कथा सुनायेंगे।
गुरुवर की गौरव गाथा पर, हम अक्षर ध्वज फहरायेंगे।। (137)

❑❑❑❑

समाधि दर्शन



प्रथम दीक्षित मुनि विश्वतीर्थसागर जी को संबोधित करते हुए पूज्य विमर्शसागर जी।
साथ हैं मुनि विश्वपूज्यसागर जी एवं मुनि विनर्घ्यसागर जी। (अशोकनगर–२००३)



समाधिलीन मुनि विश्वतीर्थसागर जी की अंतिम संस्कार यात्रा में
उपस्थित श्रद्धालु (अशोकनगर–२००३)



पूज्य विमर्शसागर जी द्वारा प्रथम दीक्षित आर्यिका विलक्षश्री माताजी की समाधि।
मुनि विमर्शसागर जी एवं मुनि विनर्घ्यसागर जी सभा को संबोधित करते हुए।
(सतना–२००२)



समाधिस्थ आर्यिका विलक्षश्री माताजी की संस्कार यात्रा (सतना–२००२)



bhavlingi sant

shramnacharya shri 108 vimarsh sagar ji gurudev

"एकोनविंशतिः पर्व"

यशवर्धन पर्व

संजीवनी भावलिंगी संत (महाकाव्य)

तीर्थ वन्दना



वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज की चरण छत्री पर आचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज वंदना करते हुए



आचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज ससंघ तीर्थक्षेत्र मंगलायतन में



"एकोनविंशतिः पर्व"

"यशवर्धन पर्व"

मंगलाचरण

जो चतुर्गति में जन्म मरण, का नाश किया अविनाशी है।
आतम अनंत गुण प्रगटाकर, जो पंचम गति के वासी हैं।।
तीनों लोकों के जीवों का, हित करते जिनके मधुर वचन।
शत इन्द्रों से पूजित उन, जिनवर के चरणों में नमन-नमन।। (1)

गुरुवर की पावन गुणगाथा, को आगे और बड़ाता हूँ।
उससे पहले उनके पावन, चरणों में शीष झुकाता हूँ।।
उनके आशीषों की छाया, मुझको नित संबल देती है।
मेरे लेखन को ताकत व, शब्दों को वो बल देती है।। (2)

था चतुर्मास का काल निकट, सब ही किश्मत अजमाते थे।
गुरुवर के चरणों में आकर, के अर्जी खूब लगाते थे।।
कोटा, बूँदी व देई नैनवां, के श्रावक जन आते थे।
चौमासे का श्रीफल गुरुवर, के चरणों सभी चढ़ाते थे।। (3)

26 जून को था मुनिवर, का 32वां शुभ जन्म दिवस।
गुरु भक्त सभी आये थे, सबने खूब मनाया हरष-हरष।।
कोटा नसियाँ वालों को, शुभ चौमासे का संकेत मिला।
कोटावासी सब झूम उठे, मानो अमूल्य उपहार मिला।। (4)

कोटा मंगल प्रवेश

मुनिवर ने नगर नैनवां से, कोटा को मंगल गमन किया।
रस्ते में थे कई गाँव नगर, सबको मंगल आशीष दिया।।
दिन छैः जुलाई का आया था, मुनिवर ऋद्धि सिद्धि आये।
अगले दिन कोटा नगरी में, भक्तों ने शुभ दर्शन पाये।। (5)

थे ओमजी बिड़ला नगर, विधायक संग भवानिसिंह रहे।
थे महापौर मोहन जी तक, गुरु की अगवानि करा रहे।।
शिवपंथी साधक नगरी में, आये जनजन हर्षाये थे।
चौमासे का सौभाग्य जगा, सब फूले नहीं समाये थे।। (6)

पीपल के पेड़ तले

मुनिवर को अगवानि करके, सब गीता भवन में लाये थे।
गुरुवर की तेजस्वी वाणी, के जल से सभी नहाये थे।।
फिर नौ जुलाई को पीपल, वाले चौराहे पर धर्म सभा।
नसियाँ वालों को गुरुवर से, चौमासे का आशीष मिला।। (7)

कोटा, नसियाँ जी चातुर्मास-2006

फिर बड़ी भव्यता से सन्ध्या, में गुरुवर नसिया जी आये।
स्वागत में मुनिवर के, श्रावक थे खूबई उत्सुक नजराये।।
द्वारे-द्वारे पर रंगोली, स्वागत के द्वार सजाये थे।
मंगल दीपों के थाल सजा, कलशों से चरण धुलाये थे।। (8)

दीदी जी मंजू और, अर्चना संग महिला मण्डल सारे।
गुरुवर की शुभ्र आरती, में उजियारे थे दीपक प्यारे।।
परिकरमा तीन लगाकर, के भक्ति विशेष दर्शाई थी।
लगता था पुण्य वर्गणायें, कई साथ सिमटकर आईं थीं।। (9)



चातुर्मास स्थापना

जब दस जुलाई का दिन, आया नगरी में हर्ष समाया था।
चौमासे के स्थापन का, आयोजन यहाँ रचाया था।।
सर्राफ प्रेमचंदजी द्वारा, तब पहला कलश थपाया था।
देवेन्द्र, अनिल, संग रामचंद, महावीर ने अवसर पाया था।। (10)

ग्यारह जुलाई को गुरुपूर्णिमा, पावन पर्व मनाया था।
गुरु और शिष्य के रिस्तों का, सबने बहुमान बड़ाया था।।
प्रारंभ हुआ पन्द्रह जुलाई, भक्तामर जी स्त्रोत शिविर।
पण्डाल खचाखच भरता था, गुरु की वाणी का हुआ असर।। (11)

जब दिन था तीस जुलाई का, प्रभु पार्श्वनाथ निर्वाण दिवस।
था छैः अगस्त का दिन, पावन आया रक्षाबंधन उत्सव।।
गुरुवर की चरण सन्निधि, में सबने ये पर्व मनाये थे।
अरिहंतों की निर्ग्रंथों की, आराधन कर हर्षाये थे।। (12)

उन्तिस अगस्त से सात, सितम्बर तक पर्यूषण पर्व रहा।
प्रतिदिन दसधर्मों पर गुरुवर, के श्रीमुख से अमृत बरसा।।
दस को था पर्व क्षमावाणी, सबने ही वैर भुलाये थे।
गुरुवाणी सुनकर लगता था, महावीर धरा पर आये थे।। (13)

आनंद महोत्सव

अक्टूबर का महीना गुरुवर, ने पूजन शिविर लगाया था।
शिविराधीपति बन पदम जी, बज ने खूवई पुण्य कमाया था।।
पूरे कोटा से 1100 लोगों, ने इसमें भाग लिया।
गुरुवर के शुभ निर्देशन में, पूजन का सम्यक् ज्ञान लिया।। (14)

राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठि

सम सामयिक विषयों पर, इक विद्वत सम्मेलन किया गया।
नाना विषयों का ज्ञान, वहाँ विद्वानों द्वारा दिया गया।।
संयोजन पवन शास्त्री का, सुन्दर था अजब निराला था।
गुरुवर का पावन उद्‌बोधन, बस अचरज करने वाला था।। (15)

डॉ. श्रेयांस संग शीतल जी, श्रीजयकुमार जी आये थे।
डॉ. सुरेन्द्र, डॉ. नरेन्द्र, डॉ. रमेश भी आये थे।।
डॉ. अशोक, विमलाजी 'विमल', पंडित निहाल जी आये थे।
ब्रह्मचारी जय, पंडित विनोद, आदि विद्वत नजराये थे।। (16)

सर्वधर्म सम्मेलन

श्री योगगुरु हर्षानंद जी का, एक ही नम्र निवेदन था।
इक सर्वधर्म सम्मेलन का, पन्द्रह अगस्त आयोजन था।।
मुनिवर जी अपने संघ सहित आयोजन स्थल पर आये।
सब ही धर्मों के धर्म गुरु, अभिवादन में मस्तक नाये।। (17)

सब ही धर्मों के धर्म गुरु, से ऊँचा गुरु का आसन था।
सब सोफासैटों पर बैठे, गुरु का लकड़ी का आसन था।।
सब ही धर्मों के गुरुओं, ने अपने अपने उपदेश दिये।
तब हुई वहाँ बरसात अतः, मुनिवर जी बैठे मौन लिये।। (18)

तब योग गुरु हर्षानंद जी, सबको ये बात बताते हैं।
निर्ग्रंथों के भारी तप, की वो महिमा वहाँ सुनाते हैं।।
भोजन पानी इक बार, गृहण ये संत दिगम्बर करते हैं।
सब संतों से ये त्याग, तपस्या श्रेष्ठ साधना धरते हैं।। (19)



इक बूँद भी गर जल वारिस, का इनके मुँह में गिर जायेगा।
उस पानी से मुनिवर जी, का ये व्रत खण्डित हो जायेगा।।
इसलिये ये मुनिवर मौन लिये, सबको संदेश सुनाते हैं।
ऐसे संतों के दर्शन से ही, पाप कर्म कट जाते हैं।। (20)

आई दीवाली, दीप जले

बाइस अक्टूबर का दिन था, तब पर्व दिवाली का आया।
जगमग दीपों की ज्योत जली, नगरी में था उत्सव छाया।।
हो गया पूर्ण ये चतुर्मास, मुनिवर ने निष्ठापन कीना।
आशीषों के उपहारों से, भक्तों का दामन भर दीना।। (21)

पिच्छिका परिवर्तन

उन्तिस अक्टूबर को पिच्छी, परिवर्तन का आयोजन था।
एक अहिंसा धर्म सुपालन, इसका एक प्रयोजन था।।
हेमंत जी डूँगरवाल को, पिच्छि पाने का सौभाग्य मिला।
जिनने जिनने भी नियम लिये, उन उन का था सौभाग्य खिला।। (22)

उपनगरों को किया पावन

मुनिवर जी अब करके बिहार, नसिया से तलवण्डी आये।
गुरुवर विरागसागर का, सूरिपद आरोहण मनवाये।।
उपनगर आर.के.पुरम् से, अब महावीर नगर में गुरु आये।
विज्ञाननगर में गुरुवर के, फिर भक्तों ने दर्शन पाये।। (23)

मंदिर की ऊँची शिखरों पर, ध्वजआरोहण था किया गया।
इस आयोजन में पुण्यलाभ, भव्यों के द्वारा लिया गया।।
विज्ञान नगर से कर, विहार गुरुवर महावीर नगर आये।
गुरुवर विराग का चौबिसवाँ, मुनि दीक्षा दिवस थे मनवाये।। (24)

श्री विमर्शसागर साहित्य सदन का शुभारम्भ

श्रीरत्नत्रय मण्डल विधान, का भव्य हुआ आयोजन था।
श्री "विमर्शसागर साहित्य सदन", का हुआ यहाँ उद्घाटन था।।
महावीर नगर से कर विहार, ये संत बसंत विहार गये।
की भव्य वहाँ पर अगवानि, गुरुभक्ति में सब झूम रहे।। (25)

नौ वाँ मुनिदीक्षा दिवस

दिन चौदह दिसम्बर का आया, मानो बसंत लहराया था।
मुनिवर के नौ वे दीक्षा दिवस, का मंगल अवसर आया था।।
कमलेश 'बसंत' कवि द्वारा, आयोजन का संचालन था।
अतिभव्य हुआ ये आयोजन, बस झूम रहा सबका मन था।। (26)

वर्तमान के प्रथम दिगम्बर मुनि

मुनिवर की गृहस्थ अवस्था, के जो मित्र प्रिय कहलाये थे।
डॉ. लोकेश खरे मुनिवर, के दर्शन करने आये थे।।
मध्यान्ह काल लोकेश खरे, बोले कुछ ऐसे मुनिवर से।
हम तो कतरा बन यहीं रहे, हो गये हो आप समंदर से।। (27)

होता है हमको गर्भ बहुत, जो साथ आपके पढ़े हुये।
संग-संग खेले, संग-संग, कूदे व साथ आपके बड़े हुये।।
मुनिवर जी हम भोपाल में, अब रहकर के सर्विस करते हैं।
हम शिक्षा बोर्ड सलाहकार, के पद पर सर्विस करते हैं।। (28)

गर आपकी सार्वभौम्य रचना, कोई जो मुनिवर प्राप्त करूँ?
और किसी कक्षा के विषय, में उसको शामिल करा सकूँ?
सौभाग्य मनाऊँगा अपना, कि कुछ मैंने कर पाया है।
अरदास यही, आशीष बरो, वस यही भाव मन आया है।। (29)



मुनिवर बोले है इक रचना, जो देश धर्म के लिये लिखी।
मुझको अपनी उस रचना, में ही सार्वभौम्यता मुझे दिखी।।
इस रचना को तुम ले जाओ, ये रचना बड़ी निराली है।
जो देश धर्म की भक्ति में, निष्ठा उपजाने वाली है। (30)

सब 'देश धर्म के लिये जिओ', यह रचना पथ दर्शाती है।
ये घृणा, वैर अभिमान मिटाकर, प्रेम के फूल खिलाती है।।
लोकेश खरे बोले मुनिवर, ये रचना श्रेष्ठ आपकी है।
जैसी हम चाह रहे मुनिवर, ये रचना बिल्कुल वैसी है।। (31)

आशीष यही दे दो गुरुवर, बस सफल भावना हो जाये।
शिक्षा के ऊँचे क्रम में, बस ये रचना शामिल हो जाये।।
मुनिवर ने उनके सर पे, अपना कर रखके आशीष दिया।
लोकेश खरे ने बार-बार, श्रद्धा से झुकके नमन किया।। (32)

भैया लोकेश की मेहनत, भी आगे चल करके रंग लाई।
कक्षा ग्यारह की हिन्दी में, ये रचना शामिल करवाई।।
है वर्तमान में प्रथम, दिगम्बर जैन संत आचार्यश्री।
जिनकी रचना को शासन ने, भी पाठ्यक्रम में शामिल की।। (33)

वाणी का जादू

मुनिवर जी अब करके बिहार, महावीर नगर सेकेण्ड चले।
भक्ति में युवा झूमते थे, जब आगे आगे बैण्ड चले।।
इक्कीस दिसम्बर पारक में, उपदेश वहाँ करवाये थे।
सुनने को कोटा नगरी के, हज्जारों श्रावक आये थे।। (34)

महावीर कमल ध्वज संग, वहाँ तब कवि अनिल जी आये थे।
मुनिवर ने ज्यों ही शुरू किया, ताली के नाद सुनाये थे।।
तब भाई अनिल जी बोले, क्या लोग दिवाने हो गये हैं।
जो मिलकर के यूँ जोर-जोर, से ताली सभी बजा रहे हैं।। (35)

महावीर जी बोले हाँ भैया!, ऐसा ही लगता है हमको।
तुम अभी यहाँ उपदेश सुनो, आगे बतलायेंगे तुमको।।
जब सभा बीच में, मुनिवर ने अपनी पंक्ति दोहराई थी।
तब भाई अनिल जी ने, धीरे से ताली वहाँ बजाई थी।। (36)

भैया क्या पागल आप हुये, जो ताली आप बजाते हैं।
भाई अनिल ने कहा यार यहाँ सब पागल हो जाते हैं।।
चर्या आगम मय मुनिवर, की ज्ञानी ध्यानी ये साधु हैं।
वाणी में मुनिवर की लगता है, जैसे कोई जादु है।। (37)

यहाँ हाथ हिलाये न जाते, खुद ही हिलने लग जाते हैं।
भव-भव से संचित पाप करम, खुद ही गलने लग जाते हैं।।
जो पाप गलाता है आगम, में वो पागल कहलाते हैं।
इन गुरुवर के दर पे आकर, के सब पागल हो जाते हैं।। (38)

सर्वोदय ज्ञान शिक्षण शिविर

तेइस को काव्य गोष्ठी थी, चौबिस को भक्तामर विधान।
फिर तलवण्डी के लिये किया, मुनिवर जी ने मंगल प्रयाण।।
पंडित वीरेन्द्र शास्त्री के, सुन्दर सारे निर्देशन में।
मुनिवर का था सानिध्य मिला, इस सारे ही आयोजन में।। (39)

पच्चीस दिसम्बर से लेकर, जनवरी तीन तक शिविर लिया।
सर्वोदय शिक्षण ज्ञान शिविर था, इसको सुंदर नाम दिया।।
प्रश्नोत्तर रत्नमालिका का, मुनिवर अध्ययन करवाते थे।
नाना विषयों पर विद्वत जन, भी कक्षा यहाँ पढ़ाते थे।। (40)

नववर्ष-अहिंसा दिवस

नववर्ष की बेला आई थी, जनवरी एक का दिन आया।
उस दिन ही बकरा ईद बड़ी, सबको भारी था दुख आया।।
नववर्ष अहिंसा दिवस रूप, में मुनिवर ने मनवाया था।
मुनिवर ने खुद उपवास रखा, सबको उपास रखवाया था।। (41)

छावनी में भक्तामर विधान

जनवरी अठारह आदिनाथ प्रभु जी, का था निर्वाण दिवस।
मुनिवर का था सानिध्य मिला, सबमें छाया था हरष-हरष।।
करके बिहार अब मुनिवर जी, उपनगर छावनी आये थे।
श्री भक्तामर मण्डल विधान, आयोजन भव्य कराये थे।। (42)

पीपल वाले चौराहे पर धर्मसभा

छब्बीस जनवरी को कीना था, शांतिनाथ विधान यहाँ।
सब भक्तों ने मिलकर ओडे थे, भक्ति के परिधान यहाँ।।
फिर रामपुरा की आशा को, पूरी करने मुनिवर आये।
पीपल वाले चौराहे पर, उपदेश सभी ने थे पाये।। (43)

मुख्य वेदिका शिलान्यास

कॉलौनी ऋद्धि सिद्धि में, फिर मुनिवर आन विराजे थे।
फरवरी एक को मुख्य, वेदिका शिलान्यास भी साजे थे।।
पंडित हँसमुख धरियावद ने, तब सारी विधि कराई थी।
तब मानस्तम्भ व सिंहद्वार, की शिला वहाँ धरवाई थी।। (44)

बल्लभवाड़ी में शान्ति विधान

पाँच फरवरी को मुनिवर, बल्लभबाड़ी में नजराये।
तब शांतिनाथ विधान हुआ, सब नरनारी थे हर्षाये।।
फिर पुनः पधारे नसियाँ, में महावीर नगर प्रथम आये।
इस तरह पूर्ण कोटा नगरी, में संस्कार थे लहराये।। (45)

कोटा से बिहार

उन्नीस फरवरी को मुनिवर, ने कोटा नगरी को छोड़ा।
अब रामगंजमण्डी नगरी की ओर, था अपना मुँह मोड़ा।।
जगपुरा में रात विता करके, अब कृतिका मील पे आये थे।
खुश आदिवासी लोगों ने, तब लोक नृत्य दिखलाये थे।। (46)

मण्डाना मोडक और दरा, हो झालाबाड़ पधारे थे।
फिर नगर झालरा पाटन के, मुनिवर ने भाग्य सम्हारे थे।।
प्रभु शांतिनाथ की मनमोहक, शुभ प्रतिमा यहाँ विराजी है।
दर्शन से हर्षाती मन को, शुभ छवि अनोखी साजी है।। (47)

योगसार प्राभृत पर टीका प्रारंभ

श्री शांतिनाथ जिनालय के, स्वाध्याय भवन में जाकर के।
हर्षाये मुनिवर योगसार, प्राभृत जी ग्रंथ को पाकर के।।
श्री अमित गति स्वामी द्वारा, ये लिखा गया है पावन है।
है सहस्त्र वर्ष प्राचीन ग्रंथ, अध्यात्म विषय मन भावन है।। (48)

इस ग्रंथ पे टीका लिखने, तब मुनिवर ने संकल्प लिया।
प्रभु शांतिनाथ के चरणों, में टीका लेखन आरंभ किया।।
संस्कृत भाषा का मूल ग्रंथ, हिन्दी में टीका लिख डाली।
जिन आगम की कुंजी मानो, सबको अचरज करने वाली।। (49)



प्रथम प्राकृत टीकाचार्य

फिर इसी ग्रंथ पे गुरुवर ने, प्राकृत भाषा में काम किया।
प्राकृत भाषा में टीका लिख, अपना इतिहास में नाम किया।।
प्राकृत भाषा में प्रथम बार, टीका का लेखन कर मुनिवर।
ये प्रथम जैन आचार्य बने, प्राकृत भाषा टीका रचकर।। (50)

मुनि शिवसागर से मिलन

होली का शुभ त्यौहार यहाँ, मुनिवर के संग मनाया था।
श्री भक्तामर विधान का, शुभ आयोजन यहाँ कराया था।।
अब सिटी झालरापाटन से, करके बिहार डोला आये।
मुनि शिवसागर से मिलन हुआ, दोनों ही साधक हर्षाये।। (51)

वीतराग परिणति

अब कदम गति कुछ और, बडी अब नगर पिड़ावा आया था।
भक्तों ने बड़ी भव्यता से, तब नगर प्रवेश कराया था।।
महावीर कमलध्वज, और अनिल राकेश जी प्रेमी हर्षाये।
क्योंकि थे भाव बहुत उनके, कि गुरुवर नगरी में आयें।। (52)

मुनिवर जी जब अध्यात्म, वचन श्रीमुख से रोज झराते थे।
तब सभी मुमुक्षु बन्धु भी, सुनने उत्सुक हो आते थे।।
इक रोज मुमुक्षु भाई इक, मुनिवर के चरणों में आये।
क्या चौका हम भी लगा सकत हैं?, ऐसे भाव थे बतलाये।। (53)

बोले मुनिवर क्या बात कहो?, क्या किसी ने रोक लगाई है।
बोला मुनिवर ये प्रथम, बार ही शुभ्र भावना भाई है।।
बोले मुनिवर निर्ग्रंथों को, जो भाव दान के आये हैं।
निश्चित ही पहले किये हुये, शुभ पुण्य उदय में आये हैं।। (54)

बोला मुनिवर हमने घर में, इक फोटो बड़ा लगाया है।
क्या उसे अलग करना होगा, सबने ही हमें बताया है।।
बोले मुनिवर चौके में, न फोटो से कोई प्रयोजन है।
वो विषय तुम्हारा है भैया?, जो चाहो करो तुमरा मन है।। (55)

वो श्रावक कांजीस्वामी, के फोटो की बात बताता है।
मुनिवर का उत्तर सुन करके, श्रद्धा से वो भर जाता है।।
मुनिवर की वीतरागता यह, उसके मन को खूबई भाई।
अब तो श्रद्धा खूबई मन में, मुनिवर जी की तब गहराई।। (56)

अगले दिन उसके ही घर, में मुनिवर पड़गाये जाते हैं।
वो श्रावक परिजन पुरजन, सब ही फूले नहीं समाते हैं।।
पड़गाहन कर मुनिवर जी, को अपने चौके में ले आया।
भक्ति से वंदन कर गुरुवर, को उच्चासन पर बैठाया।। (57)

मुनिवर के सन्मुख ही कांजी, का फोटो बड़ा लगाया था।
पर वीतरागता में मुनिवर की, किंचित फर्क न आया था।।
आहार बड़ा निर्विघ्न, और सानंद वहाँ सम्पन्न हुआ।
उन श्रवक के मन में भारी, आनंद वहाँ उत्पन्न हुआ।। (58)

फिर बैण्ड बुलाकर मुनिवर, को मंदिर जी तक पहुँचाया था।
हर्षातिरेक से आँखों में, सावन सा मंजर छाया था।।
फिर सभी मुमुक्षु लोगों, ने तब चौके वहाँ लगाये थे।
आहार दान का अवसर पा, अपने सौभाग्य जगाये थे।। (59)



एकता का संदेश

अब नगर भवानिमण्डी के, लोगों का पुण्य उदय आया।
महावीर जयन्ति पर गुरुवर, का संग वहाँ उनने पाया।।
मुनिवर से प्रेरित जैन, एकता का संदेश गुँजाया था।
तब वहाँ दिगम्बर-श्वेताम्बर, का एक जुलूश दिखाया था।। (60)

कलशारोहण

अब मुनिवर कुछ आगे, बढ़ करके रामगंजमण्डी आये।
प्रभु शान्तिनाथ का दर्शन, कर मुनिवर जी खूबई हर्षाये।।
उन्नीस, बीस अप्रैल और, इक्कीस को शुभ आयोजन था।
प्रभु की शिखरों पर आज, यहाँ सुंदर कलशा आरोहण था।। (61)

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा रामगंज मण्डी

कल्याणक पाँच मनाये गये, दो मई से सात तलक प्यारे।
नूतन नसियाँ में शान्तिनाथ, को स्थापन करने वाले।।
पंडितजी जय निशांतजी ने, आयोजन भव्य कराया था।
जिन जिन ने जितना सोचा था, उससे ज्यादा फल पाया था।। (62)

गृहमंत्री ने सुना गुरुमुख से काव्यपाठ

इस आयोजन के मध्य रखा था, काव्य पाठ का आयोजन।
आकर गुलाबचंद जी कटारिया, गृहमंत्री ने किया नमन।।
मुनिवर के मुख से काव्य पाठ, सुनकर आनंद समाया था।
गृहमंत्री बोले हे मुनिवर!, पहले न यूँ सुख पाया था।। (63)

आयोजन ये सम्पन्न हुआ, नगरी में उत्सव छाया था।
नगरी की गलियों में गजरथ, मुनिवर ने तब चलवाया था।।
तारीख सात को ही, मुनिवर कोटा को कदम बढ़ाते हैं।
ग्यारह को कोटा में आकर, ध्वज आरोहण करवाते हैं।। (64)

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कोटा

प्रभु पार्श्वनाथ के कल्याणक, सरस्वती नगर में करवाये।
मुनिवर ने सूरिमंत्र दिया, प्रभु को मंदिर में पधराये।।
पंडित प्रदीप जी मधुर रहे, आयोजन खूब कराया था।
चौदह मई को करके विहार, संघ बल्लभबाड़ी आया था।। (65)

ज्ञान ज्योतिशिक्षण शिविर

फिर रामपुरा मुनिवर पहुँचे, सानिध्य सुअवसर पाया था।
इक शिविर ज्ञान ज्योंति शिक्षण, का मंगल वहाँ लगाया था।।
अठदस मई से सत्ताइस, तलक आयोजन ये सम्पन्न हुआ।
आये थे कई विद्वान वहाँ, ये ज्ञान यज्ञ निस्पन्न हुआ।। (66)

वेदी प्रतिष्ठा महावीर नगर प्रथम

फिर बीस जून से बाईस, तक महावीर नगर प्रथम आये।
प्रभु आदिनाथ जिन मंदिर, में वेदी की प्रतिष्ठा करवाये।।
अशोकनगर से कुछ, श्रावक इस आयोजन में आये थे।
चौमासे संग पंचकल्याणक, की अर्जी वहाँ लगाये थे।। (67)

सिंह द्वार, मानस्तम्भ का शिलान्यास

ऋद्धि सिद्धि में समृद्धि, करने को अब गुरुवर आये।
शुभ मान थम्भ वा सिंह, द्वारका शिलान्यास तब करवाये।।
पंडित हँसमुख धरियावद, ने ये सारी विधि कराई थी।
भक्तों ने तेतिस वी मुनिवर, की जन्म जयन्ति मनाई थी।। (68)

मुनिवर सिद्धसैन जी रहें साथ

कोटा प्रवास में साथ रहे, मुनिवर श्री सिद्धसेनसागर।
थे सरल स्वभावी संत बड़े, वे विनय के लगते थे आगर।।
मुनिवर जब सिद्धसेनसागर, कोटा से गमन रचाते हैं।
आँखों में आँसु भर करके, मुनिवर को शीष झुकाते हैं।। (69)



अंता में जिनमंदिर शिलान्यास

मुनिवर ने अब कोटा छोड़ा, अन्ता नगरी में आये थे।
नूतन इक भव्य जिनालय का, तब शिलान्यास करवाये थे।।
अन्ता से चलकर के गुरुवर, वारां नगरी को धन्य किया।
श्रावक जन खूबई हर्षाये, जब मुनिवर का शुभ दर्श किया।। (70)

अतिशय क्षेत्र सेसई की वंदना

वारां से चलकर श्री संघ, अब सेसई क्षेत्र पे आया था।
प्रभु शांतिनाथ का दर्शन कर, मुनिवर का मन हर्षाया था।।
प्रभु शांतिनाथ के चरणों में, भक्तों ने अर्ज लगाई थी।
शिवपुरी नगर ने चौमासे की, पावन बेला पाई थी।। (71)

चर्या की दृढ़ता

कस्वाथाने से चलकर के, जब सेसई मुनिवर आये थे।
तब रेस्ट हाऊस में भक्तों, ने गुरु चौका वहाँ लगाये थे।।
कमरे में कारपेट चिपका, जिसमें मुनिवर को लाया था।
मुनिवर जी आके लौट गये, सब लोगों का समझाना था।। (72)

मुनिवर ने तब उपवास किया, मुद्रा छोड़ी व मौन लिया।
परिषह को सहन किया लेकिन, चर्या में न बदलाव किया।।
ब्रह्मचारी राजीव भैया संग, श्रावक खूबई पछताये थे।
अगले दिन सेसई में जाकर, मुनिवर को अहार कराये थे।। (73)

शिवपुरी के साधक शिवपुरी में

छब्बीस जुलाई का दिन था, मुनिवर का नगर आगमन था।
भक्तों के संग शिवपुरी नगर, का झूम रहा तब कण-कण था।।
मुनिवर आये थे नगरी में, चौमासा यहाँ रचाने को।
भूले भटके भ्रमते जन को, सच्चा शिवमार्ग बताने को।। (74)

शिवपुरी चातुर्मास-2007

छत्री मंदिर में पार्श्वनाथ, प्रभु नायक मूल विराजे हैं।
दिन रात कृपा बरसाते हैं, अतिशय से युक्त विराजे हैं।।
इस अतिशयकारी मंदिर में, ही मुनिवर का चौमासा था।
उन्तीस जुलाई का दिन था, जब शुरु हुआ चौमासा था।। (75)

मुनिवर विमर्शसागर जी संग, मुनि विश्वपूज्य जी आये थे।
क्षुल्लक विशुद्ध संग, ब्रह्मचारी राजीव भैया भी आये थे।।
उन्तिस को गुरु पूर्णिमा का, शुभ पावन पर्व मनाया था।
गुरु और शिष्य के रिस्तों को, तब मुनिवर ने समझाया था।। (76)

श्री भक्तामर शिविर

अब माह आठवाँ शुरु हुआ, तारीख पाँच जब आई थी।
भक्तामर शिक्षण शिविर की, मुनिवर ने कक्षा लगवाई थी।।
हर एक काव्य का एक-एक, अक्षर वो शुद्ध कराते थे।
सब धवल-धवल परिधानों में, श्रावक अध्ययन को आते थे।। (77)

शिवपुरी जिला कारागार में उपदेश

उन्निस अगस्त को श्रावक, जन ने उपक्रम एक रचाया था।
शिवपुरी नगर की जिला, जेल में तब उपदेश कराया था।।
गुरुवाणी सुन हर कैदी, की आँखों में पानी आया था।
मुनिवर ने सारे लोगों को, तब व्यसन मुक्त करवाया था।। (78)

अगले ही दिन प्रभु पार्श्वनाथ, का शुभ निर्वाण मनाया था।
अठबीस जुलाई को, रक्षा बंधन का पर्व सु-आया था।।
इस अष्टम महीने में ही, तो पर्यूषण पर्व भी आये थे।
सत्ताइस तारिख को मिलकर, सब क्षमा का पर्व मनाये थे।। (79)



राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी

बारह से चौदह अक्टूबर, विद्वत् जन बहुत बुलाये थे।
डॉक्टर श्री सुरेन्द्र भारती जी, संयोजक बनके आये थे।।
पुरुषार्थ सिद्धि पर विद्वत, जन अपने मन्तव्य बताते थे।
फिर मुनिवर की वाणी सुनकर, विद्वत् जन हर्ष मनाते थे।। (80)

पूजन प्रशिक्षण शिविर

तेइस अक्टूबर से दसदिन, का पूजन शिविर लगाया था।
नव युवकों और युवतियों को, पूजन करना सिखलाया था।।
फिर आठ नवम्बर गुरु विराग, का सोलहवां आचार्य दिवस।
मुनिवर के संग सब भक्तों ने था, खूब मनाया हरष हरष।। (81)

शुभ चार माह ये बीत गये, अब माह नवम्बर आया था।
स्थापन से ये शुरू हुआ, निष्ठापन का दिन आया था।।
था माह नवम्बर नौ तारिख, चौमासे का निष्ठापन था।
मुनिवर की चर्या और ज्ञान से, अभीभूत तब जन-जन था।। (82)

न कुटिया से द्वेष, न महलों में राग

है पुण्य-पाप का खेल, यहाँ इससे सब जन अन्जाने हैं।
है पाप से डरता हर कोई, पर पुण्य के सब दीवाने हैं।।
जब पाप विपाक दिखाता है, नैना आंसु बरसाते हैं।
जब पुण्य में सुख मिल जाता है, तो सब गाफिल हो जाते हैं।। (83)

नगरी में श्रावक रहता था, इक घर में जरा गरीबी थी।
पर मुनिवर के चरणों में, उसको श्रद्धा बहुत ही गहरी थी।।
दो दिन चौमासे के वाँकी, चौकों की होड़ निराली थी।
मुनिवर को घर ले जाने को, नवधाभक्ति भी आली थी।। (84)

वो ही गरीब श्रावक मुनिवर जी, के चरणों में आता है।
रो-रोकर अपनी व्यथा-कथा, सब मुनिवर को बतलाता है।।
पूछा मुनिवर ने क्यों भाई, आखिर इतना क्यों रोते हो।
क्या कारण है बतलाओ, तो क्यों अपने नैन भिगोते हो।। (85)

बोला मुनिवर! हम हैं गरीब, धन की घर में लाचारी है।
पर घर पे आहार कराने, की गुरुदेव भावना भारी है।।
अतएव सजाया था चौका, रूखा सूखा जो भी घर था।
पर धनपतियों का हे गुरुवर! मन में, निश्चित, थोड़ा डर था।। (86)

मुनिवर जिसका हमको डर था, अब वो ही सामने आया है।
मिलकर के सब धनपतियों ने, आकर के हमें दबाया है।।
कहते हैं चौका बंद करो, क्या मुनिवर को पड़गाओगे।
खुद के खाने के लाले हैं, क्या मुनिवर को खिलवाओगे।। (87)

अब मुनिवर आप ही बतलाओ, क्या ये हमको अधिकार नहीं।
क्या कोई गरीबों के घर, में गुरुवर होता आहार नहीं।।
बोले मुनिवर मेरे भाई!, तुम चौका बंद नहीं करना।
नवधा भक्ति से तुम आकर, मुनिवर का पड़गाहन करना।। (88)

हम तो निर्ग्रंथ तपस्वी हैं, न राग द्वेष रखते मन में।
न कुटिया से कोई द्वेष, हमें न राग है हमको महलन से।।
इस ओर नगर में चर्चा थी, कि कलश की बोली है जिनकी।
मुनिवर का पड़गाहन करने, में किस्मत चमकेगी उनकी।। (89)

जब चतुर्मास निष्ठापन की, मुनिराज पाड़ना को आये।
सब कोठी बंगला छोड़े, मुनिवर कुटिया में जा पड़गाये।।
उसके आगे मुनिराज खड़े, भावों में विह्वलता भारी।
लगता था जैसे आज मिलीं हो, उसे संपदाये सारी।। (90)

मन में भारी उल्लास लिये, मुनिवर को घर ले जाता है।
अपनी कुटिया में ले जाकर, मुनिवर को आहार कराता है।।
बिन अंतराय आहार हुआ, उसके घर आज दिवाली थी।
कुटिया के बाहर सेठों की, लम्बी कतार भी आली थी।। (91)

हर ओर एक ही चर्चा थी, घर कृष्ण सुदामा के आये।
लगता शवरी की भक्ति में, बंधकर श्रीराम चले आये।।
तब ढ़ोल नगाड़े बजते थे, सब झूम-झूम हर्षाते थे।
सब उस गरीब के पुण्यों की, चर्चा कर नहीं अघाते थे।। (92)

हर्षाते व उमगाते से, सब मुनिवर को मंदिर लाये।
इक बाबा कहन लगे, ऐसे मुनिवर न हमको नजराये।।
न भेद रंक व राजा में, मुनिवर के उर में पलते हैं।
ये चरण जहाँ भी धर देते, श्रद्धा के दीपक जलते हैं।। (93)

श्री सिद्धचक्र विधान

अब माह नवम्बर में, अठदश तारिख से शुभ आयोजन था।
श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान, का शुभ पावन संयोजन था।।
विद्वत भ्राता द्वय सनत, विनोद विधान कराने आये थे।
मुनिवर विमर्शसागर जी, का सानिध्य सहज ही पाये थे।। (94)

पद लिप्सा से दूर

इस अवसर पर सारी समाज, ने मिलकर भाव बनाया था।
द्वय विद्वत की अगुवाई में, इक सुंदर काज सजाया था।।
पंडित विनोद जी कहन लगे, मुनिवर सूरिपद ग्रहण करें।
इस पद के आप योग्य मुनिवर, इसलिये आप स्वीकार करें।। (95)

पर मुनिवर की निस्पृहता, ने फिर से सबको समझाया था।
गुरु के उपकारों की महिमा, का सबको पाठ पढ़ाया था।।
गुरु के द्वारा जो दिया गया, वो पद गुरुवर से पायेंगे।
बिन गुरुवर के अपने सर, पे न कोई हाथ रखायेंगे।। (96)

मुनिवर की ये निस्पृह वृत्ति, सबके ही मन को भाई थी।
सब लोगों की गुरुवर जी, में श्रद्धा खूबई गहराई थी।।
अब पूर्ण हुआ मण्डल विधान, आगामी पुनः प्रयोजन था।
श्री पंचकल्याण प्रतिष्ठा का, आगामी शुभ आयोजन था।। (97)

सेसई में कल्पद्रुम विधान

इससे पहले श्री कल्पद्रुम, मण्डल विधान का आयोजन।
सेसई जी अतिशय क्षेत्र और, प्रभु शांतिनाथ का था आंगन।।
श्री अजित जैन पत्ते वाले, परिवार ने यह करवाया था।
ब्रह्मचारी श्री सुनील भैया, ने विधि विधान करवाया था।। (98)

रजत मुनिदीक्षा जयन्ति

मुनिवर जी अब करके, बिहार फिर से शिवपुरी नगर आये।
श्रीपंचकल्याण प्रतिष्ठा, की आकर तैयारी करवाये।।
अब सात से नौ तक माह, दिसम्बर का अवसर जब आया था।
गुरुवर विराग की रजत, मुनिदीक्षा उत्सव मनवाया था।। (99)



आचार्य विरागसागर विधान

'सूरि विरागसागर विधान', मुनिवर द्वारा था रचा गया।
मुनिवर के मुख से गुरु विधान, का पाठ वहाँ था किया गया।।
आठ दिसम्बर आचार्य विरागसागर ग्रंथ, माला स्थापन।
कई सारे उत्सव, करवाये था, भव्य हुआ ये आयोजन।। (100)

10वाँ मुनिदीक्षा दिवस

चौदह दिसम्बर को 10वां, मुनिदीक्षा दिवस भी आया था।
मुनिवर जी के संयम दिन, का नगरी में उत्सव छाया था।।
सब पूर्ण हुये थे आयोजन, सबमें उत्साह समाया था।
अब पंचकल्याण प्रतिष्ठा का, भी अवसर सन्मुख आया था।। (101)

आशीषों में वो ताकत है सब विघ्न दूर हो जाते हैं

ध्वज आरोहण के लिये, वहाँ नौ रेजीमेंट तैयार हुये।
तैयारी जब से शुरु हुई, घर-घर में मंगलाचार हुये।।
मुनिवर जी के निर्देशन, में यह रेजीमेंट बनाये गये।
दो दशक दिना पहले से ही, सबको अभ्यास कराये गये।। (102)

बोले-मुनिवर जी! यहाँ तो, सब कुछ शांत दिखाई देता है।
लेकिन आयोजन स्थल, पर तूफान दिखाई देता है।।
लगता है जैसे पाण्डाल, सब धरासाही हो जायेंगे।
है आँधी इतनी तेज वहाँ, सब कार्य विफल हो जायेंगे।। (103)

मुनिवर कुछ आप उपाय करें, मेरी कुछ समझ न आता है।
सब ठीक-ठाक होगा कैसे?, मेरा तो मन घबराता है।।
मुनिवर बोले कोई बात, नहीं व्यतंर का कौतूहल होगा।
प्रभु पार्श्वनाथ की कृपा बड़ी, हमरा हर काम सफल होगा।। (104)

मुनिवर समाज के प्रमुख लोग, संग मंदिर जी में जाते हैं।
श्रीफल अर्पित कर पार्श्वनाथ, के चरणों अर्ज सुनाते हैं।।
मुनिवर ने थोड़ा ध्यान मग्न, होकर के वहाँ उपाय किया।
जलसे को तुम प्रारंभ करो, सब लोगों को आदेश दिया।। (105)

मुनिराजों के कोई वचन, कभी खाली भैया न जाते हैं।
आशीषों में वो ताकत है, सब विघ्न स्वयं नश जाते हैं।।
मुनिवर का शुभ संकेत मिला, भारी जुलूस प्रारंभ हुआ।
जिनशासन की महती प्रभावना, का ये क्रम आरंभ हुआ।। (106)

चलकर जुलूस मुनिवर के, संग गजरथ स्थल जब आया था।
थी हवा पूर्वी मंद मंद, तूफान शांत हो आया था।।
जैसे ही सबने देखा, ये श्रद्धा भारी उमगाई थी।
मुनिवर के आशीषों की, महिमा साक्षात नजराई थी।। (107)

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा शिवपुरी

जब रेजीमेंटों की परेड़, संग ध्वज आरोहण आयोजन।
देखा था सबने प्रथम बार, ये देख-देख हर्षित थे जन।।
आकर के श्री अखण्ड प्रतापजी, ने गुरु का आशीष लिया।
ध्वज आरोहण संग पंडितजी ने, यह कारज प्रारंभ किया।। (108)

केन्द्रिय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने लिया आशीष

आयोजन में ज्योतिरादित्य सिधिंया जी, भी आये थे।
मुनिवर जी के कर कमलों से, आशीष मिला हर्षाये थे।।
तब धर्म तीर्थ संरक्षण महासभा, का भी था अधिवेशन।
श्री निर्मल सेठी, अजित पाटनी, संग सबने पाये दर्शन।। (109)

विद्वानों की वंदना

डॉक्टर श्री जयकुमार जी संग, पंडित निहाल जी आये थे।
डॉक्टर सुरेन्द्र जी पंडित, नीरज सतना भी पधराये थे।।
डॉ. ज्योति व श्री कपूरजी, नगर खतौली से आये।
संग ब्रह्मचारी जिनेश मलैया, ने भी थे दर्शन पाये।। (110)

आयोजन ये भारी प्रभावना, के संग-संग सम्पन्न हुआ।
प्रभु शांतिनाथ प्रतिष्ठा का, कारज मंगल निस्पन्न हुआ।।
मुनिवर के शुभ आशीषों से, कोई भी विघ्न नहीं आया।
सबने मिलके एकई स्वर में, गुरु महिमा का गौरव गाया।। (111)

शिवपुरी के साधकों की शिवपुरी से विदा

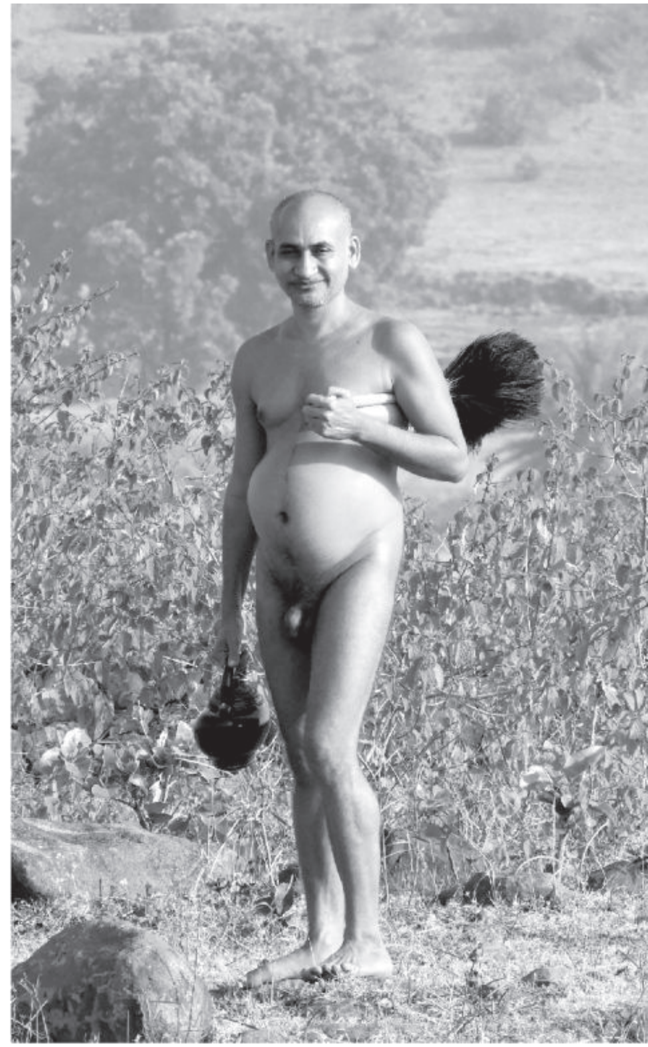
पंचकल्याणक सम्पन्न हुआ, मुनिवर ने आगे गमन किया।
जाते-जाते सबको हिल, मिलके रहने का आशीष दिया।।
मुनिवर को तब देने, विदाई सारी नगरी उमड़ाई थी।
हर ओर जुदाई का दुख था, हर ओर उदासी छाई थी।। (112)

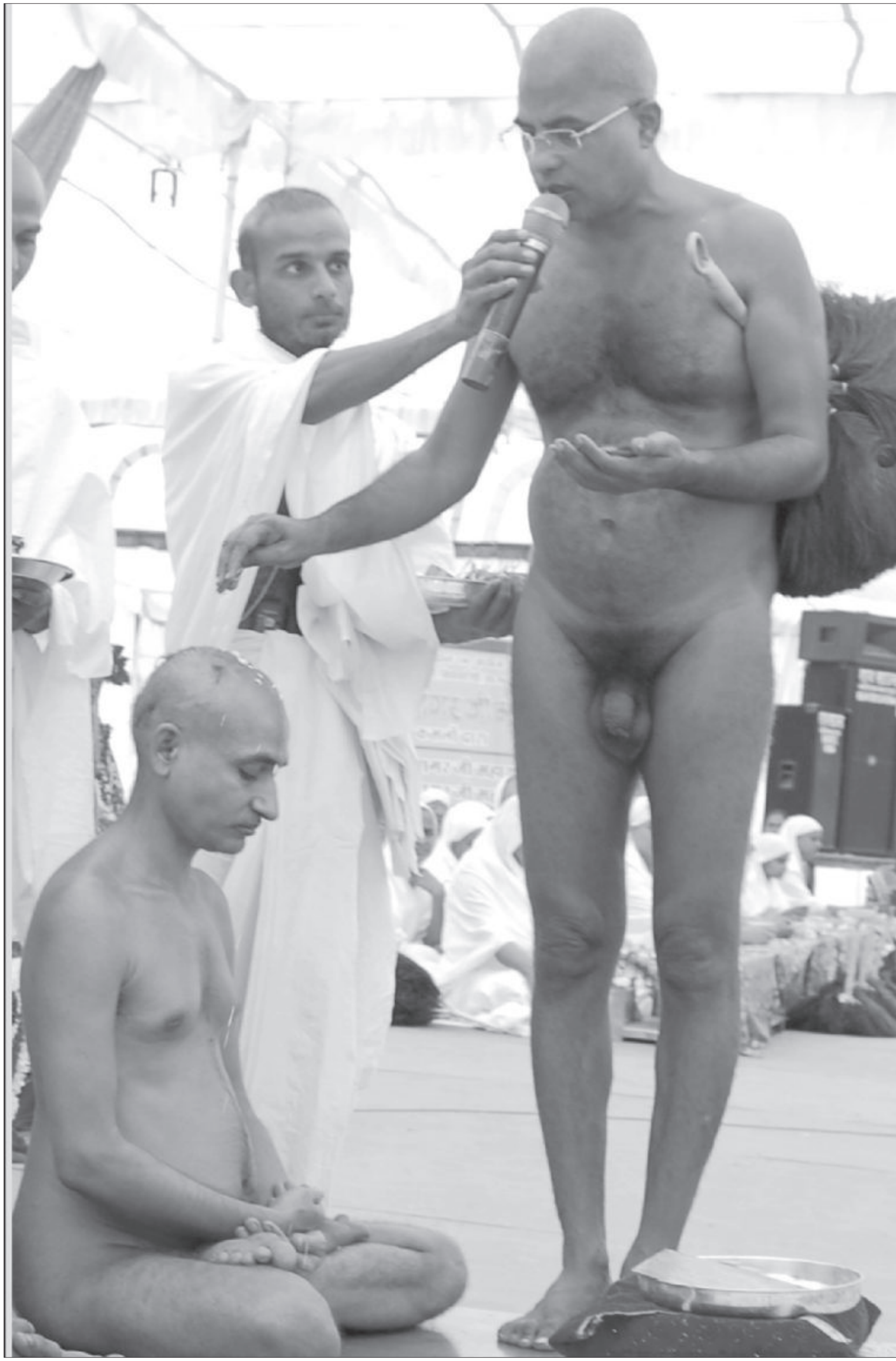
सबके ही ह्रदय विलखते थे, आँखें आँसु बरसातीं थीं।
रह रहके यादें चौमासे, की आँखों में आ जाती थीं।।
फरवरी में तारिख बारह थी, दिन भूले नहीं भुलायेगा।
हर एक नजारे में गुरुवर का, ही चेहरा नजरायेगा।। (113)

एकोनविंशतिः पर्व पूर्ण

शाश्वत शिवपुरी के साधक, की शिवपुरी से आज विदाई थी।
भारी मन से सब भक्तों ने, तब गमन की रीत निभाई थी।।
उनवीस शतक ये पूर्ण हुआ, अब आगे कथा बढ़ाऊँगा।
शिवपुरी से आगे की सारी, घटनायें तुम्हें सुनाऊँगा।। (114)

❑❑❑❑





bhavlingi sant

shramnacharya shri 108 vimarsh sagar ji gurudev

"विशंतिः पर्व"

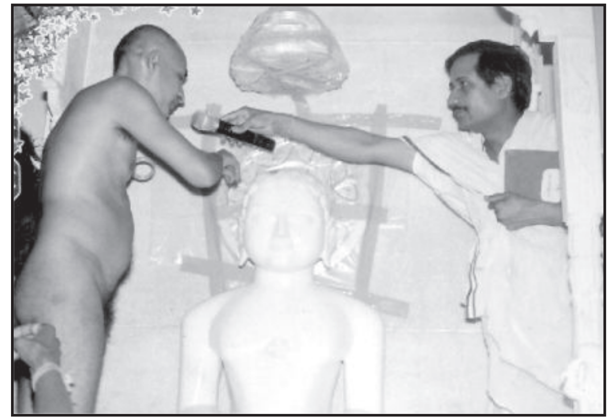
सूरि पर्व

संजीवनी भावलिंगी संत (महाकाव्य)

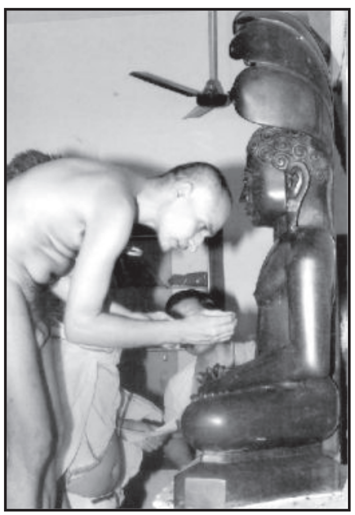
पंचकल्याणक दर्शन



देखने में बात ये कितनी निराली है। किसी वैरागी ने, किसी वैरागी पर नजर डाली है।।
अहो वैरागी ! आप जिस मुक्तिवधु को वरण करने जा रहे हो, मैं भी उस का वरण करूंगा।
(श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी शायद यही सोच रहे हैं)



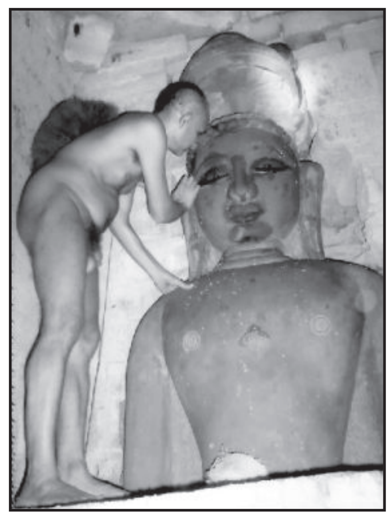
नसियां जी में पंचकल्याणक विधि करते हुए पूज्य श्री विमर्शसागर जी।
साथ हैं प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जयकुमार जी निशांत (रामगंजमंडी-२००७)



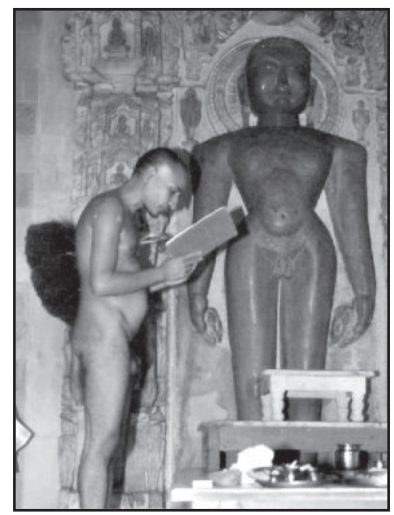
सरस्वती कॉलोनी में नवनिर्मित जिनालय में स्थित भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर संस्कार विधि करते हुए पूज्य श्री (कोटा-राज.)



नेमिनाथ जिनालय में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा पर संस्कार विधि करते हुए पूज्य श्री विमर्शसागर जी (एटा-उ.प्र.)



बरही क्षेत्र में प्रतिमाओं की शुद्धि के समय संस्कार विधि करते हुए पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागर जी



छत्री मंदिर स्थित भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा पर संस्कार करते हुए पूज्य विमर्शसागर जी (शिवपुरी-२००८)



"विशंतिः पर्व"

"सूरि पर्व"

मंगलाचरण

जिनके चरणाम्बुज का वंदन, सुर नर खग नित ही करते हैं।
जो कर्म घातिया घात दिये, बनके अरिहंत विचरते हैं।।
जो बंध तत्व निर्मुक्त हुये, मैं उनको वंदन करता हूँ।
जिनकी यह जीवन गाथा है, उनको भी उर में धरता हूँ।। (1)

श्री भक्तामर विधान, नरवर

शिवपुरी नगर से चलकर के, मुनिवर अब नरवर आये थे।
श्री भक्तामर मण्डल विधान, का आयोजन करवाये थे।।
न थके कदम न थमे, कदम नित आगे बड़ते जाते हैं।
चलते-फिरते ये सिद्ध, क्षेत्र सोनागिर जी आ जाते हैं।। (2)

सिद्धक्षेत्र सोनागिर जी की वंदना

ले समोशरण चंदाबाबा, कई बार यहाँ पर आये थे।
इस भूमि पर श्री नंग-अनंग, कुमार सिद्धि प्रगटाये थे।।
चन्दाबाबा प्यारे-प्यारे, भक्तों के मन को भाते हैं।
सोनागिरि में चंदाबाबा, सोना-सोना बरसाते हैं।। (3)

ग्वालियर में वेदी प्रतिष्ठा

मुनिवर ने भावसहित वंदन, कर आगे संघ बड़ाया था।
डबरा होकर के संघ ग्वालियर, नगरी में तब आया था।।
उपनगर कई पावन करके, बाजार फालका आये थे।
श्रीशांतिनाथ जिनालय की, वेदी शुद्धि करवाये थे।। (4)

साक्षात् ठाकुजी

मंदिर जी के ऊपर कमरे, में मुनिवर जी तब रहते थे।
मंदिर के सन्मुख इक, सज्जन राजेन्द्र साहू भी रहते थे।।
मुनिवर ने देखा एक दिवस, सन्मुख मकान के छाजे से।
दोनों ही दम्पत्ति मुनिवर जी, को वंदन करते हर्षाते थे।। (5)

फिर दीप जलाकर मुनिवर, की दोनों ने वहाँ आरती की।
फिर तो रोजाना वंदन पूजन, बन गई दैनिक चर्या सी।।
इक दिन मुनिवर के कमरे, में वो दोनों दर्शन को आये।
मुनिवर की चरण वंदना, कर दोनों ही प्राणी हर्षाये।। (6)

राजेन्द्र साहु अपने मन की, तब बात वहाँ बतलाते हैं।
तुमरे दर्शन से हे मुनिवर!, हम मनः शांति पाते हैं।।
अपने मन की इक बात, यहाँ मुनिवर तुमको बतलाते हैं।
तुमरी प्रतिमा में साक्षात, बस ठाकुर जी नजराते हैं।। (7)

मुनिवर बोले तुमरी श्रद्धा, के कारण ऐसा होता है।
कण-कण में प्रभु दिखाई दें, भक्ति का जादू होता है।।
बोला गुरुदेव आपकी इक, तस्वीर हमें मिल जाये गर।
हम उसको ठाकुर जी के, संग मंदिर में सजायेंगे घर पर।। (8)

तब इक समाज के बंधु ने, गुरुवर का चित्र प्रदान किया।
साहु जी ने हाथों में ले, माथे से उसको लगा लिया।।
गुरुदेव आपके फोटो पर, हम दीपक रोज जलायेंगे।
दर्शन रोजीना कर उसके, अपना सौभाग्य मनायेंगे।। (9)



मुरैना में नंदीश्वर मण्डल विधान

फिर मुनिवर गोपाचल आये, भक्तामर वहाँ विधान हुआ।
प्रभु की पूजा आराधन का, ये उत्सव बड़ा महान हुआ।।
होकर के बानमोर गुरुवर, अब नगर मुरैना में आये।
श्री नंदीश्वर मण्डल विधान का, आयोजन तब करवाये।। (10)

महावीर जयन्ति-मुरैना में

महावीर जयन्ति तक सबने, सानिध्य यहाँ पर पाया था।
मिलजुल कर सबने ये उत्सव, जोरों से खूब मनाया था।।
महावीर जयन्ति के दिन ही, मुनिवर ने आगे गमन किया।
कई छोटी बड़ी नगरियों को, मुनिवर ने था सानिध्य दिया।। (11)

ताजनगरी में महाराज

संघस्थ साधकों के संग, अब मुनिराज आगरा में आये।
श्रमण संस्कृति परिषद संग, भाई गुड्डू जी तब आये।।
इस महानगर के उपनगरों में, उपदेशों की लहर चली।
बस मुनिवर की ही चर्चा थी, हर चौराहे व गली-गली।। (12)

छीपीटोले में श्रुतपंचमी

मुनिवर छीपीटोला आये, श्रुत पंचमी पर्व मनाया था।
मुनिवर की चर्या और, ज्ञान का जादू सबपे छाया था।।
निर्मल सेवा समिति के, संग छीपीटोला समाज मिलकर।
चौमासे की कर रहे प्रार्थना, चरणों में श्रीफल धरकर।। (13)

मथुरा चौरासी की वंदना

मुनिवर बोले मथुरा जाकर, संकेत तुम्हें मिल पायेंगे।
देखेंगे पुण्य प्रबल किसका, चौमासा कौन करायेंगे।।
जम्बूस्वामी निर्वाणधरा, मथुरा चौरासी में आये ।
इस पुण्य धरा का वंदन कर, मुनिवर जी खूबई हर्षाये।। (14)

श्वेताम्बर राष्ट्रसंत कमल मुनि वंदनार्थ पधारे

तब ही श्वेताम्बर संत वहाँ, श्रीकमल मुनि कमलेश मिले।
संग उनके विजय मुनि आये, मिलकर हर्षाये खिले-खिले।।
मुनिवर चौमासा करने को, जब नगर आगरा आयेंगे।
हम दोनों अगवानि करने, गुरुदेव आपकी आयेंगे।। (15)

आगरा चातुर्मास 2008

फिर नगर आगरा वालों, को चौमासे का आशीष दिया।
सब झूम उठे ये सुन करके, मानों जैसे सब प्राप्त किया।।
चौदह जुलाई को छीपीटोला, में गुरुदेव पधारे थे।
श्रीकमल मुनि ने अगवानि, करके सौभाग्य सम्हारे थे।। (16)

चातुर्मास स्थापना

मुनिवर विमर्शसागर जी संग, मुनि विश्वपूज्य भी आये थे।
क्षुल्लक विशुद्ध सागर जी, संग राजीव भैया को लाये थे।।
सत्रह जुलाई चौमासे के, स्थापन का आयोजन था।
भाई प्रदीप पी.एन.सी. ने, तब किया ध्वजा आरोहन था।। (17)

मुन्ना बॉबी ने चतुर्मास का, मुख्य कलश रखवाया था।
वीरेन्द्र शास्त्री के द्वारा, संचालन वहाँ कराया था।।
कहते थे लोग कबाड़ी हम, कोई पुण्य उदय में आये हैं।
जो ऐसे श्रेष्ठ सरल साधु, चौमासा करने आये हैं।। (18)

गुरुपूर्णिमा/भक्तामर शिविर

अठदश जुलाई को, गुरु पूर्णिमा पर्व मनाया गया यहाँ।
इक्किस जुलाई से भक्तामर, का शिविर लगाया गया यहाँ।।
हर सिर पे टोपी धवल, और परिधान धवल नजराते थे।
तब रोज सैकड़ों लोग, यहाँ भक्तामर पढ़ने आते थे।। (19)



भक्तामर मण्डल की भक्ति

रात समय भक्तामर मण्डल, वाद्य सहित सब आते थे।
गुरुवर की सेवा वैयावृत्ति, में संगीत बजाते थे।।
तब चरण पकड़ने गुरुवर के, बस भीड़ तरसती रहती थी।
गुरु भक्ति के नूतन भजनों, की धार बरसती रहती थी।। (20)

श्री पार्श्वनाथ जिनालय का शिलान्यास/रक्षाबंधन पर्व

तेरह अगस्त को मधुनगर, में मुनिवर ने सान्निध्य दिया।
तब शिलान्यास प्रभु पारसनाथ, जिनालय का सम्पन्न किया।।
सोलह अगस्त रक्षाबंधन, का पर्व सामने आया था।
तब मुनिवर ने रक्षाबंधन पूजन, विधान करवाया था।। (21)

दसलक्षण धर्म की बहार

अब चार सितम्बर से लेकर, चौदह तक पर्वराज आये।
मुनिवर के शुभ आशीष तले, कई आयोजन थे करवाये।।
धर्मोपदेश प्रातःबेला, सन्ध्या प्रतिक्रमण कराते थे।
सब काम छोड़कर दौड़े-दौड़े, लोग वहाँ पर आते थे।। (22)

क्षमावाणी पर्व/श्वेताम्बर साधु हुये शामिल

इक्कीस सितम्बर का दिन था, तब पर्व क्षमावाणी आया।
है विश्व पर्व ये क्षमापर्व, मुनिवर ने सबको बतलाया।।
तब कमल मुनि कमलेश और, संग विजय मुनि भी आये थे।
मुनिवर की चरण वंदना कर, मिल जुल कर क्षमा मनाये थे।। (23)

सोई चेतना हुई जागृत

अगले दिन बड़े जैन मंदिर, पर मिलकर पर्व मनाया था।
मुनिवर की वाणी को सुनकर, सबने उत्साह दिखाया था।।
कई दिन से थीं प्रतिमायें रखीं, पर प्राण प्रतिष्ठा नहीं हुई।
मुनिवर को सुनकर जाग गई, जो पड़ी चेतना सोई हुई।। (24)

आनंद महोत्सव

मानस समाज ने बना लिया, कल्याणक पाँच कराने का।
नूतन वेदी निर्माण कराके, प्रभु जी को पधराने का।।
दो अक्टूबर से ग्यारह तक, फिर पूजन शिविर लगाया था।
क्या पूजक पूज्य व पूजा फल, पूजा का क्रम सिखलाया था।। (25)

विरागभवन का शिलान्यास/तेरहद्वीप विधान

फिर 'विरागभवन' का शिलान्यास, मुनिवर की प्रेरणा से कीना।
पंडित दीवान पवन जी थे, जिनने सब अनुष्ठान कीना।।
फिर तीन दिसम्बर से नौ, तक था शमसाबाद संघ आया।
मण्डल विधान तेरह द्वीपों, का गुरुवर ने तब करवाया।। (26)

कोटा से पधारे 1008 गुरुभक्त

मुनिवर विमर्श सागर जी का, ग्यारवाँ संयम दिवस अहा।
छीपीटोला में उत्सव था, सम्पूर्ण आगरा झूम रहा।।
तब एक हजार आठ भक्तों, का दल कोटा से आया था।
गुरुभक्ति का अद्भूत उत्सव, भक्तों ने यहाँ रचाया था।। (27)

मुनिवर का संयम दिवस और, पिच्छी परिवर्तन का अवसर।
तब राजस्थानी पगड़ी से, शोभित होते भक्तों के सर।।
गुरु भक्ति का यह महाकुंभ, अचरज सा पैदा करता था।
गुरुवर को अपलक देख-देख, भक्तों का मन न भरता था।। (28)

ब्रह्मचारी भैया श्री प्रदीप भैया रविन्द्र जी आये थे।
विद्वानों ने तब मिलकर के गुरुवर के शुभ गुण गाये थे।।
संघस्थ ब्रह्मचारी भैया राजीव के शुभ निर्देशन में।
इक लघु नाटिका प्रस्तुत थी, गुरुवर के जीवन दर्शन में।। (29)

।। रयणसार वाचना ।।

।। वेदी प्रतिष्ठा ।।

फिर शीतकाल में रयणसार पर भव्य वाचना हुई यहाँ।
गुरुवर से दिव्य पाठशाला पढ़कर प्रभावना हुई यहाँ।।
फिर मदन लाल वैनाड़ा जी के भव्य कुशल निर्देशन में।
तब सेक्टर सात जिनालय में शुभ वेदि प्रतिष्ठा दर्शन में।। (30)

गुरुवर ने शुभ सानिध्य दिया, पंडित विनोद जी आये थे।
तब मुख्य पात्र आयोजन में बन अशोक पाटनी आये थे।।
यह बीस फरवरी से बाइस तक हुआ भव्य आयोजन था।
शुभ वेदीप्रतिष्ठा में सामिल होकर हर्षित सबका मन था।। (31)

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव आगरा

पंच कल्याण प्रतिष्ठा का, अब मंगल अवसर आया था।
लोगों में था उत्साह गजब, घर-घर में उत्सव छाया था।।
तब विमर्श सेवा समिति ने, सारा ही नगर सजाया था।
ब्रह्मचारी भैया राजीव जी, का निर्देशन तब पाया था।। (32)

अब एक मार्च से सात मार्च, तक आयोजन मंगलकारी।
हर ओर एक ही चर्चा थी, हर ओर एक थी तैयारी।।
मैदान तारघर नगरी का, दुल्हन की तरह सजाया था।
लगता था रूप अयोध्या का तब, उस स्थल ने पाया था।। (33)

ब्रह्मचारी श्री निशांत जी, का निर्देशन सबने पाया था।
पत्थर से प्रभु बनाने का, यह पावन अवसर आया था।।
कल्याणक पाँच मनाने, को श्री कुमुदनंदी जी आये थे।
मुनिवर से मंगल मिलन हुआ, सब नर नारी हर्षाये थे।। (34)

आचार्य श्री कुमुदनंदी जी का प्रवचन

तप कल्याणक का दिन आया था, कुमुद नंदी का उद्बोधन।
मुनिवर विमर्शसागर जी की, चर्या पर था हर एक वचन।।
बोले-मुनिवर विमर्शसागर हैं, सूरिपद के पूर्ण योग्य।
सूरिपद के सम्पूर्ण गुणों का, मुनिवर में है पूर्ण योग।। (35)
इनकी चर्या में वात्सल्य, की परिभाषा नजराती है।

है सहज वीतरागी मुद्रा, सेवा मुखरित हो जाती है।।
सूरिपद को स्वीकार करें, तो अपना पद मैं देता हूँ।
मैं गुरु बना करके उनको, शिष्यत्व ग्रहण कर लेता हूँ।। (36)

सारा ही सदन तालियों से, गुंजायमान हो जाता है।
मुनिवर के जय जयकारों से, हर कंठ स्वरित हो जाता है।।
मुनिवर बोले गुरुवर का पद, गुरुवर के हाथों से लेंगे।
गुरु के उपकारों का बदला, हम प्रेम समर्पण से देंगे।। (37)

आयोजन प्रभु बनाने का, सानंद हुआ सम्पन्न यहाँ।
मुनिवर के जय जयकारों से, अवनि अम्बर था गूँज रहा।।
इस तरह आगरा नगरी में, चौमासा ये सम्पन्न हुआ।
श्रद्धा भक्ति और ज्ञान यज्ञ, ये भव्य यहाँ निस्पन्न हुआ।। (38)

ताजनगरी से बड़े कदम बटेश्वर की ओर

आँखों में आँसु व श्रद्धा, उपहार दिलों में छोड़ चले।
अब नगर आगरा के भक्तों, से मुनिवर जी मुख मोड़ चले।।
अब ताज नगर से कर, विहार गुरुदेव बटेश्वर जाते हैं।
प्रभु नेमिनाथ का जन्म, नगर दर्शन करके हर्षाते हैं।। (39)



दादा गुरुओं की जन्म धरा

अब क्षेत्र बटेश्वर से एटा, की ओर चरण गतिमान हुये।
जिन भूखण्डों पर चरण पड़े, उनके मानो सम्मान हुये।।
एटा नगरी के आस-पास, दो श्रमण सूर्य का उदय हुआ।
सूरि सन्मति व विमल सिंधु, का इस माटी में उदय हुआ।। (40)

दादा गुरु सन्मति विमल सिंधु, की जन्म धरा ये पावन है।
इक ओर फफोतु ग्राम वसा, इक ओर कोसमा पावन है।।
सबसे पहले करके बिहार, गुरु ग्राम फफोतु आये थे।
सन्मति गुरु की यह जन्मधरा, दर्शन करके हर्षाये थे।। (41)

एटा समाज के मंत्रीवर भाई, प्रदीप जी तब आये।
एटा नगरी की ओर पधारें मुनिवर!, भाव हृदय लाये।।
इकतीस मार्च सन दो हजार नौं, की प्रभात मंगल बेला।
एटा नगरी गुरुवर आये, लगता था जैसे हो मेला।। (42)

एटा में महावीर जयन्ति

फिर सात मार्च को, वीर जयन्ति पावन पर्व मनाया था।
तब ताज नगर से सात बसें, भरके जनमानस आया था।।
प्रभु आदिनाथ का आराधन, मुनिवर ने तब करवाया था।
प्रभु महावीर के गुण गाये, मुनिवर जी का रंग छाया था।। (43)

आचार्य श्री गुप्तीनंदीजी से मिलन

बारह अप्रैल का दिन आया, सारी नगरी हर्षाई थी।
एटा नगरी में संत मिलन, की पावन बेला आई थी।।
आचार्य गुप्तिनंदी आये वात्सल्य, पूर्ण तब मिलन हुआ।
मुनिवर के वत्सलता गुण ने, गुप्ती नंदी को खूब हुआ।। (44)

शिखर कलशारोहण

अप्रैल अठारह से लेकर, अप्रैल बीस तक आयोजन।
मुनिवर की शुभ सन्निधि मिली, शिखरों पर था कलशारोहण।।
अप्रैल बाईस को मुनिवर ने, एटा नगरी से गमन किया।
महावीर क्षेत्र की तीर्थ वंदना का, मन में शुभ लक्ष्य लिया।। (45)

अतिशय क्षेत्र पचौखरा में संत मिलन

मुनिसुव्रत प्रभु अतिशयकारी, अब क्षेत्र पचोखरा आये थे।
आचार्य श्री सौभाग्य सिंधु, संग मुनि प्राणत जी आये थे।।
मुनिवर विमर्शसागर जी से, द्वय संघों का शुभ मिलन हुआ।
संतों से मिलकर के मुनिवर का, अब आगे को गमन हुआ।। (46)

मुनि युधिष्ठिरसागर से मिलन

कई गाँव नगर थे धन्य हुये, जब मुनिवर कदम बड़ाते थे।
पावन चरणों की रज पाकर, सब अतिशय मोद मनाते थे।।
मुनिराज युधिष्ठिर सागर का, मुनिवर विमर्शसागर जी से।
तब नगर बयाना मिलन हुआ, कुछ समय रूके थे नगरी में।। (47)

महावीर जी पहुँचे महावीर के लघुनंदन

मुनिवर जी अब करके, बिहार चाँदनपुर नगरी में आये।
महावीर प्रभु का प्रथम, दर्श करके थे खूबई हर्षाये।।
गुरुवर विद्यासागर जी की, जो श्रेष्ठ शिष्या साज रहीं।
आर्यिका रत्न श्री सुनयमति, माताजी यहाँ विराज रहीं।। (48)

आचार्य विद्यासागर सी छवि

अर्जिका सुनयमति माताजी, मुनिवर विमर्शसागर जी का।
दोनों का साथ अहार हुआ, हर्षित था मानस जन जन का।।
आहार हुआ निर्विघ्न वहाँ, माताजी बहु हर्षाईं थीं।
गुरुवर विद्यासागर जी की, छवि मुनिवर में नजराई थी।। (49)



साक्षात् महावीर सी चर्या

तब सुनयमति माताजी की, संघस्थ बहिन चौके आईं।
मुनिवर विमर्शसागर जी, को देके अहार खुशियाँ छाईं।।
ममता दीदी बोली मुनिवर!, चर्या प्रशस्त बड़ी भारी है।
लगता जैसे प्रभु महावीर, की चर्या यहाँ उतारी है।। (50)

गुरुवर की आगम चर्या

बोली, मुनिवर! तुमको, अहार जब देते तो यूँ लगता है।
चंदन वाला से भाव मेरे, ये रूप वीर सा लगता है।।
अर्जिका सुनयमति माता, का मुनिवर संग पुनः अहार हुआ।
माताजी का तब चौके में, सुंदर विनयी व्यवहार हुआ।। (51)

अपना आसन माताजी ने, मुनिवर के सन्मुख लगवाया।
मुनिवर की शांत निम्न दृष्टि, पर कोई न तब अंतर पाया।।
नवधा भक्ति जब पूर्ण हुई, मुनिवर चर्या को खड़े हुये।
अपने पाटे की दिशा बदल कर, मुनिवर जी तब खड़े हुये।। (52)

यह देख के सारा घटना क्रम, माताजी मंद मुस्काईं थीं।
आगम चर्या लख मुनिवर की, मन में खूबई हर्षाईं थी।।
माताजी का आहार हुआ, चौके से तब वो चली गईं।
पर बाहर जाकर खिड़की से, मुनिवर की चर्या देख रहीं।। (53)

मध्यान्ह काल में माताजी, ममता दीदी के संग आईं।
मुनिवर की चरण वंदना, कर चर्चा की तब अनुमति पाईं।।
माताजी बोली सुनयमति, निर्दोष आपकी चर्या है।
इस क्षेत्र योग्य न है मुनिवर!, बुन्देलखण्ड की चर्या है।। (54)

कई और धर्म चर्चा करके, वात्सल्य पूर्ण व्यवहार हुआ।
प्रतिक्रम करने का समय हुआ, चर्चा का उपसंहार हुआ।।
एटा वालों के भाग्य जगे, मुनिवर का चातुर्मास मिला।
सब हर्षित होकर झूम उठे, सबका था चेहरा खिला-खिला।। (55)

निर्ग्रंथ साधना में मायाचारी वर्जित

चाँदनपुर में इक ऐलक जी, मुनिवर के दर्शन को आये।
दर्शन करके अपने मन के, सब भाव उन्होंने बतलाये।।
बोले, गुरुवर! चौमासा ये, चाँदनपुर बीच रचा लीजे।
मैं गुरु आपको, शिष्य आप, हे गुरुवर! मुझे बना लीजे।। (56)

हम चतुर्मास में मोटे-मोटे, सेठ पकड़कर लायेंगे।
आशीष आप देते रहना, हम मिलकर उन्हें फसायेंगे।।
मुनिवर बोले-भैया! हमने, ये भेष दिगम्बर धारा है।
कर्मों का क्षय करना ही, भैया इक उद्देश्य हमारा है।। (57)

निर्ग्रंथ साधकों की चर्या, में मायाचारी वर्जित है।
मायाचारी के आते ही, खो जाता सब जो अर्जित है।।
संसार विषय के भोगों, की गर चाह हृदय में आयेगी।
तो सच कहता हूँ भैया!, ये साधुता ही खो जायेगी।। (58)

एटा की ओर बिहार

इस तरह की मायाचारी से, न हमको कोई प्रयोजन है।
हर श्वाँस-श्वाँस में शिवपथ, पर चलने का ही आयोजन है।।
ऐलक जी ने सोचा, अपनी न दाल यहाँ गल पायेगी।
अपनी माया इन सच्चे, मुनिवर ऊपर न चल पायेगी।। (59)



चाँदनपुर से करके बिहार, मुनिवर एटा की ओर चले।
एटा वालों की पलकों, में अब नूतन-नूतन स्वप्न पले।।
25 दिनों तक कर, बिहार मुनिवर एटा नगरी आये।
मंगल प्रवेश था भव्य हुआ, उत्साहित सभी नजर आये।। (60)

नगर प्रवेश/चातुर्मास 2009, एटा

चल रहा जुलाई का महीना, दिन तीन जुलाई प्रवेश हुआ।
स्थापन सात जुलाई को, नगरी में बड़ा विशेष हुआ।।
इस चतुर्मास का मुख्य, कलश सुल्लीभाई ने पाया था।
सबने ही मिलकर गुरुवर का, यश खुले कंठ से गाया था।। (61)

आयोजनों की बहार

बारह जुलाई से भक्तामर, का शिविर यहाँ प्रारंभ हुआ।
आबाल वृद्ध सबकी खातिर, यह ज्ञान यज्ञ आरंभ हुआ।।
अठवीस जुलाई पार्श्वनाथ, निर्वाण महोत्सव आया था।
चौबिस से तीन सितम्बर तक, पर्यूषण पर्व मनाया था।। (62)

ऐतिहासिक क्षमावाणी

फिर पाँच सितम्बर को एटा, में रचा गया इतिहास नया।
जब पर्व क्षमावाणी के दिन, मुनिवर का था उपदेश हुआ।।
मुनिवर की दिव्य देशना का, कुछ असर वहाँ इस तरह हुआ।
वर्षों के वैर विरोध मिटे, पावन सबका ही हृदय हुआ।। (63)

आनंद महोत्सव/आध्यात्मिक कवि सम्मेलन

जब माह सितम्बर का आया, बरसा था भक्ति का सावन।
ग्यारह से उन्निस तलक किया था, पूजन शिविर का आयोजन।।
फिर बीस सितम्बर काव्य यात्रा, का आयोजन किया गया।
इक महाकवि के चरणों कवियों, का सम्मेलन किया गया।। (64)

"वात्सल्य सिंधु"

कवियों ने मिलकर के श्रद्धा, से गुरुवर को श्रृंगारा था।
"वात्सल्य सिंधु" कहके, गुरुवर को सबने यहाँ पुकारा था।।
इस तरह हुआ ये भक्ति कुम्भ, भक्ति का अजब नजारा था।
जिन भक्तों का जिन मंदिर में, अद्भुत हर ओर नजारा था।। (65)

एटा की प्रसिद्ध जेल में प्रवचन

कारागृह एटा नगरी का, दो अक्टूबर को धन्य हुआ।
गुरुवर का तब काराग्रह, में कैदीजन को उपदेश हुआ।।
छैः अक्टूबर को ग्राम, फफोतु में सुंदर आयोजन था।
इस सन्मति गुरु की जन्म भूमि, पर मुनिवर जी का आवन था।। (66)

दीपावली पर्व/श्री सिद्धचक्र का आराधन

सत्रह अक्टूबर दिन आया था, चतुर्मास का निष्ठापन।
तब महावीर निर्वाण महोत्सव, का भी था शुभ आयोजन।।
पच्चिस से तीन नवम्बर, तक था सिद्ध चक्र का आराधन।
पंडित जी वर्धमान जी थे, बीते थे भक्ति में दस दिन।। (67)

पिच्छि परिवर्तन/जन्म जयन्ति कम्पिल में

तब तीन नवम्बर को बदली थी, पिच्छी अपनी मुनिवर ने।
फिर कम्पिल जी का वंदन, करने गमन किया था गुरुवर ने।।
दिन पन्द्रह नवम्बर को मुनिवर, का जन्म दिवस तब आया था।
सारे ही भक्तों ने मिलकर, के उत्सव खूब मनाया था।। (68)

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव एटा

कपिल जी से करके बिहार, फिर से मुनिवर एटा आये।
एटा समाज के लोग सभी, चरणों में श्रीफल ले आये।।
अब नेमिनाथ जिनालय, में कल्याणक पाँच कराना है।
प्रभु पार्श्वनाथ और मुनिसुव्रत, की प्रतिमायें पधराना है।। (69)



मुनिवर का शुभ आशीष, मिला एटा वालों के भाग्य जगे।
आयोजन की तैयारी में, सब युवा वृद्ध नर नार लगे।।
दो से तेरह फरवरि तलक, आयोजन बड़ा महान हुआ।
भगवान बने गजरथ, निकला, जिनशासन का सम्मान हुआ।। (70)

ब्रह्मचारी श्री निशांतजी का, निर्देशन सबने पाया था।
आचार्य विमल सिंधु की, प्रतिमा जी को भी पधराया था।।
फरवरी अठारह को मुनिवर, एटा नगरी से गमन किया।
दिल की श्रद्धा आँसु बनके, छलकी भक्तों ने नमन किया।। (71)

मथुरा में काव्य गोष्ठी

सत बीस फरवरी को, मुनिवर मथुरा चौरासी आये थे।
इस जम्बूस्वामी की भूमि, का वंदन कर हर्षाये थे।।
तब पाँच दिवस तक संघ, रुका इक काव्य गोष्ठी यहाँ हुई।
मुनिवर के कविता के वैभव, पर जनता सारी मुदित हुई।। (72)

खानिया जी/चूलगिरी वंदना

फिर तीन मार्च को मथुरा से, मुनिवर जयपुर की ओर बढ़े।
सब नगर गाँव थे धन्य, हुये चाहे छोटे हो चाहे बड़े।।
पन्द्रह मार्च को मुनिवर जी, जब क्षेत्र खानिया जी आये।
ऊँचे पहाड़ पर चूलगिरी, का वंदन कर सब हर्षाये।। (73)

आचार्य भरतसागर जी से मिलन जयपुर

अठवीस मार्च महावीर जयन्ति, में गुरुवर सानिध्य दिया।
आचार्य भरतसागर जी का, भी सबने तब सानिध्य लिया।।
दोनों संतों का मिलन देख, जयपुर नगरी हर्षाई थीं।
यह दृश्य देखने भीड, यहाँ सारी नगरी की आई थी।। (74)

गाड़ी-घोड़ो से दूर मुनिवर

मुनिवर ने अब आगे बिहार, करने का था संकेत दिया।
खण्डाका जी ने आकर के, मुनिवर से आग्रह यहाँ किया।।
बोले-जयपुर से नगर, भीलवाड़ा तक आपको जाना है।
मंगल बिहार की सभी, व्यवस्था हमको ही बनवाना है।। (75)

संग में दो हम गाड़ी देंगे, चौके के वर्तन भी देंगे।
सब नमक मसाले मिर्ची, धनिया भी तैयार करा देंगे।।
पर साथ में चलने वाले, मुनिवर! लोग हमारे पास नहीं।
हर एक व्यवस्था कर देंगे, चिंता की कोई बात नहीं।। (76)

मुनिवर-बोले निर्ग्रंथों का, यह शासन बड़ा निराला है।
ये स्वयं व्यवस्थित रहते हैं, न झगड़ा है, न झाला है।।
मुनिवर बोले गाड़ी घोड़े, बर्तन व मिर्च मसाले जो।
इनकी न चाहत है उनको, आतम के है मतवाले जो।। (77)

चिंता न आप करें किंचित, सब खुद व खुद हो जायेगा।
सम्पूर्ण समस्याओं का हल, खुद व खुद ही हो जायेगा।।
गाड़ी घोड़ों से दूर सदा, निर्ग्रंथ यात्रा करते हैं।
शुभ पुण्य को अपने ये मुनिवर, पग पग पे परखा करते हैं।। (78)

रैनवाल में मिले मुनि नवीनसागर

जयपुर से अब करके बिहार, मुनिवर संघी जी आये थे।
प्रभु आदिनाथ दर्शन वंदन, कर आगे कदम बढ़ाये थे।।
मुनिवर नवीनसागर जी से, जा रैनवाल में मिलन हुआ।
आहार किया फिर रैनवाल से, फागी नगरी गमन हुआ।। (79)

आचार्य बाहुबलीसागर जी से वात्सल्य मिलन

फागी से डिग्गी होकर, मुनिवर मालपुरा आगमन हुआ।
मुनिराज इन्द्रनंदी ससंघ से, वात्सल्य मय मिलन हुआ।।
अप्रैल माह छैः तारीख को, था मालपुरा से गमन किया।
सूरी श्री बाहुबलि सागर जी, से रस्ते में मिलन किया।। (80)

फिर विजयनगर की धरती पर, मुनिवर का भव्य प्रवेश हुआ।
मुनिवर की अमृत वाणी ने, था सबका हृदय खूब छुआ।।
दो दिन रुक करके मुनिवर, के अब पग आगे बढ़ जाते हैं।
अप्रैल बाईस को नगर भीलबाड़ा, गुरुवर आ जाते हैं।। (81)

उदयपुर-7 वर्ष बाद गुरुदेव से मिलन

आगे के भक्तों का मुनिवर, को पुण्य पुकार लगाता है।
जब कदम बड़े मुनिवर के, तो चित्तोड़ नगर आ जाता है।।
झीलों का सुंदर नगर उदयपुर, का परिवेश झूमता था।
गुरु और शिष्य के चरणों को, रह-रह के खूब चूमता था।। (82)

नगर उदयपुर में श्री मुनिवर, बारह जून को आये थे।
तेरह को अपने गुरुवर की, अगवानि भव्य कराये थे।।
तब सात वर्ष के बाद शिष्य ने, गुरु का दर्शन पाया था।
श्रद्धा इतनी उमड़ी आँखों में, जल निर्मल छलकाया था।। (83)

मुनिवर ने सप्त स्वर्ण कलशों, से गुरु के चरण धुलाये थे।
यह गुरु शिष्य का प्रेम देख, भक्तों के मन हर्षाये थे।।
गुरुवर विरागसागर जी ने, छब्विस जिन दीक्षायें दीं थीं।
तब वाघडोर संचालन की मुनिवर के हाथों सौपी थी।। (84)

डूँगरपुर चातुर्मास 2010

मुनिवर फिर अपना संघ, लिये डूँगरपुर नगरी जाते हैं।
सन दो हजार दस का, चौमासा जाकर वहाँ रचाते हैं।।
स्थापन से निष्ठापन तक, आयोजन कई कराये थे।
श्रावकचर्या होती कैसी, मुनिवर ने पाठ पढ़ाये थे।। (85)

सानंद हुआ सम्पन्न यहाँ, चौमासा यह डूँगरपुर का।
फिर गुरुवर के दर्शन पाने, को गमन हुआ था मुनिवर का।।
डूँगरपुर से करके बिहार, मुनिवर लुहारिया आते हैं।
थी प्यास पपीहे सी मन में, गुरुवर का दर्शन पाते हैं।। (86)

गुरुवर की उदारता

गुरुवर जी संघ सहित आये, तब मुनिवर को पधराने को।
जैसे कोई कुआ चला हो खुद, प्यासे की प्यास वुझाने को।।
गुरुवर को देखा मुनिवर ने, तो साष्टांग हो लेट गये।
गुरुवर को क्या वो भेंट करे, खुद ही मुनिवर जी भेंट भये।। (87)

जिनशासन होगा उन्नत-मिला एक महान आचार्य

मुनिवर गुरुवर के संग संग, फिर नगर बाँसवाड़ा आये।
शत अधिक साधुओं का, दर्शन करके श्रावक जन हर्षाये।।
मुनिवर विमर्श मुनिवर विनम्र, के सूरिपद आरोहण का।
गुरुवर विरागसागर द्वारा इस, नगरी में आयोजन था।। (88)

यह माह दिसम्बर चलता था, द्वादश तारीख दिवस आया।
सारी नगरी नर नार सजे, कण कण में था उत्सव छाया।।
प्रातःबेला से नगरी में, हलचल सी गजब दिखाती थी।
लगता था उत्सव की खुशियाँ, खुद धरती यहाँ मनाती थी।। (89)



नाना रंगों की रंगोली, कोई वंदनवार सजाते थे।
कोई गुरुवर की शुभ राहों को, सुमनों से वहाँ सजाते थे।।
श्री श्रेयांसनाथ जी मंदिर, से प्रातः जुलूस प्रारंभ हुआ।
सूरिपद के आरोहण का, यह महायज्ञ आरंभ हुआ।। (90)

नगरी के प्रमुख मार्गों से, तब जन शैलाब उमड़ता था।
गुरुवर विरागसागर जी का, शुभ संघ साथ में चलता था।।
गुरुवर के दोनों ओर चले, मुनिवर विनम्र मुनिवर विमर्श।
हर्षित पुलकित हो जाता था, जो भी कर लेता गुरु दर्श।। (91)

कस्तूर चंद बाबरिया ने, तब ध्वज आरोहण किया वहाँ।
पण्डाल खचाखच लोगों से, दिखती थी भीड़ ही भीड़ वहाँ।।
गुरुवर जी मंचासीन हुये, चंदा से गुरुवर लगते थे।
आजू बाजू में शिष्य सभी, बन तारे वहाँ चमकते थे।। (92)

उन तारों में दो तारों की, ज्योति कुछ अधिक चमकती थी।
सूरिपद को पाने वाले, शिष्यों में उनकी गिनती थी।।
मंगलाचरण करके बहनों, ने आयोजन प्रारंभ किया।
फिर दीप जला गुरु चरणों में, गुरु चरण धुला आशीष लिया।। (93)

सिंहासन पर बैठे गुरुवर का, मुनिद्वय को आदेश हुआ।
मुनिवर विमर्शसागर विनम्र, दोनों का ही उपदेश हुआ।।
मुनिवर विमर्शसागर जी ने, लघुता से चरण पखारे थे।
अपने सारे पद गुरुवर के, श्री पाद युगल पे वारे थे।। (94)

फिर गुरुवर का आशीषमयी, संक्षिप्त हुआ उद्बोधन था।
सूरिपद के कर्त्तव्यों का, जिसमें सुंदर संबोधन था।।
फिर गुरु विरागसागर द्वारा, दोनों ही पुंगव मुनिवर के।
सूरिपद के संस्कार किये, अपने पावन दोनों कर से।। (95)

मुनिवर विमर्शसागर जी, अब सूरी विमर्श कहलाये थे।
मुनिवर विनम्रसागर जी भी, सूरीपद को अपनाये थे।।
गुरुवर के जय जयकारों से, सारा आकाश गुंजाया था।
लगता था जैसे स्वर्ग उतरकर, आज धरा पर आया था।। (96)

सूरि विमर्शसागर जी ने पद सूरिगच्छाचार्य दिया।
सूरि विरागसागर जी को यह अलंकरण उपहार दिया।।
सूरिपद के अनुभव गुरुवर, से लेकर शिक्षायें भारीं।
जिनशासन को उन्नत करने, सूरिद्वय की थी तैयारी।। (97)

सूरिपद देने से पहले, गुरुवर ने पाठ सिखाया था।
प्रायश्चित्त ग्रंथ द्वय शिष्यों, को गुरुवर ने स्वयं पढ़ाया था।।
अनुभव के संग शिक्षा देकर, शिष्यों को योग्य बनाया था।
जिनशासन को उन्नत करने, का बीड़ा नया उठाया था।। (98)

छब्बीस दिसम्बर नगर, बांसबाड़ा से आगे कदम बड़े।
सूरी विमर्शसागर जी, अब कोटा नगरी की ओर चले।।
अठवीस दिसम्बर को, गुरुवर घाटोल नगर में आये थे।
नंदीश्वर व भरतेश्वर मति, माता ने शीष झुकाये थे।। (99)



आचार्य सच्चिदानंदजी/ग.आर्यिका सुभूषणमति माताजी से मिलन

कई गाँव नगर को पार, किया गुरुवर प्रतापगढ़ आये थे।
सूरी सच्चिदानंद जी भी, मिलकर खूबई हर्षाये थे।।
जनवरी तीन नीमच नगरी, गुरु के चरणों की धूल मिली
अर्जिका सुभूषण मति माता, अगवानी करने आन मिलीं।। (100)

आर्यिका विज्ञानमति माताजी ने की आगवानी

फिर सिंगोली नगरी में, जा गुरुवर के दोनों चरण पड़े।
गुरुवर की अगवानि करने, भक्ति से जन मन उमड़ पड़े।।
विज्ञानमति माताजी, तब अगवानी करने आईं थीं।
गुरुवर की चरण वंदना, कर मन में भारी हर्षाईं थीं।। (101)

शिखर कलशारोहण, कोटा

कई गाँव नगर पावन करते, गुरुवर बढ़ते ही जाते हैं।
जनवरी माह में सोलह को, कोटा नगरी आ जाते हैं।।
कहीं वंदनवार सजाये गये, कहीं तोरण द्वार लगाये गये।
गुरुवर की अगवानि करने, चौराहे गली सजाये गये।। (102)
महावीर नगर विस्तार योजना, में सुंदर आयोजन था।
मंदिर जी में शिखरों के ऊपर, तब कलशा आरोहण था।।
इक्किस से तेईस तारिख, तक सम्पन्न हुआ था आयोजन।
आयोजन इतना भव्य हुआ, कि झूम उठा भक्तों का मन।। (103)

बूचड़खाने पर रोक

कोटा नगरी में बूचढ़ खाना, खुलने का संकेत मिला।
सुनके गुरुवर जी के मन में, करुणा का शुभ्र प्रसून खिला।।
गुरुवर ने मन में ठान लिया, पशुओं को न कटने देंगे।
भूचड खाना कोटा नगरी, में कभी नहीं खुलने देंगे।। (104)

गुरुवर ने तब आह्वान किया, इक धर्मसभा का आयोजन।
पीपल के पेड़ तले चौराहे, पर गूँजे थे दिव्य वचन।।
सब धर्मों के सब संतों ने, गुरुवर का किया समर्थन था।
गुरुवर के वचनों से कोटा में, खड़ा हुआ आंदोलन था।। (105)

मुनिवर की वाणी का प्रभाव, सारी नगरी में फैल गया।
गुरुवर के कड़े विरोधों से, सारा ही शासन दहल गया।।
आखिर निर्ग्रंथों के चरणों, शासन ने शीष झुकाया था।
प्रस्ताव रद्द करने शासन, गुरुवर के चरणों आया था।। (106)

श्री शांतिलाल जी कोटा के, नगरीय विकास मंत्री आये।
करके वंदन गुरु चरणों, का गुरुवर के शुभ आशीष पाये।।
बोले इस धरती पर, बूचड़खाना न अब खुलने देंगे।
गुरुवर के वचनों को खाली, हम कभी नहीं जाने देंगे।। (107)

सारी समाज ने मिल करके, श्रद्धा के सुमन चढ़ाये थे।
फिर मुक्त कंठ से गुरुवर, के उपकारों को दोहराये थे।।
कोटा के शास्त्री मार्केट में, फिर गुरुवर जी आये थे।
जिनबिंबों को नूतन वेदी, पर गुरुवर ने पधराये थे।। (108)

पाटन पोल वेदी प्रतिष्ठा

फिर पाटन पोल जिनालय में, जिनबिम्बों को पधराया था।
गुरुवर विमर्शसागर जी का, सान्निध्य सभी ने पाया था।।
कोटा के सब उपनगरों में, गुरुवर ने था सान्निध्य दिया।
सब कोटा वालों ने गुरुवर की, वाणी का रसपान किया।। (109)

विंशतिः पर्व पूर्ण

इस तरह लेखनी को अपनी, थोड़ा विराम मैं देता हूँ।
शब्दों का ये श्रृंगार सुमन, गुरु चरणों में रख देता हूँ।।
सोपान वीसवाँ पूरा कर, गुरुवर को शीष झुकाता हूँ।
अगले सोपानों में गुरुवर की, मंगल गीता गाता हूँ।। (110)

❑❑❑❑





bhavlingi sant

"एक विंशतिः पर्व"

प्रशस्ति पर्व

संजीवनी भावलिंगी संत (महाकाव्य)

पंचकल्याणक दर्शन



गजरथ परिक्रमा में आचार्य श्री एवं विश्वपूज्यसागर जी ससंघ (शिवपुरी–२००८)



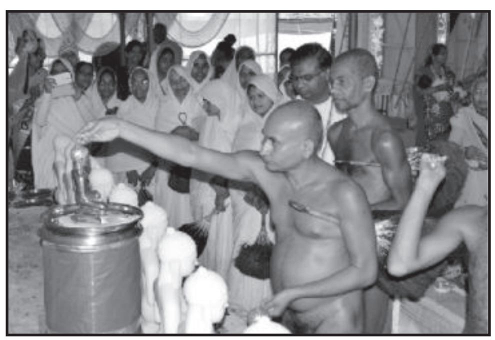
महामुनि आदिसागर जी की दीक्षा संस्कार विधि में वस्त्र त्याग करवाते श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी। समीप हैं सौधर्म इन्द्र श्री राजेश माते



श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज ससंघ गजरथ महोत्सव में (पृथ्वीपुर–२०१५)



तीर्थधाम आदिश्वरम् स्थित जिनबिम्ब की संस्कार विधि करते हुए श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी (चंदेरी २०१३)



विधिनायक आदिनाथ की प्रतिमा पर संस्कार करते हुए पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागर जी (पृथ्वीपुर पंचकल्याणक २१ फरवरी २०१५)



ब्रिगेडियर ग्रुप पूज्य श्री से आशीर्वाद लेते हुए (१६ फरवरी २०१५–पृथ्वीपुर)



"एक विंशतिः पर्व"

"प्रशस्ति पर्व"

मंगलाचरण

करता हूँ वंदन मैं उनको, जो कर्मों से निर्बंध हुये।
सब द्वन्द नाशकर सिद्धालय, में जा बैठे निर्द्वन्द हुये।।
उन सिद्धचक्र का ध्यान करूँ, यशगान करूँ श्रद्धान करूँ।
वंदन कर करके मैं अपने, सब ही कर्मों की हान करूँ।। (1)

गुरुदेव तूलिका को मेरी, आकर के थोड़ा संबल दो।
इस महाकथा को पूर्ण करूँ, इतना मुझको आतम बल दो।।
इस महाकथा को अब, थोड़ा आगे की ओर बड़ाता हूँ।
शब्दों की ये सुमनाबलियाँ, गुरुवर के चरण चढ़ाता हूँ।। (2)

प्रथम दीक्षा का निवेदन

विज्ञाननगर में गुरुवर की, जब अमृत वाणी खिरती थी।
लगता था दिव्य ध्वनी आकर, धरती पर अहा विखरती थी।।
अध्यक्ष राजमल जी इक दिन, गुरुवर के चरणों में आये।
अपने उर के सब भाव, विमल गुरुवर के चरणों बतलाये।। (3)

गुरुदेव आपने सूरीपद गुरुवर, से जो स्वीकारा है।
सूरी बनकर कोटा आये, गुरुवर सौभाग्य हमारा है।।
दीक्षा देने का अधिकार है, सूरीश्वर अपनाओ तुम।
ब्रह्मचारी राजीव भैया को, दीक्षा दे भाग्य जगाओ तुम।। (4)

गुरुवर बोले भैया जी ने, दीक्षा का किया निवेदन है।
उनको दीक्षा देना ही है, ये बात हमारे मन में है।।
पर अब तक दीक्षा देने, का स्थान नहीं है चयन किया।
इसलिये अभी तक दीक्षा, का आयोजन नाही सैट किया।। (5)

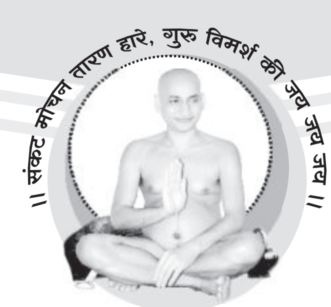
अध्यक्ष राजमल जी बोले, गुरुवर बस एक निवेदन है।
कोटा को ये सौभाग्य मिले, हम सब ही लोगों का मन है।।
गुरुदेव आपके द्वारा, ये पहली दीक्षा दी जायेगी।
उपकार करो गुरुदेव ये, नगरी धन्य-धन्य हो जायेगी।। (6)

प्रथम भगवती जिनदीक्षा

सारी समाज ने मिलकर, के गुरुवर से अर्ज लगाई थी।
दीक्षा कोटा में दो गुरुवर, बस यही भावना भाई थी।।
गुरुवर ने सारे भक्तों के, भावों का था सम्मान किया।
दीक्षा कोटा में ही होगी, मंगल आशीष प्रदान किया।। (7)

सारी समाज ने पृथक एक, दीक्षा समिति का गठन किया।
अध्यक्ष विनोद टोरडी के, हाथों कमान का भार दिया।।
गुरुवर ने इस आयोजन का, शुभ मंगल मुहुर्त प्रदान किया।
चौबिस से छब्बिस मार्च तलक, आयोजन का संधान किया।। (8)

ब्यालीस समितियाँ मंदिर की, बाईस रहे महिला मण्डल।
संग बीस युवाओं के ग्रुप थे, कई सारे बहिनों के मण्डल।।
इकबीस समितियाँ दीक्षा की, इन सबने यहाँ बनाई थीं।
दो शतक कार्यकर्ता जिसमें, तैयारी खूब कराई थीं।। (9)



24 मार्च को सिंह द्वार, का शुभ मंगल उद्घाटन था।
फिर रेजीमेंट परेड संग, घटयात्रा का आयोजन था।।
मैदान दशहरा कोटा का, इस आयोजन का स्थल था।
सौभाग्य जगा इस भूमि का, जो आयोजन शुभ मंगल था।। (10)

था शांति विधान का आयोजन, मेंहदी की रश्म निभाई गई।
फिर शाकाहार गोष्ठी संग, संध्या में गोद भराई गई।।
पच्चीस मार्च दीक्षार्थी की, आहार विधि सम्पन्न हुई।
सन्ध्या में भव्य विनौली की, शोभा भारी सम्पन्न हुई।। (11)

छब्बीस मार्च दीक्षार्थी के, केशों का प्रातः लुंचन था।
मध्यान्ह काल में 1 बजे, से दीक्षा का आयोजन था।।
ब्रह्मचारी राजीव भैया को, गुरुवर ने ऐलक दीक्षा दी।
ऐलक विचिन्त्य सागर उनको, गुरुवर जी ने शुभ संज्ञा दी।। (12)

इस तरह प्रथम दीक्षा गुरुवर, के कर द्वारा सम्पन्न हुई।
इतिहास रचा आयोजन ने, हर ओर थी चर्चा आम हुई।।
आयोजन में शामिल होने, विद्वत जन भारी आये थे।
त्यागी दो दर्जन से ज्यादा, अनुमोदन कर हर्षाये थे।। (13)

आर्यिका स्वतिभूषण माताजी ने की आगवानी

उन्तीस मार्च को कोटा से, गुरुवर ने आगे गमन किया।
प्रभु आदिनाथ के चरणों में, जा चाँदखेड़ी विश्राम लिया।।
रस्ते में क्षुल्लक नयसागर, गुरु दर्शन पा हर्षाये थे।
फिर नगर खानपुर में स्वस्तिभूषण, माताजी आये थे।। (14)

बुन्देलखण्ड की ओर गुरुवर के कदम

इस क्षेत्र चाँदखेड़ी से, अब बुन्देलखण्ड की ओर चले।
ऐलक सिद्धान्त सिंधु, रूठियाई में गुरुवर से आन मिले।।
सोलह अप्रैल को सन्ध्या, में गुरुदेव गुना नगरी आये।
महावीर जयन्ति आयोजन, बड़ी धूमधाम से मनवाये।। (15)

अशोक नगर ग्रीष्मकालीन वाचना

अप्रैल तेईस को चल करके, गुरुवर अशोकनगरी आये।
सारी समाज ने बड़ी, भव्यता से अगवानि करवाये।।
तब गंज जिनालय में गुरुवर, को संग जलूस के लाये थे।
उपदेश सुना आहार दिया, सबने सौभाग्य मनाये थे।। (16)

सन्ध्या बेला में कर, बिहार गुरु पार्श्वनाथ मंदिर आये।
अगले दिन वर्षगांठ, मंदिर की धूमधाम से मनवाये।।
अब पारसनाथ जिनालय, में कुछ दिन रुककर के गमन किया।
फिर शांतिनाथ जिनालय, में आके अपना सानिध्य दिया।। (17)

फिर ग्रंथ वाचना रयणसार, पन्द्रह मई से प्रारंभ हुई।
छह ढाला के संग, समयसागर की चर्चा भी आरंभ हुई।।
प्रतिदिन आकर के भव्य, जीव उपदेश गुरु का सुनते थे।
सुनके जिनवाणी गुरुमुख से, अपना आतम हित चुनते थे।। (18)

अशोकनगर से बिहार

फिर जून में चौदह तारिख, को इस वाचन का निष्ठापन कर।
गुरुदेव ललितपुर ओर, चले गुरुवर की आज्ञा को पाकर।।
थूवौन चंदेरी से होकर, के नगर ललितपुर आये थे।
गुरु अगवानि में पलक, पाबड़े सबने यहाँ बिछाये थे।। (19)



गुरुवाणी के अमृत जल, में सबने खूबई स्नान किया।
मिलकर समाज ने चतुर्मास, का गुरुवर से आह्वान किया।।
तब नगर जतारा, तालवेहट, व महरौनी के भक्त बड़े।
संग अशोकनगर के भक्त भी, चौमासा पाने को आन खड़े।। (20)

अशोकनगर चातुर्मास 2011

गुरुवर विरागसागर का जब, गुरुवर के द्वारा पत्र खुला।
तब अशोकनगर को चतुर्मास का, शुभ मंगल आशीष मिला।।
शुभ दस जुलाई को चतुर्मास, के हेतु नगर आगमन था।
गुरुवर की अगवानि करके, तब झूम रहा सबका मन था।। (21)

पन्द्रह जुलाई को गुरु पूर्णिमा, का शुभ अवसर आया था।
सत्रह जुलाई को चतुर्मास, का स्थापन करवाया था।।
फिर ग्रंथ वाचना चतुर्मास, में रयणसार प्रारंभ हुई।
अरिहंत देशना गुरुवर के, श्रीमुख से थी आरंभ हुई।। (22)

विमर्श लिपि का सृजन

इस चतुर्मास में ही गुरुवर, ने नूतन लिपि रचाई थी।
इस लिपी सृजन की बात, सभी शिष्यों को फिर बतलाई थी।।
वह नूतन लिपि सीखने की, सबने इच्छा बतलाई थी।
गुरुवर ने नूतन लिपि सभी, शिष्यों को तब सिखलाई थी।। (23)

सब ही शिष्यों ने उस लिपि को, तब "विमर्श लिपि" का नाम दिया।
गुरुवर की अद्भुत प्रतिभा, का सबने मिल जय जयकार किया।।
गुरुवर हैं ऐसे प्रथम संत, जिनने कोई लिपी रचाई है।
इतिहास के पन्नों पर, गुरुवर ने नूतन छवि बनाई है।। (24)

राष्ट्रीय शाकाहार संगोष्ठी

प्रभु पार्श्वनाथ निर्वाण दिवस, तब छैः अगस्त को आया था।
तेरह अगस्त को रक्षाबंधन, का शुभ पर्व मनाया था।।
चौदह अगस्त शाकाहारी, भोजन पर एक गोष्ठी थी।
शुभ धर्म अहिंसा का प्रचार करने, को सफल गोष्ठी थी।। (25)

फिर शुभ आनंद महोत्सव, का आनंद नगर में छाया था।
आया पर्यूषण पर्व, सुपावन सबने पुण्य कमाया था।।
ये माह सितम्बर में दो से, ग्यारह तक पर्वराज के दिन।
बारह को पर्व क्षमावाणी, निर्मल हो उठे सभी के मन।। (26)

इस चौमासे की सौरभ से सुरभित था नगरी का जन जन।
नित पर्वों की सौगातों से पुलकित पुलकित था सबका मन।
इस चौमासे की वेला अब पर्व दिवाली आया था।
घर घर में सजी दीपमाला, हर आँगन उत्सव छाया था।। (27)

चौमासे की अंतिम वेला निष्ठापन की घडियाँ आईं।
संग पिच्छी परिवर्तन के क्षण और काव्य गोष्ठी मन भाई।।
श्री बाबुलाल जी गहमंत्री गुरुवर के दर्शन को आये।
सुन गुरुवर जी का काव्यपाठ हर्षातिरेक से गुण गाये।। (28)

शिवपुरी धाम के ये साधक अब नगर शिवपुरी ओर चले।
वो नगर गाँव सब धन्य हुये जिनको गुरुवर के चरण मिले।
कोलारस नगरी से पहले विद्यालय में गुरुदेव रूके।
विद्यालय के मालिक चिंतित गुरु चरण बुलाने आन झुके।। (29)



सूखी स्कूल की बोरिंग थी ये चिंता उन्हं सताती थी।
पानी की कोई व्यवस्था भी न समझ में उनके आती थी।।
गुरुवर के चरणों का पावन जल जब बोरिंग में डाला था।
सूखी बोरिंग से जल निकला, गुरुवर का अतिशय आला था।। (30)

बोरिंग में जब पानी आया गुरुवर का जय जयकार किया।
गुरु चरणोदक के अतिशय को श्रद्धा से तब स्वीकार किया।।
कोलारस में करके अहार गुरुवर सेसई नगरी आये।
प्रभु शांतिनाथ की दिव्य छवि लख लखके गुरुवर हर्षाये।। (31)

प्रभु शांतिनाथ का सेसई में, दर्शन कर आगे संघ चला।
तब आठ नवम्बर को नगरी, अगवानी का सौभाग्य मिला।।
गुरुवर के संग मुनि विश्वतीर्थ, ऐलक विचिन्त्य सिंधु आये।
क्षुल्लक विशुद्ध व विश्वबंधु, को गुरुवर अपने संग लाये।। (32)

श्री कल्पद्रुम मण्डल विधान

शिवपुरी नगर में अगवानि, का उत्सव बड़ा निराला था।
भक्तों की श्रद्धा का जलसा, वो अचरज् करने वाला था।।
श्रीचंदा प्रभु जिनालय में, गुरुवर का संघ रुकाया था।
प्रतिदिन गुरु की वाणी सुनने हर, भक्त नगर का आया था।। (33)

नगरी में माह नवम्बर में, श्रीकल्पद्रुम आराधन था।
बारह से बाईस तारिख तक, बस एक प्रभु का अर्चन था।।
अंतिम दिन सारी नगरी में, गजरथ का भारी उत्सव था।
लगता था कोई विधान नहीं, कल्याणक महा महोत्सव था।। (34)

फिर छत्री मंदिर शांतिनाथ, प्रभु के ऊपर कलशारोहण।
फिर नगर जतारा जाने को, गुरुवर ने आगे किया गमन।।
गुरुसंघ करैरा व झाँसी, पृथ्वीपुर और ओरछा से।
कई गाँवों की श्रद्धाओं ने, अगवानि की थी हरषा के।। (35)

गुरुदेव पधारे गृहनगरी

ये आठ दिसम्बर का सूरज, कुछ ज्यादा ही चमकीला था।
धरती का दामन भी खुशियों, से लगता गीला गीला था।।
गलियाँ भी राह निहार रहीं, चौराहे सारे उत्सुक थे।
वृक्षों के फूल डालियाँ भी, स्वागत करते थे झुक झुक थे।। (36)

मजहब की सारी दीवारों, को तोड़ दिया था लोगों ने।
आकर के सारी राह सजाई, हो जैसे शुभ योगों ने।।
क्या शासन और प्रशासन सब, इक रंग में रंगा दिखाता था।
जो भी दिखता गुरुवर की, अगवानी को दौड़ा जाता था।। (37)

वो कुंडपहाड़ी गुरुवर के, चरणों में वंदन करती थी।
गुरुवर के चरण धुलाने को, दो नहरें वहाँ मचलती थीं।।
वो मदन सरोवर जिसने, गुरु को बचपन में नहलाया था।
उसने अपनी लहरों में स्वागत, का संगीत सुनाया था।। (38)

न हिन्दु और मुसलमां थे, न जैन अजैन दिखाते थे।
सब नगर जतारा के गौरव, को देख देख हर्षाते थे।।
गुरुवर के चरण धुलाने, हाथों में कलशे नजराते थे।
हर द्वारे पे रंगोली, सब श्रद्धा के दीप जलाते थे।। (39)



दुल्हन के जैसा आज सजा, ये नगर दिखाई देता था।
जिस ओर नजर जाती गुरुवर, का चित्र दिखाई देता था।।
सब श्रद्धा से भरकर थालों, में गुरु के चरण धुलाते थे।
बीती यादों के चन्द्र अश्क, गुरु चरणों पे गिर जाते थे।। (40)

वो लोग धन्य हो उठे आज, जिनने वो बचपन देखा था।
उन मित्रों का सम्मान बड़ा, जिनने अल्हड़पन देखा था।।
वो गली और चौबारे भी, अब मंद मंद मुस्काते थे।
कोई बल्लु इन गलियों में, नित ही आते व जाते थे।। (41)

नगर जतारा का कण-कण, जन-जन का मन था झूम रहा।
गुरुवर की अगवानि करने, उमड़ा था बड़ा हुजूम अहा।।
गुरुवर के जय जयकारों से, धरती आकाश गुंजाते थे।
सागर की लहरों सी उमंग ले, युवा घुमड़ते जाते थे।। (42)

मातापिता ने धुलाये संयमी पुत्र के चरण

गुरुवर की एक झलक पाने, सब उत्साहित नजराते थे।
गुरुवर अपनी नजरों से, ही आशीष लुटाते जाते थे।।
वो घर आ गया राह में, ही जिसमें थे छोटे और बड़े।
वो मात पिता भाई बहिना, परिजन स्वागत को द्वार खड़े।। (43)

इस जग में मात पिता, सबसे पहले ही पूजे जाते हैं।
पर सुत निर्ग्रंथ मुनि हो, तो वो भी चरणों झुक जाते हैं।।
वो दृश्य आज साकार हुआ, पितु माता चरण पखार रहे।
अपने ही सुत में भावी, अरिहंतों का रूप निहार रहे।। (44)

भारी जुलूस के संग गुरुवर, अब आगे कदम बढ़ाते हैं।
प्रभु पार्श्वनाथ के चरणों में, गुरुदेव जिनालय आते हैं।।
हर बहिन भाई माँ बेटे के, बस गुरु की ओर इशारे थे।
क्योंकि ये गुरुवर जन जन की, बन गये आँख के तारे थे।। (45)

घर-घर में जले घी के दिये

जिस तरह राम चौदह वर्षों, के बाद अयोध्या आये थे।
उनके आने की खुशी में, सबने घी के दीप जलाये थे।।
उस तरह जतारा नगरी के, ये राम लौट कर आये थे।
सोलह वर्षों के बाद सभी ने, घी के दीप जलाये थे।। (46)

द्वारे-द्वारे थे दीप जले, हर ओर रोशनी छाई थी।
लगता था आज जतारा में, फिन पुनः दिवाली आई थी।।
सोलह वर्षों के बाद हुआ, इस तरह नगर आगमन यहाँ।
हर ओर खुशी लहराती थी खिल, उठा था मन का सुमन यहाँ।। (47)

दूसरा सूरीपद दिवस

दूजा सूरी पद आरोहण गुरुवर, का खूब मनाया था।
दिन बारह दिसम्बर का आया, नगरी में उत्सव छाया था।।
संघस्थ साधुओं ने गुरु चरणों, श्रद्धा सुमन चढ़ाये थे।
तब भिण्ड नगर के भक्त, एक सुंदर सिंहासन लाये थे।। (48)

बा.ब्र. आँचल बहिन (विशु दीदी) का संघ प्रवेश

तब ही एटा की आँचल बहिना, का भी श्रीफल अर्पित था।
उसने अपना पूरा जीवन, गुरु चरणों किया समर्पित था।।
आजीवन ब्रह्मचर्य धारण कर, अपनी ड्रेस बदल डाली।
सब राग के बंधन तोड़ दिये, वैरागी बन खुशियाँ पाली।। (49)



आचार्य विमर्शसागर विधान

फिर चौदह दिसम्बर गुरुवर, का मुनिदीक्षा दिवस मनाया था।
सूरी विमर्शसागर विधान, का पाठ यहाँ रचवाया था।।
फिर ग्रंथ वाचना शीतकाल, की गुरुवर ने प्रारंभ करी।
श्रीकुंदकुंद के रयणसार पर, चर्चायें आरंभ करी।। (50)

आचार्य विमर्शसागर सभागार का शिलान्यास

सात जनवरी गुरु नाम पे, सभागार की नींव धरी।
फिर आगामी पंचकल्याण महोत्सव, की तैयारी शुरू करी।।
अठवीस जनवरी से लेकर के, तीन फरवरी तक मेला।
आयोजन में गुरु शुभाशीष पाने, को लगता था रेला।। (51)

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा जतारा

भगवान के मातपिता बन करके, अतिशय पुण्य कमाया था।
तब मनोरमा जी श्री महेश जी, ने सौभाग्य ये पाया था।।
सौधर्म इन्द्र बनकर भैया राजेश जी, माते पुण्य लिया।
ब्रह्मचारी ऋषभ जी भैया ने, सारा ही विधि विधान किया।। (52)

प्राकृत में प्रशस्ति लिखाकर रचा इतिहास

गुरुवर ने दूजा फिर से, इक इतिहास नया रचवाया था।
प्राकृत भाषा में लेख सभी, प्रतिमाओं पर लिखवाया था।।
तब ताजनगर की दो बेटी, नमिता श्वेता दो सगी बहिन।
ब्राह्मी सुंदरी बनके गुरु चरणों, हुई समर्पित आजीवन।। (53)

अंतिम दिन गजरथ का उत्सव, लाखों की भीड़ उमड़ आई।
हर ओर दिखाई देती थी, जैसे नरमुण्ड फसल आई।।
सारे ही नगर प्रशासन में, भारी प्रशन्नता छाई थी।
इन दिनों में क्योंकि कोई, अपराधिक घटना न आई थी।। (54)

पाषाणों से भगवान बने, ये उत्सव बड़ा महान हुआ।
सारे दुख दर्द मिटे सबके, खुशहाल था हर इंसान हुआ।।
तीर्थंकर बीस विदेह क्षेत्र, के जिनकी हुई प्रतिष्ठा थी।
मंदिर जी में बेदी ऊपर फिर, उनकी पुनः प्रतिष्ठा थी।। (55)

आचार्य पुंगव अलंकरण

जिनशासन के गौरवशाली सूरी, पद को स्वीकारा था।
जिनशासन का मंगल प्रभाव, सारे जग में विस्तारा था।।
इसीलिये जतारा की समाज, ने गौरव काज महान किया।
गुरुवर विमर्शसागर जी को "सूरि पुंगव", सम्मान दिया।। (56)

आर्यिका विशाश्री माताजी से मिलन

दो महीने नगर जतारा में, गुरुवर ने था सानिध्य दिया।
फिर सात जनवरी नगर जतारा, से था मंगल गमन किया।।
फरवरी माह में 10 तारिख, पृथ्वीपुर नगरागमन हुआ।
सोलह तारिख को विशा श्री माताजी, से शुभ मिलन हुआ।। (57)

सिद्धचक्र विधान / आ. विभव सागर जी से मिलन

बारह से बीस तलक नगरी, में सिद्धों का आराधन था।
श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान, का पुण्यमयी आयोजन था।।
तब बीस फरवरी को सूरि श्री विभवसिंधु जी आये थे।
आपस में मिल करके भ्राता, दोनों खूबई हर्षाये थे।। (58)

दोनों ही भ्राता मिलकर के, पृथ्वीपुर से था गमन किया।
मुनिराज विनिश्चलसागर से, वरुआसागर जा मिलन किया।।
वाईस फरवरी गुरुवर की, न विधि मिली आहार हुआ।
सन्ध्या बेला में वरुआसागर से, भी पुनः बिहार हुआ।। (59)



अगले दिन संघ सहित चलकर, गुरुदेव करगुँवा जी आये।
उस दिन भी वमन हुआ, भैया आहार ठीक न हो पाये।।
अब एक नहीं दो नहीं, संघ में चार संघ संग चलते थे।
सोनागिर में गुरुवर विराग से, मिलने सभी मचलते थे।। (60)

सिद्धक्षेत्र सोनागिर में गुरु-शिष्य मिलन

सत् बीस मार्च सोनागिर में, उपसंघ तीन पधराये थे।
गुरु चरणों की रज माथे पे, सारे ही शिष्य लगाये थे।।
गुरुपद रज ही शिष्यों के, माथे का श्रृंगार कहाती है।
शिष्यों के दिल की हर धड़कन, गुरु नाम से आती जाती है।। (61)

जयपुर की ओर बिहार

गुरुवर विमर्शसागर जी अब, गुरुवर विराग से आन मिले।
नाना रंगों के रंग विरंगे, गुरु भक्ति के फूल खिले।।
अपने गुरुवर के साथ-साथ, अब गुरुवर कदम बढ़ाते हैं।
चलते-चलते ये संघ ग्वालियर, नगरी में आ जाते हैं।। (62)

मुनिवर विहर्षसागर जी ने, अगवानि भव्य कराई थी।
गुरु चरणों में श्रद्धा भक्ति, की अनुपम ज्योत जलाई थी।।
अब संघ मुरैना नगरी में, करके बिहार आ जाता है।
गुरु शिष्यों का फिर मिलन हुआ, लख जन मानस हर्षाता है।। (63)

मुनीराज विनिश्चयसागर जी, अगवानि कर हर्षाये थे।
गुरुवर विराग अब संघ सहित, आगे को कदम बढ़ाये थे।।
इक बीस मार्च को नगर, धौलपुर वंदन कर हर्षाया था।
इतिहास में पहली बार यहाँ, इतना भारी संघ आया था।। (64)

बाईस मार्च को गुरु विरागसागर जी, अपना संघ लिये।
महावीर प्रभु के दर्शन को थे, चाँदनपुर की ओर चले।।
गुरुवर विमर्शसागर जी भी, अब नगर आगरा ओर बड़े।
पच्चीस मार्च को नगर आगरा, में गुरुवर के चरण पड़े।। (65)

फिर लौटे, बीते दिन

अगवानि करने गुरुवर की, सारी नगरी उमगाई थी।
अपनी श्रद्धा अपनी भक्ति, सबने खुलके दिखलाई थी।।
लगता था छीपीटोला में, बीते दिन वापिस आये हैं।
अपने गुरुवर को पा करके, नर नारी सब हर्षाये हैं।। (66)

महावीर जयन्ति आगरा

अप्रैल पाँच महावीर जयन्ति, का शुभ उत्सव आया था।
गजरथ आसीन हुये प्रभुवर, दर्शन सबके मन भाया था।।
गुरुवर भी अपना समोशरण, लेकर के संग-संग चलते थे।
ऐसी अद्भुत शोभा लखने, स्वर्गों के देव मचलते थे।। (67)

आचार्य सुंदरसागर जी से मिलन

सूरी सुंदर सागर आये, गुरुवर से पावन मिलन हुआ।
शुभ वात्सल्यमय मिलन हुआ, जिसने था सबका हृदय हुआ।।
गुरुवर विमर्शसागर जी व, सूरी सुंदरसागर जी का।
उपदेश साथ आहार हुआ, ये वंश था आदिसागर का।। (68)

बढ़ चले कदम आगरा से जयपुर की ओर

इस ताजनगर से अब गुरुवर थे, पिंकसिटी की ओर चले।
दिल्ली पब्लिक स्कूल भरतपुर, तक गुरुवर जी जा पहुँचे।।
विद्यालय में गुरुवर जी का, स्वागत वो अजव निराला था।
बच्चों द्वारा वंदन करना सब, अचरज करने वाला था।। (69)



निर्द्वन्द विचरते हैं योगी

आओ मैं तुम्हें दिखाता हूँ, निर्ग्रंथों की निर्लेप दशा।
निर्द्वन्द विचरते हैं योगी, इनको न कोई रोक सका।।
जिस वीतरागता को लखके, मन का विकार खो जाता है।
जो इनको आँख दिखाता है, वो खुद अंधा हो जाता है।। (70)

जब ग्राम पाडली से गुरुवर, का संघ गुजरता जाता था।
निर्ग्रंथ दशा का शुभ बाना, वो त्याग का पथ दर्शाता था।।
संग थे ऐलक विचिन्त्य सागर, संग में था श्रावक एक साथ।
इक ब्रह्मकुमारी का शिक्षक आया था, कुछ लोगों के साथ।। (71)

बोला गुरुवर से रुको आप, कुछ बात आप से करना है।
गुरुवर बोले-बोलो भैया!, क्या बात आपको करना है।।
शिक्षक बोला-बिन कपड़ों, के क्यों नंगे विचरण करते हैं?
अपने अतंस में बिल्कुल भी, क्या शर्म हया न धरते हैं।। (72)

हमरी माता बहिने ये, नंगा रूप देख शर्माती हैं।
माँ बहिनों के सन्मुख जाते, क्या शर्म तुम्हें न आती है?
गुरुवर बोले संतानें सब, ही जन्म से नंगी आती हैं।
वह नग्न अवस्था लखके, क्या माता बहिनें शर्माती हैं? (73)

उस बालक को लखके न, कोई शर्मभाव तब आते हैं।
क्योंकि बच्चे मन के सच्चे, सब निर्विकार कहलाते हैं।।
लेकिन जब लोगों के मन में, कुछ भाव विकारी आते हैं।
तब उन्हीं विकारों को ढकने, तन को कपड़े पहिनाते हैं।। (74)

शिक्षकजी! शर्म उन्हें आये, जो करें विकारों का पोषण।
अपने विकार पोषण हेतु, जो करते वस्त्रों को धारण।।
निज ब्रह्मभाव के साधक, हम निर्दोष साधना करते हैं।
शिशु सम होकर के निर्विकार, हम ब्रह्म साधना करते हैं।। (75)

माँ के सन्मुख बेटा छोटा, या बड़ा कभी न होता है।
बेटा तो बेटा रहता है, रिस्ता पवित्र ये होता है।।
तुम सुनो 'महाभारत' की घटना, तुमको याद दिलाता हूँ।
माँ गांधारी दुर्योधन का, दृष्टान्त तुम्हें समझाता हूँ।। (76)

माँ कोई बेटों को लखके, जो अगर विकारी हो जाती।
तब गाँधारी दुर्योधन को, फिर नग्न भला क्यों बुलवाती।।
शिक्षक जी अपनी दृष्टि, को इसलिये जरा निर्मल करिये।
निर्ग्रंथ ब्रह्म के साधक हैं, इन चरणों में श्रद्धा धरिये।। (77)

शिक्षक बोला ये ब्रह्म, आत्मा का स्वभाव कहलाता है।
नंगे रहने से ब्रह्मचर्य का, भाव नहीं मिल जाता है।।
हम पाँच शतक जोड़े, आस्त्रम में एक साथ ही सोते हैं।
फिर भी निज ब्रह्मचर्य पालन, करके सहयोगी होते हैं।। (78)

बोले गुरुवर व्यवहार में जब, तक स्त्री त्याग नहीं होगा।
तब तक वो आत्म स्वभाव रूप, निज ब्रह्म सुप्राप्त नहीं होता।।
जब ब्रह्मचर्य की कपड़ों में, ही तुमरी बड़ी विमलता है।
तब फिर तुमको वस्त्रों की, बोलो कैसी आवश्यकता है।। (79)



इसलिये हमारी तरह त्यागकर, वस्त्र आप भी दिखलाओ।
तुम अपनी ब्रह्म साधना का, कुछ परिचय सबको करवाओ।।
सुनकर के गुरुवर की वाणी, अब शिक्षक जी थे मौन हुये।
सारे लोगों ने गुरुवर का, जयकार किया व चरण छुये।। (80)

शिष्यों ने की गुरुदेव की अगवानी

गुरुवर ने समभावों से सबको, मंगलमय आशीष दिया।
हो गई थी सन्ध्या की बेला, आगे को अतः बिहार किया।।
गुरुवर जी पहुँचे चूलगिरी, जा किया खानिया का वंदन।
सूरि विशुद्ध आचार्य विभव, माँ विशाश्री से हुआ मिलन।। (81)

युग प्रतिक्रमण जयपुर

इन सभी शिष्यगण ने मिलकर, अपने गुरु की अगवानि की।
फिर गुरु विराग की जयपुर, ये बड़ी भव्य हुई अगवानी थी।।
जयपुर नगरी में गुरु विराग, का स्वर्ण जयन्ति आयोजन।
युग प्रतिक्रमण का सत्रह तारीख, को था भव्य समायोजन।। (82)

गुरुवर विराग ने शिष्यों को, देवागम यहाँ पड़ाया था।
"युगप्रमुख श्रमण आचार्य" गुरुवर, को कह यहाँ बुलाया था।।
सूरी विमर्शसागर द्वारा, ये अलंकरण था दिया गया।
गुरुवर विराग की सर्वोदय, टीका को अर्पण किया गया।। (83)

विजयनगर की ओर

जयपुर में आकर विजयनगर, के अर्जी लोग लगाते थे।
गुरुवर विमर्श का चौमासा, हो यही भावना भाते थे।।
गुरुवर विमर्शसागर जी ने, तब आठ मई को गमन किया।
जाने से पहले गुरु विराग का, शुभ मंगल आशीष लिया।। (84)

आर्यिका गम्भीर मति गरिमा मति ने की अगवानी

चौदह मई को बड़के बालाजी, जाकर के गुरु संघ रूका।
गणिनी माँ श्री सुपार्श्व मति का, था हुआ समाधिमरण यहाँ।।
माँ गरिमा ने गम्भीर मति संग, गुरुवर की अगवानि की।
फिर बड़ी विनय से बैठ गुरुवर, के संग आगम चर्चा की।। (85)

दो दिन बड़के बालाजी, में गुरुवर जी ने विश्राम लिया।
पर दो ही दिन गुरुवर को, आहारचर्या में अतंराय हुआ।।
दो दिना बाद चलके गुरुवर, वगरू कस्बे में आये थे।
तीजे दिन भी अतंराय हुआ, आहार नहीं हो पाये थे।। (86)

मौजमावाद की मौज

अठदस मई को गुरुदेव, मौजमाबाद नगर में आये थे।
अतिशयकारी जिनबिम्बों, का दर्शन करके हर्षाये थे।।
कोटा के वासी पदम जी, बज ने यहाँ विधान रचाया था।
गुरुवर की रचना गुरु मुख से, सुनकर जन-जन हर्षाया था।। (87)

उपाध्याय ऊर्जयन्तसागर जी से मिलन

तब उपाध्याय श्री ऊर्जयन्तसागर, का नगर आगमन था।
गुरुवर विमर्शसागर जी, संग तब आत्मीक सम्मेलन था।।
पच्चीस मई करके, बिहार गुरुवर दूदू नगरी आये।
श्रुत पंचमी पर्व का उत्सव था, गुरुवर को पा सब हर्षाये।। (88)

अजमेर में गुरुवर

फिर तीस मई को नगर, किशनगढ़ में गुरुवर के चरण पड़े।
इक दिन रूककर गुरुवर जी, अब अजमेर नगर की ओर बड़े।।
तब एक जून अजमेर नगर, गुरुवर का भव्य प्रवेश हुआ।
मुनिवर विज्ञान सिंधु से भी, गुरुवर का मंगल मिलन हुआ।। (89)



गुरुवर तब छोटे धड़े की, नसियाँ में जाके ठहराये गये।
सोनीजी की नसियाँ में, गुरुवर के उपदेश कराये गये।।
विद्वान कुमुदजी सोनी तब, प्रतिदिन पत्नि संग आते थे।
गुरुमुख से समयसार वाचन, सुनके खूबई हर्षाते थे।। (90)

नशीराबाद प्रवास

नौ जून को गुरुवर कर बिहार, अजमेर नगर को छोड़ दिया।
अब नगर नशीराबाद दिशा, में गुरुवर ने पग मोड़ लिया।।
आहार तीन इस नगरी में, लेकर गुरुवर ने गमन किया।
फिर जून में सत्रह तारिख को, जा विजयनगर विश्राम किया।। (91)

तीर्थधाम शान्ति जिनायतन का शिलान्यास

'श्री विमर्शसागर श्रमण बसतिका', में जा संघ रुकाया था।
बाबीस जून को शिलान्यास, जिनमंदिर का करवाया था।।
"तीर्थधाम शांती जिनायतन", गुरुवर ने शुभ नाम दिया।
जल्दी निर्माण कराने का, सारी समाज ने नियम लिया।। (92)

विजयनगर चातुर्मास 2012

फिर चतुर्मास का शुभाशीष, सारी समाज को यहाँ मिला।
सुनकर समाज के हर घर में, जैसे खुशियों का दीप जला।।
इस चतुर्मास में गुरुवर ने, भक्तामर शिविर लगाया था।
हर जातिवर्ग के लोगों ने, इस शिविर का लाभ उठाया था।। (93)

इस समय नगर का पुण्य, चरम पर उदय सभी का आया था।
सौ पग की दूरी पर त्रय, चौमासे का अवसर पाया था।।
नगरी की जनता गुरुवर वाणी, सुनने को यहाँ मचलती थी।
कमला श्री व सत्यानंद जी की, धर्म सभा भी चलती थी।। (94)

सन्ध्याबेला में गुरुवर जी, गुरु भक्ति रोज कराते थे।
सब भाई दिगम्बर श्वेताम्बर, मिल करके सुनने आते थे।।
गुरुवर निर्ग्रंथ साधना का, प्रतिदिन विश्लेषण करते थे।
सुनकर निर्ग्रंथ साधना को, सब ही जन अचरज करते थे।। (95)

श्री चरणों का प्रताप

इक दिन गुरुवर आहारचर्या, कर पुनः वसतिका आते थे।
आहार हुआ निर्विघ्न अतः, श्रावक जन खुशी मनाते थे।।
रस्ते में श्वेताम्बर भाई ने, आ गुरुवर के चरण छुये।
गुरु चरण परस को पाकर के, वो हर्षित पुलकित बहुत हुये।। (96)

सन्ध्या बेला में वो सज्जन, फिर पुनः गुरु चरणों आये।
श्रीफल अर्पित कर चरणों में, मन के सब भाव उभर आये।।
बोले-गुरुवर! मेरा इक ट्रक, था एक माह से गुमा हुआ।
न कोई पता लगता था, उसका उड़दो से था भरा हुआ।। (97)

जब चरण आपके छुये तो, गुरुवर अतिशय तुरत नजर आया।
ट्रक मिलने का तब, समाचार फौरन गुरुवर मैंने पाया।।
ये सभी आपके श्री चरणों, का ही प्रताप है हे गुरुवर!
इसलिये मैं श्रद्धा से भरकर, चरणों में आया हूँ गुरुवर।। (98)

अब रोज-रोज वो सज्जन, गुरु चरणों श्रद्धा से आते थे।
गुरुवर की पूजा भक्ति, करके अतिशय मोद मनाते थे।।
निर्ग्रंथों के चरणों में, जो सच्ची श्रद्धा से आता है।
अपनी श्रद्धा से बिन मांगे, ही वो सब कुछ पा जाता है।। (99)



सच्चे जैन योगी, शेष सुविधा भोगी

श्वेताम्बर साधक विजय मुनि, इक दिन दर्शन करने आये।
गुरुवर का दर्शन वंदन कर, चर्चा करके वो हर्षाये।।
बोले निर्ग्रंथ दिगम्बर ही, दुनिया में सच्चे योगी हैं।
बाकी तो हम जैसे साधु, तो गुरुवर सुविधाभोगी हैं।। (100)

"सरल" निवेदन

सुरेश 'सरल' जी सात नवम्बर, को गुरु दर्शन को आये।
ब्रह्मचारी भाई नवीन संग, में दर्शन करके हर्षाये।।
गुरुवर जी की जीवन गाथा, लिखने के भाव बताये थे।
बस इसीलिये तो श्री सरल जी, दर्शन करने आये थे।। (101)

दस + पाँच नवम्बर को गुरुवर, की जन्म जयन्ति आई थी।
सारे भक्तों ने धूमधाम से, खुशियाँ खूब मनाईं थी।।
इससे पहले ही माह नवम्बर, में तेरह तारिख आई।
था चतुर्मास का निष्ठापन, संग-संग दीवाली थी आई।। (102)

अणुदीक्षा महोत्सव

24 अक्टूबर को नगरी में, दीक्षा का आयोजन था।
भैया प्रकाश जी और अजय जी, का अब नूतन जीवन था।।
गुरुवर से क्षुल्लक दीक्षा पा, विश्वाभ विजेय कहाये थे।
संयम पथ पर गुरु निर्देशन, में आगे कदम बड़ाये थे।। (103)

सर्वधर्म समरसता की परिभाषा, बना चौमासा

सन दो हजार बारह का, ये समृद्धि मय था चौमासा।
ये सर्वधर्म सम्मलेन की, बन गया था नूतन परिभाषा।।
तब वात्सल्य करुणा की, गुरुवर ने रसधार बहाई थी।
क्या जैन अजैन हर इक दिल में, गुरुवर की छवि समाई थी।। (104)

एक विंशतिः पर्व पूर्ण

इस वर्धमान सोपान की गति, को अब विराम में देता हूँ।
अपने शब्दों में गुरुवर का, मैं शुभाशीष भर लेता हूँ।।
ये शुभाशीष ही लेखन में, आगे मुझको संबल देगा।
जिस कलम से होगी कथा पूर्ण, उस कलम को मेरी बल देगा।।

❑❑❑❑



विराग संसद दर्शन



पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी के साथ हैं आचार्य श्री विशुद्धसागर जी, आचार्य श्री विमर्शसागर जी,
आचार्य श्री विमदसागर जी, मुनि श्री विहर्षसागर जी, मुनि श्री विनिश्चय सागर जी



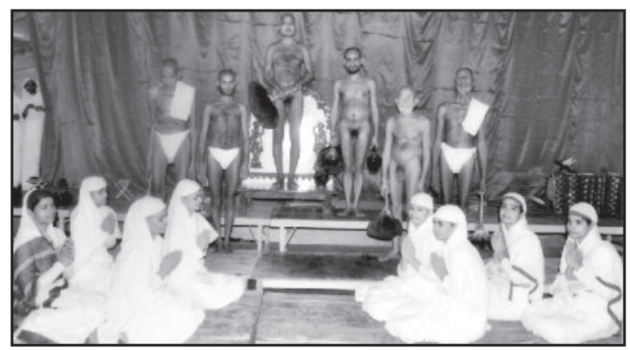
सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज की स्वर्ण जयंती के अवसर पर
आचार्य श्री विमर्शसागर जी गुरु सान्निध्य में प्रवचन करते हुए।
पास हैं आचार्य श्री विशुद्धसागर जी, आचार्य श्री विभवसागर जी, आचार्य श्री विमदसागर जी



गुरु भाईयों में तत्व चर्चा



विराग संसद में पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री विमर्शसागर जी



जयपुर में आचार्य श्री विरागसागर जी के संग – आचार्य श्री विमर्शसागर जी ससंघ



"द्वाविंशतिः पर्व"

पवित्र पर्व

bhavlingi sant
shramnacharya shri 108 vimarsh sagar ji gurudev

धर्मनेता की शरण में राजनेता



केन्द्रीय मंत्री श्री प्रदीप जैन 'आदित्य' गुरुदेव विमर्शसागर जी से वार्ता करते हुए



केन्द्रीय मंत्री सचिन पायलट पूज्य आचार्य श्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए



विधायक श्री ओमप्रकाश सखलेचा पूज्य श्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए। साथ हैं श्री निर्मल जी साकुण्या नेताजी



गृहमंत्री (राजस्थान सरकार) श्री गुलाबचन्द जी कटारिया पूज्य श्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए



सांसद रघुवीर सिंह कौशल पूज्य श्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए



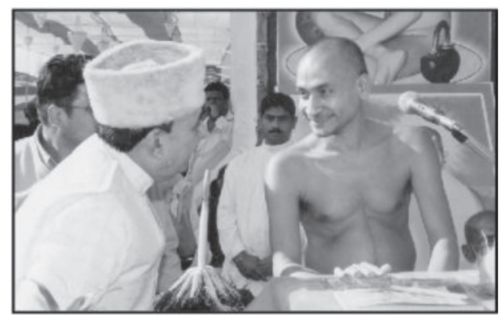
विधायक श्री प्रहलाद गुंजल रामगंजमण्डी पूज्य श्री विमर्शसागर जी से आशीर्वाद ग्रहण करते हुये



गृहमंत्री (राजस्थान सरकार) श्री शान्ति धारीवाल जी पूज्य आचार्यश्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए



सांसद बागपत श्री सत्यपाल जी आचार्य श्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए



पूर्व विधायक श्री अखण्ड प्रताप सिंह पूज्य श्री से वार्ता करते हुए (शिवपुरी २००८)



"द्वाविंशतिः पर्व"

"पवित्र पर्व"

मंगलाचरण

चतुर्विंशति स्तव

प्रभु आदीनाथ के चरणों में, श्रद्धा से शीष झुकाता हूँ।
प्रभु वर्द्धमान के चरणों में, भक्ति से झुक झुक जाता हूँ।।
चौबीसों तीर्थंकर मेरी, श्रद्धा को निर्मलता देंगे।
गुरुवर को करता हूँ, वंदन लेखन में अविरलता देंगे।। (1)

विजयनगर से बिहार

अठवीस नवम्बर को गुरुवर ने, विजयनगर से गमन किया।
आँखों में भर भर के आँसु, भक्तों ने उनको विदा किया।।
है नगर समीप गुलाब पुरा, गुरुवर ने जा विश्राम किया।
फिर ग्राम कोठिया अरबड़ व, राज्यास गाँव को धन्य किया।। (2)

फिर ग्राम अरणियाँ, शाहपुरा, से ग्राम विसनिया आये थे।
फिर चलकर के चमलेश्वर, में पारस प्रभु दर्शन पाये थे।।
अतिशयकारी पारस बाबा का, क्षेत्र बड़ा मन भावन है।
प्रभु पार्श्वनाथ की महिमा की, कण कण में कथा सुपावन है।। (3)

चंबलेश्वर पार्श्वनाथ

भक्तों ने भक्तामर विधान, आयोजन यहाँ रचाया था।
गुरुवर विमर्शसागर जी ने, वाणी से रस बरसाया था।।
करके बिहार चंबलेश्वर से, जा श्यामपुरा में रात रुके।
चरणों बिजौलिया नगरी के, आकर के सारे भक्त झुके।। (4)

बिजौलिया में गुरुवर

गुरुवर बिजौलिया नगरी में, प्रभु पार्श्व नाथ का दर्श किया।
कहते हैं कमठ ने इस भूँ, पर प्रभु पारस पर उपसर्ग किया।।
प्रभु पार्श्वनाथ ने इस भूँ, पर कैवल ज्योति प्रगटाई थी।
स्वर्गों से आकर देवों ने इस, भूँ की महिमा गाई थी।। (5)

इससे पहले महुआ नगरी, को गुरुवर ने था धन्य किया।
मुनिराज विप्रसागर जी ने, गुरु चरणों का आशीष लिया।।
चलके बिजौलिया से, गुरुवर ग्यारह को सिंगोली आये।
अगवानि बड़ी भव्य करके, नगरी में गुरुवर को लाये।। (6)

तीजा आचार्य पदारोहण का, मंगल अवसर आया था।
दिन बारह दिसम्बर का था, ये नगरी में उत्सव छाया था।।
सब नगर नगर के भक्त जुड़े, गुरु भक्ति करने आये थे।
गुरुवर की गुणगीता गाके, पूजा कर पुण्य कमाये थे।। (7)

मानो स्वर्ग उतर आया

अगले दिन भक्तामर विधान, आयोजन भव्य रचाया था।
सारी नगरी के भक्तों ने, पूजन कर पुण्य कमाया था।।
अगले दिन चौदह तारिख को, मुनि दीक्षा दिवस मनाया था।
इन तीन दिनों में लगा, नगर में स्वर्ग उतर कर आया था।। (8)

सिंगोली से करके बिहार, गुरुवर बोराब नगर आये।
श्री शान्तिनाथ मण्डल विधान, का आयोजन सब करवाये।।
फिर भैंसरोडगढ़, श्रीपुरा, रावतभाटा गुरुवर आये।
अध्यक्ष राजमल पाटौदी कोटा, से दर्शन को आये।। (9)



कोटा प्रवेश

रावतभाटा से कर बिहार, कौलीपुर में आहार हुआ।
फिर कोटा में मंगल प्रवेश, करने को वहाँ बिहार हुआ।।
इक्कीस दिसम्बर को कोटा, नगरी में भव्य प्रवेश हुआ।
महावीर नगर विस्तार योजना, में जाके विश्राम हुआ।। (10)

विमर्शसागर श्रमण वसतिका शिलान्यास

बाईस दिसम्बर को चौषठ, ऋद्धि विधान करवाया था।
तेईस दिसम्बर भक्तामर जी, का विधान रचवाया था।।
फिर "विमर्शसागर श्रमण वसतिका", का भूमिपूजन कीना।
था श्रद्धा भक्ति और समर्पण, का आलम भीना-भीना।। (11)

महावीरनगर विस्तारयोजना, से गुरुवर नसियाँ आये।
भक्तों ने बड़ी भव्यता से, नसियाँ में गुरुवर पधराये।।
नसियाँ जी में दो दिन रुककर, भक्तों को दर्शन लाभ दिया।
फिर नसियाँ जी से तलवण्डी, जाने को वहाँ बिहार किया।। (12)

लघु भ्राता से मिलन

भारी समूह संग भक्तों, का गुरुवर तलवण्डी आये थे।
लघु भ्राता सूरि विमदसागर, अगवानि कर हर्षाये थे।।
पच्चीस दिसम्बर कोटा की, चिर यादों में बस जायेगा।
ये संत मिलन की मीठी, यादें सबको याद दिलायेगा।। (13)

छब्बीस दिसम्बर कर बिहार, गुरुवर विज्ञाननगर आये।
अगले ही दिन विज्ञाननगर, को छोड़ कदम आगे आये।।
गुरुदेव चाँदखेड़ी आये, इकतीस दिसम्बर का दिन था।
अगवानि कर श्रृष्टिभूषण माता, ने कीना वंदन था।। (14)

जंगल वाले बाबा ने की चरण वंदना

मुनिवर चिन्मयसागर 'जंगल वाले बाबा', भी आये थे।
गुरुवर विमर्शसागर जी से कर, मिलन बहुत हर्षाये थे।।
मुनिराज प्राप्तिसागर भी गुरुवर, से आके मिलन किया।
चर्चाये गुरुवर से करके दोनों, मुनिवर ने नमन किया।। (15)

नयावर्ष 2013

नव वर्ष मनाने गुरुचरणों, में भक्त सैकड़ों आये थे।
नव वर्ष गुरु का शुभाशीष, पाकर के मोद मनाये थे।।
इक साल बन गया था अतीत, इक वर्तमान बन आया था।
गुरु शुभाशीष पा भक्तों ने नव, वर्ष का पर्व मनाया था।। (16)

प्रभु आदिनाथ का वंदन कर, आगे का लक्ष्य लिया गुरुवर।
कई गाँव नगर कस्बा आये, सबको आशीष दिया गुरुवर।।
बढ़ते-बढ़ते अविराम कदम, कुंभराज नगर में आये थे।
अवसर पहला था नगरी में जब, सूरी नगर में आये थे।। (17)

फिर आठ जनवरी को राधोगढ़ में, गुरुवर के चरण पड़े।
अस्सी घर की छोटी समाज पर, भाव सभी के बड़े-बड़े।।
सबको आशीष दिया गुरुवर ने, फिर आगे प्रस्थान किया।
अगले दिन जाकर के गुरुवर आरोन, नगर विश्राम लिया।। (18)

आरोन में गुरुवर

गुरुवर विशुद्धसागर जी के, जो शिष्य प्रवर कहलाते हैं।
ये जन्म नगर है उनका, जो मुनिवर सुव्रत कहलाते हैं।।
दो दिन रुककर आरोन नगर, अब गुरु पद बढ़ते जाते हैं।
छोटे गाँवों के गुरुपद रज से, कद भी बढ़ते जाते हैं।। (19)



पुण्य प्रसूता अवनि

आरोन नगर से चल गुरुवर, कचनार गाँव आ जाते हैं।
श्रावक जन सभी अशोकनगर, के चौका यहाँ लगाते हैं।।
दो चौमासे करवाने का जिस, नगरी को सौभाग्य मिला।
गुरुपद रज पाने फिर अशोकनगरी, का था सौभाग्य खिला।। (20)

ये नगर नहीं है साधारण, ये पुण्य प्रसूता अवनी है।
कई बनी आर्यिका मातायें, कई श्रमणों की ये जननी है।।
मुनिवर विचिन्त्यसागर जी, की यह गृह नगरी कहलाती है।
मुनिवर विजेय, मुनि विश्वआर्य की, कर्म धरा कहलाती है।। (21)

विजयांतश्री माँ नगरी की, गुरु निर्देशन में चलती हैं।
नेहा, सृष्टी दोनों बहिनें, गुरु अनुशासन में ढलती है।।
ब्रह्मचारी श्री अंकित भैया गुरु चरणों शोभा पाते हैं।
कई और श्रमण एवं श्रमणी, इस भूँ का मान बड़ाते हैं।। (22)

भव्य आगवानी

जनवरी माह में बारह को, गुरु संघ नगर में आया था।
वैनर झण्डे, रंगोली से, सारा ही नगर सजाया था।।
सब युवा वृद्ध अगवानि को, गुरुवर की यहाँ मचलते थे।
नगरी के दो दो साधु गुरु के, आजू बाजू चलते थे।। (23)

नगरी में तब मंगल प्रवेश, गुरुवर का भारी भव्य हुआ।
क्योंकि नगरी के लोगों ने, अपना अपना कर्त्तव्य छुआ।।
गुरुवर ने तीन दिवस रुककर, फिर आगे संघ बड़ाया था।
तारई अमरौंद डंगौरा हो थूवौन, क्षेत्र पर आया था।। (24)

अतिशय क्षेत्र थूवौन जी की वंदना

थूवौन क्षेत्र के आदिनाथ बाबा, का दर्शन भारी है।
सारी प्रतिमायें हैं विशाल, हर प्रतिमा अतिशयकारी हैं।।
छब्बीस जिनालय धरती की, शोभा को यहाँ बड़ाते हैं।
शिखरों पर सजते केशरिया, जिनशासन महिमा गाते हैं।। (25)

थुबौन क्षेत्र का वंदन कर, गुरुवर ने वहाँ बिहार किया।
फिर ग्राम तगाड़ी में जाके, गुरुवर ने था आहार लिया।।
मध्यान्ह काल करके बिहार, गुरुदेव चंदेरी आये थे।
भक्तों ने अगवानि करके नूतन, इतिहास रचाये थे।। (26)

चंदेरी में ऐतिहासिक आगवानी

इस नगर में ऐसी अगवानि, न पहले कभी दिखाई थी।
गुरुवर की अगवानि करने, सारी नगरी उमडाई थीं।।
सत्रह को ये मंगल प्रवेश, कुछ अलग दिखाई देता था।
गुरुवर के रंग में रंगा हुआ, हर भक्त दिखाई देता था।। (27)

तीर्थधाम आदीश्वरम् का पंचकल्याणक

नगर चंदेरी में नूतन, जिनमंदिर 'आदीश्वरम्' बना।
श्री भाई अखिल जी बंसल, का ये भाव हुआ साकार यहाँ।।
बस इसीलिये तो विजयनगर, से गुरुदेव का आना था।
इस आदीश्वरम् जिनालय के, कल्याणक पाँच कराना था।। (28)

गुरुवर विमर्शसागर जी का, सानिध्य सुखद ये पाया था।
श्री हुकुम चंद भारिल्ल जयपुर, का निर्देशन भी पाया था।।
रहे प्रतिष्ठाचार्य श्री राजेन्द्र कुमार जी, टीकमगढ़।
शांति पाटिल जी निर्देशन की, देते थे तस्वीरें गढ़।। (29)



सतबीस जनवरी से लेकर, के एक फरवरी तलक चला।
प्रभु के कल्याणक करवाने, को गुरुवर का सानिध्य मिला।।
गुरुवर प्रातः बेला कल्याणक, का स्वरूप बतलाते थे।
सन्ध्या में हुकुमचंद भारिल्ल जी, शास्त्र सभा करवाते थे।। (30)

पं. हुकुमचंद भारिल्ल ने पाया आशीष

इक दिन मध्यान्ह की बेला में, भारिल्ल जी गुरु चरणों आये।
गुरु चरण वंदना कर, गुरुवर से चर्चा करके हर्षाये।।
बोले भारिल्ल जी अब, गुरुवर! हमरे कांधे कमजोर हुये।
आगम के गहन पहलुओं को, जीवन भर हमने खूब छुये।। (31)

ज्ञान आपका पैना है, हमको बस इतना कहना है।
इस ज्ञान के रथ की बाघडोर, अब आपको थामे रहना है।।
फिर पुनः वंदना कर गुरुवर, के चरणों शीष झुकाया था।
गुरुवर के चरणों में आकर, अपना सौभाग्य मनाया था।। (32)

बा.ब्र. आँचल दीदी बनी ब्राह्मी

आयोजन में दो बहिनों ने, आजीवन व्रत अपनाया था।
ब्राह्मी सुंदरि बनने का शुभ, अवसर दोनों ने पाया था।।
एटा की थीं दोनों बहिनें, आँचल टिंकल ने पाया था।
बेटी होकर माँ बाप के गौरव, को जग में फैलाया था।। (33)

60 वर्ष बाद झुका श्रद्धा से माथा

सिंघई भाई प्रकाश एक दिन, गुरुवर के चरणों आये थे।
श्रद्धा से भक्ति से भरकर, गुरु चरणों शीष झुकाये थे।।
गुरुवर की आगममय चर्या, लखके श्रद्धा उर लहराई।
गुरुवर की स्वसन्मुख परिणति, उनको चरणों में ले आई।। (34)

बोले-मुनिवर! इन साठ वर्ष में, प्रथम बार मैं आया हूँ।
व प्रथम बार निर्ग्रंथ गुरु के, चरणों शीष झुकाया हूँ।।
न ही ऐसी चर्या देखी न, ही ऐसे गुरुदेव मिले।
गुरुदेव आपको लख उर में श्रद्धा, के नूतन फूल खिले।। (35)

प्राणपुरा में विमानोत्सव

तीन फरवरी को गुरुवर जी, प्राणपुरा में आये थे।
अगले दिन श्री जी के विमान, का उत्सव खूब मनाये थे।।
ब्रह्मचारी श्री राजेश टडा ने, तब संचालन यहाँ किया।
गुरुवर की चरण वंदना कर, गुरुवर का शुभ आशीष लिया।। (36)

आदिनाथ निर्वाणकल्याणक

उस ही दिन सन्ध्या बेला, में गुरुदेव चंदेरी आये थे।
नौ तारिख को प्रभु आदिनाथ, का शिव कल्याण मनाये थे।।
गुरुवर के द्वारा लिखा हुआ, श्री आदिनाथ विधान हुआ।
भैया भावेश के द्वारा तब, सब विधि विधान संधान हुआ।। (37)

बाईस फरवरी को मुनिवर, श्री बृषभ सिंधु जी आये थे।
अगले दिन त्रय मुनिराज स्वयंभू सागर जी, संग आये थे।।
मुनिवर सारे गुरुदर्शन कर, अपना सौभाग्य मनाते थे।
सूरीश्वर का पा शुभाशीष, मन में आनंद समाते थे।। (38)

गुरुदेव की रस परित्याग साधना प्रारंभ

छब्बीस फरवरी से गुरुवर, की तपोसाधना प्रखर हुई।
अब रस परित्याग तपस्या, की अंतस्थ भावना मुखर हुई।।
गुरुवर की आहार चर्या में, रस परीत्याग आरंभ हुआ।
रसना इन्द्रिय निरोध का, पावन शुभ उपक्रम प्रारंभ हुआ।। (39)



शिवपुरी डी.एम. ने की वंदना

सूरी विद्यासागर जी के, संग से दो बहिनें तब आईं थीं।
सरिता दीदी व निशा बहिन, दर्शन करके हर्षाईं थीं।।
शिवपुरी नगर डी.एम, गुरु दर्शन करने को आये थे।
गुरु दर्शन वंदन, अर्चन कर, अपना सौभाग्य जगाये थे।। (40)

उपाध्याय उदारसागरजी से वात्सल्य मिलन

फिर सात मार्च को नगरी ने, इक और पुण्य अवसर पाया।
जब उपाध्याय जी उदार सिधु, का संघ नगर में था आया।।
गुरुवर विमर्शसागर जी ने, जाकर के तब अगवानि की।
दो संत मिले जब आपस में, दुनिया को प्रेम निशानी दी।। (41)

अब नगर चंदेरी से बिहार, की मंगल बेला आई थी।
लेकिन ये बेला भक्तों को, लग रही बड़ी दुखदाई थी।।
पर संत पवन से बहते हैं, न इनका कोई ठिकाना है।
संतों का आना है मंगल मंगल, ही उनका जाना है।। (42)

ईशागढ़ प्रवास

फिर सात मार्च की सन्ध्या में, दोनों संघों ने गमन किया।
नौ तारिख को ईशागढ़ में, गुरुवर ने जा विश्राम किया।।
कवि भागचंद भागेन्दु ने, इस ही नगरी में जन्म लिया।
'महावीराष्टक' की रचना कर, जग को भक्ति उपहार दिया।। (43)

नगरी में आठ दिना रुककर, गुरुवर ने ज्ञान लुटाया था।
सारी ईशागढ़ नगरी में, उत्साह अपूर्व दिखाया था।।
ईशागढ़ से करके बिहार, गुरुदेव खतौरा आये थे।
मंत्री श्री पदम वरैया जी, गुरु दर्शन करने आये थे।। (44)

इन्दार प्रवास

छैः दिन का अल्प प्रवास किया, फिर कदम बड़े कुछ आगे को।
जैसे सागर चल दिया, स्वयं भक्तों की प्यास बुझाने को।।
रस्ते में ग्राम इंदार पड़ा, मानो भक्ती की परिभाषा।
क्या जैन अजैन सभी भाई, बस बोले भक्ति की भाषा।। (45)

वो गाँव धन्य हो जाता है, जहाँ सन्त जन्म ले आता है।
फिर युगों युगों तक सारा जग, उस गाँव की महिमा गाता है।।
इस गाँव की बेटी को गुरुवर, ने जग की माता बना दिया।
विक्रान्तश्री माताजी ने था, इसी गाँव में जन्म लिया।। (46)

श्रीराम दिखाई देते हैं

इस गाँव में तीन दिवस रुककर, गुरुवर ने जब था गमन किया।
रघुवंशी सारे लेट गये, गुरु चरणों को था पकड़ लिया।।
गुरुदेव आपकी मुद्रा में, श्रीराम दिखाई देते हैं।
जो बन विमर्शसागर आये, हमरी पीड़ा हर लेते हैं।। (47)

दो दिन फिर और रुके, गुरुवर होली का पर्व मनाया था।
व्यसन मुक्त करने सबको, गुरु ने उपदेश सुनाया था।।
गुरुवर की अमृतवाणी सुन, सबने शराब का त्याग किया।
गुरुवर से नशामुक्त रहने का, शुभ मंगल आशीष लिया।। (48)

पूर्व मंत्री ने पाया शुभाशीष

सतवीस मार्च को गुरुवर ने, इन्दार गाँव से गमन किया।
सारे ही ग्रामवासियों ने, गुरु चरण धुलाकर विदा किया।।
मथना के पूरण सिंह वेडिया, मंत्री जी कहलाते हैं।
उनके खाली मकान में, गुरुवर जी जा रात बिताते हैं।। (49)



रन्नौद नगर की ओर बड़े, गुरुवर के पावन चरण कमल।
अगवानि करने उमड़ पड़े, सब युवा वृद्ध, बच्चों के दल।।
फिर अकाझिरी व खरैह, गाँव होकर कोलारस आये थे।
भक्तों ने श्रद्धा के जल से, गुरुवर के चरण धुलाये थे।। (50)

भाई-बहिन ने चुना शिवपथ

परिवार एक, दो दिन में ही, गुरु चरणों हुआ समर्पित था।
इक बहिन भाई ने तन मन, जीवन चरणों किया समर्पित था।।
भाई अरबिन्द जैन जी, की संतानें किश्मत वाली हैं।
भैया सागर व बहिन रिया, शिव राहें गढ़ने वाली हैं।। (51)

शान्ति बाबा की वंदना

कोलारस से करके बिहार, गुरुवर सेसई जी आये थे।
प्रभु शांतिनाथ की शांत छवि, लख मनः शान्ति पाये थे।।
सेसई से पग गतिमान हुये, शिवपुरी नगर अब आया था।
सब नगर वासियों ने गुरुवर का, स्वागत भव्य कराया था।। (52)

शिवपुरी में सिद्ध चक्र

प्रभु शांतिनाथ की महिमा का, कोई पार न पाने वाला है।
भक्तों को सब कुछ देता, है वो बाबा छत्री वाला है।।
उस छत्री मंदिर में ही गुरुवर जी, का संघ रुकाया था।
फिर सिद्धचक्र मण्डल विधान का, विधि विधान जमाया था।। (53)

नगरी में जड़ीबूटी वाले, परिवार का पुण्य उदय आया।
जो सिद्ध चक्र मण्डल विधान, का आयोजन था करवाया।।
अप्रैल में तेबीस तारिख को, था वीर जयन्ति आयोजन।
सानिध्य मिला था गुरुवर का हर्षित थे, नगरी के जन-जन।। (54)

लघु पंचकल्याणक-अतिशय क्षेत्र पनिहार

फिर चार मई को गुरुवर ने, शिवपुरी नगर को छोड़ दिया।
पनिहार क्षेत्र की तीर्थ, वंदना करने रस्ता मोड़ लिया।।
दो तीन दिनों में ही, गुरुवर पनिहार क्षेत्र पर पहुँच गये।
जिनमंदिर हैं प्राचीन बड़े, दर्शन करके आनंद भये।। (55)

ग्यारह-बारह मई को, गुरुवर ने वहाँ प्रतिष्ठा करवाई।
कल्याणक पाँच लघु करके, प्रतिमा की शुद्धि करवाई।।
पनिहार क्षेत्र से कर, बिहार गुरुवर सोनागिर आये थे।
चंदाबाबा की शीतलता, अपने उर बीच बसाये थे।। (56)

नगरा झाँसी-वेदी प्रतिष्ठा

सोनागिर से करके बिहार, गुरुवर झांसी नगरी आये।
झांसी वाले अगवानि, भव्य कराके नगरी में लाये।।
झाँसी नगरी के नगरा, में वेदी शुद्धि करवाई थी।
शिखरों पर नूतन कलश चढ़े, व ध्वजा नई फहराई थी।। (57)

केन्द्रीय मंत्री ने लिया शुभाशीष

तीस मई से एक जून, तक था ये सुंदर आयोजन।
भाई प्रदीप 'आदित्य', मंत्री जी ने पाया था दर्शन।।
फिर तीन जून को कर, बिहार गुरुदेव बड़े मंदिर आये।
फिर पाँच जून से ग्रीष्म काल, में ग्रंथ वाचना रचवाये।। (58)

वाचना

दर्शनपाहुड़ पर गुरुवर की, तब ग्रंथ वाचना चलती थी।
गुरुवर की अमृतवाणी सुनने, भारी भीड़ मचलती थी।।
तेरह जून को श्रुत पाँचे, का पर्व महान मनाया था।
षट् खण्डागम जी ग्रंथराज, की महिमा को तब गाया था।। (59)



पृथ्वीपुर-वेदी प्रतिष्ठा

दो जुलाई को ग्रंथ वाचना, किया विसर्जन गुरुवर ने।
फिर छह जुलाई को झाँसी से, शुभ गमन किया था गुरुवर ने।।
दस जुलाई से बारह तक था, पृथ्वीपुर में आयोजन।
बाइसवें तीर्थंकर प्रभु नेमी, का वेदी पे स्थापन।। (60)

भिण्ड चातुर्मास 2013

सन् दो हजार तेरह का, ये चौमासा सन्मुख आया था।
इस बार भिण्ड नगरी में, ये सौभाग्य अनूठा पाया था।।
पृथ्वीपुर से करके बिहार, चौमासा नगरी में करने।
गुरुदेव पधारे भिण्ड नगर, सबके खाली दामन भरने।। (61)

भव्य आगवानी

गुरुवर के नगर आगमन पर, सब लगता चोखा चोखा था।
इतना उत्साह था लोगों में, ये पहला-पहला मौका था।।
मुनिवर सुरत्नसागर जी भी, गुरु अगवानि में शामिल थे।
सब युवा घुमड़ते मेघों से, गुरुभक्ति में सब गाफिल थे।। (62)

अगवानि करके गुरुवर को, चैत्यालय मंदिर लाये थे।
इससे पहले बाजार सदर में, गुरु उपदेश कराये थे।।
श्री विमर्श जागृति मंच, का आयोजन भी बड़ा अनूठा था।
बस गुरुवर दिखते थे सबको, सारा जग लगता झूठा था।। (63)

चैत्यालय मंदिर जी में, चौमासे का शुभ आयोजन था।
सतबीस जुलाई का दिन, था जब चतुर्मास स्थापन था।।
भाई सुरेश जी एटा वालों, ने सौभाग्य जगाया था।
इस चतुर्मास के मुख्य कलश, को स्थापित करवाया था।। (64)

इस चतुर्मास में रयणसार पर, गुरुवर का उपदेश हुआ।
श्रावक-साधु की चर्या सुन, सबमें उत्साह विशेष हुआ।।
तेरह अगस्त प्रभु पार्श्वनाथ, निर्वाण महोत्सव आया था।
सम्मेद शिखर की रचनाकर, लाडु निर्वाण चढ़ाया था।। (65)

फिर श्रमण संस्कृति रक्षा, का शुभ पावन उत्सव आया था।
श्री देव शास्त्र गुरु की रक्षा, का शुभ संकल्प दिलाया था।।
अब माह सितम्बर में नौ से, पर्यूषण शुभ आरंभ हुआ।
गुरुवाणी सुनकर आतम के, हित का कारज प्रारंभ हुआ।। (66)

रखा गया था विमर्श जागृति मंच, का दूजा अधिवेशन।
इस भिण्ड नगर में प्रथम बार था, गुरु भक्तों का सम्मेलन।।
फिर तीन नवम्बर को आया था, पर्व दिवाली का भारी।
हर घर आंगन में दीप जले थे, दूर हुई हर अंधियारी।। (67)

गुरुवर विमर्शसागर जी ने, प्रभु वीर महोत्सव मनवाया।
लाडु निर्वाण महोत्सव का, गुरुवर ने भारी चढ़वाया।।
संग चौमासा सम्पन्न हुआ, निष्ठापन आज कराया था।
सारे लोगों ने गुरुवर का शुभ मंगल, आशीष पाया था।। (68)

सात नवम्बर से सिद्धों, का आराधन अतिशयकारी।
श्री सुखानंद परिवार ने, ये आयोजन करवाया भारी।।
फिर गुरु विराग का सूरी, पद आरोहण का दिन आया था।
गुरुवर विमर्शसागर जी ने, ये उत्सव खूब मनाया था।। (69)



सरल जी पधारे

तब भाई 'सरल' जी नगर जबलपुर, से अगले दिन आये थे।
गुरुवर विमर्शसागर जी की, जीवन गाथा लिख लाये थे।।
भाई 'सरल' जी ने गुरुचरणों, विनयाञ्जलि चढ़ाई थी।
सारी समाज ने मिलकर के, सम्मान की रीत निभाई थी।। (70)

भगवती जिनदीक्षा

फिर गुरुदेव की जन्म जयन्ति, का शुभ अवसर आया था।
संग ही जिनदीक्षा आयोजन, गुरुवर ने शुभ करवाया था।।
ऐलक विचिन्त्य, सागर जी को, मुनि दीक्षा देकर धन्य किया।
क्षुल्लक विजेयसागर जी, को गुरुवर ने ऐलक बना दिया।। (71)

भैया देवेन्द्र जी एटा के, क्षुल्लक विश्वज्ञ नाम पाया।
भैया देवेन्द्र जी भिण्ड नगर, में विश्वभू संज्ञा को पाया।।
भाई अखिल जी बंसल, ने सम्मेलन एक कराया था।
सब जैन पत्रकारों को भारत, भर से यहाँ बुलाया था।। (72)

ऐलक विचिन्त्य सागर जी, अब मुनिवर विचिन्त्य कहलाये थे।
प्रथम मुनि दीक्षा गुरुवर, के कर कमलों से पाये थे।।
गुरुवर के इन उपकारों का, ऋण कभी चुका न पायेंगे।
जब तक है सासें हैं इस तन, में उपकार गुरु के गायेंगे।। (73)

अतिशय क्षेत्र बरासौ जी

छब्बीस नवम्बर को गुरुवर ने, भिण्ड नगर से गमन किया।
क्षेत्र बरासौ के दर्शन, का मन में पावन भाव लिया।।
इस पावन क्षेत्र बरासों, पर गुरुवर ने दीक्षा पाई थी।
निर्ग्रंथ दशा पाकर मन की, अंतर कलियाँ मुस्काईं थीं।। (74)

प्रभु महावीर का दर्शन कर, गुरुवर भारी हर्षाये थे।
चौदह वर्षों के बाद पुनः, गुरुवर ने दर्शन पाये थे।।
गुरुदेव बरासों का दर्शन कर, पुनः भिण्ड नगरी आये।
गुरुवर को पुनः नगर पाकर, नरनारी खूबई हर्षाये।। (75)

यादें हुईं ताजा

तीस नवम्बर को गुरुवर ने, अब आगे प्रस्थान किया।
श्रद्धा से भीगी आँखों ने, अपने गुरुवर को बिदा किया।।
नगर भिण्ड से चलके, गुरुवर बरही क्षेत्र पर आये थे।
इस क्षेत्र का अतिशय दर्शन कर, प्रभु को उर में बिठलाये थे।। (76)

फिर नगर इटावा, करहल से गुरुवर आगे बढ़ते जाते।
अब माह दिसम्बर में नौ, को गुरुवर जी एटा आ जाते।।
अगवानि ऐसी भव्य हुई, जो चिर यादों में समा गई।
बीते चौमासे की यादें, सबके ही उर में समा गई।। (77)

गुरुवर की अगवानि करने, सबके ही मन हर्षाते थे।
गुरुवर के जय जयकारों, से धरती आकाश गुंजाते थे।।
महिलायें मंगल कलश लिये, शुभ मंगल को दर्शातीं थीं।
गुरुवर की मंगल आरति को, थालों में दीप जलाती थीं।। (78)

गुरुवर के चरण धुलाने को, प्रासुक जल से थे कलश भरे।
श्रद्धा भक्ति से कलश, सभी गुरुवर के चरणों धार करे।।
एटा के बड़े जिनालय, में सब गुरुवर जी को लाये थे।
प्रभु पारस के अतिशयकारी, दर्शन सबके मन भाये थे।। (79)



दादागुरु पधराये

नूतन प्रतिमा आचार्य विमलसागर की, मंदिर आई थी।
गुरुवर ने नूतन वेदी पर, प्रतिमा जी को पधराई थी।।
माह दिसम्बर में ग्यारह, को ये पावन आयोजन था।
पंडित दीवान पवन जी का, इसमें सुन्दर निर्देशन था।। (80)

चतुर्थ आचार्य पदारोहण दिवस

गुरुवर का चौथा सूरिपद, आरोहण का दिन आया था।
सारी नगरी में उत्सव ये, भक्तों ने खूब मनाया था।।
तेरह को नेमिनाथ जिनालय, में था शुभ कलशारोहण।
आचार्य विमल सिंधु की, प्रतिमा का वेदी पर स्थापन।। (81)

सोलहवाँ मुनिदीक्षा दिवस

चौदह को गुरु का सोलहवाँ, मुनि दीक्षा दिवस मनाया था।
भक्तों ने गुरुवर की भक्ति, कर श्रद्धा अर्घ्य चढ़ाया था।।
चौबीस दिसम्बर को सन्मति, सिंधु का उत्सव आया था।
गुरुवर का तीजा मरण समाधि, उत्सव भव्य मनाया था।। (82)

घण्टाघर चौराहे पर प्रवचन

गुरुवर की अमृतवाणी को, सुनने उपाय रचवाया था।
घण्टा घर चौराहे पर गुरुवर, का उपदेश कराया था।।
गुरुवर की वाणी सुनने को, सब जैन अजैन थे उमड़ पड़े।
हो गये हजारों कर्ण धन्य, जिन जिन में गुरु के वचन पड़े।। (83)

"राष्ट्रहितैषी" का अलंकरण

फिर सरस्वती विद्या मंदिर में, गुरुवर का उपदेश हुआ।
था युवा शक्ति का सम्मेलन, उनको उपदेश विशेष हुआ।।
राष्ट्रीय स्वयं सेवक दल ने, गुरुवर को "राष्ट्रहितैषी" की।
थी एक उपाधि भेंटकरी, व अपनी श्रद्धा निर्मल की।। (84)

नववर्ष 2014

अब वर्ष पुराना बीत गया, नूतन का अब अभिनंदन था।
तेरह को बिदा किया सबने, चौदह का हुआ आगमन था।।
गुरुभक्ति के रंग में रंगकर, सबने नव वर्ष मनाया था।
हर बार से ज्यादा भक्तों ने, खुशियों का आलम पाया था।। (85)

आचार्य नमिसागर एवं सुंदरसागर जी से मिलन

चार फरवरी को, सूरी सुन्दरसागर जी आये थे।
वयोवृद्ध आचार्य नमिसागर, भी संग-संग आये थे।।
गुरुवर विमर्शसागर जी, ने अगवानी भव्य कराई थी।
सतों का भव्य मिलन लखकर, सबकी आँखें छलकाईं थीं।। (86)

कदम फिरोजाबाद की ओर

नौ को एटा नगरी से, अब गुरुवर बिहार कर जाते हैं।
भक्तों की आँखों के, आँसु गुरुवर को रोक न पाते हैं।।
भक्तों की आँखों से, अविरल अश्रु धारायें बहतीं थी।
न जाओ छोड़ हमे, गुरुवर सबकी श्रद्धा ये कहती थी।। (87)

पर वीतराग निर्ग्रंथ श्रमण, न मन में राग को धरते हैं।
वो राग द्वेष से परे, सदा समभाव में विचरा करते हैं।।
नगर अवागढ़ गुरु चरणों, की रज पाके मुस्काता था।
वह नगर टूण्डला गुरुवर, को पाके सौभाग्य मनाता था।। (88)

ग्लास सिटी में गुरुवर

फिर नगर फिरोजाबाद में, गुरुवर का शुभ हुआ आगमन था।
दूजा महीना सोलह तारिख, प्रभु बाहुबली का आँगन था।।
चालीस दिनों तक ग्लास सिटी, में गुरु अमृत वाणी गूँजी।
गुरुवर की अमृतवाणी सुन, हो गई श्रद्धा सबकी दूनी।। (89)



मुनिश्री अमितसागर से मिलन

मुनिराज अमित सागर जी, का छब्बीस को नगर आगमन था।
नसियाँ जी में गुरुवर पहुँचे, दो संघों का सम्मेलन था।।
वात्सल्य पूर्वक मिलन हुआ, उपदेश हुआ आहार हुआ।
फिर पुनः बड़े मंदिर जी को, गुरुवर का वहाँ बिहार हुआ।। (90)

दो मार्च को अट्टा मंदिर में, सामूहिक तब उपदेश हुआ।
तब सुनकर जैन अजैन सभी, को उसका लाभ विशेष हुआ।।
मार्च में नौ को विभवनगर, में गुरु उपदेश कराया था।
आहार दान का लाभ भी उस दिन, विभव नगर में पाया था।। (91)

श्री अनूप चंद जी वकील, प्रतिदिन संचालन करते थे।
प्रतिदिन अपनी श्रद्धावलियाँ, गुरुवर के चरणों धरते थे।।
कहते थे गुरुवर की चर्या, बस लगती हमें अजूबा है।
न गाड़ी घोड़े ए.सी. हैं, न फोन न झंझट दूजा है।। (92)

नई बस्ती में नई सीख

फिर तीन दिनों तक गुरुवर, का उपदेश हुआ नई बस्ती में।
सुनने को नगर उमड़ता था, सब गाफिल थे गुरु मस्ती में।।
प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश, यहाँ प्रतिदिन संचालन करते थे।
गुरुवर से बहुत प्रभावित थे, गुरु भक्ति उर में धरते थे।। (93)

प्राचार्य जी हुये मुखर

बोले-गुरुवर हैं पंथ बाद से दूर, आत्मा को कहते।
न तंत्र मंत्र की उलझन है, न जादू टोना में रहते।।
जब तक ऐसे अध्यातम, मय निर्ग्रंथ धरा पे विचरेंगे।
तब तक इस काल के अंत अंत, तक श्रमण सितारे चमकेंगे।। (94)

जो कुछ भी न देते लेते, फिर भी सब सुनने आते हैं।
ऐसे निर्ग्रंथ ही इस जग, में जिनशासन मान बढ़ाते हैं।।
गुरुदेव आपका नगरी में, अब वर्षायोग कराना है।
गुरुमुख से सुन अमृतवाणी, ध्रुव तत्वज्ञान को पाना है।। (95)

फिरोजाबाद जेल में

फिर जिला जेल में गुरुवर का, इक दिन उपदेश कराया था।
कैदीजन ने अपराध बोध, गुरु वाणी सुनके पाया था।।
फिर चंदाप्रभु का शुभ पावन, निर्वाण महोत्सव आया था।
जा करके घेर खोखल में, गुरुवर ने लाडु चढ़वाया था।। (96)

राष्ट्रयोगी से मिले राष्ट्रसंत

मुनिराज तरूणसागर जी का, नगरी में हुआ आगमन था।
गुरुवर से मुनिवर आन मिले, तब झूम उठा सबका मन था।।
अगले दिन गुरुवर जी के, संग मुनिवर ने भी उपदेश दिया।
दोनों ने मिलकर संत एकता, का पावन संदेश दिया।। (97)

पच्चीस मार्च को गुरुवर ने, फिर ताज नगर को गमन किया।
मुनिराज तरूणसागर जी ने, भी चलकर गुरु को विदा किया।।
गुरुवर को पहुँचाने हज्जारों, लोग साथ में चलते थे।
होंटों पे जय जयकारे थे, आँखों से अश्क निकलते थे।। (98)

चौमासे की आश

होटों पर एक निवेदन था, बस मन में यही भावना थी।
गुरुवर चौमासे को आना, सबकी वस यही प्रार्थना थी।।
आबाल वृद्ध सब दौड़ रहे, गुरुवर के पग बड़ते जाते।
चौमासे की तस्वीरें सब, अपने मन में गढ़ते जाते।। (99)

ताजनगरी में धरती के ताज

कई गाँव हुये थे धन्य-धन्य, कई नगरों का सौभाग्य जगा।
कहीं रात को गुरुवर रुकते थे, चल करके चौका कहीं लगा।।
चलते चलते गुरुवर के पग, अब ताजनगर आ जाते हैं।
नगरी के जन उत्साहित हो, गुरु अगवानि को आते हैं। (100)

द्वाविंशतिः पर्व पूर्ण

गुरु गाथा के बाबीस यहाँ, अध्याय पूर्ण हो जाते हैं।
गुरुवर का शुभाशीष पाकर, ये काम बढ़ाते जाते हैं।।
अगले सोपानों में तुमको, आगे की बात सुनाऊँगा।
जब तक ये साँसें हैं तन में, तब तक गुरु गाथा गाऊँगा।। (101)

❑❑❑❑



मंत्री (म.प्र.) श्रीमती यशोधराराजे सिंधिया पूज्यश्री से आशीर्वाद लेती हुई



डॉ. शीतल चन्द्र जी (अध्यक्ष-विद्वत् परिषद), डॉ. सुरेन्द्र भारती (महामंत्री-विद्वत् परिषद), प्राचार्य निहालचंद जी एवं पं. विनोद जैन रजवांस-कोटा



श्री इब्राहिम कुरैशी (अध्यक्ष अल्पसंख्यक विभाग) पूज्य श्री से आशीर्वाद ग्रहण करते हुए

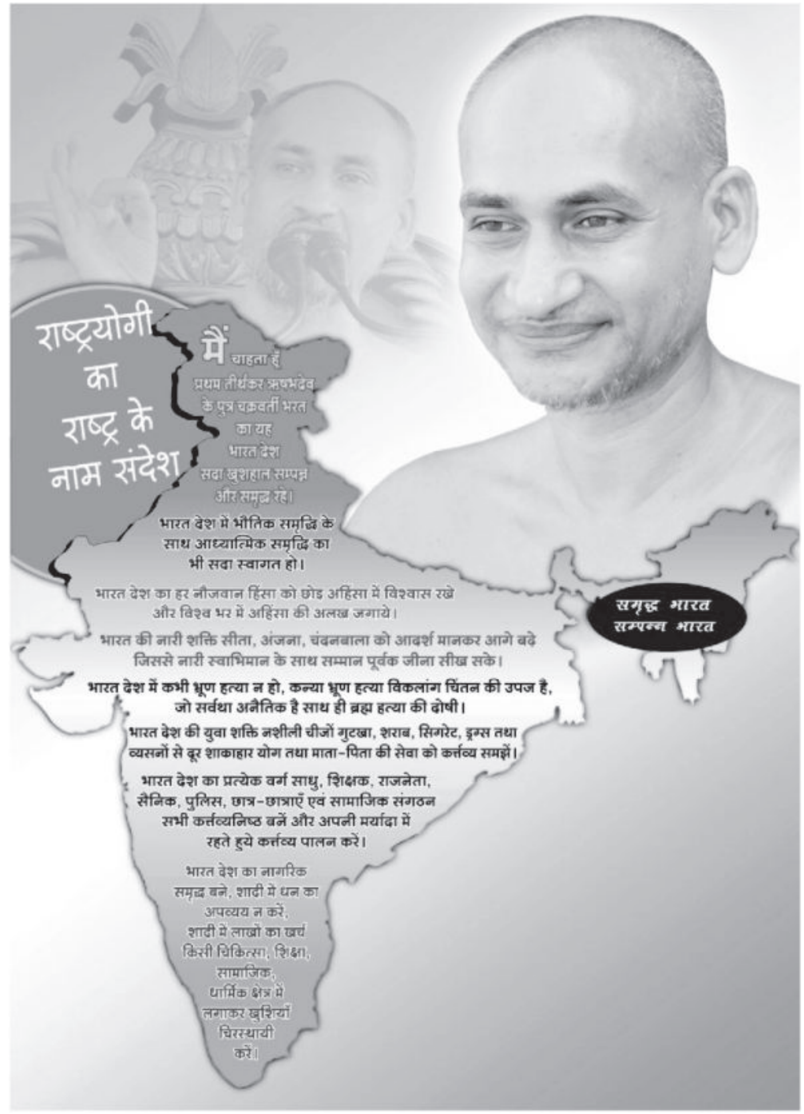
राष्ट्रयोगी अलंकरण





राष्ट्रवादी संस्था भारत विकास परिषद के प्रदेश सचिव श्री मुकुल राय एवं शाखा बिजयनगर राजस्थान के सदस्य विवेकानंद जी के सार्धशति वर्ष समारोह के शुभ अवसर पर आचार्य श्री विमर्शसागर जी को राष्ट्रयोगी अलंकरण से अलंकृत करते हुए।






bhavlingi sant
"त्रयोविंशति पर्व"
कल्याण पर्व
संजीवनी
भावलिंगी
संत
(महाकाव्य)

गुरू वंदना करते विद्वतगण



देश के ख्यातिलब्ध मूर्धन्य साहित्यकार संत जीवन लेखक सुरेश जैन 'सरल'
पूज्य श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी की वंदनाकर आशीर्वाद ग्रहण करते हुए



पूज्य श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर की वंदना करते डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत (अध्यक्ष शास्त्रि परिषद)



विद्वत श्री हुकम चन्द भारिल्ल आचार्य श्री से तत्व चर्चा करते हुए



पूज्य विमर्शसागर जी के सान्निध्य में आयोजित राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी में आलेख वाचन करते हुए
डॉ. सुरेन्द्र भारती (महामंत्री,विद्वत परिषद) (शिवपुरी २००७)



आयोजित राष्ट्रीय विद्वत संगोष्ठी में डॉ. रमेश चन्द बिजनौर (शिवपुरी २००७)



"त्रयोविंशति पर्व"

"कल्याण पर्व"

मंगलाचरण

जो पूज्यपाद कहलाते हैं, उन पूज्य पदों में है वंदन।
वो पूज्यपाद जिस माटी पर, पड़ते वो हो जाती चंदन।।
फिर वो चंदन माटी जाने, कितनों का ताप मिटाती हैं।
भवि के भवताप शमन करती, वो तीर्थ धरा कहलाती है।। (1)

आगरा में वाचना

अगवानि करके गुरुवर को, छीपीटोला ले आये थे।
फिर एक माह की ग्रीष्म, वाचना गुरुवर की करवाये थे।।
प्रतिदिन प्रातः मध्यान्ह काल, गुरुवर उपदेश सुनाते थे।
सन्ध्या में अपने मधुर कंठ, से गुरुभक्ति करवाते थे।। (2)

"विमर्श भवन" का शिलान्यास

शिलान्यास दो शिखरों का, फिर बड़े जिनालय में कीना।
नूतन शिखरों पर कलशारोहण, का संकल्प वहाँ कीना।।
शिखरों के बाद "विमर्श भवन", का शिलान्यास करवाया था।
कई परिवारों ने मिलकर के, तब अतिशय पुण्य कमाया था।। (3)

तब एक माह तक कर प्रवास, गुरुवर ने आगे गमन किया।
रस्ते में नगर हाथरस को, व नगर सासनी धन्य किया।।
फिर मंगलायतन में जाकर, गुरुवर ने था आहार लिया।
करके बिहार फिर नगर अलीगढ़, को अपना सानिध्य दिया।। (4)

अलीगढ़ प्रवास

गुरुवर की अगवानि करके, जिनमंदिर जी ले जाते हैं।
श्री नेमिनाथ जिनालय में, गुरुवर का संघ रुकाते हैं।।
भाई श्री मान प्रद्युम्न, विजय जी, गुरु सेवा में तत्पर थे।
चौमासा नगरी में करने, कई बार निवेदन करते थे।। (5)

इस नगर अलीगढ़ में रुककर, पच्चीस दिनों तक गुरुवर ने।
श्रावक के योग्य आचरण का, तब वपन किया था घर-घर में।।
गुरुवर की वाणी का घर-घर, में असर दिखाई देता था।
चौमासा पाने हर कोई, बेसवर दिखाई देता था।। (6)

गुरुवर का जादू

करके बिहार अब नगर, अलीगढ़ से गुरुवर खुर्जा आये।
गुरुवर की अगवानि करके, श्रावक जन मंदिर में लाये।।
अतिशय प्राचीन जिनालय, के दर्शन भी अतिशयकारी है।
प्रभु आदिनाथ अतिशयकारी, भक्तों के संकटहारी है।। (7)

गुरुवर का शुभ सानिध्य यहाँ, दो दिन तक सबने पाया था।
गुरुवर ने भक्तामर विधान, का पाठ यहाँ रचवाया था।।
नगरी के सभी युवाओं में, उत्साह अपूर्व दिखाया था।
नगरी के हर जन मानस पर, गुरुवर का जादू छाया था।। (8)

अब नगर बुलंदशहर वालों, का पुण्य उदय में आया था।
खुर्जा नगरी से कर बिहार, गुरुसंघ यहाँ पर आया था।।
गुरुवर सिकंद्राबाद से होकर, के मेरठ नगरी आये।
दो दिन का अल्प प्रवास दिया, फिर कदम नहीं थे रुक पाये।। (9)



शान्ति बाबा की नगरी में उनके लघुनंदन

जो तीन तीन पद के धारी, तीर्थंकर तीन कहाये थे।
त्रयपद मन्मथ चक्री तीर्थंकर पद, शोभा को पाये थे।।
शुभ चार-चार कल्याणक इस, धरती पर तीनों के मानों।
इस धरती का दर्शन जो कर, पाता वो पुण्यवान जानो।। (10)

गणिनी आर्यिका ज्ञानमति माताजी ने की चरण वंदना

इस नगर हस्तिनापुर में अब, गुरुवर जी संघ सहित आये।
सूरि भारतभूषण जी गुरुवर, की अगवानि करवाये।।
गणिनी माँ ज्ञानमति जी ने, इक नम्र निवेदन भिजवाया।
अर्जिका चंदनामति मात, को वंदन हेतु पहुँचाया।। (11)

गुरुवर ने नम्र निवेदन को, अपना आशीष प्रदान किया।
फिर अपने संघ सहित जाकर, माँ ज्ञानमति को दर्श दिया।।
अस्वस्थ रहा तन फिर भी, माताजी अगवानि को आईं।
इस बाल संघ के सौम्य गुरु, का दर्शन पा माँ हर्षाईं।। (12)

ब्रह्मचारी भैया श्री रवीन्द्र जी, मातु श्री चंदना जी।
ने दर्शन पूरे करवाये फिर, गुरु चरणों में वंदना की।।
गणिनी माँ ज्ञानमती जी के, व गुरुवर के उपदेश हुये।
फिर पुनः वसतिका में कई, विषयों पर थे तर्क विशेष हुये।। (13)

ऐलाचार्य निशंकभूषण जी मिले

सूरी निशंकभूषण जी भी, गुरुवर से मिलने आये थे।
क्षुल्लिका चारुश्री माताजी, ने भी गुरु दर्शन पाये थे।।
फिर नगर फिरोजाबाद आगरा, और अलीगढ़ वालों का।
था चतुर्मास का पड़गाहन संग, बड़ौत खुर्जा वालों का।। (14)

बड़ौत चातुर्मास 2014

तब नगर बड़ौत का पुण्य जगा, जो गुरु विराग आशीष मिला।
गुरुवर का चौदह का चौमासा, इस नगरी को खूब मिला।।
निर्देशन में पंडित श्रेयांस के खूबकरी तैयारी थी।
नूतन इतिहास रचाने की फिर, से बड़ौत की वारी थी।। (15)

फिर नगर हस्तिनापुर से अब, गुरुवर ने आगे गमन किया।
शुभ नगर मवाना से होकर, सरधना नगर आशीष दिया।।
अर्जिका मात प्रत्यक्षमति, गुरुवर के दर्शन को आईं।
निर्विघ्न साधना का पाके, आशीष बहुत ही हर्षाईं।। (16)

फिर नगर बिनौली वरनावा, के गुरुवर ने दर्शन पाये।
ब्रह्मचारी भाई अतुल जी ने, गुरुकुल में आहार करवाये।।
नगरी बड़ौत की गलियों में, उत्सव का अजब नजारा था।
जब छह जुलाई को नगरी में, गुरुवर का संघ पधारा था।। (17)

केशरिया ध्वज हाथों में थे, होठों पे जय जयकारे थे।
सब ही सौभाग्य मनाते थे, गुरुवर जी नगर पधारे थे।।
पुरुषों के हाथों में कलशे, महिलायें जगमग दीप लिये।
घर के बाहर दरवाजों पर थे, चौक सभी ने पूर दिये।। (18)

चातुर्मास स्थापना

ग्यारह जुलाई को चतुर्मास, का शुभ मंगल स्थापन था।
डॉक्टर श्रेयांस जी के द्वारा, तब हुआ सफल संचालन था।।
बारह जुलाई को गुरु पूर्णिमा, पर गुरु का आशीष मिला।
पाके गुरुवर का शुभाशीष भक्तों, का श्रद्धा फूल खिला।। (19)

इस चातुर्मास में रयणसार पर, गुरुवर की वाणी खिरती।
सुनने वालों की सभी मूढ़तायें, उनके मन से हरती।।
फिर तीस सितम्बर से सबने, पर्यूषण पर्व मनाया था।
आनंद महोत्सव उससे पहले, गुरुवर ने करवाया था।। (20)

11 भगवती जिनदीक्षा रचा इतिहास

भगवान महावीरा एकेडमी, में आयोजन करवाया।
अर्हंत ज्ञान गंगा उत्सव, गुरुवर जी ने था करवाया।।
इकतिस अक्टूबर से कल्पद्रुम, का विशाल आयोजन था।
संग संग जिनदीक्षा को लेकर, उत्साहित भक्तों का मन था।। (21)

गणिनी आर्यिका विन्ध्यश्री पधारीं

जिनदीक्षा में शामिल होने, गणिनी माँ विन्ध्यश्री आईं।
माँ के आने से महिलायें, उत्साहित सभी नजर आईं।।
तब पाँच नवम्बर को नगरी में, हुआ बिनौली का उत्सव।
सन्ध्या बेला में गोद भराई, का भी था भारी उत्सव।। (22)

था चार नवम्बर को कीना, गणधर विधान का आराधन।
सन्ध्या में मेंहदी का उत्सव था, भजन कीर्तन आयोजन।।
ग्यारह जिनदीक्षायें देकर, जिनशासन मान बड़ाया था।
छह तारिख को गुरुवर ने इक, नूतन इतिहास रचाया था।। (23)

ऐलक विजेय विश्वज्ञ सिंधु, विश्वभूसागर जी साथ रहे।
ब्रह्मचारी श्री सुरेश भैया श्वेता, नमिता के भाव रहे।।
रीना, विद्या के साथ कल्पना, टिंकल की भी दीक्षा थी।
शिवमार्ग पे आगे बढ़ने को, दीक्षा की कठिन परीक्षा थी।। (24)

ऐलक विजेयसागर जी, अब मुनिवर विजेय कहलाते थे।
विश्वज्ञ सिंधु जी क्षुल्लक थे, वो ऐलक बन सुख पाते थे।।
ब्रह्मचारी भाई सुरेशचंद, क्षुल्लक विश्वार्य कहाये थे।
क्षुल्लक विश्वभू सागर जी भी, मुनिवर की दीक्षा पाये थे।। (25)

सातों बहिनें बन गईं आर्यिका, नाम सभी ने ये पाये।
विद्यान्तश्री, विमलान्तश्री, विक्रान्तश्री संज्ञा पाये।।
विश्वांतश्री, विध्वांतश्री विजयांतश्री, का नाम मिला।
विभ्रांतश्री संज्ञा पाके मानों, अंतस का कमल खिला।। (26)

नूतन संज्ञायें सुन सुनकर, जयकारे लोग लगाते थे।
गुरु और शिष्य के रिस्ते का, यश सभी कंठ दुहराते थे।।
तब श्रमण धर्म जयवंत हुआ, जिनशासन भी मुस्काया था।
इस आयोजन ने अपना इक, नूतन इतिहास रचाया था।। (27)

आचार्य ज्ञानसागर से मिलन

आचार्य ज्ञानसागर बड़ौत में, बारह तारिख को आये।
गुरुवर विमर्शसागरजी भी, अगवानि करके हर्षाये।।
दोनों संघों का मिलन हुआ, दोनों का फिर उपदेश हुआ।
यह मिलन देख दो संतों का, नगरी में हर्ष विशेष हुआ।। (28)

मंगल बिहार

ये चतुर्मास सम्पन्न हुआ, गुरुवर ने आगे गमन किया।
भर-भर के आँखों में आँसु, गुरुवर को सबने विदा किया।।
संयोजक बन चौमासे में, अपना कर्त्तव्य निभाया था।
श्री वीर हर्ष ग्रुप ने चौमासे, में जी जान लगाया था।। (29)

हर काम को आगे करने में, भाई मुकेश वरदान रहे।
सब कामों में सबसे आगे, भाई महेन्द्र प्रधान रहे।।
मिल करके नाना लोगों ने, चौमासा सफल बनाया था।
सब कहते थे ऐसा गुरुवर का, संघ कभी न पाया था।। (30)

मुनि प्रमुख सागर से मिलन

करके बिहार चौदह को, गुरुवर नगर खेखड़ा आये थे।
पन्द्रह को जन्म महोत्सव, गुरुवर का सब भक्त मनाये थे।।
फिर बीस नवम्बर नगर गाजियाबाद, में गुरुवर आये थे।
मुनिराज प्रमुखसागरजी, अगवानि कर हर्ष मनाये थे।। (31)

त्रिलोक तीर्थ वंदना

शुभ बड़ागाँव का दर्शन इससे, पहले गुरुवर ने पाया।
कई संघों से था मिलन हुआ, त्रिलोक तीर्थ मन को भाया।।
फिर कविनगर गाजियाबाद से, गुरु संघ का गमन हुआ।
पच्चीस नवम्बर को खुर्जा, नगरी में जा आगमन हुआ।। (32)

दो दिन खुर्जा को दे, करके गुरुवर आगे बड़ जाते हैं।
अठवीस नवम्बर को चल, करके नगर अलीगढ़ आते हैं।।
कई गाँव नगर कस्बे, छोटे व बड़े राह में आते थे।
पर गुरुवर के अविराम कदम आगे को बड़ते जाते थे।। (33)

आर्यिका सुनयमति माताजी ने माना सौभाग्य

था चार दिसम्बर नगर आगरा, अगवानि कर हर्षाया।
फिर कमलानगर आगरा में, सबने गुरु का दर्शन पाया।।
आर्यिका मातश्री सुनयमति जी, अगवानी करने आईं।
वो पाँच वर्ष के बाद, पुनः दर्शन वंदन कर हर्षाईं।। (34)

पाँचवाँ आचार्य पदारोहण दिवस

फिर शालीमार विधान किया, गुरुवर छीपीटोला आये।
पंचम आचार्य पदारोहण का, उत्सव कर जन हर्षाये।।
शत आठ कलश से गुरुवर के, चरणों का प्रक्षालन कीना।
फिर विनय, भाव भक्ति पूजन, वंदन गुरु चरणों में कीना।। (35)

मंगल बिहार

अब नगर आगरा से बिहार, गुरुवर का आगे होता है।
हर जगह महोत्सव होता है, गुरु दर्शन मंगल होता है।।
हो मनिया नगर धौलपुर से, गुरुदेव मुरैना आये थे।
मुनिराज विनिश्चय सागर जी, मिलकर भारी हर्षाये थे।। (36)

फिर नगर ग्वालियर पार किया गुरुवर जी सोनागिर आये।
चंदाबाबा संग गुरुवर के, सब भक्तों ने दर्शन पाये।।
इस सिद्धक्षेत्र का वंदन कर, गुरुवर ने गती बड़ाई थी।
तब तीस दिसम्बर को रस्ते में, झाँसी नगरी आई थी।। (37)

सन् दो हजार पन्द्रह का, नूतन वर्ष यहाँ पर आया था।
तब कवियों का सम्मेलन, गुरुवर के चरणों करवाया था।।
गुरुवर के मधुर कंठ से, जब कविता का वाचन होता था।
हर सुनने वाला बस गुरुवर, की वाणी में ही खोता था।। (38)

देवों ने किया अभिषेक

नौ से ग्यारह तक गुरुवर ने, आयोजन यहाँ कराया था।
तब पुनः प्रतिष्ठित वेदी पर, प्रभु पारस को करवाया था।।
जैसे ही गुरुवर ने वेदी, पर प्रतिमायें पधराईं थीं।
वैसे ही प्रतिमा से बहतीं, जलधारायें नजराईं थीं।। (39)



प्रतिमाओं से बहती जलधारा, देखके अचरज भारी था।
पर कोई समझ न पाया, ये देवों का अतिशयकारी था।।
गुरुवर ने सबको बतलाया, ये देवों ने अभिषेक किया।
सबने मिलकर पारस बाबा, गुरुवर का जय जयकार किया।। (40)

पंचकल्याणक पृथ्वीपुर

गुरुवर ग्यारह को कर बिहार, तेरह को पृथ्वीपर आये।
नूतन वेदी पर प्रतिमाओं, को पुनः प्रतिष्ठित करवाये।।
पन्द्रह को आगामी गजरथ, का पात्र चयन तब किया गया।
सारे भक्तों ने पात्रचयन में, बढ़चढ़कर तब भाग लिया।। (41)

सोलह से गुरुवर ने कल्याणक, पाँच यहाँ करवाये थे।
ब्रह्मचारी भैया ऋषभ, नागपुर सब विधान करवाये थे।।
चौबीसी मंदिर की गुरुवर, ने प्राण प्रतिष्ठा करबाई।
आयोजन सब निर्विघ्न हुआ, गुरु की महिमा सबने गई।। (42)

तेबीस फरवरी को नगरी में, गजरथ का आयोजन था।
भक्ति इस तरह बरसती थी, जैसे हो बरसा सावन था।।
पृथ्वीपुर नगरी शीतकाल, का ये प्रवास पूरा करके।
शुभ कदम बढ़े अब आगे को, बस लक्ष्य जतारा का धरके।। (43)

जतारा पधारे, आँख के तारे

अठबीस फरवरी को गुरुवर, गृह नगर जतारा आये थे।
फिर पुनः भव्य अगवानि, में सबने ही पलक बिछाये थे।।
तब मुख्य मार्ग पर नगर, जतारा के पण्डाल लगाया था।
शत आठ कलश से गुरुवर, के चरणों को यहाँ धुलाया था।। (44)

शुभ सिद्धों के आराधन में, भावी ये सिद्ध पधारे थे।
इस नगरी के सब भक्तों, के गुरुदेव आँख के तारे थे।।
ब्रह्मचारी भाई विजय भैया, ये आयोजन करवाते थे।
गुरुवर को पा आयोजन में, भैया भारी हर्षाते थे।। (45)

विश्वयोगी

गुरुवर को भाई विजय जी ने, तब 'विश्वयोगी' का नाम दिया।
श्रद्धा भक्ति से गुरुवर के, चरणों में वंदन भेंट किया।।
महावीर जयन्ति पर गुरुवर, ने सबको था आशीष दिया।
इस दिन विवाह न करने का, गुरुवर ने सबको नियम दिया।। (46)

ग्रीष्मकालीन वाचना

अब नगर जतारा से चलकर, गुरुवर खरगापुर आये थे।
खरगापुर के जिनमंदिर में, गुरुवर कलशा चढ़वाये थे।।
गुरुवर की पावन चर्या लख, सब ने शुभ भाव बनाया था।
गुरुदेव वाचना करें यहाँ, सबने मिल अर्घ्य चढ़ाया था।। (47)

खरगापुर में वाचना

खरगापुर नगरी में जब, गुरुवर जी के पावन चरण पड़े।
गुरुवर की अगवानी करने, तब श्रावक बंधु उमड़ पड़े।।
क्षुल्लिका ओम व अर्हंश्री, संग थे मुनि संस्कारसागर।
आचार्य देव की अगवानी, करने को आये हर्षाकर।। (48)

मिलकरके चरण वंदना, की अपना सौभाग्य जगाया था।
संग साधुजन सारी समाज ने, पुण्य सु-अवसर पाया था।।
अप्रैल बीस को ग्रीष्मकाल, की पुण्य वाचना शुरु हुई।
सारी समाज की अभिलाषा, गुरु शुभाशीष से पूर्ण हुई।। (49)



गुरुवर विरागसागर जी का, दो मई को था अवतरण दिवस।
गुरुवर से प्रेरित हो समाज, ने खूब मनाया हरस हरस।।
आठों द्रव्यों के थाल सजा, गुरुवर विराग की अर्चा की।
फिर विनयभाव से गुरुवर के, जीवन पे थोड़ी चर्चा की।। (50)

सम्पन्न वाचना कर गुरुवर, ने चार मई को गमन किया।
जाकर के ग्राम भेलसी को, मानो गुरुवर ने चमन किया।।
हफ्ते भर ग्राम भेलसी को, अपनी वाणी से सींचा था।
फिर गुरु चरणों को आगे के, भक्तों के पुण्य ने खींचा था।। (51)

वो सिद्ध क्षेत्र आहारकी, पावन माटी मन को भाती थी।
शान्ति बाबा की दिव्यकृपा, गुरुवर को पास बुलाती थी।।
मन का उत्साह अनोखा था, कदमों की गति निराली थी।
बाबा की अनुपम दिव्य छटा, नैनों को मिलने वाली थी।। (52)

निज संघ सहित आये गुरुवर, खुशियाँ ही खुशियाँ छाईं थीं।
सारी समाज ने मिलकर, के अगवानी भव्य कराई थी।।
पंडित विनोद जी और, सनतश्री जय निशांत जी आये थे।
क्षुल्लक सु-ध्यानभूषण जी, भी वंदन करके हर्षाये थे।। (53)

आहार महोत्सव

इस सिद्धधरा पर गुरुवर ने, आहार महोत्सव करवाया।
पन्द्रह, सोलह, सत्रह मई को, था मेला का उत्सव छाया।।
सोलह को था श्री शान्तिनाथ, संग्रहालय का भूमिपूजन।
डायरेक्टर पारस चैनल के, पंकज ने किया भूमिपूजन।। (54)

मध्यान्ह काल में संस्कृत, विद्यालय का भारी उत्सव था।
विद्यालय की तब हीरक, जन्म जयन्ति महा महोत्सव था।।
पंडित श्री विमल सौंरया जी, व वर्धमान जी आये थे।
पंडित विनोद रजवांस अहा, गुरु वंदन कर सुख पाये थे।। (55)

सत्रह मई को बड़े बाबा का, मस्तक से था अभिषेक अहा।
भक्तों का मन बाबा के सिर पर, कलश ढोलकर झूम रहा।।
कोई छत्र लगाता बाबा पर कोई, चंवर ढुराता था उन पर।
कोई नृत्य गान कर हर्षाते, मेला था बाबा के दर पर।। (56)

मध्यान्ह काल में काव्य, गोष्ठि का सुंदर आयोजन था।
इक महाकवि के चरणों, में कवियों ने कीन्हा वंदन था।।
सब कवियों ने 'अपनी अपनी रचनायें वहाँ सुनाईं थीं।
पर गुरुवर की रचनाओं के, सन्मुख सब फीकी पाईं थीं।। (57)

इस तरह हुआ सम्पन्न यहाँ, आहार महोत्सव का जलसा।
टीकमगढ़ में गुरुवर आये, जन मानस था हुलसा-हुलसा।।
श्रुत पंचमी पर्व मनाया था, बाईस मई को भक्तों ने।
उत्साह विशेष नजर आया था, इस दिन गुरु अनुरक्तों में।। (58)

ग्रीष्मकालीन वाचना टीकमगढ़

जब गहन प्यास देखी मन में, जिन आगम का रस पाने की।
जब शुभ्र भावना देखी थी, गुरुवाणी हृदय बसाने की।।
गुरुवर ने तब आशीष दिया, कि ग्रीष्मकाल वाचन होगा।
इष्टोपदेश के द्वारा निज, आतम हित निर्वाचन होगा।। (59)

अठवीस मई इष्टोपदेश गुरुवर, ने तब प्रारंभ किया।
श्रद्धा की निर्मलता का क्रम, गुरुवर जी ने आरंभ किया।।
गुरु मुख से सुन अध्यात्म, देशना जन मानस हर्षाता था।
विद्वत समूह भी प्रतिदिन आकर, अपनी प्यास बुझाता था।। (60)

गणिनी आर्यिका विभाश्री पधारी

फिर तीन जून को विभाश्री, माताजी नगरी आईं थीं।
गुरुवर की चरण वंदना कर, मन में भारी हर्षाईं थीं।।
यह दृश्य सु-पावन देख-देख, दृग तृप्त नहीं हो पाते थे।
गुरु भाई-बहिन का मिलन, देख सब नरनारी हर्षाते थे।। (61)

समाधी

मुनिराज विश्वभूसागर ने, गुरुवर से दीक्षा पाई थी।
पाकर के मुनिवर की दीक्षा, नित श्रेष्ठ भावना भाई थी।।
निर्लेप साधना का उपक्रम, गुरु पादमूल में करते थे।
हर साँस-साँस में श्रेष्ठ समाधि, के स्वर गूँजा करते थे।। (62)

जब आठ जून का दिन आया, बेला थी ब्रह्म मुहुरत की।
गुरु पादमूल, संबोधन था, जिसकी थी उन्हें जरूरत भी।।
ऊँ णमो सिद्धाणं संग, साँसों का धागा टूट गया।
चेतन जो शाश्वत अजर अमर, वो नश्वर तन से छूट गया।। (63)

गुरु संबोधन से भावों में, निर्मलता भारी आई थी।
मुनिराज विश्वभूसागर ने, तब श्रेष्ठ समाधी पाई थी।।
फिर अतिशय क्षेत्र पपौरा, में उनका पावन संस्कार हुआ।
इस तरह श्रेष्ठ गुरु को पाकर, मुनिवर जी का उद्धार हुआ।। (64)

इष्टोपदेश चल रहा सतत, सुन भव्य जीव हर्षाते थे।
निज आतम हित का मार्ग, श्रवण कर अतिशय मोद मनाते थे।।
दो जुलाई को पंडित जी, श्री जयनिशांत जी आये थे।
तब क्षेत्र नवागढ़ में पंच कल्याणक, प्रति वेदन लाये थे।। (65)

इष्टोपदेश की दो जुलाई, को भव्य वाचना पूर्ण हुई।
भारी उत्साह महोत्सव संग, सारी विधियाँ संपूर्ण हुईं।।
करके बिहार फिर शान्तिनाथ, का क्षेत्र बानपुर आये थे।
करके वंदन द्वय पूत चरण, महरौनी नगरी आये थे।। (66)

आया खुशियों का दिन

सन दो हजार पन्द्रह का, चौमासा टीकमगढ़ वालों को।
खुशियों का था त्यौहार मिला, वृद्धों युवकों आबालों को।।
चौदह जुलाई को टीकमगढ़ नगरी, में भव्य आगमन था।
इतिहास रचा अगवानी का, हर्षित नगरी का कण-कण था।। (67)

काले-काले मेघों ने भी, आ-आकर खुशी मनाई थी।
वो झूम-झूम कर बरसे थे, नगरी शुद्धि करवाई थी।।
हर आँख में श्रद्धा का काजल, तब अँजा दिखाई देता था।
हर द्वार रंगोली के रंग से, तब सजा दिखाई देता था।। (68)

प्रक्षालपीठ पर पूज्यपाद, स्नपन कराये भक्तों ने।
शत-आठ कलश से गुरुवर के, द्वय चरण धुलाये भक्तों ने।।
दीपों की स्वर्णिम शिखा आज, कुछ ज्यादा ही इठलाती थीं।
गुरु चरणों पर पढ़ने वाली, धारा सौभाग्य मनाती थी।। (69)



श्री सिद्धचक्र विधान

*बारह जुलाई से बीस तलक, श्री सिद्धचक्र आराधन था।
श्री आदिनाथ जिनालय में, गुरुवर सानिध्य सु-पावन था।।
फिर तीन बीस से तीस, तलक नंदीश्वर में सिद्धाराधन।
मानो जुलाई का महिना, ये जैसे भक्ति का हो सावन।। (70)*

गुरुपूर्णिमा / वीर शासन जयन्ति

*गुरुमुख से गुरु पूर्णिमा की, महिमा को जग ने जाना था।
महावीर के जैसे गुरु विमर्श, को पा शिष्यत्व को जाना था।।
अगले दिन महावीर शासन, की वर्ष गाँठ पावन आई।
प्रभु महावीर की वाणी का, वंदन पूजन था सुखदाई।। (71)*

चातुर्मास स्थापना टीकमगढ़ 2015

*राजेन्द्र पार्क में प्रथम बार, चौमासे का स्थापन था।
हज्जारों श्रावक उमड़ पड़े, दिन दो अगस्त का पावन था।।
गुरु पाद, पीठ पर बढ़ते थे, श्रद्धा का नीर बरसता था।
गुरुपद प्रक्षालन करने को, हर श्रावक वहाँ तरसता था।। (72)*

*गुरुवर जी मंचासीन हुये, आँखों ने शीतलता पाई।
गुरुवर की मंगल पूजन में, रूपेश ने स्वर सरगम गाई।।
इस चौमासे का कलश पुण्य, अक्षय जी, अरिंजय पाये थे।
संघस्थ जो बहिना आँचल दीदी, के परिजन कहलाये थे।। (73)*

ज्ञानांकुश वाचना

*अध्यात्म रसिक श्रोताओं को, यह मंगल अवसर आया था।
अध्यात्म रसिक गुरुवर का, ही जो पादमूल शुभ पाया था।।
योगीन्द्र राजकृत ज्ञानांकुश, पर गुरुवर का उपदेश हुआ।
गुरुवाणी ने विद्वत समूह के, अंतस्थल को खूब छुआ।। (74)*

धर्म बचाओ आंदोलन

*निर्ग्रंथ साधना का प्रतिफल, जो संथारा कहलाता है।
उस श्रेष्ठ समाधि की महिमा, ये सारा ही जग गाता है।।
जब हाईकोर्ट द्वारा इस मुक्ति, के साधन पर वैन लगा।
तब गुरुओं के आह्वानन पर, सम्पूर्ण विश्व का जैन जगा।। (75)*

*गुरुवर ने जब आह्वान किया, नगरी में जन शैलाब दिखा।
इस जैन एकता ने इतिहास के, माथे पर नव लेख लिखा।।
गुरुवर की धर्म सभा के, संग इक सर्वधर्म सम्मलेन था।
हर एक धर्म के गुरुओं का, जिनमत का पूर्ण समर्थन था।। (76)*

*हज्जारों लोगों के स्वर जब, गुरुवर के स्वर से मिलते थे।
तब नीचे से ऊपर तक, शासन के अधिकारी हिलते थे।।
इस महा आंदोलन ने जब, रोड़ो पर मौन विरुद्ध किया।
तब हाईकोर्ट के निर्णय को, सुप्रीम कोर्ट ने रद्द किया।। (77)*

रक्षाबंधन / आनंन्द महोत्सव

*उन्तिस अगस्त को श्रमण, संस्कृति रक्षा पर्व मनाया था।
फिर माह सितम्बर में छै, से आनंद महोत्सव आया था।।
क्या युवक युवतियाँ, बाल, वृद्ध सब दौड़े-दौड़े आते थे।
गुरुवर के मधुरिम स्वर पाकर, प्रभु भक्ति में खो जाते थे।। (78)*

अर्हंत ज्ञान गंगा महोत्सव

*था माह सितम्बर में नौ, को अर्हंत ज्ञान गंगा उत्सव।
आचार्य सूर्यसागर विद्यालय, में था वर्ष गांठ उत्सव।।
तब कपिल जैन जन पद, सी.ओ. ने गुरुवर का आशीष लिया।
गुरुवाणी से प्रेरित होकर, सबने व्यसनों का त्याग किया।। (79)*



पर्वराज / क्षमावाणी

दस धर्मों की सौरभ महकी, खुशियाँ नगरी में छाई थीं।
दस धर्मों की पावन घड़ियाँ, गुरु सन्निधि में जो पाई थीं।।
दस धर्मों का उपदेश सुना, तत्त्वार्थ सूत्र का सार लिया।
फिर पर्व क्षमावाणी पर, अंतरमन का मैल उतार दिया।। (80)

टीकमगढ़ में टीका पूर्ण

अक्टूबर चार की सुप्रभात, अम्बर में फैली लाली थी।
क्योंकि जिनशासन को नूतन, सौगात जो मिलने वाली थी।।
श्री अमितगति आचार्य रचित, श्री योगसार प्राभृत नीका।
जिस पर गुरुवर विमर्शसागर जी, ने रच दी प्राकृत टीका।। (81)

पिछले कुछ पाँच बरस से, प्रतिदिन सतत लेखनी चलती थी।
प्रतिदिन गुरुवर के चिंतन, से इक नूतन बात निकलती थी।।
रच दिया आज इतिहास, अमिट टीकमगढ़ नगरी में आके।
प्राकृत टीका को पूर्ण किया, गुरुवर ने पारस दर पाके।। (82)

यह प्राकृत टीका "विमर्शोदया", लिख गुरु ने उपकार किया।
यह वृहदकाय प्राकृत टीका, जिनशासन को उपहार दिया।।
जिन शासन का सम्मान बड़ा, जिन श्रुत ने गौरव पाया था।
धरती अम्बर सुर नर किन्नर, सबने गुरु का यश गाया था।। (83)

ले रजत पालकी में पावन, टीका की हस्तलिखित प्रतियाँ।
इक भव्य जुलूस निकाला था, नगरी की झूम उठीं गलियाँ।।
आचार्य विमल सागर जी का, संग जन्म सती का उत्सव था।
टीका संग गुरुवर की पूजा, अर्चा का महा महोत्सव था।। (84)

चौंषठ ऋद्धि विधान, पपौरा

अतिशयकारी पावन धरती, अतिशयकारी गुरुवर आये।
मानों इस पंचम युग में, भी ऋद्धिधारी मुनिवर पाये।।
तेरह से पंद्रह अक्टूबर, चौंषठ ऋद्धि का अर्चन था।
गुरुवर की मंगल छांव तले हो रहा फलित तब कण-कण था।। (85)

मैनेजमेंट सेमीनार

सोलह अक्टूबर को शिक्षा, की समृद्धि को लेकर के।
कुछ एक शतक कॉलेजों, के अधिकारी गण वुलबा करके।।
तब प्रकाश मोदी छत्तिसगढ़ राज्यमंत्री आये थे।
गुरुवर से निर्देशन लेकर, शिक्षाप्रद सूत्र बताये थे।। (86)

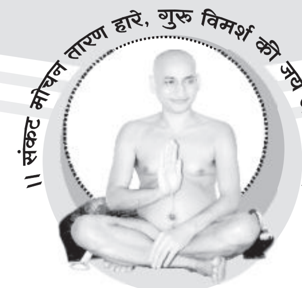
जैन यूथ कॉन्फ्रेन्स

जैन युवाओं का संगम, सत्रह अक्टूबर आया था।
तब अतिशय क्षेत्र पपौरा की, धरती पर उत्सव छाया था।।
तब भाई रीतेश जी दिल्ली, व रजनीश नागपुर से आये।
युवकों को जीवन सूत्र दिये, गुरुवर से शुभाशीष पाये।। (87)

चतुर्थ राष्ट्रीय अधिवेशन

अठदश अक्टूबर को नगरी, में उत्सव भारी छाया था।
तब विमर्श जागृति मंच का, चौथा अधिवेशन शुभ आया था।।
यह अतिशय क्षेत्र पपौरा, ने आयोजन सारा करवाया।
उन्नति मंच कर सके, अतः निर्देशन गुरुवर से पाया।। (88)

फिर टीकमगढ़ के राजमहल, में गुरुवर का उपदेश हुआ।
सत्ताइस अक्टूबर दिन था, नगरी में हर्ष विशेष हुआ।।
सूरि विरागसागर जी का, सूरिपद आरोहण उत्सव।
फिर माह नवम्बर में नौ को, आया धन तेरस का उत्सव।। (89)



43वाँ विमर्श पर्व

दिन पन्द्रह माह नवम्बर का, हर दिल में हर्ष समाया था।
भक्तों ने मिल करके भैया, शुभ पर्व विमर्श मनाया था।।
फिर पिच्छिका परिवर्तन का, शुभ संयम उत्सव आया था।
गुरुवर की पिच्छी को, सोनाली दीदी ने तब पाया था।। (90)

भगवती जिनदीक्षा

कुछ भव्य जीव, संयम पाने, लालायित आज दिखाते थे।
गुरुवर से पाकर के दीक्षा, वो फूले नहीं समाते थे।।
पच्चीस नवम्बर का दिन था, गुरुवर ने चार दीक्षायें दीं।
विव्रत, विध्रुव, विश्वार्थ मुनि क्षुल्लिका बनीं विदेहान्तश्री।। (91)

समोशरण पंचकल्याणक प्रतिष्ठा

फिर माह नवम्बर में तेबिस से, तीस तलक आयोजन था।
बाजार जिनालय में नवनिर्मित, वेदिका कल्याणक था।।
तब एक शतक जिनबिम्बों ने, शुभ प्राण प्रतिष्ठा पाई थी।
गुरुवर विमर्श सानिध्य मिला, उत्सव में खुशियाँ छाई थीं।। (92)

नैनों के कलशा छलक उठे, जब आई विदाई की बेला।
रोके से न रुक पाता था, आँखों में अश्कों का रेला।।
निज ज्ञान ध्यान मय चर्या, से गुरुवर ने हर दिल जीता था।
ले रहे बिदा अपने गुरुवर, आलम लगता था फीका सा।। (93)

दो तारिख माह दिसम्बर की दुखदाई दिखाई देती थी।
हर दिल में था भारीपन सा, हर आँख विदाई देती थी।।
हर दिल में यादें चौमासे की घुमड़-घुमड़ कर आतीं थी।
न छोड़ हमें जाओ गुरुवर, श्रद्धा ये टेर लगाती थी।। (94)

गुरुवर मंजना माँची होकर गृहनगर जतारा आये थे।
कुछ समय दिया गृह नगरी, को फिर आगे कदम बड़ाये थे।।
करके बिहार गुरु बैरबार को पदरज से था धन्य किया।
कोई आरती थाल सजाता था, कोई चरण युगल प्रक्षाल किया।। (95)

बैरबार पंचकल्याणक

यूँ तो छोटा है बैरबार, पर श्रद्धा गजब निराली थी।
है चार जैन परिवार यहाँ, हर घर की छटा निराली थी।।
प्राचीन जिनालय को फिर, से नूतन आकार दिलाया था।
कल्याणक पाँच कराने का, सबने ही भाव सजाया था।। (96)

भाई मनोज जी बैरबार कल्याणक पाँच कराने को।
गुरुवर को लेकर आये थे, अपना सौभाग्य जगाने को।।
सबको डर था क्या होगा? कैसे होगा समझ न आता था।
पर गुरुवर के जब चरण पड़े, हर काम सहज हो जाता था।। (97)

चल रहा ये माह दिसम्बर था, दस से पन्द्रह तक उत्सव था।
नगरी में पहली बार हुआ था, गजरथ महा महोत्सव था।।
कब शुरु हुआ सम्पन्न हुआ, ये बात समझ न आती थी।
सानंद, हुआ सम्पन्न गुरु के, शुभाशीष की थाती थी।। (98)

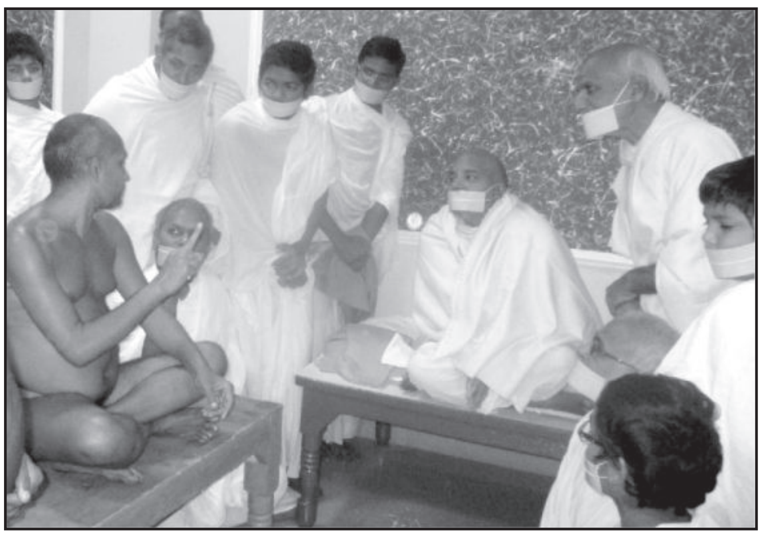
फिर नगर जतारा शान्तिनाथ, प्रभु वेदी पर पधराये थे।
शुभ तीन दिनों तक वेदी, प्रतिष्ठा का उत्सव करवाये थे।।
आहार महोत्सव आया था, गुरुवर अहार की ओर बड़े।
बाबा का दर्शन पाने, को थे नूतन-नूतन स्वपन गढ़े।। (99)



त्रयोविंशतिः पर्व

तेविसवाँ ये सोपान पूर्ण, श्रद्धा से शीष झुकाता हूँ।
मंगलमय गुरुवर का जीवन, मैं गा-गा हर्ष मनाता हूँ।।
आगे-अगले सोपानों में, आगे की कथा सुनाऊँगा।
जब तक प्राणों में गूँज मेरे गुरु गीता गाता जाऊँगा।। (100)

❏❏❏❏



पूज्य राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी के तात्विक सम्बोधन को सुनते हुए
तेरापंथ श्वेताम्बर संत आचार्य महाश्रमण जी एवं अन्य साधुवृंद (ग्वालियर-२०१४)



पूज्य विमर्शसागर जी एवं पूज्य सिद्धसैन जी महाराज (कोटा)



आचार्य विमर्शसागर जी एवं मुनि प्रमुखसागर जी का आत्मीय मिलन (गाजियाबाद-२०१४)

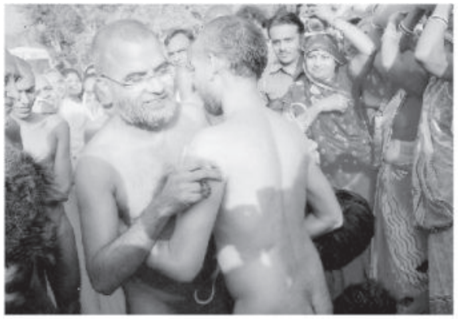


श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी एवं मुनि सुरत्नसागर जी (भिण्ड-२०१३)

bhavlingi sant

shramanacharya shri 108 vimarsh sagar ji gurudev

संत मिलन दर्शन



'गुरु–शिष्य का देख मिलन–धन्य हो गये श्रावक जन'
पूज्य आचार्य विरागसागर जी एवं मुनि विमर्शसागर जी का आत्मीय मिलन। (लोहारिया–२०१०)



आचार्य चन्द्रसागर जी, आचार्य विमर्शसागर जी एवं मुनि विनिश्चयसागर जी (करगुवाँ–२०१४)



पूज्य आचार्य विमर्शसागर जी एवं आचार्य विमदसागर जी वार्ता करते हुए (कोटा, २०१२)



आचार्य पुष्पदंतसागर जी के साथ मंचासीन मुनि विमर्शसागर जी (भिण्ड–१९९९)



आचार्य गुप्तिनंदी एवं पूज्य विमर्शसागर जी ससंघ (एटा–२०१०)



आचार्य सौभाग्यसागर जी एवं आचार्य विमर्शसागर जी वार्ता करते हुए।



आचार्य आदिसागर जी अंकलीकर एवं आचार्य शांतिसागर जी छाणी परम्परा के द्वय
आचार्य विमर्शसागर, आचार्य ज्ञानसागर जी का महामिलन (बड़ौत–२०१४)



आचार्य विमर्शसागर जी का आचार्य नमिसागर जी एवं
आचार्य सुन्दरसागर जी से आत्मीय मिलन (एटा–२०१४)



आचार्य भारतभूषण एवं आचार्य विमर्शसागर जी (हस्तिनापुर–२०१४)



bhavlingi sant

shramanacharya shri 108 vimarsh sagar ji gurudev

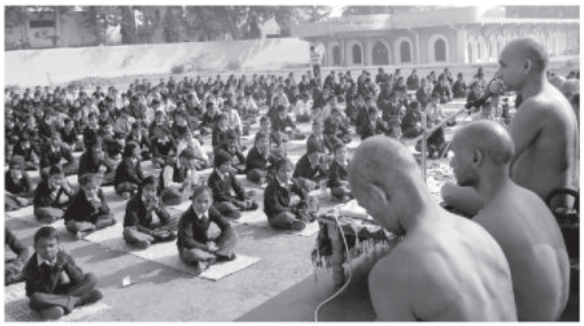
"चतुर्विंशतिः पर्व"

अतिशय पर्व

संजीवनी भावलिंगी संत (महाकाव्य)

प्रवचन

स्कूल प्रवचन



अतिशय क्षेत्र बड़ागाँव १५०० छात्र–छात्राओं को संस्कार की शिक्षा देते हुए आचार्य श्री विमर्शसागर जी



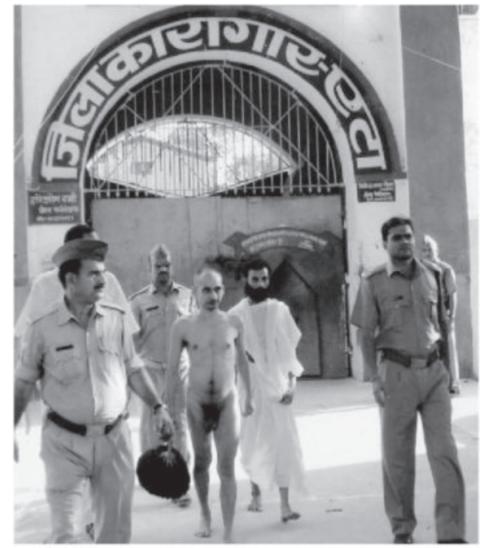


विजयनगर राजस्थान में सैंट पॉल स्कूल में अरिहंत ज्ञान गंगा महोत्सव में २००० बच्चों को 'देश और धर्म के लिये जीयो' का सन्देश देते हुए पूज्य श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज



लॉर्ड महावीरा एकेडमी बड़ौत (उ.प्र.) में 'अर्हंत ज्ञानगंगा महोत्सव' में २००० छात्र–छात्राओं को सम्बोधित करते हुए पूज्य श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

जेल प्रवचन



आचार्य श्री जिला कारागार एटा में प्रवचन कर आते हुये साथ हैं जेलर डॉ. वीरेशराज एवं अन्य



जिला कारागार फिरोजाबाद में प्रवचन कर आते पूज्य आचार्य श्री विमर्शसागर जी



"चतुर्विंशतिः पर्व"

"अतिशय पर्व"

मंगलाचरण

निज आत्म ज्योति को है, वंदन जो लोका लोक प्रकाशी है।
उस परम ज्योति का अभिनंदन, जो नंत गुणों की राशी है।।
जिसके उजास में शिवपथ, पर चलकर सब मुक्ति पाते हैं।
उसको वंदन जिसमें खोने, वाले सब कुछ पा जाते हैं।। (1)

भावी पद्मप्रभ देव नमन, ऐरावत से मुक्ति होगी।
अव्यक्त, देव की अगली, पर्यायों में अभिव्यक्ति होगी।।
भावी चक्रेश की पदवी, को पाकर विरक्तता धारेंगे।
होगा ऐरावत धन्य-धन्य, प्रभु मुक्ति वहाँ पधारेंगे।। (2)

आओ इन भावी भगवन का, हम वर्तमान गुणगान करे।
अतिशयकारी गुरु गाथा पर, हम शब्दों का संधान करें।।
उनके मन की करूणा ही, शब्दों में आ करके डोलेगी।
बस कलम चलाऊँगा मैं, तो गुरु महिमा अमृत घोलेगी।। (3)

गुरुवर विमर्शसागर जी का, यह अतिशयकारी जीवन है।
जो पठन करेगा श्रद्धा से, सच मानो ये संजीवन है।।
हो गई तूलिका धन्य आज, गुरुवर के जीवन पर चलकर।
हो गये धन्य ये शब्द आज गुरु महिमा जग को बतलाकर।। (4)

निर्मल साधना से सिद्ध क्षेत्र आहार में चमत्कार

निर्ग्रंथों की सच्ची भक्ति, सदियों से अतिशयकारी है।
हृदय से बहती करुणा की, रसधार बनी उपकारी है।।
चौथा या पंचम काल कोई अतिशय श्रद्धा से होते हैं।
जो श्रद्धा से गुरुनाम जपें, उनके दुख संकट खोते हैं।। (5)

निर्ग्रंथ साधना का अतिशय, कभी पिण्डी से चंदा प्रगटे।
गुरु मानतुंग की भक्ति से, कारागृह के बंधन विघटे।।
कभी वादिराज के भक्ति, स्वर काया कंचन कर देते हैं।
भक्ति स्वर पूज्यवाद गुरु के, आँखें रोशन कर देते हैं।। (6)

इतिहास के इक-इक पन्ने पर, भक्ति की अमिट इबारत है।
भक्ति का यश सूरज जैसा, उज्ज्वल पावन पुरुषारथ है।।
आओ निष्काम साधना का, अतिशय दर्शन करवाता हूँ।
गुरुवर विमर्श की भक्ति का, मैं अतिशय तुम्हें सुनाता हूँ।। (7)

जिनकी मुद्रा में अंकित दुनिया, के प्रश्नों के उत्तर हैं।
जिनके मुखमण्डल पर विखरा, रवि जैसा तेज अनुत्तर है।।
जिनके नैनों से झरती है, करुणा की पावन निर्झरणी।
जो तपो श्री के संगम हैं, निष्काम साधना दुख हरणी।। (8)

गंगा की धारा सी उज्ज्वल, जिनकी चिंतन पद्धतियाँ हैं।
रागाकर्षण न छू पाता, न द्वेषमयी परिणातियाँ हैं।।
मुस्कान अहा मुखमण्डल की, दुख दर्दों को हर लेती है।
संकट मोचन तारणहारे जिनको, ये दुनिया कहती है।। (9)



जिनका संघानुशासन भी, आदर्श बना सब संघों को।
जो अपने चिन्तन से शिष्यों, में भरते नई उमंगों को।।
इस गुरुसंघ में इक बहिना, आँचल दीदी जी प्यारी हैं।
जिनने अपनी हर साँसों को, गुरु भक्ति से श्रृंगारी हैं।। (10)

गुरु श्रद्धा व अनुशासन में, अपने दिन-रात बिताती है।
गुरु शुभाशीष का अनुपम, धन श्रद्धा से सतत जुटाती है।।
गुरु भक्ति की सुषमानुभूति, से हर पल चहका करती है।
जिसकी चर्या से गुरुभक्ति, की सौरभ महका करती है।। (11)

गुरुभक्ति बिन न कोई भी, जीवन में चाहत बाँकी है।
श्रद्धा सेवा विश्वास समर्पण, की वो अनुपम झाँकी है।।
निज गुरु प्रभावना में तत्पर, उसका हर इक आयोजन है।
उसके माथे का तिलक सजा, वो गुरु भक्ति का चंदन है।। (12)

जब कर्म असाता आता है, तब जीव महादुख पाता है।
पर गुरु श्रद्धा से भरा हृदय, हर पल, हरदम मुस्काता है।।
आँचल दीदी के जीवन में, अति दुखद मोड़ इक आया था।
पर सुनलो दीदी ने कैसे उस, पर चलकर दिखलाया था।। (13)

चल रहा था माह दिसम्बर, का तारीख यहाँ दस आई थी।
आँचल दीदी के जीवन में, दुख संकट लेकर आई थी।।
प्रातः जब सोकर उठी बहिन, गुरुवर का दर्शन पाने को।
अपने पैरों पर खड़ी हुई गुरुवर, के दर पर आने को।। (14)

बस तभी वहाँ गिर पड़ी बहिन, इक पैर हुआ बेजान यहाँ।
क्या हुआ अचानक दीदी को, ये कोई भी न जान सका।।
जब स्वास्थ्य बिगड़ता पाया, तो श्रावक फौरन तैयार हुये।
गाड़ी से झाँसी ले जाने दीदी, को सभी सवार हुये।। (15)

रस्ते में हालत और गिरी, इक हाथ और बेकार हुआ।
मुँह भी टेड़ा हो गया और, आधा शरीर लाचार हुआ।।
पर दीदी अपने मन में बस, गुरुवर का नाम सुमरती थी।
जो आया था संकट भारी उससे, किंचित न डरती थी।। (16)

झाँसी में चेकअप हुआ सभी पर, कुछ भी नहीं समझ आया।
क्या रोग और बीमारी है, कोई भी जान नहीं पाया।।
झाँसी से नगर ग्वालियर फिर, दिल्ली जा चेक कराया था।
हालत दिन रात बिगड़ती थी, पर रोग समझ न आया था।। (17)

दीदी को अपनी आँखों से भी अब तो दिखना बंद हुआ।
न पलकों में संचार शेष, कानों से सुनना मंद हुआ।।
थे सभी चिकित्सक परेशान पहला ये अवसर आया था।
चेकप शरीर के ठीक सभी पर रोग को बड़ता पाया था।। (18)

जीवन क्षति की आशंका से भर उठे चिकित्सक सभी वहाँ।
बोले वापिस ले जायें इसे, न दिखता कोई इलाज यहाँ।।
उम्मीदों के जब सब चिराग बुझ गये न कोई आशा थी।
हर ओर अंधेरा छाया था, दिखती हर ओर निराशा थी।। (19)



लेकिन श्रद्धा का दीप एक दीदी के दिल में जलता था।
सब कष्ट मिटा देंगे गुरुवर, मन में विश्वास ये पलता था।।
दीदी को फिर गुरु चरणों, में वापिस लेकर सब आते हैं।
मानो प्यासे को नीर मिला, श्रद्धा के गुल खिल जाते हैं।। (20)

गुरु चरणों में दीदी आई, चमके विश्वास सितारे थे।
अपने अश्रु जल से दीदी, ने गुरु के चरण पखारे थे।।
अब दीदी को लेकर, गुरुवर आहार क्षेत्र पर आये थे।
गुरुवर विराग प्रभु शान्तिनाथ, के दर्शन सबने पाये थे।। (21)

प्रभु शान्तिनाथ का दर था, ये गुरुवर को था विश्वास घना।
निश्चित ही कर्म असाता, ये दीदी का होगा आज फना।।
पच्चीस दिसम्बर का प्रभात, दुख की काली घड़ियाँ छाँईं।
दीदी की पत्थर सी काया, लख अखियाँ सबकी भर आईं।। (22)

आँचल दीदी को व्हीलचेयर, पर रख कर कुछ दीदी लाईं।
आशीष प्रदान करो गुरुवर, सबकी ही आँखें छलकाईं।।
आँचल दीदी की देख दशा, गुरुवर ने करुणा बरसाई।
गुरुवर ने शान्ति बाबा, की मूरत हृदय में पधराई।। (23)

गुरुवर बैठे पद्मासन से, द्वय नेत्र बंद करवद्ध हुये।
प्रभु शान्तिनाथ की भक्ति, में तन्मयता से संबंद्ध हुये।।
जब शान्तिभक्ति के पावन स्वर, गुरु मुख से मुखरित होते थे।
भक्ति से कर्म असाता भी, तब सहज निर्जरित होते थे।। (24)

गुरुवर की भक्ति मानतुंग, स्वामी सी अतिशय आली थी
हो गई दूर जो दीदी के, ऊपर कोई छाया काली थी।।
प्रभु शान्तिनाथ की भक्ति, ने फौरन ही अतिशय दिखलाया।
अज्ञात शक्तियों का प्रभाव, गुरुवर ने क्षण में विनशाया।। (25)

दीदी की आँखों की ज्योति, फौरन वापिस आ जाती है।
फिर हाथ, पैर, मुख ठीक हुआ, वाणी मुखरित हो जाती है।।
जो व्हीलचेयर पर लेटी थी, फौरन पैरों पर खड़ी हुई।
हज्जारों आँखों ने देखा, अतिशय की चर्चा बड़ी हुई।। (26)

दीदी ने श्रद्धा भक्ति से तब, "जय विमर्श" उद्घोष किया।
गुरुवर की अतिशय भक्ति का, भक्तों ने जय-जय घोष किया।।
प्रभु शान्तिनाथ की दिव्य कृपा, का अतिशय है गुरुवर बोले।
अतिशयकारी गुरुवर ने तब, अपनी लघुता के स्वर घोले।। (27)

देवों ने जय-जयकार किया, यक्षों ने चँवर ढुराये थे।
पंचम युग में दुर्लभतम, भक्ति सिद्ध हुई गुण गाये थे।।
गुरुवर की दिव्य साधना ने, अतिशय भारी दिखलाया था।
दीदी पहले की तरह स्वस्थ हो, गईं सबने यश गाया था।। (28)

हर जुवाँ पे गुरुवर का यश था, प्रभु शान्तिनाथ का दिव्य द्वार।
इस तरह हुआ इस सिद्धक्षेत्र, पर फिर से अतिशय चमत्कार।।
गुरुवर विमर्श की भक्ति, का यश युग-युग तक युग गायेगा।
शान्तिभक्ति का चमत्कार, ये कोई भुला न पायेगा।। (29)



गुरुवर फिर शीतकाल करने, टीकमगढ़ नगरी आये थे।
चौमासे की यादें ताजा, कर-कर श्रावक हर्षाये थे।।
जनवरी माह में बारह से, सोलह तक फिर उपसर्ग हुआ।
गुरु शुभाशीष से उपसर्गों में, भी भारी उत्सर्ग हुआ।। (30)

इक ओर अशुभ व्यंतर, शक्ति उपसर्ग घोर बन छाते थे।
इक ओर महाशक्ति बनकर, गुरुदेव कृपा बरसाते थे।।
गुरुवर के सन्मुख आते, ही व्यंतर निस्प्रभ हो जाते थे।
आकर के यक्ष देव सन्मुख, गुरुवर की महिमा गाते थे।। (31)

संकट मोचन तारणहारे गुरुवर, विमर्श की जय-जय-जय।
दीदी के मुख से निकले स्वर, उपसर्ग टला गुरुवर की जय।।
सत्रह जनवरी प्रभात काल, गुरु वंदन कर हर्षाये थे।
प्रभु शान्तिनाथ के यक्ष-यक्षणी गुरु पूजन को आये थे।। (32)

आहार क्षेत्र के यक्षराज, गुरुवर को वंदन कर बोले।
स्वीकार लिया गुरुदेव तुम्हें, शिष्यत्व भाव मन के खोले।।
सब यक्षों ने मिलकर गुरुवर, की पूजा महा रचाई थी।
सारी समाज के बीच गुरु, की गुण महिमा बतलाई थी।। (33)

प्रभु "शान्तिनाथ के लघुनंदन", कोई कहकर हर्ष मनाते थे।
कोई सिद्ध क्षेत्र "आहार के, छोटे बाबा" कह हर्षाते थे।।
कोई "संत भावलिंगी" कहकर, चरणों में अर्घ्य चढ़ाते थे।
ये सभी सार्थक नाम, गुरुवर देवगणों से पाते थे।। (34)

गुरुवर की भाव विशुद्धि को, सम्यक् दर्शन को है वंदन।
गुरुवर को पाकर गौरवमय हो गया, आज ये जिनशासन।।
टीकमगढ़ वासी धन्य हुये, जो ऐसा अवसर पाया था।
देवों द्वारा निर्ग्रंथ गुरु की, पूजा को लख पाया था।। (35)

देवों द्वारा अर्चित वंदित, ऐसे गुरुवर विमर्शसागर।
ये पंचम काल हुआ पावन, ऐसे निर्ग्रंथों को पाकर।।
गुरुवर विमर्श की गुण महिमा, युग-युग तक गाई जायेगी।
गुरुवर की भक्ति का अतिशय, ये श्रृष्टि भुला न पायेगी।। (36)

ये कथा नहीं साधारण, सी गुरुवर की अमर कहानी है।
स्याही ने नहीं लिखा, इसको लिखने वाला दृग पानी है।।
गुरुवर की पुण्य कहानी, का करता हूँ उपसंहार यहाँ।
जिन-जिन का भी सहयोग, मिला ज्ञापित उनका आभार यहाँ।। (37)

सबसे पहले आभारी हूँ, गुरुवर के शुभाशीष बल का।
आभारी हूँ गुरुवर की, पावन मुस्कानों के संबल का।।
आभारी हूँ उस माता का, जिनने गुरुवर को जाया था।
आभारी पिता सनत जी का, जिनने पितु गौरव पाया था।। (38)

आभारी नगर जतारा की, माटी के पावन कण-कण का।
आभारी हूँ गुरुवर विराग, के संयम दायी जीवन का।।
आभारी हूँ माताजी व, संघस्थ सभी मुनि वृन्दों का।
आभारी हूँ ब्रह्मचारी दीदी, भैया त्यागी वृन्दों का।। (39)



सूरि विशुद्ध सागर जी के आशीषों का आभारी हूँ।
श्रमणेश्वर विभव सिंधु जी का स्नेहपात्र मैं भारी हूँ।।
मुनिराज विश्वलोचन जी का आभार व्यक्त मैं करता हूँ।
मुनि सुव्रत जी के वात्सल्य को सदा हृदय में धरता हूँ।। (40)

जिनकी संतों के जीवन पर अविराम तूलिका चली अहा।
दो शब्द सरल जी के पाकर, यह रचना मानो खिली यहाँ।।
कविवर कमलेश बसंत, और पंडित संकेत की गुरु भक्ति।
कविराज अनिल जी तेजस की गुरु चरणों श्रद्धा अभिव्यक्ति।। (41)

जिनका इस पावन कथा यज्ञ, में जहाँ-जहाँ सहयोग हुआ।
आभारी उन संज्ञाओं का, जिनको लेखन में यहाँ छुआ।।
इस लेखन में गुरुभक्ति ही है, भैया एक विमल कारण।
जो श्रद्धा से रसपान करे, मुक्ति का बन जाये साधन।। (42)

ये काव्य लिखा गुरु भक्ति से, इसमें स्वर लय कोई ताल नहीं।
रस, छंद नहीं व्याकरण नहीं, शब्दागम की न सम्हाल कहीं।।
व्याकरण सजाई श्रद्धा से, भक्ति से छंद सजाये हैं।
सेवा विश्वास समर्पण के, रस अलंकार मन भाये हैं।। (43)

चौबीस परिग्रह के त्यागी, तन को भी परिग्रह सम त्यागा।
निज मान कषाय को जीत लिया, कर निज आतम से अनुरागा।।
उपयोग निजातम लीन सदा, उन भावलिंगी गुरु को वंदन।
लिख भावलिंगी यह महाकाव्य करता "विचिन्त्य" चरणों वंदन।।

❏❏❏❏

आचार्यश्री के जन्मकाल का विवरण

जन्म मार्गशीर्ष कृष्णा 5 सं. 2030 वी.नि. सम्वत् 2500 दिनांक 15.11.1973 गुरुवार, रवि दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु, नक्षत्र पुनर्वसु 4 चरण, योग शुभ, करन गर जन्म समय 9.31 सुबह इष्टकाल 7/26

जन्म लग्न कुण्डली, दिनांक 15.11.1973
लग्न 8/8/1/52



ऐलक दीक्षा, दिनांक 23.02.1996
लग्न 2/16/53/10



मुनि दीक्षा, दिनांक 14.12.1998
लग्न 1/2/45/12



जन्म कुण्डली में योगों की दृष्टि

शुभ योग, काहल योग, बुध आदित्य योग, मृगेन्द्र योग, दाम योग, कुटुम्ब त्याग योग, अचल सम्पत्ति त्याग योग, माँ से पृथक होने का योग, बाल ब्रह्मचारी योग, राज योग 3, अरिष्ट भंग योग 4, दीर्घायु योग, वैराग्य योग 8, आध्यात्मिक योग, ज्ञानवृद्धि योग, सर्वार्थसिद्धि योग।



आचार्य विमर्शसागर जी की जन्मकुण्डली

एक वरिष्ठ जयोतिषि ने अपना नाम प्रगट न करते हुए आचार्यश्री की जो कुण्डली बनाई थी उसको यदि उन्हीं की भाषा में देता तो पाठकों को पढ़ने और समझने में कष्ट होता, अत: मैं उसका सार संक्षेप दे रहा हूँ।

चिरंजीव राकेश कुमार जैन का जन्म 15 नवम्बर, 1973 को प्रात: 9:31 बजे हुआ था। उस दिन सूर्योदय का समय 6:31 था। अत: स्थानिक जन्म का समय 9:32 प्रात:काल लिखा गया है। तदनुकुल मार्गशीर्ष कृष्णा पंचमी दिन गुरुवार वि.सं. 2030, पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क राशि, जतारा (टीकमगढ़) नगर में जैन आम्नाय के परवार वंश में कोछल्ल गोत्र के श्रीमान् स्वर्गीय नाथूराम जैन के सुपुत्र श्रीमान सनतकुमार जी जैन की भार्या श्रीमती भगवती देवी जैन की कुक्षि से हुआ था। शिशु का राशि का नाम हीरालाल जैन, विप्र वर्ण, जलचर वश्च, मार्जार योनि, देवगण, आद्य नाड़ी।

जन्म पत्रक का भाष्य

ज्योतिषी जी ने जातक के शुभाशुभ फल का कथन करते हुए पूरे पत्रक में केवल शुभ ही शुभ का विवरण दिया है। अशुभ कुछ नहीं है। वे लिखते हैं—पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मे जातक सुप्रतिष्ठित कार्यकर्ता, मेधावी, विचारक, सामान्य रोगों का शिकार होने वाला और वृद्धावस्था में अधिक सुखी रहने वाला होता है, फिर भी वह महात्मा एवं तपस्वी बन जाता है। शरीर सुघटित होता है, कद मध्यम होता है एवं मस्तिष्क विस्तृत होता है। भौंहे घनी, नाक लम्बी किन्तु छोटी, सुंदर आँखें चमकपूर्ण और व्यक्तित्व मधुर होता है। रंग गोरा और शरीर सुन्दर होता है। जातक साहसी और पराक्रमी होता है, कठिन से कठिन समस्याओं को अपने साहस और परिश्रम से सुलझाने में समर्थ होता है। उसमें पर्याप्त आत्मविश्वास होता है, स्फूर्ति और जोश भी। जातक की धर्म में विशेष रुचि होती है, सत्यवादी और उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। यात्रा करने में निर्भय रहता है। उदार हृदय होता है जो आध्यात्मिक प्रवृत्ति और न्याय की ओर समर्पित रहता है।

जातक प्रसिद्ध वक्ता होता है। उसकी वाणी में मंत्रमुग्ध करने की शक्ति होती है। जन समुदाय की भावना को अपने पक्ष में कर लेने की कला में दक्ष होता है।

रूपवान, सदाचारी और विविध सद्गुणों से युक्त होता है। जीवन में उच्च पद प्राप्त करता है। अत्यंत बुद्धिमान होता है और अपने कार्यों से विख्यात होता है।

जातक राजा के समान धनवान, ज्ञानवान और जन-जन द्वारा वंदनीय होता है। ऐसा जातक अवसर मिलने पर अपने परिधानों तक का त्याग कर देता है और अपने कुटुम्ब से पृथक हो जाता है। अपनी चल-अचल सम्पत्ति भी त्याग देता है। जातक का विवाह योग नहीं होता, बल्कि बाल-ब्रह्मचारी का योग होता है। घर परिवार तो क्या जन्मदायनी जननी से भी पृथक हो जाता है। दीर्घायु होता है। बालपन में ही सन्यास योग बन जाता है। अपनी साधना के बल पर चतुर्थ काल के मुनि की तरह केवलज्ञान प्राप्त करने की सामर्थ्य रखता है, यदि सन्यासी नहीं बनता तो राजयोग बनता है और राजा की तरह वैभव का स्वामी होता है।

ऐसा जातक अपने में श्रेष्ठ होता है और अपनी साधना से कठिन अनिष्ठों का नाश करता है। सदा परोपकारी रहता है। इस तरह जातक के जीवन में सब कुछ शुभ ही शुभ रहता है।



भावलिंगी संत, राष्ट्रयोगी, आदर्श महाकवि
श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज

अनूठे कीर्तिमान स्थापित करता : एक मौन संत

आओ परिचय करें गुरुदेव की विचार वीथियों में सजे चिन्तन के ओजदार मोतियों से...

- ✻ प.पू. भावलिंगी संत, राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज एक ऐसे दिगम्बराचार्य हैं जिन्होंने पंथवाद के नाम पर बिखरती जैन समाज में अनादि-अनिधन 'जिनागम पंथ' का उद्घोष कर सामाजिक एकता का सूत्रपात किया है।
- ✻ जिनको सिद्धक्षेत्र अहार जी में अपनी निर्मल साधना से पंचमकाल में दुर्लभतम, शान्तिभक्ति की महान् सिद्धि प्राप्त हुई, यक्षों द्वारा की गई महापूजा, और नाम दिया 'भावलिंगी संत' एवं 'अहार जी के छोटे बाबा'।
- ✻ आचार्य भगवन् अमितगति स्वामी के 1000 वर्ष प्राचीन ग्रंथ ''श्री योगसार प्राभृत'' ग्रन्थ पर पूज्य गुरुदेव द्वारा प्राकृत भाषा में 'अप्पोदया'/'विमर्शोदया' नामक वृहद टीका का सृजन किया गया है जो अपने आप में अनूठा इतिहास है।
- ✻ धर्म निरपेक्ष रूप से सम्पूर्ण भारत वर्ष में गुनगुनाई जाने वाली कालजयी रचना 'जीवन है पानी की बूँद' महाकाव्य के पूज्य श्री मूल रचनाकार हैं। इस कृति में गुरुदेव द्वारा अभी तक 2000 से अधिक छंदों का सृजन किया गया है। गुरुदेव की इस कृति पर अनेक साधु-साध्वियों द्वारा नये-नये छंद जोड़े गये।
- ✻ पूज्य भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्शसागर जी ऐसे प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य है जिनकी रचना 'देश और धर्म के लिये जियो' को मध्यप्रदेश सरकार द्वारा कक्षा 11 की हिन्दी सामान्य की पुस्तक 'मकरंद' में प्रकाशित किया गयाहै।
- ✻ प.पू. भावलिंगी संत ऐसे प्रथम जैनाचार्य हैं जिन्होंने मौलिक रूप से पूर्णता नवीन 'विमर्श एम्बीशा' भाषा का सृजन कर समस्त भाषा मनीषियों को प्रभावित किया है।
- ✻ पूज्य गुरुदेव ऐसे प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य हैं जिन्होंने मौलिक रूप से 'विमर्श लिपि' का सृजन किया है।
- ✻ देश की राष्ट्रवादी संस्था 'भारत विकास परिषद' शाखा विजयनगर (राज.) द्वारा गुरुदेवको 'राष्ट्रयोगी' अलंकरण से अलंकृत किया गया।

वर्तमान श्रमण संस्था में पूज्य गुरुदेव के संघ का
अनुशासन प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है।